मार्च १९५९ (फास्गुन १८८)

🎟 नवजीवन द्रस्ट महमवाबाद १९५९

तीन दवये

भागीराष्ट्र नवजीवन इस्तकी सीजन्मपूर्व जनुमतिसे

निरेशक कथान्त्र विकास निन्धी-८ हाम त्रवाशित और जीवनकी कक्षानार्ग बमार्थ नावीदन त्रेम सहस्रशास-१४ हास सुद्रिण

भूमिका

इस वरका नान्य गांवीबीक बीवनकी एक महत्वपूर्व मेबिकस है। उन्तर बीर दक्षिण मास्कित नरकारक वीच माणी मंदर्गक चित्रु १८९६ में ही प्रकट हो कुत वे पत्रकार भव का नाण्य-एत पाठकार मामणे रक्ष या है है उनमें उन चित्रुवेंडी मध्य मिससी। गांधीबीने यब पहुंची बार कोमहितक विस् अपने प्रानुकेंडे बीविसमें हाला वा उन्य प्रयोगी पारिकारियोंका

पानीजी १८०६ में स्वरम मीरे ने। उस ममय व २६ वर्षक थे। बीराव बाबिकामें मारानीबीक मात्र वा व्यवहार दिया जा रहा या उसका परिचय मारतको जनता बीर जिम्बारियोंको देनकी जिम्मेवारी उर्ज सीरी गर्दै थी। जन्दान मारतमें राजनीतिक अविनक कुच्य-मुख क्योंका दीए किया बीठ-नेनाबींन मनाकारों की बीर वदी-बड़ी मार्चजनिक मनाबाँने मायद दिये।

सन्ता भी इस बण्डमें उपमध्य है।

वन्त विपयपर कुछ पुस्तिकाएँ भी मकाधित की।

हमें व एक पुरिचका बाम औरपर भीन नेन्नकेट (हरी पुरिचकां) क मामन मिन्न हुई बी। उसरी नियद-सहुका एक गनन मानाचार विभन्न बारिको पनीनें प्रसामन हुना। मोरान-सिन्न एक पन-पतितिथिने पुरिचकाका बीर उपपर स्वीमिन्नर वना व्यक्त आहं हेरियाकी टिप्पनियोका एक कोरा-मा मायम तार द्वारा स्वेतन पेत्र दिवा था। यसर्व स्वेत-कार्योक्तरे सम्मान्यका से मारांच पक तीन पनिवचींका वार, विश्वन साविका पहुँचा भीर जम्मी बसी-बही स्टामांकोका मुख्यान कर विचा। मानीमीने मारान्ये वो-

हुछ कहा या जनकं भ्रायक समायारके दर्वनके नागरिक कुढ़ हो उठे। वर्षका भन्न होने-होने और जब कि गायीओंको दक्षिण आख्रिका बाग्स सानेवासा

नहार नमारियां उतारनके निया न्यान्तकी प्रतीक्षा कर पहा ना उनके विवस धिका दुवा तीय मान्योकन बनती परास गीमारर पहुँच पथा। यजनती १३ १८९७ की सामको जब न वर्षनमें उत्तर, भीड़के एक हिम्मने उत्तर साम्यम् करके नम्याय जनकी हत्या ही कर बाची। यह उसी मीहका हिस्सा वा पहुंचे कर्मन क्याय जनकी हत्या ही कर बाची। यह उसी महका विवस्ता को पहुंचे क्रेन्ट महाम्याय एकन हुई थी। यहि पुलिस दुर्गिट क्येंग्रिस मेर उसकी प्लीने चतुराईम नाम न मिया होता हो पांचीसीके प्राचीकी गक्ता न होंगी। इस सम्बन्ध आरम्भ इपि पुलिकाने होता है। उपने दक्षिण माफिकार्म माफीमिन साम किये बानेबाने स्वन्धारका बड़ा मामिक विवन विभा पता है। योपीनीने स्वनोर्ने वहाँ विभागना बानुके क्यमें मूर्त है वृगे भी। भीर हुक लानोर्ने दो "कियी भी मिकिक मान्येमका स्वान स्वन्ध स्वन्धन स्वत्य स्व

प्रमानवन नयी कोटाना किन्तु ऐतिहासिक वर नी इस कार्यों प्रमाणित किया वा ज्या है। इसके हान सामीनीका विकास साधिकामधी वेपनन्त्रतीके बोरते पैरीकारी करनेका विकास प्राप्त हुआ वा बीर इसे बायोगीन हुए प्रीत्तकके मन्तर्ने बोड दिया वा। इसका हुन्याधार करनावाँकी, प्रतिनिधिक मुस्तिक क्षेत्र एन्ट्राकी नवी की बीच का आक्रियोंक क्ष्मण्य प्राणीगोंने — वे कियों मी वर्ष करना स्वाप्ती क्यों न हीं — विवसान बी।

हरी पुलिकांके बाद दक्षिण आफिकावामी मारदीयोंकी करदयाशायर एक स्वान और विकाद राध्यासक 'म्प्याची' मजाविष्ठ हुई। उसके मात्र विभिन्न विकादियोंका मेने वर्ष समस्वपत्री और मार्ववावाचीको करनें भी दी गई थी। इस ज्याचिं में दक्षिण वाध्याने मेन्द्रिक एन्स्ये मारदीयोंकी विविध्या स्वान्य वर्षन उत्तरस्थ्य हुं। गार्वीयोंने स्वतने पांच भावतं भारत वासमें या विध्यासायक कार्य दिया उसकी पुरुक्तिकार परिचय भी इससे पाठकोंनो विकादा है। मण्डिया, विध्याविष्योंक लिए यह विदेशा उत्तरिक्षण नारदीयोंकी अल्ला विविध्या विध्या करते विकाद करती है। इसमें वर्षन परिविच्यानिक्षण हुं। वर्षक पांचीयोंने मयनन बीग वर्ष तक एक युद्ध और विषय संवर्षका नेतृत्व किया और उस धौरानमें उन्होंन मरमाप्रक्-स्पी महान् वहनको गढ़ा।

भारतीयों हे शांच को कपमानास्पर ध्यहहार किया वादा या उमकी वान कारी विरोक माराका वेनेके लिए पाणीजी बच्चिम झाल गये। वीद्या माराके विमिन्नमारी प्रदेश सर्वाविक प्रवासी नेराक गये थे। दमिल्य, नहाँ मेन्कु हो रा वा उर्ध्य सहाये नार्वाव्यक्तिश गहरा सम्बन्ध का इसका प्रमाम उन प्राप्तिनिकिक बीट सराये नार्वाव्यक्तिश निका विस्ते गाणीजीका प्रमाम उन प्राप्तिनिकिक बीट सराये प्राप्ता मानको हमात्रम मर दिया वा। पार्गावीके महाप रहुँचनेते कुछ हो पहुचे नेराको एवँट-अनररको एक नकास्प्र निकास वा। वह उन बार्धि उत्तरमें वा वो बनाया गवा या हो गुरिक्यमें पार्थीजीम बही वी। इमिल्य, गाणीजीन एवँट-यनरको कम्माप्ता प्रदि निवाद स्थाप अपनि क्षाव्यक्त प्रति वाद कराजे किए महाप्ती मानके कमाराया उपनि महाराया वावा प्रमु तिकार भारत-याजाके क्षाय वह सारावित बीट्या विससे उनका महाराया सामाण उनके भारत-याजाके क्षाय वह सारावित बीट्या विससे उनका महाराया सामाण पुरी

पाठकोंको सुधना

इस बच्छम संपूर्ण गांची बाङ्गमयके पहले खच्चका जो सन्तर्भ सुचित किया गया है वह १५ अगस्त १९५८ (२४ आवच १८८) को प्रकाधित मंस्करणका है। जहाँ *बालाक*माका सम्बर्ग बताया गया है वह गांचीजी-द्वार

मूण नृबराधी पुरुष्क लाजना प्रयोगी अध्या आत्मक्यांकी गवनीयन प्रकारण माणित, जाइनावाब डाए १९९२ में प्रकारित गोवी आयुष्ठिका है। धायन-मुकडे तीराप्त बताई यह धंक्याकोरे नाव विवे एण इन धंक्य का अर्थ है। अवन्यतारी प्रयासका बहुमारावादमें वराक्य मुख्य का का का कि का कार्य-सार्वोधी कार्य-संक्री प्रविक्रण माणित कार्य-सार्वोधी कार्य-संक्री प्रतिक्रण माणित कार्य-सार्वोधी कार्य-संक्री मुत्रीयत है। इन कार्य-माणित कार्य-सार्वाधी कार्य-सार्

भूमिका माभार

पाटकोंको भूचना हरी पुरिनका (१४-८-१८५६)

विषय-सुची

चित्र-मुची १ बक्तिय जाफिकाशामी ब्रिटिश भारतीयोंकी कप्ट-गावा ---

1294)

२ टिप्पणियाँ दक्षिण माधिकावासी बिटिस भारतीयोंकी **क्ष्ट-गाबापर (२-- -+६**) १ अम्बर्गका मापन (२६-९-९६) ४ पत्र फर्नती सारावती वलेबारकोको (१ -१ - ६) ५ नेटान-निवासी माध्यीय (१७-१ -९६)

भी क्र गोलनेको (१८-१ -९६) ७ पत्र पर्युन्त्री सोशवत्री नक्षेपारकोको (१८-१ -९६)

८ ब्रेधक-पुस्तिकार्मे (६-१ - ६) ९. मदानका मायव (२६-१०-६)

१ अध्यक्षादका सन्तेष (३--१०-- ६) ११ पम - फर्रुनमी सोगवजी तकेमारमॉको (५–११–९६)

स्टब्नमैन के प्रतिनिधिकी घेंट (१ -११-९६) दक्तिण आफ्रिकाके मारतीय (११-११- ६) इम्लियमैन के प्रतिनिधिको मुलानान (१३-११-९६) १५ पूनामें भाषच (१६-११-९६) १६ तार धाइनसम्बन्धान नाम (३ –११– ६)

कुरर्वत्र जहामपर मुसाकात (१९-१-१८ **०**)

to बसिन आफ्रिकाके भारतीय (* ~११~ ६)

१८. भारतमें प्रतिनिधित्व - चास्तविक नर्चका हिमान (दिनम्बद

पुष्ठ पौच

म्या रह

नारत्

सोसइ

8

49

80

***** ₹

.,

3,6

* * , ,

238

718

214

, 1 *

244

एक बनावारण सकरकी वस्तु मी पाठकीर धानने रुपी जा पर्धि हैं ना जगरे कार्यके एमस्पर्स स्थापन होए करने हुए गांवीमोने वो वर्ष किया ना जगरा पादस्ता हिमाबा उचके मार्ग्यमें उनकी गांविकीय सीर प्रमुख्योग्य प्रकाप पादता है। संयोगवस कह राजक साधिक सीरुक्ते—जनीसनी सपीके जगरा मार्थी बीर पावकुरिके सरोकी जातकारी भी रेता है। किन्यु समा मार्थ प्रकार कर बादने हैं कि उससे प्रविद्योग्य उनके सामा सार्थों का उचित्र हिपाय रुपतिके बारेमें गांधीबीकी चित्रवाका परिचय मिन्नता है। पाउन वेर्येने कि उसमें जावा बाता बीती कोटी-कोटी एक्से भी सामित्र है। चारिक्तमें पहुं स्विधेतता से उस काटी स्वक्षा दिवास है स्वी है, भीवन-भर उनके गार्वजनिक बनके स्ववासों साथ प्रति।

गाभी बीज बहाबके इबेंन पहुँचनेपर उसके सामने वानेवासी विरोधी स्विति जनकी इत्याके प्रमानकी घटना और उनके इस निर्मकके परिधासन्त्रकम कि जिन लोगोंन जनपर बाकमण किया या बनके बिलाफ कोई कार्रवाई न की बाय अक्रवारी शटासकी सरकार और भारतीय राष्ट्रीय कांब्रेसकी करेन-स्मित ब्रिटिश ममितिने नाम सन्देखीका तांना बँव यहा। मनाकाताँ नेवली सीर पत्रों हारा विसे नने ये सन्बन्ध पाठकोंका परिचय वस सन्दर्भ समस् सहस्वपूर्ण बन्दुते कराते हैं जो है --- दक्षिण माफिकाबासी बतीस प्रमुख भारवीनोधे हत्तातारमे तत्त्वासीत मुख्य उपनिवध-मन्त्री श्री जोजक वैष्ट्यरसेनको सेजा तथा बृहत् प्रार्थनापत्र । उसमें बहुत बिस्नारके मात्र उस घटनाओंका वर्षन किया पया है, जिनमें नेपालमें भारतीय-विरोधी आन्दोलन खेटा बया और जिनके भनामें दर्वनके बिटिश नागरिकाने चनते बिग्ब एक सार्वजनिक भदर्चनका नंगउन किया। कुछ कोगोंका प्रस्ताव या कि नांबीजी दवा अध्य भारतीयीके उत्तरनेको "पूरी तरहम राक बनेक किए" इस सोव मनुष्योंको एक बीवार बता में जो "एएए-गीड़-एक तीत वा चार कदारांकी हो बीर सब भीग एक-दूनपर्के हासने हात न भुनाय अपना कोड हुए हैं।" प्रार्थनायामें यर जाने हुए गामीनीयर किये वहे आक्रमण्डा वर्षन दिया नगा है विकास जी कार्य मार्ग गाँ यो चा चातुर्से लगाई गई यो बीर जनार नगी मक्रमियों नमा अपन बन्धुर्य जैरी वहें भी जिनमें उननी असीलों भोट साई बान कर पण और पन्तुं। मिरने बक्त जा निर्देश उसीजा प्रदर्शनकारियोरि रापके सरकारका अतिनिधित्व करलेवारे प्रमुख अधि वारिवंदि वनके और अन्य नंबपार्ते होते हुए भी ब्रिटिश लोकपनके अधिक

की गई है। प्रार्थनावरका सन्त बोरवार वसीसीत होता है कि नेटासवानी मारतीकींक प्रति सरकारी नीतिवर किरो बृनिवादी करमें विचार किया बाय विदेश प्राप्तासमें मारतीयोंका बरबा क्या है इस सम्बन्धनें नई बोरवा की नावे और नटाक-सरकार हारा प्रस्तावित नारतीय-विराधी कानुनीकी बायन निया जायां ।

न्यायके प्रति गाणीजीकी सारमायर सबतक ब्रोच नहीं बाई थी। इस्पिए एमी विक्रोरियाके प्रति मारतीयोंन हुएयाने निष्ठा और मनिनची जो भावना भी उसे ध्यान करणक सिए गोणीजीन एतीकी होरक-अवस्तीके सबस्तका उपयोग किया। प्रशासीक साम नीति हा बावस ब्रावस गये स्तित्वकारमण्यात्र भी उस्पिर गाणीजी-महित इसकीस स्वनित्यति हस्ताप्तरों और जन्य माव्य कागव-वर्षीय मानुस होना है कि गुक-मुक्के वस कानमें बिटिस सामास्यक

नारगैभों हो बक्तिय अधिकार्से आ-इछ मामना पढ रहा या उससे बिटिय

प्रति गामीबीडा स्त्य नवा था। नन्तु । अकावके तमाचारी भीर सहायता नन्तु । ८ ६ ३ के पांचन जारतीय अकावके तमाचारी भीर सहायता निर्विक गंगळनक कारण गामीबीको नात्ती प्रमृत्तियों हिया अन्यायी अव्यव बदस कर वमाणकमंत्री कुकारको मार्चक कार्यते मन बाता पदा। व कार्योः स्वामाणिक निष्यते चला जुटाकके नार्यमें इस गये। उन्होंने नेटाल और हास्य

भागामा तरप्रदेश कामा जुटानके सामम इस गया। उन्हान नदान आहि हामा सामक विनित्र नायरिकोंक और कामीरदेशकोंक नाम से अमीने निकासी की और नार देशिक आफिकांक आरतीय नमात्रकों जो परिषक सेवा या के नव भी दन नदानें दो कुई काम नामधीनें मन्त्रितित केरनेवालीया वसन देशे वन्द्रप्ताहरूप मानीर्वास विरक्ष प्रदर्शन नंगिल करनेवालीया वसन दिया गया ना कि मन्त्रार जारतीवार नदानमें असेग वसने ब्यायरिकार का और वस नानेक विकास प्रिक्तिसामक सानन नमात्रकों नाम प्रदर्शने । इस वस्त्रार विनित्र कर निक्ता — नवासक सेव मन्त्र दियरिकार विवारी

श्रीर वस जानेक विश्व प्रतिकाशासक कानन वसावका वाम उपयोगी। एस वस्तता निर्मित कर गिरमा — मरामक रोग मुक्त विशेषक (प्रारंशित विश) ध्याचा राहामा विश्वक दिन मानेकि विश्व श्रीर ज्यानी विश्वन (श्रीरवाम विला) के नामें। इन नवें कानुनीन विनिध्न नामाज्ञास नामें ती नाने भागीयोक्ता प्रतीक मेवियार समावें पर याता। मानोजाने विशेषका विश्व जीवार जायोग कामाया। विश्व विश्व पर सुनन्ता वार्षेते को गांधीजीने इन कानुसर्कि मानन्यमें दावासाई नौरोजी विकित्स वडरवर्त और इंग्लेक्डे क्या कोकनायर्कीको क्रिके को वे सब वहिल सारिका वार्ती भारतीर्मेकी न्यितियर इस गये जावनगढे ओरवार प्रतिरोजक वीपने हुए सेखे हैं।

स्राभार

ा नक्को सामग्रीहे किए इस निम्मीक्षितनहे खर्चा है गांची स्मारण निम नेव्यक आकाद्वक तथा बन्निक मास्त्रीय कार्यम कमेरीका पुरत्ताच्य नई न्त्रियो नक्षीकर रूप तथा शावरावी सायम सम्मार्थ व स्मारण इस्ट सम्मार्थाय कार्यास्त्र कार्यास्त्र प्रत्यकास्य तथा इतिया स्मार्थित पुरुत्तकास्य तथा इतिया स्मार्थित पुरुत्तकास्य

न्द्र राज्या नवश्वक राज्याच्या सावस्त्रण सावस्त्रण व स्थार दूरन सम्माराबाद करानियक आधिक पुल्वकासय चर्चा इंदिया साधिक पुल्यकास्य रोदन प्रिटारिया नचा पीरप्पनित्त्वचय सावर्गक्व दक्षिय साहिक सम्बद्ध सगाम ठया परिवत्ती संगारती स्वत्वारी यो स्थानसी धर्नुनर्वा सोधावसी ठण्यारखी क्षत्रई सारत स्वक्त मसिति पूना और ममाचारण्य भगासी

रिमापिन स्टेर्नियन नाभ्ये तत्रह यहन्त नाह हिष्या हिन्दू नवा हरिया।

मनुगंबान बीट संदर्भरी मुनिवाएँ देनैक छिए गुजरात विद्यातित वेपान्य
तथा गुमरात नमावार नार्यास्त्र बहुमदाबाद स्त्रीयान्तित वृत्तरहास्त्र व वान्ये
स्थानिक सुन्दर नमावार तथा गुजराती रक्षेत्र कार्यास्य बच्चे राज्याय
हुन्दरास्त्र तथा समन्द नात्रार तथिक स्वास्त्रय वनकह्ता और विज्ञा
न्युवियम युन्तरहास्य संदर सी हस्तो व्यवस्त्रार नाय है।

पाठकॉको सुचमा

इस लग्डमें संपूर्ण याची बार्गयके पहल खण्डका जो सन्दर्भ सुनित किया गया है बहु १५ समस्त १९५८ (२४ भावन १८८) की प्रकासित र्मरकरचका है। बड़ी *भारतच्या*का सन्दर्भ बतामा गमा है नह गांबीजी-इत मृद्ध नुवरानी पूरतक लाचना प्रवीपी व्यवचा आत्मकवानी नवबीवन प्रकाशन मन्दिर, महमदाबाद हारा १९५२ में प्रकादित नानी बानुतिका है। माजन-मुत्रके औरपर बताई गई संस्थाओं हे मान विये रक्त रूप संकेत

का अर्थ है नाबरमणी संबद्दालय अद्दमसाबादमें उपकरन मूल कामजनात्रोंकी कम-मंच्या। इन कावन-पत्रींकी फोटो-नक्कें गावी स्मारक संब्रह्मक्रम गर्दे दिस्कीमें मुर्राक्षत है। इसी प्रकार, जी इन का वर्ष है ने मुख्य कायन पत्र को नेसनम बार्काइण्ड नहें दिस्मीमें उपसम्ब है। उनकी भी फोरो-मक्सें

गाबी स्मारक समहालय मई दिल्हीमें सूर्राजत है। सी इक्ट्र संकेत जन

कागब-प्रजीका है जिन्हें "सम्पूर्ण गांची बाहमय" (क्रमेनरेड वर्क्स बॉफ महात्मा बापी) व वार्यकर्तांबोने प्राप्त किया है। उनकी फोटो-मक्टनें मेसनक बार्कास्थाने उपस्पत्र है।

विषय-सूची

मुमिका

साभार पाठकॉको सूचना पृष्ठ पौष

म्याख

बारह

366

۶4

nearer gran	
चित्र-मूची	सोसह
१ दक्षिण आफ्रिरावासी ब्रिटिश भारतीयोंकी कप्र-गावा	
हरी पुश्चिका (१४-८-१८९६)	
२ टिप्पनियाँ विश्वन बाधिकावासी बिटिश भारतीयोंकी	
कष्ट-गावापर (२२१६)	٩
३ वस्वईका मापस (२६ ६)	
८ पत्र फर्युनकी सोरावजी ततेयाण्यांको (१ -१ - ६)	37
५ नेटाप-निवासी भारतीय (१७-१०-६)	• २
६ पत्र गी क योजनेको (१८-१ -९६)	40
 पत्र कर्नुनती सोरावत्री तलगारपोकी (१८-१ -९६) 	6
८ प्रेशक-पुश्चितार्मे (२६-१ - ६)	, ,
९. महागका भाषण (६-१ - ६)	, ,
१ पामवादका सन्देश (५-१० ६)	***
११ पत्र फर्रुनत्री साराबत्री समयास्मीको (५-११- ६)	534
१२ स्टट्समैन क प्रतिनिधिकी मेंट (१११- ६)	284
१३ दक्षिण माधिराक भारतीय (१३-११- ६)	4.3
१४ "इस्प्रियमैन के प्रतिविधित्रों मुलाकान (११-११-६)	442
१५ पूनार्थे भागम (१६-११- ६)	ţ¥s

१६ तार बाइनरायस नाम (३ -११- ६)

1255)

१७ वेक्षिण आफिराके भारतीय (१ -११- ६) १८-भारतमें प्रतिनिधित्व - बास्तविक नर्वता हिनाब (दिसम्बद

१६- कूरनैर जलजार बुनाशत (१६-१-१८ ३)

श्रीरद २ पत्र महान्यायवादीको (२ ~१~९७) २१ क्रॉममें बहाबस स्टब्सेपर (२८-१~९७)

146

· २२	पत्र ब्रिटिश्च एजेंटका (२९-१-९७)	168
23	पत्र विक्रियम विकास हैटरको (२९-१-९७)	161
	मारवर्षे बकाक (२-२-९७)	128
	हिन्दुस्तानमें नहा दुका ल (३-२-९७)	7 7
2		* *
3.	चर्नेगरेश्वकोंसे स्पील (९-२-९७)	* 4
	पत्र भी कैमेरॉनको (१५-२-९७)	1 5
2	प्रार्वतापत्र सी चेस्वरकेनको (१५-३- ७)	1 0
è	पत्र भी अकेन्द्रीडरको (२४-१- ७)	***
* ?		1 42
	प्रार्वनापन नेटाल विवाससमाकी (२६-१- ७)	101
11	पत्र जीपनिवेशिक सचिवको (२६-३- ७)	145
	प्रानेंनापच नेटाक विचानपरिपदका (२६-६-९७)	* *
	नटानमें मारवीयोंकी स्निति (२७-१-९७)	**
	पत्रं फर्नुनजी सोराजजी तमेयारबाको (२०-१-९०)	114
	पत्र ब्लुमेड-समितको (१~४-९७)	116
	मारतके कोक्सेवकॉके नाम (२-४-५७)	116
	पत्र कर्मनती सोरावती सकेनारसको (६-४-९७)	**
•	पण जीपनिवेशिक समिनको (६-४-९७)	3.
68	पत्र जूललैंड-सभिवको (७~४-९७)	4 4 5
	माप्तीनोका सनाम (१३-४-९७)	185
X	पन कास्सिम इनस्यू मैनकीतको (७—५-९७)	48
	पत्र ए एम कीमेरॉनको (१ ⊶५–९७)	#4
	, पत्र ब्रिटिश एवॉटको (१८~५~९७)	₹4.
44	पत्र बावसकी सियास्त्रानको (२१-५-९३)	344
٧,	मनिनन्दन-पत्र रानी निस्टोरियाको (३-६-९७ क पूर्व)	4 A
	पत्र वौपनिवेधिक समिषको (२-१-९७)	144
	८ तार भी चेन्नरक्षेतको (९~५–९७)	*44
٩	माध्यीय बीर हीरब-बयन्त्री (२४-६-९७)	344

५२ पत्र प्रार्थनापत्र भमते हुए (२~५-९७) ५३ प्रार्थनापत्र थी चेम्बरकेनका (२-७-९०) ५४ भारत व इंग्लैण्डच कोक्सेवकॉका (१ ->- ३)

५१ मारतीय जुनिकी पुस्तकाक्य (२५-६-९७)

६२ भाष्टीपाँका साजनव" — २ (१५-११-९७) ६६ भागिविधिक समितको भूत्तर (१८-११-९७) ६४ मारतीय और प्रवासी-अविशिवन (१ -११-९०) ६५ पत्र फर्नुनजी सोरावजी क्षेत्रारसाँको (१७-१२-९७)

मामपीके नावन-मूब

टिप्पविद्यो

गारिका

वारीजवार जीवन-वृत्ताल

५५ पत्र टाउन क्यार्कको (३--- ३) ५६ सरकार बनाम पीताम्बर तबा अन्य (१३-९-१३)

1750

५७ भी चेम्बरनेनका मायच प्रवानमियाकी समार्मे (१/-९- ७) ५८. पत्र वादामात्री नौरोजीको (१८-१-९७) विविधम बेडरबर्नको (१८- -९०)

६ "भारतीयों शाक्रमण" — १ (१३-११-९७)

६१ पत्र औरानिवेशिक समित्रको (१३-११- ०)

196 725

٧	
ć	
¥	

145

11

148

166 165

15

158

	¥
٢	٩
•	•
¢	1

* 18

* ? ?

410

x44

हरी पुस्तिका

धोलकेक नाप पत्र

मार्च २७ १८९७ के प्रार्थनापत्रका अध्विम पुष्ठ, जिससे मारवीकोंके मेने प्राचनापचीका प्राविनिधिक स्वक्य प्रकट होता है

चित्र-भूची

मुक्कचित्र

40

२२२

₹₹1

144

- वर्षत बन्दरगाइका चाट उन्नीसकी सवीके अस्तिस दसकर्मे
- भी चेम्बरफेनके नाम गार
- मारत व इंग्लैंबने सोक्सेनकॉको पत्र 1/6
- बाबाधाई नौरोबीके नाम पत्र 123

१ विकास आफ्रिकावासी ब्रिटिश भारतीयोंकी कष्ट-गाया

मारतकी बमतासे भपीछ

योशीये बरेख कारणीयदा जून ५ १८०६ को निज आफिस्से माराजी शायके चित्र स्वामा हुए में । दक्षिण आफिस्साली सारागित सम्माने प्रिटेमाने गाँहे वह निर्मापती सीची वी वि वे दक्षिण आफिसी मारागिताची ब्ला-मारा भागाने आदिकाली की कलालं सामने पेट को । वांबोरीने काने बलामा पांच मामने मारातामाने स्व दिशाने जो सम्मे प्रकास कर्षायां की वह भी मीचिंदिन बमार ह मिरिट्रा हिन्दिन हम एतवस आमिक्स (प्रकास कार्यक्रमाली दिन्दिए मारागितीची वह-माना) मामाने वक पुनिलकांके मारागित्रकों । यह पुनिलक्ष कार्यक्रमाली करित्रकारी सीचे मारागित कराया पार्टी क्षीम निर्माणे (दर्श प्रनिक्का) के मामने प्रनिक्ष हो । कार्यो मीच बहुत भी और योगीसीकी शीव ही सम्मा वृक्षम सेक्स्पन मास्वित्र करना पर्या ।

प्रस्तावना

महासके पर्वपणा-सकरकी समामें इस पुस्तिकाकी प्रतियोक्ति किए को श्रीमा-समयी तुर्व उसके कारण द्वसका दूसरा शंकरण निकालना जावस्वक हो गया है। वहाँ जो दूसर दिलाई दिया वा उसे कभी मुलाया नहीं जा सकता।

पुस्तिकाको एस मौपसे को वार्ते सिख हुई—विशव आफ्रिकाकाको भारतीलेकि कस्टीके प्रस्तका महत्त्व कितना है और समुद्र-पार निवासी वैस भारतीलीक कस्टीके प्रस्तका महत्त्व कितना है और समुद्र-पार निवासी वैस भारतीकी महाईमें भारतीय करवाने कितनी दिकासी विसाह है।

बाया है कि यह दूपरा संस्करण भी पहनी बानुतिके समान ही भीमतापूर्वक बार बारवा बीट यह किंद्र हो भावेगा कि इस वियम में कतताकी रिकरणी कामम है। कराचिन् दुवहोंका मुख्य दागन सचार ही है, बोर यह परिकार का स्वस्था परिकार एक सम्बन्ध है।

यह पृथ्तिका उस करमकी पूर्तिका एक सामन है। इसमें को परिधिष्ट' लोड़ किया गया है वह प्रवस सावृतिमें नहीं चा। नेटालके एवेंट-जनरकत रागरको प्रतिनिधिको यो वस्त्रस्य विभा है उसके

र प्रत्याच्या स्वयः परिशिष्यः ने तीरार कोई बल्हा कोगे वहाँ गई थी। बह क्लेन वहा हालारित है जो हह वह पर प्यत्तु, हाजनो बालकी हाज ही है नेपापेड पोडंट-जाराप्ये बतावा है है हुए होत्याने बतुष्येगारी जाएग्य होस्ट · .

कत्तरमें यह बंध मदासके मायनमें पड़कर मुनाया गया था। इस तरह यह महासके मायगना बंध है।

पुरिकाल ने नेदाल प्रवासी-कानून धंसाधन-वाधित्यक्ता निक दिया पता है। दिधम बाधिदाशादी भारतीयोंक दुर्मायमं उसे एमालीयों व्योद्धित भारत हो पहें है। तारत निवेदन है कि हम प्रमानक हमारे तोकिटिक व्यक्तियोंका बविकते अधिक बारीकीके छात्र बच्चयन करना शाहिए। बीर अवतक बाँव निवास एक हो बाये या एस्टारी पहाप्यारी नेदाकको पत्रहर घेतना स्थियत न कर दिया बाये सप्तक हमें पासित्ये नहीं वैक्ता माहिए। भारताको स्वयस्य एक प्रस्ताव स्वीकार किया है। उसमें बनुरोग दिया गया है कि बमर बन्दित कर दिया जाते।

कम्बन्ता १-११-१८९६

मो०क मौमी

यह एक नगीक है — रिधन सारिकाशाती एक जाब माळीघोंकी ओरने माळाकी बनताके नाम। वत देवमें समामीकी माळीव प्रवाको बिन मुती बतोंने विक्यों वस करती पहुंची है, वन सकते बातकारी माळाडी बनताकों देनेकी किम्मेवारी नहीं जाळीव समामके प्रमुख सहस्वेंनि प्रतिनिविनोंकी हैसिस्तर से मुसे सीनी है।

बिधय अधिका अपने-आपर्य एक महाबण्ड है। यह बनेक पान्योंमें बैटा हुआ है। उनमें से नेटाक और केप आफ पुर होप समाजिक सासना जीन कामिसे -----बुम्मेंड और अध्या आफिकी प्रचानम्य मा हाम्यवाच आपेंक की स्टेट और चार्ड टेफ्टिसेक्से कम या स्थादा संक्लामें मास्तीय वसे हुए हैं। यूपेनीय और कन कामिसेसिक अनकी निवासी तो बहाँ हैं हो। पोर्नुनीय प्रवेची कर्षाय डेलायोमान्ये बैसा और मोचानिकमें जास्तीसीकी बावाची बहुत की है। परन्तु वहाँ मास्तीसीकी सर्वसानाय बनतासे करा

छ ४४ म. नमसीन समाननी शक्कियोगचा सानित बरनेने किय. "से हाक दोनेताने क्युच्केमों समाह दोती है (देकिय दशक्कियायी क्यूट ३६) लीर महस्ता। सादच मी इक्ष ११४−१९९)।

ર દેવિજ 18 ૧૮~૧૧ :

सेटार

मारतीय बृष्टिमे विकाल आधिकाका सबसे महत्त्वपूर्ण प्रदेस मेटास है। उसमें मूळ निवासियोंकी संक्या रूगमन चार काल मूरोपीयोंकी कगमन पनाध हमार सौर भारतीयोंकी सनभग इनकानन हजार है। मारतीयोंने क्यामग १६ इस समय गिरमिटिया है क्यामग ३ ऐसे हैं को किसी समय गिरमिटिया वे और इकरारनामेसे मुक्त होनेके बाद स्वर्तत्र वपसे वहीं बस नमें हैं। सममय ५ कोग न्यापारी समावके हैं। न्यापारी समाजके लोग अपने सर्वेंसे बहुर वामे वे। उनमें से कुछ अपने ताब पूँजी भी साथे में । गिर्चामिटमा भारतीय महास और क्ष्क्करोकी मजहूर समावसे साथ गये है। उनकी संस्था कममय अरावर है। महाससे आये हुए कान माबारणव-तमिकमायी हैं अवस्तें से साथे हुए हिन्दी बोसते हैं। इनमें स्थादावर कीय हिन्दू है परन्तु मुगलमानोंकी संबंधा भी अन्ती-खासी है। वारीकीसे देखा बामें तो में जाति-बन्बन नहीं मानते। इकरारनामेंने मुक्त हो बानेपर में बागवानी या मूम-मूनकर सम्बिमी बेचनेका रोजबार करते हैं और बो-तीन पाँड महीना कमा सेते हैं। इक बोप घोटी-मोटी इकार्ने बाक सेते हैं। परन्तु कुनानशारी राजमुज तो उन पांच हजार मारतीयों है ही हाथमें हैं जो मुक्सत बन्दहैं प्रदेशके मुसलमान समाजसे जाये हैं। इतमें स कुछना कारोबार जच्छा है। बनेच बड़े-बड़े मुस्तामी है और दो तो सब चहाय-माक्षिक भी सन मध है। एकके पास मापसे चलनेवाली तेल-वानी भी है। ये लोग मा दो मुख्यके है या बम्बक्ति आसपासके मा पोरवन्यरक। सूरतने बाये हुए अनेक न्यापारी अपने परिवारोंके सान वर्वनमें बसे हैं। इनमें से ज्वादावर लोग अपनी भाषाएँ किसने-पहनेका सान रखते हैं। यह सान इसरे औप जितना भगधने दै जसमें ज्यादा है। ऐस सिसे-पढ़े कोनोंमें सरकारी सहायवाने आवे हुए मारतीय भी धारिक है।

भेने नेटाककी विचानसमा और विचानपरिषक्के तरस्पेकि नाम यो एसी निष्ठिमी किसी वी उसका निर्माधितिक अंश में नहीं पहचून कर रहा हूँ। इसका बहेम्स यह विचाना है कि इस उपनिवेचका सामारण मुरोगिय समास माराधिकि साम देशा स्पत्तार करता है

र मुख्यातके किए देकिए क्षण्य र पुर रूपर से रूदर।

ताधारण कोय भी जनसे डेच करते हैं जाहें कोसते हैं धनपर पूकते हैं और अस्तर उन्हें पैरक-परिपंति बाहर बनेक देते हैं। अववारोंकी तो मानो उनकी शिन्हा करनेके किए अच्छेसे बच्छे अंग्रेजी कौसमें भी काची बोरशर सन्द की नहीं मिस्ते। पुत्र दशहरमां सीमिए — सम्बा धन जी सनाजका करेजा ही साथे का रहा है; वे धरोपजीयी ; ^र सरकार, मृए सर्व-वर्गर एमियादिक । वृत्रती और काती कोई चील निराती सकाई न निकली कू कहाते मुए हिन्दू; बरा नाकतक वराइयोंसे बीता का तन्त्रन, कोर्तुवा दिक मरकर प्रतको का दिना चयक वर्षे कुलीकी सुठी कवल और वर्त साथार । अजवार वर्षे सही नामाँसे पुकारनेते समनय एक स्वरसे इनकार करते हैं। उन्हें रामीसामी बड़ा बाता है जिस्बर सामी वहा बाता है जिस्बर कुको जीर अनेक मैन [काका आसमी] बहुकर पुकारा जाता है। और ये संतापकारक जपानियाँ इतनी जान बन यह है कि इनका प्रयोग (करते कम इनमें से एक -- इसी --- का तो अवस्य ही) मशक्तकी पवित्र तीमार्ने भी किया काता है—मानो कुकी कोई कानूनी और व्यक्तिबाचक नाम है जो किसी भी भारतीयको दिया जा सकता है। लोकनिश्ठ व्यक्ति भी इस सम्बन्ध स्वच्छ्यनासे इपयोग करते विचार देते हैं। मैंने बक्तर ऐसे कोपोंको भी इन बुक्तवार्या क्रकों --- कुकी क्लार्क -- का प्रयोग करते तुना है, बिन्हें क्यावा बच्छा जान होता चाहिए। शुलपाहियाँ भारतीयोके तिस् गृहीं है। रेक्ने-कर्मचारी भारतीयोंके ताथ भारवरोंके जैता स्थवहार कर सकते हैं। भारतीय बाहै कितने भी स्वच्छ क्यों न हों उननिवेद्धके प्रत्येक गोरे व्यक्तिको छन्हें रेककर ही तत्ताथ हो जाता है। जीर वह तत्ताप इतना होता है कि ने बोड़ी बेरके किए भी मास्तीयोंके साथ रैक्क्याविके एक ही किनोने

र तुरू लग्नेजी मरितें "सैन्क्सर " यश्यका अलोग किया वर्षा है, जिसका नव दोगा 'शान्त्री' व 'कनुते' ।

र मूल प्रतिमें सम्बन्धा और सेवी दिखाई।

र मूच मित्रमें करों को बालन और है, किन्दे हरी पुरितकार्य होत विश्व कर्क है। देशिज प्रमुख १ एवं १६६।

सक्ता पहला नहा करता हाठकाक वर्षात्र भारतायांक लिए नाय है। सार्वजनिक स्नानवृह भी सार्वोद्योवे किए नहीं है—किर वे भारतीय कोई भी नहीं नहीं सारास्कानून गैर-जरूरी तीरपर प्रतीकृत है। जनतर वह प्रतिब्दित भारतीयोंको बड़ी सङ्घनमें सल वेता है।

मेंने यह उद्धरण इश्रिए दिया है कि मेरा वह वक्तम्य सगमम डेड वर्षसे श्रीसम् वाकिकाकी जनताके सामने हैं और उसपर प्रायः प्रत्येक श्रीमम बारिकी समाचारपत्रने मुक्त क्यसे अपने विचार स्पत्त किये 🐔 फिर भी अवतक उदका कोई बंबन नहीं हुआ। (सचनुष ता एक पहने उसे पसन्द करते हुए उसका बनुमोदन भी किया है)। किर, इस बेह वर्षकी अविधर्में मैंने ऐसी कोई बात भी नहीं देखी जिससे भए। वह खमाल बदस जाता। तकापि बताबा बाता है परम माननीय चम्बरलेनने उस बक्तब्यक ध्येयक शास पूरी महानुमृति रखते हुए भी भानतीय बाबामाई के नैपूलमें गये सिप्टमन्डमसे कहा है कि हमारी धिकानतें मानतात्मक ज्याबा है ठीस और बास्तिनक कम है। और यदि उन्हें बास्तविक धिकायतका कोई उवाहरण बताया जा सके को ने बैसी विकासवाका निपरास करा की। टाइन्स नाक इंडिमाने जिससे इमें बहुत महायता दी है और पृथ्वापूर्वक इमारी हिमाबत करके इमें बस्यन्त बामारी बना मिना है हमारी शिकायवाँको भावनात्मक बतानेपर सी भेम्बरकेनकी कान्य-मकामय की है। फिर भी मक्की विकायगाँका प्रमान देनेके किए और भारतमें हमारे पसका समर्थन करनेवाकोंके द्वाव मजबूत करनक किए में स्वयं अपनी और उन कोगोंकी धाली देनेकी इवाजद चाहता हूँ निर्दात सुर मुसीनतें सेथी हैं। सागे दिये जानेवाले प्रत्येक विवरसका एक-एक सक्त रच-मान सन्देहके भी परे सद्दी सिद्ध किया जा नकता है।

देशीमें पिछते वर्ष किमानको समय गीरिके एक निरोहने सवा मुदनेके लिए एक माणील बानु-संवार (स्टोर)में लाग कगा दी की। इस गिरोहको करा मी जोतिल नहीं किया परा। या। यो लट्टाक्का हानी साथना मो बीटक सादिकी माणीय स्थानक एक बरवरण सदस्य सीर एक बहुन

र वर्षा मूक प्रतिका गढ राज्य क्रीह दिवा नवा है। देविय क्रम १ एक १६१।

र प्राप्तको बौरोको ।

माकिक हैं मेरे साथ कैन्द्रसकुक रनेधन तक यात्रा कर यहे थे। वे बाक्सी
गादिमों नेटाक आगोर्क किए नहीं करत नदें। बहुँ कोई उन्हें रोटी मोर्क
नीच्ये भी दैवार ग हुया। होटक्सोकेंन उन्हें होटकों करता नहीं दिस्स
नीर वर्जें रात्रामर ठामें ठिट्टाकें नोमायात्री (कोण)में ही गी यहा
गया। आस्कारेट उस हिस्सेकी सर्दी भी कोई मनावक नहीं है। एक स्पर्म
प्रमुख आधीर्य स्टान्सन हात्री मोहम्मस हात्री बाश हुए दिन गर्हत प्रमुख
प्रायोग सार्व्यतक हात्री मोहम्मस
हात्री बाश हुए दिन गर्हत प्रमुख
निकाल दिया यदा और उन्हें तीन गीककां रास्ता गैदक दय करना गहर
कारक यह सा कि उत्तर गांव परवाना (श्राह) नहीं मा। इस हरकार्य
नतर हुया विदेश हरकार्य कीए परवाना (श्राह) नहीं मा। इस हरकार्य

भी सर्वमंत्री नामके एक पारसी सर्वन अपने निवन्ने भी ज्यादा प्रदार हैं और वर्तन कारपोरेचनको दूसर्कि समान ही कर बेते हैं। परस्तु में अपने स्वारमके किए कारपोरेचनके चार्वजनिक स्थान-गृहमें टकिय स्थान गहीं कर सके। फीरव स्ट्रीटमें गत वर्ष किसमसके समय कुछ नीववानीने मारधीय वस्त-भंडारोंमें बलते हुए पटाचे फेंडकर बल्डें डुक द्वारि पहेंचाई थी। अभी शीन महीने पहले जहाँ सबक्के एक अन्य मारतीय बस्तु मंबारमें कुछ नीजवार्तिन मोधनसे सीसेबी एक बोकी फेंक थी थी। उससे एक प्राहक भारक हो भवा और प्रसन्धी जीव जाते-वाते वन्धी। इन दोनों भरनाजींकी प्रवास प्रवित्त प्रारंपिटिंटको की पहुँ । उन्होंने नाया भी किया कि वे वो कुछ कर उन्हों हो। उन्हों की पहुँ । उन्हों नाया भी किया कि वे वो कुछ कर उन्हों हो। उन्हों कर उन्हों नाया के उन्हों नाया प्रवास किया। पूनाई नहीं किया। किर भी शुनिटेंडेंट महावस एक बारपायी स्वास की है। वे बर्जने के सर प्रापानीय संख्या करते के उन्हों की अपन की स्वास प्रवास की अवन विरोधियों के सामने वे बेगारे क्या करें? क्या उनके माठहुए वर्णनारी बहमार्थीका पता क्यानेका कम्ट कठायेंगे र वज वायक स्थवित पुलिय-पानेमें पना छन पहले तो पुलिसवाले हुँस पड़े और बादमें उन्होंने उससे कहा कि बदमासींकी पिएल्वारीके किए मिबस्टेटसे बार्स्ट के बाबो। दरअसक ऐसे मामलीमें जब पुष्टिसवाका अपने कर्तव्यका पासन करना बाहता है तब क्ये किसी बार्टकी ककरत नहीं होती। मेरे नैटाक्से रवाना होतेके एक ही रित पहुने एक मारतीय मह पुस्पता कहता श्वाफ बेबाय कपडे पहले बर्बतके

र देशकर सम्बद्धाः प्रदेशः ।

तुका मार्गकी पैरक-पटरीसे का एहा था। कुछ मूरोरीयंति छसे पटरीसे बकेक रिया। बकेकनेका कारण मनोर्टनकर दिवा और कुछ गहीं था। यह वर्ष तेनक के एक मौब एस्टकोर्टक मतिसहेटने करानों कहे एक माराधीय कैमीको उससे निकल्या रिया का। उसकी टोपी करण उसार थी गई भी की साथ तो तिर वापस के बामा गया था। उसका यह सास दिवा का कि टोपी उसारक माराधीय प्रमाके विकट है और इससे उससे हुआ मारावामिय प्रमाके विकट है और इससे उससे बुका गया। यरणु ग्यामानीयंति वैसला मुनाया कि उसने मनिस्दर्भ विभाग गया। यरणु ग्यामानीयंति वैसला मुनाया कि उसने मनिस्दर्भ है नियतसे कैन्द्रुक दिवा उसके किए उसपर धीवानी मुकरमा गर्दी कमाया का सकता। यह हमने कम्मुका नामय किया उस समय हम बातने ये कि निर्मय निर्मा निर्मा का सम्मक्ता हो। परलु हमारा उद्देश्य यह वा कि मानकेकी पूरी काल

बीग हो बाये एक समय जपनिनेतामें यह प्रस्त बहुत बहा था।
एक मार्जीय कर्मकारी जब अपने अनिकारीके साथ नियतकारीन बौरे
पर जाता है को होटलोंनें स्थान नहीं मिलता। बोरे सौंपदियोंनें ठहरणा
पहता है। जब में नेटालोंनें स्थान नहीं क्या समय पिकायत हस हरतक
पहुँच माँ थी कि बहु स्थानगर ने देनेका मान्नीरदापूर्यक विकार कर रहा था।

वीधिकना नामके एक मूरीयिक सम्बन्ध किसीने एक जिम्मेदारिके परपर काम करने थे। वे नन कमानेके इरावेधे नेटाल वा गया ने एक सम्बन्ध पापना बतायाव है। उन्हें पत हारा बवासावके स्थानपर नियुक्त किया सथा वा। परपु जब उनके मालिकने बेबा कि वे पूरे गोरे नहीं है डो उनके

सवा सा। वर्ष्णु जब उनक मास्त्रन बसा कि व पूर पार सहा है हो जबन नहीं नीकरीन करण्यक कर विचा औ दूसरे पूरीपायकों को भा बाताता हैं जो बारों में प्रित्त करणक कर दिया है दारिक्य समावे नहीं वादे। सह प्रशाहरण मैंने यह बतानके निए दिया है कि कराइस में स्वत्त करने कि तर है कि में हैं किनने ही उदाहरण गिना सकता है। वरण्यु बाधा है यह बतानके पिए कि हमारी पिताबर्ध सम्मी है, दाने बताहरण मान्ये होंगे। मोर बीमा कि इंग्लेग्स एक हमारी है पन वह समावे किया है "हमके नियासनक नियास है में समावे हमारी समावे हम हा स्वत्त करने हमारी करने हमारी समावे हम हमारी समावे हम समावे स

नव ऐने मानतीनें हन कार्रवाई निग तरहाँ करें ? चया इन प्रत्येक माननें भी चेम्बरनेनने पान या बाकर बीतनिर्वेदिक कार्याक्रयने विदार मात्रवादाना मात्रवादी हो होते-होगी दिवालों मुननेन नार्यान्य नवीत दें "होते-होगी रार्वोद्धा प्रदोस मेने चानवस्तर दिया है नवीति मैं संबूद करता हूँ कि इनमें से ज्यादावर मामले छोटी-छोटी मार-पीटों सीर बसुविवालिं ही है। परन्तु वन ये फिल्प-नियमधे होते हैं तो कतने बड़े बन बाते हैं कि हमें बनका संवाप निरस्तर बना रहता है। बरा किसी ऐसे देशको कत्ररता कीविए वहाँ जाप कोई भी हीं अपने जापको ऐसी नार-पीटस कभी भी मुरक्तित न समझते हों नहीं जाएक दिस्तमें सदा वबराहर एसी हो कि बढ़ि कभी भी किया यात्रापर तम तो पता तही तथा हो जानगा बहुर एक राहके किए भी बायको किसी डोटकमें स्वान न मिल सकरा हो। बस इससे मापको नेटाधकी उन हाक्त्योंकी तसबीर मिन बापेयी जिनमें इस जिल्लाी अग्रर कर छहे हैं। मेरा विश्वात है में यह वह तो कोई जीत वयोक्ति न होती कि अपर भारतीय छल्य स्वायाक्योंका कोई न्यायाचीछ विश्वन जाधिका भागे और जसने पहलेसे कोई विशेष प्रवन्त न कर विमा पालन गांधका नाथ नाथ राष्ट्र प्रथम प्रश्निक नहीं दिया जायेगा। पूर्व यह हो तो बोयद वसे भी कियो होटकों स्थान नहीं दिया जायेगा। पूर्व यह की निस्त्य है कि यदि वह शिराई पैराक पूरितीय पोकामसे कैंग्र न की सो बसे पार्लाटाउनमें प्रिनीरिया सन काफिटी के डिक्बेर्स माना करती पहेंगी।

मैं जातता हूँ कि अगर को जवाहरण दिने गये हैं वतमें से कुक्यें मी चैम्बरनेत सामानीमें राहत नहीं पहुँचा सकते। प्रवाहरणके किए, मी डीसिलनाके मामबेमें। परन्तु सच बात साम है। मं बटनाएँ इसक्रिय होती बातनमार नामका। परापु वस बात वाल है। व भरमाय स्थानस् होते हैं है परिवाद बारिकारों मार्ग्यापिक विकास से स्थान यहां वसा हुआ है विकास कारण मार्ग्यापिकी रिकासरोंक प्रति भारत और जिटेनकी बरफारोंकी पराप्तीयों के प्रति भारत और जिटेनकी बरफारोंकी परार्थीयों के साम नामकीका नाम तोंग्राप्ती है। मार्ग्यापिक वेपार्य नामकीका नाम तोंग्राप्ती मार्ग्यापिक वेपार्य नामकीका नाम तोंग्राप्ती मार्ग्य महिल हो पत्राप्ती है मार्ग्य पीत बहुत हो पत्राप्ती है। प्रति प्रति के स्वी पत्राप्ती मार्ग्य कार्यों के विवादायका पार्यक करते हैं। प्रतिप्रता सम्बे और निकारट अपने दक्षिण बारिकावादी और बाद दौरने मेटालवासी । स्क्रिय वादिकाची एक मारिम व्यक्तिक होता ।

दक्षित्र मानिकानाची मिटिश घाराँगोत्री कड-माना ९ है। कठवरसे निकलनके बाद वही बादमी और भी ज्यादा कराने-समकानेका

स्थितिमें बाल बता है। इस ताबुके कारनामें अववारोंमें प्रकाधित होते हैं ता दूसरे कोरोंकों भी वैती ही हरकतें करनेकी उत्तेवना मिकसी है। इसिम्प नेटानमें हुए जान तीरपर जनताके सामने इन बातोंका जिक भी नहीं करते। इस तबुका पहला जमा हवा हेप-माच सारे बीवाण जाविकामें

क्त अस्तियार कर देता है और धिकायत करनेवालेको वड़ी अङ्गतकी

भारतीयकि किए विशेष वपने वर्ने कानुनीने बतारा पया है। इन कानुनीका नव्य बहुकि भारतीय लगानका नीचे गिराना है। नेटाकका महान्यायवादी (जटनि-जरक) भारतीयों को स्वेद "कक्कहार बीर पनिहारे" बनाकर रक्ता बाहुना है। इने दक्ति आफिकाके सारिवाधियों काफिर सारिवाधियों कर्ने स्वर्ण काफिकाके सारिवाधियों स्वर्णास्थ

वावियों — के बर्नमें एका यदा है। उपने भारतीयोंकी मान-सर्वाशकों स्वाच्या रत परोंनें की हैं "दन मारतीयोंकी स्वातिक व्योगोंकि निकाबिकी फिए सन्दर्भ स्वाक्ट स्वाया यहा है विधिक्त प्रायोगों निम्न बरित्तन माहिकी राज्या निर्मात दिना वा पदा है उनके सेच बन बानेके किए सही।" सार्टेज प्री स्टेटकी नीडिको बुगरे प्रायोगें बनती नीडिका सावती बनाया है।

मारिक की स्टेटकी मीडिका हुगर एउन्योंने करनी मीडिका नाबती बनाया है। बीर उम मीडिने उम एउन्यके ही प्रमुख पत्रके ध्यमोंमें "मार्टीयोंको नाफिकी मारियानियोंकी कोटिने रावकर ही उनका वहां पहाना स्वास्त्रक कर दिवा है। स्वार मार्टीय जनता शाबनान न रहे तो नार्देव थी स्टेटने जो कुछ किया है जो कुछरे एउन्य भी बहुत बोड़े नयवर्षे हैं। युधा कर दार्वेश हम उमस हम एक नाकुक नकल-कामने पुत्र रहें हैं। हमें मार्ग मेरिटी प्रतिकर्षों भीर और-कार्यक्रिक कानुनों हार जकह रहा

मया है।

बन में बतानेता कि नगर बताये हुए हेथ-माबको किस स्टब्स कामूनका
टोम का स्थित गया है। कोई मारतीय को रातके बाद स्वतक करने
पासे नहीं निक्क सकता बदक कि अपने पास किसी करनाया है।

पाये नहीं निरुक्त सकता जबतक कि जनके पान किसीचे शतायवार हथा जन न हो निराने पानुस हो कि यह किसीक निर्देश ने साहर निकता है या जबतक मह सनने बाहर निकलनके बारेसे टीक-टीक कैबियण न दे सके। यह पानुस गिर्स जारियामियों और भारतियोगर तथा है। बुलिन सनने विशेषण काम सेनी है और नामारप्ता जन कोगीको परेशान वहीं करती को जैवन मोगी [बाहरी] की पोशायकों होने हैं क्योंकि यह गोशाय जारतीय ध्यापारियोंकी पोद्याक माती जाती है। भी बनुबकर, यो बब नहीं रहे, नेटाको सबसे प्रमुख स्थापारी में बौर पूर्वनीय समान समझ बहुत कारर करता था। एक बार कहें उनसे एक मिश्रके साथ पुनिवाने सिराहत कर किया था। यह बहु पहुँ र बने पातके बाब बाहर तिकलनेके सारोगों

पुमित-नाने से गई हो बनिकारियोंने फीरन समझ स्मिग कि उससे गस्डी हो यह है। बन्होंने भी अनुसकरते कहा कि वे उन जैसे प्रतिक्रित पूरंपको विरक्तार करना नहीं चाहुसे। किर चनसे पूका गमा कि नया वे म्यापारियों और मजबूरोंको पुत्रक पहचाननेका कोई सम्ब विश्व वटा सकते 🐉 सी अनुसकरने अपना काना चोदा पिता दिया। तस दिलमे जनता और पुल्लिके बीच मह मुक समझीतान्सा हो पना कि जो लोन लग्ना चौपा पहते हों ने अगर ९ वर्ज छतके नाव भी बाहर पामे जायें तो प्रतह निरण्तार न्द्री हुं। वेचरिक्त १००५ चाना वाहरी वा नाविकार के कि है। है में उठने ही सम्मानतीय हैं कि मी उठने ही सम्मानतीय हैं फिर भी चौता नहीं पहनते। इतके बनावा सिसित देवाद पुत्रक हैं। ने वहें माजूक-भिजाब हैं। ने भी चौगा नहीं पहनते। जन्हें कराजर सतामा जाता है। जमी सिर्फ चार मुहीने पहनेकी बात है एक नीजवान सुधिक्षित रविवासचै स्कूस विकन और एक अन्य धिराक्को निरम्तार करके रावमर काल-कोठरीमें रूप रखा पना ना। प्रसारक मार्चित कर कर राजन हास्त्रकारण नव राजा पर प्राचित्रक कर कर राजा पर प्राचित्रक के कर जा रहे वे व्यक्त हुआ। प्रसिद्धिन वे वार्य व वन्हें रिद्धा कर दिया। मगर यह तो वह करना तमावालकी नात हुई। एक मार्वायिय पहिलाको जो त्वर्य सिक्षिका और सेमेरिसनके पार्यक्र दुपारियको पार्वि हु कह ही तोता पहले एक रिवारकी शामकी रिप्तेये नोटने तुम्य वो काफिर पुलिस्त्रमाठीने पिर्ट्सने कर किया था। काछे नाव ऐसी सीवातानी की गई कि उतके कपड़े गेरे हो वसे ! जो तब तप्यूकी गामियों की पर्दे हो सहय । उसे कास-कोटरीमें वाल कर दिया गया वा बरला जैसे ही पुलिस सुपरिटेंबेंटको मासून हुआ कि बह कीन है, भने चिता कर दिया नया। यह वेडोसीकी हानतमें वर से आई नहीं। वस साइमी स्त्रीने पैर-कानुनी विरक्तारोके कारण कारपीरेयनपर इजनिका बाता किया और क्षांक्य स्थायक्रमणे प्रमें २ और और रावेंच्य मुलावजा निका। कृष्य क्यायापीयने कैननेमें कहा कि उनके लाव 'किनाब कर्याला केन्द्रात्मां और अल्बासाधिका अबहार किया यथा। सर्वाप र ता तीन कृष्यमीर्थ परिचास वह हुआ कि जिनन कार्योप्टन केविक अधिकार पाने

22

साफ-साफ कहा जाये तो इसमें छनका उद्देश्य यह है कि सारे मास्तीवाँगर, उनकी रिवरिका खगांक किने बमैद, प्रतिबन्ध कमा दिने बार्मे वाकि वैसा कि विवानतमाके एक सदस्यते १८९४ का प्रवासी विवेदक स्वीकार होनेके अवसरपर कहा वा मारतीयोंके जीवनको नेटाल-उपनिवेशकी अपेशा उनके अपने देखमें डी क्याबा आरामदेश बनानेका उपनिवेशका मंधा" पूर्ण हो सके। किसी भी हुसरे देखमें इस प्रकारके स्वाहरणोंसे सही विचारों बाक्षे सब सोयों की सहानुमृति बायत हो जाती और उत्पर नताये इए निर्धयका बाननको साम स्वायत किया गया होता।

क्यामन बाठ महीते हुए, कोई २ मारतीय को मुद्ध मजपूर में बधने सिर्धेनर साफ-सम्बोधी टोकरियां लेकर वर्तनके बाबार वा रहे थे। बनकी टोकरियोंसे साफ बाहिर वा कि वे बाबाच नहीं हैं। उन्हें ४ वने सुबह वसी कानूनके अन्तर्गेव विरक्तार कर किया थया। पृक्तिसने बड़ी सरवर्गीसे मुख्यमा चकामा। यो दिनशी मुजवादिक बाद मजिस्ट्रेटने छन्हें कोड़ दिया। परन्तु तन वेचारोंको कितनी कीमत चुकानी पड़ी । वे अपनी दिन भरकी कमार्दिको बाधा अपने क्यों पर को छहे थे। यह तो गई ही अपरते तकके उठकर काममें सब बानेके साइसके किए उन्हें मेरा खगात है दी दिल तक कवर्मे पढ़े पहना पड़ा। इस सारे सीडेमें बटनीका को मिहनताना चुकाना पड़ा सो अकरा! परिभावा कितना उपवृक्त पुरस्कार! और थी नेम्नरकेन सच्ची पिकामर्तोके स्वाहरण चाहते हैं!

कोई मास्त्रीय अपना परवाना दिखाकर यह नहीं बता सकता कि वह कीन 🛊 ती बने पिरफ्तार किया का सकता है। इसका अहेरम पिरमिटिया मार्खीयोंको काम छोड़कर मागनेते रोकना और उनको पहचाननेकी सह कियत करता है। इस इरतक में मानवा हूँ यह बक्ती है। परन्तु कामूनका बमन दिस तरह होता है वह अध्यन्त संतापनक है और हमें समकी भोरदार धिकायत है। मनर कुरताकी मादना न हो वो स्ववः वस कानूनमे को बन्याय होना अकरी नहीं है। कानूनके समक्षके सम्बन्धर्मे समाचार तत्र वया कहते हैं सनकी ही माधामें मृतिया। वैद्यान रहवर्धीर नरके १९ जून १८९५ के मंक्सें इस विषयपर निस्तितियत सन्त प्रकासित हुए स

नेटाक्में परवाने (पास)का नियम है। रात हो या दिन अवर

कैरोमेनर के कास्तकारोंको १८९१ के कान्त २५ के बच्च ३१ के मनसार जिल्ल तरीकेसे पिरक्तार किया बाता है, प्रसकी कुछ जानकारी में कापको देना चाह्नता है। अब ने कपनी समीतपर जुमते-फिरते होते हैं वर्त समय पुलिल वहाँ पहुँचती है और उनसे परवाने विकासनेको कहती है। कास्तकार अपनी पत्नियों या सम्बन्धियोंको परवाने कानेके किए बानाव देते हैं। परन्तु धनके केकर आनेके पहले ही पुलिस इन आरतीयोंकी जानेकी ओर प्रसीदना श्रुक कर देती हैं। वालेके रास्तेनों परवाले के बाकर विधे बाते हैं तो पुलिस बतको मोर वेक्सपर सेती है और फिर करहें बगीनवर केंद्र वैती है। यह गिरफ्तार व्यक्तियोंको कारेमें के बाती है। उन्में रातमर हवालातमें रखा बाता है और नुबह उनसे हवालातको काल-कोकरी ताक कराई बाती है। बाबमें धर्मी मिलसेटके सामने पेश किया बाता है। मजिस्देव जनकी सकाई सुने विना ही जनपर कर्माना कर वैता है। वे संरक्षक के बास आकर करियाद करते हैं सी वह उनसे नक्सिट्रेड के बात कानेको रह देता है और (पत्र-नेकक कहता है) संरक्षक मास्तीय प्रया-सियोंकी रक्षा करनेके किए नियुक्त किया बया है। अवर उपनिवेशमें ये हाकतें है (सेखक मार्गे कहता है) तो वे बचनी फरियाव मेकर किसके पास भागें ?

मेरे कपालने मिनलेट सकाई नहीं सुनना — इस कपनमें दूष अपूर्व सवस्य है।

नेटार्ट सरफारके मुखान नेटाड सम्पूर्ण के १३ मर्गन १८९५ के मंकर्में

निम्नतिनिय संपादकीन प्रकाधिय हुना है

अतिकित नारतीयों के नियं एक बहुत महरवका नृहा जनकी गिरफ्तार होनेकी समजा है। इस्ते बहुत ईम्पांडिक भी जरूस होता है। वहाँ में एक जसहरून है हैं। वहानमें एक जुविक्यात मारतीय हैं। सहरके विभिन्न मार्थीय जसकी बाबतार है। वह नुधितित और बहुत बृधितान भी है। विकासनार्थ भी उनकी जायार है। विकति विनो एक रातको यह कमारी

१ वर्षेत्रका एक कात्रकार।

९ नमधीन जनातिनेका संस्था ।

सकि साथ सिटनहुम प्या था। वहाँ उसे वो आविवासी पुक्सि सिपाही
सिके। उन्होंने उस मीजवानको प्राथमे मिले साथ पिएआर कर निया
होता दे उन्हें पुक्ति-वानेने के गये। इतन कह देना ककर ग्यायसंगत
होता कि उन पुक्ति-वानोंने स्थान। बरता कह देना ककर ग्यायसंगत
होता कि उन पुक्ति-वानोंने स्थान। बरता वहा स्पर्हताय रखा। वहाँ
उस मीजवानने बताया कि वह बीन है और वांच-पहनानके तिए यसने
हुसर्पित नाम भी दिये। आविक्कार नामको उन्हें यह वेतावनी देकर
छोड़ दिया कि अपर दूसरा गुन्हारे पास परवान कहा तो सुव्य गिरस्तार कर निया खादेगा और सुम्पर पुक्रमा वानाया खादेगा। वह
मीजवान एक विटिय प्रजानन है और एक विटिय उपनिवेशमें रहता है।
इस नाते वह अपने साथ थिये गये देन तरहके करतावरण आयित करता है
इस्तांकि वह साम तोरपर वीक्सी-टो कररतने इनकार नही बरता।
वह वो दस्तीने येय करता है वे वहत लोरसर ई और अविकारियोंटो
निष्य है उन्तर विवाद करता खादिए।

एक्कार करनाः - एक और कानुन है जिनमें बढ़ा न्या है कि बादिवासियों और नारतीयोक वान सावनीसींवा सन्ता से बाते समय सान विस्तर्य सावारी होने चाहिए। वर्षनमें एक उप-नियम है, नियक वरिये मारिवाडी नौरुरों और "एपियाडी सदस्य चाडियों (देव) के मध्य मोर्सी पंत्रीवरण (एपिएट्रेय) सिवान किया गया है। हम्हे चीडे यह मान्यवा है कि मारिवाडिकों के मीक्टफ्क हो एक बहुत बच्छा कारक मौजूद है कि उन्हें कमीक्टफ समझे प्रतिच्या और कि मारिवाडिकों के मीक्टफ हो एक बहुत बच्छा कारक मौजूद है कि उन्हें कमीक्टफ समझे प्रतिच्या और वे चानते हैं होशियर कमू कमीक्टफ मान्य कमीक्टफ मान्य है। किए मो उन्हें कारिवाडिकों कोशियं प्राणिक करनेका मुक्त मान्य करनेके किए कम्झ प्रविच्या मान्य करनेक कर दिया गया है। बहुत के बातने में मान्य हैं कर कार्य निवाडिकों कार्याचित्र कमी मही क्या एक बार मैंने एक मारिवाचों पैराई करते हुए स्वाडीक की मी कि बहु पंत्रीक्ष (एपिट्रवर्ड) गही है। गुर्पार्टिकों रहा मान्यविच्यों कर मान्यविच्या निवाडिका कार्याचित्र कार्य कि कहा कि मीने कमी यह कार्यून मार्याजीवीयर कार्य गही किया। उन्हों पूसर्थ प्रवाडिका कि नाम बात बात प्राण्योजीयर कार्य गही किया। उन्हों पूसर्थ प्रवाडिका कार्याचित्र कार्य प्रवाडिका करना नार्योजीक सम्मानित कराम नार्य स्था सम्मानित कराम नार्योजीक सम्मानित कराम नार्योजीक सार्य सार्य सार्य स्था स्था सार्य स

 र्द्धन वाश्रिद्धनात्ते स्मिन्न मालनियेकै स्क्र-गावा १५ वनकः भाष्यीयनि वयनियेषके सामान्य मताविकार-कानृतके वनवार्गक मताविकारका उपमोग किया है। इस कानृतके जनुदार ५ पाँडकी वनक सम्पत्ति पतनेवाके या १ पीड साकाना कियाया वेतेवाके वाकिय पुष्पका नाम मतदाता मुत्रीमें सामिक किया वा सकता है। वाविवाधियों के किया एक स्थिप मताविकार-कानृत है। यहके कानृतके करवार्गत १८९४ में

वसकि प्रोपीय और सारतीय दोनों समाजोंकी बाबायी कामण नरावर वी ब्रुटिपीय मतदारामंकी संक्षा ६ ६ ६ और मारतीय मतदारामंकी ६५६ नी। किर भारतीय मतदारामंकी ६५६ नी। किर भारतीय मतदारामंकी ६५६ नी। किर भारतीय मतदारामंकी एवं विविद्य केवल २ ६ ही ने। कर प्राप्ता कारता है हो ने। किर प्रोप्ता मतदारामंकी मतदार है। किर मी एरकार ते से प्रोप्त मतदार ते स्वाप्त की एर्ट मारता है। इसकिए सत्त में दोनीय मतंकी निषक बालेश स्था क्या परिवाद होंगे के कि किस निष्ठा मध्य जन परिवाद मोंकी कोइकर, बिलके नाम उन सम्बन्ध की। बार के परिवाद की की। वार परिवाद मार्ग की स्वाप्त मार्ग कर स्वाप्त मार्ग कर स्वाप्त मार्ग की स्वाप्त मार्ग कर स्वप्त मार्ग हर स्वप्त मार्ग कर स्वप्त मार्ग हर स्वप्त मार्ग कर स्वप्त मार्ग हर स्वप्त स्वप्त

फस्य नह कानून बच रव कर दिया गया है। उसके बदसे एक दूसरा कानून कमाना यस है जिसमें विकान है "येते किन्दी कोमीरि गाम मदाराता-मूचीने दर्ज नहीं किने आर्थि को (मूरोपीओं क्षेप्रक न हों गाम मदाराता-मूचीने दर्ज नहीं किने आर्थि के किन्दानियों की पूर्व-सालाके बुध इसे पेके बारियारी हों या ऐसे देखें मिलावियों की पूर्व-सालाके बैधन हों जिनमें बचतक संख्या महास्थित्य के सामारपर स्थापित प्राधि-निषक संस्थाप नहीं है। बाद ऐसे कोण बचने नाम दर्ज कराना चाई वो

में दोनों इमें प्राप्त भी इस्र।

१ पेकिए काम १ इत ५१-५८।

र वेपिर कार १ एक १ ७-१११।

र रेक्षिए सम्बन्ध र इत्र ११७-१६८।

तर्कता बामार प्रकृष किया है। इसने बोर दिया है कि नारक्षकी विवान परिपर्वे "संसरीय भवाविकारपर बायारिक पुनावसूनक प्राधिनिविक संस्वार्ये हैं। वेयक पब्लेकि सोकस्तीहरू अपेते हुनारे देखती संस्वार्य ऐसी नहीं है परन्तु करनाके स्थानक बीर वर्षनकी एक मुसोच्य स्थायसारवीके मवान् पार, कानूनी दुर्ग्यि हमार्थी संबद्धकों वर्षकों कालां स्थानकों वर्षकों बच्नी बैठ सकती हैं। स्थानका क्यन है "यह तर्ष कि भारतमें पारतीयकों किसी मी प्रकारका महास्विकार नहीं है बच्चुचितिकों नेक नहीं बावा। नेशाकों एक प्रमुख बजीक भी मोटनने एक समाचार-वनमें बिजते हुए कहा है

तो बया जारतमें तंत्रदीय (या विचानमंत्रकीय) नताविकार है? और है तो बहु बया है? वह है, और उतकी व्यवस्था विकटीरिया कथ्यास् ६७ के अवितियन दर्भ व २५ और विक्योरिया सम्यास १४ क्षेत्रियम ५५ व ५६ के अनुतार वच्युंत्रक तुसरे लानुतके बंध ४ के अन्यर्यत वने नियमित की यह थी। हो सकता है, किते हम उबार बाबार कहते हूँ उत्तरर बहु तिमित न हो, और उतका विनीय एक बहुद कोटे आवारपर किया गया हो। दिस्त भी बहु संतरीय नताविकार तो ही । और विवेधको अन्तर्यत, बंधे हो बारताची चुनावनुक्त प्रार्थित तिविक संवायर्थना सावार नतना होया।

निविक संस्थामीका भाषार जानना होया।

बहु मत नेटाकके बन्प प्रतिष्ठित कोगॉका मी है। त्यापि भी चेम्बरधेन
इस विपयमों जपने करिते में करते हैं

मं बहु भी स्वीकार करता हूँ कि मास्त्रीयोंकी उनके अपने देखनें कोई प्राफ्तिसिक्त संत्राई नहीं हूँ और इतिहासके पन पुणोंनें कदकि है बुटेशीय अनाप्ते मुक्त में कहोंने क्यां कनी इस प्रकारकी प्रवालीकी स्वापना नहीं की।

स्पन्ट है कि इसने व्यवस्थान को भग नाधिक रूपमें बयुद्ध किया है यह मत प्रपक्त विकाद है। स्वामाधिक बात है कि इससे हम कर वने हैं। हम बाननेको उल्कुक है कि महकि सर्वजेष्ट कानूनी पीवर्तीका मत कना है?

र सितानार १९ १८९५ ।

तथापि हम कितनी भी बार कह सकते हैं कि हम राजनीविक सताके कोक्प नहीं 🧗 बन्कि उस गिराबटका विरोध करते हैं जो इन मधाविकार विशेषकोंसे अवस्थिमानी है। जगर किसी उपनिवेसको किसी एक बादमें मारतीयोके साम मूरोपीयोंकी अपेका मिस बाधारपर व्यवहार करने दिया यबादी उस सपनिवेसका और आने वढ बाना मी कठिन न होना। उनका कस्य केवक मताविकारका सपहरण करना नहीं है विके भारतीयोंको विक-हुक मिटा रेगा है। माळीपोंको नहीं कहूरोंके ठोरपर, गिरमिटिया सन्तर्रोंके तौरपर या ज्यारावे ब्याया स्वयंत्र सन्तर्राके ठीरपर पूर्व दिशा मा सकता है। परन्तु वन्हें स्मने केनी बास्त्राता हो प्रचार्त पार्थिश शक्य पहला मतानिकार विवेदक वेश क्या पता था वह समय पाळीपोंका मृतिशियक मतानिकार धीगतेकी श्रीख-पुकारके उत्तरमें महान्यायकारी (बटर्नी-यनरस्त)ने कहा का कि निकट मनिष्यमें ही [इस बावका] निबटाय कर विया बामेगा। क्रममप एक वर्ष पूर्व नेटाल-सरकार एक समा करना चाइती वी विसे कुली समा" नान दिना गया था। उसका संख्या सह था कि तारे दक्षिण साफिकार्ने भारतीयों-सम्बन्धी कानुनोमें अनुकपता हो। अस समय मी उर्वनके उप-मेयरने एक प्रस्तान पेश किया था कि एश्विमाइयोंको पृथक् बस्तियोंमें रहनेके लिए राजी किया जाये। सब गरकार मह साथ निकाकनेके किए परेसान है कि बड भारतीय स्थापारियोंकी बाइका सीचे और कारगर वरीकेने कैसे चेके। बी चेम्बरकनने तो उन स्थापारियोंको "सान्तिप्रेमी कानुनका पाकन करनेवासे पुष्पसील व्यक्तियोंका समुदाय" बताया है। उन्होंने बासा व्यक्त की है कि पुष्पधान नारायाओं स्पूर्ण प्राचन है। उन्हां नारा नार प्राचन करने "वर्षांच्या करने हैं नार्य करने हैं निर्देशन करने हैं नार्य करने हैं नार्य करने हैं निर्देशन करने निर्देशन करने हैं निर्देशन करने निर्देशन करने हैं निर्देशन विचार करना चाडिए। छन्दन *धाइन्छने* मताभिकारके प्रश्नको इस कपमें पेश किया 🕏

हत तबय भी केम्बरनेनके शामने जो प्राप्त है वह सेहास्तिक नहीं है। वह प्रम्त वर्शोकोंका नहीं, बातीय नामनानोंका है। हक सपनी ही प्रवासिक क्षेत्र कार्ति-नृद्ध होने देकर कार्त नहीं जठा एकरे। भारत-सरकारके स्थि नेदालको मजुर नेजना वन करके उत्तरों प्रगासिको एका-एक रोक देना उत्तरा हो यस्ता होया जितना कि नेदालके सिए विदिश te

पहुचे उन्हें स-परिपद-गमर्गरसे जावंस केता होगा कि वे इस कानूनके असकसे मुक्त कर विये पमे हैं।" उन कोगोंको भी इस कानूनके असकते मन्त कर दिया गया है जिनके नाम कियी मतदाया-सुनीमें शांजिय तीरते धामिक है। यह विजेशक पहले भी चेन्चरलेतके पास भेका नया चा। जन्होंने इसे अपनी अनुमति कनमय दे ही है। इसपर मी हमने इसका विरोध करना उपित समझा और इसका नियेत करा देनेके अनिप्रायसे भी चन्दरसेनको एक प्रार्पनापत्र मेवा है। बाशा है कि इमें बबतक जितना समर्थन प्राप्त हमा है उतना ही मन भी प्राप्त होगा। हम मानते हैं कि इस प्रकारके सब कानुनोंका सच्या प्रयोजन भारतीयोंके साथ ऐसा नेद भावपूर्व व्यवहार करना है जिससे कि किसी भी प्रतिन्तित भारतीयका उस देशमें पहला अन्तमन हो जाते। एशियादसीके मतीका यूप्तेनीय मतीको तिसक जाते या एशियादमीके दक्षिण जातिकाका चासल हनिया क्रेमेका कोई सच्या अतरा वपस्तित नहीं है। फिर भी विश्लेषक समर्थतमें इसी मुद्दे पर मुक्य क्पसे और दिमा नया था। वपनिवेशमें सारे प्रकारी मानी मांति कामबीम कर सी गई है और चेन्बरसमुक्ते पास निर्मयके लिए पूरी-पूरी सामग्री मौजूद है। स्वय सरकारने वनने ही पत्र नेशक अवर्तरीके २५ मार्च १८९६ के अंकर्में विवेसकके सम्बन्धमें जो विचार प्रकट करके उसका नमर्नेन किया है जनका मुसाइजा कर सें। सतवाता-मूचीवे

सच नात यह है कि संस्थाने परे, वो वाति तर्षमा भेट होगी वहीं तर्षम धातनका सूम नगरें हान्यें पत्नेगी। कारिन्द हनारा दिवसत हुट ऐसा है कि भारतीय नगरेंके पूरोगीय मर्गोको निगम जानेका तरा विकट्टक कारतीनक है। हुन नहीं मानते कि यह बतरा बना भी सम्मद है वर्षोंकि विक्रंस स्थानकों तिहा कर दिया है कि भारतीयोंका को वर्ष तालारनार यहां नगर है वह मराधिकारको वरवाह नहीं करता। इसके समाना उनमें से व्यावस्य लोगोंकि नात सताविकारके निय सामस्यक बोड़ी-नी सम्मित में महीं है।

र देवित सम्बन्ध १ १८ १११-१५४ ।

जॉक्डे बद्दुत करनेके बाद कहा गया है

यह अतिकारपूर्वक स्वीकार किया यथा है। सम्बुर्धिका अनुमान है, और ह्यारा विश्वाम है कि अगर विवेचकता मंद्रा एथियाइपॉको मदाधि कारते विधिक करना हुआ तो वह अपने उदेस्तमें विद्यक हो पानेगा। और मन्त्रीय कहता है कार वह विद्यक हो गया तो कोई हुई न होगा। तो किर, मराधीय ममाजको मदानेके दिवा बढ़का उदेश्य क्या है? विवेचकके येच किसे वातेना सम्बा कारण सम्बुर्धिने अगने २३ अप्रैक १८९६ के अकमें वचा-चनाकर अकिन स्वय्ट मावसे इस प्रकार बदाया है

सही हो या गकर ग्यायपूर्ण हो या अन्यायपूर्ण विश्वन आध्यक्त कीर विश्वयतः वोर्गी प्रधारमध्ये पूरोरोधिक विश्वीय मारतीर्थी या निल्हीं मारतीर्थी या निल्हीं मी इतरे एतियाप्रधानी के नेरोक साराविकार वेतेले विश्वाय कोरवार मार्गिद्ध हो। भारतीर्थीका तक वेतक पह हि क कुने साराविकार के कलाईत हाक्यों वेट पूरोपीय सतदातार्थीक योधे केवल एक भारतीय जतदाता है और जिस कारतेशी पत्था साराव्य हों बतरेशी पत्था साराव्य हों बतरेशी पत्था साराव्य हों बतरेशी पत्था साराव्य है। प्रधाय हमें बतरेशी पत्था तक तर्ववा हमारा विवार नहीं है। प्रधाय हों को ये पूरोपीयोंकी भावता है की, हम जावती है उनके विश्वी ह्वारी मुरोपीय साराव्य है। किर, हम यह नहीं बाहते कि वैधकी ह्वारी मुरोपीय साराव्य है। कार्य पत्था कर सार्थिक वह साराव्य साराव्य साराव्य कार्य के हम साराव्य के साराव्य होता साराव्य साराव्य है। हमें साराव्य साराव्य होता साराव्य साराव्य साराव्य होता साराव्य साराव्य होता साराव्य साराव्य साराव्य साराव्य साराव्य साराव्य होता साराव्य साराव्य साराव्य साराव्य साराव्य होता साराव्य होता साराव्य स

तो यह है नाल तथ्य। बोगोंकी चिन्नाहरूको सानकर — बाहे बहु
व्यायपूर्व हो या अपवायपूर्व — एरियासपाँको बनाना हो है। यह विवेक्त
स्वार हारा सायोजित एक बूटा बैठको निसमें कि एके यान तरिके सम्बे
कारय बतार्थ यथे ने बाद पात किया पया। वानिनेदियों और समाचार
वानि और स्वयं हरावे पात्रों मार देनेताने मरस्वीन एने ना-कार्य बहु
कर इसकी निराम की है। बनाने पिकाना है कि यह विवेक्त मारावित्रार
नाम् नहीं होगा बनीकि "मारावर्ष संवर्षन महाविक्तारपर नामारित मुगकसुकक मार्गिनेदिक संवर्षार नीहरू है और हम विवेक्त उत्तरिकेश
करात्र महार्थनीय की संवर्षान मारावित्रार नामारित मुगकसुकक मार्गिनेदिक संवर्षार नीहरू है और हम विवेक्तन नामी कि सार्वित्र नीहरू है।

तकंका माबार प्रहुत किया है। हमने जोर दिया है कि भारतको निवात-परिवर्षे "संस्थीय मताविकारपर आवारित चुनावमुक्तक प्रातिनिविक संस्वाएँ हैं। " वेशक धन्दोंके लोक-स्वीकृत जर्बमें हमारे वेशकी संस्वाएँ ऐसी नही है परन्तु सन्वतक टाइन्छ और वर्षकके एक मुयोग्व स्वामसास्त्रीके मतानु-सार, कानूनी इप्टिसे इमारी संस्वाएँ विवेतकर्ने वनित संस्थाके वर्गर्ने बच्ची बैठ सकती है। व्यरन्तका कवत है "बह तर्क कि मास्तमें मास्तीबोंको किसी भी प्रकारका मताबिकार नहीं है बस्तुस्थितिसे मेठ नहीं बाता। नेटालके एक प्रमुख बन्धील भी काँउनने एक सुमाचार-पनमें किसते हुए क्या है

तो क्या मारतमें संतरीय (या विकानमंडलीय) मताविकार है ? मौर है तो बह पता है? बह है, और अतकी व्यवस्था विकारिया अध्यास ६७ के मिनियम २४ व २५ और विकटोरिया अध्यान १४ के अविनियम ५५ व ५६ के अनुसार उपर्युक्त बुसरे कानुनके खंड ४ के अन्तर्यंत वने नियमेंसि की यह थी। हो सकता है, जिसे हुन उदार आचार कहते हैं उत्तपर वह निर्मित न हो और उत्तका निर्माण एक बहुत मोर्ट माचारपर किमा गया हो। किर जी वह संसदीय मताविकार तो है हो। और विशेयक्के अमार्गत को ही नारतकी बनावमुक्क प्राति-विविक संस्थाओंका बाबार मानना होया।

बड़ मद नेटाइके बन्य प्रतिष्ठित कोगाँका भी है। तवापि श्री चैम्बरलेन इस विषयमें अपने लरीते में कहते है

में बहु भी स्वीकार करता है कि भारतीयोंकी जनके अपने वेशनें कोई प्रातिनिधिक संस्थाएँ नहीं है और इतिहासके उन युवोर्ने, अवकि वे पुरीपीय प्रवासते मुक्त में चल्होंने स्वयं कभी इस प्रकारको प्रमालीकी स्थापना नहीं की।

स्पष्ट है कि हमने बाहरतका को मत बांसिक क्यमें बद्दत किया है यह मत चरके विकत है। स्वामाधिक बात है कि इसमें हम कर गये है। इम पाननको उल्लुक है कि यहाँके सर्वेषेक कानुनी वैदिवाँको मन बगा है?

विजेयकोंसे अवस्थिमानी है। अयर किसी उपनिनेत्तको किसी एक नातमें भारतीयोकि साथ बुरोपीयोंकी वपेका मिश्र आपारपर स्पवद्वार करने दिया यवा हो उस उपनिवेसका और बामें बढ बाना भी फठिन न होगा। उनका कस्य केषक मताधिकारका अपहरच करना नहीं है बस्कि भारतीयोंको विस-कुछ मिटा देना है। भारतीयोंको नहीं अधूर्तीक तौरपर, पिरिमिटिया मजपूर्रीक तौरपर मा ज्यावाते क्यादा स्वर्तन मजपूरीके तौरपर रहने दिया जा सकता है। परन्तु उन्हें इसने केंद्री बाकांका नहीं रखनी चाहिए। वब पहुसा मताविकार विवेसक वेश किया गया था उस समय मारतीयोंका स्युतिसियस मताधिकार क्रीननेकी चीस-पुकारके बत्तरमें महान्यायवाबी (शटर्नी-वनरक)ने कहा वा कि निकट मिर्मियों ही [इस बातका] निवटारा कर दिया वायेना। क्रममय एक वर्ष पूर्व मेटास-सरकार एक समा करना चाहती मी जिले कुली समा नाम विमा गया था। उसका मंत्रा यह ना कि सारे विकास कारिकार्में भारतीबों-राज्यभी कानुनीमें बनुकरता हो। उस समय भी बर्वनके उप-नेपरने एक प्रस्ताव ऐस किया था कि एसियाइयोंको पूजक वस्तिवोंने रहनके किए धनी फिना जाने। जब सरकार सह राज निकाबनेके किए परेसान है कि नह भारतीय व्यापारियाँकी बाढको सीचे और कारपर शरीकेसे कैसे रोके। श्री भेम्बरकतने तो उन व्यापारियोंको 'सान्तियेमी कानूनका पावन करनेवाके व्यक्तिक प्रतिकर्मीका संयुक्तव यदावा है। उन्होंने बाह्य करन की है कि वनकी वहाँदिक रहोनवीकता बुदिवानी बीट कमेर कार्य-तरादा उनके वंबोंने मानेवामी एवं मानामीकी बीठगेके किए पर्याप्त होती। इसकिए, इमारा नम निवार है कि वर्तमान विवयकके बारेमें इन तब्जोंकी वृश्टिते विचार करना चाहिए। सन्दन *यहन्त्रने* मदाविकारके प्रस्तको इस क्यमें वेच किया है इस समय थी केम्बरलेनके साधने को प्रान है वह श्रद्धान्तिक नहीं है। वह प्रान दत्तीलीका नहीं कातीय भावनाओंका है। हम अपनी ही प्रवामेंकि बीच अस्ति-गुढ़ होने देवर काम नहीं पठा तकते। भारत-

सरकारके सिए नैटालको मजबूर भेजना बन्द करके चलको प्रगतिको एका एक रीक देना उत्तना ही एकत होबा, जिल्ला कि नेटालके लिए ब्रिटिश धारतीय प्रजायनींको नायरिक अनिकार बैनेते इनकार करना। बिटिय भारतीयोंने तो वर्षोठी रुमक्की और अच्छे कावसे अपने-वापकी नाव-रिकॉक बास्तविक दर्वेतक प्रठा ही किया है।

नेटाल-विधानमंडलने जो दूसरा विवेदक स्वीकार किया है एसका मंधा यह है कि गिर्रामिटिया भारतीयोंको सबैद किरीमिटिया बनावे रखा जाये। या जयर चन्हें यह पसन्द न हो दो पहले पाँच वर्षके इक्स स्तामिकी अवधि परी डोनेपर चन्डें भारत मेज दिया जाये। या जनर ने न जाना चाई तो क्लों तीन पाँड सालाना कर देनेके लिए बाध्य किया बाये। इमारी समझके बाहरकी बात है कि एक ब्रिटिश उपनिवेशमें इस प्रकारके काननका विचार मी कैसे किया बया। नेटालके क्यमय समी कोकनिष्ठ व्यक्ति इस बावमें एकमत है कि उपनिवेशको समृद्धि भारतीय मजदुर्देशर अवक्रम्बित है। विवानसमाके एक वर्तमान सदस्यके सन्दोंने "जब माराधीमौंको लानेका निरुपय किया गया उस समय अपनिवेसकी प्रयति और करीब-करीन जसका वस्तित्व ही बौबौबोक बा। परन्तु एक अध्य प्रमुख नेटासवाधीके सम्बॉर्मे

भारतीयोके सामानसे समृद्धिका भागमन इसा। भाव वह पर्ये। जब लोन बरताएँ बोने और प्रथमको मिहती मील बेच बेबे-नरसे सन्तुष्ट नहीं रहते सरी। वे पुत्र स्वादा कमा तकते ने। सगर हम १८५९ की भोर वैधें तो हमें पता चतेना कि भारतीय नजबूरीते भावी उभितिका को आस्त्रासन निसद्ध पराते राजस्वमें तुरस्त वृद्धि हुई और कुछ ही क्योंमें माथ कीयनी हो गई। को मिस्त्री मजबरी नहीं पा सकते वे और रोजाना ५ शिलिन या इससे नी कम कवाते थे जननी नजहरी बुरीसे भी ब्याबा हो यहै। इस अयसिने भगरसे सेकर समुद्रसकते सब सोबॉकी शोलाहर दिया।

नेटालके वर्तमान नुबर न्यायाबीधके चय्योंमें ये माच्छीय "विश्वस्त बीर कारोती मरेन नीतर निर्व हुए हैं। किर भी इतका जीवन-रक्त ही तिचीड़ छैत के बार इन उद्योगी और कारियाने कीगॉनर कर कवानेके मेनूदे बीचे भा परे हैं। रण वर्ष पर्ने वर्षेतान महान्यानवादी (अटनॉ-बनरस)का जो समिताय या नह नीचे दिया जा रहा है। आज उन्होंने ही उस विवेतककी रचना की है जो, कंटरके एक जामूक युवारायों पत्रके करनानुसार, "तीयण जगावार, विदेश प्रजाब्दा करनान जगने निमतिवर्गेर कर्मक और हम यर लोकन-सक्य है।" महान्याययशीका विचार सह वा

बहांचरु बसीय पूरों कर केमेशाले भारतीयोंका सन्त्रस्य है में नहीं समझता कि किही व्यक्तिको बहारुक वह अपराची न हो और उस स्वराजके किए वसे देलनिकाला न दिया गया हो, दुनिवाले किसी नाम के किही किए बात्य किया बाना चाहिए। भेने इस प्रमुक्त कारें बहुत-कुछ पुना है। मुससे बार-बार वपना वृध्यिकोग बहलनेको चहा बया है, परणु में बैसा नहीं कर सका। एक बादमी यहाँ लगा बाता है। सिडालता: प्यामेशी कर्याहरात बहुना किना रतामंशीके लाया बता है। बहु अपने चीचनके तर्वचय्य प्रीच वर्ष पहीं बचा देता है। मेरे सावन्य स्वामित करता है, धायस पुरागे सावनाचेंको मुना देता है। यहाँ व्यन्ता घर बता लेता है। ऐसी हुल्लामें पेरे स्वाम और सम्वामके दिवारते जो वरास नहीं येना वा सकता। मास्तियोंने कोन्द्रक प्रमान के सकते हैं वह किसर उन्हें बच्चे कारेंका सादेश में इतसे तो पह बहुत वसका होया कि वाय प्रनावे यहाँ बाना ही दिलकुत बन्द वह हैं।

परन्तु वही चीज जवाँद न-कुछ सिंहतवाना लेकर पांच वर्षतक उत्तरि चेवली देवा करना को बस नयं पहुचे आरतीसोंनें पहुचुन-कम मानी गई की बाज एक अरायन वन गई है। जगर महास्थायवादीको गारत-सरकार और विदिध परकार इजान के दें तो उन अरायकता रण्डे हैं—मारतमें निर्मान । मैं यहाँ कह हैं—मारतमें निर्मान । मैं यहाँ कह हैं कि १८ है में नेटाकरों जो एकन्सनीय आयोग (कमियन) आरत आया था उपके अनुरोक्तर आरत-सरकार ने जीवार्य से वर्षकरीका जिंदाना रिकान्त रिकान्त क्षाया है। उत्पादि हमें इह निष्कात है कि विदेश में सारति सरकारों की विदेश पर अर्यान्त महीनें ने हक्षकर बवाई यह है से मारत-सरकारको अराम विद्यार वर्षकरीको निर्माण की स्थाप के सिंह निर्माण की स्थापन स्थापन की स

१ विन्ध-मेलन माबीय (

र देशित बन्ड १ पुत्र ११७--११५।

सन्पूर्णनीपी बाब्यव

..

बचिप इसने कासकर सन जारतीय मजदूरींपर बसर करनेवाणी बारोंकि बारेमें कोई आवाज नहीं उठाई, वी जभी इकयरनामेकी बनमि काट ही रहे हैं, तबापि यह बसूबी माना जा सकता है कि जामदाबों (एस्टेट्स)में उनकी हास्त पुछ साथ मारामरेह नहीं है। इस समझते हैं कि साथारण आवादीके सम्बन्धमें उपनिवेशके रुवार्ने परिवर्तन होनेका बसर यिएमिटिया भारतीमंकि माकिकॉपर भी पहेना। फिर भी एक-री बार्चे कास तीरसे भारतीय जनताकी नजरमें कानेके छिए मुससे कहा गवा है। अबसे काफी पहले सन् १८९१ में भी हाजी मोहम्मद हाजी बाबाकी अध्यक्षतामें एक मारतीम कमेटीने एक प्रार्वनापत्र दिया वा। इसमें एक सौग यह की गई थी कि प्रवासियोंका संरक्षक कोई ऐसा स्थमित होता चाहिए जो तमिस और हिन्दुस्तानी भाषायेँ बानदा हो। और सम्भन हो तो नह मास्त्रीय ही होना चाहिए। हम बस स्वितिस पीके नहीं हटे और वो समय बीचमें बीला चसमें हुमारा वह मठ और भी धनका हुना है। वर्तमान संरक्षक एक सन्नेन पुश्य हैं। फिर मी जनका भारतीय जापार्जीका बजान एक प्रश्नीर कमी हो है ही। इसारा तम सवास यह नी है कि संरमकको निर्देश दिया बाता चाडिए कि वह प्रवासियों और जनके मास्किकि बीच निर्मायककी इंसिक्ससे काम करनेकी अपेक्षा माराधीमेंकि हिनानतीके स्मर्गे अधिक काम करे। मैं उदाहरम देकर जपनी बात समझा हूँ १ १८९४ में बाक्युल्यरम् नामके एक सारतीयको उसके माक्रिकने ऐसा मारा-नीटा कि जसके दो बीत करील-करीब निकस करे। वे उसके उपरी बॉटमें वसकर बाहर निकल बावे किससे इतना बून नदा कि जसकी सम्बी पगढ़ी तर हो यहै। जसके माकिकने हुकीकतको भूत कर किया परानु पढ़ कहा कि एवं बारमीने वर्ष मन्त्रीक स्वीक्षात्र स्वीक्षण भूत कर किया परानु पढ़ कहा कि एवं बारमीने वर्ष मन्त्रीर स्वीक्षण दी बी। उस बारमीने बत्तेवना वेलेका बारोप नामंत्रूर किया। मार बाकर, गाम्म होता है वह संस्थापके मकानपर यमा वो वसके माकिकके मकानके पास ही था। संस्थापने चवर नेश की कि वह दूतरे दिन क्यूस्में जाते। वह बावनी मनिस्ट्रेटके पाछ नमा। मनिस्ट्रेटकी सारा दुश्म देखकर बहुत बना बाहै। जसने पनकी सवास्तरमें रखा सी और उसे हखाजके सिय

यह जारमी प्रिक्ट्रिके पाय जया। प्रिक्ट्रिकी थारा दूस्य देखकर सूह दया जाहै। उसने पानी स्वास्तर्गे रखा ती जीर वर्षे ह्यानके किए दुरूष वस्तरावर्ष रिक्या दिया। हुक दिन स्वस्तावर्षे प्रकृते द्वार से स्वत्य दुरूष वस्तरावर्षे रिक्या दिया। इसने मेरे स्वर्ति दुर्मा वा दशकिए मह मेरे स्वरूपों माना स्वत्य प्रकृते देश स्वरूपों स्वर्मा क्षान्ति हुक सावर्षीत कर एक्टमा। दशकिए मह मेरे स्वरूपों माना। स्वत्यक वह दरना स्वरूप माने हुक माना करना स्वरूपों स्वर्मा स्वर्मा हुक सावर्षीत कर एक्टमा। दशकिए मेरे उसने विमानमें —को यह बातवा वा—कामी

11

पूछा कि बगर तुम्हें किसी दूसरे माक्रिकके पास तस्थीत कर दिया आये तो न्या तुम सन्तुर्य हो बाबोने ? उसने संकेतसे हामी भर थी। इसपर मैने उसके मानिकको एक पत्र क्षित्रकर पूछा कि क्या नह उस व्यक्तिका हुधरे मास्त्रिक पास तबादका कर देना मंत्र करेमा? उत्तरे पहले दो अनिच्छा बताई, मगर बादमें वह राजी हो बया। मैंने उस जादमीकी धरक्षकक बफ्टरमें भेजा। सावमें सपने एक तमिल मुंधीको भेज दिया जिसने संस्थाकनो उसकी वार्ते समाप्ता ही। संस्थाकने बाहा कि उस भारमीको उनके बस्तरमें छोड़ दिया जाये। उन्होंने सबर मेनी कि सपनी छन्निमर जो कुछ वे कर सकेंगे अवस्य करेंगे। इसी बीच माधिक शंरतकके रफ्तरमें पहुँचा। क्मने अपना मन अवल दिमा और कहा कि उसकी पत्नी स्वादका करना स्वीकार नहीं करती क्योंकि छतकी सेवाएँ बहुत ही मुस्यवान हैं।

कहा जाता है कि इसपर बस बादमीने समझौता करके संरक्षकको एक

निर्मित बयान दे दिया कि उसे कोई पिकायत नहीं करनी है। संरक्षकन मूने पन किस मेना कि पूँकि यह नायमीको कोई सिकायत नहीं है और मानिकने रुएकी सवाबोंकी बदका-बदकी करना स्वीकार नहीं किया है इसलिए में इस मामकेमें हरतक्षप नहीं करेगा। में पूछता हैं क्या यह ठीक या रै नया सरसङ्का अस मादमीसे इस प्रकारका किसित वरतमा लेगा छवित वा? वया वे उन कारपीते स्वयं अपनी रक्षा करना चाहने ये? परन्तु में यह परंपरी कहानी जाये मुनाऊँ। स्वामाधिक या कि संरक्षकके पत्रने मुने गहरा परका पहुँचाया। मैं यस ववटेसे उपरा मौ नहीं या कि वह आदमी रोता-विकलता मरे रक्तरमें वा पहुँचा और उन्ने बड़ा कि संरक्षक उसकी बरती नहीं करता। में बसारसा मंद्रश्रक बस्तरको दौहा और मैंने बरियास्त किया कि मामला क्या है। मेरलकने वह लिया हुता कायज मरै नामने रख दिया और पूछा कि मैं वैसे पत बादगाँकी मदद वर सकता हूँ? अन्होंने नहां कि उस कारपीको इन कायजपर दश्तमञ्ज नहीं करते थे। सीर यह नामज एक हमननामा या जिले स्वयं मंदरावने प्रमाणित किया था। मैने रात्रक पुरु कुरुक्ता का क्या क्या प्रतिकृति का स्वाप्त प्रविक्र का स्वाप्त क्या कि निरूप्त के स्वाप्त क्या कि न नाय्यक्त क्या कि में यन नारबीको कात्रह दूंगा कि नह मिलन्टक पात्रक वाकर विकास करे। वन्होंने बनर दिया कि यह बायक मिलन्टक पात्रक वय कर निया नारेता और विकासक स्पर्व हो जायेगी। यह बारण बताकर **

चन्होंने मुझे सलाह दी कि मामलेको अब छाड़ दिया आये। मैं अपने दण्यरमें नापस पता बाया और मैंने उस बादमीक मानिकको तबाइता संबुर कर लेनेकी प्रार्थना करते हुए एक पन किया। मातिक बैना पूछ मी करनको वैवार नहीं था। मजिस्ट्रेटने हमारे तान वितनुत्त दूधरा ही व्यवद्वार विधा। उसने प्रस भारमीको उछ समय देवा वा जब कि नून बहु ही रहा वा। बरियार वासमदा कर वी पई। सुनवाईके दिन मैंने सारी नीरिस्निवियों नेताई और लुकी सदाव्यमें फिर मासिक्से बरील की और बादा किया कि बनर वह तबायका करनेच किए राजी हो हो हम मुक्कमा चठा सेंगे। इसपर मजिस्टेटने नाकिककी नेतावनी की कि अगर बसने मेरे प्रस्तावपर ज्याका अनुकल विचार नहीं किया हो परिचाम उन्तके किए पम्मीर हो सकता है। महिल्टेंटने यह भी कहा कि वसका समाम है, उस नादगीरे साव पास्त्रिक स्पन्नहार किया पर्या है। गाकिकमें बड़ा कि उस बादमीने उसे ब्रुटेजित किया था। मजिस्टेटन क्पटकर जवाब दिया । आपको कानुनकी अवबा करनका और दुस आदमीको पसके जैसा सारतेका को मिलकार नहीं था। चतने मालिकको सेरे प्रस्ताय पर विचार करनेका गौका देनेक उद्देशन एक दिनके लिए सुनवाई स्वनित कर थै। माधिक भूका और उसने सम्मति है ही। इनवर संरक्षकने मुझे किया कि जनतक मैं किसी एने यूरोनीय माकिकका नाम न सुप्ताओं जो परकरको स्वीकार हो, तबतक वह वबारका करना स्वीकार नहीं करेगा। मुसीकी बाद है कि अपनिमेश जदार बादमिमोंका विसन्तक कंगान नहीं

मन्तिम बस्य पर पच्चा परा। संच्याकने को त्राचेका समितवार किया जसपर टीका-टिप्पनी व्यर्प होती। यह एक नमुनेका मामका मात्र है को बतादा है कि विश्वीमदिया कोर्पोके किए न्याय प्राप्त करना कियाना कठिन है। हमारा निवेदन है कि संरक्षक कोई भी हा उठके कर्तव्योंकी स्पष्ट म्बाक्या होती शाहिए, वैसे कि त्यामाबीओं एडबोलेटो साक्षिस्टियाँ माविके कर्तन्त्रोंकी होती है। प्रकामनानी टाकनेके किए, उसका मन हो दो भी उसे कुछ सात-बात काम करनेका मनिकार न होना शाहिए। अस एक साथा भौतके एक ऐसे वपराधीका धिड्मान वननेकी कम्पना कीविए, विसका वह

मुक्तमा कर रहा हो। किर मी संस्थक तो अब बायवारों (एस्टेट्स) में मजदूरीकी हाकतोची जॉन करन और उनकी श्रिकायतें नुबने बादा है क्य

है। एक स्वानिक वेजन्मिन वर्गोपरेशक और साविधितरने धर्मभावधे उस नावमीकी सेवाएँ स्थीकार कर भी और इस तरह इस बुक्समय गाटकके यहें ऐसी है दिन्हें में काशी विशिष्ट परिस्थितियों प्रेमाणित नहीं कर सकते। एक मिक्ट्रेंग ऐसे मानकीचे राजा आवित्व का पता कि वह सोकी कमा काखा। ऐसे मुक्तरों मूने करते ही म पहते। केटाक मान्तुंगी कारने रहे जुन १८९५ के बेट्सें एक ऐसे ही मानकीची मीमीसा रहा प्रकार की हैं

बार कोई बारगी, या कुनी प्रवासी भी बिता मानिकची मनहूरी करने प्रवास की बारगी, या कुनी प्रवासी भी बिता मानिकची मनहूरी करने प्रवास करने विश्वास करने मानिकची मनहूरी करने मिला मानिकची मनहूरी करने मानिकची मनहूरी करने मानिकची मनहूरी करने मानिकची मनहूरी करने करने कि स्वास विश्वास करने हैं। यह सामिकची मनहूरी करने करने केटा स्वास विश्वास करने हैं। यह सामिकची मन्तुंगी करने करने हैं। यह सामिकची मन्तुंगी करने करने हैं। यह सामिकची मन्तुंगी करने करने केटा सामिकची मन्तुंगी करने करने हैं। यह सामिकची मन्तुंगी करने करने हैं। यह सामिकची मन्तुंगी करने करने हैं। यह सामिकची मन्तुंगी सामिकची मन्तुंगी करने हैं। यह सामिकची मन्तुंगी करने करने हैं। यह सामिकची मन्तुंगी सामिकची मन्तुंगी करने हैं। यह सामिकची मन्तुंगी करने हैं। यह सामिकची मन्तुंगी करने हैं। यह सामिकची मन्तुंगी सामिकची मन्तुंगी सामिकची मन्तुंगी करने हैं। यह सामिकची मन्तुंगी सामिकची सामिकची मन्तुंगी सामिकची सामिकचची सामिकची सामिकची सामिकची सामिकची सामिकची सामिकचची सामिकची सामिकची सामिकची सामिकची सामिकची

होता चाहिए। हुछ भारतीय करतींचे जेकोंने पढ़े हैं क्योंकि वे क्यन माक्रिकोंके पास वातेचे इनकार करते हैं। उनका कहना है कि उनकी सिका

नगर कोई नावरी, या कुनी प्रवासी भी जिस सार्थनको सक्ष्यी करनेजे प्रतिमान्त्र है उत्तरा नगर करनेजे नरोता बेन नाग संपिक पत्तन करता है तो स्वामाधिक सन्पान यह द्वीपा कि कही-न-व्ही कुछ करावी नकर है। धीर शांत्रवारको कव भी किनन कामसे इनकार करनेके एक ही नगरावरर तीन कुन्तिकोंके मुन्दमेकी मुनवार्ट कर रहे में धार कामय जहींने को कुछ कहा वा उतते हुने नावक्ष हो है। तीनों नीय मुन्तीने यह एक ही बचाव विधा था कि हुनतर नाक्षित्रोंने हमारे ताव कुरा वरताव किया है। बेराक, यह सम्मव है कि से बात कुनी नगीचित काममे जैनके कामको स्वाचन स्तरण करते हीं। दूसरी कोर, यह भी सम्मव है कि हुनिस्त्रीने नास स्वन्ने प्रति स्वस्त्राई कामकाने विध्वमर्योका कोर्ट सावार सीमूद हो। यह विषय देशा है निस्तरी कोर्य होनी काहिए स्वार स्वत्रेत कन ऐसी विकास्त करनेवार सोगोर्टर हुकरे प्रांतिकीय स्वार समस्त होने प्रांतिकीय स्वार हिम्स स्वार स्वार होने स्वार स्वार स्वार होने स्वार स्वार स्वार होने स्वार स्वार स्वार स्वार होने स्वार स्वार स्वार स्वार होने स्वार स्वार स्वार होने स्वार स बात तबादका कर देना बाहिए। अपर वे किर भी काम करनेते हमकार करें तो बीरण पता चक लकेगा कि वे काम करना नहीं बाहते। कहां असे हो बाये कि तिती कुनोके ताब दुर्धवहार हो तो वह मिलाईनेक बातने विश्वाद कर तहता है, परन्तु पेरे मामलॉको शासित करना जिली दुनीके किए तरक नहीं है। यह तो प्रवादियों के तंत्रकरा जान है कि वह सिकास्तोंकी बाँच और, सबर तानव हो तो उनका हकान करे।

शनवाशाश राजार करना कावस्त्र करके निक्तवीये बुटकारा या केरी हैं। में पुत्रमें बड़ी घोननीय हैं। इनकी कोई ग्राचीननक कैकिनत नहीं भी बाती। इस बारेंसे उनसे कच्चा नहीं होया कि मैं १५ मई, १८५६ के इक्लबंटनरते मिम्मिक्तिकर जबरण में हैं

प्रवाती-संस्त्रकके वानिक निवासने एक प्रमुक्त बनी सान तीरपर क्रिया म्यान दिया काता है उन्नते क्यावा दिया जाना ककरी है। वह चुन है जापपार्वीन हर सान होनेवानी डुनियांकी सानद्वराजांका। इत वर्ष कुल ८,८२८ सोनीन सानद्वराज करनेवानोंकी संस्ता ६ वर्ष हरे है। १८९४ में एक बड़ी संस्तार्थ कान्यद्वराज्ञ देश बी। दुक हो यह एक बहुत बड़ा प्रति-स्रतमान है। इससे सम्बेह होता है कि कुछ जायदादोंमें 'कुसी' मजदरोंके साथ बैसा व्यवहार करनेंकी प्रया प्रवस्तित है, वह यकार्गोके प्रति किये कालेकाले व्यवहारसे बहुत बयावा मिलता-कुलता है। कुछ चास चामदाबोंमें ही इतनी आत्महत्यार्थे होती हैं यह बात अत्मन्त अर्थ-गाँगत है। इस विषयमें जीच-पहताक करना जबरी है। जो मभाये कोप जिम्बनीते मौतको स्थादा पसन्द करते हैं जनके साम किया मानैनाका व्यवहार क्या येला है जिसले उनका जीवन जसका हो जाता है ? इसका निक्षम करनेकी इंग्टिले किली प्रकारकी बाँच-पहलाक नहीं की जाती। यह निषय ऐसा है कि, सत्मव है इसकी और कीमोंका ध्यान न बाये। परम्तु ऐसा होना नहीं चाहिए। हाल में ही बक्तिचकी एक आसवाबमें णक कुकियोंने कान छोड़ दिया था। शुक्रयमेके बौरानमें चन कैदियोंने अशास्त्रके सामने बुल्कमबुल्का कहा कि वे अपने भाक्तिकके पास बाँकनेके बजाय आल्महत्या करना परान्य करेंमें। मजिस्ट्रेटने कहा कि बसके पास सिवा इसके कि अन्हें गिरमिटकी अविव दूरी करनेके किए नेज विधा वाये दूसरा नोई विकस्प नहीं है। जब समय जा गया है वन कि छप-निनेसको प्रवस्य करना चाहिए कि ऐसे फरियादी किसी जॉब-सवास्त मीर चनताके सामने अपनी शिकायताँ-सम्बन्धी सम्ब पेडा करनेका भीका पा तर्के। यह भी बांग्रनीय है कि नेत्रियंत्रकमें जायतीय मानलेकि एक पंत्रीकी निमुक्ति की कामें। बाजकी हाकरोंमें विरमिदिया भारतीयोंपर भागोंमें बाहे मेंसी भी पाराविकताका व्यवहार क्यों न हो उनके नास वसके विसाध अपील करनेका कोई कारपर तरीका है हो नहीं।

बसके बिलाफ क्योल करनेवा कोई कारधर तरीका है हो नहीं।
फिर मी इस वरने कपनते यह बयाक पैदा करना नहीं बाहते कि
नेगालमें गिरमिरिया माराजिनेका पीवन एवं दूधरे देखेंकी करेबा ज्यारा
मुस्तिक है, या यह अपनिश्चेक सक माराजिनेका पीवन प्रिकास क्यारा
हिस्सा है। उससे इस बातते हैं कि नेटालमें ऐसी बायरामें मोजूद हैं, तिनमें
माराजिनिक सात बहुत कपात स्माद्दार किया जाता है। इसक नाल ही इस
नम्पाद्वार्थ वह भी करते हैं कि निर्मारिया माराजिनीको बरस्सा जैती होनी
बार्य में पूर्व तर्ज बेनी नहीं है बीर कुछ बाउँ ऐसी है जिनकों बोर
स्थार की पूर्व तर्ज बेनी नहीं है बीर कुछ बाउँ ऐसी है जिनकों बोर
स्थान देना बायराक है।

वब किसी मिर्गिटिया भारतीयका मुक्त परवाना (की पास) को बाता 🛊 तो उसे उत्तरी नकसके सिए तीन पाँडकी एकम देनी पहली 🛊। इसका कारन यह बतामा बाता है कि भारतीय अपने परवाने बोरीसे बेच देने है। परन्तु इस प्रकारकी भोरीकी विजीके अपरावर्गे तो उन्हें कानून हाए धना दी का सकती है। को मादमी कपना परवाना बेच देता है उसे तो द पाँड देनेपर भी कभी उसकी नकल नहीं भिक्तनी बाहिए। इसरी बोद सामारच मारतीयके किए नकल पाना बतना ही बासान होना चाहिए वितका कि बसकको पाना। एनसे अपने परवाने अपने नाव रखनेकी अपेका की बादी है। फिर समर वे अक्सर को बाते हैं तो इसमें क्या बारपर्य ? मैं एक भारमीको बानता 🛊 को इसलिए नकत नहीं पा सका कि उसके पास है पाँड महीं थे। यह बोहानिसदर्ग भाना चाहता या परन्तु या नहीं सका। संरक्षकके विभागमें ऐसे मामकोंमें बस्ताबी परवाता वे देतेनी प्रया प्रवस्ति है। इसमें धर्व यह होती है कि परवाना धनेवाका अपनी कमाईसे सबसे पहले संरक्षकके कार्यालयके तीन पाँड चुका थे। जिस मामखेकी चर्चा में कर पद्धा है जसमें अस जावमीको ६ महीनेके किए जस्तामी परवाना वे विमा समा वा। इतने समममें वह १ पाँड नहीं कमा सका। इस तत्वके मामने दर्जनी 🖁 । मुझे कहनेमें कोई संकोच नहीं कि तीन पाँड बसूब करनेकी यह प्रवाकी बन्धित दर्शाव आक्रकर स्थ्या ऐंटनेकी प्रमाजीके बलाया कुछ नहीं है।

बलनेड

विधिव समाप्रीके सामनाभीग उपनिषेत्र — चून्तैयके कुछ करवों में जानकी विकास निपाय प्रकासिक किये मने हैं। समित वसी अपनिष्ठेस मेडमाँन नामक करनें भारतीयकि पास कपमत २, पौड़की बर्यान है, एकोर्ड बीर मोलवंदी नामक करनोंके निपय उनके बयीन वर्षिन या सक्त समित करा एकोर्प मामक करनोंके निपय उनके बयीन वर्षिन या सक्त समित करा किया है। हमने भी चेन्तरकनको प्रार्थनायक मेडा है बीर बयी वह उनके विधायकी है। हमने भी चेन्तरकनको प्रार्थनायक मेडा है बीर बयी वह उनके विधायकी है। हमके उपनिविध्यों (कॉक्सिस्ट्य) का करना है कि स्थाय समाप्रीके बातनायीन कानिवेदों नार्यामीन्य ऐसे प्रतिचल्च नाम्यों मामक वर्ष है हो किय नेटाल नेटी उत्तरकारी सासक करने हैं

रं पेकिन सम्बन्धः इक्त १९९३ र मीर इ. इ. १९४ । ९. देविन सम्बन्धः १ इक्त ११०-११४ ।

वेचका भी उनके धाव स्वेच्यानुसार व्यवहार करनेका विकार होना चाहिए। बुक्सैबर्ग दूसारी स्थिति की स्टेटर्स बहुतर नहीं है। बुक्कैड बाता हतना बतरेका है कि बिन एक्ट्यो बोर्सोने वहाँ बानेका साहस किया उन्हें कोट बाता पड़ा। यहाँ मारतीयोंके किए कमाईके बच्चे सामन है, परन्तु बुम्बेबहार बाहे बाता है। हों बाता है कि इस कठिनाईको दूर करनेसें सरिक विकास मा किया बायेगा।

केप कासोनी

मेग कामोनीनें नेवरींकी कायेक्ते एक प्रस्तान पाठ करके यह हक्का ध्वनत की है कि नहीं एरिजाइबॉटी बाइको रोकनेके किए कानून बनाया जाये। उठको साथा की है कि कार्रवाई पुरस्त की बायेगी। उजकर, मेग विवानसंकरी हाल है। वह उन उपनिवर्धन एक सहर गीर हाल है। में एक कानून पाछ किया है। वह उन उपनिवर्धन एक सहर हैए के करको म्युनिवर्धिकाओं के सिकार है। वह कुछ ऐरी क्यंत्रियम बना के निरास माशिकार्धों और माशिकार्धों के स्वानत बनेत की तथा सिकार्धों है है जाने कार को मीर नहीं पैकन परिवर्धों पर कार्यों की पाछ की माशिकार्धों की स्वान्धां का स्वान्धां की स्वान्धां की स्वान्धां की स्वान्धां स्वान्धां की स्वान्धां की

इस्ताहल जुतेमान नामठ एक करवने हैस्ट विश्वालंडमें एक वस्तु-भेडार (स्टीर) वस्त्रामा। करते अपने मालगर तह-कर करा कर दिया और परवाने (बाहतेला)के लिए कर्यों ही जिते मीलाईस्थे नामंत्रूर कर दिया। भी अपनी व्यक्तिको उस अरवको औरसे केन-सरकारके लालने वर्षील की। परन्तु केप-सरकारचे निजाते प्रतक्ष के स्तान बहाक रखा और रिवेंग्र दिया कि हैस्ट विश्वालंडमें किसी करक या दुलीको स्थापार करनेका वरवाना न दिया वार्षे और जिन्म एक-यो लोगोंके पात वरवाने हैं उनका कारवार वस्त्र करा दिया वार्षे।

इस प्रकार दक्षिण जारिकामें सम्प्रजी-सरकारके धामनावीन कुछ हिस्सोंमें उतकी मारतीय प्रवाके निहित स्वार्थ भी संग्लयकी वस्तु नहीं हैं। उस भाष्यीयका बांकिर क्या हुआ में पहली उरहये बान नहीं सका। वरण्य ऐसे मानसे अनेक हैं बिनमें भारतीयों के स्थापारक परवाने देनेते किया किया विकायपारके प्रकार कर दिया पता है। नेटाकों कादिवारियोंके मानमा-पर एक सरकारी विकास मकावित हुआ है। उसमें एक मनिस्ट्रेटने कहा है कि बहु भारतीयों की स्थापारके परवान देनेते सीन-सीचे हनकार कर देशा है बीट इस प्रकार करने स्मतिकार अनेश्वान तेत्रता है।

नाटंडं टरिटरीन

बार्टेंड टेटिटरीकमें यो बार्ट्याविके छात्र यही व्यवद्वार हो रहा है।
हाक ही की बात है एक भार्ट्याविको स्थापारका परवाना देवेंचे इनकार कर
दिवा तथा बा। क्यते व्यक्तित्व नावाकरमें व्यक्तित्व को और स्थापारको क्षेत्रका दिवा कि उसे परवाना देवेंचे इनकार नहीं किया चा एकता। अब
रोडेचियाके बोदिने एक्सारको एक प्रावेत्त्व नेक्सर बनुरोध किया
है कि स्थापन पेता परिवर्धन कर दिया बाये विश्वते नार्य्याविका परवाना
याना कामृत्त रोका वा एके। कहा बाहा है कि एक्सरका स्थापन मेवा पर्या
है एक्टरे बारेने बाहिक बाहिकी डेबरे क्येक्सको एनारपारका क्यत है

बहु तथा जिली मी क्यों ग्रांतिनिधिक नहीं थी.— ग्यू में कह सकता हूँ नीर समावि वाल कह सकता हूँ — इसकी तुने बूकी है। बार यह मिलिल होंगे भी यो कवते सहरके निशासिकोंको कोई मलेगा न होती। वजने कोई बारा पर कार्यिक होंगे कार्य पर मिलिक होंगे भी यो कवते सहरके निशासिकोंको कोई मलेगा नहींने सिक्त इसके मुख्य के के स्वाप्त के स्वाप्त

सामुद्य ही किया। क्यों यह कहना कटिन हैं क्योंकि शहरके बहुत बड़े सहस्र-समाजको साकना उद्य जकीयो स्वार्कपय और संकीय माने विश्वपुत्र विपरीत है, को इस प्रश्नपर कोलनेवाले लोगोंने व्यक्त किया है। मैं यह क्याल किये क्येर नहीं पह सकता कि जिस कारिके लोग परिसमी और सिंगर हैं और अवसर कारोपर अपने गोरे रंगने नाइपोंकी कोईगों की पर्वोको योग्यता और इन्डताचे निमानेकी शनितका गरिक्य है जुके हैं उस कारिके लोगोंक आवननती विश्वी हानिकी मार्चका नहीं होनी कारिए।

ट्रान्सवाम

वन गैर-किटिय राज्यों -- हात्सवाळ और की स्टेटके वारेसें। १८९४ में ट्राम्सवाळमें समाग २ व्यागारी ये विश्वकी चुकरा पूँबी एक साल पॉक्ष हांगी। इसमें से कोई तीन पेडियाँ इंग्लैंग्ड डर्बन पोर्ट एकियावेग भारत तंवा बन्ध स्वानोंसे सीवे माक मेंगाया करती वी। दुनियाके दूसरे भागोंमें उनकी बालाएँ भी जिनका मस्तित्व मुख्यतः उनके ट्रान्धवासके व्यापारपर जनसम्बद्ध ना। बाकी कोग कोटे-कोटे दुकानदार वे। उनकी दुकार्ने विभिन्न स्वागों में भी। गनराज्यमें कममग दा हुवार फेरीदाके थे भी माक वारीद कर भूम-यूमकर क्षेत्रते थे। यूरोपीन वर्षों या होटबॉर्में काम करनेनाओ मजदूरीको संक्या नयभव १५ वी। इनमें में कगमव १ बोहानिसवर्यमें पहले में। यह इसका भी मोटे शीएपट, १८९४ के अन्तमें। जब संस्था बहुत बढ़ पई है। ट्रान्सवाकर्में भारतीय अवक सम्पत्ति नहीं रख सकते। बन्हें पुनक बस्तिमॉर्मे रहनेका आवेच विया का सकता है। उन्हें स्थापारके कर्षु पृषके बारवसाम प्रतृतका भावचा वाच्या का कन्या हा कर्यु चारास्थ तमे परवाने तही हिमें बाते। उन्हें ६ पीडका निर्देश पंजीकरम (प्रतिस्ट्रेयन) सुरक देता पृष्ठवा है। से सब प्रतिबन्त मैर-कातृती हैं क्वॉकिस से क्वन-समझीतेके विस्त है। क्रेन-समझौतेके द्वारा हो। समात्रीकी समस्त प्रभाके सविकारींकी पुर्यक्षेत्र कर विया गया है। परन्तु समामीके मृत्यूर्य करनिवेश-मंत्रीने समझौरेका अञ्चलन करनेकी जनुमित है ही भी इसिक्ट ट्रान्यबाक स्टर्युक्ट प्रतिवन्त्र नाहनेमें समर्थ हुवा है। १८९४ ९५ में इन प्रतिवन्त्रीपर पंच कैंगका करावा गया या और पंचने बारदीयोंकि खिलाफ निर्मम दिया। मर्थान जसने यह दिया कि पन्तान्य इन कानगींको मंगर करनेका श्रविकार रबता है। पंचके निर्मयके जिलाफ बिटिश सरकारको एक प्रार्थनापन मेजा गया था। भी चेम्बरलेनने अब उत्तपर अपना निर्मंत है दिया है। क्यांनि प्रार्थनाके प्रति सहानुमृति तो व्यक्त की है परस्तु वंकका निर्धय स्त्रीकार कर किया है। तबापि उन्होंने समय-सभयपर टान्सवाक-सरकारसे मैशीपर्न निवेदन करते रहनेका पाता किया है और इसका अधिकार तुरसित रसा है। बौर सगर निवेदन काफी चोरवार हुए तो हमें कोई सल्वेह नहीं कि बलावा हमें न्यान प्राप्त डाकर प्रांगा । इसकिए इस सार्वविक संस्वाबीसे प्रार्वना करते हैं कि वे अपने प्रभावका क्यमोग करें वाकि में निवेदन ऐसे हों किनका मांक्रिय परिचाम हो सके। मैं एक जबाहरन वे थूँ। मालाबोक-मुखके समय जब ब्रिटिस प्रजाननोंको भरती किया का रहा वा बहुत-से कोगोंने निरोव किया वा और विटेनकी सरकारसे इस्तक्षेप करनेकी गाँव की वी। पहले-पहळ जो उत्तर दिया गया यह इस आसमका का कि विटेनकी सरकार भवाराज्यके कामींमें इस्तकीप नहीं कर सकती। इसपर समाचार-पत्र बीलका उठे और किरसे औरबार सन्दोंने प्रार्थनापन मेजे यसे। आखिरकार टान्सवाल-सरकारके पास यह सनुरोक-पत्र पहुँचा कि ब्रिटिया प्रशासनोंको अरुती न किया जाये। यह इस्तमेप नहीं था फिर भी अनुरोक्को मामे दिना रहा नहीं या सकता था और प्रिटिय प्रजानगाँकी भएती रोक दी गई। यहा दम आया करें कि इमारे निपयमें मी पेता ही सफल अनुरोच किया जायेगा? हजारा निवेदन है कि हुगारा समान मर्छ ही मरसी-विरोधी आन्दोलनसे सम्बन्ध रजनेनामे समाजके बराबर महत्त्व न रचता हो किर भी हमारी धिकामते उसकी धिकायतींचे बहुत ज्यादा सहस्वपुत्र हैं।

एमा कोई बनरोब किया जाये या न किया जाये पंचके निर्वयमे ऐसे प्राय करेंगे जितपर भी चेम्बरलेनको ध्वाल बेता ही होता। ट्रामाबालके सैकड़ों मारतीय वस्तू जंडारीका क्या किया जावेगा है क्या वे सब बन्द कर दिने आयेंगे ? त्या कर सब कोगोंको पुत्रक वस्तिनोंगे खुनेको नाम्य किया जायेगा और जनर हो सो कीन-मी वस्तियोंगें ? वसिय वाकिनी पनराञ्यकी राजधानी मिटोरियाचे रहनेवासे मकायी कोबोंको हटानेरे सिक्तनियेमें विदिश धर्जेंटने टान्पवालकी बरितयोंका वर्षन इस प्रकार किया है

१ देकिए राज्य १ एवं १८९-५११। १ कारी दोल्यांक्सी संबंधिक संपन्त गातिक साथ दोतर कोर्नोचा सुद्र।

जिस स्थानका उपयोग कृता-काक्य क्षत्र इंग्यूटा वरनेके निए होता है और कहां सहर और कालीके बीचने नातेमें सिर-सिरकर खानेवाने पानोके सिसा दूतरा पानी हैं हो गूरी वसपर बसी हुई कोबी-नी कालीमें लोगोंको दूंग देनेका सीम्बार्य परिलाम यह होगा कि नगके बीच मायक सिरमंदे बुजार और दूसरे रोग पौन लागेगे। इससे उनक प्राय और सहस्ये दुनेवाने कोजीका क्यास्थ्य मी कालोमें यह कालेगा। (सरकारी रिपोर्ट — 'सीन बुक' संख्या २ १८९३ पुष्ठ ७२)।

बगर उन्हें बरने बस्तु-संदार बेचनेके किए वास्य किया गया तो कोई मुमावना दिया वायेगा या नहीं? किए, वानून स्वयं दुविधाननक है। येची उन्हों ब्याद्या करनेको बहा गया था। उपने सब यह काम ट्रान्यवाल के उच्च स्थायात्म्यरर छोड़ दिया है। इस्पार घावा है क्या बानूनोंके हारा एक्सर हमें बेलियोंमें निवान करने मानते विश्व वास्य कर एक्सी है। परन्तु गण्यार दावा करती है कि नियावों कुलाने भी धानिक है और दर्शाव्य उस कानूनके क्यार्थन हम निरिद्ध विद्यालये काहर स्थायार भी नहीं कर शक्तो। कहा बाता है कि वच्च स्थायात्म गरकारी स्थायाके पहारे है।

द्रान्मसाममें यही पिकायनें सब नहीं हैं। ये ठा बेबस से पिकायमें है दिनार पबका निर्मय आप किया गया था। परनू एक कानून ऐका है यो एको साधिवारियोंको रोहरता है कि वे रुकती परोसे मीर इसर वर्षकी दिन्दें ने हैं। साधिवासी और जन्म दिन्दारों पोताक हमारे बरातक या हमारी रिम्मा मुस्तिया रच्या बाता है। वन्में हमारी पोताक हमारे बरातक या हमारी रिमान मुस्तिया रच्या बाता है। वन्में हमारी पोताक हमारे बरातक या हमारी रिपारतों केया और कानून तो नहीं है मतर छोटे-योंने कर्मवारी पामान करते पहीं है। करिनार सामृत्य नहीं है। वेमानीबा-वेसे अधिवारी प्रामान करते पहीं है। करिनार सामृत्य नहीं है। वेमानीबा-वेसे अधिवारी पामानीबीमा दनात कान करते हैं कि बर कारी याति मारीबा कुछरे करते गामीबीमा दनात कान करते हैं है। करता की स्वतिय मारीबा कुछरे करते गामीबीमा दनात कान हो। ती बारीस वर्ष नामसामानी भीमार पहुँचा करते दिया बाता है। वहीं बारीस वह नामसामानी भीमार पहुँचा दनवें परसान बनानेकी बहा जाता है और दिस्त मारी दनके पाम पहुँचे सन्पूर्व पांची वाह्नव

ŧ٧

दर्में का टिक्ट हो चाहे दूसरे दर्में का एवं तीसरे दर्में कियों दें दिया बाता है। उस तक्सीकरेंद्र बादमं कोटी मात्रा में महीने-महमी नामार्क स्थान करने मान्यूम होगी है। यहां कात तेराकों भीतार्म मी है। चार जाह पूर्व वर्में में एक भारतीय सरवार्म मिला में मी है। चार जाह पूर्व वर्में में एक स्थान कर स्थान स्थान स्थान कर स्थान कर स्थान कर स्थान स्थान

स्पत् साते ही गहीं।

किर, द्राम्बाक्सें सीरम सारिक्षी साहिसाधिनीकी तरह आयोगिकी

कारो प्राम्ब मानाम परमाना रक्ता पहाता है विकास मूम्य एक धिर्मिम

होता है। यह उनका सात्रा करनेका अनुमतिन्य होता है। यह जाता है

कि यह तिर्के एक-तरका सका करनेका अनुमतिन्य होता है। यह जाता है

कि यह तिर्के एक-तरका सका करनेका अनुमतिन्य होता है। यह प्राम्ब स्वाहरण

यह है कि भी हानी गोम्बन्द हानी साराको जाकने सानेगो उत्तर दिया

यह से कि भी हानी गोम्बन्द हानी साराको जाकने मोनोगे उत्तर दिया

यह से कि भी हानी गोम्बन्द हानी साराको जाकने स्वानेग हेनेगाने पुनिस्को

सेनीका के ह्यारेपर, तीन गोम पैस्त चलना पहा या । यहनाम देनेगाने पुनिस्को

सानारी कर्षे साराया यहां हम्मिन्द स्वाने अनको परकास देना पैस्तकारी

सानारी कर्षे साराया यहां सुक्का पूर्ण स्वानेग देना वर्षे

प्रिटोरिया बीर बोहानिस्तर्यमें मारतीय विकारपूर्वक रेवस परियों-पर नहीं बल सकते। मैं 'विभिन्नारपूर्वक' सकता प्रयोग वीज-तमसकर कर पा है क्वींकि वाचारका व्यापारियोंके वाच सेहसाइ नहीं की बाती । बोहानिस्वर्यमें से तस्त्रीचीकर देवा पर कार्यनिक्य में हैं। शिरोरिया में से पिस्ती नावके एक सम्बन्धों को समास विकारियाल्योंके स्वाप्त हैं बक्के देकर प्रदर्शने बाहर कर रिया मना बा। उन्होंने इन बानें विकारां में निनता। विशेश एवंटना स्थान भी इसकी ओर शीचा वया। परन्तु

र नैतेको साम्ब्रा कोचा। रक्षिण माहिको गोरे साहिक सर्पे शासील का नैयों मीहरोको स्टेम्पेन किए सक्तर गायेक का प्रशेत करने हैं।

यथिपि डिटिस एजेंट भारतीयोंके प्रति सहातृमृति रकते वे उन्होंने हस्तक्षप करनसे इनकार कर दिया।

कोहानिस्वरिक सीता-कात-कातृनीकि वतुसार आरतीय कोण सात वकानेके परकाने नहीं पा सकते। और उनका देशी सीना रकता या देवना भी अपराव माना काला है।

मारेंब की स्टेट

बारिंव की स्टेटने जैसा कि मैं एक बणवारसे स्वयुक्त कर पुका हूँ शिटिय मारसियोंका नहीं स्थान बस्तमक कर दिया है। इमें उस राज्यते बरेड़ दिया बचा है और हसते हमारा ९, वीडका नुकात हुआ है। हमारे बस्तु-अंडार बच्च कर दिये नमें हैं और हमें उनका कोई मुबाबका नहीं दिया बचा। इस मामकेते पिरोम मान्यत मारसीय क्यापारिकॉर्स मानी व्यक्तिकी जायाबोरर वो राज्य पड़ यवा बस्त्री को बात ही बक्च परन्तु बचा भी चेन्सरिका हुकारी इस्त्री सिकान्दर भी स्वत्री मार्गत और कारता की स्टेटसे हुनारे ९, पीड दिवा देने ? मैं उन मह व्यापारियोंको जानता है। उनमें से विभावत्र सदेई बातेंके एड्ड विभावत्र प्राप्त मार्ग माने वार्त वे बीर वे किस्ते करनी पहलेडी हामकर्त प्रवेद नहीं कहे विभाव कार्यक्त अन्तर्गत नास्त्रीयोंको बदेहा मार्ग है च्छे 'एसियाई पीन्नोरॉकी बाह रोकने कम कार्नु क्या जाता है। उनके बनुतार कोई मी मारसिय बार्ट भी देने में से महीनेते जाता नहीं पह स्टब्ता। बनर कोई व्यापा स्वत्रा चाहता है सो नवके लिए राज्यस्त्री क्याच्या बन्द की सेना सक्ते हैं। और उनकी

र देनिल ग्रम्बाह प्रकारभट≕रद्रा

सम्बर्ग बांची बादमद अर्जीपर उसके दिये जानेकी तारीससे ६० दिनने सन्दर, और अग्य

**

औरवारिक कार्रवादमाँ हो बानेके पहले विवाद नहीं किया वा सकता। इसपर भी कोई भारतीय कहाँ अवस्थ सम्पत्ति नहीं एक सकता और न कोई म्मापार या चेती ही कर सकता है।

बब्बजको अधिकार है कि वह वहाँ चहनेकी ऐसी संवित अनुपरि परिस्पितिमंति अनुसार' दे या न दे। इसके बढावा वहाँ रहनेवाले प्रस्पेक

भारतीयका १ पीड वार्षिक कर देना पहुंचा है। स्थापार या चेती-सम्बन्धी भारात पहली बार भंग करनेकी समा २५ और अमौता या तीन सहीतेकी सारी या कड़ी कैंद है। बारमें सब अपराजेंकि किए सजा बनी होती जाती है। परका राज्यतो आपको बास ही में नेटासके एजेंट-जनरस'ने बताया

🕏 कि नेटानमें मारतीयोंके साथ जितना अच्छा स्पन्तार किया वाता ै

उससे ज्यादा अच्छा और कहा नहीं होता. अविकृतर गिर्टिमिटिया भारतीय बापसी-टिकटका फायबा नहीं बठाते पद्दी मेधै शूस्तिकाका धवते अन्छ। बबाव है और, रेसवे तवा ट्रामगाडियोंके कर्मवारी भारतीयोंके साव परालोके बैसा स्पवद्वार महीं करते और न बनातरों ही उन्हें न्यावरी वंधित समती है। एकेंट-बनरसके प्रति समिक्तम सम्मानके साम उनके पहने कमनके बारेमें मैं इतना कह सकता है कि ९ बजे धावके बाद परवानेके दिना बाहर

निकसनेपर जैसमें बाल दिया जाना एक स्वतंत्र देशमें नागरिकताका निवाल प्राथमिक समिकार न दिवा जाता बुलामी वा ज्वाहाने ज्याहा स्वर्गक विरक्षिटियोंकी अपेक्षा केंची हैमिक्स बेनेसे इसकार किया जाता और रुपर बनाय हुए अन्य प्रतिबन्धीका संपाया बाला — ये सब अगर अच्छे

१ वर्ग पुल्लिकाके बचाशिल कानेक्ट १४ निवास्तका शकारने उसका बच ब्रमारसस्य नारांग्र अस्त्यारीया केंब्र (स्वा) स्पेत्रीजे बुल्डिया बार्सान्य ब्रह्म दर्भराहरे को मारोप किने के क्या कैरावाधिक एक कराउने सकत करनेया प्रवास क्रिया सहारूके मारणाने बांधी होते. जेर-क्रमहकती साराहिक अधिवाद दिना ना जो नहीं ''परंतु सहयती ... " से केरर ''आर्टन स्नाहरी नवृद्धितीनमा " (वृद्ध ४४) सद्दे नंतुच्चेतावे वात्रम्य है। इस संग्रंधे वरी दुरितवराग दुनर्ग नावृद्धिवे रामिन व शिवा नवा मा मीद करनी वस्तावराने हते हरिन्द्र बना गंवा वा (वेटिक कुछ ११४-१०६३ और इन दिवसी मजरारे ताम र्राचीमीके रचते विष देखिए हुछ ५१-५६) ।

व्यवहारके उराहरल है तो 'अच्छे व्यवहार' के सम्बन्धमें एवेंट-जनरख्नी बारमा बहुत विस्त्रमण होनी चाहिए। और बगर दुनिश-मरमें मासीसीके साथ किये वागेवाले व्यवहारमें सही सर्वोत्तम है तो सामारण बुबिके बनुसार

साथ किसे बार्गचाले व्यवहारने यही सर्वीत्तर है हो साधारण बृद्धिक ल्युकार हिप्पाने हुएरे हिस्सेंने बीर यही भी मारतीयोंका माग्य निस्मानेह बहुत ही हुन्नाय होगा चाहिए। बात यह है कि एवँट-नरत्क यी चास्टर रीतको सरकार किसी के साहर रीतको सरकार किसी है। कानृती निर्मानवारों नैदाल सरकार किसी है। कानृती निर्मानवारों नैदाल सरकार किसी है की यो सरकार की स्वीत्तर के साहर में बीर पर्वेट-नरातको सर्वान्ता किसी किसी है। कानृती निर्मानवारों नित्या करने ही वी स्वीत की स्वीत के स्वीत कि क्यार बता विसक्त के मोर्टिनील है वह सरकार की साहर कर सेरी कि क्यार बता विसक्त के मोर्टिनील है की साम कानृत निर्मान कानृत की साहर कानृत निर्मान कानृत की साहर कानृत किसी कान्य कान्य है। कान्य कान्य किसी किसी कान्य कान्य है। वी साम कान्य की साहर कान्य है। वी साम कान्य है कि एवँट-नररकने की मत व्यवह किसी है वसके साहर नहीं दिया वा सकता।

पिरामिटिया भारतीय जाम वीरार बायगी-टिस्टम्का कायरा महीं उसते देस क्लुस्थितिया हम प्रतिवाद मही करते। पान्नु यह दूसारी पिका सर्वोक्त सर्वोत्तम उत्तर हैं इसका दो बंदन हमें करता ही होचा। इस बलुस्थितियें निर्याच्यानांका जांत्रित्व मृत्य की साधित हो सरता है। इसमें दो यह पित्र हो सकता है कि जो मारतीय बायगी-टिकटका कायदा महीं उसते के मा तो निर्याच्यानांकी परवाद नहीं करते या करके बावजूद स्थानित्रंगों के रहते हैं। यदि पहची बात हो तो ज्यादा स्थान्यक्र स्रोगोंका कर्मच है कि से भारतींकीको उनकी दिस्ति महानुक करने बार अर्थे

समझार्वे कि सन निर्धोचनाओं के सामने सिर मुकानेका बर्च अपना अब पतन होता है। अगर पूसरी बात हो तो यह आसीय राष्ट्रके पैसे और असा वितका जिसे भी चेम्बरसेनने राज्यबात पंच-केंग्रका-सम्बन्धी अपने नारीतेयें

स्वीकार किया जा एक जोर जशाहरण है। वे तिसाँच्यताओं को सहन करते हैं यह कोई कारक नहीं कि तिसाँच्यताओं को दूर न किया जाने या वन्हें विकास समझ है उनने समझे कारहारकी सोतक बनाया जाने। किर, में लोग है कीन जो कि सारक लोगने करने कम जानिकोर्स कार आते हैं? वे लोग से पीन को कि सोर सारी क्यारा पनी आसाहिता किनोड़ •

कोन 🖁 जो भारतमें धानद जावी मुलमरीकी हाजतमें रहते थे। वे नेटाल नमें हैं जनर सम्भव हो तो वहाँ नसनेके किए और अनर उनके परिवार में तो उन्हें भी शाध से गये हैं। फिर नवा ताज्जब कि से अपने गिरागिडकी बननि पूरी करनेके बाब जैगा कि भी सोवर्सने कहा है उसी बाबी मुखमरीकी हास्तुमें सीरतके बबाय एक ऐसे बेसमें बस बादे हैं. जहाँकी आबहुवा सरहण्य है जीर बड़ा थे सब्धी-मनी पीविका प्रपादित कर सकते हैं ? मुर्को भरतेगा*का* मारमी रोटीके एक ट्रकड़ेके किए फिवना भी वृष्णेंबहार मह सेवा है।

क्या ट्रान्सवाक्रमें चोरे परदेखियाँ (एटलॉब्बर्स) की विकायताँकी सूची काफी करनी नहीं हैं। फिर भी जरने धान होनेनाजे दुन्येनहारके नामजूद नवा ने इजारोंकी संक्यामें इसकिए टान्यवाकर्ने एकत नहीं होते कि नहीं ने कपने पत्तने देखकी कपेक्षा ज्यादा सरस्वतारों जीविका चपार्निय कर सकते हैं।

बढ़ भी स्मरण रसना चाड़िए कि भी पीसते अपना वक्तव्य देते समय स्वतंत्र भारतीय व्यापारियोंकी कोई पनना नहीं की। ये व्यापारी स्वतंत्र रुपरो उत्त प्रपतिनेशमें बाते हैं और अपमान तथा निर्मोधनाओंको सबसे क्वादा महत्त्व करते हैं। बगर गीरे परदेश्वियोंने यह नहीं कहा जा नकता कि बच्चेनद्वार नहीं सह सकते हो दान्सवाक न बाबा तो फिर ज्योगी भारतीयों है ऐसा कहना तो और भी निरर्पक है। हम बाडी परिवारके सबस्म हैं और उसी महिमानगी मंकि बच्चे हैं -- हो सकता है जीव किये बच्चे हों और इमें उन्हीं अधिकारों और विशेषाणिकारोंका माश्यासन दिया वया है, भा बुरोतीय बच्चोंको प्राप्त है। वही विस्वात या विसको सेकर हम भेटान-वर्गनिरेशमें नवे भे भार हुने भरीता है कि हुमारे भिरवासका जापार मजबत वा।

एबॅट-बनरमने मेरी पृश्निकाके इन कवनका प्रतिकाद क्रिया है कि रेसने और रामपाहिनोंकि कर्मभारी भारतीयोकि साथ नगर्जी वैद्या व्यवदार करने हैं। अवर नेरी नहीं हुई बाउँ गलत भी हों तो इच्छे कानूनी निवास्थाएँ यता साबित नहीं होती। और हमने प्रार्वनाएक तो केवल कानुनी निर्वोध्यनाओंने बारेमें ही मेने हैं। उनको ही इटानेके निय हय

र का नारे वधिन शाकियातानी वर्ती का बनाहेके किए वर्तनी के। अर्ताव मानक्ति देशी वर्ष को दूर तारे और बार्ड तरे दूर कारब, अर्थन आदि।

ब्रिटन और भारतकी सन्कारीके सीचे इन्तक्षेपकी प्रार्थना करते हैं। परम्यु मेरा हो बाबा है कि एजेंट-जनरकको सकत बानकारी दी गई है। मैं बुहरा-कर कहता है कि मारतीयोंके साथ रेक्क्ने और ट्राम कर्मचारियोंका गरताय प्रमुखों भैसा ही है। मैने पहले-पहल क्षत्र मह वस्तुव्य दिया वा उसे जब कगभग को वर्ष हो गवे हैं। वह ऐसे श्रमावर्मे किया गया का जहाँ तुरन्त उसका प्रतिवाद किया जा सकता था। मैंने नेटाककी स्वामिक संसदके हरस्योंके नाम एक सु**ही चिट्टी कियी थी। धपनिवेदामें उसका स्मापक** क्यारी प्रचार हुना या और वशिल आफ्रिकाके प्राप्तः प्रस्पेक प्रमुख पत्रने उसका उस्केस किया ना। उस समय किसीने उसका बंदन नहीं किया। कुछ पर्जोंने को उसे स्वीकार भी किया था। ऐसी परिस्थितियोंने मैने उसे अपनी वहाँ प्रकाशित पुस्तिका में उद्युत कर विया। मेरा स्वमाव वार्तीको अविरंजित करनेका नहीं है और अपने ही पक्षमें प्रमान पेश करना मुने बहुत अप्रिय मालूम होता है। परन्तु मेरे बस्तव्यको और उत्तक हारा छत कार्वको जिसकी में हिमायत कर रहा हूँ बदमाम करनेका प्रकल किया जया है। इसकिए उस कार्यके क्याक्से जापको सह बता देशा मैं जपना कर्तव्य समझता हूँ कि जिल सूची विद्धीमें मैने बह बक्तम्य दिया या उसके बारमें पश्चिम बारिकी पत्रीके नया विचार है। चीक्राभिसवर्गके प्रमुख पत्र रचारने कहा है

थी पांडीले प्रमाचोत्पादक बंपसे, सीम्पताके साथ और अध्या किया है। बन्होंने स्वर्थ उपनिवेदार्गे मालेके बाद कुछ सम्याय मौगा है। परस्तु बनकी भाषनाएँ उसले प्रभावित हुई नहीं बीसती। बीर यह स्वीकार करना ही होगा कि "जुकी चिद्दी" की व्यक्तियर प्रचित क्यरों कोई आपत्ति नहीं की का सकती। भी पांचीने अपने प्रकाये हुए प्रदर्नोंकी मीमांता स्थव संवयके तान की है।

मेदाल-सरकारका मुन्तात्र नेदाल शक्की कहता है

मी नांपीचे मान्ति जीर सीम्यताके साथ किया है। प्रनसे जितनी निष्पन्नताकी क्येका की का सकती हैं, उत्तरी विकासता जनमें है। और इस विकारके तो कि. अब वे जवतिवेदानें आदे के बल तमह

६ इसै दुलिका।

बबील-संबक्त (कॉ सोसाइडी) र ने जनके साब बहुत न्यायमुक्त व्यवहार नहीं किया था वे अपेकारों कुछ स्वादा ही निप्पन है। बगर मैंने निरावार वार्वे कही होती हो पर्वाने ससी विद्वीको ऐसा

प्रमाणपण न दिसा होता। कगमग को वर्ष पूर्वकी बात है एक भारतीको नेटाक रेकनेका एक इसरे दर्जेका टिक्ट खरीबा। उसे रात-भरकी मानामें तीन बार परेखान . किमा नया। सरोपीय सामियोंको कुछ करनेके किए को बार किमा बदकनेको

बाध्य किया पंगा। मामका अवाक्ष्यके सामने चया और मारतीनको श्रविपूर्तिके तौरपर १ पाँड प्राप्त हुए। मामलेमें वादीने यह वमान विकास

में डेड़ बजे पुपहरको चार्स्सवाजनके स्वाता होनेवाली गाड़ीके दूसरे वर्जेंसे किन्मेंसें बैठा । वस किन्मेंसें तीन अस्य भारतीय भी वे । वे स्पूर्णितत्तरें बतर गर्मे। एक पोरेने विस्तेका शरकामा क्षोत्रा और "बाहर निकल मा, सामी" शब्दों हुए मुझको इद्यारा किया। मैने पुक्रा, "स्पॉ ?" मोरेने ववान क्रिया, "वृं-क्यून सत कर, अग्रहर आ आ। यूरी किसी दूसरेकी महाँ बैठाना है।" मैंने कहा, "बब मैंने फिरामा दिया है हो महाँही बाहर क्यों निकर्त ?" इतपर कोश कता गया और एक नास्तीयको ताप क्षेत्रर बाक्त बावा। मेरा लगात है कि वह मारतीय रेक्के-कर्न बारी था। क्सरों बढ़ा मया कि नशरी बाहर निकल बानेकी बढ़े। इसपर जाप्तीयने मृतसे कहा "पोरा तुम्हें बखर अलेका हुत्म वे एहा है तुम्हें निकतना ही होना।" बावमें भारतीय जना पना। बेने बोरेले कहा "तुम मुझे क्यों इत्याना चाहते हो ।" मैंने किराधा दिया है और मुझे बहाँ बैठनेका अधिकार है।" भौरा इतपर भुद्ध हो चढा और बोलद "वैद्ध बगर शु निकल्ता नहीं है तो में अभी तेरा कवगर निकल वृंगा।" वह विलोके अन्वर सा नया और उत्तने मुले वक्क्कर बाहर सींबनेकी कोन्निय की। मैंने पहा "सुरों छोड़ थो; से निकल बाड़ेंगा।" से उस

१ गांपीओने नवींच्य स्वातास्थ्यों बद्धापन करनेकी सनुमक्तिके किए की सातेपत-वस सैया वा बनाग्र नेराक्यों की संस्थारही (वर्गक-नंत्रकाने विरोध विका था।

विक्रोते उत्तर पता। और गोरेने दूसरे वर्जेका एक दूसरा विक्रा विकासर मुझे उसमें धर्म कानेको कहा। मैने उसके बताये मनुसार किया। मुखे को दिव्या दियाया गया वह बाली ना। मेरा बयाल है कि जिस दिव्येसे मझे निकाला गया का कलमें वे कुछ कीय बैठाये ममें को बैड बका रहे वे । वह गौरा म्यूबंसिसमें रेसवेका जिका-सुर्वरिटेंडेंट था । आमे -- में विना विध्न-बाबादे वैक्तिवर्ग तक ग्रमा। में सो बपा वा और मैरिलावर्पमें जब जागा तो मैने सपने डिब्बेर्से एक भोरे पूछ्य एक मोरी स्त्री और एक वश्येको पाया। एक अन्य योक्त डिब्बेके पास बाया और उसने मेरे डिब्बेके मोरेने पूछा, "बहु आपका 'बाव" [नौकर] है ?" मेरे सहयात्रीने जपने छोटे बच्चेडी और संकेत करके कहा, "हा [बेरा 'बाम'-महका-है]।" इसपर इसरे गोरेने वहा "नहीं नहीं मेरा मतलब उससे नहीं है। मैं तो पस कुलीके बारेमें पूछ पहा हैं जो मूबा कोनेमें बैठा है। " यह खेंटी हुई माया बोस्नेवामा भनामानुस एक 'तांडर' यानी रेसवे-कर्मबारी बा । डिक्केंमें बैठे मोरे व्यक्तिने नहां "बोह्न! उसकी परवाह न कीजिए; बसे रहने रौजिए।" तब बाहरवासे गोरे (बर्मवारी)ने कहा "मै कुलीको मोरे कोवंकि साथ दिम्बेर्ने नहीं बैठने बूबा।" बसने मुसते बहा "सामी, बाहर सा ! " मैने कहा "स्त्रों मता है म्यू देवित में वो सुझे दूसरे किन्ति हडाकर यहाँ बैठाया गया वा!" योरेने कहा "ही-हाँ तुलको निरक्तना होया। और वह डिप्येमें युसनेको हुना। मैंने सोवा कि मेरी बटी वित होती को व्यक्तिसमें हुई थी इससिए में बाहर निहन नगा। थोरैने इसरे वर्जेश इसरा विस्ता विलाया। मैं उसमें बना गया। इस देश्यक बह दिस्सा सामी रहा सपर सब यादी इस्टमेदाली बी, एक गीरा बसमें आया । बारमें एक बुत्तरा भीरा-वही कर्मेचारी-जाया और वतने रहा "अगर आपरो यस मंधेने पुत्तीके साथ सफर करना बतन्द न हो तो में आपके निष्य बुगरा दिएवा देश हैं।" मेटाल एडवर्टी इन्ए; बुधवार, २२ मदाबद १८९३) ।

[े] संदक्ष एक एक मिन्न मेर प्रारक्षिण ने पर (प्रोक्रा)-पान देनी ईकाके रिष्ट की बक्क प्रार्थ ।

¥4

आपने देखा कि मैरिस्सदर्वमें सद्यपि कोरे सहमात्रीने कोई आपत्ति नहीं की वी किए मी रेसने-कर्मचारीने भारतीय सात्रीके साव पूर्म्यवहार किया। करर यह पास्त्रिक व्यवहार नहीं है तो तथा है मैं जानना चाहुँगा। बीर इस तरान्त्री सन्तापथनक बटनाएँ बक्सर होती रहती हैं।

मुक्तमेके बौरानमें मासून हुआ वा कि सफाई-पक्षके एक प्रवाहकी सिवाया-पहाया समा ना। वह उपर्युक्त रेखने-कर्मचारिजॉर्ने से एक था। बवात्रतके एक प्रस्तके उत्तरमें कि क्या भारतीय गावियोंके साथ आदरका म्पनहार किया जाता है फसने कहा--- हाँ। कहते हैं इसपर मुकदमा सुनमे-बाते मिबस्ट्रेटने चराचे कहा- वो फिट, तुम्हारा मत मेरे मवसे मिम है विचित्र बात है कि जो कोग रेक्नेस सम्बन्ध गई। रखये वे तुत्रसे ज्यादा वेक नेते हैं।"

इस मामकेनर वर्षेतके एक कृतेगीय दैनिक पत्र मेळक रवनव्यकेनरने तिस्त्रक्षिति विचार स्पन्त क्षिमें बे

गम्ब्युसि निर्मित्राव है कि वस अरबके साम भूरा अवस्तार किया पना था। और यह वेबते हुए कि इस शरहके जारतीयोंको इसरें वर्जके दिक्त विये बाठे हैं बाबीको नामुक्त परेमान और अपनानित नहीं निमा काना वादिए वा। युरोपीय और वैर-पुरोपीय मात्रियोंके वीच लेवकी सदरेको स्थादासे स्थादा करा देनेके कोई निविधत स्थान किनै वाने चातिए। इन पदार्थोंका प्रयोग काले वा बोर्ट, किसी भी स्पत्तिकी धन्तापबन्द्र न हो ।

इसी सक्वमें के बारेगें नेशक नवर्गरीने कहा है

तारे श्रीलय जातिकामें तथी भारतीयोक साथ निरे कृतियोंका चैता ध्यवद्वार करनेकी वृत्ति फैसी हुई है। इस बातकी कोई परबाह नहीं की बासी कि वे मिलित भीर स्ववंत्रतारे रहतेवाके हैं वा वहीं। अनने मनेक बार देवा है कि हमारी रेल-माहियोंने नैर-नोरे चाहिबंकि साब सम्प्राक्ता स्मवहार विसंदुस गर्ही किया शाक्षा । मध्यि यह अपेका करना पवित न होगा कि एत भी जार 'के योरे कर्मशारी बनके तान बेता ही आवरका

१ केटाम महर्वमेट रेक्टरे ।

व्यवहार करें, बेदा कि वे पूरोपीय मात्रियोंके साम करते हैं किए मी इस सन्द्राते हैं गैर-गोरे मात्रियोंके साथ व्यवहार करनेमें अपर वे करा सपिक शिस्पतार काम में तो इससे बनकी सावमें क्यूबा न कर्मेगा। (१४-११-१८९३)।

वशिष अविकास एक प्रमुख पत्र केर स्पर्न्स कहता है

नेटलमें एक विविध नजारा ध्यतिकत कर रहा है। जिस वर्षके मोगीक विज्ञा काम कल्या ही किया है उसीके प्रति यह घरन कोटिके तिरस्कारका पोषक करता है। वस वेकते प्रति यह घरन कोटिके तिरस्कारका पोषक करता है। वस वेकते प्रति अपायाधिक क्षित्रक लागेन्दर व्यापारका के कामा व्यवसाय है, और कह हाकतको कम्यना-भाग की वा सकती है। किर भी भारतीय वहाँ सकती व्यवसा तिरस्कृत वौध है। रिक्ता मान्ति के यूरोपीक लाग पुरु ही क्रिकेंसे यात्रा गृहीं कर सकते गायाधिकों के तहाँ करते हो रिक्ता हो ही किर साथ ग्री हो की साथ हो प्रति हो की साथ करते हो यह साथ करते हैं व्यवसाय करते हैं की साथ साथ किरकेंस क्षात्र मुद्दीका व्यवसाय करते हैं की साथ साथ किरकेंस क्षात्र मुद्दीका व्यवसाय करते हैं की साथ साथ करते हैं।

भी दुर्मन एक एंग्झेन्संडियन हैं। नेटालनाथी मास्त्रीयंकि शांच जनका चित्रक सन्वस्य है। उन्होंने निवास मन्त्रुंग्येनें जपनी राय इस सरह बाहिर की है

मालम होता है कि यहाँक बहुतंबय लोग मुले हुए हैं कि मास्तीय विदिश माल है हमारी रानी हुँ उनको महारानी हूँ। तिखे एक इसी कारणले लाग की ला करती है कि यहाँ उनके तिथ दिन तिरावण्य हमार के लाग की ला करती है कि यह न किया लागे। आरतने केवल निवाल केवी गोरे हो बहुति लोगोंको "निवार" [हसी] कहकर पुकारते हैं और उनके साम ऐता व्यवहार करते हैं मानी वे किसी सारर-नानके योग्य हैं मही। यहाँक मनेक लोगोंको सतना है। उनकी तान सारातीयोंको सारी बींक सा पंचाय नाम साता है। जल दौरपर जनाभी लीव लारतीयोंको "पुजी का मान साता है। जल दौरपर जनाभी लीव लारतीयोंको "पुजी हो। मेर लोगोंने यहाँ करते हैं और वह मुनवा वहां हुंग साता है। मोरे लोगोंने यहाँ करते हैं कि सारी केवल निवार हो। है। मोरे लोगोंने यहाँ करते हमा नहीं मिलती केवल निवार हो हमा हो।

सम्पूर्ण गांधी बाङ्गन

४४ छन्पूर्भ मैं समझता हैं कि मैंने अपने क्

मैं धमस्ता हूँ कि मैं करने इस बहायको साबित करनेके थिए कार्य बाइरी प्रमान वे दिये हैं कि रिक्त कर्मचारी प्रार्थमिक साथ प्रमुख्य स्वाइए क्यों हैं। इससाईमॉर्में मारानीचेंको कस्तर करनर बेटने नहीं दिया जाता बीका बहाँ की मार्थमें 'वस्त्रेयर्ड' [बर्कार्ट् प्रमुख्य होने विया बाता हैं। धन्तें कस्तर एक बेटकचे दूतरों बैठकरर हुना दिशा चाता है बीर मानेकी बैचीयर दो बैठने ही नहीं दिया बाता। में एक प्रार्थीय करकरको मार्थम है विव्हें बच्छ बाओं होनेएर भी हमके पीकानकर कहा रखा स्वा मार्थ में एक दिनिक धन्यन हैं बीर तमेरी संपेशन बंगकी गोधाक पहनते के।

बहातक इस कमनका सम्बन्ध है कि मारतीयोंको सवाकरोंमें स्थाप मिक्या है मेरा विवेदन है कि मैंने यह कमी नहीं कहा कि नहीं मिकना न मैं यही माननेको वैवार है कि हमेसा और सब बदाकरोंमें मिक्सा ही है।

मारतीय धमायकी धम्यिक्षीकरा धावित करनेके किए सौक्के देगा करणे मही है। इसमें तो इनकार मही किया गया कि जो मारतीय नेटान नाते हैं वे अपनी वीविका समीतित करते ही हैं और सो भी सलीइनके वासनूव?

तो मह रिचि है परियम बारिजामें भारतीयोंडी। केवल बेधानोमाने परका बनावर है। नहीं मारतीयोंडा बहुत आपर होता है और उन्हें किन्हीं बात निर्मोमधामेंकि किशार बनकर प्रका नहीं पहता। का मनरके मूक्य मार्गेपर कममा बाली स्वापर सम्पतिके मार्थिक भी के हैं। उनमें ने क्याबाटर व्यापारी है। कुछ सरकारी तौकरियोंमें भी हैं। यो पारती सन्वन प्रेमीनियर हैं। एक पारची सन्वन और भी हैं। किसीर एकले नामसे बन्हें केशानीबानोका कम्यानक्या माराश है। परन्तु व्यापारी कोच अधिकतर मूमसमान बीर वर्षिने हैं को पूर्वचीय मारतसे आपे हैं।

इत दुर्श्याके कारण बौर जगानशे चौच करना सनी बाड़ी है। सरे-गोर्गेका कहना है कि मारतीयोंकी सार्यों जरकान है ने मुझ वर्ष नहीं करते जीर बूटे दवा चरिजहाँन हैं। ये स्थापियों नहते हैं। हुगरे यो हुने यौषी-यौषी गामियों ही देते हैं। गुटेशन सीर सल्यन्न सारतींका मारोग सांधिक नपनें नहीं हैं। मार्गेन् दक्षिण सांध्वारेज सारतीयोंकी

१ व्या मतुरुकेर सत्रामके मारकात मार है, किन्तु साव्यय दोशा है शृष्ये इसे तुस्तिकार इसर संस्थानमें इक गता था।

भारतें कुछ मिलाकर, ठाँचेने ठाँचे खपातनो बैसी हाती चाहिए वैसी अच्छी नहीं हैं। परन्तु यूरोपीय समाजने हमपर वैसा भारोप कनाया है भीर उसका जिस तरह उपयोग किया यथा है उसको हम विश्वकृत नार्मपूर करते हैं। और हमने यह बतानेके किय दक्षित नाधिकाके बाकररीका मन उद्देव किया है कि "बर्यका विचार किया बामे दो शिम्लवम वर्गके भारतीय निम्नतम वर्षके यूरोपीयोंकी कोक्षा ज्यादा बच्छी तरह और ज्यादा मच्छे मकानींने छाते हैं और ने स्वच्छताकी स्पनस्याका न्याका खयास रलते हैं।" बाक्तर बील बी ए एम बी बी एस (केंटब)ने मार तीयोंको "धारीरिक वृद्धिने स्वच्छ और नन्दमी तवा सापरवाहीते उत्पम होनेवाले रोगोंने मुक्त पाया है। उन्होंने यह भी देना है कि "वनके सकान थाम वौरपर साफ छत् हैं और सकाईका काम ने छत्री-मुर्खीसे करते हैं।" परन्तु इस यह नहीं कहते कि इस विषयमें इस मुकारके परे हैं। असर महाई सम्बन्धी कानून न हीं तो सावर हम पूरे सन्तोपजनक तरीकेते न रहें। इस बारेंसें बैसा दि असवारींसे जानून हाना बोनों समाज बरावर गरूनी करने है। कुछ भी हो यह तो हमपर महा वानेवाकी तमाम नम्मीर निर्योग्यताकींका कोई कारच नहीं हो राक्ता। कारण अस्पत्र है जैसा कि मैं भागे जब-कर बताक्रेंगा। ये मफाकि कानूनोंडी अूब कशक्ति साव अमसमें सार्वे। बससे हमें और भी साम होता। इसमें वो कोग जामनी है वे अपने मारुत्पने जान उटने और यह ठीक ही होगा। नहाँउक सुरेपनेकी बात है, यह नारोप निर्यमितिया मारतीयोंके बारमें कुछ हर तक सबी है। परस्त भ्यापारियोक्ने सम्बन्धमें हु॰ दर्जेनक अनिर्देशित है। फिर भी मेरा दावा है कि विश्विमितिया भारतीय जिल परिस्थितियोंमें रूपे परे हैं बनमें खुकर कोई भी बुमरा समाज जिल्ला मण्या रहता जनमें ने ज्यादा सच्ये रहे हैं। उप निवार बनारे नौकरोंके कपर्य पन्ता करने हैं और उन्हें 'दपहोनी समा ज्यार पालपाल काथ पदा करत हूं बार कर्य क्रवाही छैपी विष्यात वहते हैं — यह हड़ीकर ही बह देती है कि वहाँ जैत 'नुवारके परे मुर्- बताया जाता है वैसे व नहीं हैं। त्याति जैते ही वे सारत छोड़ते यानेका मर्यात्रके प्रमार रावनेकाने बावगींग मुक्त को बाते हैं। विभिन्न वारिकामें वर्ले पार्मिक जिलाकी वृधे तथ् वर्णतः है परन् वे उनमें विकृत पवित पट्ट हैं। वर्षे अपने देशवादपीके तिए जाने मानिकीके

र दे∜यर लग्दर पार दः

शन्तर्भ गोबी नाहमन Yŧ विकास नवाही रेनेको कहा चाता है। नह कर्तव्य ने अपसर सामने हैं। इससिए जनकी हर परिस्थितिमें सत्पपर दृश्य पहनेकी स्राप्ति भीरे-मीरे विकास होती बाती है और बादमें ने निवस हो बाते हैं। मेरा निवेदन है कि ने तिस्तकारके संसाम बधाने पात हैं। यह बुष्टि वा वर्ष पूर्व मैंने वक्षिण माफिकाकी जनताके सामने पेश की थी। उसने इसपर कोई भागति नहीं

उठाई है। बोसन नाफिकाकी यूरोपीन पेढ़ियाँ सँकड्रों मारतीयोंको करीव-करीय जनकी बातके ही मरोसी बढ़े-बढ़े कर्ज दे देती हैं और इसके किए उन्हें कभी पक्षताना नहीं पहता। वैक भी भारतीयोंको क्यमप मसीनित कवारों ने बेरी हैं। इसके विकरीत सेठ-साहकार मूरापीबॉपर उतना किस्ताछ नहीं करते। ये वास्तविकताएँ निर्वयात्मक वपसे सावित करती है कि भारतीय व्यापारिमोंको जितना बेईमान बताया बाता है उतने बेईमान वे हो नहीं सकते । तथापि मेरे कड़नेका वर्ष वह नहीं है कि मुरोपीय व्यापारी भारतीबाँको गुरोपीयाँसे अधिक सत्यनिष्ठ मानते हैं। पर मेरा मह नम खबाक हो है ही कि में बोनॉनर बावड़ बराबर विस्तात करते हैं और तब सनका मरोसा माध्यीयोकी कमसर्वी उनके अपने साहकारको बरवाद न करनेके संकरप और उनकी संगमी बादबॉपर होता है। एक बैंक एक मास्तीयको बड़े पैमानेपर कर्ने देता का रहा है। स्थी बैकने एक गुरोपीय सन्नाने को बैकके परिचित्र और यस मारतीयके मित्र के सट्टेंके किए १ पॉक्का कर्ज गाँगा। वैकने अमानकके विना उन्हें कर्ज देनेसे इनकार कर दिया। सारतीय मिनपर यस समय जी बैकका बहुत कर्य निकल्या या परस्तु यतने अपनी सामकी समानत वे वी—और इतना ही काफी हुआ। बैकने उसकी बमानत मंजूर कर भी। इतका फर्क यह हुआ कि वह मुरोपीन मित्र बैंकता ६ - पींडका कर्व नहीं पटा सता और क्रिकड्रांक भारतीय मित्रका पतता कावा बक्त हो गया है। वह मुरोपीय वेशक, क्याबा कक्ते बंबते राहता

है और वर्षे मोजनके साम कुछ चरावती भी मरूरत होती है। और हमारा भारतीय हो किएँ पानी ही पीता है। हम इन बारोरीकी विरुद्धक बस्तीकार करने हैं कि इस कुछ कर्ष नहीं करते और इसपर बारोप स्वानेवाजीते क्यारा व्यक्तिहोत है। परन्तु शक्या कारण है पहले वो व्यापारिक हैयाँ बीर कुतरे माध्य और वाध्यीयोंक वारेंगें बहात। मारतीयोंके विका श्रीक-पुकार सकते पहले व्यापारियोंने गुरू की श्री। बादमें श्रापारण जनता मी उपमें शामिल हो गई और अन्तत वह

एसियाइबॉरी इसकिए द्वेप करते हैं कि ने सफल न्यापारी है। बालोजन सबसे पहले विभिन्न राज्योंके व्यापार-मंडकोंने शुरू किया था। वे यह कहते किरते ने कि इस मास्तीय क्षोप ईसाइयोंको वपना स्वामानिक सिकार और अपनी स्त्रिवोंको बाल्मारहित मानते हैं बीर हम कोड़ उपवंश बादि बीमारियाँ फैंकानेवाचे 🜓 बब स्थिति यहाँतक पहुँच गई 🕻 कि किसी बच्चे ईसाईके क्रिय पश्चिमाइपॅकि जलीइनमें कोई क्रमाय न देनना वैसा ही स्नामाविक बन गया है जैसा कि पुराने अनानेके प्रामाणिक ईसाइयोंका गुरुगम-अवामें कोई पत्तरी या नैर-ईवाइयत न देलता वा। भी हेनरी बेक नेटाल विवान समाफे एक सबस्य है। वे एक ठेठ बंग्रेज हैं। सन्हें "सबसव्यवितेकी वेक" अबुकर पुतारा नाता है नमेंकि वे एक नमीस्तरित ईसाई है और नामिक बालोक्सोंमें प्रमुख भाव केते तथा विवाससभामें अक्सर बपने बन्तरास्थाकी बुद्दाई दिना करते हैं। फिर भी में सरनत मारतीनेकि नायन्त प्रवत्न और कर विरोत्ती हैं। में अपना प्रमाणमाण केते हैं कि उन कोशोंपर, जो उप-निवेशके मुक्त जवलन्त्र रहे हैं तीन पींड प्रति जन मापिक कर कमाना और वर्त्रे अतिवार्य कारी वापस भेव देना न्यायपूर्व और शृह-स्मात्मक

दक्षित्र नाफिकामें हुमारा वरीका इत हेपको प्रेमसे जीवनेका है। कमसे कम हमारा धन्य दो मह है ही। हम बहुना इस जारसेंगें जोड़े पत-रेंने परन्तु सर्गापत उदाहरशाँखे हम बता सकते हैं कि हमने साबरण हसी माननासे किया है। इन स्वन्तियोंको बण्ड विकार्तका प्रयत्न नहीं करते। वानारनव वनके बन्धाय नैर्वपूर्वक तह केवे हैं। बाम वीरपर हमारी प्रार्थनाएँ मुजकालकी सवियोंके मुवाबजेके लिए नहीं होतीं बस्ति इसकिए होती 🕻 कि मनिष्यमें चनकी पूनरामृति न होने दी बाये और अनके कारपाँको दूर कर दिया जाये। जाएतीय बनताके तामने भी इनने अपनी शिकानतें उसी माननासे रबी हैं। बगर हमने व्यक्तिगत क्योंके बराहरव दिये 🕻 हो बसमें हमारा वहेंग्य मृत्रावता भीवता नहीं मारतीय जनता के सामने अपनी स्थितिको सम्प्र क्रमें पेस कर देना है। हम कोस्सि कर रहे हैं कि अपने स्थ विध्वा व्यवद्वार नम्मव करतेवाले कोई कारण इवारे अन्वर हों दो उन्हें

हुए कर हैं। परन्तु इस भारतके बोकनिष्क स्पन्तियोंकी तहानुभूति तथा

कार्य है।

¥4

सहायदा और मारव समा बिटेनकी सरकारोंकी ओरवार किसानड़ीके विना सफल नहीं हो सकते। यशिष आफिकार्ने भारत-सम्बन्धी भजान दतना बड़ा है कि समर इस कहें, मास्त जहाँ-तहाँ बड़ी हुई मॉपहियों मात्रका वैछ मद्दी है तो हमारी इतनी बातपर भी कोई विश्वास नहीं करेगा। विटेनमें कंदन बारूक कार्यसकी बिटिस कमेटी तथा भी भावनगरीने और मास्तर्में टाइन्स आह इंडिपाने हमारी औरसे जो काम किया है वह द्वनीमूट ही ही कहा है। अवस्य ही भारतीयोंकी स्वितिका प्रस्त समस्त सामान्यते सम्बन्ध रक्षतेवाका प्रश्न माना गया है और प्रत्येक राजनीतिक्षते विसके पास भी हम गये इमारे वाम पूरी सहानुभृति स्पन्त की है। द्विटिय सोकसभाके उदार और मनुदार दोनों दसकि सदस्योंने इमें सहानुमधिके पत्र प्राप्त हुए हैं। डेली देशीबालून भी हमारा समर्थन किया है। जब पहली बार मतानिकार-विवेधक पास किया जया वा और उसका निपेश कर दिया जानेकी कुछ वर्षों यो उस समय नेटालके लोक-परायम व्यक्तियों तथा अखबारोंने कहा या कि विवेधक वनतक बार गर संश्रुत किया जाता रहेगा जनतक कि सम्राजीकी तरकार चक्र न बाये। एक्ट्रॉने "विटिश प्रमा" विययक "बकोसले" को ठुकरा दिया वा और एक असवारने को बढ़ाँदक वह बाला का कि अगर विकेशकता तियेथ किया क्या तो वे राजीकी अवीत्रताका परिस्थाय कर हैंगे। येनियोंने श्रास्त्राम्बन्धा चोपित किया वा कि यदि विचे यकका नियंत्र किया नया तो ने देशका धारान करनेसे इनकार कर देंते। बहु समय वा चब कि सन्दर्भ द्यारनाके भीतिने शिक करनकाल के बेबकने नेटाकके विवेयकका क्षमकेंग किया । परन्तु चंडरर [टाइम्स नि इस विध्यमप किवारे हुए अपनी व्यति कास सीरने बदल दी बी । उपनिवेद-यंत्रीका स्व निर्वायक मामूम होठा वा और ट्रान्सनात-पंचाउँगका-सम्बन्धी अरीठा ठीक समयपर पहुँच यदा था। इससे नेटायके पर्नोधी सारी स्वति ही बदल गई। चलाँने विरोग दो किया परन्तु ब्रिटिश साम्राज्यके विश्वय अंतके क्यमें। नेयक रक्पर्यंतनरने निसने एक बार एधिवाई-विरोधी नृट बनानेका प्रस्ताव किना भा २८ करवरी १८९५ के एक लेक्से आरडीवीके प्रकार नीचे इ. जारतीन राष्ट्रीय कॉमेस क्षारा कंटनमें स्थापित। स्ट. संबदनी आवनामी

सप्रेट एक प्रमुख समस्य में । व अस्पर्य ७ १ ९४३ वेशिय सम्बन्ध १ एक ११६।

हुई मेयराजि कायेतके प्रस्तावका विश्वकी चर्चा कर की वा चुकी है शक्तिक करनेके बाद लेखमें कहा गया है इतिच्यु, समस्याको सामाध्यिकचे लेकर सुढ स्वानिकतक सभी वृद्धि कीवाँते समय करमें देवा वार्य तो वह बहुत वड़ी और कदिक है।

बरानु विकास सेत्र इस विवयको केवल स्थानिक वृध्यकीयने वैक्रनेको रितने मी उत्सुक भ्यों न हों जो लोग सब पहलजोंका खपाल रसते हुए इतका नम्यपन करना चाहते हैं (और यही एक शरीका है नितसे सही और लामप्रव निर्धन किया का सकता है) उन सबके सामने स्पष्ट होना बाहिए कि ब्यापकतर अवदा साम्राज्य-सम्बन्धी बालीका विचार करना भी बकरी है। और बिर, बहुतिक मामतेके सद स्वानिक पहतका सम्बन्ध है। बह बान सेना उतना ही जरूरी और शायर उतना ही सठिन भी है कि. रिवरिवर व्यापक कृष्टिकोलने विचार किया का रहा है या तिके यन तथ्योंको हो स्वीकार करके किती नशमें कक्त्रे नत बनाये था छुटे हैं, क्षो स्वार्व अवदा द्वेवनावके कारण स्वीकार करने योग्य नामून होते हैं। भारतीयोंके आएनमके सम्बन्धमें शारे दक्तिच नाक्रिकाका आन व्यास तंत्रेपमें यह बताया का तकता है कि "हमें बनकी ककरत नहीं है।" नुम-रोबॉकी छानबीन करनेके लिए पहला नुद्दा यह है कि ब्रिटिश शाकारवर्षे शाबित पहनेपर हते इस सम्बन्धते पैदा होनेवासी शब अच्छाइयों और बराइयोंकी नंजूर करना है। हार्न बेहाक यह है कि बे वण्णाहर्यां-बुराहर्या यस सम्बन्धते विष्णुदेव हो । सब बहाँतक बारहीय जाबारीके अविध्यको बात है यह पाता जा सकता है कि साम्राज्यकी तरकार साम्रारपके किसी की देशमें ऐसा कोई कानून बनानेकी जन-वर्ति राजी-सुद्यीसे न वैपी, जिनका उद्देश्य साम्राज्यके विसी भी भागसे नारतीयोंकी कामद माबादीकी हर रखना हो। इनरे शब्दोंने अगर नोई वात राज्य इत निदालका कोई कानून बनाना बाहै कि भारतदी मीमनाने बहुनी हुई नोडि-कोटि जननंदगरी बारतर्ने ही रखा जाये और आंगिर वहीं उत्तका रूप पूरे ही बिटिश नरकार इसके लिए आसानीये

अनुवरि न देवी। इसके विवरीत, विदिश सरवार बाहुनी है कि अहस्ता

₹~¥

समूर्य नांधी शहमद इस तरहृत्वी भीड़की सम्बादनाको हुर किया वागे मीर भारतको ब्रिटिम

साम्राज्यका एक कतरनाक तथा अतन्तुष्ट मान बनने देनेके बढ़ने वसे सनुद्धिसाली और सुची बनावा चार्ये। समर भारतको साम्राज्यका एक काश्रमण भाग बनाये एकता है तो यह वितर्कृत वकरों है कि प्रसर्वी वर्तमान सनतंत्र्यको बहुत-ते हिस्तेको कम करनेके उत्पाप कोने आर्मे। इस बृद्धित हुने मान सेवा चाहिए कि नारतीयोंकी साम्राज्यके बन दूसरे देशों में जिनमें मजदूरींकी सकरत है, बाने और जपनीविकाके नमें मार्च कोजनेमें प्रोत्साद्वित करना विशिध सरकारकी नौतिका अंच है उन्हें हतोत्साम करना नहीं । इस शरह हम बेकेंचे कि बिटिया उननिवेशोंने कुलियोंके आयमनका प्रकृत जारतके लुपार और पदारकी यहराईतक वहुँवने-वाला है। धत्तपर इत सहाल सम्बदाने डिडिश शाकारूपर्ने रहने या व प्रजेका प्रश्न भी अवक्रानित हो सकता है। यह उस प्रश्नका लाकाञ्यात बहुल है। इसते साम्राज्य-तरकारकी इत इच्छाका सीमा संकेश निकता है कि साम्राज्यके इतरे भलोंने भारतीयोंके प्रवासपर क्याचे गये प्रतिजन्मों हो बहने न विदा आये। कहातक इत प्रश्नके स्वाधिक प्रश्नुका सम्बन्ध है, विवादनीय प्रका यह है कि क्या साम्राज्य-सरकारकी यह नौति इस भागमें बॉफ्रिस व्यवस्थाओं के प्रतिकृत पढ़ती है, और बपर पढ़ती है तो कहाँतक? कुछ क्षीप इस चपनिनेक्से सारतीनोंके आनगतकी नित्ता ही नित्ता करते है। परन्तु इसका अबर स्थानका होना इसके सारै पहुलुओंचर इन नीयोंने सावद ही विकार किया है। बहुके हो इन विरोधियोंको इस

बहुतिक इस प्राप्तके स्वापिक पहुमुक्ता सरक्य है, क्विस्तानीय प्रस्त पहु है कि क्या साम्रस्य-सरकारकी घटु गीरि इस नापसे वाधिक स्वाप्तकारकी प्राप्त है। बहुतिक हैं है के कहुतिक हैं है के स्वाप्त करते हैं। परमु इसके अंकर स्थानका होगा इसके सारे पहुमुक्तिय इस सीमी सावत ही कियार किया है। मुक्ते तो इन विशीपियोको इस सम्बाध करार देना होगा होगा कर के सारे पहुमुक्तिय इस सीमीपियोको इस सम्बाध करार देना होगा है का सुक्ते तो इस द्वाराधिक इस सम्बाध करार देना होगा है का सुक्ते हैं। स्वाप्त होगा होगा किया होगा विकास करार के स्वाप्त होगा है का सीमीपियोको इस स्वाप्त करायोकी सिंद हुए हैं? दुन्तियोधि कहुत-पुक्त कर्यक्रियोविकी युद्ध दुवाई मानकार करायोकी सिंद हुए हैं? दुन्तियोधि कहुत-पुक्त कर्यक्रियोविकी युद्ध दुवाई मानकार करायोकी सिंद हुए हैं? दुन्तियोधि हुन्तर होगा हिमार क्या है कि इसे सिंद कराया कराय है कि इसे सिंद कराया कराय कराय है कराया है कि इसे सिंद कराया कराया कराया है कराया हो सिंद कराया हो है सिंद कराय

रिवेन नाकिस्तान्त निर्देश पाराधिनके स्वत्यां ५१ हुकी ही सक्ते सबिक योग्य है। ऐसा काम इस साव्युवार्गे भोरे कोम कभी गुर्ही कर सक्ते। आदिवासियोंने चहु वृत्ति या योग्यता है गुर्ही। इन हाक्तोंने दुव्तियोठ क्विन्स्वपूरोंनी हैसियाचे यहाँ प्रानेके कारण उत्तरेद

विस्तान होता है? किसीका मूर्ते। कामकी हामत तो यह है कि मगर
कृती करें तो होगा म करें तो देता ही पड़ा प्रेमा। किए सरकार
कास तरित रेकिये कृतिकारों ने कृत सक्ती संपत्त प्रिमान
काम की को प्रतिपर का नारति हैं? कहा का पकता है कि वे बहु
गोरोंकी कपहें के पहें हैं। परन्तु, क्या यह सही है? हो सकता है कि
हफ्के-पुक्के मामकोर्स त्यति हो। परन्तु ज्या यह सही है? हो सकता है कि
हफ्के-पुक्के मामकोर्स त्यति हो। परन्तु ज्या तो एक कपके किए भी माग
नहीं का स्कार कि अपनिकोक-सर्म सारी मारतीमोंकी सरकारि को प्रिमायित
हफ्का कपकी कपहेंसर सोरोंकी देशमा का सकता है। इतके
समावा नैटाकके बहुर धाक-सक्तीके सिए पूर्वत कृतिकार्या हम क्रमा है। इतके
समावा नैटाकके बहुर धाक-सक्तीके सिए पूर्वत कृतिकार्या हम क्रमा हमा
किसके मार्गम वाकक होते हैं। गोरोंक नार्गम वाहित नहीं। इति हमें
किसके मार्गम वाकक होते हैं। गोरोंक नार्गम वाहित नहीं। सुनि हमें

बाबारमें नाकको दूर्ति कर तकें। वे सारिवाधियों के मा बादे नहीं वाले। वेशे जीम तो सालको स्वतार हैं, को तावारकाः करने लिए मक्दिंक स्वादा हुंक पैदा करते हो नहीं। तकपृत्र को हमारे सारिवादियोंने हैं। हमारा मकपृत्र को होगा कि इस मामसेने वे दिसकृत केवार नित्त हुए हैं। कमारा क्या हमें किती हुएते दिसकृत केवार नित्त हुए हैं। कमारा हमें किती हुएते दिसकृत केवार मार्चक पूर्ण की। पोर्रोचर इस मेंद्र हमारा करने वे बीर नाइतने यूव सावकाक पूर्ण की। पोर्रोचर इस गैर-पोर्रे मकपृत्र हमारा करने वे बीर नाइतने यूव सावकाक पूर्ण की। पोर्रोचर इस गैर-पोर्रे मकपृत्र होता कहा स्वत्त हैं कि जिल्ल मित्र सावकाक वे बीर है वासों क्या हमारा करने एक सीही करण पठा दिया है। बनद दहन-वासों के का मोरीको करने होते तो निप्तक हो वे दस सीहियर रहने होते सी नाइत हो वे दस सीहियर रहने होते हो नाइत होने दो साव को पोर्रा दुक्तियों हो वेदन हमारा किए को सावका है वहे वह सावकार हमारा का सावकार हमारा हमार

सन्दर्भ गांबी शाक्षण 42 है वह इस देखने अल्डर स्वयं दुसन व्यापारी वन वाटा है। इसी सम्ब

सवसर मिक्ता है। अवर वनमें से ज्यावतार कीपोंकी निम्नतम कीविके समर्वे कमना बढ़ता तो वे ऐसा करनेमें बसनर्व होते । इसनिय, सायद जब भी देखा का सबेशा कि सारतीयोंके विविध जपनिवेजोंमें मानेसे मान को कमियाँ मा पहें है वे नवस्करचकी पुराच-मंत्री मौति स्वीकार करनेते बतनी कर नहीं होंनी कितनी कि बनमें असनेवाले जास्तीयोंकी राहत देनेवाके कानूनोंके प्रतारोत्तर और वृद्धिनतापूर्व प्रयोगते होंबी। मारतीयों के बारेसें की अलेवाली एक मुक्त आपत्ति यह है कि वे पुरोपीय निवर्मोंके जनुसार नहीं रहते । इसका क्याम बद् है कि कार्ने क्यारा भक्के मकानोंने रहनेके किए बाध्य करके और उनमें नई-नई ककरतें

काले सम्बूरिक मलेसे मोरॉको केंची बर्लॉर्स स्थान और धरित कमानेका

पैरा करके कमला उनके छात-सहतको जैवा चठाया बाये। ऐसे प्रशासियोंको पूरी सुरह अक्रय करके बनको पूरानी अनुस्तत स्थितिमें वनाये रखनेका प्रयत्न करनेकी क्षेत्रा साथर उनसे बहु कीय करना न्याना मातल भी होया कि वे अपनी नई हाल्योंके अनुतार अपर पर्टे । कारण मह जनुष्पवातिके महाव प्रयति आप्रोतनोकि विवेक सनुकृत है । रेमें लेल (और ये दिनिस पर्नोंसे दर्बनोंकी संस्थानें सबस किये था सकते हैं) बताते हैं कि विटिश सरकारके पर्यान्त बवावसे अपनिवेद्याँकी भारतीयों सम्बन्धी गीतिमें बच्छा परिवर्तन हो सकता है। ताप ही बारावसे नाराव

वक्होंमें भी बिटिय-सहज ग्यान और भीवित्य-प्रेन जावत किया था सकता है। इन्हीं दो बातॉपर हमारी आसाका मदन स्पित है। इस प्रास्तके बारेमें नियंगी भी भागकारी फैनायें वो स्वाद अत्यन्त बावस्यक है उत्तरा प्रदोष हए दिना कीई काभ होनेवाका नहीं है। दिश्य साधिकाके एक बनुमत्री प्रकारकी कलमधे निकका हुना निम्न-किंतिन सेन भी वह बनाता है कि दक्षिण आधिकामें ऐसे सोन मौजूद हैं को अपने चारों बोरके समाजते जनर उठकर तक्ने बिटिस चारित्यका

वरिचय दे नकते हैं चीचनमें कती-कती मनुष्यको ग्याय मीर स्वार्य दोनोंकि श्रीच शस्तिन चुनाव करना चन्ना है। साम्पतम्मानी वृत्तिकै कीमीटे किए यह काब वन कीमीटी अनेका अवाप ही बहुत कठिन होता है जिनके अधिय बीवनके

41

बारममें तन्-वाद विवेचकी वृत्ति कते ही रही हो, किन्तु वह बहुत पहुने ही निकाली वा बुकी है। को कीन ठीक बेचले समय तही-मानी कम्पनिर्मोको सुठी टीएनर अवसी और बड़ी बनाकर दिखा देते हैं और को पूछरें कोग इसी ताहके सावरकके होने हैं जनते यह सर्वता करना सबस्य ही अवंग्रत होगा कि बनमें स्वापके सकावा कोई हमरा मान प्रवक हो। परन्तु बीतत वर्गके व्यापारीके सामने वह नीति प्रमीतिका संपर्य बड़ा होता है तब बनतर प्यापकी ही विश्वत होती है। अगन तीरसे समस्त

विश्व साक्षिकियों और बाल तीरते दाल्सवालवासियोंको ये संपर्व जित

क्यने होकने पहते हैं उसके कारणींने एक है कुनी व्यापारियों का प्राप्त — हमने क्यने जारतीय नीर करब महर्मों को यही उपानि तो वे रणी है। इस व्यापारि ही हैं — स्थितने ही इतमा व्यापारि ही हैं — स्थितने ही इतमा व्याप्त किया किया है। और बाततक वह का दिकासणों की हिन्दी का व्याप्त कारते हिंदी का व्याप्त कारते ही इसके व्याप्त कारते हैं। और इसके व्याप्त कारते ही इसके व्याप्त कारते हैं। हमके व्याप्त प्रतिकाशियों कार्याप्त कार्यों का

प्रतानकारीन पर्वोते सकत्तव भारतीय तथा सरस स्थापारियोके कामीके बारेलें कुछ अनुस्थेद प्रकाशित होने रहते हैं। कनते वह चौक-पुकार धनमें तानी होती रहती है वो कोई ही दिन बहने कुल्लवाकको राजपानीमें कुकी स्थापारियोके बारेनें सबी थी।

वन बावरास्वर और कठोर परिश्म करनेवाले लोलांडो इतना पकत सनका गया है कि जनको राष्ट्रीयताको हो बचेबा हो गई है। जनरर एक ऐसा बुग्त नाम बड़ दिया नया है तियके बाती जनको जनके बातीकारी करियों किया हिस्सा करना करने करने करने

सहसीरियोंको बृध्यमें नितानत नित्त स्तारपर एक बेमेटे हैं। किर, यांच वर्ष्युक्त मारवेहानियोंके होते हुए कोई तक माटे निस्य बनकी कर्या केंद्र की प्रायत बहु सामा किया बानेकी स्थायनुक्त करेता। कर सकता है। वनकी मार्थिक प्रवृत्तियोंकी वृध्यिते भी विकासी सकतानार वनको बरमाम करनेवाने मनेक सोच देखाँ करेंचे वह मानवेदान समाप्त गर्दी माता। वह मानवेतन वन्त्र प्रवृत्तियों बतानेदानमेंको सर्ववस्थ < तम्पूर्ण गांती बार्ज्यव</td>

वर्मावकान्त्री देशी कोवोंकी कोटिमें एक देशा दन्हें बस्तियोंमें ही प्यूनके किए

भाष्य कर देशा और ट्रान्तवालके काफिर कोगॉपर कायू किये गये कानूनीते भी सक्त कानुसँकि प्रतिजन्तमें रहोगा। हान्सवास और इस प्रयनिवेजमें यह पारचा केनी हुई है कि शान्य और नितानत विशेष अरब इकानशर और अवने ही निर्वोद भारतीय को अपने बहिया मासके प्रदृहर पौठपर साबे बर-धर बुमते हैं "दूजी" हैं। इसका कारब जिस आतिमें वे जलम हुए हैं बसके बारेने हुमारा आलस्यमय अज्ञान है। जगर कीई सीचे कि काम्यभय तथा एहस्यपूर्ण पुरायोंशाले बाह्यल वर्तको कल्पनाले कृत्री ध्यापारियों की भूमिमें ही जन्म पावा था, श्रीबीत शताब्वियों के पूर्व उत्ती जुनिमें वेबतुस्य बुद्धने बारगरयानके नद्दान तिद्धान्तका उपदेश और पासन किया वा और हम को भाषा बोलते हैं जलके मौतिक तरवाँकी कीनें जसी ब्राचीन देशके पर्वशीं और मैदानोंने हुई वी तो वह सकसीत किये निना नहीं रह तकता कि जस जातिके बंधजेंकि साब तत्वशुख वर्षणें और बाह्य जनतके अज्ञानमें दूर्वे हुए सोपोंकी सन्तानोंके सुरूव बच्ताव किया बाता है। जिन कोपॉने भारतीय स्थापारियोंके ताच बातबीत करनेमें कुछ जिनद भी जितायें है में यह देखकर शायद आहचर्यमें नहे होंगे कि मे तो विद्वानों और सन्जनोधे बातें कर रहे हैं। इन विनम्न स्परितयोंने बम्बई और महातके स्कली शिमालयके अंबली तथा पंजाबके नैदालेंकि जान-सरीवरोंसे फक्कर आन-बान किया है। ही सकता है कि वह बान हनारी बकरतेंकि अनुकृत न हो हमारी चर्चित मेरा न प्राता ही और हुनारे प्यापहारिक जीवनमें उपयोगी होनेकी वृद्धिसे बहुत अधिक रहरवपूर्ण हो। किर भी यह ऐसा मान है जिसकी सिक्कि सिए पहनी ही नवन, पतनी ही ताहिरियक ताचरता और बतते भी बहुत अधिक नुदुत्तार और काप्यवय रवनावरी भावायस्ता होती है. जिन्ही कि आस्तकोई सीर क्रींत्रजने जन्मतम विधानपाँगें। अनेदानेक मुधाँ और भीडी-वर-नीडी परम्परामोंके स्थतीत ही जातेते पारतका को तत्त्वज्ञान अब बूमिल पह गया है बढ़ जल समय आलग्दरे साथ बढ़ाया जाता वा जब कि भेष्टतर क्षेत्ररों और भेष्टतर अंध्रजेंकि पूर्वज अपने देखेंके दलदलों और अंगरोंने नापुत्रों तथा भेड़ियोंका विकार करते यूननेने तथींका जानार

44

त्राप्त करके सन्तुष्ट रहते थे। इन पूर्वजॉर्म खब उज्बतर जीवनका कोई विचार परित ही नहीं हुना या, अब सारम-संरक्षण ही पनका प्रयन कानून और अपने पड़ोसियंकि गाँवका विष्यंस और वनकी परिनर्मी और बक्बोंको पक्ष्य से बाता ही बनका जलकराम मानग्दोत्सव वा उस समय भारतके तत्त्वज्ञाली जीवनकी समस्याजीके साथ इजार वर्षतक संवर्ष करके वक चुके थे। उसी काल-मुमिके बच्चोंको साम कुली कह कर अपमानित किया का रहा है और उनके साथ काफिरींका-सा ध्यवद्वार हो रहा 🕻 । मब दो ऐदा समय जा गया है कि जो स्रोग भारतीय व्यापारिमेंकि विषय बीक-पूकार मचादे हैं वे उन्हें बतायें कि वे कीन हैं और नमा है। बनके घोरतम निम्बकोंसें जनेक बिटिय प्रजाजन है को एक सानदार समाजकी तदस्यताके सविकारी तथा विशेषाविकारीका उपभोग कर रहे है। अन्यायसे पूजा और औवित्यते प्रेम धनका बम्मतिक गुम है और बब धनका मामका होता है तब बाहे अपनी सरकारके प्रति हो बाहे विवेशी तरकारके वे अपने ही एक विशेष तरीहेते अपने अविकारों मीर स्वतंत्रतानोंका भाषतु भी रकते हैं। साधद यह उन्हें कभी सुना ही नहीं कि मारतीय व्यापारी भी ब्रिटिश प्रजाबन है और वे बतने ही ग्यायके गाय बन्हीं स्वतंत्रताओं और अधिकारोंका दावा करते हैं। अगर नामर्खनके जमानेके एक बाल्पांत्रका प्रयोग किया जा तके तो कबसे कम थह कहना होया कि, को अधिकार कोई इसरेकी वेनेटे किए तैयार न हो, जनपर सपना बाबा बताना ब्रिटिय स्थनावरे बहुत विपरीत है। एलिया-बेब-कालीन एकाधिकार अवले मिडे तबते सबको स्थापारका समान अविकार प्राप्त हो गया है और यह विविध संविधानका एक अंग-ता क्त मया है। अपर कोई इस अविकारमें हस्तक्षेप करे तो विदिश बाप-रिकताके विद्रीवाधिकार एकाएक उसके बाढ़े वा वार्वेगे। भारतीय क्यापारी, स्पर्धामें अवित्र स्पन्न है और वे अंग्रेज व्यापारियोंकी अपेक्षा कमर्गे बुबारा कर सेठे हैं - यह तर्क सबते कनशेर और तबसे सम्यायपूर्व है। विदिम वाधिम्पकी नींब ही इतरे देखेंके ताप अनिक तथकतापुर्वक स्पर्वा करनेकी प्रतितपर रखी गई है। जब अंग्रेज स्थापारी चाहते हैं ५६ छन्नै साँची बाह्सव

BV \$1 (By EISPE 13-Y-1661)1 वेदन शहरूके राष्ट्रोंने प्रश्तका नियोड़ सह निकमना है "स्मा नायांगाँडो मारतसे रवाना होते तमन कानुनकी वृध्यिम वही हैसियत मिलनी बाहिए, वो दूसरे बिटिय प्रवासनोंडो प्राप्त हैं ? वे एक बिटिय उपनिषेसर्थ बूसरेर्ने स्वतन्त्रतापूर्वक का सक्ते हैं या नहीं ? और वे सहयोगी विटिय क्यनिवेधोंमें विदिश प्रवाहे विवकारोंना रावा कर सकते हैं या नहीं ? " वही पत्र किर कहता है भारत-तरकार और स्पर्ध नारतीय विश्वात करते है कि वरितन माकिका ही बह स्वान है जहाँ उनकी बाल-मर्बोहाके इस प्रश्नका निवहारा होना वाहिए। जनर वे दशिव बाक्रिकामें दिशा प्रजाकी मान-वर्णश प्राप्त कर नेते हैं तो अध्यत्र उन्हें वह मान-मर्यादा देनेते इनकार करना सन्बय अक्तरमद हो आवेगा। अयर वें दक्तिय जाकिकामें वह रिपर्ति आज करनेमें बत्तदन को तो अन्यत्र वर्ते प्राप्त करना वनके किए आयना कटिन श्रीया। इन प्रशार इस प्रश्नके निर्मेदका बगर न केवल बतिब बाकिएमें बते हए बर्तमान मारतीयाँगर, बरन भारतीयाँके सम्पूर्व भावी वेदास्तर-मदासपर बहेना । बिटिय शामान्यक बन्य बाली तथा सहयोगी जपनिवेशीमें निवास कालेगाने प्रवासी भाराधिनिधी स्पितिपर मी अनर पढ विमा न रहेगा। आरनेरियामें भारतीयोंके प्रशानको रोजनके किए कानन बतानेके प्रयत्न किने

वा पहें हैं। इस नमय में मामने दोनों तरनापींट दिमायपीय है पनमें रिनाल भाषाबर हालेंगर भाषायों और स्वानिक पाइन वे देनेने ही कोई तीन न दोगा। बाम यह होगा को साम प्रकारण हुए कर रिया नामें नामें "मा हमा का नाम प्रकारण है। है ति स्वान स्वान प्रकारण है

कि सरकार उनके प्रतिव्रक्षियों के स्विक्त सकत व्यापार के विकास हासामें बार कर तह तो स्वकृत तरिस्त पानमतानी हैं त तक पूर्व काता है। मारांगिक प्रति क्याप इतना स्वय है कि वब केमल इन सोगोंकी व्यापारिक सरकारात्र कारण हाथा देशवासी हाके बाव देशी लोगों बंदा व्यापार कराता बाहते हैं तो कपर प्रमंती वार्यों है। बारांगियोंकी पिरे हुए स्तारों उनका कर वेके निय ती स्वयं प्रता सार्य ही कार्यों है कि मैं प्रक वाहिके विकास हाने सफल नहीं।" सी मायनगरीने सी घेम्बरस्नेनसे पूछा है कि नेटाल और बिटिस तामान्यके बन्य भाषिकी मार्गोको इस प्रकारके कानून बनानेसे रोकने के किए नवा ने तुरस्त करम उठानेंने ? " यहाँ जिन कानुनों और नियमोंका उल्लेख किया गया है जनके बकाना कुछ और भी हो सकते हैं, निनको सायद इस बातते न हों। इसकिए, बदलक पहले के बने हुए इस प्रकारके तब कानुज एवं नहीं कर दिये जाते और भविष्यमें सपे कानुनौंका बनना रीक नहीं दिया बाता तकतक हमारे सामने मनिष्य बहुत मनहुस रहेवा न्योंकि श्रेष्यं बहुत वियम है और हम कवतक उपनिवेश-मंत्रालय तथा मारा-तरकारको कय्ट बेते रहेंचे? शहना भाक इंडिपाने ऐसे समयपर इमारी पैरोकारी की है जब कि इस सराधम विना पैरोकारके थे। कालेसकी हिटिश कमेटीने इमेचा हुमाच काम किया है। अन्दन शहन्तकी पश्चि साली सहायताने बढेले ही इमें बक्तिय बाविन्दियोंकी नवरोंने एक सीही क्रमर चटा दिया है। भी पाननगरी जनसे संसदमें प्रविष्ट इए, क्रमातार इमारे किए प्रमल कर रहे हैं। इस कानते हैं कि आरतको सार्वनिक वंस्वामोंकी सहानुमृति हमारे साव है। परन्तु इस बारतकी सब सावेंबनिक धंस्वाबोंकी धरिय सहामुमृति प्राप्त करना बाहते हैं। मास्तीब अनुसके सामने क्यनी पिकायरें विश्वेष क्यसे पेस करनेमें हमारा बहेस्य यही है। मही काम मेरे सुपूर्व किया गया है जीर हमाख ब्येय दवना महान और न्यायसंगत है कि मैं सन्तोधवनक परिचामके साथ नेपाब कोईगा इसमें मुझे कीई सन्देश नहीं। मो० इ० गांधी

रामकोट काठियाबाड १४ अगस्त १८९६

उन्हेच नगर कोई सम्बद्ध दक्षिण आधिकाके भारतीयोक प्रस्तका अधिक सम्मयन करनेको उत्पुक्त हों और वे इसमें उस्क्रिकित विक्रिय प्रार्थनापत्र देखना बाहें तो उन्हें उनकी प्रतिकिपियों देनेका प्रमाल किया बामेगा।

मो द्या गां

मारस करेंद्र मेस १६७ वॉगईम्स बाबरे ममातमें छपी बंगेनी पुरित्रहाड़े दुनरे संस्करक (क्तू १८९६)में।

प्रीचीकीका प्रमाणका हुम मीचे हस्ताकर करनेवासे बंधिण आफ्रिकावाधी आखीयोंके प्रतिनिधि इस पत्र द्वारा दर्वनके एदबोकेट सीमान् मोइनदास करमचन्त्र गाँगीको प्रारतिके विकारियाँ सोकपरायण व्यक्तियाँ और बोक-संस्वाबोंको एन मसीक्तीका

सम्पूर्ण गांची बाजमन

परिचय देनेके किए नियुक्त करते हैं जो बश्चिम आधिकारों मार्टीयोंको भोगनी पह ची है। बर्बन नेटाल वारीच २६ मई. १८९६

के॰ एस॰ पिल्में ऐंड कम्पनी वस्तुस करीम हाजी कादम (वादा अब्दर्श्ता ऐंड कम्पनी) *मंगी बहुमवजी वाउजी (बहुमदबी वाउजी मोगरारिमा)

46

अञ्चल भावर (मोहम्मद कासिम कमक्दीम) पी वावजी मोहस्मद हरोन कासिम ए सी विस्ली

पारमी हस्तमजी ए एम• टिल्ली हाजी मोडम्मद हाजी शदा ममद मोहस्मद फास्स

भारमंत्री निर्माणी पीरन मोहम्मद

ए• एम• शास्त्रजी वाऊद मोहम्मव

समद जीवा हुसेन भीरम

१ वर वरी दुल्लिका 'का मन्तिम दूप है। सम्बातः वन्ता मन्तिम नांबीनीका वी बताबा पुना है। इन्होंने पुरिवासके बहुने अनुनदेद (इन्ड १) और बच्चों तब बरामी बारमीने बसुरा बच्चा दिया है। देशित कुछ ७७ मेर १ १। " ने बल्लाक्ष मूल अमेबी बुरितवार्षे ग्रवहानी स्थिते हो है :

धेक्जी समद

*मोहम्मद काश्विम बांफेजी

ममीद हुसेन

मूसा हाजी कासिम

भणिलाल चतुरमाई

एम ६० कथराजा

जी॰ ए**॰ वा**सा

मोहम्मद शासम हाक्रियाची

इस्माइल टिमोस होल फरीव ऐंड कम्पनी

डी॰ एम∙ टिमोस "दावजी मोहम्मव धीवात बाबजी एमं धीदात

मोहम्मद बमोर वासा प्वाहीम नूर मोहम्मद वी० ए० ईसप "मोहम्मद मुकेमान कोटा सही "महम्मद मुकेमान कुरुमक कथीपम

महमद सुरुमान चूहरमा श्री स्मान सुरुमा सुरुमान नारायण पायर बावजी ममद मुटाला विचय राजवस् सुरुमान वीराजी सुम्मान दावजी

२ टिप्पणियाँ बक्षिण आफ्रिकावासी ब्रिटिश भारतीयोंकी कट-नायापर

पांचीनी ने दिव्यापियों केदाक चन वाकोरी सामानक चार्ड देरिटरिंक मेर मार्रेज को स्टेटकी वैचानिक प्रधानिक (क्षेत्रमें परिषय मेर निरम्पन-एक्क स्वपूर्त तथा बानूमी मार्चा-निपोर्ने निक्क मार्टानिकी विकासी हार कार्ने करवा करेत्रे के दोहकों किया में 1 जन्म बढ़ाक मा कि ने दिव्यापियों पेट्राम सम्बन्ध महानिक नम्माने किया मारावारों मेर्ने जन तथा। स्थापनार्थ तथा प्रतिकासीकी मार्ने स्वारक होगी दिवसी विकास कार्ने प्रधानिक मुक्ताम कार्न्यार्थ से गाँ है" (इस्ट क्य)। कार्य प्रामेश्वास मेर पुलिकामी कार्य प्रदान मार्ने स्वार्थ कार्यों क्षेत्रम उन्हें स्वी गरी रिया नम्म स्वीर्थ मार्निकास कंपन प्रकास प्रदान यादा है। विकारिकास प्रयोग्नित के साम्यानिक विकास कंपन स्वार्थ कार्य मेरी दिवा ना रहा है।

> राज्येट शिवस्य २२ १८५६

इमारे पत्तनवहा दक्षिण बाधिका वो ब्रिटिस क्लिनिसी — केन बाक पूर होत और नैटाम वो पनपानों — दक्षिण बाधिको गनपाय वा दुल्यवाब और बार्रिज भी स्टेट समाजिक सासनाधीन क्लिनेस — यूनकेंद्र, चार्टर टिस्टिश्च नौर पोर्ड्डिस करेस — हेनायोजाने या नोरेनको मार्थिस नौर नैराके मोराये कना है।

नेटाक

मेटाल एक स्वतासित विटिश क्यतिबेध है। यह मन् १८९३ में जनस्यायी पामनका त्यांगीय कर रहा है। सिताबर, १८९३ के पहले मेटाल

[•] नुष्ट बच्चावर प्रकारी किसिमें ।

सम्पर्न यांची वाश्यव उपनिवेख वायके मधीन था। वसमें १२ चुने हुए और चार कार्यपालन सदस्मॅंकी एक विवानपरिषद होती थी। समाबोके प्रतिनिविके क्पर्मे एक नवर्नर होता चा । विवानपरियदको रचना भारतीय परिवर्धको रचनाछे मक्रुत मिम नहीं की। १८९३ में उत्तरवाकी सासन दिया क्या जिसके

हारा एक स्थ्य सदन और एक निन्त सदनका निर्माण हुआ। इनमें धे उन्द सदतको विवातपरिवद (अधिमानेटिव काँसिक) कहा दाता 🕻 / प्रधमें वपिनेशके परमधेष्ठ नवर्नर द्वारा नामनद किये द्वर ११ सहस्त होते हैं। निम्न धरन विवानसमा (लेबिस्लेटिव बद्धेम्बली) भद्रकारा है। बतर्ने कानूनमें बताई हुई योष्यता रखनेवाले चपनिनेतियों बाधा भूने १७ सदस्य होते हैं। इस मोम्बताका वर्षन आये किया वामेगा। ब्रिटिन मेविमेडक्क नमनेपर पाँच धरस्योंका एक परिवर्तनशीख मंत्रिमंडक होता है। सर बात रावित्सन बर्जमान प्रवासमंत्री और माननीय भी हैरी एस्केंग

न्यु धी • [क्वीन्स कॉरोल] महान्यायकावी हैं।

र्गनियाम अविनियम (कोस्टिटयुग्नन ऐक्ट) में व्यवस्था 🕻 कि ऐस किसी अवितियमको विश्वका सक्ष्य वर्गविद्येषके छिए कानुनी व्यवस्था करना हो बौर को गैर-मुरोपीप बिटिश प्रवादनोंके सविकारोको कम करता हो सभामीकी स्वीकृतिक विना कानुनकी सन्ति नहीं मिल सकेगी। गर्वनरक नाम समामीके निर्देशोंमें भी ऐसी प्रतिकरकारमक संपनाराएँ शामिक हैं। नेटालका क्षेत्रफन २,८५१ वर्षमीन है। गई कतपनगढ़े मनुसाद, चयमें बूरोपीयोंकी बाबादी करमण ५ देशी कोर्गोकी करमत ४

और मारतीयोंकी कामय ५१ है। इन ५१ मारतीयोंनी ३ स्वर्णन नारतीय १६ परिमिटिना और ५ अपने कवेंग्रे जाने हुए स्वापारी हैं। स्वर्षत्र भारतीय ने हैं, जिन्होंने अपने गिर्मिटकी अवधि पूरी कर की है और जब परेकु तीकरों कोटे-कोटे कितानों सक्तीके फेरीबाओं

फल बेचनेवालों, मूनारों कारीगरों क्रीटे-क्रोटे हुकानदारों शिवकों फोटोप्राकरों भटनियोंके मुंखियों आदिके विविध कार्यों हार्य जीवन-निर्वाह करते हैं। यिर मिटिया बजी अपनी निर्माटकी नवधि पूरी कर खे हैं। स्वतंत्र रूपसे आमे हुए सीन ना ती न्यापारी हैं ना हुआनदारोंके सहावक । वे स्थापारी दक्षिण माफिकाके जिन मूल निशासिबाँको चुनु या काफिर कहा बाता है चनके मोन्य कपड़े बारिका और भारतीबोंके मोन्य तोहे बारिके सामान कपड़े मीर किरानेका स्थापार करते हैं। भारतीयोंके किए कपड़ा और किराना

. .

अस्बर्ध, कसकत्ता तथा महाससे मेंगाया भाता है। स्वतंत्र और यिधीमेटिया मारतीय बन्दर्भ, नहास और करुकतेने मार्य है और ने संस्थानें क्यामा बराबर-बराबर है। भारतीयोंका बागमन ऐसे समयमें फिरसे जारी हुना वब कि नेटासकी विवाससभाके एक सदस्य भी गार्केटके कवनानुसार 'उपनिवेसकी इस्ती बॉवॉडोल थी। विस्तित्की सर्वे संबेपमें में है कि पिर्यामिटियाको पाँच वर्षतक अपने मास्किका काम करता होता। बसकी पहले वर्षकी माहबार मजदूरी १ पींड होगी और वादके हर वर्ष उसमें ? पॉडकी में निक्ष की बायेगी। इसके जलावा गिरमिटकी अविवर्धे मोजन नस्व और पहनेका स्थान भूग्त दिया जावेगा। नेटाल बानेका मार्थ-स्थय भी शासिकक जिस्से होगा। असर पहले पाँच वपँकि बाद कोई स्वतंत्र सजहरके वीरपर छपनिवेशमें पांच वर्ष और काम करे, तो वह अपने अपनी पत्नीकं और अपर वर्ण्य हों तो उनके किए भी भारत कीन्नेका मुन्त टिकट पानेका हुकदार हो जामेगा। भारतीय मजदूरोंको गमेके सेतों और जासके बागोंमें काम करनेके किए और काफिरोंकी बपह मरनेके किए भारतसे कावा गया है। जपनिवेधियोंने काकिरोंको कापरवाह और वस्विर प्रवृत्तिके पामा था। रैक्नोर्ने और चपनिनेशकी सफाईक कार्मोर्ने मी सरकार नार तीयोंको बड़ी संस्थामें नियुक्त करती है। स्पनिशिवयोंने सुक-पुक्से मारतसे सबदुरोंको कानेक बिए १ स्पर्वो [पीड ?]की मधद संपूर करके उपनिवेचके उद्योगोंको मदद पहुँचाई थी। धत्तरहावी शासनका कगमन वहुका काम यह हुआ कि उसने इस अनुदानको बन्द कर दिया। उसका कहना चा कि इन तथीनोंको सब इस तरहकी तहामताकी बरूरत नहीं है।

नैधानमें बासी शिकायत : मताशिकार

युनाई १५,१८५ के धाही करमानमें ध्यवस्था है कि कोई भी बातिय पूरण को बन्निय माधिकाका मूल निवामी न हो, और निवक्त पाछ ५ पीट मुख्यमें सप्याद है। या को ऐसी यायपारका १ पीक साकाना किएसा के मदरावा-मुक्तीमें धानिक किसे बानेका स्विकारी होना के की कोगाँठ महाविकारका नियक्त करनेके निकृ एक पूत्रक नानून है। उनके मनुवार और बातोंक समाना यह सकरी है कि देखी ध्यक्ति एक निर्माचन-

रका सामुग्री । यहाँ दिल्लंग होना पादिर ।

क्षेत्रमें कमातार १२ वर्षतक पहा हो और यह उपनिवेसके देखी कोवीं सम्बन्धी कानूनसे मृत्तत कर दिवा गया हो।

एपनिनेश्वके बाम महाविकारके नामार्गत — बर्कार उपमृत्य बाही एएमार्गक बाहुगा — विदेश अवावतार्थ है विवरत है आरात्म १८५६ के बावतार किर्मावनार्थ है दिस्त है। १८५४ में उत्तर हों। विदेश प्रमाण वह मा १८५४ का कानून मन्यर २५। उत्तरे कहानून पति किया प्रमाण वह मा १८५४ का कानून मन्यर २५। उत्तरे को विदेश कानून मन्यर दूर हों उत्तर हों। विदेश मन्यर विदेश के विदेश के विदेश मन्यर हों। विदेश मन्यर मन्यर मन्यर विदेश के विदेश मन्यर मन्यर हों। विदेश के विदेश मन्यर विदेश के विदेश मन्यर हों। विदेश के विदेश मन्यर हों। विदेश के विदेश मन्यर हों। विदेश मन्यर हों। विदेश मन्यर हों।

ऐसा कागूग पाय करनेका छक्ता कारण भारतीयाँकी याज-सर्वता विराम और उन्हें नीरे-नीरे दिमन सारिकी वेदी कोशोके स्तरपर उठार हेना वा शाकि मिलस्पी किसी भी इस्वयदार मारतीयका क्लानिकर्त प्रश्ना कर्तम हो काशे । इस्पर निवास्ताको एक प्रावंताक दिवा नया निध्ये का क्लान हो पार्थे । इस्पर निवास्ताको एक प्रावंताका दिवा नया निध्ये का दिवारका चिरोप किसा गवा कि मारतीय प्रावंतिक के संस्थाबीके नामस्त नहीं हैं। वध्ये यह मोर्च भी को गते कि वियोक्तको नापस से सिमा साथे वा इस वालकी बांच कराई वाने कि भारतीय मलाविकारका प्रयोग करनेके योग्य है कवस नहीं (एक्ट्रान १ परिस्थिक —क)।"

प्रार्थनापन बारिस कर दिशा गया। इसस्य वह दिख्यक विवास-परिपदके सामने पहुँचा हो एक हुसरा प्रार्थनापन उसके नाम दिशा गया। पत्ते भी बारिस कर दिशा गया और विजेशक गास हो क्या (सहपन १ परिशिष्ट- कहा)

दागिए निमेशको काशीनिक होनेक किए समाधीको स्वीकृतिको नकरत मी। माधीम प्रमानने समाधीके मुख्य करिनिक-मीतीक नाम एक स्मरण कम मेनकर विमेशकका विरोध किया और वनते समुदोक किया की तो विभेषको रह कर दिया चाने या उत्तर काली कर तर्दीको नौर्य

र देखिय बाक्टर इन्छ ५१−५८ ।

र पेंद्रिय बाग ह इन्छ ह⊻∽हद।

दिप्पनियाँ बक्रिन बाफिनावासी विदित्त मारदीयीची बाई-गावारर

कराई वाने।स्भरवयनपर असमग ९ (सहपत्र १)।

समाप्रीकी सरकार और नेटासके मॅनिमंडक्के बीच अच्छा-बासा पत्र व्यवहार हुवा। फलव इस वर्ष बप्रैकर्मे नेटाक-मंत्रिमंडसने मताधिकार-कान्न को भागत से किया। असके स्थानपर यह विभेगक पेश किया गया

मारतीयोंने इस्ताबार किये ये

को कोम (मुरोपीय बंशके न होतें हुए) किन्हीं ऐसे देशोंके निवासी या उनकी पृथ्य शासाके बंशस हीं जिनमें समतक संतरीय मताविकारके आधार पर स्वापित भूनावम्तक प्रातिनिविक संस्वाएँ नहीं हैं अर्खे नतदाता-सुधीमें मपने नान बर्ज करानेके योध्य तबतक नहीं माना कायेगा अक्तक कि वे इत काननके बामको बटी किये बानेके किए स-परिपद-मदर्बरका आहेश नक्रके प्राप्त व कर की।

इस कानुनके समझसे उन कोगोंको भी वरी रजा गया है, जिनके नाम इस समय बाजिबी वौरने मतबाता-मुनीमें बाजिल 🕻।

इसपर विधानसमाके सामने एक प्रार्थनायन येस किया गया जिसमें बताया क्या कि भारतमें उसकी विवाहपरिपर्शके क्यमें "संस्कीय मताभिकारके आचारपर स्वापित चुनावमूच्क प्रातिनिविक संस्वाएँ मीजूद है और इसकिए विजेसक एक नासदासक स्थमस्या है (सङ्ग्रम २, परिधिष्ट भे श्विप कोक-प्रचलित नर्पमें हुमारी चंस्वार्जोको प्रपर्वृत्त कानुनकी कानश्यकताएँ वर्ग करनेवाकी महीं कहा जा धकता फिर मी शाहर निवेदन है कि, कानुभी बुध्दिते में वैशी जरूर हैं। और संदत्त सहन्तका तथा नटालके एक सुयोग्य व्यामधास्त्रीका भी यही मत है (तहपत्र व पुष्ठ ११) । स्वयं भी चेन्वरकेतने अपने १२ सिलम्बर, १८९५ के बारीतेमें उपर्यक्त प्रथम विवेदकको स्वीकार करलेकी वसमर्वता प्रकट करते हुए और नेटालके मंत्रियोंकी रबीकोंका उत्तर देने हुए अन्य बाठोंकि साव-साब कहा है

र देखिय ग्रन्ड र इन्छ ११७−१६८।

वे वेदिय राज १ वृष्ट ११-१२८। व वर अनेन हुए पुरितकाम है। वेदिय वृष्ट १८। ४ मूच फोरो-नक्सने १८८५ दिया है वा स्परता स्वर्तानी मूक है।

में इस सामको भी स्थीकार करता हूँ कि मारतीयोंकी जनके मस्ते देखमें कोई प्रातिनिधिक संस्थार्थ नहीं हैं। और अपने इतिहासके एव अपानोंकें अब कि से पूरोरीय प्रभावते मुख्य से स्थार्थ उन्होंने माने यहीं ऐसी कोई प्रभावते कभी स्थापित नहीं जी हैं (सहुपत्र भ)।

भी चेमरलेनको एक प्रार्थनापन (सहरत ए)' मेना नया है भीर संराखे सामनी तीरपर सनर निर्मा है कि ने उत्पर विचार कर पहें हैं। भी चेमरलेनने वह निवेचको विज्ञालको गढ़के ही स्वीकार कर किमा है। मीनिसॉन नेटालकी तैवस्त करेते एक यह विचेचक उत्तके बात मेन दिया था (वंद्यन ४)। उनाधि विकास मालिकार्क प्रार्थीमीका विचास है कि प्रार्थितपायमें निम्न बस्तुनिस्तियोंको स्पष्ट किया पता है सम्बद्ध विज्ञालको करने विचार वहन वेगेकी प्रेटण मिलेया।

विश्वय बाफिकाके माध्यीमों और भारतमें प्रश्नेवाले भाष्यीमोंकी विविधिक्ष कुकता कहीं की बा एकडी। इस बाकर विष्ठा और दिया बारे बहना बोझ है है। भारतमें को राजनीकिक उत्तीहन होया है और वर्ग-मेडके कानून बहुठ कम है। बीझन बाफिकामें एएवर नर्ग-मेडके कानून बनामें बाते हैं। और भारतीमोंको बाक्कोंकी कोटिंगे निरामा था खा है।

नार माराधियोका नक्ष्मिका काटिम निरामा का रहा है। जगर्मुक्त पहले निषेपककी विवेचना करते हुए बंदन सहन्तने मताधिकारके मक्तको इत कममें पैछ किया है

इस समय भी घेण्यरसेनके सामने को प्रकार है यह सैजारितक गर्ही है। बहु
प्रस्त रहीकोंचा गर्ही, बार्टीस मारानाकोंचा है। बहु
प्रस्त रहीकोंचा गर्ही, बार्टीस मारानाकोंचा है। इस अपनी ही प्रवासी वीच साति-पुत्र हीने वेंचर काम गर्ही उस्त सकते। प्रतास-तावारके विद्य वेदानकों प्रवाहर नेकार क्या करके करकी प्रवित्तकों सुकार्यक रोक वेदा बरावा ही नातर होगा, निरामा कि नेदानके सिद्ध विद्या नारतीयों अज्ञास्त्रीको गायरिक सर्वकार वेंगीय इतकार करना। विद्या नारतीयोंके तो वर्षोंकों कमावर्षी और बच्चे कामी नगर्न-वारको नार्वारिकोंके वारतिकार वर्षों तक करा ही किया है। (वंदग स्टाइन्टन १७ वृत १८९६)

इस केसमें उपनिवेशियोंकी जन विशिव वर्ताओंकी विवेशना की शई है जो कर्जुनि मारतीयोंका सताविकार कीननेके समर्थनमें येख की है। इसमें

र देविद्य सम्बन्ध र इन्छ इक्ट-रूप ।

.

यह भी बतामा नया है कि मुद्देशिय मतदाताओं दे दबा दिये नायेका समाम ही नहीं है नवींकि तामीले तामी मतदाता-मूचीके अनुनार १ मतदातानोंकों से भारतीन मतदातानोंकी संस्था केवल २५१ है। बीर उप-विशेष ऐसे भारतीन बहुत ही रूप है जिनके पात मतदाता वननेके किए जावादक रूपनी हो। (विक्रिए, सहयन ५)। वर्तमान विभेयकता हेतु मास्तीय समामका स्वाना बीर उसे समाम है समामका स्वाना बीर उसे समाम है (महान २)।

वृत्तपै *शिक्षाचतः । भारतीमः घचारतः*

पन्न १८९६ में नेटाल-उत्तरारको जोको पारको एक आयाग मेना गया बा। चयर एदस्य नेटाल-विधानचमाके संस्था थी विषय और नेटालके वर्तमान आगीय प्रवाती-लंदाक थी। येतन वे। वय आयोवका मंत्रा आरल-उत्कारको राजी नरता था कि आरतीय प्रवाद की एक्टारवामा तिकारी वे--विषका किक कर किया आ चुका है--वसकी प्रकृति निम्निविध्य परिवर्तन कर दिया जावे

(१) निरमियकी अविध पांच वर्षते बहुत्रकर जीतियत काल तकको कर थी जाये और खैले-सैले वह बड़े उत्तके अनुतार मजदूरीको भी २० धिनिय शासिकतक बहुत दिया आये।

(२) अनर भारतीय अपने बीच वर्धके पहले विरायित्के पत्न होनेपर आगोके नियु भी इत तरहका इकरार करनेंसे इनकार करें तो अगें यक-निनेशके वर्षपर भारत लीडनेंके लिए बाय्य किया बाये।

वर्षमा वादयायने नेदानक वर्षमंत्र नाम करने क्योउने वहा है कि नेदानके व्यक्तियों ऐती धार्षमांकी हत्या करें, रक्तर यागि वहां व्यक्तियत करने वर्षमान है किर भी यहि दिवेनस्थत सरपार हो मंदूर वर्षमां के दन यदिवर्षमांकी बनुवारि देवेडे किए देवार हैं। धर्म वह दोगी कि वर्षमान वासमीनी पारक मंत्र कि वासने कभी भी कीजसारी वरपाकक कर न दिया नामें (महान ५)।

रे लरपर परा था कर राष्ट्र नहीं है। चत्नु, उन्हों बार्क्नापरा मरीना राजिन करर था क्लिस बच्चेन माने दिया यहा है।

र रेक्टर वार्याच्या १।

भारत गर्ने हुए आसीयकी रिपोर्नके अनुकृत १८९५ में नेटाल सरकारने भारतीय प्रवासी कानून संबोधन-विधेयक पेस किया। उसमें अस्म बारोंकि साय-तान इकायरेनामेकी बर्बाव अनिविधत काकराक बढ़ा देने या प्रवाधियोंको अनिवार्य क्युचे बापस भेज देनेका विवास किया यस है। उत्तमें यह भी कहा गया है कि जो प्रवासी इकरारनामा इस्तानेके किए वैयार न डो और भारतको भाषस मी न बामे उसे डर वर्ष दे पाँड सालाना भूस्कमा परवाना केना होगा। इस तरह स्मन्ट है कि मह निवेधक बाहरा रामके क्यार्यकत सरीतेमें नताई गई सर्वोंने बाबे वह गमा है। इस निजेमध-पर आपत्ति करते हुए नेटाक्के दोनों सदनोंको प्रार्थनायम सेने नये परन्त्र क्षमका कोई काभ नहीं हवा (सङ्कात ५, परिविष्ट क^र तथा का)। श्री चेम्बर लेन तथा भारत-सरकारको भी एक प्रार्थनापत्र लेखा गमा है। क्समे वर्ष रीय किया गया है कि मा तो विजेयकको नामंत्र कर दिया जामें मा भविष्यमें नेटाइको समझूर भैवना बन्द कर विया वासे (सङ्घव ६)। कंदन बावन्तने ता १-५ ९५ (९६? कि एक अवशेक्षमें इन प्रार्थनाओंका नोस्सर बनवंत किया है।

वस वर्षसे अधिक हुए, नेटासके सत्कालीन गवर्गरने भारतीयोक प्रवासने सम्बद्ध विभिन्न विपर्वोपर रिपोर्ट देनेके किए एक बायोनको नियुक्ति की नी। वसकी रिपोर्टके प्रमाण बेकर कक्त प्रावंतापनमें बताया गया है कि इस तमन कायुक्तों तथा तत्कातीन सबसे बड़े क्रोमोंका जिनमें नर्तमान महाध्यायवाची मी शामिल ने समास मह ना कि इस प्रकारका कोई मी कानून ननाता

भारतीयोंके प्रति कृत्वापूर्व बन्याय और विदिश्त नामपर कर्तक-क्य होता। प्रार्थनायम जब भी भी चेन्वरतेन और भारत-नरकारके विचाराचीन हैं

(बद्धपत्र ६)।

तीवरी शिकायतः । कर्तर्ये

निराक्षमें एक कार्यन है (१८६६ का कार्यन न १५)। उत्तर्में स्पनस्त्रा है कि धहरोंने कोई भी वैद-मोरा व्यक्ति" ९ वर्ज रातके वाद एवतक वर्ष्मे बाहर नहीं निकल सकता अबतक वह काने बारेमें क्रीक कैकियत न वै सकें

- र देशिय मण्ड र पुछ रक्ष-१८१।
- र धेनद नार १ एक ११५-११७।
- व देशिक सम्बर्ध १ पुत्र ११७-१३२ और १३१-१३५।

10

या अपने माफिकने पासते प्राप्त परवाना न दिवा राके। सामय यह कानून पूरी तरह जनावस्तक नहीं है परन्तु दशका जनक समरार बहुत करवाचार पूर्व देवरे होंग हैं। ऐसे समरार जनसर जाये हैं वद कि फिसकों तथा जन्म महिन्दित प्रार्थीयोंकों किसी भी कामसे क्वों न हो ९ जने राजके बाद करसे निकामीयर स्थानक काककोटियोंने जन्म कर दिया गया है।

नीमी शिकानत नरनाना-कामृत

इस कातृतमें स्ववस्ता है कि प्रसान भारतीयसे परवाना विद्यानेको कहा बा तकता है। इसका वास्त्रविक वहेस्य काम छोड़कर साम्मे हुए मारतीयोंका पता बनाना है। परनु एक्का एसपीम अस्तर भारतीय समावके प्रति क्याचारके भेकर डीएसर किया जाता है। नेटाएके मारतीयोंने अनवत इत बोगों कागृतीके विद्या कोई कार्रवाई नहीं की। परनु से सामाम्म रिकायतोंमें सामित हो सकते हैं। भारतीयोंके बीचनको नित्तमा हो कर्क एतमा करनम बनानेको उपनिवेदियोंको मनोब्तिका विस्थान भी कार्म कराया वा एकता है। बहुंतक इन दोनों कागृतीक जनव में कार्म बानेका समन्त्र है सहस्त्रम । के पूर्ण द और भे देशना चाहिए।

ब्डमेर

यह क्यंतिक्य समाजीके सास्ताचीत है। इसका बायत समाजीके तास-र त्रेटाकके पनर्षः हारा होता है। नेटाकक मंदिराहकके सा नेटाकके गर्करः का — उसकी दम हैसिवतर्धे — कुम्बीक्से कोई बारता गर्ही है। बहां नोट्या पूरोपीनिके बीग भागी संस्ताने सीक्सी (काक्सि) को भागायों है। हुए गर्ह बरितयों भी बसाई पई हैं। मेलमांव नामकी बस्ती सबसे यहचे बसाई गर्ह वै। १८८८ में इस बसीमें भागतीयोंने कममा २ पीकमी नक्सी नक्सी नमाने क्योति की १८९६ में मंदिरी नामक बीलमां क्योती थी। १८ १ में प्योदों बीए १८९६ में मंदिरीन नामक बीलमां क्योतीकी बोएवा की गर्ह। इस कोर्से बरितवोंने मक्योतीक बनीम वर्षारिके नियम एक ही है। सम्में बहुर पया है कि सकार्गीकी वस वर्षानें पहार कोंग

र देखिर एक १--१४।

य पर करण्य तरी है।

4

इन निवर्षेके विवद नंद फरवरी मासर्वे वृत्तुनैहके गवर्गरको एक प्रार्वनापव^र

दिया गमा था। परन्तु उन्होंने इस्तक्षेप करनेसे इनकार कर दिया। इसपर भी नेम्बरलेनको एक प्रार्वनापन मेना पता। वह समी वनके विवासकीत है। स्पन्न है कि स्वचासित उपनिवेधोंको को कुछ करवे (हमा

गया है एससे में निमम बहुत आबे बढ़ गये हैं। इनमें बारेंब मी स्टेडबी पूर्व निष्कासनकी नीतिका अनुसरन किया यहा है।

बुलबैंडकी सोबेकी बातोंके कानुमेंकि मनुसार मास्तीय देशी शोना सरीर मा रच नहीं सकते। यह दनके फिए इच्छनीय अपराम माना माता है।

केय कालोती

भूमासा अन्तरीप (केप बाळ गुडहोप) नेटालके समान उत्तरहामी सासन-वाका अपनिवेस है। बहाँका संविधान नेटाक्के मंविधानका वैद्या ही है। सिर्फ विवानमभा और विवानपरिपद्ये सदस्योंकी संस्ता ज्यादा है। और मताविकार-योष्पता मिल है। अर्वात् सम्पत्तिकन्य योष्यता यह है कि ७५ पींडमाले मकानपर १२ मासतक करता रहा हो। नेतनजन्य बोध्यताके किए ५ पाँड वार्षिक वेतन होना बावस्वक है। वो व्यक्ति मतवाता-सूबीमें नान 🦠 किसानेका वावेवार हो उछ अपने इस्टाब्टर करना और अपना पता तवा पेया सिमाना जाना चाडिए। यह कानृत १८९२ में पास किया गया था। इसका सक्या बहुस्य भारतीय तथा मक्षायी मतवाताओंको रोकना वा । नेटाकर्मे यदि ऐसी निज्ञा-सम्बन्धी योष्यदाएँ क्या दी वार्षे या सम्पत्तित्रन्य योग्यदाकी बहा दिना नाये तो मारतीन समाजको कोई मापित नहीं होती। केप कामेली का शेवफल २,७६,३२ वर्षभीत और कुछ बावादी १८, नाबाबीमें मुरोपीमॉकी संबया ४ है ज्यादा नहीं है। मास्तीवॉकी संबया मोटे शीरपर १ होनी और वे डोटे स्वापारी फेरीवाडे और मनपूर में मुक्क कलरमाहोंमें सर्वात दोर्ट एकिकावेच इंस्ट करन और कैंग

हारममें --- तथा किम्बर्कि बात-बेत्रॉमें भी --- पाये बाते हैं। नाप्तीमॉपर जो नियाँप्यवाएँ बाबी गई है बनकी सब बानकारी प्रपत्नन नहीं है। १८९४ में संदर्श एक विशेषक मजूर किया वा विसके हारा हैन्द्र

र देशिय बाग्य १ पुछ १९५-३ १।

व देशिए सम्बद्ध पुर - वृहत्र ।

संतरको स्पृतिविर्देषियोको स्रोक्तार दिया गया वा कि वह सारातियाको वैद्यस-स्टिरियोनर वक्तेने रोकने और निर्देश्य विद्यासी प्रतृत्वेक स्थित कास्य करनेके व्यानियम बना से। इस विद्यासी विद्यास आधिकारी भी विस्तरितेके पाछ कोई विद्यास मानामक नहीं सेवा गया। परन्तु यह वर्ष साराधीसिका विद्यासक से वेक्सालेको सिक्ता वा स्वारी स्वारियाकी पोदीनी वर्षा

वस्त कर में थी।

कैप कालोगीने विभिन्न मार्गों या विकाम किया मार्ग्यायके किय रोजमार करोजा परवाना प्राप्त करना वस्तन्त किया होता है। मनेन मानकों से तो मनिवादें परवानों देतीते एक्सम हमकार कर दर्ध हैं और प्रश्चे कारण भी नहीं बताते। कारण स बताना मनिरादेशीक विकासकी बात है। परस्तु हमेगा ही देवा बया है कि वब भारतीयोक्तो परवाने नहीं दिये पर्यंत क पूरोपीयोकी से विशे करें है। ह मार्च १८९६ के मेशक मन्तुरिक अमुशार कालोगीके एक निन्ने केंदर रिक्लाकीयों मारावीकी स्थित यह है

हस्यहम्म मुझेमल नामके एक अरबने हेल जिन्नाबेहर्न एक बहनु-पंडार बनवाया। उसमें मालपर तर-कर बचा कर दिया और परकालेक फिए क्यों हो जिसे मोनस्टेरने नामंत्रूर कर दिया। यो अरुनी-ध्यानितने उस अरवकी औरसे (विकास आर्थिकामें मारतीयोंक करी-करी जार्य बहु। कामा है) के-नारकारके सामने क्योंक की। परच्च हैय-सरकारने मनिस्ट्रेडका कैतात बहुन्त रखा और निवेंग दिया कि हैय जिल्लाकीकों किसी अरब या दुस्तीयों ब्यायार करनेका परवाना न दिवा कामें और जिस एक या दुसीयों ब्यायार करनेका परवाना कराकार क्या करा दिया कामें।

वह यो ट्राम्नवालको भी मान वे वेना हुआ !

बार्टर टरिटरीक

हण मरेपीमें माधीनाजैंड बीर मेटावेनेजैंड शामिल हैं। यहाँ नामन १ नामन हमूरित (बेटर) और मजदूर वहाँ हैं। मुख्यापारी भी नहीं बन बने हैं पत्तु उन्हें पाने-पान को धारनाता देनेते हनकार कर दिया नवा है। किर भी कानुन भारतीनेकि पधार्मे होनेके बारन एक उन्नधी मारतीय मत वर्षे अपटाजनको वही जवाकतसे स्थापारका परवाना प्राप्त करनेमें सफल है। पमा है।

नव चार्टर निरुपीयके मुरोपीनीने कानुगर्ने परिवर्तन करावेजी नवीं में हैं प्र लाकि परिवर्धने मार्चीनीकी मही क्यापारके परवाने मान्य करावे रोका ना सके। बहिल नाविकाके प्रमाणारपर्वाजा कवन है कि केप-सरकार देते परिवर्धनके सनस्म है।

ट्रान्सकाल या दक्षिण आफिकी गणराज्य यह एक स्वतंत्र गणराज्य है विश्वका भावत क्या यो बोबर कोत करते हैं। इसमें दो सक्तोको संग्रद है जिसे 'फोससराट' (कोकसमा) कहा वाला है।

इसके समाना कार्यपाकल-मंद्रक है जिसका प्रमुख अध्यक्ष होता है। इसका अंबयक्त १११६४२ वर्षमील और नोरॉकी नामाची ११,,२२८ है। नाले कोर्योकी सामानी ६५१६६२ वसाई आसी है। मनरात्मका मुक्स उचीर

१५ व्यक्ति मूरोपीयों अम्बानी या होटलोंने सामान्य नौकरेंकि सौरपर सर्गे हैं। यह नन्तावा १८९४ में बनावा मना ना। सबसे हर विभावमें संस्था

ट्रान्सवास्त्रपर प्रमुखता सभावीको है। इंग्लैंड और ट्रान्सवासकी

बहुत बढ़ वह है।

सरकार्ति भीच को नमलीते (कानवेंद्रन) है।

सन १८८४ के लंदन नमकोते (कानपान) की बारा १४ और १८८१ क प्रिटोरिया सबकोतेकी बारा २६ में निम्नकिनित व्यवस्ता है

क incline setting कर रहे में (तनाकानत करना है दक्षिण बार्किकार्क देशी कोर्नोक वर सब कोर्नोको, को दुल्लवाल राजक

वाभन नाराष्ट्राक वद्मा कायाक पर तब कायाका, वा बूरलवाल पान्यक नानुर्नोका पातन करते हैं अपने नरिवारोंके ताब द्रालवाल पान्यके किसी सी भारायें अवेद करने यात्रा करने वा फानेकी वरी स्वांत्रता होगी। वाहुँ गकानों कारखानों गोवानों हुकानों और बहातोंकी पिकस्पित रखानें या वाहुं किरायेपर सेनेका अस्कितर होगा। वे स्वयं या दिल लोकोंको वे गितुकत करना ठीक तम्लों धनके हारा अपना स्थापार-वानिया कर सकेंगे। वनपर स्थापित या सम्याप्ति स्थापार सावोगके नाले कोई ऐसा बाम या स्थापिक कर नहीं लगाया खानेवा को हुम्सवासके नाय-रिकॉपर न लगा हो या न स्थाया बानेवाला हो।

इस ठाड् यह धमलीया विटिश्च मास्त्रीयोक व्यासारिक तथा साम्याधिक व्यासारिक पूर्व संस्कार करवा है। बनावरी १८८५ में हामबाल-मास्त्रार समाने स्थान करवा है। बनावरी १८८५ में हामबाल-मास्त्रार समाने हुए देशी (तेटिक) ध्यक्त ऐसा वर्ष करना बाहा वा कि उसके बायरेंगे स्पित्राई कोच मी सामिल हो बागें। बिक्त बारिक स्थान करी कार्य माहा का कि उसके मास्त्र कार्य सामिल को बागें। बिक्त बारिकारीक मुख्य न्यासार्थिश सर हेनारी सी विक्रियरीचे समाह करने बात कर विकास करने का सह विचार करने किया सा कि हो सामिल करने का बात कर विकास करने किया को बागें किया है। उसे सामिल करने का सामिल का सामिल करने का सामिल करने का सामिल करने का सामिल करने का सामिल का सामिल करने का सामिल का सामिल करने का सामिल करने का सामिल करने का सामिल करने का सामिल का सामिल करने का सामिल का सामिल करने का सामिल करने का सामिल करने का सामिल करने का सामिल का सामिल करने का सामिल करने का सामिल करने का सामिल करने का सामिल का सामिल करने का सामिल करने का सामिल करने का सामिल करने का सामिल

कान बचा जाना (1714 है। यह प्राप्तवास-उपकार कीर बिटिंग सरकारके बीच मार्गी वसीं। समझ उद्देश्य बहु वा कि समारिकों परिसर्वतं कर दिया जाने विसरी कि देवी मोनिक पर यह कोनीं ने बिए पुरसित विशेषानिकारीचे आपनीर्योको वेचित किया वा सके। मर हरप्युनिया रावित्यानका क्ल प्राप्तवास-सरकारके मन्दक का। उन्हें अपने सुमानगर आहे वर्षाका १९ मार्च १८८५ का सह समझ सिस

ह चतर मिका सम्मीतेने संदोधनके बारिये येने आपके मुताबपर ध्यानते विकास सम्मीतेने संदोधनके बारिये येने आपके मुताबपर ध्यानते विकास हिम्मा है। स्वार आपको राम पह किल आदिको प्रकासके तिए अधिक ध्यानिक सम्मीतिक के प्रतिक्र के स्वीर प्रकासके स्वार प्रतिक्र के ध्यान कर येनेको बहुनत है। तवारि एक बात विकास करने धीम्य केवती है। क्या कोकासार (कोकासका) का सम्मीत्मकार है स्वार सामार्थकर ही स्वीर करने प्रतिक्र कान्त्र करा गिक स्वार केवता है। स्वार प्रतिक्र कान्त्र करा गिक स्वार केवता है। स्वार प्रतिक्र कान्त्र करा गिक स्वार केवता है। स्वार स्वीर कान्त्र करा गिक स्वार केवता है। स्वार कान्त्र करा गिक स्वार है। स्वार कान्त्र करा गिक स्वार है। स्वार कान्त्र करा गिक स्वार कार्य करा गिक स्वार कार्य करा गिक स्वार कार्य करा गिक स्वार करा है।

७२ छन्नूर्णगोतीशाङ्सव

कार्ड वर्वकि सुप्तावके अनुसार ट्राम्सवासकी फोनसराटने १८८५ का ज्यतियम ३ पास कर किया। यह सब मास्तीयों बौर मैर-मोरे छोपींपर नागु होता है। उसमें दिवान किया गया है कि इन कोगोंमें से कोई भी मताबिकार नहीं था सकते अच्छ सम्पत्तिके मात्रिक नहीं वन तकते को नैर-पोरे कोम स्थापारके उद्देश्यमें मचराज्यमें बस्ते हैं उन्हें अपने आप मनसे बाठ दिनके बन्दर अपने नाम पंजीइत (राशस्त्रर) कराने होने और वर्षे २५ पीड वंशीकरण (रिकार्ड्रेकत) सुरूक रेना होता। इस कानूनको मंप करनेवाक्षेत्रे किए १ पीडले केकर १ पीडलक चुननिकी और अूमीना न वेनेपर १ मास से ६ मास्तक कैंदकी सना निश्चित की गई है। इसमें यह विवान भी है कि सरकारको गैर-मोरे कोगोंके निवासके किए पर्किमों महस्कों और पस्तियोंका निर्देश करनेका अधिकार होया। १८८६ में इस कानूनमें पंचीवन करके २५ पीड युक्कों हे पीड कर दिया बना येथ बायरे वैद्यारे पैपी रक्षी पर्दा द्वारणाकों आसीमंकि किए इस समय बड़ी कानून नवकों है। कानूनके वास होनेपर भारतीमंकि किए इस समय बड़ी कानून नवकों है। कानूनके वास होनेपर भारतीमंकि जारत और ब्रिटेनकी सरकारोंको सार हारा तना नन्य रूपोंमें भी कवीं भेजी। उतमें १८८५ के कानून ३ और उसके धमीननके प्रति विरोज व्यक्त किया गया और बताया थया कि वे लंदन-धम श्रीतेका शीमा मंग करनेवाले हैं। इसके फलस्वरूप कार्ड नदस्रकोईने भारतीयोंकी नोटाबेरी नद्दा नक्ष्यक-नोटाबें' में परिचत हो यह और दोनों सरकारोंके बीच नक् धमझीता हुवा कि १८८५ के कानून के बीर पसके बंधोननकी वैत्रता तवा वर्षका निर्णय पंचके नुपूर्व किया वाये। वार्षेच भी स्टेटके नुस्त न्यामामीसकी एकमान पंत्र चुना बसा । कन्होंने यह वर्ष सह निर्मय दिसा कि द्रान्धवाम-धरकारका १८८५ का कानून ३ और बतका संबोधन पात करना बारक था। परन्त अन्होंने चनके नवंका प्रस्त मनिर्वात कोड़ दिया और कहा कि क्यर दोनों पस किसी एक बर्वपर सहसद नहीं हो सकते तो इत प्रक्रका फैनला करतेके किए ट्रान्धवाकके न्यायाक्य ही चपयुत्त न्यायपीठ हैं (सहपत्र ८) ।

दिप्तिभौ रश्चित माधिकासात्री निर्मेश भारतीकोची का-गावासर ७६ दाम्यवासके भारतीयोंने भारत-मरकार तथा विटेनकी सरकारको

प्रार्थनापद! मेत्रे । भी भेजारकनते कपना देवता देवे हुए बनिन्धापुर्वक पंच-विकास मंत्रूप कर किया। परमु वज्ज्ञीते भारतीयिक साम सङ्गुनका पर्यत्त की है और वनका बखान इन वज्ज्ञीतें किया है "वान्धियिय कानुका पर्यत्त करवामें नुनी कोरोंका सुन्धाय" जिले कपने काम-भेजे कानोनें कद जिल बावार्जोंना नामना करना पढ़ एक्या है, वर्न्हें पार करनेके किय मानद सपनी करियक उपनयीक्या सुविभक्ता और बहम्म भागित्य हो पर्याद्य होगी। और उन्होंने द्वारवास-गरकारके मानव वार्कों मोनावाम भारतीयोंका मानका चार करनेकी स्वत्रेष्ठा करने किए गुरीवत रही है।

भारतासका आपका वस करलेको स्वतंत्रका कान किए पूर्णसा रहा है। प्रत्न इस समय यहीपर है। यहाँप पंच-तैनाका स्वीकार कर किया गया है यह दिलनाई देश कि अनेक प्रत्न कर भी अनिर्वाद पढ़े हैं। अब इस्प्रचावमें भारतीय कही रहेंगे देश उनके बस्तु-संबाद कर कर दिसे वार्ये हैं नयर हो हो । या १ ० स्वासारी अपने जीविकोगार्वनके किय बचा करेंगे देश पढ़ें खारार भी पुष्क बीटकोंगें हैं। करता होया? वरनु दुस्सवानमें ने मामार्र हैं जनभी नृत्यी इतनेसे पूरी नहीं हो जाती।

(न्युट्टानस्वालय ना वापाएं ह जनका नुवा देवनस्य पूरा नहा हा जाता। अविनियम २५ (अनवरी १ १८९३)के अंध ६८ में कहा गया है कि वेगी और दूतरे पैर-योरे लोगोंको पोरोंके लिए निश्चित डिक्बोंसे अर्चात्

यहने और दूसरे वर्जें याचा करनेकी इजावत नहीं है। ट्राम्मवाककी रेसनादियोंचें विकट्टन नेदाय कपड़े यहने हुए बहुत है। इज्जननार माध्यीय भी अधिकारपूर्वक यहने या दूसरे वर्जेंसे याचा नहीं कर

एकत। उन्हें हर तरहके और हर स्थितिके देवी नीमिक पात्र तीवर देवेंद्र स्थेक दिख्यों तेन दिया जाता है। रागने द्वान्तरामके मारशीमीको बहुत समूचिया होती है। द्वानमानमें प्रशामीका एक निवस है। उनके सनुसार, बची कोमोंके

नवान नारतियों किए भी यह जनरी है कि वे एक स्थानने दूसरे स्थान वानेके तबय एक धिरिन्यका एक बरबाना ल लें।

मन १८९५ में नमाजी-सरवार और ट्रामवार-सरकारके बीच धनारीब ट्रीटी [मितवार्य वैतिक मरती-सम्बन्धी नींध] हुई बी। बनक मन्तर्यन

र देखिए समा र १४ १८९-२११ और ११९-२१४ ।

विटिस प्रवानोंको समिवार्य उतिक सेवारो मुक्त कर दिया गया था। यह संवि उसी वर्ष द्राप्यवालको फोलस्पाटके सामने पुष्टिके किए पेस हुई थी। फोलस्पाटने संविका प्रजीवस्य इस संघोषन या सर्विक साथ किया कि

प्रोमपाराओं संविका वृष्टीकरण इस संघोषण मा सर्फि साव किया कि विधिय प्रकाश वर्ष केवल गोरे कोय होगा। भारतीयनि तुरुष्य ही भी पेत्यर केवले तार दिया और जनके पात एक प्रार्थनायम भी मेबा (सहपव ९)। वह भक्त इस समय भी पोन्यरसेनके विचाराबीन है।

र्करन डाइन्छने इस विषयपर एक वड़ा सहानुमूर्तिपूर्व बीर ओरबार बद्दनेक किया या (साफाहिक संस्करण १ –१–९६)।

ओहानिसवर्षके सोनेको सानोकि कानूनोंने मारतीयोंका देवी सोना रचना अपराह करार दिया पता है।

महोतक भारतीयोंका सम्बन्ध है, ट्रान्सवाकर्ने कर्प्यूका भी अपक होता

है, जो विसम्बन मैर-जकरी है। परन्तु यहाँ यह कह बेना जीवत ही होगा कि को सोय मेमन मोनीकी पोचाक पहनते हैं जहें जान तीरपर इस कानुनके जनवंदा सराया नही

जाता (ग्रहरण १ पुस्त ६)। जाद्वानित्तवर्गेन पुरू पेकस्तररो-ग्रन्थली छत्तित्वम है और प्रिटोप्यार्ने पुरिस्ताको निर्देश दिसे यहे कि घाटवीर्योको पेकस्तरप्रेपर चन्ने न पिया जाये। १८९४ में महास विश्वविद्यालयके एक स्तायकको बोटीने ठीकर

मारकर पैतक-पटरीसे बकेस दिया गया था। सार्रेज की स्टेट

महूप्क स्वर्गन क्या वजराज्य है। इसपर राज्याजीकी सर्वीच्या ससा नहीं है।

हवना धीरवान ट्रान्तवानके धीरवानसे बहुत पिकता-मुकता है। थी स्टेन पणसम्बद्धिक नव्यस्त हैं भीर रूपमार्वतीन हसकी राजवानी है। हसका सेवकत ५२ वर्गनीक और आवासी २ ७५ १ है। आवासी पुरोगीमी करमा ७० ८१६ और ऐस्नोसिंडी १८,००० है। यहाँ पुत्र मास्तीय सामारक नीस्टेडि वावसर करें हुए हैं। १८५ में बाते बील मास्तीय बाह्य मंत्रार में विकास मुद्री १९, धीर बी। वर्ष्ट्रे स्वेदन दिया पण और उनके वस्तु-संबारोंको विना मुझानवादिये वन्द कर दिया नया। उन्हें यहाँसे निकल आनेके किए एक सावका समय दिया गमा वा। ब्रिटिस सरकारके पास मामले के बाबे मने वे परन्तु उससे कोई साम नहीं हवा। सन १८९ के कानूनका कम्याब १३वाँ जिसे एसियाई गैर-नोरे कोबॉकी बाढको रोकनेका कानून कहा चाता 🕻 प्रत्येक मारधीयको दो माससे मिक इस उपनिवेदानें राह्नेसे रोक्ता है। यदि कीई इससे विवक खुना चाहे तो उसके किए नमराज्यके वस्थानकी इवाजत सेना वरूरी है। जबर, अभी दी भानेकी धारीबाते शील दिनके पूर्व और भवतक दसरी जीपवारिक कार्रवाहमी पूरी न हो बार्वे वर्जीपर विचार नहीं किया वा सकता। इसपर भी अर्जेदारको किसी श्री स्थितिमें राज्यमें अवक सम्पत्ति रखने या व्यापार अववा खेती करनेका अविकार तो है ही नहीं। अध्यक्षको सभिकार है कि वह रहनेकी ऐसी साक्षिक सनुमति परिस्वितियोंके सनुसार देशान दे। इसके अकाना इरएक साय्तीय निनासीको १ पींड वार्षिक व्यक्ति-कर देना पहता है। स्थापारिक या अपि-सम्बन्धी नियमोंको अंग करनके पहछे अपरामके किए २५ पाँड चुमाँने या तीन मातकी साबी या कड़ी कैरकी सजा निरिचत है। बारके धन अपराजेंकि किए हर बार रच्छ धूना होता चाता है (बहुपन १) ।

ना होता चाता है (यहपन १)। सद्योगर श्विकायतींकी सची अस्पन्नय श्वमान्त हो जाती है।

दन टिप्पिम्योंका दराया निवित्र सहार्गोंकी एमन पूरी करना नहीं है। सादर निवेदन हैं कि में धमर प्रस्तेक सुरीषण कम्पमनक निम्म जावस्थक है। सादसर्व में टिप्पियरों उन तमान स्वरूपणों की से पुरिवकाली कम्पमन्ये सहायद होंनी निवर्ग विभिन्न मूर्गोंसे एकनिय मूल्यवान नातकारी सी

मर्द है।

सारे प्रस्तको लंदन बाहण्यने इस प्रकार पेछ किया है बया विदेश नारतीयोंको कह वे भारत कोहते हैं कानुनके सामने बही दर्जा निकता बाहिए, जिसका उपमीप कस्य विदेश प्रशत् करती हैं। वे एक विरिट्ध प्रदेशने हुक्तको स्वर्धम्यापूर्वक का तकते हैं या नहीं सीर बहुबोगी राज्योंने विदेश प्रशांक अधिकारोंका दावा कर तकते हैं या नहीं?

रे सम्मरनाः वह १८६ के बानुनदा गढ वा।

किर

भारत-सरकार और स्वयं नाराधिय विश्वास करते हैं कि विश्व नामिका ही वह स्वान है, वहाँ यनकी मान-वर्धावे हम प्रवच्य तिकसारा होना चाहिए। स्वर वे दिलन बाह्यिकार्गे विटिश जवान्ये। साम-मार्यादा प्रान्त कर केहें हैं तो अध्यक करते वह मान-वार्थिय वेनेसे स्वचार करना नगमम सतम्बद्ध हो बायेगा। नगर वे दिल्य बाह्यिकार्गे कह स्विचित प्रान्त करनेने साहका रहे, तो जन्मत्र करो प्रान्त करना धनके किए करिन होगा। इस प्रकाल क्षित्र साम्बिक प्रवाहे शीरपर किया गया है और

तन वर्षोते विना कियी मेवमावके वश्चिक बाव्कियारेः विटिश्च भारतीयोंका श्वमंत्र क्रिया है। - संबंत श्रक्तमार्थे वट प्रकार प्रकाबित हुए क्षेत्रोंकी तारीकों निम्त

क्षित है

२८ जुण १८६५ (हाध्योदिक बेस्करम) १ जास्त १८६५ - " १ विद्याल्य, १८६५ - " १ वालपी १८६६ - " ७ जास्त १८६६ - " २ मार्च १८६६ (हाध्योदिक संस्करम) २ मार्च १८६६ (हाध्योदिक संस्करम)

पोर्पुनीय प्रवेष — वेलानीयानीर्में क्षोद्दे विकासनें नहीं है। यह एक अनुकृष धर्म बतानेपाला प्रवेष है। (सहपन ३)। सी क गांधी

मा क गांध एक की हुई अंग्रेनी प्रतिकी कोटी-गरुक (एड एन ११४५)थे।

३ वस्बईका भाषण

प्रांचिति हिराम्दर १६ १८९६ को बाग्स्टी एक छार्वस्तिक एसम्पे तीचे कवा क्षम आपन दिया था। इसा बगर्च प्रेडिनियो क्वेडिनियमके उपायपार्थ्य कमानी अस्त्रामी किन्द्रत्य हैं हो भी तर करने कमान्य मानतीन हर पर्योच्छान केवा वेश आपन पुरित्याके कमर्थे छमा क्षमा था। वरण्य कमी क्वेडिनियम आपन व दोनेके कारण बमने छम्पण अगृह एतियानि अव्यक्ति कारण कि बीट मानाई गाराद्री अव्यक्ति कारण पर मानामी विशेषीत महिस्तिय हराती केवर पन विभि देवर की हैं।

तिवन्तर २६, १८९६

इमारे वर्तमान प्रयोजनको वृष्टिन्ने बक्षिण बारित्वा इन राज्योंमें विमन्त है पुमाया अन्तरीय (क्य बाळ वृदहोय)का विटिय क्यनिवेच नेटाक्का विटिय क्यनिवेस युक्तिका विटिय ज्यनिवेस ट्रान्तवाल या बसिण कास्त्रिकी

१ इसी पृतिसकारे जनाने रेकिए। इस ५८-५९ ।

सम्पूर्ण बांबी बाह्मव गमराज्य बारेंब की स्टेट रोडेसिया या चाटर्ड टेरिटरीब और बेसानोजा-ने

पौर्त्रपीय प्रवेशको छोडकर वशिय आस्त्रिकार्ने कममय १ भारतीय निवास करते हैं। सनमें से अधिकतर महास दवा बंबासके मण्डूर वर्षके छोग है। वे जनस तमिल या तेलगु और हिन्दी बोक्ते है। मोड़ी र्तस्या न्यापारी वर्गकी भी 🕻। वे मुख्यतः बन्बई प्रान्तमे गमे 🕻। भारतीमेंकि प्रति सारे बोधन कारिकार्मे आम भावता हेपनी है। वसे समावारपत

•

तवा वैराके पोर्तुगीक उपनिवेस।

प्रोत्साहित करते हैं। कान्त बनानेवाले चने वेली-बनदेशी ही नहीं करते अस्कि जसके प्रति अनुकृतिता भी रसते है। जाम यूरोपीय समावकी कृष्टिमें प्रत्येक भारतीय निरपनार रूपसे "कुकी" है। बस्तु-नेदार भातिक 'कुठी बस्तू-मेदार मालिक" हैं। मारतीय मुंधी और शिक्षक "कुकी मंदी" और "कुकी बिटक" हैं। स्वामानिक है कि न तो स्वापारियोक और न मंग्रेजी शिक्षा प्राप्त जारतीयोंके साथ ही किसी भी जेसमें जायरका व्यवहार किया जाता है।

बम देवनें किसी भी भारतीयकी सम्पत्ति और मोव्यवाओंकी इतके तिना कोई कह नहीं कि उनका प्रयानन पूरीपीन उपनिवेशियोंके हित्तमें काम आना

है। हम है--- "एशियाई चंदवी विक-भर कोसी जानेके किय। हम है--- मर्गा जवानवाके विनाने कुसी। हम है-- "सच्चे पून जो समाजके कनेजेको ही कामें जा रहे हैं। इस है-- "परीप्रजीवी अर्थ-वर्षर एशियाई। हम "चावछ बाकर जीनेवाके और नाकतक बुदाइपॉने भरे हुए" हैं। वानुनकी पुस्तकीमें भारतीयोंका वर्षन "एशियाकी बादिवासी और वर्ष-वर्षर कातियों"के लीन कहरूर किया यथा है जब कि तथ बात यह है कि प्रजिन आफिकार्ने मादिवानी वंधका धामद एक भी भारतीय न होता। ममयके संतास दक्तिण भाषिकामें उनने ही बैकार होंने जितने नि सुद बहाके सक निवाती। प्रिटोरियाके व्यापार्य-र्नपका स्वयंत्र है कि हवारा "पर्म हमें सब रिजवॉको

कारमा-रहित और ईनाइबोको स्वामाधिक पिकार मानना मिलाता है। उनीके कवनानुसाद । वधिय आरिकांका नारा नवाज इन सीवाँकी गर्न्स आश्रमी और अनैतिक आचारने उत्पन्न सत्तरमें पढ़ पता है।" फिर भी सच बान पर है कि बांधन बायिकाके भारतीशींन पूर्व रोपका विकार एक म्पन्ति भी नहीं हुआ। और प्रिशेरियांके बाउटर बीक्ता तथान 🕻 🕏 निम्तरन वर्षके भारतीय निम्तरन वर्षक योरॉक्स स्रोधा अविक अच्छी

हारह, अधिक अच्छी नवानीमें और नवाईना अधिक समान करके राजे

कोमोंमें से एक वा विविद्य स्थमित किसी-न-किसी समयपर संस्थमक रोगीके वस्पतासमें खेहैं तब मास्तीय वहाँ एक मी नहीं यहां वक्षिण आफ्रिकाके अविकटर हिस्सोंमें अवतक इमारे पास अपने माधिकों हे प्राप्त परवाने न हों हम ९ वजे रातके बाद अपने वरों हे बाहर नहीं निकक सकते। हाँ सेमन कोगोंकी योग्यक पहननेवाले मारतीसोंको अपवाद जरूर माना चाता है। होटलॉके दरनाने हमारे किए बन्द रखे काते हैं। इस जिला छेड़छाड़ सहे दामपाड़ियोंका उपयोग नहीं कर सकते। नोड़ागाड़ियों तो हमारे किए हैं ही नहीं। ट्राल्यनासमें बार्वर्टन जीर प्रियो-रिसाके बीच और चन जोड़ानियवर्ग तथा चार्स्यटाउनक बीच रेक-सम्बन्ध नहीं या तब नहीं भी भारतीयोंको बोहागाबीके बन्दर बैठने नहीं दिया वाता वा। अब भी नहीं बैठने दिमा वाता। उन्हें मादीवानके पास बैटनेके किए बाम्य किया जाता या जो जब भी होता है। ट्रान्सवाकर्में बहुँ ठंड बहुद कड़ी पहती हैं यह अनुभव और करोटीका होता है। इसमें की अपसान घरा है थो तो है हो। योहायाहीपर बहुद कस्मी अभी बासाएं करनी पहती हैं और निर्देशक संविक्षणर एवारियोंने किए ठहरनेके स्वाग और भोजगका प्रवन्त किया बाता है। इस मीजिकोंने किया भारतीयको टब्र्रनेकी कमड् नड्डी मिलती न मोजनकी मेजपर डी जनड की जाती है। ज्याचारे ज्याचा इतना होता है कि वह रसोईवरके पीडेरो मोजन करीर से और अपने किए भीता जच्छा प्रवन्त कर सके करे। मारतीयोंको को अवर्णनीय कप्ट सङ्गो पहले हैं छनके उदाहरण सैकड़ोंकी र्चन्यामें दिवे था सकते हैं। सार्ववनिक स्नानवर माराधियोंके किए नहीं चन्यान पर ना पर्यस्त है। सात्रवातक स्तात्रवर भारतातिक तिस्त पृष्ट् है। हार्स क्लूमोर्स भारतीय पर्यात्ती नहीं हो स्वयं, परे तेराक कोनतिक एक पत्रवार पद्देने एक भारतीय विद्यातीन वर्षन हार्स स्कूलमें प्रवेशके किए नवीं भी। उपकी नवीं नामंत्रूर कर भी गई। अत्वर्धक एक कोन्ये भी के बेक्समें पर्यातीयोकि निवार निकल्क सुत्ती नहीं हैं। नेटाकर एक कोन्ये भी के बेक्समें एक भारतीय निवार-स्कूल-विज्ञकों कोन्योंकि यह गिर्जावरों बरेड दिया पया था। नेटालकी सरकार एक "मुक्ती-संत्रभापरिषय" करनेकी व्यापुक है। बतने सरकारी तीरपर परिपदको यह नाम दिया है। परिवरका प्रवोजन तारे बधिय जाकिकामें भारतीयों-सम्बन्धी कानूनोंको एक क्य देना जीर माराजिकी बोरसे विदिध सरकारकी बढ़कियोंका नेपका क्यसे मकाबका द समूने पंत्री नाइतन

करता है। यह है बाम भानता दक्षिण साध्यिकामें पाध्यीनोके विकास

कम्मता पीर्तृगीन प्रदेश इतके सपनाय है। वही पाध्यीमोका बादर किम

जाता है और उन्हें सामारम बनताये बामा कोई विदेश करूट नहीं है।

बाप नामानीयें करनता कर सकते हैं कि किसी विक्र आधारीय के कर हैं

वेसमें पहला कितत कित होगा। सरकतों मुझे यो पत्ता विकास है कि

जयर हमारे सम्बन्ध सक्षित होगा। सरकतों मुझे यो पत्ता विकास है कि

जयर हमारे सम्बन्ध सक्षित होगा। सरकतों मुझे यो पत्ता विकास है कि

जयर हमारे सम्बन्ध सक्षित होगा। सरकतों मुझे यो पत्ता विकास हम्म हम्म न

करने बीर स्थासाड़ीके पहले संके विकास हमी विद्यालया स्थास मानुस्त न

करने बीर स्थासाड़ीक पहले संके हमा किसी विद्यालया पहले पहले

वायेगा विसमें काफिरोंको मेबूंकी तरह बाँव दिया जाता है। तवायि इस वाहते हैं कि इसारे वह बोक इस तकसीएके सेकोंमें बामें — मृत्ते सिर्फ यह देवने और समझनेके लिए हो क्यों म हो कि उनके स्वसाई की साथ नार्य में मार्ग में हो कि उनके स्वसाई की साथ नार्य में मार्ग में हो कि उनके हमार्ग के स्वसाई की साथ कि तार्य में कि इस उनका पूर्ण पुरा एवंदी स्वामत करके इस किंट नार्य में का बहुत हमारे कर कि समस्य करके इस किंट नार्य में का साथ के साथ हमार्ग तो हमार्ग दिना प्रदेश हो साथ करका इस साथ हमार्ग करका पूर्ण स्वामति करके हमार्ग ह

क्बेंके किओसे एकार दिया बायेना और एक टीमके किओमें बैठा दिना

विनानी एकमान महत्त्वाकांका वाली वार्यवनेके किए अमुक संस्थानें पहुं इक्टरें कर केने और फिर आकर्त क्या नगास्त्वार्थ सोकत दिवा देनेके हैं। पहुनें आवार है कि देवाई एकस्टिंग स्थान मह है कि देवाई केने स्थान करात है कि देवाई एकस्टिंग स्थान मह है कि विनान होनेकि स्थानकों नार्य या वे दिवाई है। वहीं पीन-विचारकर करात एकस्वें। वरस्तु विकार नार्यकर कहा कि वास्त्वार पाय कर नह है कि मार्योगोंकों सम्बाद्ध पायनकों करात कराते दिवाक वार्य। वरिक पहुँ कि मार्योगोंकों सम्बाद्ध पायनकों करात कराते दिवाक वार्य। वरिक पहुँ काफिरीक स्थानकां करात था वार्य। वर्षक काफिरीक स्थानकां करात कि पायन वार्योक प्रमोगें पह करात कि प्रमान वार्योक प्रमोगें के स्थान काफिरीकर प्रमान काफिरीकर पायन विवार काफिरीकर क

संबर्ध इतना विषय है कि इमारी सारी यक्षित विरोक्त हो कर्च हो रही है। उसन अपने जन्दर मुकार करनेके किए हमारे पास बहुत कम सनित वर्षती है। अब में पास्य-विदोविक ककर जाएको जनाओं कि किस उपह विभिन्न

राज्योंनी सरकारोंने "बिटिस भारतीयोंका रहता असम्भव कर देनके किए" वन-सामारकके साथ गठ-बन्दन कर रखा है। नेटाल एक विधाक स्वरासित बिटिय जानिका है। वहाँ मतवातामों द्वारा निर्वाचित ३७ नवस्मोंकी एक विवानसभा और गवर्गर ब्राप्त नामजद १२ सदस्योंकी एक विवानपरिवद है। नवर्नर रामानीके प्रतिनिधिकी हैंसियवसे इंग्लैंग्डसे बावा है। गुरोगीमॉकी नावादी ५ • देशी या बुक् लोगोंकी ४ • और मारतीयोंकी ५१ है। भारतीयोंको कार्नमें आविक महायना बेनेका निरुवय १८६ में किया गया था अब कि नेटाल-विधानसभाके एक सबस्यके धर्म्योमें "उपनिवेशकी बस्रति और समाग उपका बस्तित्व ही दोबोदोत ना" और बब बुस कोगोंको काम करनमें भति आलसी पा निया नया था। जब नैटामके मुख्य उद्योग बौर मारे ज्यतिबेद्धरी सचाई पूरी सरह भारतीय मजदूरों पर अवस्थित है। भारतीयोंने नेटानको "बिधन नाफिनाका उधान" नना बिमा है। एक अन्य प्रमुत्त नेटालीके धार्मीर्मे "भारतीयॅकि सायमतसे समृद्धि बाई, माथ बढ़ ममें लोग सस्ती चीमें पैदा करने या न-पूछ मादपर बेचनेने संतुष्ट नहीं एडन रूप ।" ५१ - मारनीयोंने से ६ वे हैं बिन्होंने सचने पिर मिटनी नवधि बाट सी है और जो अब मजबूरी बामबानी फेरीबासरे, फन वेचनेवालों या छोटे-डोटे पुकानदारोंके निम-निम पंत्रोंने सबे है। कुछ कोवेनि वर्धिस्वतियोक्ति विराधेन होते हुए भी अपनी मिहनवले पढ़-नित्व कर विश्वक पुत्राविषे और मुसी बनवकी योगपता प्राप्त कर नी है। १६, प्रस समय अपने विर्तिनटको अवधि नाट रहे 🕻 और सपत्रप ५ 📉 दूरानदार मा म्यापारी या उनके महायक हैं को पहले-गहल अपने वर्षांते वहीं आये ने। में क्षेण बचाई प्राप्तके एतेन्द्रियों है और इनमें अधिकार जेनन मुनकमान है। दूप पार्टी लोग से हैं। उनमें स्वेनके स्वत्रकों स्थिप उन्हेंजनीय है। उनमें क्याना दों। तर लिया है लिया में जम्मानास्य होयी। उनके स्थापन कोई स्थीप स्थित निमुद्ध हुए दिना जोई मीटना वर्डनके उनस्यक्ता

र यह बन्नेय हर देवदा यह वेदिया है।

तुन्द्र्य सोबी बाब्यव

कोई पारती जनका नावर-सत्कार पाने विना नहीं रहता। ऐसे ये उपनन भी बताने नानेसे मुख्त नहीं है। वे भी 'कुकी' ही है। यो समनन नहानों और नही-नहीं कमीन-नावतानीर माकिक हैं। परन्तु ये 'कुकी नहान माफिक' है, और रनके नहानोंको 'कुकी-नहान' कहा नाता है।

4

बाए देखें हुए एक प्राच्यान हुए दूवरे मान्त्रीयके बारेमें जो वाजाप्त दिक्कस्था एकता है वर्क मकाना हुए विम्नमें तीन पूम्म प्रान्ती की पाप विकास है। बरूर बानई प्रान्ति ते उत्तरी ही बहुते लंकामें मान्त्रीय देखा तो उत्तरी है। बरूर पुर्वेक स्वेताहरू नहीं प्रेण तो उत्तरीय हुए कार्या पूर्वेक स्वेताहरू निक्क प्रमान और करावे कर दी है। बालवर्ष में बे अपने मस्य प्रदेशीय क्रम तिमान्यवाली गान्त्रीके हिट्टीके विकास मान्त्रियों से अपने मस्य प्रदेशीय क्रम तिमान्यवाली गान्त्रीके क्रम तिमान्यवाली गान्त्रियों कार्या प्राप्ति के प्रदेश करावे प्रदेश करावे प्रदेश विकास मान्त्रियों मान्त्रीय क्षा प्राप्ति है। क्षा प्रदेश कराविनाविक विकास मान्त्रियों मान्त्री है। क्षा प्रदेश प्राप्ति कि मान्त्रीय क्षा क्षा प्रदेश प्राप्ति के व्यवस्था क्षेत्र क्षा प्रदेश प्राप्ति के व्यवस्था क्षेत्र क्षा प्रदेश प्राप्ति के स्वाप्ति कार्या क्षा के मान्त्रीय क्षा कि योग्य नहीं है विकास हक स्वाप्ति के प्रदेश कराविकी मान्त्री कार्या कि सुर्विनाव कराविकी मान्त्रीय क्षा क्षित्र स्वाप्ति के व्यवस्था क्षेत्र क्षेत्र स्वाप्ति कराविकारको क्षा क्षा कराविकी क्षा वा कि सुर्विनाव कराविकी मान्त्र वा कि सुर्वेकी कराविकी मान्त्र वा कि सुर्विनाव कराविकी मान्त्र वा कि सुर्वेकी कराविकी मान्त्र वा कि सुर्वेकी कराविकी मान्त्र वा कि सुर्विनाव कराविकी मान्त्र वा कि सुर्विनाव कराविकी मान्त्र वा कि सुर्वेकी कराविकी मान्त्र वा कि सुर्विनाव कराविकी मान्त्र वा कि सुर्वेकी कराविकी मान्त्र वा कि सुर्विनाव कराविकी मान्त्र वा कि सुर्वेकी कर

च्या परिवेक्त पंचावकेक नयपात नहीं हैं। किर भी विशेवकका घण्या जहेंचा माफीयिक पंचावकेक नयपात नहीं हैं। किर भी विशेवकका घण्या जहेंचा माफीयिक सहाविकारको राम कारणते कीमाना नहीं जा कि वे योग्य नहीं है परिव पर्वाववक्त कीमाना नहीं जा कि वे योग्य नहीं है परिव पर्याववक्त कीमाना कारणते माफीयिक साथ पर्वाववक्त कीमाना के प्याववक्त कीमाना के प्याववक्त कीमाना के प्याववक्त कीमाना कीमाना कीमाना पर्वाववक्त कीमाना की

र पत्नी स्वात और केन्द्रण प्रदेश किनों पिक्षियों करा करा था। य पत्नी प्रिक्षियों महोक्तिकारने वादये कारण-सन्त्रोंने नाम एक प्रार्थन नाम वेबा वा क्लिने सीन की एने वी कि इक्षिण मानिकारनार्ज सरक्षीयोंने विकासने पूर की कारों! नहीं किया न वे राजनीतिक सत्ता प्राप्त करनेकी कच्छा हो करते है। वे सब बावें *नैदास मन्त्री*ने स्वीकार की हैं। वह नेटाल-गरकारका मुख पत्र है। समधक सकरगोंके किए बाप मेरी भारतमें प्रकाशित छोटी-सी पुस्तिका देश हो। हमने स्वातिक संसदको प्रार्थशापक देकर बतामा वा कि भारतीय प्राक्षितिशिक संस्थाओंसे अपरिक्ति गहीं हैं। परन्तु इस अपने सहस्यमें अधफल रहे । इसपर इमने तत्काधीन जपनिवेध-मन्त्री लाई रिपनको प्रार्थना पत्र भेशा। यो वर्षको सिन्धा-पदीके बाब इस वर्ष १८९४का विवेसक मापस से सिमा गया। वसके वदसेमें एक वृत्तरा निवेदक तैयार कर दिया गया है। यह पहलेके विवेयकता जितना नुरा तो नहीं है फिर भी काफी बुरा है। इसमें कहा गया है कि "बिन देशोंमें संस्थीय मताविकारपर आवारित प्रावितिविक संस्थायें अवश्रक नहीं है चनके निवासियों मा धनकी पुरुष चाकाकै बंधजीको किसी मतवाता-मुत्रीमें तबतक स्नामिक नहीं किया जागेगा वबतक कि उन्होंने धपरिपद सबनेरसे इस कानूनके अमझसे छून प्राप्त न कर नी हो। इसके अमझसे उन नोभोंको मी वरी रना नया है जिनके नाम पहुसेसे ही बानिया वीरपर मतदाता-पूत्रीमें सामिल हैं। यह विवेषक विवाससभामें वेस किया वालेके पहले की चेम्बरतेनके पात मंत्र के किए भेषा गया था। वो कायजात प्रकाशित हुए 🖁 बनसे की चेम्बरसेनका मत यह पिकनाई पहता है कि मास्त्रमें संस्थीय मधापिकाश्यर जावारित वृत्रावमुक्तः प्रावितिषिक संस्वार्थं नहीं हैं। चूँकि नेटाल संसदके सामने हम सरक नहीं हुए इसकिए की चेम्बरलेनके इन विचारोंका अधिकतम आदर करते हुए हमने उन्हें एक स्मरनपन भैजकर बताबा कि विवेधकता मधा पूरा करनेके निए, जबाँत कानुनी सौरपर बात की बाये को भारतमें पंचरीन महाविकारपर नावारित चुनावनुकक प्रातिनिकिक संस्थानीका बस्तित्व रहा है और कर भी है। ऐना मह करून सहस्तने स्पत्त काशतल पड़ा हूं भार अब भार हूं। एस भन्न कम्बन धारणन ध्यस्त निया है सही माने नेशाकने मानावारचींचा है और यही हिस्टेक्टरे प्रकृषे नहां देनवाले छत्त्यों और नेटालके एक गूयोध्य ध्यावदास्त्रीका भी है। हम यहीने वहेंचने स्थायपातियोंकी राग काननेत्री बहुत उत्तरक हैं। ऐसा निवेषक जेंद्र करनेका संघा पित्र जी मेरी वट भी मेरी फालेक लेकना और स्व तरह माराजीय जनावको तैन करना मान है। नेटाल विवासकानेक

१ 'वरी प्रस्तिका' ।

८४ छन्तै गांधी बाह्मव सनेक सहस्तोंका मी लगाल है कि विशेषकते मारतीय समाय अनेता मुक्तमे बाजीमें पीट जायेवा और उत्तमें शोम पैदा हो जावेगा। वे सहस्त्र बत्तवा मारतीयोंकि निरोधी है। सरकारी मुख्यमका कथन सारांसत यह है दूस स्वीकार कर सकते

हुँ हो यही क्षियेयक दूसरा कोई नहीं। जगा हम सफक हो गये अर्कात् जगार प्राराजको ऐसा देश कोशित कर दिया क्या जिससे विकेशको स्निकारित संस्वार्य नहीं हैं हो जनका हो हैं। जगा नहीं हो भी हम तुल कोई जारे इस दूसरे विकेशकला प्रदेश कोशें — हम सम्मादित्यक सोगराताका साग

बढ़ा बैंबे फिला-सम्बन्धी कसीटी चारी कर बेंबे। अपर ऐसे विग्रेयकपर भापति की कामें दो भी इमें बरनेकी बकरत नहीं नवींकि बरनेका कारन ही कहा है? हम बानते हैं कि मारतीय कभी भी इमपर अवस नहीं हों सकते। जगर मेरे पास समय होता तो मैं ठीक वही सक्य आपके सामने पेस कर वेदा। में इनसे बहुत ज्यादा ओरदार है। जिनको निसेध दिस्पर्सी हो मैं उन्हें हुए मुख्यकारों देख सकते हैं। तो इस प्रकार इस नेटाकके पास्टर [धस्य-चिकित्सक] के चातक चाक्ते चीरे-धाड़े चानेके सिए उपमुश्त पात्र माने नमें हैं। फर्क सिर्फ इतना ही है कि वेश्तिका पास्टर काम पहुँचानेके किए ऐसा करता ना। इमारा नेटासका पास्टर शब इराधडके कारन कीर-श्रहरों मनोरंजनके किए, ऐसा करता है। यह स्मरक्पण इस समन थी चेम्बरलेनके विचासकीत है। मारतको स्थिति नेटाकको स्थितिये विकक्तक भिन्न है। इस बातपर मैं विदना चोर दूँ च्हना ही बोड़ा होना। मास्त्रमें बड़े-बड़े कोमेंने मुझसे बह प्रका पूजा है "बापको मारतमें ही मताबिकार कही प्राप्त है? अपर पूज है भी ती वह अवस निष्पा है। फिर साप नेटास्पें मताबिकार वर्गो बाहते 🕻 ? हमारा नाम जवान वह है कि नेटासमें इस मताविकार मौतते नहीं मरोतीय हुने यन निकारचे वंत्रिय करना चाहते हैं, जितका हुम उपमीन कर प्रो 🕻। इससे बहुत बड़ा फर्क हो बाता 🕻। मताबिकार क्षीलनेका मतलब

होपा हमारी गिरायट। माराज येथी कोई बात नहीं है। माराज आतिपिक संस्थानीको बीरे-बीरे परस्तु निषयमुर्वक स्थापक बनाया जा रहा है। नेटानमें ऐती पंत्रामिक हार बेस्टरीयर हमारे किए बन्द किने जा रहे हैं। किए माराज के स्वत्र कार कराई माराज भारतीकों के कि नहीं स्वाधिकार क्षाप्त है जिसका उस्त्रीन कर्यों हैं। नेटानमें ऐसा नहीं है। नेटाक्सें जो बात एकके किए इन्ट होती है नहीं बात उन्हीं परिस्थितियों में दूसरेके क्रिए इष्ट नहीं मानी काती। इसके क्रकावा मताविकार क्रीनना कोई राजनीतिक कार्रवाई मुझी केवस ब्यापारिक नीवि है जो कि फिट भारतीयोकि आवमतको रोक्नेके किए अंबीकार की गई है। बिटिस प्रका होतेके मार्चे उन्हें वही विशेषाविकार मॉयनेका इक होना चाहिए, जो किसी भी बिटिश राज्य या अपनिवेशमें दूसरे बिटिश प्रजावनोंको प्राप्त हैं। विस तुरह इंग्लैंग्ड जानेवाने किसी भी भारतीयका बहुकी संस्वानोंका लंदेनोंके कराबर ही पूरान्यूरा काम चठानेका अधिकार होता है ठीक वैता ही श्रीकार बाम ब्रिटिस खेत्रोंमें भी भारतीयोंको होता चाहिए। तबापि सच बात तो यह है कि मास्त्रीय मर्तिक सूरोतीय मर्तिक निगक बानेका कोई बर है ही नहीं। बूरोतीय तो वर्य-मेरके कामून बाहते है। मताभिकार सम्बन्धी वर्षत्व कार्नुत दो सिर्फ बँन्या पकड़ कर पहुँचा पकड़नेकी तैयाएँ मान है। वे भारतीयोंको स्मृतिस्थित अधिकारीने भी विचित करनेका विवार कर रहे हैं। महात्पायवारी ने इसी जास्त्रका एक वस्त्रक्य भी दिया वा। बह बन्तम्य पहुंचा मदाविकार विवेयक वेस होनेपर एक सदस्यके इस मुद्राबके चतरमें दिया गया वा कि भारतीमोंको स्यूनिनियल सराधिकारसे भी वेचित कर दिया जाता चाहिए। एक बन्य संदस्यने सुसाया वा कि व्यवस्त हम भारतीयोके प्रत्नका निवटारा करते हैं सबतक स्पनिवेशका और सरकारी शौकरियोंका बरवाबा मारतीयोंके किये वन्द रक्षा वाये। केय संपतिवेदाने मी जड़ीकी सरकार ठीक नेटायकी जैसी ही है

रमस्या भारत

भारतीयोंनी हाक्य बस्तर होती जा रही है। हाक्से ही केरकी संवक्ते एक विकेशक मंत्रूर क्रिया है। उन्नते देंदर कम्पन म्यूनियिनियोंको कविकार विधा नया है कि कह आद्योपीको पैदल प्रशिक्तेंतर चलतेते रोक्ने और विशेष स्थानीमें खुलेके क्रिय साम्य करनेके कानियम बना सक्ती है। ये स्वान भाषात्वा स्वानस्थारि स्वस्त है। है। व्यापारकी पृष्टिमें तो बेचार है। पूक्षिक ताबका उपनिषेध है स्वतिष्ठ दीपे विदिध संस्वारके जातनाथीन है। बहु गाँउमेरी बीर एसारे वस्तियोंके शम्बन्वमें ऐसे नियम बनाये गये हैं कि उन बस्तियोंचें कीई माखीब न दो जमीन बरीद सकता है न हातिल कर सकता है हालाँकि वती देखकी मेलगाँव नामक वस्तीमें भारतीय २ पाँडकी जायदावके मातिक है। द्रान्तनात एक क्य यमराज्य है। वह जैमिसनके हमसेना न्यापारी और बस्तू-सन्दार माछिक हैं। सेप फेरीबाले इन्हिंसे (बेटर) और परेलू गौकर है। विदिश धरकार और दाल्सवास शरकारते बीच एक सममीता है। उसके धारा "विधी मोलेंकि बनावा एवं व्यक्तियोंके" स्थापारिक तवा साम्पत्तिक समिकार सुरक्षित हैं। उसके मातहत १८८५ तक सारतीय स्मतन्त्रतापुर्वक व्यापार भी कच्छे छहै। परन्तु क्रत वर्ष विदिध संस्कारके साम कुछ पत्र-स्वतहार करनेके बाद ट्रान्सवाबकी संसदने एक कानून बना किया। प्रसंधे मारतीयींका कुछ निविष्ट बस्तियोंको छोड़कर धेव सब वगह

4

व्यापार करने और बमीन-जायदाव सरीवनेका अविकार किन नवा। साब ही उस प्रथमिनेसमें वसनेने इरक्षक इर जारतीयपर तीन पीडका पंत्रीकरण (धिनरदेशन) धूनक भी कार दिया गया। इस दिशवमें कानी किया-मधी हुई। उसके फकरवरप प्रस्मको पंचके हावों सींप दिया नवा। इसके सारे इतिहासके छिए मुझे फिर जिजासुकाँसे "हरी पुस्तिका" पढ़नेका बनुरोब करना होता। पंचका पैसका वास्तविक वृद्धिसे भारतीयोके विद्या रहा। इसक्यि परम माननीय उपनिवेद्य-मन्त्रीके पास एक प्रावेतापत्र भेजा नया । परिचाम मह है कि पंचका फैलका मंजर कर किया पता है हाकांकि भारतीय विरागतका न्यात भी पूरा-पूरा जान्य किया जमा है। ट्रान्डमाकर्मे परवानोंकी प्रयाची बड़े कुर स्पर्ने प्रयक्ति है। बक्तिक बाफिकाके बूसरे हिस्सोंने दो पहले और पूसरे रचेके मात्रियोकी स्थिति नसक्त बनानेवाले रेकनेके कर्मभारी ही है किन्तु ट्रान्सवाकर्में कीन इससे एक करम और बागे बढ़ वर्म है। वहाँ कानुम ही भारतीयोंको पहने और इसरे वर्नेने याचा करनेसे वर्षित करता है। उन्हें उनकी हैसिमतका समास किने निना बक्तिय वासिकाके बादिवासियोंके साथ एक ही विक्रोंमें बाँव दिवा जाता है। सोनेकी बार्नोंके कानुनोंके अनुसार भारतीयोंका देवी सोना करीदना अपराच करार दिया नया है। और यदि ट्रान्सनाम सरकारको स्थेन्कानुतार नमने दिश नया हो वह मारगीवॅकि साव केवल माल-मस्वावका-ता स्ववहार करती हुई वर्ने

रीनिक रीवाएँ करनेके किए भी बाध्य कर देवी। बात स्पष्टत बानदी 🕻 क्योंकि भैसा कि सम्बन बाइन्तने कहा है "हो सकता है अब हम ब्रिटिक

र सर १८८४ च अपन्यक्रीया ।

पासीयोंकी देवाको ट्राम्बाककी संबोतीमें विश्व मेताकोंकी संवीतोंकर बहुने बात देवी। बीक्स कारिकाको हुम्मरे बन पास्तान वार्रिक कि मेरिका का स्वार्त कर पास्तान वार्रिक कि मेरिका के सिंद स्वार्त मेरिका के सिंद के कि मारिका के हुम्मरे के मारिका के मारिका के कारिका के मारिका के मारिका के कारिका के स्वार्त कर दिया है।" वह भारतीयोंको कारिका के स्वार्त कर दिया है।" वह भारतीयोंको के के कि मारिका के स्वार्त कर वार्त के सिंद के सिं

ऐसी है बहुत संसेपमें दक्षिण आफ्रिकाके विभिन्न राज्योंमें रहनेवाके भारतीयोंकी दिवति। उपर्युक्त तमाम राज्योंमें विश्व भारतीयोंकि इतना हेय

फिया भारता है जनको हाँ नेटालसे हिन्छ है भीर हुए, बयरि देवायोजा तेने बहुत वरिक परक फिया मारत है और उपका बहुत जारर किया लाता है। इस पत्र देव-लाव्यका एक्या जारण दिवस सामित्रकों प्रमुख पत्र केन ट्राइन्टके एवं एतपके एक्योंने जब कि एतक एत्याएक दिवस आफिसी पत्रकारीके पिरोजित हुए एट केमर के यह है विश्व चौक्ती मानतक भारी प्रमुता पेता होती जा रही है, यह है इस स्वापारियोजी स्विति। और इनकी स्वितिका चायक करते हैं। इसके स्वापारियोजी स्विति। और इनकी स्वितिक चायक करते हैं। इसके स्वापारियोजी स्वति । बीर इनकी स्वितिक चयक करते हैं। इसके स्वापारियोजी स्वति । बीर इनकी स्वीतिक स्वाप्त हमा प्रसिद्ध नाम्यकते इसके सुरूप देवेश प्रथम किया है। जो प्रथम नार्य किया स्वाप्त हमा स्वाप्त स्वाप्त है। उसी पत्र नार्य है कि बब केम हम को होर्डिस स्वाप्तिक सफलताके

यह कारण ही काजी है कि वे प्रवक्त बातिके विषय इतने तकक हुए हैं। जगर यह १८८९ में खदी या जबकि यह किवा गया या तो जान दूना ताहें है क्योंकि बीटण कार्यिकाके दिवानगोकने समाधीक प्राच्योंक प्रवा लॉकि स्वनन्दरागर प्रतिवंध तथातवाके कानून यास करोगें चतुर्मुखी प्रवृति दिवाई है।

करण हुमारे वेशवासी इनके साथ देशी (अर्थात् वांतान नामिकाके) नोगों बैता ध्यवहार करना चाहते हैं हो उनपर झर्मनी जाती है। भारतीमोंको यस मानद्वानिकारी स्तरते उसत कर वेनेके किए दी स्वयं

सन्दर्भ गांदी शहरव 4

स्वात और परिवर्गी इतिवाके स्वर्व-बन्धेयकींका पुबकोशको [स्रोतेने भरा हुमा कर्म्पित देख] है। वहाँ ५, ते अविक भारतीय है। उनमें में अनेक स्यापारी और बल्द-मन्दार माकिक हैं। धेव छेरीबाले हुन्रिये (बेटर) और बरेन गाँवर है। बिटिय सरकार और ट्रान्सवात सरकारके बीच एक समजीता है। प्रसके हारा विशी मोदंकि बकावा सब व्यक्तिपंकि" व्यापारिक वना साम्पत्तिक विकार सुर्राजित हैं। सबके मातहत १८८५ तक कारतीय स्वतन्त्रतापूर्वक स्थापार भी अरते रहे। परन्तु उस वर्ष विदिश्व सरकारक धान कुछ पत्र-स्पनहार करनेके बाद द्वान्धवालकी संसदने एक कानून बता किया। उसमे मारतीयाँका कुछ निर्दिष्ट बस्तियोंको छोड़कर येव सब अवह व्यापार करने और जमीत-आध्याद सरीवनेका समिकार किन गवा। साम ही तम प्रपतिबेक्क्में बस्तरके इच्छक हर भारतीयपर तीन पौडका पंत्रीकरण (रिनस्ट्रेसम्) सन्क भी खाद दिया गया। इस निषयमें कम्बी किसा-पड़ी हुई : उनके फलस्वकम प्रत्नको पंचके हावाँ सीप दिमा नया। इसके सारे इतिहासके किए भूझे फिर जिजासुमीसे "हरी पुरितका" पहनेका जनुरीय करना होना। पंचका फैतमा नास्तविक वृष्टिते नास्तीयोके विरय रहा। व्वक्रिय परम माननीम उपनिवेश-मन्त्रीके पास एक प्रार्थनापन मेला गरा। परिचान यह है कि पंचका दैसका संबुद कर किया गया है हालांकि भारतीन विकारतका स्याव भी वरा-पूरा मास्व किया नया है। दान्सवासमें परवानोंकी प्रवाकी बड़े कुट क्यों प्रवस्ति है। विश्व माफिकाके दूधरे हिएगों तो पहले और दूधरे वर्षेके माथियोकी स्थिति मध्या वनानेवाओं रेक्येके कुमैचारी हो है किन्तु ट्रास्ट्वाकर्में बोग इससे एक क्यम और बावे वह परे है। वहाँ कालन ही भारतीयोंको पहले और इसरे वर्जेमें बावा करतेसे वर्षित करता है। परहें प्रवक्ती दैशियतका समास किये विवा बक्षिण वाफिकाके मादिवासियों के साथ एक हो विष्ये में बाँव दिया बाता है। सोनेकी बागेंकि कानुनंकि बनुसार मारातीयोंका देशों सोना करीशना मपराव करार दिना गमा है। बार यदि दाल्यकास चरकारको स्वेन्कानुसार पत्नने दिवा यदा हो नह मास्तीवेकि साथ केवल माज-मस्वादका-सा व्यवहार कस्त्री हुई स्वर्षे सैनिक सेवार करनेके किए भी बाम्य कर देनी। बात स्वयन्तः वातवी है रपॉकि भैसा कि कर्मन व्यवस्ताने कहा है "हो सक्या है अब इस ब्रिटिय

मार्टीयॉक्स देनाको नास्वामकी संगीनींसे विशिष्य मेनाकोंकी संपीनोंदर करेड़े बाते देखें।" दिखन काफिनाके हुगरे इन पल्यान मार्रेस की स्टेन्स दो मार्टीयॉकि प्रति हेन दिलानोंसे सेय समीको मार्ग्य दे से हैं। उनके स्टेन्स पक्षेत्र करींसे कहा बारे तो उसने "विशिष्टा मार्टीयॉक्से काफिरीक वर्षमें रवकर बनका रहना है। जनम्ब कर दिया है।" वह मार्टीयॉक्से न नेवक ब्यापार तथा नहीं करने और वर्षान-मार्यास बर्गाशनका जनिकार देनेने इनकार कर्या है बीक्स कियोग जयमान्त्रनक परिस्थितियोंने परे वह रहनेस अधिकार भी नहीं देता।

पधी है बहुठ संग्रेस्स सिल जारिकाके विभिन्न एउमीसे रहनेवाले जारतीयोंकी स्थिति। उरर्युक्त तमाम एउमीसे दिन भारतीयोंते दतना हैव दिया जाता है उनको हो नेटाकमे हिन्दें ६ और दूर, बर्बान् बेकायोजा वर्ते बहुठ महिक पानत किया बाता है और उनका बहुठ जादर किया जाता है। इस तम होय-जावका गहना कारण सीम बाक्तिको प्रमुख पद केन साम्मके यत जायके स्थानीयें जब कि उनके सामायक बर्जिय आरिकी पत्रकारीके सिरोसिंक हुर सेंट केन्द्रर से यह है

तिल बीजते माजतक नारी धनुता पैदा होती जा रही है, वह है इस स्थानियोंकी दिवति। और इनकी दिवतिका स्थान करके ही इनके स्थानारियोंकी दिवति। बार्च नितिक्विति सिन्द तरकारके मान्यमके एत्तें एह उत्तर देवेला अध्यक दिवा है को अस्त्रक कर्मा बृद्ध क्यादा सन्याय बंता बीजता है। उसी पत्रने बावे दिव्या है आस्तीयेंकि प्रति स्थाया दतना स्पन्न है कि जब बेजत इन सोरोंकी स्थानारिक तक्कताके स्थान हवार देशकती हनके ताल देशी (जबीन, स्विक्त कार्यकारोंके स्थान हवार देशकती हनके ताल देशी (जबीन, स्विक्त कार्यकारोंके स्थान स्थाने स्थान स्थान क्यान है है तो उनगर धर्मनी साती है। सारतीयोंको जन बान्द्रानिकारी स्वरत्ते जमत कर देनेके स्थित हो स्थान हुए है।

सपर यह १८८ में नहीं या वर्षात्र यह निन्धा गया या तो जान हुना गरी है स्थोरित सीवन जानिकाके नियानसंत्रने तमानीके भारतीय प्रजा करींदी स्त्रपनशाद प्रतिषंत्र समानेवाने चानुन पात करनेयें चनुन्ती प्रति दिल्ली है। ८८ छन्पूर्मनांदीनाङ्ग्स

एक संस्था ननाई है ताकि इस अपने कब्टोंको इर करानेके किए जानस्वक कार्रवाई कर सकें। इमारा विक्यास है कि दुर्जावनाओंके एक बड़े अंसका कारण भारतमें धानेबाके भारतीयोक विध्यमें उधित बानका अमान है। इसकिए वहाँतक वन-सावारणका सम्बन्ध है, हम आवस्यक कामकारी देकर कौकमतका बिक्रित करनेका प्रमत्न करते हैं। कागुनी बाबा-निपेविक बारैसें इमने इंग्डेंडवासी बंडेबॉके घोकमतको और महकि सोकमतको उसके सामने बपनी स्थिति पेश करके प्रभावित करनेका प्रयत्न किया है। वैसा कि बाप भारते हैं इन्डेंडमें सम्बार और उदार दोनों दलौंने दिना नेदभावके हुमारा समर्थन किया है। कन्दन टाइन्टने इसारे पश्चमें बहुत सहानुनृतिके साब बाठ बद्रकेल प्रकाधित किये हैं। केवल इतनेसे ही हम दक्षिण बाकिकाके मरोतीमोंको नगरोंमें एक सीबी क्यार चठ वर्षे हैं और बढ़कि समाभारपर्शेकी म्मति बहुत-पूज बदस गई **है**। इमारी मौबोके बारैमें में स्वितिको बोड़ा बौर स्वष्ट कर हूँ। इस वातर्ते है कि कर-सामारकके हानों हमें को अपमान और तिरस्कार सहना पड़ता है वह ब्रिटिक सरकारके सीचे इस्त्रक्षेपसे पूर नहीं हो सकता। हुन उत्तरे पेंचे किसी इस्तबोपका बनुगोब करते मी नहीं। हम उन वार्तीको बनताकी नजरमें बाते हैं, ताकि तमाम समावकि स्थायबीक व्यक्ति और समाचारपण नपनी नापशन्तगी व्यक्त करके उनकी कठोउठाको नविकसे निवेक नटा वें मीर हो तके तो अन्तत करें निर्मुख कर वें। परन्तु हम ब्रिटिक सरकारणे बहु अनुरोब को निरुपय ही करते हैं कि ऐसी पुर्भावनाओंका कानुनमें उठा छ माना रोका पाने। सौर हुने बासा है कि हुनारा वह अनुरोक मार्च वहीं होना। हम विटिय सरकारसे यह प्रार्वेना जनस्य करते हैं कि प्राप्तिवेडक विवानगंडक इमारी स्वतन्वताको किसी भी क्यमें सीमित करनेके किए जो भी कानुस बनायें जनका निषेत्र किया वापे। इससे में वर्णिय प्रशापर बाता हैं। वह प्रशा यह है कि बिटिस सरकार

अपनियेशों और सहयोगी राज्योंको इस तरहकी कार्रवाहरोंने कहीतक हस्तक्षेप कर सकती है? बहीतक बुक्तवका तुम्बन्ध है बहीतक वो कोई प्रस्त है हैं।

वपने प्रति विरोवके इस स्वारको रोकनेके विध् हमने कोई-से पैमानेपर

१ केरक चारतीय स्त्रीसा

र देशिय क्या कर ।

नहीं क्योंकि नह बाजका उपनिवेध है और उसका शासन सक्तरके बरिये सीबे १ बार्जीनम स्टीट [बिटिश मन्त्राक्य] से होता है। मेटाल और सुमासा बन्तरीप (केप बाफ गुड होप) के समान वह स्वधासित या उत्तरवायी सासनगढा उपनिवेज नहीं है। मेटाल और सुभाषा अन्तरीपके वारैमें नटालके संविचान सविनियम (कास्टिट्युयन ऐस्ट) को साठवी उपमारामें व्यवस्या है कि यदि स्थानीय संसदके किसी अजिनियमको गर्दनरकी जनुमति माप्त हो जाये और इस तरह वह कानून वन जाये दो भी समाजी-संस्कार को वर्षके मन्दर कमी भी उसका निर्मेश कर सकती है। उपनिवेधीके स्तीवृत्त कानुनंकि निकास यह एक संरक्षत्र है। नवर्नरके नाम समाबीके निर्देशोंने अमुक विभेवक गिना दिये बये हैं अन्हें सभाजी-सरकारकी पूर्व-स्तीकृति भारत किसे विश्व प्रमुश्ति नहीं वे सक्ता। ऐसे विश्व कर्में मंग्लेक्टर करवरोंके विश्व प्राप्तिक हैं। में एक उदाहरण देनेकी बुण्दा करेगा। कपर बढ़ाने हुए प्रवासी कातृत संयोजन विश्व करेंगे पन्ति प्रदात कर दी है। परन्तु वह तमी अमधमें जा सकता है वयकि समाजी उसे स्वीप्रति दे हैं। बवतक चछे स्वीप्रति नहीं दी गई। इस तरह, भाग देखेंगे कि समावीका इस्तानेत यीना और स्वय्ट है। यह तो सब्य है कि विदिस्त सरकार वपनिवेस-विवाननक्वाकि कानुनॉर्ने हस्तानेत बहुत सन्दरासे करती है किर मी ऐसे स्वाहरण मौजून हैं वब कि बसने इससे कम करनी प्रसंगी-पर भी बृहताते काम केमेमें संकोच नहीं किया। जैसा कि काप चानते हैं पहला मताविकार विवेशक ऐसे ही कामध्य हत्त्वसेपसे रव हुआ था। इसके क्रमाना क्यतिनेस सर्वन ऐते इस्तज्ञेपके नारेमें करते रहते हैं। नीर इंग्लैंकमें स्वत्त की गई वहानुपूरिते तथा बुध महीने पूर्व जो पिटलप्यक भी केन्द्रर केनते मिका वा वसकी थी केन्द्ररतेनके सहानुमृतिपूर्व वत्तरते वीतन नाधि-वाके नाविकतर पर्दोने—कमसे कम नेटाकके पर्दोने सी ववस्य ही — वपना रक बदल दिया है। बद वे शोधने धने हैं कि प्रवासी-विधेनक सवा इसी प्रभाविक विकास विवेशकों की प्राप्तका कामाविकी अनुपति प्राप्त न होगी।
जानेक दुर्ग्यवाकका कामाविक है हमानेका मौजूद है हो। जहाँकत सार्वे की स्टेटनी बात है मैं दशना हो कह तकता है कि तक मिन-प्राप्तका नमातिकी प्रयोक कियों भी अपने किया आर्थ हार बल करना एक बरीयों पूर्व कार्य है। मौर ऐसी स्वितिनें मैदा तम विचार है उत्ते तफलताके ताब रोका वा ठक्ता है।

धन्त्रं यांची वात्त्व सम्बन्धे विकास साधिकाके सबसे साथे समाधारीस पावस क्रेसा है कि

कुमारी पुकार स्पर्वत होती। (अस्मिन्ही)

> *यहण्य मान् रेडियाः २०*-१-१८९६ भागे गरद, २७-९-१८९६

नहीं नुरोगेव कोन मार्टायों को नरवार कर बेनेके किए कोनोंकी समझाने बुतामें जुटे हुए हैं। ने मार्टाय कारीमार्गेक काये जानेने निवक हर ठाएको बोबोकन कर हो है। 'हत काने हुए वेदानाती और पित्र मार्टा करती चाहिए। इस बिक्त काफिकामें कारों कोरते किरे हुए है। असी हुए दैमा बच्चानी किरी कार्यके साम कार्यक्रमें किए मार्चमा करतेका विकास है। इस बच्चानी किरी कार्यके साम कार्यक्रमें किए मार्चमा करतेका विकास है। इस बच्चानी किरी कार्यके साम कार्यक्रमें कार्यक्रम करते होंगे अपने कार्यक्रम कार्यक्रम कार्यक्रम कार्यक्रम कार्यक्रम वृत्ता होनेके कार्यक हुन सीसिंग केन्स करता स्वास्त्र कार्यक्रम हमार्थ किरी दिवसात है। — सार्यों को बीर क्षिक कार्यक्रम मार्योग्न कार्य है। वो हसना समझा

(६) विकास विकासिक विकास स्थापन क्षेत्र तथा था।

४ पत्र फबुनजी सीरायमी ससेपारसाँकी

मारक्षयः स्री रेताग्रेक्ट सम्प्रीपक्राम देव दं चन्दाननी सम्पर्

मन्द्रगर १ १८५६'

प्रिय भी तनेवारला ⁹

में बापको इनते बला नहीं निज एका और न दक्षिण वाफिताके मुख्य लोगीके नाम ही जेज महा। मुते मार्रामा है कि बाप द्रशाकर मेरी इस सम्बन्धनों किए नुसे तान करेंगे। इसका कारम यह है कि मैं बचने पहले नामोंने बहुत मारत रहा है। यह पत्र में बादी राउँकी निरू रहा है।

में कन (परिवारने) पानको बाक्यायीन महानके निए रवाना हो रहा हूँ। बही एक पनवारेने ज्यादा प्रदेशी नाया नहीं करता। नगर में वहाँ पावल हुना हो। वर्षिन परिवारना नामेना और सामने एक महीनेके जन्मर बन्धें नीट सामेगा। बारने पहले खहानने नटानके निए रवाना हो बारोगा

री जारूँगा।
- नेरालो प्राप्त वार्त्रेने तात्र अगवारींते नातम्य होता है कि अभी बर्ज त्यार्थ वार्त्री है। और अपर त्यार्थ्य पूर्व ताह्य तिमाता है वो किंद्र बहुर अगवे बीठ बान करतेवाले वा व्यक्तियोग प्यान तथा तेनके नित्र नाही

१ मून वर्ष १ ००-१०१६ गारंग वर्ष है। माहन वृत्ता है हि वह पूर्व है मेर स्मर्थ अप मा १०-१०-१०१६ दोनी वर्षण थो। गारंतर्गक अगाने मंत्रितेयारे मध्य मिल्य वी एक माने (यह १४५) माहन होना कि वे होते कि अवीद ११ अगानका मानने कि रामा दूर वे। राजे वर्षान मार्थ वृत्ति हो हो। राजे अगान ११ अगाना में मान्यत्त वा तिका माँ अर्थ ११ सद्वाया गिरास था सिम्पा वर्षे वर्ग (गिराम) हामी स्वत्राति त्रांचे स्वत्र वृत्ति हो। त्रांचे अगान के। । मानंगेने अमेरिन सम्बन्ध मां (त्रार विशेष्ट सम्बन्ध वर्ग प्रमान द्राना

 श्रीतिके क्येतिके इच अवते का दिश्य क्रिके वै व्याप्त क्यों प्रश्नाम द्वा है पिन्तु वाचर का पित्र क्रिके क्रिके प्रकार भावपाली वाया द्वारा ।

सम्दर्भ गांत्री नास्प्रद .. है। मुझे राज्यी आधा है कि आपको नेटाल आकर मेरा साथ देनेमें कोई

बहुचन नहीं होगी। मझे निरुवद है कि कहन कहने कायक है। ननर भाग मुझे किसना चाइँ तो अगरके पते पर किस सकते हैं। भावने

पत्र मेरे पाछ महास भेज दिये जायेंगे। मालम नहीं बड़ों में किस होटलमें ठहरूँगा। नेटाप्रके ड्वाटसॉने मुझे वित्रवृत्त हरा दिया है।

मो० क० गांधी

मुक्त अंग्रेजी पत्रसे। सीजन्य भी तनेयारखीके पुत्र सरतयती पर्युगती भोराक्ष्मी स्वकारको ।

५ मेटास-निवासी भारतीय

वर्न्स जक्तूक्ट १७ १८९६

सेवामें सम्पादक यान्य भार हिंदा

नहोदय

मपर बार इने बपने प्रभावशासी पवर्षे प्रकाशित करनेकी हुपा करें हो में बाजारी हैंगा। नैने बक्तिम आफिनाक विदेश भारतीयोंनी सिनायवोगर को दुस्तिना

निमी है बसके बत्तरमें जान पहना है नेटामके एवेंट-बनरतने राबटरक मतिनिधिये नदा है कि यह बहना तब नहीं है कि रेसवे तबा टानके

। बानून इता है कि में समेगानहीं जेशक कांग्रे शांके इसके बहते उसने मेंर पार्च में बीच पूछ पर-नरहार हो चुछ वा । मंत्रुपर १ १८९५ को मैरान भारतीय करियाते समञ्ज मात्रम करते हुए संबीतीये क्या वा दि में करपाने जात नानेवाना हूं और मनेद सब्दे जानीन देशियरीको तरान आतेर निव नामानेचा बचन वर्तमा। देशिए सम्ब १ पुत्र १ १-५४।

nernt afe eifen aftere rabe me en et weind wum al fe

47

कर्मचारी भारतीयोंके साथ पशुर्वों जैसा व्यवहार करते हैं। आस्तीय प्रवासी मुक्त बापसी टिकटका साम नहीं उठाते मही मेरी उक्त पुस्तिकाका सबसे भच्छा जवाब है और, मारतीयोंको श्रदाकरोंमें स्वायसे वंतित नहीं किया जाता। पहछे तो पुस्तिकार्ने सारे धनिय बाफिकाके भारतीयोंकी सिकामर्वोका वर्षन किया गया है। दूसरे, मैं इस बयानपर दुइ हूँ कि नेटालमें रेलने और ट्रामके कर्मचारी भारतीयोंके साथ प्रमुखों जैसा स्पनहार करते हैं। इसमें बगर कोई अपनाद हों तो उनसे नियमका सबूत ही मिछता है। मैंने सुद ऐसे अनेक मामके देखे हैं। अनर मुरोपीय मानियाँकी शुविधाके लिए एक रावमें तीन बार एक डिब्बेसे बुसरेमें और बुसरेसे तीसरेमें हटाया बाना पमुबद म्पनहार नहीं है तो क्या है? यो कोग देखतेमें ही शिष्ट मैंबते हैं उन्हें स्टेशन मास्टर ठोकरें मारते हैं बनके देते हैं और कसमें बा-बाकर चम-कियाँ रेते हैं। रेखने स्टेबर्नोर्ने ऐसे इस्य बसाबारम नहीं होने। वर्वनके बेस्ट एंड स्टेंधनका स्टेंधनमास्टर हो इतनी नम्रता दिखावा है कि कुछ पुष्टिए ही मत। मगर मारतीय उस स्टेशनसे बर-बर कॉपते हैं। बीर यही एकपान स्टेशन नहीं है जहाँ भारतीयोंको फटवाकके समान ठोकरें भार-भारकर एक स्वानते इसरे स्वानको भवामा जाता है। इसको स्वतंत्र सासी मौबर है। नेपल गर्न्युरी (२४११ ९३) ने किया है हमने एकाविक बार देखा है कि हमार्री रेक्ट्रे कुछ ऐसी नहीं है, विसर्वे वोरे कर्मवारियोंके सम्य व्यवहारले गैर-योरॉका वस यूटने

सारता हो। और मार्गिय यह अनेका करना जिल्ला न होना कि नेटाक पावर्षेनेंट रेतनेंके पोर्ट कर्मकारी जनके साम बति है बाररका व्यवहार कर्षे बंदा कि ने मुर्गियोय पात्रियोरे साम करते हैं किर मी हम तामको है गैर-नोर्ट पात्रियों के ताम व्यवहार करनेंग्रे बारर के बार अधिक रिप्टतायों के साम के तो जनको मान्यों बहुन न ननेना। हान पात्रियों में भारतीयोंको बेहतर तुन्तें नहीं होने। मुर्गिया यात्रियोंके मनको तरंग दूरी हो स्थित्य बेहार स्वन्तें नहीं होने। मुर्गिया यात्रियोंके पात्रकों तरंग दूरी हो स्थित्य बेहार स्वन्तें नहीं होने। मार्ग्य करते हो। दुण मीन वर्षे सायनेंग्री बैडाकों पर बैटने नहीं रेते। बारर-नानवा तो प्रस्त ही नहीं बठना। एक हायसे बैटनेको यसह काफी होनेस्ट भी एक

सन्पूर्ण प्रांची बार्क्सव भारतीय तरकारी कर्मकारीको पाँबरान पर सब्दे रहनेको बाध्य किया समा वा और उसे नेटाककी जास कोट पहुँचानेवाकी ध्वनिमें "सामी" कहकर

तो पुकारा गया ही बा। मेरा बन्तव्य नेटालकी बनवाके सामने नव को वर्णें है और उसका प्रतिकार पहली बार अब एवेंट-वनरल बारा किया

34

नमा है। इतनी देरसे क्यों ? जब रही जास्तीमोंके मुक्त वापती टिक्टका फायदा न कठानेकी बात । मो मैं एजेंट-अनरकके प्रति अवित सम्मानके साथ कहता है कि यह करन पर्नोर्ने स्तनी कार बहुत्यमा जा चुका है कि इसमे नन क्रम गुना है। इतना होनेरे नाथ अथ इसे सरकारी चौरपर जो गौरप प्रधान किया गया है इससे यह अपनी खनितसे ज्यादा पुछ लावित नहीं कर धकेना। ज्याबासे ज्यावा यह दतना शिक्ष कर सकता है कि विरामिटिया भारतीबीका माध्य बहुत बुक्षभय नहीं है और नेटाक पेसे भारतीबीके किए वीविका कमानेका बहुत अच्छा स्वान है। मैं दोनों बातें माननेको वैसार हैं। परन्तु इससे नारकीयोंकी स्वकन्ततापर नतेक प्रकारसे प्रतिबंध कवानेवाले भौगतिवेधिक कानुनौंका अस्तित्व मुठा नहीं ठहुएता । इससे भारतीवेकि प्रति चपनिवेदार्ने अमानक बुर्माबनाका मस्टित्व मुठा नहीं ठहरता। इतने एर भी जनर भारतीय नैटाक्सें बने हैं तो ऐसे व्यवहारके बावजूब। इससे जुनका मारपर्यनम्ब पैर्व ही सावित होता है। भी पेम्बरकेनने दक्षिण वास्किती सम्बोका उपनीय किया कामे तो क्रिक्सिक पंच-प्रतके सम्बन्धी मपने भागतिमें इस वैमेकी मुक्त करुते प्रवंसा की है। रक्षिण वाफिकासे बाये हुए वाने नक्षणार, नेटाल-सरकारके प्रतीयमत मेरे इत कवनको और भी कोरबार ननाते हैं कि नहीं भारतीयोंको चूरताके साय कर्ताहित किया बाता है। यत बनस्तमें मूरोपीम कारीगरीकी एक समा हुई वी। तसका चहेरन माध्यीय कारीयरोको कानेके इरावेका विरोध करना बा। उसमें को मायन दिने परे ने काई पहला नेटाकके एजेंट-कनरसके किए बड़ा विकारत होता। उसमें भाष्टीयोंको काले वन अहकर पुकास नवा था। एक आनाथ छठी वी हम बन्दरगाङ्ग्यर बार्वेगे और छर्त्हें शेक र्वेपे । चत-भोजनके किए बहैं कुरोगीय वज्जोंकी एक ट्रुक्कीने आरहीय और कांकिर बच्चोंको चौरमारीका निषाता बताबा वा और छतके बेहरॉगर नोसियाँ बाबी भी जिनके अनेक निर्दोप बच्ने बायक हो समें से। हेंस इतने नहरे पुत नवा है कि बच्चे सहय ही भारतीनोंको तिरस्कारकी नजरसे देवने करें है। इसके अवादा खबाच रखना चाहिए कि मुक्त बापसी टिक्सके

34

महोरम में विविधयोक्ति करनेका बादी नहीं हैं । बादने सरकारी जांचकी मांग की है हमने भी बड़ी किया है। बीर बगर नेटाल-सरकारको वप्रिय एक्स्य प्रकट होनका सब नहीं है तो इत तरहकी जॉब निजनी काश्रम प्रदूरन अरुष्ट हाराया नाम ग्रहा हु था रूप प्रकृत नाम नाम स्वत्य हूँ। सभ कराई बानी में कारवासन देश हूँ कि पुरित्कामें निश्चना करहा बाना है वाक्स प्रकृत कराई कार्य कराई कार्य कराई कार्य कराई स्वत्य क्रिक्ट क्या कार्याय है कार्याया मुझे कराया है। स्वत्य क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट हैं। सैने पस्तिकार्ने निर्फं ने क्याहरण दिये 🐉 जिल्हें अत्यन्त सरक्ष्तासे प्रमाणित किया का सकता है। महीक्य हमारी स्थिति बहुत विन्ताजनक है। बाप नवतक इतनी चरारताके साम इमारा जो समिय समर्थन करते नाये 🕻 उत्तरी भविष्यमें हुमें कम्बे समय तक बकरत रहेगी। वैसा कि इस सप्ताहके चौच वर्षेकी पहली अवधि समाध्य करलेके बाद नवा इकरार करलेको राजी न हो यो जने जनिवार्व रूपये भारत कीत्ना होगा। नेराक जनका नावती किरामा मास्त्रिके जिम्मे खेता। और जो इन धर्डको न पाले बसे तीन

पींड वार्षिक व्यक्ति-कर देना पडेमा को कि निरमिटकी बन्धिकी एक वर्षकी कमाईका करमग बाबा होगा। यह विवेयक जिस समय स्वीकार किया पया वा उस समय इसे एक भवसे अन्यायपूर्व कोवित किया गया वा। नेटालके पत्रों शक्को सन्देह वा कि इसे सभाजीकी धनुमति प्राप्त होगी ना नकी। इतने पर मी बढ़ ८ अयस्त्रते अमलमें आ पया है। हमारा सबसे अन्छ। भीर धायद एकमाव जामच प्रवार ही है। इससे हमदर्शी रखनेवाकोंमें एकका करत है कि "इमारी श्रिकायतें दसती गम्भीर हैं कि जनका निवारम करनेके किए उन्हें बान सेना ही वस है। भव क्षम जापसे और आपके समकासीन पत्रोंसे जपनिवेध-मंत्रीके इस कार्य पर अपना मत स्थानत करनेकी निगती करते हैं। इन समझते रहे हैं कि क्यतिबेध-मंत्राक्तव हमारा विस्तरातीय आध्य-स्पत्न है। हो क्वता है कि इमारा भ्रम बमी दूर होना बाकी हो। परन्तु हमने प्रार्वना की है कि सकर विवेयकका निवेश न किया जा सके हो सरकारकी जीरसे और सरकारकी मध्यसे नटालको समदूर मेजना स्विगित कर दिया जाये। अनताने इस प्रार्थनाना समर्थन किया था। क्या इन अरोमा करें कि इनारे प्रस प्रार्मनाको स्वीकार करानेके नये प्रमन्तीमें जनता नई स्कृतिसे हुमारा समर्थन करेगी ? नारका नारि [क्येकी] मो॰ व॰ गोपी

सन्पूर्ण पांची वाष्ट्रमव

48

राज्य मात्र रेडिया २०-१ -१८९६

र देनिय तात र इन्द्र ११४-११५ ।

Buckingham Hotel maras 18-10-16 I premised to leave with an solum some further papers - connection with the Indian question in South Africa Jam sowy I forget all what it I beg now to semithem per book post and hake they well be of some

use we very leadly nes a commettee of active prominent workers in Index for our curse The question affect not only south African Ludrano but Indians in all facts of the world ontowe Indra I have no dont you have read the Elegram about the anopalian Clone liquislating to restrict

the influer of Ladren immigrants to that party the world it is quite proschle that that legislation might revene the royal sanction I orbinet that our great men should without delay take up this greaten Otherwise methina Very Short Time there will be an end to Indran enterprise ontice Intra In my hundle funon

that telegram mord. be mude the subject of a question in the Imperial Connect at Calenta as well as in the House of Commons In fact some enjury asto the intention of the Luran governmen, should be made um. medrately see ing that you look very marm interes in my conversation I there had monted newly to write the whom

६ पत्र गो० कु० गोक्सलेको

वर्षितम् बोसकः महास मन्द्रदर्शः १८९६

प्रोफेनर गोका**डे** पूना

भीमन्,

मैंने बांजन आधिकी आरतीयोकि प्रस्त-सम्बन्धी कुछ और कापनात भी सीहोतीके पात छोड़ देनेका नचन दिया ना। सद है कि मैं उस बातको विचन्नक मूक नया। सब उन्हें बुक्पोस्टसे मेज रहा हूँ। सामा करता हूँ कि में तक काम बार्सिं।

त्में करने कायके किए माराजें कर्माठ और प्रतिपिठन कार्यकरां आहे एक जानिक्रित एक जरूर है। वस्त छित बीक कार्यक्रिकों साराजें तो तर्मी बीक भाराके बाहर दुनियाके एक हिस्सों राजें राजें भाराजें में समय र तत्र है। जायने जारहेनियाई उपनिवेशों सम्बन्धी तार जरूर ही पहा होगा। वे दुनियाक उन हिस्सों भाराजीयिक प्रवासकों रोजनेका कानून जार है है। तिकड़ूक पामक है कि एक कानूनकों प्रमानीकों जनूनति मिल बावे। मेरी विनाडों है कि हमारे वहें कोचोंचों तुष्ट यह मायका अगरे हमोतें के नेना भारिए। जयपा नहुत बोहे तमयों ही भाराजीलेंका भाराके बाहर जाइन करना बास हो बाबेंगा। मेरी नम पायने उन तारके विषयमें कवकतेया थाही वरियव में तथा विटेनकी लोकसमार्थे त्री प्रपत पूर्णा चाहिए। बरलाक माराज-गरकार हरावोंके बारेंगे पूछ कुकार कालकों होनी चाहिए।

र गोपीके स्टाल बाते हर पूचारें गोराज कृष्य गोबाधेते क्रिके के वेशकार पर १५४ ।

र गोन्डे गारणाच्या निरम्परीपर्के सरस्य है।

९८ छम्पूर्व वांत्री शत्मव वापने मेरी बार्टोमें बहुद इसवरोंके साथ विश्वपस्ती की थी दशीकिए

मैंने धोचा कि मैं उपर्मुक्त बार्ते बापको किस पूँ। भारका सम्राह्यकरी

भागका मधास्त्रका सो ६० गोपी

भ। कर मूल बंदियी प्रतिकी फोनी-नक्क (एस एन १७१६)से।

७ पत्र फर्बुनबी सोरावजी तलेगारकाँको

गर्फिन्स होटक महारा सन्दर्भर १८ १८९६

प्रिय भी तलेगारकी

वापका महत्त्वपूर्ण पत्र मिला। उसके क्रिए जन्यवाद।

्वापने जो पूर्वा नह सचमूच बहुत त्रचित है। और बाप भरोधा

रखें में क्वाबासे क्याबा स्पष्ट एकर बूँगा। मैं बहु मानकर चक्का हूँ कि इस कासेमें काम करनेवाले हैं। बापके

मानलेको एकसम बलग मानकर विचार करनेका तो प्रश्न ही नहीं है। बननें मेरी डिजोधोर्न कममम ६ पॉक्टी केके पड़ी है। १८९७ की ११ जुकार उक मेरी पहनेंचे मुक्क (टिजेस्) की है। कर्ये में पहींकी देखारी कुकाने बार सम्मदक करने बस्तरका वर्षनाल कर्ये पूछ

यहाँकी देनदारी चुँकाने बौर सन्यवतः अपने दंगतरका वर्तमान वर्ष पूर्ण करनेके किए साबेदारीसे निकाल केनेका विचार रखता हूँ। मैं 'सन्यवर इसकिए कहना हूँ कि सामय वर्षी हुई रकमते वर्षनका वर्ष पूर्ण न होता।

क्तात पर बानुसान है। ६००३ स बक्ता कर्मा बनका बाधा रू १ वह उन्हेंच वैरिस्टरीके मिलकानेका है, जो इन्हें भारतील स्वाराधिकेरे किया वा। सक्ता हैं। साथ-साथ भारतीयों सम्बन्धी काम भी करता रहे सक्षा। परन्तु अयर इस १५ वीड मासिक कमा लें तो मुने भारवर्ष नहीं होगा।

इतना में बादा कर सकता हैं। नेटाल जानेका किराया आपने पान कराने होगा चाहिए। बादी प्रदेशका चर्च क्लाप्य है दिया जायोगा। प्रद और भोजना कर्षों में दरनाओं होगा। यसकत यह कि अगर क्रम्महोनके परीक्रमन्दालमें कोई हानि हो तो उसे में बर्बात कृष्टेगा।

पूर्वि मोर, नगर कुछ भी माम हो वो उसमें नापका वामा होया। इस तरह न्यार के माहके अन्तर्म नापको नगका नगम न भी हो वो आराजों को नापका सम्मन है उसम मिम्र असारों अनुमनका भागी भाम तो होया हो। नाप दुनियाके उस हिस्सेमें नपने देखनावियों ही हानन वसम वस्त्री नीए एक नमा देख भी देख लीं। मुने कोई वन्त्रेडू मही कि नाप सापको नेपानमें निराध भी होना पटे तो भी बन्तर्म नापके भनका नहीं सापको नेपानमें निराध भी होना पटे तो भी बन्तर्म नापके भनका नहीं। हैने अगर बोन्द्रिक पहासिक्षों नहीं नापका मानी जीवन निर्माण नहीं। मैंने अगर बोन्द्रिक पहासिक्ष निर्माण नापकों मार्च नापका वस्त्रा पटेना। कुछ हो यह तो मैं निजना स्पष्ट कर्ष उपना बोहा ही होगा कि हुयारी

िमानिके निर्मा व्यक्तिकार पत्र इक्ट्स करनेके स्थामसे रक्षिय बारिशन नहीं पाता चाहिए। बायको बहु स्वापेन्दाकरी भारताने पाता चाहिए। सम्मीन हास्थ्यर हुए ही प्रदान चाहिए। उच्च नद्र बाएको पिता सम्मी है। बगर बाराने करनी नतर प्रमाद हाती तो बहु ऐसी नकरेशात है कि बारका बनाहर हुए दिना न रहेगा। यह करा दक्षिय बाधिकारा अनुसन्ध है।

जरीयक सार्थिक प्रश्नको छोट कर दूसरे बासका सम्बन्ध है में सारतायन दिकाता हूँ कि बहुँ आपनी प्रमृतियोगी बाक स्पानके लिए बाकी में क्यादा काम होया—मो भी बानुनी बास।

तान भोरत करनेमें बोड़ी-ती निर्मार का शक्ती है। स्वार बार स्थानार पर नुसर कर सकते हैं तह ती में आखीय और संपन्नी दानों प्रकारों क्रमण्य स्वार्थित कार्य केंद्रगर राजिस कर नवता है। पान्तु एना नावस न हो दी तमें एक और वास्त्री राजा होता। दिनों ती होनामें यह हमारे निता कीर्र सर्वेष करितार्य नहीं हो राज्यों। स्वत्र स्थानत है वि भैने निर्मात नायुनार बना वो है। स्वार दिवी ŧ सन्दर्भ गाँवी बाहमन वातके स्पष्टीकरवकी वकरत हो तो आपका कह देना भर काफी होना!

नहीं जाने देंगे। मुझे निरंपय है कि जाप बक्रिय जाफिकामें बहुत-पुरू कर सकेंने। सममुख को जितने कामका में निमित्त हो सकता है क्सबे क्यादा भाष कर सकेंबे। मैं यहाँ बढ़े-बढ़े कोगोंने मुकाकार्वे करता वा रहा है। सहात ध्यक्तने अपना पूरा धमर्थन प्रदान किया है और गत सुक्रवारको उसमें एक वरा जोरबार और अच्छा सेच प्रकाशित हुआ था। मैंछने समर्वेन करनेका

परन्तु स्वनी भागा तो मुझे हैं ही कि बाप आर्थिक विचारोंको अपने भाई

वचन दिया है। सभा सुक्यारको है। उसके बाद मैं कसकता और फिर सावव पूना बाउँगा। प्रोफेसर बोबारकरने अपनी पूरी सहायताका वचन दिया है। मुझे विस्तास है कि वे कुछ प्रकाई कर सकते हैं। मैं यहाँ बाउँ हुए एक दिन पुनामें ठडरा वा। मेरा बराज है मैंने आपको किया वा कि प्रवासी विजेयकको समाजीकी

अनुमधि आप्त हो गई है। (बटनाएँ इतनी तेजीते होती है कि मैं उन्हें बस्दी मूक काता है)। यह एक अनपेक्षित और बाकरियक आवात है। जब मैं चन्त्रकी सहानदासे प्रवासियोंको भेकना स्वतित करनेकी प्रार्वना फिरसे दुइरानेनामा हैं। नेटाक्के एवेंट-अनरक्का कुटनीतिक प्रतिवाद जापने अब वारोंमें पढ़ा ही होना। जससे बीब पढ़ता है कि कन्दनमें भी बान्दोकन केंद्रनेकी जावस्थकता है। येख बुढ विश्वात है कि बड़ी बाप मेरी करेंबा बहुत निकि काम कर सकते है।

अपर आप मेरे सान ही नेटाल नक वर्के तो दहा अच्छा होना। बौर में यह भी कह है कि यदि जस समय तक "करमैड" जहाब स्पतन्त

च्या तो कामय में भाषके किए मृत्त टिकट भी प्राप्त कर सक्ता।

कारका सन्त सो ६० गांधी

नापका पत्र बाज सूबहुद्दी मुख्ने मिका।

मूळ वंत्रेजी प्रतिसे । सीवन्य । स्स्तम्जी फ्लूनजी सीरावजी तकनारवी ।

र धांनी-क्रीने १६ सनहूबरको एक सार्वेम्बरिक समाग्रे सामग्र किया था। धीर एक ११।

८. प्रेक्षक-पुस्तिकार्मे

पांचीमीने १६ वर्षपुरस्, १८९६ को महासके दिन्तृ विवोधीनिकत वर्ष स्कूमना वर्षेक्ट्रस निज्ञा वा । वन्तीने स्कूमनी प्रेक्टनुशियकार्थे निम्मकिविता निवार संविता क्रिने के ।

मस्भार १६ १८९६

मूने इस उत्तम संस्थामें बातेका जीमान्य प्राप्त हुआ। इसे देवकर हरे हुआ। स्वर्य एक पुलाती हिन्दू होनेके कारण में यह बातकर स्विमान समृतक करात हैं कि एवं संस्थाकी स्वाप्ता कुमता के ता है कि एवं संस्थाकी स्वाप्ता कुमता है एक रोते की हैं। मैं कामता करता है कि संस्थाका प्रतिस्था वन्त्रक्त हो। मूने निरम्प है कि मह स्वीक पोप्त है। स्वाप्त हो कि एवं संस्था हो कि एवं साम स्वीक स्वाप्त करता हो। स्वर्ण को साम स्वाप्त करता हो कि सह स्वाप्त स्वाप्त सम्बद्ध की साम स्वीक स्वाप्त करता स्वाप्त करता हो।

[अप्रिजमें] द्वित्र १८-१ -१८९६

९ महासका भाषण

यांनीक्षेत्र अन्तुरा १६ १८०६ को सहात्कारिक सार्गी हतारी भारत निता गां। वित्तय ना रवित्र आधिकातारी देवायरकी सारावारी। वह एता महाजन एयांके एक्सावारमी पेत्रेचलां महत्त्री हुई सी सींह सबस जीतानीकी उद्यक्त्य करा हुएत ना। नोर्वाणीक ध्वत्रकोत्र अभिनेता कृत हुई सींह एवा दक्षित आधिकारी इतिहासी कार्योगी यह जनका निहस नह नां।

मनद्रमर १६ १८५६

बभ्यस महोरव बीर चाननो — बान मुने बावने सामने तोनेके देग बीर लेमिन्नके नियद सुमंके स्वान स्वीतक बादिकार्में निवास करवेवाले एक बाव भ्रारतियों कोरते पैरवी करती है। यह पत्न बारको बोती है। कि इस कानकी निम्मेदारी स्वतर कृत्यार करनेवालीने मुने बतावेवा उत्तर या है कि वे एक बात भारतीयोंका भ्रतिनिविद्य करते हैं।

१ गोबीओने क्षत्र ५८ ५९ वर दिवा क्षणा प्रधानवत्र वहकर श्वराका ।

सन्दर्भ तीवी वाद्यव

. .

इत एक छाल लोगोंमें बंगात और मदासके लोगोंकी संस्था बहुत वही है। इसकिए, मारतीय होनेके नार्त उनके हिताहितमें बापकी जो दिकवसी है बसके बकाना इस निपनसे मानका निसेप सम्बन्ध मी है। हुमारे मठकबके किए बक्षिण बाफिकाको इन हिम्सीमें बौटा था सकता है दो स्व-धासित ब्रिटिश उपनिवेश-नेटाक तवा सुमासा बन्तरीप (केप बाक्र गुर होप) समाबीके सासनाबीत उपनिवेद—सुमुसैंट ट्रान्स बाक या बक्षिण बारिको संबराज्य बार्रेज की स्टेट चार्टके टेरिटपैक नौर पोर्तुगीय प्रवेश---वेकागीमा-वे तथा वैरा। दक्षित आफिकार्ने बाज भारतीर्मोको को आजादी पाई काठी 🖏 ^{उसके} क्रिय गह वैस नेटाल-उपनिवेशका ऋगी है। सन् १८६ में जब कि नेटालकी संसदके एक सदस्यके सन्दोनें 'सपनिवेशका अस्तित्व बाँबांडोल का" प्रसमें गिरमिटिया मारतीयोंको दाविक किया थमा बा। इस प्रकारका प्रवास कानून द्वारा नियंतित है। इसकी जनुमति कुछ क्रपायात राज्योंको ही दी नह है। उराहरलके किए गारीघर फिनी बमैका स्टेट्स सेटलमेंट्स बमरायको इस प्रकारके प्रवासी का सकते हैं। इन्हें केवक अकन्त्रता और मंत्राससे वानेकी अनुमित है। एक अन्य प्रतिन्दित नेटासी भी सांबर्सके सन्दोंने "भारतीयाँक नायमनसे समृद्धिका नायमन हुआ। मान वह पर्य। जब कोग वस्तुएँ क्यनाने और उपनको गिटटी मोस्र क्षेत्र हेने अपने शंक्तुस्ट नहीं पहने कने। वे उड़ ज्यादा कमा सकते है। चीनी और चायके उद्योग उपनिनेश्वकी सफाई मीर

धान-सन्त्री एवा मक्षिकोंकी आवरयक्ता-मृति पूरी उप्यूरी कमकत्ता बीर महार्थि नाने हुए मिर्पिशिट्या मार्ग्यायीयर कावनिक्य है। स्त्रमम सोमह् वर्ष मूर्ग मिर्पिशिट्या मार्ग्यायीयर कावनिक्य है। स्त्रमम सोमह् वर्ष मूर्ग मिर्पिशिट्या मार्ग्यायीकी कर्मार्थ स्वर्थी करात्री में व्यापारीकी कर्मार्थ कर्म करात्री हिंदी करों । एरल्यू वाहमें उन्होंने विश्वम वाधिकाओं कृत्य काविक मोर्ग्योग के कृत्य करात्रिक मार्ग्याय कर्म कृत्याया करात्रिक मार्ग्याय कर्मार्थ हाइक पा स्थिमा थे स्थापारी मुक्ताय कर्मार्थ सेमार्ग कर्मार्थ करात्र करात्री सेमार्ग मुक्तमार्थ है। ये सार्गी कर्मार्थ करा मुक्तमार्थ है। से सार्गी करात्री मार्ग्याया है। सेमार्ग कराने क्यार्थ सार्ग्य करात्री एरकार्य है। सार्ग्य करात्री करात्री सार्ग्याया स्वाप्ति करात्री सार्ग्य करात्री महत्त्रार्थ करात्री सार्ग्य करात्री है। करात्र करात्री सार्ग्य करात्री सार्ग्य करात्री है। करात्र करात्री सार्ग्य करात्री सार्ग्य करात्री है। करात्र करात्री सार्ग करात्री सार्ग करात्री सार्ग्य करात्री है। करात्र करात्री सार्ग्य करात्री है। करात्र करात्री सार्ग करात्री सार्ग करात्री सार्ग करात्री है। करात्र करात्री सार्ग करात्री सार्ग करात्री है। करात्री सार्ग करात

बब ये मार्याय सारे रक्षिण मारिकामें फैन समें हैं। नेटाकका सासन महस्तावार्म डाग पूर्व १ के कर्माओं एक विकानसमा समाजीक महिनिय नवरंद दारा नाम्बन क्लि हुए ११ सर्वास्त्रीक विमानस्य कार ५ सरस्त्रीक एक परिस्तृत्वाचील मंत्रिमंत्रक डारा होता है। उसमें यूरोगियाँकी मार्वार्थ ५ देवी कोगीकी ४ और मार्यायाँकी ५१ है।इन ५१ मार्यायाँमी में समाग ११ कर सामय क्लियां निपिटकी कार्वाय पूर्व कर रहे हैं। १ मिर्यायको मार्वाय पूर्व करके समें में नीकरों सावयारों सेरीकालों और कोन्स्त्रीय नहीं नाकर सते हैं। वे मार्वा मार्वारी है या कुलानस्य है या सहस्वकों स्वया प्रेरीसाकीका काम करते मारागरी है या कुलानसर है या सहस्वकों स्वया प्रेरीसाकीका काम करते

हैं। चोहेनों मोना स्कूमोर्ने पिक्क दूमारिये और मूहॉरर भी हैं। पुमाणा मण्डपेग (केप माफ मुद्र होग) के सम्बाधित जगतिवेदार्में परा मधान हैं माफीबोरी हंस्सा ? हैं। में ब्याचारी फेटीबालें और महाद हैं। जगतिवेदारी कुन मामारी नगमग १८ मास है। उपमें मूरोपीबोरी गोमा में मामने मीनक नहीं हैं। येग मोग उसी देखके और ममाबाकी शिवारों है।

रे सन् १८८४ व्य रेपन-संवर्धना (रेपन वीनरिय)।

१ ४ छन्दं योगी ग्राह्स्य कनमें मारतीयोंकी संक्या बहुत बड़ी है और बहुई सनको कोई कप्त नई

दिया बाता!

इसिण बाध्किमं भारतीयोक्ते क्ष्य यो प्रकारके हैं। यहले ठो में ये
गरतीयोक्ते किकार बनाताकी दुर्भवनायोक्ते तैया हुए हैं। इस्ते उत्तर कार्य गई कानूनी बाबाएं और निवेद। यहनेकी चर्चा की जाने ठें विक्रम बाध्किमं जारतीय स्वस्ते क्यादा है-पनाव कीच है। प्रवेद गरतीक्त्री निवा क्लेकि दिरस्कारके पाल कुनी कहा बाता है। वर्ग "साधी" "रामतामी"—बारतवर्मे "मास्तिम" कोक्सर सब कुक कहा बात है। मास्त्रीम पिकलीको "कुकी स्कूक मास्तर" कहा बाता है। मास्त्रीक वर्ग हमास्त्री करते हुए यो जारतीय वर्ग्य संवार जानिक "कुकी बस्तु-संवार जाविक" है। वस्त्रीये नये हुए यो जारतीय सन्वयन—भी दारा अनुस्त्रा कीर भी मुखा हान्यों कारिय स्वार्थिकों स्वार्थिक

प्रश्वन — भी पता कनुष्का बार भा पूछा हात्रा काछम बहुनाक गान्य हैं। जरके बहुन "कुडी बहुना" हैं।
बहुं महानक स्थापारिजोंकी एक बड़ी मिडिएंडल लेड़ी हैं। उपका नाम
हैं—ए कोक्सेनोकू पिताले ऐंड कम्मणी। उन्होंने बर्चनमें बहुउसी प्रमायोंकी
एक मापी कटरा बनाया है। इन इमायोंकी "कुसी बसुन-मंडार" जीर इनके
मास्किकी 'कुसी मास्कि' कहा बाता है। बीर, सम्पन्नों में बाएको विस्थाप
पिताला हैं कि इस पेड़ीके साक्षेत्रारों जीर "कुफियों में उठना है। कई हैं
फिदला कि इस समामकार्में बैठे हुए किसी मी स्थित और कुकी में हैं
करकार वर्डक समझ्य में इहुता कर कहाता है जिस्सी हराके हमाने क्रिक्सी

हाकमें डर्मनको एक समामें एक सरम्बनने कहा वा --- "मुझे अफसीय है कि इन्हें आर्फोर्क समाग गोलीसे मारा वहीं वा सकता। टान्सवाकमें कुछ स्वानंकि बीच पोड़ापाहियाँ चकती हैं। हुम उनके सन्दर बैठ नहीं सकते। इसमें अपनान और अपनानका संघा तो है ही इसके अकावा बीतकासके मयानक प्रमादमें — क्योंकि ट्रान्सवाकमें वही कवी धर्या पहली है — या मुकसा देनेशांकी पूपर्ने हार्तांकि इस जायतीय है गाहियोंकी छशपर बैठना एक भोर परीक्षा है। ड्रोटकॉर्में इमें चयह नहीं दी बाती। और सबमूब तो ने नातें नहांतक गई हैं कि बिप्ट भारतीमींको यूरोपीय स्वानीमें मास्ता व वाद नक्ष्मण पह है पर विष्ट भारताशा पुराव स्थानम मास्ता पाना भी मुस्लिम हुन हैं। कोई हुल हैं। वैदेशकों की मास्त्र पाना में मूरोदोसोंक एक गिरोहरे एक भारतीय वस्तु-बंबारमें नाय क्या दो बी (विकार! विकार! की बातानें)। इसले बातु-बंबारफों कुछ गुक्सान पहुंचा वा! एक हुएये निर्देश में बंबेनली एक स्थापिक वधीके एक भारतीय वस्तु-बंबारमें बकते हुए परावी लेंक दिये ने।

यह होप-माचना दक्षिण आफिकाके विभिन्न राज्योंके कामूनीमें भी सतार थी वर्ध है। उनके हाण तक्तकक्त मास्तीमॉकी स्वतन्त्रतापर वन्तिसँ वा नहुं । उनके पार्ट वायुन्य पुत्र भारत्याक्षा स्वान्तवार वास्त्र विद्या वार्या है। यहाँ वो निवानकों के सीवियः। भारतीयोंकी दृष्टिये उन्नकों महस्त सबसे वार्या क्षार्य क्षार्य क्षार्य कानून बनानेकी क्षार्य क्षार्य प्रकृति रिक्कार्य नहीं है। यह १८६४ वक भारतीयोंकी क्षार्य प्रकृति रिक्कार्य कानून है। यह १८६४ वक भारतीयोंकी क्षार्यक स्वान्तिकार कानूनके नाम्यून कुरोनीयोंकी करवार ही भारतीकार प्राप्त कानून क्षार्यक स्वान्तिकार प्राप्त कानून क्षार्यकार क्षार्यक स्वान्तिकार क्षार्यक स्वान्तिकार प्राप्त कानून क्षार्यक स्वान्तिकार प्राप्त कानून क्षार्यक स्वान्तिकार प्राप्त कानून क्षार्यक स्वान्तिकार प्राप्त कानून क्षार्यक स्वान्तिकार क्षार्यकार स्वान्तिकार स्वानिकार स्वान्तिकार स्वानिकार स्वान्तिकार स्वानिकार स्वानिकार स्वान्तिकार स्वान्तिकार स्वान्तिकार स्वान्तिकार स्वान्तिकार स्वान्तिकार स्वान्तिकार स्वान्तिकार स्वान्तिकार स्वानिकार स्व पास ५ पाँडकी स्थावर सम्पत्ति हो या जो १ पाँड सालाना किराया देता वाध प्राप्तकारमान्य प्राप्त । हो मतदाता-मूचीमें घामिक किसे वानेका हक देता था। बूलू लोवेंके किए बताबिकारकी पात्रता निक्त रक्षी गई थी। १८९४ में नेटाक विवानमंडकने एक कातून पास करके एशियाइयोंका मताधिकार, जनका नामोस्केस करके कीन किया। राजनीय संगरमें हमने जतका निरोध किया। परन्तु कोई साम नहीं हुआ। यह हमने व्यविश्वमात्रीको प्रार्थनायको भेका। प्रकृत इस वर्षे यह हुआ। यह हमने व्यविश्वमात्रीको प्रार्थनायको भेका। प्रकृत इस वर्षे यह कानून नायस से किना नवा है और बसके वहले दूसरा निवेबक येस किया यहाँ है। नवा विभेयक चतना बुध तो नहीं है जितना पहला था। किर जी वह काफी बुध है। चसनें कहा यथा है कि जिन हैपोंनें जबतक संस्तीय

१ देखिल पुत्र १५। १ देखिल पुत्र १५।

¹ स्थित क्या स्थापन

मताबिकारके जाधारपर स्थापित निर्वाचन-मूलक प्रातिनिविक संस्वार्थ न हों. जनके निर्वाधनोंको (स्वार्ट कि ने स्वोतीय नंताके स्वार्थ) स्वारित गर्वारे

ŧ 1

उनके निवाहिनोंको (बसर्जे कि वे यूपेशीय बेचके न हों) उपरिवह पनर्गंके बिराम नवृत्ति प्राप्त किने दिना परवाहा-वृत्तीय धार्मक नहीं किना वार्यमा । इस विकेचक के सनमत्ते उन मोनोंको पुनत प्रवा प्या है बो पहले से विकेचक के सनमत्ते उन मोनोंको पुनत प्रवा प्या है बो पहले से प्रवाद के प्

हुन कानते हैं कि नारतने ऐंडी संस्वाई है और हतसिम्य गई विने पक पारतिविद्य साथ गूरी होता। वरलू हुन स्वीवार कर सकते हैं वो गई। विनेक्ष हुन्या कर ही नहीं तकते। स्वतर हुन्ये सारतिविध्य सताविकार किनता हो, वो क्यारा अच्छा हुन्न हो हो नहीं तकता। अपर न किनता हो तो भी करनेकी कोई बात नहीं। बारक कारतीय कर्यो राजातिक अगुल्व मान्त नहीं कर सकते। और अपर करारों हो साथ तहा विकाना-सम्माने कार्यते गह सकते हैं या सम्मति तममार्थी योक्साम्ये नहां तकते हैं। हुन्ती वारेक तारे जारतीयों मानाविवार तो निज ही

सध्येगा हाथ हो एक भी गुरोबीसके मतदालमें बाधा न पहेंगी। इस उरफ़ नैटाक्का विचानतंत्रक बारडीपीके साथ निवद भी गेरी पर भी मेरीका बेक केंच रहा है। नेटाक्के 'बारडर' की प्राचनतंत्रक सुरोतींसे चीर-अपने किए हा स्वयुक्त पात समझे पहें हैं। नेरिफ्के पात्रक 'सौर नेटाकके पास्टपरें को स्वता हो है कि पहचा दो मानवसातिको साम जूँचानेके किए चीर-काड़ कराते मा सुरार कुट हुएवहर्षे मनते मतोदंत्रको किए हस्तर प्रवत्त होता है। एक सामृतका प्रोच एक्सीतिक मही है। यह यह तो आजीवोको केवल-गांव

१ केंद्रस मर्क्ती ।

(1) अकार (क्या हूं इस तमय भी चेम्बरिक्ष सावने वो प्रका है वह सेहासिक नहीं है। वह प्रभा वर्षीनींच नहीं, कारोप प्रवासींचा है। हम करती ही प्रवासींक बीच वाति-पुढ़ होने देकर साम नहीं बटा सकते। स्मादत सरकारके सिए नेहासको प्रवाह नेहमा वस्त करते उसकी प्रपतिको एकाएक रोच देना पठमा है। वक्त होगा, विकास कि मेहासके सिंह विकास मारतीय प्रवासनींचे नागरिक सर्वक्षार देनेते इसकार करता। विकास मारतीयोंने तो वर्षोंची कमकर्षी और सन्दर्भ कानसे अपने-मारको नागरिकोर बाह्मीसक हमें तक उटा ही किया है।

अवर एपियाई मठीके पूरिपीय मठीको नियल जातका कोई सम्बा अउस मौजूद हो हो हमें पिछाको करीकी जारी करने या सम्मतिन्यानची बोस्पाको बहा बेलेपर कोई एक्टबन नहीं नाह माजिल कीवनर बागति करना है वह हो है कमें नियोग सम्बाधी कानून और उससे बास्प्रीमानी मिरावट हो विवयकका निरोम करनेमें मने वियोगिकिहारके किए नहीं कह यह है। मिछ पुनिवाका हम उपमोच कर रहे हैं उसने बेचित किये जानेका विरोम कर रहे हैं।

नियम वर्ष नेटाल-सरकारने भारतीय प्रवासी कानूनमें संयोजन करनेके निय एक वियेवक पेरा किया था। वह वियेवक नेटाल-सरकारकी मारतीजीको निर्दे काफिरोंके स्तरपार विश्व देने और, नेटालके सहाम्यायवादीके स्थानित

विषय है। प्रतिष्ठ माहिकी राष्ट्र महाना महाना प्रवास विषय महिक्यों को परिक्र माहिकी राष्ट्र महिका में महिका में महिका राष्ट्र रोक्से 'की नीतिके क्रीक मनुक्य है। मूले स्क्योशके ताम कहना पहला है कि हमारी मारामिक विषयीत करें समानी-सरकारण मनुस्ति १८ सन्त्रीनाहसन

प्राप्त हो गई है। यह समाचार बन्बाईकी समाचित बाद प्राप्त हुना है। इसमिए बकरी है कि में इसकी हुक दिलारों वर्षा करें। समिए भी बकरी है कि सुप्त प्रशासन इस प्रवेशने जिसक मिल्क सम्बन्ध है बॉर इसका करवान बनो सबसे कच्छी तरह विवा वा सरवा है।

सन् १८९४ के १८ जनस्त तक गिरीमिटिया भारतीय पाँच साल नौकरी करनेके इकरारपर बाया करते है। उन्हें नेटाम कानेका वर्ष अपने बौर अपने परिवारोके किए मुक्त भोजन क्या निवास और वस सिक्ति माह्यार मजबूरी दी बाती थी। दस विक्रिंग मजबूरीमें हर साम एक विक्रिय माह्यारही बढ़ती होती थी। सगर ने स्वतंत्र मजहूरोंके ठौरपर पांच साल मौर जपकि वेसमें खें तो सन्हें भारत लौटनेका टिक्ट मुख्य पानेका इक भी होता वा? क्षत्र सह क्षत्रक दिया थमा है । मदिष्यमें ना तो प्रवासियोंको हमेदा निरमिटिया बनकर उपनिवेसमें पहना होया बिट हालटमें ९ वर्षकी पिरमिटिया मबदुरीके बाद जनकी मखदुरी २ हिकिंग माहबार होगी जा नाराकी कोठ जाना होया था फिर तीन पाँड साकाना व्यक्ति-कर देना होता। निर्दिनिटिनोंकी सवदूरीके दिसावसे यह रकम सबभव जाने वर्षकी अमार्द होती है। सन् १८९३ में नेटाल सरकारने को व्यक्तियोंका एक नावीप (क्रि धन) भारतको भेजा ना। अधका काम व्यक्ति-करको क्रोडकर अगरके क्रेप सब परिवर्टनोके किए भारत सरकारको राजी करना था। वर्टमान वाह सरायने समती जनिक्का क्यन्त करते हुए मी बिटिस सरकारके मेंबूर करलेकी सर्वपर परिवर्तमॉकी अनुमति वे वी । परन्तु उन्होंने विशेवार्व भाष्टी-वापरीको स्थवासको अवसाको फोलदारी अपस्थ मानमेको अनुमधि नहीं ^{ही ।} नेटाक सरकारने स्थानित-करकी उपवास जोड़कर उस कठिनाईको हैं^क

कर किया।

महात्यायकारीने एक चनवाराको कर्या कृत्ये हुए कहा वा कि कियी

माठ्योको नाट्य कोटनेंसे या व्यक्तिकर हैसेई हनकार करनेपर सेंक यो
नहीं मेना वा एकचा परन्तु उपकी सोन्दोनों कोई कामकी नौन हो यो
यो करा किया वा एकचा है। हमने क्यानीय तंत्रपर्ध चम विशेषकर्कको
नौरोसे विरोध किया। वहां हैश हमने द्वानीय होत्य में बेसपर्दकेको एक

र अने फिरामर १६ को द्वर्त थी। देखिए हुए ७०।

कर दिया बाये या मेटाकको सबदूर सेवना स्वक्ति कर दिवा बाये।
व्ययपुरत प्रस्तावका सेवन वस वर्ष पूर्व किया यया वा बीर नेटाकके
सबसे प्रतिप्तित व्यविशेषियोंने तसका कोर किरोक किया बा। इस्पर
प्रस्ताविन्यानको विविध प्रशासी विविध वायोगको नियुक्ति की गई।
उनके एक बायूक्त भी सावतीने बरानी बतिरिस्त रिपोर्टम केया है
वयवि बायोगने देशा कानून कान्नेकी कोई नियापिक नहीं की कि

महाध्या मार्च

प्रार्थनापत्र भेजा जितनें विनती की नई वी कि या तो विभेयकका निपेव

यद्यवि सारोपने पृंता कन्नुत कार्नारेश कोई रिस्तारिय नहीं की कि अयर जारतीय कपने निरामिक्की समिप पूरी होनेके बाद नया इक्या कर्मनेको तैयार न हों तो उन्हें नारत लोजनेके किए बास्य किया बाये किर जी में ऐसे किशी जी विवारको बोरोंते निजय करता हैं। भैरा परका विज्ञात है कि बात की जनेक कोच इत योजनाकी पैरोकारी कर रहे हैं वे बन सानमेंगे कि इक्टा सर्व नया होता है तब वे भी मेरे स्वाम ही बोरोंसे इसे कुकरा देंगे। जो हो नारोगोंका जागा रोक वीतिए जो, में वाजित कर सकता हूँ नारों जन्माय है।

यह इतके तिवा तथा है कि हम जरने जल्डो और बुरे बोनों तरहके भीकरोंका क्याराते क्यारा नान उठा में और वब उनकी सम्बांति अच्छी उन्न हमें फायदा गईकामें कर बाये तह — जनर हमारे कामें ही हो मध्य हमें कामें करने देश तीट बानेके किए बाय्य कर जीर हो मध्य हमें अपने पुरकारका नुक भीगोंनी विवित कर दें? और जाय धार्ट भीजेंने कहां? चार्ट कही बुक्सरीकी परिस्तितिको होत्स्मेंके तिथ् किए क्यों बात्स मेना कामें निर्माण स्वयंगी जनानीके दिनोंने भाग कर वे गई बाये वें? अपर इन साहकाकों सकान एक पीड़ मीत ही बाहते है गई, विवास रिक्ट, धाइकाकका ही सितक्त की भीगा भीगादा होगा।

उपनिवेध भारतीयों के मायननको सकर रोक तकता है और सौक-प्रियताके योदाने मितना चाहुँगे पतते कही मंदिक सरस्ताके साथ और स्वापी कपने रोक तकता है। वस्तु तेवाके मनायें वार्वे सकता निकास

१ शरिषको निय देखिए कार १ कुछ २१६, शास्त्रियामी ।

ŧŧ सन्दर्भ गाँची बाह्यब

देना उसके बद्धकी बात नहीं है। और मैं उससे अनुरोध करता हूँ कि इसकी क्रीशिश करके वह एक अच्छे नानको कर्सकित न करें।

बिस महान्यायगायीने निजारायीन विशेषकको येस किया या *च*तने

मानोपके सामने धवाई। देते हुए में विचार व्यक्त किसे ने

महौतक संबंधि पूरी कर केनेवाले जारतीयोंका सम्बन्ध है, में नहीं

सममता कि किसी स्थानितको, अवतक नह अपराची न हो और उत सपरायके लिए क्से वेश-निकाला व दिया यवा हो पुलियाके किसी नी भागमें बानेके किए बाध्य किया बाता बाहिए। सेने इस प्रश्नके बारेने

बहुत-कुछ नुना है। भूअते बार-बार अपना दृष्टिकोल बदकनेको सहा यमा है बरला में बेसा नहीं कर सका। एक मादनी यहाँ भागा चाता है। सिखान्तरः रज्ञानंदीसे व्यवहारत बहुवा विना रज्ञानंदीके साथा वाली

है। यह अपने श्रीवर्गके सर्वजेक पाँच वर्ष यहाँ खवा देता है। समें सम्बन्ध स्वाधित करता है। आगव पुराने सम्बन्धीकी मुना देता है। मही अपना घर क्ला केला है। ऐसी हालतमें मेरे त्याब और अत्यायके विचारते,

डहें पापिस नहीं मैका या सकता। मारतीयसि बी-कुछ काम जा^{त है} तकते हूं यह केकर उन्हें भक्ते भानेका नावेश में, इससे ती यह महत अच्छा होता कि सार चनको यहाँ काना ही विस्तक्षक अन्य कर **हैं।** ऐसा बीचता है कि जपनिवेश या चपनिवेशका एक बाब भारतीयोंकी कुमाना तो चाहता है, परम्तु जनके आनमनके परिचामाँसे बचना चाहता

कुछ बाबतींचें तो वे बहुत परोपवारी है। किए, तेसा कोई कारण तो मेरे सुनमेने कनी नहीं साधा किसते किसी स्थितको यीच वर्ष हरू काल-बज़न अवका रक्तनेपर भी देश-निकाला दे दिया कार्य और इस कार्यको विकेत ठहरावा का सके।

है। बहारतक में जानाता हूँ भारतीय हाति पहुँचानेशको लोग नहीं हैं।

बौर को भी किंग्स नेटाली आयोगके एक संबक्ष्यके कर्पमें मारत-सरकारको क्यर्युक्त परिवर्तनोकि किए राजी करने भारत आये थे चन्तुनि ^{वस}

वर्ष पूर्व जायोगके सामने वह नवाही दी जी नै समझता हूँ को यह बात फठाई पाई है कि बारतीयोंको गिरमिटकी

अवनि पूरी हो मालेके बाद भारत वाला जालेके किए बार्न्स किना

चार्य बहु भारतीय बाबाबीके किए सरपना अन्यायपूर्ण है। मारत सरकार जसे बसी स्वीकार न करेगी। मेरे बायाको स्वतन्त्र भारतीयोंकी बाबाबी समाजका एक सरमान जरवोगी और है।

परन्तु बहुँ कोग हो बपने विचार कपहुँ बहकनेके समान वाली-बाली और बार-बार बहुक सकते हुँ। उन्हें बहुका कोई हम्म भी मोगना नहीं परना उक्तरे बससे स्वत्वा हो सकता हूँ। कहते हैं बनमें ऐसे परिस्तुत सक्तरे विचासके कारण होते हूँ। तथापि सहस्त्वा च्याकी बात है कि वेचारे विचीमिट्या मार्कीसीक कुर्याच्या उनका यह मय-चाही उनकी यह सामा कि मार्क-सरकार क्यांपि उन परिस्तुनीकी सम्मति न वेपी पूरी नहीं हुई।

संदर्भ रक्षारते विश्लेषकको पड़कर इत धर्म्योमें अपने चर्गार स्पन्त क्रिये के

यह विकरण ही विविध भारतीय प्रजावनींपर कामे जानेनाले पृणित कायावार्रीवर प्रकास कलनेके लिए काफी है। नया भारतीय प्रवासी कामून संसोचन वियेष्य कन कायावार्रीका एक नया वराहरण है। यतका क्या भारतीयोंको ल्यानय पृतालीकी विविध्ये करेक देनेवा है। वह एक राजती सम्याय विदिश्य जजावा अपमान, अपने निर्माशालीके लिए वार्यध्ये बीज और हुपपर लांकन लगानेनाला है। सत्येक लीवेबका कर्त्रम्य है जि वह बिजन साहिकी समानियिक लोकबो यह कोर्योचर ऐसा धीर कस्याय वानेते रोके को धीयना बीर संविध्य (स्टैम्यूट) बीनोके हारा कामूनकी संविध्य हुनारी बराहरीयर दैशार्थ पर्य है।

संदन यहन्त्रने भी हमारे प्रापंतापत्रका समर्थन करते हुए स्थातार धर्मवर्षाकी विचित्रकी तुम्ता "बठरमारु तौरपर पुनामीके नवदीक" की हालदावें की है। उसने यह भी नहां हैं

सारत सरकारक नास एक सातान इताब है। वह दक्षिण वाजिकाको पिर्शनिया जारतीयोका जेवा वाला त्यतकके लिए ऐक तकरी है बबतक उने विरामिरियों वर्तनान करवाच और पविष्युन जान-वर्षाकर वारेने बादराय आवानतन न निक बाये। विरोध वर्षनिकेशीक वारेने करने ऐना ही किया है। यह नामका दोनों पर्वोके निव् १११ सन्पूर्णसीनी नाहसन

वहीं बनसवारी और क्षेत्रजीलकी सावनाते काल करनेवा है।
स्पार हो सकता है कि भारतीय समावका प्रयोक वर्ष वब को जीवन
स्पारक बना कर रहा है उससे कारेंगे मारत सरकारको कारियाँ करनेवे
तियु बाम्य होना नहें। यह बाबा है कि, जारतीय कारियाँको तमस्य
विदेश सावास्त्र्य और सहुयोगी राज्योंने विदिश्य प्रजाको हुरी वालसर्वायके साव न्यायार और सब्दूरी करनेका अधिकार होना वास्त्रिय।
सर्वायके साव न्यायार और सब्दूरी करनेका अधिकार होना वास्त्रिय।
सरकारके साव न्यायार और सब्दूरी करनेका अधिकार होना वास्त्रिय।
सरकारके साव न्यायार और कार्युरी करनेकार कर चुकी है।
इस विवेचकको सम्प्रानी-सरकारको जनुमति प्राप्त होनेकी सुवना देवेचांने
से पर वेटालस्त्री मेरे यास बाये हैं सम्प्रता न्याया कहा नया है कि मैं पिर
सिंदियोंका प्रेवना स्थायिक करानेने प्राप्तीय कहा नया है कि मैं पिर

को पत्र नेटाइन्से सेरे पास बाये हैं उनमें मुक्तसे कहा नया है कि मैं पिर मिटिबॉका भेजना स्वपित करानेमें भारतीय अनुतासे सहाबताकी प्रार्वना करूँ। मैं मही भारत बानता हूँ कि विरामिटियोंका प्रवास स्वपित करानैकी करुपनापर वड़ी वारीकी से विचार करना बावस्थक है। फिर नी मेरे विवास विचारते मारतीमोके सर्व-साबारच हितकी बृध्धिते और कोई निष्कर्य निका कता सम्मय नहीं है। हम मानते हैं कि प्रवासते बनी बाबाबीके जिल्लीकी मीड़माड़ कम होती है और प्रशासियोंको साभ होता है। परन्तु स^{बर} भारतीय व्यक्तिकर देनेके बदके भारत कोट बानें को भीवभावमें कोई करें नहीं पहेना ! बीर कीटे हुए भारतीय दूसरी वार्तोकी क्रोबा कठिनाईके हैं। मल अधिक बनेंगे क्योंकि जनके किए काम पाना कात्रिमी तौरपर कठिन होना और नह नपेता हो की गहीं का चक्दी कि ने हतना वर्ग क्षेकर शार्वेन कि बतके सूच्यर नुकर-वसर कर सकें। बूसरी बोध प्रवासियोंको भी कोई काम न होना नयोंकि बगर सरकारका बस पड़ा वो वह उन्हें कमी की मबहुरोंके स्तरमें स्मर उठने नहीं हेवी। सब बाव तो वह है कि वर्षे अव परानकी बोर भाने में सहारा दिया जा रहा है। ऐरी परिस्थितियों में जापने नजरापूर्वक अनुरोध करता हूँ कि जनर नवा कानून बरका या रह किया स वा सके तो बाब नेटालको सिरिसिटना मजबूर जेवना स्वरित करनेकी इमारी प्रार्वनाका समर्थन करें। . स्वाजानिक है बाप चाननेको उत्सुक होंचे कि सारदीवीके साथ निर्दासदेशी अविष काटते समय व्यवहार कैंसा किया बाता है। बेसक वह जीवन

स्वाजानिक है बाप चाननेको जलुक होंगे कि माध्योजीके साथ निर्धानको अवधि काटले तथार स्ववहार कैया किया बाता है। तेत्रक वह जीवार किसी जो हामको बातपार हो हो हो किया। परन्तु मैं नहीं ध्यासता कि दुनियाके हुतरे जानोंमें रुवी परिकितियों प्रतेनको साध्योजीको कोका नेटाकमें वनकी स्थिति क्याबा करान है। इसके साथ-साथ उन्हें भी निरुवन ही भीतम रंग-देणकी विश्वति तो जोगनी ही पढ़ती है। यहाँ में उसका विदेश-मात्र करके जिल्लामुर्जोकी "हरी पुरितका" (प्रीत पैम्फ्लेट) पढ़नेकी समाह ही से सकता है। ससमें इसकी अधिक विस्तृत वार्य की यह है। नेटासकी कुछ जायशार्वीमें मारमहत्वाचे मनेक धोणनीय मृत्यूएँ हुई हैं। वहाँ किमी भी पिर्रामिटिया भाष्टीयके किए कुर्मकहारकी विनापर अपना सवा बक्ता करा सेना बहुत कठिन है। प्रत्येक गिरिमिटिया भारतीयको स्वर्णन हो जानेपर एक मुक्त रिक्काईनामा दिवा जाता है। वब कभी भी गाँगा जाये वसे यह रिक्काईनामा दिखाना पहता है। इसका मधा काम छोड़कर मागरेवाले विर्धानिन्योंको पकदवा है। इस प्रवानीका समस्य गरीव स्वतन्त्र मारतीयंकि किए वड़ा सन्तापकारक है और अक्सर सिन्ट भारतीयोंको बड़ी अप्रिय स्थितियें बाक बेनेशासा होता है। अनर बेतुकी हेप-माबना न होती तो सबनुष यह कानून कोई कष्ट म देता। प्रवासियोंका संरक्षक अपर तमिल तेमुपु बौर हिस्मुस्तानी चाननेवाका बौर पिरमिटियोंके साथ सहानुमूचि रचनेवामा कोई प्रतिकित सम्बन — सम्बन्ध सार्योग — हो तो निजय ही जनके जीवनकी साधारण कठिनाइयाँ बहुत कट जार्येगी। अपर किमी भारतीय विचीमदियाका रिहाईनामा की जाय तो वसे उसकी नक्कके किए तीन पॉडकी रकम देगी पहती है। यह मनुषित रूपसे पैसा ऐंटरोकी प्रमाणीके सकावा कुछ नहीं है। वैदासमें ९ सबे राप्तके बाद सरसे निकसनेक किए प्रत्येक भारतीयको अपने पास

एक परवाना रखना पहता है। बार यह परवाना न हो तो वसे पुनिमाधी कान कोठियों बन्द रखा बाता है। यह नियम खाद तीरिस साम प्रदेशने गये हुए सन्दर्शके किए बहुत सन्तायनक है। बापको भानकर हुएँ होना कि बनेक निर्धारिका मार्धीयोंके बच्चे काफी स्वाम प्राप्त करते हैं और वे बाग तीरपर पूरोगियोंकी पोधाक पहनने हैं। उनका वर्ग बहा नाजुक-मिनान है। किए भी दुर्माणवर ९ वर्ग एतक नियमके मन्त्रीत सब करिक नोगीने ही लिएकार होनेकी नवसे ज्यादा सबना होती है। नेदाका पूरोगिय पोधाक पहनेते किया मार्धीयकी मिनाकत वर्षण का बादे और उन्हें प्रधाना न बादे नी बात नहीं है। बनिक रिपांत सम्मी सन्दर्श है। नेयन नानीरा होनाकाल बोगा उन्हें छेड़पाइने बचा लेना है। हुसी पुनिकारों में एर न्यूप पटनामा बर्गन दिया गया है। वह बनेक वर्ष पर्व इनेक

सम्पूर्व पांची शहमन भटित हुई बी। एएक फलस्यस्य दर्बनकी पुष्पितने बैस कपड़े पहने हुए भारतीयोंको ९ वर्ने राठके बाद बाहर पानेपर मिरस्तार करता वन्द कर

विमा है। अभी कुछ ही महीने हुए, इस कानूनके वन्तर्वत एक तमिछ विवक एक तमिल चिक्तिका भौर एक तमिल चित्रवासचै स्कूल सिलक्को विरस्तार करके ह्वाकातमें रखा पना था। वदावतमें चन सबको स्थाप बकर मिला किन्तु यह तो बड़े कल्प समाधानकी बाठ थी। तिसपर भी उठका परिचाम यह हुआ है कि नेटालके नगर-निगम (कारपोरेसन) कानुनमें ऐथे परिवर्तनकी बीच-पुकार मचा रहे हैं जिससे कि ऐसे भारतीमोंका बदासर्वीचे

115

वंशित रखती हैं।

वर्तनमें एक जपनियम है, जिसके जनुसार पैर-नोरे नौकरींका नाम सरकारी रविस्टरोंनें वर्ज कराना बरूपै है। यह नियम काफिरोंके किय को काम करते ही नहीं बकरी हो सकता है और सायद जरूरी है भी। भारतीमोंके किए तो विककुत ही व्यर्थ है। मगर गीति यह है कि वही भी हो सके भारतीयोंको काफिरोंकी ही सेपीमें रखा बाये। नेठाममें को बुच-वर्ष है जनकी सुची मही पूरी महीं हो बाती। अवएर अभिन बातकारीके किय में निजासुनोंको "हरी पुरिवका" पढ़नेकी चलाइ बुना र परन्तु, सन्त्रको नापको हाच ही में नेटालके एवेंट-अनरकने बताना है 🏁 नेटाक्षमें भारतीयोंके साथ जितना सकता स्ववहार किया बाता 🕻 उत्तते स्याही

अच्छा बीर कहीं नहीं होता अधिकतर गिरनिटिया भारतीय बापसी टिकटका फायदा नहीं उठाते यही मेरी [मांबीजीकी] पुरितकाका सबसे बच्छा जवाब है औद रेसबे तथा दामगाहियोंके कर्मचारी भारतीयोंके क्षाच नगुर्वोक्ते चैता स्पनहार नहीं करते और न नराक्तें ही उन्हें स्पायने

विक्कुछ निर्देश निकल बाना असम्मव हो धारी।

एवेंट-जनरबके प्रति अविकतन सम्मान रखते हुए भी जनके पहले कवनके बारेंसे में इतना ही कह सकता है कि ९ वर्ज शतके बाद परवाने विना बाहर निकामीपर जेलमें दाल दिया बाना एक स्वतंत्र देशमें नानरिभवाचा निवाल बावमिक विषकार न दिया जाना मुसावीची या

१. यह मीर इसके बाद अकारतीय सन्दानकी समुक्रियोकता ^{१९} से **शुक्र स**नियाँ मनुष्टेरके मन्त ग्रह्मी लक्ष्मी (क्य १२१) पर्वेत-सम्बद्धि प्रतिगरिके व्यक्ति कार्ति है। देशिय दर्श प्रतिष्य की प्रत्यावना एक १ मीर एक१६-४४ भी । किया जाना और क्यर बढाये हुए क्या प्रतिकर्मीका क्याया जाना --- में सब अपर अन्डे व्यवहारके जवाहरण हैं तो 'अन्डे ध्यवहार' के सम्बन्धमें एजेंड कनरसंकी बारना बहुत विस्त्रान होती चाहिए। और अगर दुनिया मरमें भारतीमीक शान किये जानेनाने स्पनहारमें यही सर्वोत्तम है शो सावारम

वृद्धिके अनुसार, युनियाके दूसरे हिस्सोंमें और यहाँ भारतीयोंका मान्य निस्न न्देह बहुत ही इ'लामय होता चाहिए। बात यह है कि एवेंट-जनरस थी बास्टर पीसको सरकारी बस्त्रेमें देखना पहता है और उन्हें प्रत्यक सरकारी चीज न्यानुमा विनाई देना स्वाभाविक ही है। कानुनी नियोंप्यताएँ नेटाल-सरकारके कार्यकी नित्तक हैं और एजेंट-जनरतसे अपने-जापकी निन्दा करनकी तो अपेका ही कैसे की का मकती है? अगर वे या जिसके ने प्रतिनिधि 🕻 बह नरकार स्वीकार भर कर करी कि कपर नवाई हुई कानूनी निर्धास्त्रताएँ बिटिय गॅविकानके मुक्त गिडान्तीके प्रतिकृत हैं श्री बाज सामको मेरे सायके बाजने कड़े होनेकी वकरत ही न होती। मैं माहरपूर्वक निवेदन करता हूँ कि एवँट-जनरुनने वो तत व्यक्त निया है वसको अपने ही जपरायदे बारेमें किशी अधियुक्तक कवनसे संविक महत्व नहीं दिया था सबता। . गिरमिटिया भारतीय जाम शौरपर नापनी टिनटका फायदा नहीं उठाउ इस बस्तुरिवितरा इस प्रतिवाद नहीं करते। परन्तु यह इसारी धिकायनींशा वर्षातम बत्तर है इतका तो संबन हमें करना ही होगा। इन बस्तू-स्वितिने निर्मोपनाओंना अस्तित्व सूटा कैने साबित हा नकता है ? दुससे तो यह निरु हो तरता है कि जो भारतीय बायगी टिकरका स्थापका नहीं बदाने में मा ती नियान्यताओंनी परवाह नहीं नरत वा धनवे नावजूर प्रातिनेगर्ने बने राते हैं। यह पहली बात हो तो ज्यादा समझहार नोगोंका वर्तम्य है कि वे भारतीयोंनी बनती नियति महतूम करायें और उन्हें समाप्ती ि या निर्योद्दानि गामने निर सुनानेता अने करना जब नगन होना है। समर दूसरी बान हो तो यह भारतीय गामने वैद्ये और सामानुतिया जिमें यो नैम्बरनेतने ट्राम्बनाक-यन-केनरा मानान्थी जनन रुग्धेनेमें स्वीदार विद्या

नी निकासना प्राणामानिकारण सामानिका नाम प्राणामानिका है। यह शोह का एक और उपाहरण है। वे नियोग्याओंको नाम वर्गो है यह शोह कारण नहीं कि नियोग्याओंको दूर न विचा आवे या उन्हें जिनता कामम है जान मन्त्रमें आपी स्वस्तारको धोतक बताया जाने।

११६ छन्त्री गांदी बाद्यव फिट, ये सोन हैं कीन जो भारत कीटनेके बदले सस उपनिवेसमें बंद बाते

लेंबा है।

हैं? ये समसे नरीव वर्गीक जीर समसे क्यांसा वर्गी बाबाबीबाले विक्रिक क्षेत्र हैं जो जारकों सातव जानी भूकररिकी हाक्यों रहते थे। वे तराव तराव है सबर सम्मव हो सो वहां वर्गों के लिए. जीर तबर स्वकंत स्वारं से तराव रंगे सिंदा कर से तराव स्वारं के सिंदा के लिए हैं है। किर क्या साम्युत कि वे वर्गों सिंदा के वर्गों सिंदा के सिंदा के लिए हैं है। किर क्या साम्युत कि वे वर्गों सिंदा के सिंद के सिंदा के सिंद के सिंद

नमा द्राणकालमें बारे विवेदियों (१८०मींकार) की विकायनीकी सुनी कामी कामी नहीं है? फिर मी नपनी साथ होनेवाले दुर्धनहारके नावजूद वया है हवारोंकी संस्थान इंग्रिक्ट ट्राण्यकालमें एकत नहीं होते कि नहीं के नपने द्राप्त पेचनी संस्थान क्यांचा सरक्वारों सीविका स्थानिक कर सम्बंधी है? यह मी स्मरण रचना चाहिए कि भी पीछने नपना नक्याम वैते तमय स्वराण मार्ग्योम व्यापारिकी कोई नक्या नहीं की। में मार्ग्यारी स्वराण करसे वत स्वराण मार्ग्यास व्यापारिकी कोई नक्या नहीं की। में मार्ग्यारी स्वराण करसे वत स्वराणकारी की सामार्ग्य स्वराण मार्ग्यास करते हैं। स्वराण नेति स्वर्ण करते हैं। स्वराण निर्माणकारी स्वराण करते हैं। स्वराण मार्ग्य करते हैं। स्वराण निर्माणकारी स्वराण करते हैं। स्वराण मार्ग्य करते हैं। स्वराण निर्माणकारी स्वराण करते हैं। स्वराण मार्ग्य करते हैं। स्वराण निर्माणकारी स्वराण करते हैं। स्वराण निर्माणकारी स्वराणकारी हैं। स्वराण निर्माणकारी स्वराणकारी हैं। स्वराण निर्माणकारी स्वराणकारी हैं। स्वराण निर्माणकारी स्वराणकारी हैं। स्वर

राज्या कि दुर्ध्ववहार नहीं यह राज्ये तो द्रार्थ्यान ने बाबों तो जिर उन्होंगी मारदीनींसे ऐसा कहना हो जीर भी निर्मेश है। हम पाई परिवारके सरस्य हैं और उसी महिमानसी मिक वर्ष्ये हैं —हो सरकार मेर क्रिये वर्ष्ये हों —मीर हमें उन्हों बीमकारों और विशेषाधिकारोंका

सामनाएक विका नया है, जो मुरोपीय कंपीको मान्य है। नहीं विकास का विश्वकों केटर हम नेटान-जपतिवेशमें पर वे और हमें मरोसा है कि हमारे विश्वताका सामार मनकुत था। एजेंट-जनरकते हमारी पुरितकांके हम कनका प्रविवाद विचा है कि रेक्ने और द्वामपाहिनोंक कर्मभारी मात्योगिके साथ पहुंची बेसा व्यवहार करते हैं। जपर मेरे कहाँ हुई नारों तकत यो हों से सहसे बालूनी निर्माणवार्ष पानव साथित नहीं होंगी। और हमने मार्चनापण सो केवल कानूनी निर्माणवार्ष सायकों सरकारों के से हैं हम का हम हमारोपण साथे हम कि साथे मार्चनी स्थापण सायकों सरकारों के से हैं हम का स्थापण स्यापण स्थापण है कि एवँट-जनरक्यों नकत जानकारी याँ यह है। मैं बुह्यकर कहता हूँ कि प्रार्तायिक छात्र रेक्षे और द्वाम कर्मनार्थिक वर्ताय स्पूर्वोंक वैद्या ही है। मैं पहुँ-गहुँ जब पहुँ कह बन्दाय ही त्या या उठी कर क्यमण यो वर्ष हो हो यह ऐते हमाजर्थ दिया गया था जहाँ गुरून उपका प्रतिवाद किया वा एक्ट्रा का मैं नेटाक्यों स्थानिक छंपत्र के एक्ट्रा क्यार हाना किया वा एक्ट्रा का मी पर्य प्रतिवाद किया वा एक्ट्रा का बी हो । उपनिवेदण उपका क्यापक क्यार प्रवाद हाना वा और दक्षिण कार्यकार्थ प्रथम प्रवाद हाना वा व्याप किया वा ऐसी परिभाविकों प्रथम प्रवाद का प्रवाद हाना वा एक्ट्रा हाना हो है कार प्रवाद हाना हो है कार क्यार हो एक्ट्रा हो एक्ट्रा हो एक्ट्रा हो एक्ट्रा हो एक्ट्रा हो एक्ट्रा हो है कार क्यार हो है क्यार है क्यार व्याप हो क्यार है क्यार है क्यार है क्यार व्याप व्याप है क्यार है क्यार व्याप हो क्यार है क्यार है क्यार व्याप व्याप है क्यार व्याप है क्यार है क्यार है क्यार व्याप है क्यार है है क्यार है है क्यार है है क्यार है है क्यार ह

महासद्धा नावन

चोहानिसवर्गके प्रमुख पत्र स्टारने कहा है

भी पांचीने प्रनाचीत्वारक इंग्रों सौम्मताके साम और अच्छा किया है। उन्होंने स्वयं उपनिदेशमें मानोके बात कुछ भन्नाम भोगा है। परान्तु बनकी माननाएँ उन्हों प्रमाधित हुँहैं नहीं बीखती। भीर पह स्वीत्वार करना हो होना कि सुंखी चिद्दारी की प्रनिपर उचित क्यते कोई भागांत महीं की वा सम्बती। भी पांचीने करने उठाये हुए प्रामोंकी भीगांता स्वयः संयमके साथ की है।

नेटाक सरकारका मुक्तपत्र नेयास सक्युंग्री कहना है

भी पांचीने प्राप्तिः और लीम्बरांचे साथ निका है। उनते जिनतो निरुपाताची बरोमा भी या सकती है उतती जिल्लाका उनते हैं। और इस दिवारों हो कि, जब वे प्रपत्तिकारों आये थे वत समय वभीव-नेडल (मी बोटाइटी) ने पत्रके सार बहुत त्यावपुत्ता ध्यवहार गरी किया या में मनेसासे दूध क्यारा ही निम्मस है।

सम्भूत वावा वाद्मव मगर मैने निरामार वार्वे कही होतीं तो पत्रोंने तुची विद्धीको ऐसा प्रमाचपत्र न विमा होता।

कगमप दो वर्ष पूर्वकी बात है एक भारतीयने नेटाल रेक्तवेका एक इसरे बर्बेका टिक्ट प्ररीवा। उसे रात भरकी मात्रामें तीन बार परेवान किना

नमा। मरोपीय शातियोंको बास करनेके किए यो बार किया बदकनेको बाप्य किया क्या। माममा भवास्त्रके सामने गया और मारतीयको अतिपूर्विके तौरपर १ पीड प्राप्त हुए। सामसेमें नादीने यह नयान दिया ना में डेड बजे बुपहरको चार्ल्सटाउनसे रवाना होनेवाली पाड़ीके इसरे

वर्जेंके डिब्बेमें बैठा। इस डिब्बेमें तीन जन्य जारतीय भी थे। वे न्यू-वैशिलमें प्रतर मर्थे। एक गोरेने किलोका बरवाना कोला और "बाहर निकल का सामी "कहते हुए भूमको इसारा फिका। मेनै पूर्म-"वर्धे?" मीरेने जवाब विमा "वृं-चपड़ मत कर बाहर मा आ ! मुझे किसी बुखरेकी यहाँ बैठाना है।" मैंने कहा "अब नैने किराया दिया है तो सहित बहुर क्यों निकर्त ? " इतपर मोरा चका सभा और एक मारतीयको साथ तेकर बापस आया। मेरा क्याल है कि वह नारतीय रेलवे-कर्मचारी था। जलसे कड़ा पना कि मुसते बाहर निकल

आमेको कहे। इतपर भारतीयने मुझते कहा "भीरा तुन्हें बाहर आनेका हुदन दे पता है; तुन्हें निकतना ही होना।" बादन पारतीय चना यया। मैने मौरेते कहा, "तुम मूले क्यों इद्याना बाहते ही ! मैने किराया दिया है और मुझे यहाँ बैठनेका समिकार है।" गीश इसपर क्या हो पठा और बोला "वैश्व सपर तू निकलता नहीं है हो ने अभी तेरा कबुमर निकास बुँसा।" यह डिम्बेके अप्यूर का पदा और यसने मुझे पकरकर बाहर सीवनेकी कोश्रिश की। मैने कहा, "नुते

कोड़ को में निकल काऊँगा।" में उस किमेते कतर गया और मीरेने बुबरे रजका एक बुतरा जिल्ला रिवाकर मुझे उत्तर्ने चते बानेको कहा। भैने उत्तरे सताने अनुतार किया। मुझे को विश्वा दिलाया गया वह बाली था। येरा समात है कि जिस किलेते मुझे निकाला शया वर जनमें के कुछ मोन बैडाये मर्च को बैड बजा रहे थे। वह गोरा स्पृ वैतिलमें रेलवेशा जिला नुवीरहेंडेंड था। सामे -- मैं बिना विमन-बामारे

वैरित्सवर्य तक प्रया। मैं सो यया वा बीर मैरित्तवर्यमें वव वाया तो जैने अपने किलोनों एक योरै पुरुष एक मोरी स्त्री और एक बण्येकी बाया। एक अन्य यौरा क्रिजेके पास आधा और उत्तरे भेरे क्रिजेके बोरेते पूछा-- "बहु मापका बाव [नौकर] है?" मेरे सहवाधीने सपने छोटे बज्बेकी ओर तंदेत करके कहा - "हाँ [मेरा वाय -कड़का — है]।" इसपर इसरे मोरेने कहा — "नहीं नहीं मेरा मतकन बससे गड़ी है; में हो वह कुतीके बारैमें पूछ रहा है की मुझा कीनेसे बैठा है।" यह डेटी हुई माना बोलनेवाका मलामान्त एक घरर यानी रैकने-कर्मकारी था। डिक्नेमें बैडे योरे व्यक्तिने कहा -- "बीड ! बतकी परमाह न कीबिए; उसै रहने बीबिए।" तब बाहरवाले नीरे (कर्मकारी) ने कहा -- " में कुछीको योरे सीमोंके साव डिम्बेमें नहीं बैठने चूँगा।" उत्तर्ने भूमसे कहा-- "सामी, शकर आ!" मैंने पहा--"क्यों नका रे म्यूबैतिकमें तो मुत्ते दूतरे दिव्यते हटाकर यहाँ बैठाया गया वा " गोरेने चड़ा --- "हाँ ड्राँ तुशको निकलना होया।" और बहु डिब्बेसें चुत्तरेको हुना। मैने सोका कि मेरी बही पति होगी, बी न्युकैतिकमें हुई थी। इसकिए में बाहर निकल गया। गौरेने दूतरे वर्जेका दूसरा दिम्मा दिखावा । मे क्समें क्ला पवा । कुछ देखक वह दिम्मा काली पहा मगर कर माड़ी छूडनैवाली वी एक मोरा जलमें आया। बारमें एक पूतरा नोरा - वही कर्मचारी - बावा और वतने कहा -"अपर मापनी उस गंबेले पुलीके साथ सफर करना पसन्द म हो हो में आपके लिए दूसरा दिव्या देव हूँ।" (मिटास एक्स्ट्रॉइस्ट्र बुवबाट २२ नवम्बद्ध १८९३) । आपने देसा कि मैरिएसवर्यमें यदापि योरे सहमानीने कोई बापिस नहीं

भी कि रा भी रेक्टेक्टियांचारिने पार्टीय मात्रीके ताथ दुर्थवहार किया। अन्य पह पार्योक्ट स्ववहार नहीं है तो नया है मैं जानना बाहुँगा। और इस तद्यूमी बन्नायनक बरतार्थ समय होती सूत्री है। सुक्रमेंचे सीरानमें मातृस हुता था कि त्यार्थनमके एक मवाह्यी विधानान्याया यथा ना। वह वर्षोंक्य रेस्टेक्ट्रियोटीसे स्था। बराहकके

एक प्रस्तर दलरमें कि क्या जारतीय यात्रियोक्ते लाव जावरका स्थवहार

28 सम्बर्ग गाँगी पाइम्ब किया बाता है, असने कहा -- हाँ।" कहते हैं इसपर मुक्बमा सुननेवाले मिन्दिदेटने उससे कहा-- तो फिर, तुम्हारा मत मेरे मतसे भिन्न है। निमित्र बात है कि को कोन रेक्क्सेंस सम्बन्ध नहीं रखते ने तुमसे स्थाधा

वेक केने है। इस गामकेपर वर्षनके एक मुरोगीम बैनिक पत्र मेधक रवनर्धसमरने निम्नविक्षित्र विचार व्यक्त किये वे पराह्मीसे निर्दिगात है कि क्स करनके साथ बुरा ध्यवद्वार किया नग

ना। और यह देवते हुए कि इस तरहके भारतीयोंको दूसरे दर्जके दिक्य विधे वारो 🛊 बाबीको बाहुक परैकाल और अवसानित नहीं किया काला काक्रिए था। परोपीय और वेर-परोपीय वाहियाँके

बीच संबर्धके बाररेको बमाबासे ज्यादा करा देनेके कोई निश्चित छपार्व किये बाल बाहिए। जन उपायोंका प्रमौग काले या गोटे किसी भी व्यक्तिको सन्तापजनक व हो। इसी मुक्तरमेके बारेमें नेटाल मुक्तिने कहा है तारै वक्तिन माफिकामें सभी भारतीओंके साथ निरै कुतियोंका बैसा व्यवहार करनेकी वृत्ति संब्धे हुई है। इस बातकी कोई परवाह बही की भारती कि वे प्रिक्षित और स्वच्छताते प्रानेवांके हैं वा नहीं। इमने मनेक बार देखा है कि हमारी रैल-मादियोंने गैर-नोरे पाधियोंके

ताब सन्यताका व्यवहार विलन्तुक नहीं किया बाता। यद्यपि यह अपेका करना चर्चित न होगा कि एवं की बार के गोरे कर्मचारी चनके साम वैद्या ही आररफा स्पवहार करें, जैसा कि वे धुरोपीय धारियोंके शान करते हैं फिर भी हम समझते हैं, पैर-पोरै मानिजेंकि साथ व्यवहार करनेमें अगर वे बरा विवक शिव्यताने कान में तो इससे करकी शानने बहुर न ऋषेगा (२४-११-१८९३)। बस्थिय आधिकाका एक प्रमुख पत्र केन ध्वकृत्व करुता है

मेंडाकने एक विविध नवारा उपस्थित कर रखा है। जिल वर्गके कीरोंकि बिना उत्तका काम करना ही कडिन है जलीके प्रति कह करन कोरिक तिरस्कारका शेवन करता है। यह वैश्वते भारतीय जावाबीके निकल कानेपर ध्यापारका कैठ जाता अभिवार्य है और उस हालतको हरूरता-भात को जा सकती है। किर भी भारतीय कहाँ तकते व्यास्त तिरस्कृत जीव हैं। रेक्नाइमिं के पूरोरीयोर्के साव एक हो दिसमें स्त्रा स्त्री कर तकते हामगाहियों के ठ गूरी सकते होटकवार्क वर्गे ज्यास और चोकन देनेते इनकार करते हैं और सार्वजनिक स्त्रात-गहाँका क्यांग करनेके अधिकारों भी वे वैचित हैं! (५-७-१८९१)।

थी बुमंड एक पंग्नो-इंडियन हैं। मेटालमासी मास्तीयोंके साम उनका मनिष्ठ सम्बन्ध है। बम्होंने मैटास सम्मुरीमें फिला है

मानून होता है कि स्वर्धि बहुनंद्य सौंप नुने हुए हैं कि भारतीय विदिश्य प्रमा है हमारी एमी ही जनमें नहारासी हैं। तिर्द्ध एक इसी मारतिय प्रमा है हमारी एमी ही जनमें नहारासी हैं। तिर्द्ध एक इसी मारतिय निर्मा हमें प्रमा हुमी का प्रयोग होता है वह न किया साथे । सारतिय केवल विवस्ते करें पीरे ही वहुंकि सोगोंगे निर्मा [हुस्ती] वहुंकर नुकारते हैं भीर जनके साथ ऐसा स्ववहार करते हैं मानो वे किसी मारद सामते योग्य हैं ही नहीं। पहिंक मानेक सोगोंक सामत ही उनकी नवर्ष सारतीयों मारों बोग या पंत्रमान नामा सामा है। साम तीरार सामती सीम नारतीयोंगे "पुरुष्ठा मक" मार्स बहुन करते हैं भीर यह नुकार बहुन हुमें सीम सामतियों ने मार्स करते सराहमा नहीं सिर्म नुकार बहुन हुमें हैं। मीरे सोगोंने जनको सराहमा नहीं सिर्म हुमें हैं करता होती है।

में समाता हूँ दि में भारे हत बात्रमात जानित बानके निय काफी बाहरी माना है दिने हैं कि रेलने-मंत्रारी जारवीपीति साम प्राृश्य अद्याद करते हैं। दुरायाधियों मार्गापीयों समझद समद हैंगे नहीं दिवा जाता बन्ति बहुंदी भागार्थे समझ्येत समझ दुरारहों थेने दिवा जाता है मेंद्र साम एक बैठामें हुनारी बैटपर तथा दिवा जाता है मेंद्र माने हैं मेंद्र मार्गापीय कम्माद्रीय समझ्येत जाता है मेंद्र मेद्र मेंद्र मेंद्र

१९२ छन्ति श्री शहसम् भिक्ता न में यही माननेकी तैयार है कि हमेखा और सब असाकरोंने

मिक्याही है।

भारतीय घमानको चनुविधीकता बाबिन करनेके थिए बाँकड़े देना वसरी मही है। एवमे यो इनकार नहीं किया नया कि को मारतीय नेटाक बाते हैं वे बानी जीविका घणाँचित करते ही हैं, और हो मो बारीइनके बाते कर इन्ग्याकरों हम बांगीन-वायबाद नहीं रख एकड़े। निविच्छ पूकर् वरितर्योंको कोइकर, इसरे स्वालींने रहना मा बहु व्यापार करना थी सम्मन नहीं

होता। इत पुषक् बस्तियोंका बसान बिटिस एजेंटने इन सम्बॉर्मे किया है

"ऐये स्थान विनाना जमयोन कुन्न-क्ष्यर इन्स्ट्रेज करोड़े थिए होंगा है मोर बहा धहर भीर करिके मोफो मांग्रेमें क्षिरिमस्कर बानेपाठ पाने पानीने सिना पुरुप पानी है हिंग हों। हम बोशुनिकारों मोर मिटोरियामें स्विकारपूर्वक पैतन पदिश्वीर महीं बन छक्ते। ९ वने पठके नाव नार्य नहीं निक्रम पहने। पिता परवानीके पाना मही कर एक्टे। रेक्साविमीन पहने पा सुरो वर्गमें बागा करिते कानून हमें पोक्ता है। इम्ब्याध्यों बचनेक किए हमें बीन पीक्सा एक विशेष पंजीकरण (पितप्रेक्षन)-कुक्त बेना पपना है। मीर बचार्य हमारे साम दिखें "बक्टी-फिरो मान-बचनाव" बेना पपना है। मीर बचार्य हमारे साम दिखें मानार्यक्र मेर विद्यानिकार

प्राप्त नहीं है किर भी बगर भी नेश्वरक्षेत्रने हमारे भेजे हुए प्रार्थनापनमी वरेला कर वी हो हमें बतियारे हीत्रक हेवा करतेवा आयेख दिया वा वर्षमा। हम्मकाको बाराधीयीपर बादर करतेवाले क्यारे हारे पामकेका इतिहास वशा मनोरंबक है। नहीं बच्छोड़ इत्या ही है कि स्वयक्ते अध्यक्ति

सबी में घंडका वर्गन नहीं कर चकता। फिर भी में सापछे यह मार्थना दो कर्षमा ही कि बाद हुए पूरिका" से उसका सम्पन्न करूर करें। हे मुझे यह क्यांना भी मुख्या नहीं चाहिए कि सारमीसीके कि वेरों धोता करिका अपराय है। सार्थें के भी रहें में मध्ये प्रमान मुख्यत्रके सम्पोर्ग कर किता है। बार्वें को सिर्फेंट काहिम रे एकटर ही बहु पूर्ता अस्पन्न कर किता है। करते एक विधेय काहृत भी मंत्रूर किया है। उसके हारा हुने किता है। हाक्टोंनें बहु स्थापार करते केही करने सा स्थापना करनेवाले साहिक सनमेंद्रे रोक दिवा गया है। स्थार हुम दन सम्पन्नत करनेवाले साह हुने बहु प्रमान

111 दिया चा सकता है। हमें राज्यसे करेड़ दिया बया वा और हमारे बस्तु

महासद्धाः भावन भंडार बन्द कर दिये नये थे। इससे हमें ९ पॉडकी हानि हुई। हुमारा

मह बुलका सबतक जिलकुम जनसूना पढ़ा है। केयकी संसदने एक विशेषक पास किया है। उसके बारा देस्ट संदन

म्यतिसिपैक्षिटीको विविकार दिया गया है कि वह भारतीयोंको पैयल-परियोपर चक्रनेसे रोकने और सन्द्रें पुषक् वस्तियोंमें बसनेको बास्य करनेके क्षिए क्युनियम बना के। उसने इंस्ट फिन्वासैडके विविधारियोंको भारती भौंको व्यापारके परवाने न दैनेका बादेस भेजा है। केप सरकार ब्रिटिस शरकारके साम इस उद्देश्यमे पत्र-मात्रहार कर रही है कि उसे एसियाहर्योंकी बाइको रोकनेका कागून बनानेकी अनुमति देनेके किए राजी किया जा सके। चार्टकं टेरिटरीजके सोम एशियाई स्थापारियोंके किए अपने वेसका हार

बन्द करनेके प्रयन्तीमें समे हैं। समाप्ती-सरकारके धासनाबीन पृक्तिकरी एसीवे तका नीरवेनी नामक मस्नियोंमें बमीत-बायदाद हुम न हो लरीद सकते हैं और न अध्यक्ष प्राप्त कर शकते हैं। इस समय यह प्रस्त भी चेम्बरकेनके सामने बनके विचारा भीत है। दान्सवालके समान वहाँ ती भारतीयोंके लिए वेसी सीना चरीवना

नपरान है। इन प्रकार, हम बारों मोर प्रतिबंधींते बिरे हुए हैं। बौद, बबर हमारे लिए यहाँ और इंग्लैंडमें कुछ नहीं किया बया तो सिर्फ समयका सवास

है कि एजिन आधिकारी बिष्ट भारतीयोंका नाम-निधान मिट जायेगा। मीद, यह प्रस्त छिफे स्वातिक नहीं है। सन्दन शहरतके कवनानुसाद, यह प्रस्त भारतके बाहर दिल्छ भारतीयोंकी मान-मर्गातका" है। श्रीहरर ['टाइम्म'] कहता है, अनर ने दक्षिण साधिकामें नह स्निति (अर्जात ममान म न-मर्याराधी) प्राप्त करनेमें बसफल रहे तो इसरे स्वानोंमें उसे प्राप्त

करना उनके किए कठिन होया।" बापने असवारोंमें पटा ही होगा कि भारदृत्तियाई उपनिवेशीने भारतीयोंको बुनियाके उस मानमें बसुनेसे रोकनेका कानून स्मीकार किया है। ब्रिटिश गरकार इस प्रश्नको कैने निकटाती है यह जानना दिलवरप होगा। इस सारे हेनमायका संस्था कारण वक्षिण आधिकाके प्रमृत पत्र कीर

व्यक्ताके बस समबंक सम्बोंने स्वस्त किया आने जब कि उसके सम्पादक वरित्य सामिकी पत्रवारोंके सुरताब भी सेंट सेवर वे तो बत है

ttv

वित चीनते मानतक मारी धनुता पैश होती हा पही है। 🛂 🖁 इन व्यावारियोंकी स्थिति । और इनकी स्थितिका खमाल करके ही दनके व्यापारी प्रतिस्पविधीने जननी स्वार्ण-विधिके किए, सरकारके भाग्यमके इन्हें वह बच्च देनेका प्रथल किया है, को प्रत्यक्ष अनर्ने बहुत-हुन्न मन्याय भैता बीचता है।

नहीं पन जाये बहता है

व्याचारिक सक्तमताके कारज इसारे देशवासी इनके साथ देवी (मर्गत् विक्रम शाहित्काक) सोपों बैसा व्यवहार कराना चलते हैं तो बनपर कर्म-ती आही है। मारहीयोंको वस मान्यानिकारी स्तरवे कन्नत कर रैतेके लिए हो स्वयं बढ़ कारल हो काफी है कि वे प्रवल कातिके विकास प्रताने सफल सप हैं।

नारतीयोंके प्रति बन्याय इतना श्यक्त है कि अब केवल इन नोर्वेकी

बगार वह १८८९ में सड़ी वा बज कि क्यार्यक्त सक्य किसे गये वे तो बय पूना सही है। कारण दक्षिण जाफिकाकी विचान-निर्माणी समाजेति समाप्तीके मारतीय प्रचानगाँकी स्वतन्त्रदापर प्रतिकृत्व समानेके कानून बनानेमें नदमत सरनरनी विकाद है।

वहाँ हमारी जगरिवितिके बारेमें इसरी आपरिवर्ग भी सकाई गई है। परन्त के कसीटीपर ठक्कर नहीं सकेंगी और इसी प्रतिका" में मैंने जनका बर्नन किया ही है। फिर भी मैं मैदास स्वयद्धेंगरस एक सबर्व रेता हूँ। इस पत्रने एक बार्गतिका उन्तेक किया है और उसकी राजनीतिजीपित

जीवधि भी समाई है। जार वहाँतक वापति सही है, हम इसके स्वापस पूरी तरह तहमत है। इस पत्रको व्यवस्था मूरोपीमोंके हाबमें है और एक हमय वह इमाध नौर विरोगी था। सारे प्रशानी चर्चा सामाज्यिक वृष्टि कोलरे करते हुए अन्तर्में यह कहता है

इसकिए, सामव अब भी देखा वा सकेमा कि मारसीमंकि विदिश क्यभिवेकोंमें भागेते भाग को कमिना मा गई है दे पुनस्करमको पुराल-पंत्री शीति स्थीकार करतेसे कतनी कर नहीं होंगी, विश्वनी कि जनमें वतनेवारे भारतीयोंको राहत देनैवाले काननंदि बतारोत्तर और विविवसायर्थ प्रयोगसे होंगी। जातीयंकि बारेमें की बानेवाली एक मुक्य आपति यह है कि वे पूरिरीय नियागिक अनुसार नहीं पहते। इसका क्याय यह है कि बारों क्यारा बच्छे मकानोमें पूरिनेक किए बास्य करके और उठाया कारो। ऐसे प्रवासियोंको पूरी सरह बस्तव करके उनको पूरानी अनुसत विवसियों बनाये रकनेका प्रयान करनेकी अपेका खायर बनसे यह मौत करना क्यारा बासान भी होवा कि वे सपनी नई हाकवेकि अनुसार कपर करें। बारम यह मनुष्यवासिक यहान प्रयक्ति सन्वीस्त्रोंके सिषक सनुष्य हैं। हमारा विकास स्व भी है कि बहुत-सी दुर्मवनाएँ इसस्यि पैवा इस्र हैं।

सनुस्य है।

हमाण विस्वाध यह भी है कि बहुठ-यी दुर्मावनाएँ इसक्षिय पैवा हुई हैं

कि सीमा बाधिकांके कोरोंकी मारतमें युनेवांक मारतीयोंके बारेसे समुख्य जान गई है। इसकिए इस वाहस्यक बातकारी देवत दिखा बाधिकांके कोधनताकी सितान करनेका प्रयत्न कर रहे हैं। कानूनी वाहायों और नियेगोंके बारेसे इसने भारत और इंस्केट बोनों देशकि कोध्यतको अपने अपनुष्क प्रमानित करनेका प्रयत्न किया है। बाप वालते हैं है कि इंकिटों करार और अनुसार दोनों पाती किया मेदनावके हमाण समनेन दिखा है। असर स्थानने वहीं सहान्त्र मुद्रिके साव इसारे स्थेगके पाठा समनेन दिखा है। असर स्थानने वहीं सहान्त्र मिला वास्त्रिकांक प्रयोगीयोंकी नजरोंने इस एक करम की उठ पत्र है। वहिंद पत्रीके स्थान करने पहुंच पूर्वर पहुं है। कोसिस्य विस्था समित वीष्कांकोंक हमारे किए काम कर रही है। भी मानतनरी वनसे संस्थान वीपने स्थान हमारे किए काम कर रही है। भी मानतनरी वनसे संस्थान साम मौका साकते नहीं बैठते। हमारे करनके एक सबसे वह हमारे कहते हैं

अन्याय इतना परमीर है कि, मुसे बाधा है, यक्की जानकारी होना ही उसे हुर करनेके लिए काकी होगा। में तब अवस्तरियर और तब कप्नुवत सरीकींते कह बाधह करना अपना कर्तम्य तनकाता हूँ कि समूर्क विदिश्य साम्राय्यें और सहयोगी राज्योंने समामीकी भारतीय प्रवाको विदिश्य प्रवाकी पूरी मान-नर्यादा क्वनम्य होनी चाहिए। आएको और हमारे बनित्य मानकारी परासीय निर्मोकी गही वज दुहताके साम सिलायार करना चाहिए। ऐसे प्रान्तपर सामातिता हो ही नहीं बकता। कारण यह है कि कोई भी सम्प्रतीता हो। चलले भारतीयाँका निर्मित्त प्रवाकी पूरी मान-न्यादार भोगनेका मुकपूत स्विकार का काम्री। व्य सिकार उन्होंने साति-कालमें स्वप्ती क्वासारीसे और पुत्रमें अन्ती तेवासीसे क्यांकित किया है। इस सिकारका सावस्तान वन्हें एपमीटालें साथ रामीकी १८५८ की मोचना हारा दिया पया वा सीर सब तमानीकी सरकारने हमें स्वयं वचने मान्य कर किया है।

मुद्दो प्रश्नक काम्रा है कि काविरकार न्याय किया जायेगा। अलका प्रोय सम्बद्धा है। राफल होनेके किए इतना हो करती है जि अल अलने मोर्चेचर पुट रहें। यह मोर्चा यह है कि पतिन जाकिकावती विक्रिय मारतीय प्रवासन हमारे अपने हो जयनिकेशों और स्वतन्त्र निर्म-राग्योंने करनी विक्रिय प्रवासी मान-मार्वासी विश्वका वन्हें सजाबी लगा विक्रिय संघद योगीने जाक्यायन दिया है, एक समान पंचित किये का रहे हैं।

कोकसभाके एक पूर्व उदारवधीय सदस्तका कवन है

वर्धाववेद्य-सरकारणे जानके साल कनुस्तित व्यवहार किया है। जगर विक्रित वरकारने व्यक्तिवर्षोंको अपनी नीति वृदक्तीके तिथ् वाच्य नहीं किया तो जनके साल वरत्या वरताय भी वैद्या ही होया।

एक बनुदारवसीय सदस्यका कवन है

बारी सरबान एक बन्य धनमें सिकाते हैं

ये नजी पाँति जानता हूँ कि विश्वति सानेक कविनाइयाँति जिसी हुउँ
हैं। परन्तु कुछ पुर्दे सार्क विकार्त येते हैं और, नहरित्क में काता तकता हूँ यह सन्त है कि मारामाँ किएहें बीचानी इकरारनामें भागा जाता है कनका पर विश्वन सारिकामाँ कीकारों परारक्का जीना रेकानेस हैं। यह निरामित मारानिय कानुमके विकारमाँ प्रतिकृत है और मारानामी विश्विस मानानी विसे गारी निर्वामाणिक सारानामां विश्वनक सामन होता है। किर, यह भी वृर्वत स्वस्त है कि बीचार पनराम्वयों और श्रामक नेताकमें भी सरकारका तीना और स्पय्य इरासा भारतके निका तिवाँको "बत्देकना" कीर उन्हें अपना स्थापर अपभानवाणक परिश्चितियों रुरहेंचे किए साध्य करना है। हात्यसकामें विदिश प्रवासी स्वतन्त्रतान आँखो कारने-कार्यनोके को बहुत्ते पैश्रा क्रियों वाले हैं वे इतने ककर हैं कि उन्तरर संचानर स्थान भी नहीं दिया का सकता।

एक और अनुशासकीय सदस्य भी कहता 🕻

कारकी प्रकृति प्रतासको योग्य और वर्षि स्थानपूर्व है। इसकिए में करनी प्रतिसन्द महत्र करनेको सैवार हैं।

इंग्लेडमें ऐसी सहातुमुधि बायत हुई है। मैं बातता हूँ कि मही भी हमें बहैं सहामुम्दि प्राप्त है। परणु मैं बहन्दे साब सोबता हूँ कि हमारे प्रयोगनपर बाप बॉर में अवादा स्थान दें। माराजें क्या करलेबी बन्दर्स है यह शुक्तिम स्थानकक्ष्में बपने एक बोरसार बयतेक्समें बड़ी बच्ची ठर्ष्ट बताया है

यहाँ अन्य बार्टिक वाच-साथ कोरदार और स्वस्तवार कोकनत है, और सरकार हवाइमी है। उनता हमें किन करिनाइनोंका सामना करना हता है वे उन करिनाइनोंका सामना करना हता है वे उन करिनाइनोंका सामना करना हता है दे अन करिनाइनोंका सामना करना बाता है कि तामाय सार्वविधिक संस्थारों द्वारण करना प्यान इस नहरूच-पूर्ण विध्यक्षी और मीहें और हमारे देशनाई जिन करनें बोसनप्यक्ष कर रहे हैं जाहें दूर उन्होंना सामीलन केन्नेमें निम्न पहुंच कोकनता निर्माण करें। बासनामें में क्या हाने कासूर भीर समाप्तवारी ही क्ये हे और दिन प्रति दिन होते कास्त ही कास्तवार केन्नेमें एक विश्वकार भी विकास नहीं क्या सारता।

हमारी स्थिति बया है, मैं बार ज्यादा ताफ राज्योंनें कह हूं। हम बानते हैं कि बनावारायके हमते हमें को बायान और बनायर सहना पहला है पर्छ सीचे विदिश्च बरकारके हराज्येग्ये हुए नहीं किया या सकता है। पर्छ पे पे किया हराज्येग्ये प्रार्थमा भी नहीं करते। हम वहे जनताकी नवरमें नाते हैं ताकि सब समाविक न्यायरिक कोण और अववार वापनी क्कता क्षेत्रसम् हो सकती हूँ और तरण तो वे होँगी ही नहीं। बहुतिक क्षेत्र कम्मोली और तैरालका सन्त्रस्थ है, पूँकि मौपतिवेधिक क्षात्रीलम उनके ताल कार्यात समिकारते वालें कर तकता है, इवकिंद क्षांक पुरुष्ठ हरतक मासान हो नया है।

सह मामका उनमें हैं जो सरकारके तीचे जवाब देनेके माधकों में करते क्याप्त प्रत्न कार्मनाके होते हैं। हुए एक दिवस्तावारों वाधानकों केशन विकारों हैं। स्तर पक्ष दिवस्तावारों वाधानकों केशन दिवस्तावारों हैं। और कमाना ऐसा है कितने आधापना साक है, और दिवस्तिक तम्म तथा क्या दोनोंको दुविस्ते सरकार होता क्षाप्ता है। साधानकों कुक मान मने हैं हुतर जेनेसाहत बाकों है और मीड़ माइके क्षेत्रोंसे कन जानावींक तौनोंने और कमानावार पनन कर रहें के आधानकों के मेनी में माइके केशोंसे कन जानावींक तौनोंने और कमानावार पनन कर रहें के आधानकों है जिस कार्मा केशोंसे रेज वर्ग और बातावींके किया कार्मों निया है के अपर कत्त लोगों अपनी मीविक्ता वर्गांकि करते केशोंसे रेज में कार्मोंकि कार्मोंकिंग कार्मोंकिंग है क्या है क्या है क्या क्या केशों नियानिका किया लोगों है क्या राज्य है क्या क्या कार्मोंकिंग कार्मोंकिंग कार्मोंकिंग क्या है केशों केशों केशों केशों कार्मोंकिंग कार्मोंक

भारतीयोंची बावस्थकताई कत हैं। भारतकी बातावीमें तमातार वृद्धि ही रही हैं। इतिक्रम् एक इसक चहुन वर्षक स्थान मानवार ही। सेर इस प्रस्तान कृष्टि यो होगी। इसारे बात्रिक्यारी योर कण्ड्रमा किर कर प्रस्तान कृष्टि यो होगी। इसारे बात्रिक्यारी योर कण्ड्रमा प्रसान कर्मा कृष्ट करारे हैं कि इस भारतारे प्रस्ता केरा करारे होगी तमान चानावर्षाणे गीवृत है विदेश करारोपीको केरावें बाकर बीविका-तिवाई करनेवा पूरा विकास है, और सब वे चूर्व माने बात्रकर कराये क्षावार कर्मा क्षावार कराये हमाने क्षावार कराये क्षावार कराये क्षावार कराये क्षावार कराये हमाने विकास हमाने क्षावार कराये हमाने विद्या हमाने व्यवस्था कराये हमाने क्षावार कराये हमाने क्षावार कराये हमाने कराये हमाने क्षावार कराये हमाने हमा

साना और यह स्थानस्था करना है कि विकिस प्रचाने साथ चाहै वह किसी भी रोपडी क्यों न हो, न्यायपुत्रत स्थवहार किया वाये। और फिर

मारतमें अंग्रेजों हिलुजों सीर मुसकमानेकि सामने यह प्रश्न मुंह वाबे खड़ा है कि जिल नहीं जीकोशिक प्रवृत्तियोंकी इतने दिनों और इसनी करपुरुकाते प्रतीका की बाठी रही हैं, जनका आरम्म होनेपर भारतीय ब्यापारियों और अबदुरोंको कानुनकी गवरमें बही मान-मर्मादा मिलेगी या नहीं विश्तका कपमीय अन्य तब विकिस प्रजाएँ करती है? वे ब्रिटिश बालनाचीन एक देशने ब्रिडिश शालनाचीन इतरे देशमें स्वतन्त्रता-पूर्वक जा-का बकते हैं और सहयोगी राज्योंमें बिटिल प्रवारे व्यविकारीका बाबा कर सकते हैं वा नहीं ? या, चनके साथ बहुत्कृत बातियोंके बैसा व्यवहार किया जायेगा और उनके बाजारण स्थापारिक जानायमनपर बन्मति-पत्रों तथा परवानींकी व्यवस्था लागी आयेगी और पार्हे बचने ब्बापारकी स्वामी अपहोंने किन्दी पुरुक पन्ती बस्तियोंमें घेर दिया आयेवा बैसा कि बाल्यवाल-सरकार करना चाहती है। ये सवाक यन सब भारतीयोति सम्बन्ध रखते हैं भी भारतके बाहर साकर सबनी बार्विक हासत सुवारनेके हज्ज्यक है। भी चेन्यरमैनके ग्रन्थों और हर वर्तके भारतीय पर्वोके वह बस्रते स्पत्न है कि येंसे प्रार्मीका सत्तर केवल एक ही हो सकताहै।

में उसी पत्रधे एक और उजरन दैनेकी स्वतन्त्रता लगा

यो बेम्बरतेनके सामने को प्रान निकारिक निय का उसकी निश्चित याक्या इतनी बरकताते नहीं को का तकशी। एक और तो उन्होंने विदेशी राप्योंने प्रिकासने हुए करानेकी इस्तिते तकान विदेशा प्रवासीके तमान व्यक्तियों " और तमान नियोग्याकारिक रिवासन स्थादत-निर्मारिक कर थिये हैं। और तक बात तो यह है कि इत निवासनाते इनकार करना ही ससम्बद्ध होता, न्योंकि हमारी मारतीय प्रवा बचादारी और ताहबके तान बानों पुरानों इनियाम में दे विदेशकी कहाई कहती वा रही है और उसने बचनी बकादारी और ताहबते तनाव विदेश 188

अनताकी प्रश्नेता उपाजित कर की है। पेंड ब्रिटेनके बात मास्तीय जातिबोंके कार्ये की योजा-असित मुर्रासत है उससे उसके राजनीतिक प्रमाव सीर प्रतिपक्षामें बहुत वृद्धि हुई है। इन बातिबोंके रक्ता शर्वा ग्रीवंका पूडमें तो जनवान कर तेना परन्तु ग्राम्तकलके उन्नमीयें उन्हें विभिन्न नामके संरक्तमते वंशिन रखना विदिश न्याय-वृद्धिकी अवहेलना करना होया। जाटतीय मजार और न्यापारी मध्य एशियाते लेकर अस्ट्रेकियाई उपनिवैशीतक और स्टेड्स सेट्समेंड्सते केकर बैनारी डीपी तक सारी पृथ्वीपर मीरे-पीरे फैल रहे हैं। वे बहां भी बाते हैं, बमल क्पते अपनीनी और अवका काम करतेशके सिक्ष होते हैं। में किसी मी सरकारके अमील नमों न रहें, कार्यका पातन करनेवाले नोड़ेन्ते में सन्तीय माननेवाले और परिभमग्रील रहने हैं। परम्यु वे मजदूरीके निय मित बागुका जी भाषाय स्ति है वहीं बपने इन्हीं सब्युवीके कारण इसरेंकि मयानक प्रतिक्रमी वन बैडते हैं। यसपि इस समब प्रवासी भारतीय मजबूरी तथा छोटे-छोटे ध्याचारियोंकी कुल संच्या लाखींतक पहुँच नई है, वह इतनी तो हालमें ही विश्वताई पड़ी है कि उत्तरे

राजनीतिक सन्वादका विकार करावा कार्ये। परन्तु इनने जिन तज्योंको भूनमें प्रकाशित किया ना और जिन्हें गर सप्तामु भारतीयोंके एक सिन्धर्मशक्ते भी चेन्वरक्षेत्रके सावते पेस किया ना में बताते हैं कि बढ भारतीय मक्ट्रपैंकी ऐसी ईव्यांते बचलेकी और

विवेदों या विदिश्न वयनिवेदोंने प्रमुक्ते प्रति ईच्या प्रत्यप्त हो, या वर्गी

कर्षे बहु अविकार प्राप्त करामेक्ट, जिनका उपमोध इत्तरी ब्रिटिय प्रजारे करती है चकरत ना सड़ी हुई है। सरवती बम्बईकी जनदाने अपना निर्वेश निविषत कर्मोर्से व्यक्त कर दिसी () इम अजी नीववान और अनुभवद्दीन हैं। इमें बापछे --- अपने वहें और --म्मादा स्वतन्त्र माद्यंति -- संरचनकी प्रार्वेना करनेका वनिकार है। मापापारींकी जुनाड़ीमें जबने हुए हम केवल वरेंसे कराइ सकते 🐌 नापने

< तथाने नार्ने एक मत्यान नास किया विसमें रक्षिण नामिकी नार्मानीके प्रति सम्बंबहाएका निराम भीत कराडे कहा विशानकी गील की गी की ।

इमारी कराह मुग सी है। जब अयर चुआई। इमारे क्वेंसि इटाई नहीं बाती वो बोप बापके मल्पे होगा।

तती वी बाय कामक मत्य हामा।' - प्राइस करेंग्र प्रेस महासमें १८९६ में क्यी अंग्रेजी प्रवि दूसरे संस्करमसे।

१० घन्यवादका संवेश

महात सम्बद्धार २७ १८ ६

सेवामें सम्यादक दिन्द् नद्रास

महोदय

कस सामको महासकी बनता दक्षिण आफ्रिकावासी भारतीयोकि पसका रागर्पन करलेके किए जिस सराहतीय कपने एकन हुई, उसके किए मैं उसे बन्तवाय म बूँ दो मेरी इत्यन्तदा होगी। बास्तवमें हर स्मनित समाको ज़ब सरक करनमें एक-दूसरेसे होड़ करता बीख रहा था। और स्पट्ट **है** कि वह वैसी सफल हुई भी। मैं जापको भी भाग्दोलनका हादिक समर्वन करनेके किए जन्मवाद देता हैं। आपके समर्वनसे सामव इमारे पक्षकी वर्म परता नीर हमारी सिकायतीकी नास्तिनिकशाका बीन होता है। मैं मदास महाजन सभाके सौकवान मित्रमाँको खास धौरते भग्यवाद वेदा है जिन्होंने मबच्च परशाहमे परिचन करके शत्राका भागीजन किया और हमारे कार्यको मपना ही बना किया। मैं यही बासा करता है कि बदयक जो सहानुमृति और समर्थन प्रदान किया गया है नह चारी रहेगा और हमें स्थाय प्राप्त करनेमें बहुत देरी न क्येनी। मैं जापको बार बनताको निस्वास दिकाना काहता हूँ कि गत राविकी समाका समाकार कर दक्षिण बाधिका पहुँकेगा वह वहकि मास्तीवंकि इदगेंको हुएँ उल्लास और वस्पवादकी भावनासे भर देता । ऐसी समाएँ हमारै कपर छाई हुई विपत्तिकी पटाकॉर्मे आधाकी किर्दे वर्तेगी। चूँकि रातको बहुत देरी हो गई थी मैं इन भावनाओंको स्थक्त नहीं कर सका। इसकिए यह पत्र किया रहा है।

१ पम मात्रमधी छपी वर्ष प्रतिवेश ग्रांबीजीने नवामें वितरिष्ठ की वर्षी।

सम्पूर्ण यांची शहबब ttv. मेरी पुरितका की नकलोंके किए जो छोता-सपनी हुई, उसका बुस्त ऐसा

निकास रहा है। जैसे ही बड़ तैयार हमा उसकी नक्सें सभाके उपकारमीक मंत्रियाँसे मिस धर्मेंगी। भो०क• मंद्री [क्येक्टेने]

ना कि मैं बसे सरमतासे नहीं भूकुना। मैं पुस्तिकाका दूनरा संस्करण

हिन्दु २८-१ -१८**९**६

११ पत्र फर्बुनबी सोराबनी तसेयारसाँको

केर हैरवर्त होसक

बक्तार ५ १८९६

प्रियं भी तनेवारता

भापका पिक्रमा पन मुझे यहाँ भेज दिया नया था। मैने आपको मद्रासमे पत्र किनकर करूकतेके पतेनी मूचना वे वी थी। बहु पहुँचनेपर मी किना ना । बाद्या है जापको दानों पर जिल नवे होंने । बढ़ विकास गड़ी है कि नेटाल बानेमें आपको बाविक धान करना

पहेंगा। मनर मुझे निरुपत है कि कार्य इस स्वावके योख है। मैं क्रॉस्ट बहान पकड़नेकी कोधिए करूँगा। वह इस माहकी १

तारीकके पहले रवाना होता येती अपेशा है। कारा आप औ उद समय तक तैयार हो मर्के ।

क्या जाप नेरालके तथे मदाविकार कानून पर विचार करेंथे और अवर बम्बर्के प्रमुख बकी क करनी राथ मुक्त वें तो के जेंगे ? मताधिकार-मार्वना पनमें बापको विवेदकका पाठ निरा जायेगा। दुस्तिकार्ने चतुपर एक कानुनी राय भी है। वहाँ पाल की हुई कोई भी राय नेटानमें हनारै बहुत कीन कायेगी ।

१ इप्रे प्रसिद्धाः ।

" होदलीन के ब्रिजिनियों मैंड नेरा सवास है कि वहाँ सभा सुकदारने सप्ताइनरमें होयी। इसका

मालि सै निर्मय कल किया जावेगा।

व्यापद्य इरवसे मो• क॰ गीपी

वड व्यक्ति रुत्ते । सीतन्त्रः व्यक्तम्यः सदुत्तवी सोरारणी सन्यान्ती । १२ "स्टेट्समन" के प्रतिनिधिकी भेंट

मांचीबीके कल्कणा पहुँचनेके कुछ समय बाद स्टेनुलमैनके प्रशिनियिने कनमे भर की की। मीचे की हो रिकोर्ट उसी मेंदकी है।

महम्बद १ १८९६

e>>नमेनर प्रतिनिधिने पूछा "जिस्टर नांधी दक्षिण बाक्षिकार्मे भारतीर्थोको क्या कर है यह जान मुझे बोई-से शब्दोंमें बतायेंगे?"

थी गांबीने जनाव दिया "वर्षिण माजिनाके बहुवसे मार्यो --- सेटान

केन बाक बुद होर बक्तिय बारिकी नवराज्य तथा बारेंज भी स्टेटमें जीर अन्यत्र बारतीय बसे १ए हैं। और इन भव अगृहोंने वे नागरिकताक बाजुनी अविशारोंने कत-स्वादा भागाने वंशित है। परलू में विशेष रूपने नेटालके बारतीयोका प्रतिनिविष करता है जिनको संस्था बहाँकी कमजप बीच नाराकी आवादीनें में कोई प्रवान हवार है। यहाँ बानेवाने नवने पहले भारतीय तो जनवत्ता नजहर ही ने जो महात और वंगालये बहाँके विभिन्न

बारोंमें नान नरतेके निए निरिचत बबकि और चर्तीगर से आये मये से । इनमें ने मविकास हिन्दु और वृक्त मनतवान की थे। गर्नेही अववि उन्होंने पूरी की और उनने मुक्त होतेगर उन्होंने बनी वैधर्मे बन जाना कान्य विया। स्पॅरि प्रकृति देना कि बातान्त्र विषत्वाति कर्ना और नुन्त्रवंकि वैदा करतेवें तथा नश्योके वैगीयाओं है नियतने में तीतने चार बीह नागित तर नहीं देश कर नवते हैं। इस तरह इस महम ऐसे रकांच भारतीबींनी सन्ता कानिवेधमें कोई तीन हजारक करीब है। इनके

बनाया कीई नीनट् ह्यार धारेश्व नजूर बतनी धारीको कुछ कर छहे

सन्पूर्व नांदी वाहमव

255

है। फिर, सम्बर्शन नेरिये बाते हुए एक वर्तके प्राय्वीय वहीं और हैं वितकी एंक्सा कमाग पांच हुबार है। ये मुख्यमान है और क्षायरके कार्यपार एक पेपमें गूच्य गते हैं। इनमें ये कुछ बच्छी हास्तरों हैं। बाठ जों के वास कार्यपान-वास्तार है और वो के पास बहाज भी हैं। सार्यानिकी बहाँ वसे बीय वार्य कीर हस्से क्षिक भी हो पने हैं। और चूकि कार काल सक्का पक्षता है हास्तिय में सुझी और एलपुट हैं।

"वी फिर, मिस्टर गांनी इस नवैमान वक्कीतका कारम नया है?

"रिफं व्यापार-राज्यन्त्री ईव्यों । उपनिवेशको इच्छा नी कि वह भारतीयोंने परिभागत पूरा साम उठाये क्योंकि वहाँके देती मादमी नेटॉपर काम करना नहीं बाहते भीर यूरोपीय तो काम कर ही नहीं सकते। परन्तु न्मीं ही मारकीय लोन स्थापारी बनकर यूरोपीयोंसे होड़ करने कने त्यों ही मुर्सगठित सरवाचारकी पञ्चतिसे उनके मार्गमें रुकावर्ट बासी वाने सर्गी जनका विरोज होने क्या और उनका उरह-उरहते बयमान गुरू हुआ। और पीरे भीरे द्वेप भीर जावाभारकी यह भावता उपतिवेशके कातृतीमें भी ज्वार वी गई है। वर्षों तक वहाँ भारतीय खान्तिपूर्वक मताधिकारका स्पमीन करते खे थे। बेसक कुछ नायबाद-सम्बन्धी योग्यताकी यर्ते वरूर थी। और चन् १८९४ में ९,३ ९ यूरोपीय मतत्राताओंकी तकनामें मतबाठा सुनीमें केवक २५१ भारतीयकि नाम वे। परन्तु सरकारको एकाएक बनाज नामा या उसने ऐसा बहाना बनाया कि एपियाई मतबाता संकामें मुरोपीय मतवादाओंको दवा देने -- इसका भारी बतरा है। इसकिए जिनका नाम नहीं तौरपर मतदाता-पूनीमें वर्ष वा छनको क्रोड़कर क्षेत्र नमी एतिमादमोंका मताविकार क्षीन केलेके वारेमें एक विवेदक वहाँकी विवात-समामें पेस किया गया। इस विशेषकके विरोधमें भारतीयोंने विधानसभा जीर विचानपरिपद दोनोंको प्रार्थनापण दिवे। परन्तु कोई सुनवाई नहीं हुई बौर विवेसक संबूर होकर कानून वन नया। इसके बाद भारतीयोंने काई रिपनको जो दक्ष समय बौदनिवेसिक कार्याक्रयमें वे स्मृतिपन मेणा। परिचाम-स्वरंप वह कानून एवं कर दिवा नया और प्रचके स्वानपर एक दूसरा कानून बना दिया गया जिसमें किया है जिन रेसोंमें संसपीत पद्धतिको प्रावितिषिक संस्थायें नद्वीं 🛊 चत बेसोंके निवादिकों अधवा धनकी पुरक-बाबाजीके बेसजीके शाम मतबाता सुबीमें गड़ी दर्ज किये

जार्वेचे जबतक कि ने संपरियद धनर्नरसे यह नामा मान्य नहीं कर

...

तीरपर वर्ज है। यह विवेदक पहुके भी चेम्बरकेनके सामने पेस्र किया भया ना और उन्होंने उसे बससी सातीमें संबूर कर स्थित ना। किन्तु फिर मी इसने इसका विरोध करतेका ही निष्यत किना है। इसकिए इसे मामंत्रुर करवागेके हेतुने हुमने भी चेन्वरसेनको सपना प्रार्वनापण पेता है। इमें साक्षा है कि जिस प्रकार अमीतक हमें मदद मिली है उसी प्रकार इस बार भी मिलेवी। "नेटालके भारतीयोंमें समिकांच तो मजदूर 🕻। वे भगर वपने देखमें होते तो कभी सोच भी नहीं सकते थे कि वे ऐसी स्वतन्त्र संस्थाओं में वा सकेंगे। फिर न्या हम यह समर्थे कि ने मेटाक्से राजनीतिक स्था पानेके बच्चक हैं? "बरा भी नहीं" भी गांगीने बबाब दिया "सरकारको और जनताको हमन जितनी भी दरपास्तें दी हैं उन सबमें हमने इस बावकी बड़ी साबवानी रपी है और पहलेंसे ही साफ-साफ बता दिया है कि हमारे इस सारे भान्दोतनका हेनू केवस यही है कि चित्रनेवाती बन्दिमें हट बार्चे जिन्हें बुरोपीय आबारीकी तुकतामें हमें केनक अपमानित करतेरे किए इसपर णाता गया है। भारतीयोंको वहाँ वसनेसे निवरसाहित करनेके किए नेटाककी विवाससभाने एक और विवेधक मंत्रर फिला है। इसका मंसा है कि जितने भी समयक फिए सजबूर मैटाकर्ने खेंचे उस सारे समयके किए व कत्ती पार्टीमें बेंगे रहेंगे। बगर वे इस तरह नमें तिरेखे करनेको बाँकतैसे इनकार करें तो उन्हें जबरदस्त्री भारत भेज दिया आयेगा। और अपर मारत सौरनेमें भी वे इमकार करें तो जन्हें की भावमी सामामा तीन पीडका कर वेना होया। हुनारे किए दुर्भाग्यकी बात तो यह है कि १८९३ में बाब यहाँ नेटाठने एक भागीय (कमियन) सामा तो नेवल असकी एक्टरफा बात मुनकर मारत भरकारने मजबूरोको जबरेंस्ती धूनः धर्तमें बौबनेकी बातको

मेंने कि उनको इस कानुनके अमलसे मुक्त रहा आमे। इस कानुनके अमसमें वे कोरा भी वरी माने गर्ने हैं जिनका नाम मठवाठा सूबीमें यहाँ

नानी मंत्रुपै हे थी। पान्नु इसके विक्त हम किए मारत सरकारको और इंग्डेंकी सरकारको भी मार्बनायन भेज गह है।" "हमते बरण नता है कि नेटामके मोरे निवानी वहांके मारतीयाँको शंक-वरोत्र तथ कियाँ करने हैं। यह क्या बात है?"

"बैसक्!" उन्होने जनाव दिया "और इस स्वत्रहियत अस्वानाहर्से पूरे बदश छिरे शौरपर शानून जनकी बददपर है। बानून कहता है कि

छन्पूर्ण गांबी बाज्यव 114 भारतीय पैरक-पटरीपर नहीं बस सक्ते जन्हें चल्तेके बीवसे पहला चाहिए। उन्हें रेसके पहले और दूधरे वर्जेंगें एफर नहीं करता चाहिए। उन्हें रातके नौ बजेके बाद वर्गर परवानेके अपने सकानसे बाहर नही निकलना

भाडिए। बनर में फर्टी जपने जानवरोंकी के मार्चे तो उसका परवाना कें। इसी तरफ़ और भी। इन विश्लेष कानुवोंनें किसना नत्याचार वस 🕏 इसकी करा करनता कीकिए। इतपर बमल करते हुए ऐसे-ऐसे बरमन प्रतिष्ठित भारतीयोंका रोजनरों कपमान किया जाता है, जो आवरू साम विवानसभागोंमें बैठनेकी मोम्पता रखते हैं। उत्पर हमना किया पाता है

और पुक्तिसके साम उन्हें सङ्कोंपर चुनाया जाता है। इह कानूनी वन्तिसकि अकाना शामानिक नाना-नियेन अकग है। ट्रामनाकियाँ शार्नकनिक होट≅ें और शार्वजनिक स्नानवरॉमें किसी प्रास्तीयको नहीं आने विया जाता। 'बल्डा मि पानी भाग भीविए कि कानुनी वस्तियों हरूनानेमें बाप सफ्क

हो पर्य । फिर मी सामाजिक बाबा-नियेवॉका बाय क्या करेंसे ? विवानसवार्में बाप बपने किसी बादमीको नहीं मेज सकते इसकी बपेझा दया वे निर्मीप्पताएँ

आपको सी-मृती अभिक नही वक्तरेंनी नहीं चुनेंगी और बुस्सा नहीं विकारेंगी ^{है} श्री वाभीने विदाईका नमस्कार करते हुए कुछ संकाभरे मान ते कहा

इम बाला करते हैं कि यब कातृती बन्तियें हट पार्वेगी तब पीरे-मीरे

चामाविक वावा-नियेव भी दूर हो बाबेंगे। (ethada)

च्टिलमेप १९-११-१८९६

१३ विकास साफ्रिकाके भारतीय

क्रम्बर्गा वसम्बर्ग १३ १८६६

सेवार्गे संपादक इंक्टिंगमेन ক্ষাৰ্থ

महोदय 'मोइनकाक (मरे नामका पहला दिस्सा) र को शैनिए। रोड भारतीयोंको पूजक् बस्तिमॉर्ने करेड़ रहे हैं।" में ग्रेज एक तारके हैं जो कम नेटालसे व्यान माधिकाकी एक प्रमुख स्थापारी पेडी -- वादा मञ्जूरका ऐंड कस्पनीके कानकी एवँटाँको मिका है। एवँगाँने नहीं मिहरवानी करके यह संदेख मुझे वारसे मेंब दिया है। इससे मेरे किए एकरम करुक्तेसे स्थाना हो बाना विस्कृत बाबस्यक हो गना है।

रोड " ननत है। मैं मानता हूँ कि इसका मतत्तव "रोड्स " सर्वात् केमची सरकार है। इसकिए, इस समाचारका अने यह है कि केमकी सरकार मान्तीयोंको पुषक् बस्तियोंमें जाकर वसनेके लिए बास्य कर रही है। मौर यह सरावय भी नहीं है। क्योंकि क्षेप-गरकारने ईस्ट संदन म्यनिधिपैकिटीको जारतीयोंकी पुत्रक बस्तियोंने इटानेका अधिकार दे दिया है। फिर भी यह देखते हुए कि मारतीयाँका पूरा मामका इत समय भी अस्वरूपेनके विचारायीत है इस प्रकारकी प्रत्यक्ष कार्रवाध्याँ कुछ समयके किए स्वरित रनी वासकती थीं।

समाचारने इस प्रम्नके भारी महत्त्वका और इस विधवमें बक्षिण आधिकाके भारतीय समाजकी कोरदार भावनाओंका पता बलता है। सगर जन्होंने तीव अपनान सनुसद न किया होता तो दे यह सर्वीका सन्देश न नैपते। पुनक बस्तियोंमें इटाये जानका परिचान यह भी हो तकता है कि जिन स्वापारियों-पर दसका बसर पड़े ने विस्तृत्त बरबाद हो जायें। बरन्तु दक्षिण बाफिकारी भारतीयोक मतेकी परबाद किने हैं।

१ बल्का शान्तिक भन्ने हैं — नेता नरतिरनेका जाम ।

र नांबीबीको बारने बाहुत हुना कि यह शुन्द बारतवर राट वा के वय जारावे निरामतनादा रसीन है। धीरर ईतिहासेनके मान बनदा रिजनर रे १८९६**व्य पत्र पूत्र** १४९—५ ।

१४ सन्यू कन्त्रन दक्षण्यने कहा है

नारतमें अंग्रेजों हिन्दुओं और मुख्यमानोंके तामने यह प्रश्न गुंह बाये सड़ा है कि किन नई औद्योगिक प्रमृतियोंकी इतने विनों और इतनी करसकताचे प्रतीका की काली रही है बनका सारम्म होनेपर भारतीय व्यानारियों और मबबूरोंको कानुनकी नकरमें बही मान-मर्यादा मिलेमी मा नहीं जिसका अपनीय कम्य सब विदिश्न प्रकारों करती है? वे विदिश बासनाबीन एक देशसे विकिस बासनाबीत दूसरे देखमें स्वतंत्रतापूर्वक मा-मा सकते हैं और सङ्घोती राज्योंमें बिकिस प्रवादे अधिकारोंका राया कर सकते है या नहीं ? वा चनके साथ वहिन्कृत बातियाँ बैसा व्यवहार किया जामेवा और उनके साथारण व्यापारिक भावानगनपर बनुनिध-पर्नी तवा परवालींकी व्यवस्था बाढी बाग्रेपी और उन्हें अपने व्यापारकी रवामी अमहाँमें किन्हीं पृथक क्यी बस्तियोंमें क्षेत्र विमा आमेगा, बैता कि दुल्तवाच-सरकार करना चल्ली है? ये सवात अब तब मारतीमॉर्ते त्तम्बन्त रक्ती हैं, को भारतके बधुर बाकर अपनी मार्थिक झानत गुवारनेके इच्छूक है। भी बोम्बरकेनके सन्तों और हर वर्षके भारतीय पत्रोंके दुई क्याते स्तव्य है कि ऐसे प्रश्नोंका उत्तर केवल एक ही हो सकता है।

चको स्पन्न है कि ऐसे प्रकारण वारत केवल एक ही हो तकता है। स्वीकिए स्पन्न है कि यह स्वाध शिक्ष बन भारतीओंगर अध्य करने बाता नहीं है, वो इस समय सीका आध्यक्तां रहते हैं बाकि वन तकपर असर करनेवाला है, को भनिष्माँ भारतके बाहर बाकर बानेतार्थन करना बाहरे हों। यह भी स्पन्न है कि स्वाध होता यूप हो बाबा हो तकता है। मुझे आसा है कि बवाब होगा मी शिक्ष एक हो बाबा हो

वस देवारों मारतीयोंनर को समय निर्मेष्यवार्य काली जा रही है जनका बारे मारतीय कीर कांच्य-मारतीय संप निरोध करें, बीर कार वस स्वर्णकारका निरोध कानेके किए बारतके एक-एक प्रकृत्ये समा की जाने तो भी नेस कराज है ज्यादा न होता।

बहाँकी जनताको सामम होना बकरी है कि विधन आधिकाको विभिन्न बरकार केंग्रे ओरींडे कार्रवाहमां कर रही है और जीनतिविध्न स्वयक्ति पर उनकी दृष्टिय सर्जीको हुन करोठे किए किठना बसाब साथ सा स्वा है। बारे बेचमें बार्रविकि हुनाई करकर हुनाई स्वय हो जा स्वी

tvt

कांग्रेसमें इक्ट्ठे होकर एसियाइसोंके बाजसनपर प्रतिबन्ध समामेकी मोर्ने कर खे हैं। केपकासोनीके प्रधानमंत्री सर मार्बन रिप्रम इस विषयमें सीध निवेधिक कार्याक्यक साम किसा-पढ़ी करनेमें करे हैं और उन्हें जासा है कि मतीका रंतीपवतक होगा। मेटाकके एक प्रमुख राजनीतिक वपनी समामॉर्ने कहते चून रहे हैं कि उपनिवेशके इंग्लैंग्डवासी नित्र श्री चेन्वरकेतके सामने क्यनिनेसका वृष्टिकोन बोरदार वरीकेसे पेस करनेकी सारी कौथिसें

कर रह है। नेटालके प्रचानमंत्री सर चान राविग्सन वपना स्वास्थ्य नुवारने और यी चेन्वरनेनके साथ राज्यके महत्त्वपूर्ण मामकॉपर चर्चा करनेके किए इंग्लैंग्ड गये 📳 बक्षिण जाकिकाके अनमन सब समाचार-पत्र उपनिवेदियोंकि दुष्टिकोषधे इस निवनपर तकं-वितकं कर रहे हैं। हमारे निकक्ष काम

नरनेवासी प्रस्तियोंने से ये सिर्फ बोडी-सी है। वैसा कि बिटिस संसबके एक मूतपूर्व सदस्यने अपने एक सहानुभूतिके पत्रमें किसा है 'सारा संवर्व' असम है। परस्तु "स्याय हमारे पश्चर्मे है। जगर इसारा हेतु स्थायपूर्ण बौर धर्मसंबद न होता तो बहुत दिन पहुंचे ही उसका अन्त हो गया होता। एक बात और। इस विचयपर अविकास च्यान देतेकी जरूरत है। अभी प्रस्त विचारामीत है। यह महुत दिनों तक कटका नहीं रह सकता। और अपर उसका फैसका मारतीयोंके प्रतिकृत हो गया दो उसपर फिरसे विचार कराना कठिन होगा। इसमिए मास्तीय और बांग्ब-भारतीय बनताने किए इमारी भोरते काम करनेका समय या हो यह है या कभी नहीं। एक सन्मान्य करारक्तीय धन्त्रनने कहा है "बस्बाय इतना गम्भीर है कि मुझे बाग्रा है उसका निवारण करनेके किए प्रते वान लेना ही काफी है।" हो महोस्य में कांग्ल-भारतीय जनताने भी प्रार्थना अच्छा हूँ कि बहु श्राप्त क्यांत हमारी सहायता करे। हमने किसी एक समाज वा एक संब

तक ही सपनी प्रार्नेनाएँ तीमित नहीं रखी। इसमें सबके पात बानेका

नाहत किया है और सबतक हुनें सभी सामृत्य का हुन्य तक पांच मान्य जाहत किया है और सबतक हुनें सभी सामृत्य का यह हुई है। अन्यन सामा और टाइन्स आड़ दिशा बहुत दिनोंने हुनारे नस्मकी दिमायत करने बा रहे हैं। सामृत्य को है बौर हुनें सत्यक सामार्थ करा किया है। आज किया निकार हुनें पहर को है बौर हुनें सत्यक सामार्थ करा किया है। करवेनकी दिनिय समितिन हुनें समुख्य रहायमा ही है। यो ज्ञावस्तरी जबछे बिटिश तंत्रपर्ने पहुँचे तथा हमार विषयमें जामकक खे हैं। वे हमाध

188 सम्बद्ध नाची बाज्यव विकायरोंको हर मोक्रेयर व्यक्त करते रहे हैं। बोक्समाके और भी कई

ही सकता तो में इसकी नक्क श्रम वर्गोंको श्रेम बेता। मो• ६० मांभी (क्षेक्षे) मेक्सिमेन १४-११-१८**९६**

धवस्योंने हुमें चहायता दी है। इसकिए हम बाम्ब-भारतीय बनताचे जो अनुरोध कर रहे है वह सिर्फ रस्म बदा करना नहीं है। मैं जापके सब सङ्गोधिमाँसे निषेदन करता है कि वे इस पणको सब्दा करें। जगर नुसले

"इंग्लिशमन" के प्रतिनिधिकी मुलाकात

बर गोबीयी सक्रवरेपी उसरे इस वे अने स्थल हेम्बरनिमन्ते शतिविधिने कन्मे सुक्तकात की वी । उन्तरे बूना वा कि भारतीयोक प्रति विकास सामिती कोरीका निरोधनाम पहकेनपुत्र कर अका होने बना गा ! बसने और भी सनेक अपन पूर्व में 1 करते का बक्तेबर करा तीचे विका माता है 1

[मक्म्बर १**६ १८९६**]

"तब तो वह है कि अवसे भारतीयोंने बांबब बाक्तिकार्ने पहले-पहल करन रका धर्मीसे जनके प्रति तथा एक प्रकारका विरोध-धार्व वहाँ रहा है। परन्तु बह विरोध स्पष्ट क्यमें तब प्रकट होते समा सब हमारे सोगॉने ब्यापारमें प्रवेश किया। बीर तभीने दल विरोधने ठाउर-ठाउरकी काननी वन्दिसीका **प्रभाषाय करता एक विमा।**

तो भागने जिन कप्लेकि बारेने कहा वे सब ब्यापारी ईप्लांका परिवास हैं और स्वार्वके कारम हैं?"

"विमकुल गही। सारी बादकी वह बही है। क्यनिवेशवासी हमको निकलका देना बाइने है क्वॉकि उन्हें इमारे व्यापारियोंका धनकी होड़में लंदा रहना सहन नहीं होता।

"नवा वह होड़ जीवन है? मेरा अन्तव वह है कि वबा वह होड़ नुकी है और स्थापके आधारपर हो रही है?

र गोनीची जरामर १३ को कल्कांकी गमांकि मिन्द रनामा को अने कैर

WIR TE EER !

हो यह होड़ विक्कुछ चुनी है और मारतीयोंके बारा सम्पूर्णतया स्पारपूर्वक और वरित रीतिये हो रही है। बगर स्पापारकी सामान्य पत्रतिके बारेमें मैं एक दो साथ कह दें हो सावद बात विश्वक साफ हो बायेथी। अविकटार भारतीय जो इस स्मापारमें सम्ये इए है अपना मारू कोक व्यापार करलेवाली युरोपीय पेडियोंसे खरीवते हैं। और फिर बेहावॉमें केरी कना-मगाकर बेचनेके किए निकस जाते हैं। वस्कि मैं तो साध तौरसे नेटाकके बारेमें प्रत्यक्त अनुसब और निजी भानकारीके आवारपर यहा सकता है कि नटालका सम्भूषं स्पतिवेश अपनी वर्षरतेकि किए सममय पूर्वतमा इन्हीं केरीवाले स्थापारियोंपर निर्मर करता है। वैद्या कि साप जानते हैं उस भारतें हुकारें बहुत बोड़ी हैं--कमसे कम सहरोंसे तो दूर है ही। भीर इस कमीकी पूर्व करके भारतीय अपनी ईमानकी रोजी कमा लेते हैं। कहा जाता है कि ये भारतीय छोड़े बरोपीय स्थापारियोंकी जब उबाद रहे हैं। कुछ इबदक मह सब है। परन्तु इसमें बोप हो तुब मुरोगीय भ्यापारियोंका ही है। वे जपनी पुरानपर ही बैठ खुदो है जोर वाहकोंको छनके पास जाना पहला है। इसकिए नगर कोई भारतीय मपने बाह्कोंकी नकरतकी चीजें केकर ठेठ उनके पात पहुँक बाता है -- और इसमें ससे कम सकतीफ नहीं क्रानी पहती -- तो संस्थी बीजें तरना विक बाती है। इसमें बादवर्षकी बया बात है ? फिर मुरोपीय स्थापारी कभी अस भी फेरीके बिए निकलना पसन्य नहीं करते। भारतीयोंकी स्थापार सम्बन्धी योग्यता और सामान्य क्यसे कई दो उनकी ईमानवारीका भी नवने बड़ा प्रमाय दी भावद यहाँ है कि में बड़ी बड़ी पेडियां बनको यह लाख मारू जवायीपर वे वेदी हैं। वास्तवमें छनका अधिकांस स्थापार इन कुमनेवाने मारतीय स्थापारियोंकी आर्पन होता है। बह कोई किया हुई बात भी नहीं है कि भारतीयोंके प्रति वह विरोध केवल कुछ ही भाषका है। बुरोपीय मनाबके एक बड़े हिस्तेका प्रतिनिधित्व बढ़ नहीं केला।"

"तंत्रोपर्मे मेटालके बारतीय निवासियौँगर बयी कानूनी और अन्य वन्त्रियों कीन-कील-ती हैं $^{\circ}$

सबसे पहले हो फिल्मू का कातून है जो हमाम रेवीन जातिगोंतर कानू है। इसके मनुनार कोई रंभीन जातिका मारबी — समर वह गार्डक्स नगर है हो — सपने मासिककी सेबी "बावत नाम सिने बर्गर राजके

सम्पूर्ण दांबी वाद्मव नौ बजेके बाद अपने मकानसे बाहर नहीं निकल सकता। अपर वह ऐसा मजबूर नहीं है तो वसे इसके किए कोई माक्क कारण बताना पढ़ता है।

इसमें चिकायतका सबसे बड़ा कारण तो यह है कि पुलिसके हावाँमें कोबाँको तंत्र करनेके लिए यह एक बहुत बड़ा इतियार बन सकता है। अच्छे कपड़े पहने इए प्रविष्ठित भारतीयोंको भी कभी-कभी पुक्सिके हावों बपमानित होना परता है। कर्ने गिरफ्तार कर किया बाता है। बानेपर के बाया बाता

TYY

है। राठ-रातमर क्व रका बाता है और दूसरे बिन सुबह मजिस्ट्रेटके सामने पैस किया जाता है और निर्दोष सामित होनेपर खेवका एक सन्द भी कई नगैर, बर बले जातेके किए कह दिया जाता है। ऐसी बरनाएँ कम नहीं होतीं। इसरी बात मताबिकार झीना मानेकी है जिसका उस्केस जापने को केंब प्रकावित किया है उसमें जा चुका है। बास्तविकता यह है कि भीरे उपनिवेशवासी नहीं चाहते कि भाष्टीय दक्षिम बाहिकी राष्ट्रका जैने बन वार्वे । इतीबिए छनका मताविकार भीन किया नया है। वहाँ एक नीच नीकरके रूपमें मारतीयको बरवास्त किया जा सकता है, परन्तु गानरिकके क्पमें कभी नहीं। "एक पराये बेक्से राजनीतिक समिकारके उपमोजके बारेसे सारतीयोंका क्या क्या देता है? "केजल यही कि जो बादमी उस देसके निवासी नहीं है और फिर मी

भी करते हैं नहीं मारतीयोंको भी मिर्केश राजनीतिक वश्निसे कहें हो भारतीय अपने विष् मताविकार पानेके बच्चुक नहीं है। वे दो मताविकार धीना बानेके अपमानसे स्प्ट होनेके कारण बाहते हैं कि वह फिरसे सर्वे मिल कामे। दूसरे, सारे भारतीयोको एक वर्गमें बाल दिवा पता है और अधिक योग्य वर्षके माध्यीयोंको चर्चित मान्यता नहीं ही का खी है। वे बार्च भारी अन्यायके स्पर्ने इसे यूमको उख्द भूम खी है। हम यह बी सुप्ताने भा रहे हैं कि मदाविकारमें बायदाव सम्बन्धी धर्वकी इराकर कीई वैवनिक मोप्यताको वर्ष जान दी जाये। वह प्रत्येक भारतीय वृतदाताकी कोग्यवाकी अच्छी कतीयीका काम दे सकेमी। परस्तु यह सुदना जी तिरस्कारपूर्वक दुकरा वी गई है। इस धबसे बड़ी सिठ होता है कि बनका एकमात्र वहेश्य नारतीयोंका संपंधान करना और प्रश्ने हर प्रकारके राज

जिन अधिकारींको पानेका बाबा करते हैं और स्वतंत्रतापूर्वक तनका उपमौस

नीतिक बनिकारसे वेधित रखना है, नाकि वे ह्येसके किए गुकाम और साचार बने पहें। इसके बाद बहु तीन पीडवाका कमस्तोड़ कर है जो अपनी धर्मकी अवनि पूरी करनेके बाद उपनिवेधमें रहनेबांके हर धरे-बड़े मास्तीयपर कार रिवाय है। किए, मानावर्ग किसी मास्तीयकी कोई मान मर्मारा नहीं है। स्वयुक्त तो उसे एक सामाविक कोड़ी — बसूतकी तरस्त हरा बर एका बाता है। स्वयुक्त तो उसे एक सामाविक कोड़ी — बसूतकी तरस्त हरा बर एका बाता है। स्वयुक्त तो उसे एक सामाविक कोड़ दिस्सक किया बाता

है। बाहे उपका ररना हुए जी हो बारे स्तिल आफिनार्ने बास्त्रीय एक कुली ही माना नाना है और उपके प्रति ऐसा ही स्ववहार होना है। रेसोर्ने नेवल एक ही वर्षने बने सकर करनी बन्ता है और स्वप्ति बेटालने सो उपकार प्रकृति एर्टीएर कलनेक्स इताजन है परन्तु इनरे राज्योंने यह भी नहीं है।

इन दूतरे पार्थीमें मारणीयीके ताच कैता ध्यवहार होता है वह माप बतावेंदे ? "जूनुभीककी नोंदरेगी और एगोर्थ नामक बस्तियोंमें कोई मारतीय जमीन

नहीं संदीद सकता।" "यह मनाही क्यों की यह ?"

"मृतिए। 'यून्तैवर्ते पहने पहने नेनमांन धहा नवाया नया ना। बही ऐने शेह नियम नहीं थे। नवा नयोन करीवर्तने मिश्रान्तारा नाम व्यवस्थान बहुं नारतीयोरे कोई २, योड कोनवर्ती ज्योत करीर की। हमने बार मनाहै करनेवास बादुन नता बीर वर्ते वास्त्रें क्यारित गहरीरर नाह क्या मना। यह नी विगुक स्वास्त्रान्त्रमां हम्मा हो गोरीको यह नय हो नवा। यह नी विगुक स्वास्त्रमान्त्रमां हम्मा हो गोरीको यह नय हो नवा कि नेहामको मीठि पारतीय वृत्यवेदाँ की स्वासारके निय वृत्य बादेंगे।

"बारेंब रिसर थी रहेवों तो उन्हें कांकर जातिके नाव नोड़ कर उनका एका है। बारावर कर दिया पता है। वहां नोई बाराविक बचन मामति नहीं रूप बरावा। बौर पर्येष बारावि निवासीको मामाना वह गिर्मिक कर देशा होंगा है। इन बनमाने वानुनीयें दिनमा बच्चाव नया पड़ा है दनकी करावा ग्रामें बारावी हो। बारेंची हिंत कर से मानून नारी हुए तब नारे साराविकों के —विसर्वे बचित्रों ब्यायों थे — सामने बचरायों बार निवास दिया

नका और जर्से गुण की नुकारका नहीं किया नवा विशवे नजरकान जर्से कोर्दे ६. वीवती हानि बतानी नहीं। ट्रालकानकी हान्य गायद ही हमने कन्मी नहीं चाउदी। यहाँ ऐने नानृत बन बने हैं तो वादमीनोंको बनके लिए १४६ छन्नु संगी वाह्नव वनी वरित्रमोंको छोड़कर वन्यव कहीं भी एको बीट क्यापाट करनेते सना करते हैं। परन्तु इस दूवरे सूचेर कमी बदाकरोंने मासके वक रहे हैं। एक ७ गीडका पंत्रीकरण (एकिस्टेबन)-चुन्क देना पड़ता है। एतके मी बदेनाका कानून हैं हो। एकुकनी पटरीपट वक्तमा (क्रमते कम बोह्मनिक्यवर्गे तो) मना है। रेकके पहले बीट दूतरे दर्वेगे एकर पहले कम बोह्मनिक्यवर्गे वा) सेना है। रेकके पहले बीट दूतरे दर्वेगें एकर नहीं कर एकरे तो

हरती एवं विक्यों—गहीं बकारण वपमानीके वावनून को जासीनीने कर भी नेमानकेन वीचमें हरसोप नहीं करेंने तो फोनकी विकास कैसी में का स्केमी। कीने का एमनाने मुक्कुके बनुसार तारे विदिध प्रनामनेकी इस नौकरीपे करी पन्ना पना है। परना पन राज्यकानी स्वानतवाने स्व

प्रमुच्य विचार हो पहा वा वेस त्यम इत बाध्यका एक प्रस्ताव नोह दिया नथा कि नहीं विदिश्य प्रवानगीका बनें नेपक चेरे होगा। विदेश भी भारणीयों रेक्कियकी स्थारकार्यों इस तुरंगर करना प्रान्तेगात्रक भेग हैं। केन काकोगी भी नती पह पर वा पत्ती हैं। बतने हाल ही में इंग्र कंपनकी म्यूनिस्पिकियों के बहु तता दो हैं कि वह माध्योनोंके ब्यावार रूपनेंत्रे मात्र कर वे जलें स्कृतनी परिपर्शत महीं चलने है और गिरिष्ठ विद्यापिक नगर ही वर्षों स्वानेत्रे निए सनकुर करे। इस तालु बार बेकिया का प्रसु है। बीर नार पहुँ हुए सपने सिप्ट क्येंट्रिक्ट बार्डियोंटर वार्षों

नांच रहें हैं। हम दो केवल कर्न्हों निषकारोंका वाना कर रहे हैं नो विनक्ष्म बाजिब हैं। राजनीतिक सत्ताको सहस्वाकांचा हमें नहीं हैं। हम दो केवल दशना हो चाहने हैं कि हमें बचना व्याचार नुबों करने दिया बाबी करने निष्ट एक राष्ट्रकों विद्यवाने हम बहुत नोग्य हैं। हमारा बनान है कि

हमारी यह मांग विकड्स नाजित है।

"यह वो पुनर्शों ने बाद हो। मानुस होना है कि नारे सीवल बाकिकारों
माराविकों ने वक्ती हैं है। बाद निर्माद मांगी यह बताइए कि बढ़ी मैं
बतान्त्रोंने ने स्तानी कैंसिटरीयर कैंसी पुत्रका है।
हो यह बात! नवान्त्रोंने किसी नाजित क्राचीनों मोर ब्रह्मियों कोई
भेर नहीं होगा। बढ़ी मो साम्या है। बतानी है। वतानिकेस बचीन की
बहुत है। परमु बचान्त्री नृतिकीसन्तरी दृष्णित सहीना यह समें बहुत की
बरवैस नहीं है। बुस्तिव क्षीन बढ़ी चुटना है और वह बहुतीनी अन्यत

नहीं होगों नाहिए कि निन्होंने इंग्लेडमें धिलय प्रधिक्य और पहनी पार्ट है तारा नाम उन्होंकि हापोर्से हैं। परना (भी गोगोंने मुक्तराउं हर कहा। में मानता है कि यह बेदेनी परनी ही है— निन्होंने भी परंत प्रशास है— नो हमें समानताक पराजन्यर मानेका नाम करती है। विगके पास कैवन माजाती परनी है जमके किए नहीं नोई स्थान गई। है। हो मैं समझा है कि माजीय वन्होंनेकि मिए उन सा कोचेंने पास नगरय गुंनाहय है निनके दिलमें नमने देखनाहरोंकि मिए उन सा कोचेंने पास नगरय गुंनाहय है निनके

बतिय मारिकाके राजनीतिक नामचीके बारमें भी गांबीने हुछ न

नहुना ही जनित समझा। (अभिक्रेने)

हैम्बिलीय १४−११-१८९६

१५ पूनामें भावण

पांचीनेते १६ मान्य १८०१ थे दिवन मानियानाते वारतिमें हुन्य-तं र पृथ्येक भारतिभेदी कर द्वार्ग भाग हिना था। तम कर्या-स्वनाने दा राज्यन नीराण भारतरात्री स्ववस्ताने हुई थे। धार्चीनेत सावको नार स्वस्तान मान्य ग्राम्य शिक्षण पर भागा नेत्रह स्थित तथा था। तिन्दे हाग दिवन मानियानात्री करतीन्ति करितान्ति निर्मा तथा था। तो नेत्र पर स्विती पता वर को नत्रह कारे का निर्माणिक नार्मी कार्य प्राप्त-त्यवाद्यो स्वर-स्व सेन्या मानियान दिवन या। सीर्मित करिता प्राप्त पतानि नीर ए सम्ब सावका नियान दिवन करिता हो। क्या तीर्मित करितान प्रणा सीर्मित पर साव सावका नियुक्त दिवे ना ने । धारीतिक स्वाप्त स्वर्णित नीर्मित सावका महिला सावका नार्मित हो। नार्मित स्वर्णित सावका नीर्मित या हा है हा सावकायारिक पुरन्तिसानों निष्ट पुत्रति नेत्रह की तर सावका, १८९६ की प्रश्न कीर्मित सावका कि

PPR 25 2646

"बारवर्षे बुध्यतः विश्वयमे कावत्य रसनेवाधी एक वृश्चिका क बंध यह रुपे। परनेके माव-साव बीच रीवर्षे टीका-टिपानी की वाली गरी। वृश्चिकार्षे

र १६६ वृत्तिका ।

किया बाता है। उसके अन्तर्में कुछ क्षोमेंकि नाम दिये मये हैं। बतामा बना है कि वे दक्षिण नाफिकावाधी भारतीयोंके प्रतिनिधि है और उन्होंने ही सरकारी मिकारियों और माम जनताके सामने उनके इसके पेश करनेके किए भी

"भारतकरानि अपने कोताजोंसे जनुरोत किया कि वे सरकारको परि रिवतियोंका परिषय कराकर और अधियाँ वेकर दक्षिण व्यक्तिकावाठी

246 तत्त्वर्ग बोधी दासम्ब भर्नेन किया नवा है कि दक्षिण जाफिकामें भारतीयोकि साथ वैधा-वैद्या सन्दर्भ

भारतीयोंकी हाकत सुवारनेके किए बो-कुछ भी कर सकते हों सब करें।" [बीरमीचे] १६ तार वाइसरायके नाम' बरमर १ १८९६ मन्ते दक्षिण वाधिकाके भारतीयोंका तार मिला है। उन्हों कहा भना है कि ट्रान्सवाड सरकार मारतीयोंको प्रवह बस्तियोंमें भने आनेके किए बाध्य कर छी है। स्पन्ट है कि भी नेम्बरकेनने परीक्षमारमक मुक्त्रमा हो बाने तक कार्रवाई स्ववित रखनेका को अनुरोक किया है उसके बावजूद यह कार्य किया भा रहा है। मैं मानता है कि ट्रान्तमाल सरकारका मह कार्य अनर ज्यादा नहीं हो जन्तर्राष्ट्रीय विष्टानारका और

करनेवास्य हो है ही। प्रार्वना है कि पुषक् वस्तिवॉर्से इटावा जाना रोकनेके किए अधिकान कार्रवाई करें। सैकड़ों विधिय

िक्सिमे १ **\$175\$**₹ 1-19-169\$

भारतीयांका वस्तित्व धीवपर है।

गाबीको नियुक्त किया है।

१ बारमधानके नाम सोबीसीके तारकी इत प्रतिका नावार १-१९-१८९६ ^{के} नंपालीने प्राधित पूरी नकर है। वह बाक्ये एक्स बाक्स सहत-तरवादे कर पूराने क्यान्त्रकों सब यह है चुठे हैं किये नारत-तरवादे प्राप्तित वसे नोक्स सह तरवा और देशके नारक्यांके पूर्व करते त्यारत निकारित अनुसार कर कर विश्व ना । फनतं नामनानको माप्त मून तार करकन्त नहीं है । नांनीकीने तारकी वर्ष सक्त राहरूम आह. इंडियाको ती मेत्री थी। जनने उसका सरपादब बाहे और वान्याब बाबर क्षत्रका को भारते ह -११-१८५६ के लंदी ब्रह्मशिव दिशा था ।

१७ विकास आफ्रिकाके भारतीय

शस्त्री सम्बद्धाः १८९१

सेवार्वे सम्पादक *इंग्लिस्ट्रिकेच* असकता

महोदप -

महारथ
स्थित माफिनाके माप्तीयोंकी शिकायतीके बारेमें मैंने गठ १६ वारीसको
आएको मोप्त फिन्ना वा उसके शिकायिमें मह मूले दक्षिण माफिनाते प्राप्त
बावमी वार देखकेंद्रा मोका शिका है। कथनतीमें मूले क्षेत्र में पित एवंच या प्रवादी वार्य वहीर स्वाचार "पट" है। इसके बन वर्ष विकट्ठन स्थाद हो ज्या है। यह वर्ष यह है कि द्वास्त्रकार करकार भारतीयोंकी पूर्वक सरिवतीमें बदेह पहें है। इसते स्थित सम्बद्ध मीर भी पान्नीर हो

नारा कुं विषय बाकिका-स्थित उनकायुक्त (हाई कविस्तर) ने इस यक्षात्मके बारतीय प्रस्तके सम्बन्धियों पंत्रके चैंसवेकी संजूर करते हुए अपने २४ यून १८९५ के तार्से फिला है

चनिनेक-संनीदो कारतीयों के पातने एक तार मिला है। चलतें कहा नया हैं कि उन्हें मिताओं हर बानेकी तुबना प्राप्त हुई है। वह प्रार्थना भी की वई है कि इस कार्रवाची कान्याम साने। इस्तिन्द में अलको करकारते जनुष्टेय करता हूँ कि वक्तक १८२६ का प्राप्ताव और वरिष्ठ एक कर दिया बायें और कलूबनों चेब-सैताकेंके जनुष्य न बात दिया साने—निकार्य के स्तिन्य प्राप्तिकों वस्तानार्ये वर्षकालाव्यक्त नृहस्ता चल तरे—न्वत्यक कार्यकों स्वाप्त प्राप्ति नार्ये।

बना प्रस्तान और परितनकों तो रह कर दिया गया है परस्तु नहीं तक में नानता हूँ परीसपासक मुक्तमा नहीं कराया गया —और मुने यह दिवन मोरिटो सनसर हो क्यार मिनटे ही रहने हैं। इसिट करण्ड हैं कि हालका परसरकों कार्याई कताबहित है। और मैं मानता हूँ कि समस्त्रामा नहीं तो बहु सकर्राजीय पिज्यवारमा केन करनेवानी तो है हो। मैं सारश

१ कोन्तरमाः शन्सरकरी सेवसमा दा संसर् ।

सन्दर्भ गांधी बार्मव 24 मार दिकानेकी इवायत लेता हूँ कि ट्रान्सदावर्गे मारतीबोंकी १ 🦏 🔸 पीड

ते न्यादाकी पूँबी धनी हुई है। पुत्रक बस्तिमॉर्ने इटावे वालेसे मासीय न्यापारी अमडी मानीमें बरबाद हो नार्मेंने। इस करह इस प्रश्नेक काल्म किछ पहलुके साथ समाजीके सैकड़ों प्रभावनींका बरितत्त ही पड़ा हमा है। उन प्रवादनीका एकमात्र अपराम यह है कि वे छत्त्रते परहेच करनेवाने मित्रस्यमा और उद्योगी है।

मेरा निवेदन है कि वह विवय भारतको समस्य बनतासे अरूरी और अवि नम्ब कार्रवाहेंबी मोग्र करता है।

rainail 1

सम्बद्धमेम ८−१३-१८**९६**

१८ मारतमें प्रतिमिधित्व वास्तविक सर्चका हिसाव

मारतमें बीरा बारेने सम्बन्धनें बांधीकीये बाधा करते तथा अन्य पारतीयेच क्षपेक्षे किए ७५ वीक्ष्य दाला हैवा त्या था। प्रन्तोने सारे क्षप्या जो स्थिप्तर विकार रहा और आरक्ती औरनेत्रे वाल नैराक नारतीन व्यक्तिके सामने के किन बढ बीचे मेज बाता है। एंनोपलय यह बतरे व्यक्तिके कुछ पहछुबीपर मन्त्रत बाकता है, वो उस क्रोडी जबरें ही बनमें राज्यस्य में र

मेराम भागीय भौति ताने

मो क वातीका पावना

रक्षिण बाधिकानाती भारतीयोंके कस्टोंके सम्बन्धमें भारतयें बान्दोक्सका वास्तविक कर्ज

गकार्व ५ (१ १६) प्रवादावारमें सन्भावको बादिसे भिष्केने किए सुपहसे ाद∙कापाी

तीसरे पहर तकका और पिछ्डी बागका कोडा

नारी वर्ष

होरक

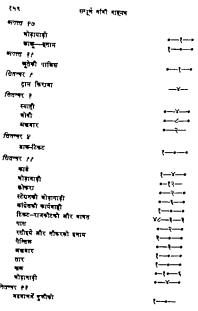
इत्राम

समसार

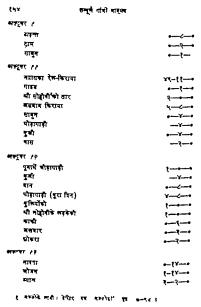
सो • ६० गांधी

q-17----

बारवर्ते प्रशितिक्तिः वास्त्रविक वर्षका दिख्य	t 41
[≈iviii 1]	
असवाय-पुस्तिकाएँ वावि	¥
बानाईसे राजकोटकी आजे किरावेदाकी पापसी टिकट	P14
कारण १०	
वहवानमें पानी	 ₹
कुमी	•Y•
वरीनको	•t•
तार कानेवालेको	•—-t—-
स्टेबनका चपरासी	•Y•
भगरत ८३	
जी [बैट] रोधको चोडासाडी	4
भी रोडसे वान्या और वापस	~?? ~ •
जी 'रोडसे पायजूनी	←Y
जनता P	
भोकासाडी भारते फोडै	•
कोर्टसेनी भी के रोड	· t · •
नरसे क्योगो सम्बर	·~ ? ?—
अपोसी कलरसे मार्केट	•—-t—-
मार्केटसे वर	•—- 3 —
क्लारव है।	
मो <i>ना</i> भावी	•
बाक-टिक्∡	₹
भगरवं PP	
भोकामा <u>नी</u>	₹ •
चन	Q +
अपरत १४	
मोड़ामाड़ी:	Y
नगरच १५	
भोड़ामाड़ी	Y+
1	



मारतमें प्रतिविधितः । वास्तनिक वर्षेका विशाव	१५१
विवन्पर १४	
ड्राइवरको इनाम	•— <i>c</i> —
बाक-टिक्ट	₹ —•—•
थल चार	•{Y•
अस्वार	\$ \$
पु नी	- १२
पानी चौर चपराधी	-1
पुस्तिकामोकि सिए बाक-टिन्ट	<i>i</i>
पानी	••
चार	₹
धिमन्बर १५	
चोड़ामाड़ी-स्टेचनते चर	{¥•
वोक्षाकी और ट्राम	•
विवाचर हरे	
भोड़ायाड़ी व ट्राम	•Y•
शिवन्दर १७	
चोक्षपाड़ी व ट्राम	•
तितन्तर १४	
अस्तरर	!
प्लेटकार्म टिकट	••
चोड्रापाडी	•—५—
तितन्त्रर ३	
चोड़ाया ड़ी	•t•
मान्यूपर इ	
चोड़ानरहर	•Y•
कोशगारी और अववार	
रे श्चिम	•—-Y-—•
कोटीयाक	



भारतमें विविधित्तः । वास्तविद्य सर्वेद्ध क्रिया	{ 44
•टम	
पानी:	
भागा ।	
करणपर एक रेक्स स्टेशन महान	Y
गाइड नृत्ती	*—
ग्रुणः भोदापादीः (पूरा न्त्रि)	¥
बादीवर बादीवर	•
मानादर अंगवाद व लिंगाके	2-10
र [े] धनको सोवानाकी	t-c
अस्य १६	(
पोड़ामा ड़ी	¥—٩
यत्र-साटक	*~
अरावार	•Y•
द्राम	•
MENTER AS	•
वात-दिवाद	t
भोड़ापाड़ी -	₹—₹—•
वस र (र	·—-<
षोदी	t
MARKE 10	
अंपवार	
योगदाही (दूस हिन)	4—}¥—+
	.—,—
MPRI /c	
नीरायादी (माना दिन)	₹1•
र्गहरूको चन्ना चन्ना सरस्य	A
	*
MP-ST /1	
दुःव विराहा	*

१५६ सन्दर्भ यांची बाङ्मव पाछा को सार १—१—• वसवार t----**अक्टूबर** P योषी _Y_+ वसदार -17---पंदा-कुनी •----भक्ट्रपर ११ पत्र किन्तरेका कागब -14--स्वाही और जालपीनें •----कीवा ·---t---नानीयर _/--अधवार -----ब्रुवेके बन्द ----MTTYL PP बोहायाही ₹--¥--+ मिटाई *---4----3 **क्रा**गोधाक -----अरावार *- ¢ ?--+ क्षान -- (1---क्षत्रांचर ११ भारतायाही **~~~** द्वाप -10--क्षाप-दिवर ____ 47 97 PX CENT HET -----बोरागाडी 3-1 ---रपुर **~**--

१ विस्तानका रह के सर्वत नेता।

बारवर्गे प्रतिविधितः शास्त्रविध वर्षेत्रः दिलाग	₹ 5♥
	• •
इक	•Y
rt .	• t
	• - १२ •
वियन बामाम कुकीच ¹	₹
मिसस	·!

टाम

पत्र-वा

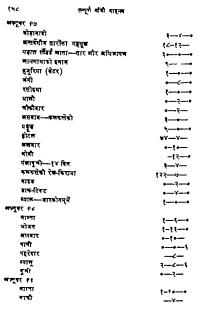
भवना मीनी

ईस्ट इं **2** €1 ~{---कोकल वयनंतेंट रिटर्न **4--** ---कौन्स्स्स ऐक ----BOAR ROOF ₹-----बक्षिण बाफिकी नगराञ्यके एन (बाब्द) सिकायर्ने स्टेटमेंट [बॉन] मॉरक ऐंड [मटीरियन] प्रीप्रेस **१−१२--**

महास डिस्टिक्ट (स्थनिसियस) ऐक्ट t----महास क्षेत्रक बोर्ब्स [देक्ट] -t ---धमिल पुस्तकें Y-17-4 पुस्तकोंके किए एंड्रक्को 1-9-0 भक्दूबर १६ चनी हई तिमल पुस्तकें पोक्तमाही

ट्राम किरामा बचवार •---चोडागाडी 7---¥----१ स्थानिक कानुवीकी मिदानें खरीयनेने माद्यम बीदा है कि मांचीओ बखिन बाहिनामें तरकोगंदे किए जाताचे प्रकारत मताविद्यार तथा बातिविधिद साल्य र्केर मालामी बाय-पायवर्षे निरम्भिका मकारीकी परिशिवतियों कीर वसी सरवाहे मन्द विक्रोंके मदिको मदिक बाजवारी दवन करना चलते है। इसी सरह दिनी,

को और बगाबीची परवर्षे खरीपानेसे पता पत्रवा है कि है अपने पश्चिम माकिया-वाली देशवादकोडी बाधारे शीवनेको विकान बसाध है। ९ मारतची माविक और नेतिक प्राप्ति सम्बन्धी बन्दान्त *स्टेटमेंट रहिजाविदिव* नि मौरस रेंड मधीरिपस मौनेत रेंड कंडीडान मॉक इंडिया <u>इन</u>ारंग वि इयर नो सरकार निर्देश संनारके स्वयंत्रे केश करनेत्र क्रिक प्रतिवर्ष प्रवासित क्रिय करती की ।



बरायमें प्रतिनिवितः वास्त्रिक वर्षका दिसाव	245
क् ^{रूरी} — मनभा ड ेमें	
क्रमी म्नावक में	
ना नो निन्दर	•—¥—•
मोचन	· ? ?
स्त्राज्	7
कुक्ती — नावपुरमें	•Y•
अवदूषर है	
बोदायादी नायपुर्ने	₹८
(law	!
कृती हर्नुरिया साथि	१-१५
दु पहरका वक् षपान	*
भ्यान <u>्</u>	₹ ~ ₹ ₹ ~~•
बसवार	Y
नगरत ≥ से ¤	
पुरिकामोंके लिए बाक-टिकड ^र	¥{<-
नगरत १७	
शार-मानाई	₹
अकरसी — पुरस्कार, पुस्तिकाकै कामके लिए	(1
५ पुस्तकोंको बोबन भीर वार्षक करनेका वर्ष	4-10
चिद्ठीका कायन	₹-१२•
দিক্ষিক নিৰ্ব	•
वेन्सिक्	·
पुस्तिकाएँ नेजनेके किए एक रीम काथज	₹
न्तरतः ५	
वैकरकी बावरेक्टरी	3/
१ रन्तरे और बानपुरके रोपमें रक रेकी स्टेशन ।	
र रत नरमें और रती तरहरी इसी नरोंने बालम दोता है कि योशी	
विका मानिकाशस्त्रे कार्रामों है हितने विदानी नोरवार वरनेवाकी विका करन है।	

₹1		
47	द्भार १८	
	कषकतके रास्तेमें बाव और बवक रोटी	•—९—•
	मास्ता	₹ १ ५•
	दुपहरका अख्यान	
	मधनार	•
	स्टेसनपर कुकी	•
	नामन्त्रोक्तर्ये दुकी	—₹—
	होटकमें कुती	•—¥—
	होटलको मोहावाडी	t—•—•
	भोड़ानाड़ी और नाटक	¥-१२•
47	चर १	
	<u>घोती</u>	• १ • ६
	मृतेकी पासिक मूरा भगवा <i>चेत-फ्रेन</i> करा	1-1-4
	मोड्रामाडी	1
	बाक-टिकट रजिस्टई पत्र	•—4—•
	र्देखें चार	i
44.	पर 🖡	
	भोजागावी	1
	शक-दिकट	_Y-
	बम्बईको पुस्तकोंको बार्डक	x-12
	पत्र-वाह्य	•Y•
44-	पर ∤	
	चोड़ापाड़ी	1
	नाल और राड़ी बननाई	
	ग्राम-दिवद	•—-
	<u>पार्वक्त राजें को</u>	•—१—•
	दान	•—•-
11	rt y	
	चोर्चा	•
	धरेमें तान चड़वाई	← <-

वारतमें प्रतिनिधितः वाध्यतिक वर्षकः वै ताव	रहर
स्टेंडड वार	•(•
भोदा ना दी	₹-₹+
सर्वेष्णर ५	
योदागावी	₹—•—
घोनी	
भानसामा	Y
जन ार ६	
त्राकृषाकृ	4
मनैन्तर ७	
नाटक	Y
पो ड ागा ड़ी	₹—¥— ¶
म्चेल्यर ८	
थानी	•Y•
नवन्त्रर :	
ढिन्दी और सुर्दू कितावें	• १ ३ ५
अर्थु और बंगमा फिनावें	YC
सर्फारी रिपार्ट (क बुन्स)	₹—८—
चोड़ा नाड़ी	१
बाक-टिकट	 •
तार—पी एन मुक्जी	7-9-0
धोबी	Y
मरुल्हर ह	
सरकारी रिपोर्ट (का बुक्त)बंगाब सेनेटरियट	₹ १− ₹ २ ─•

1-11-4

---Y---

बोहामाही

नवन्तर्*शः* अवद्यार यव-नाहक

2-11

```
141
                        सम्पूर्व कौषी वाद्यस
     म्मनिसिपक कानुन
                                                      -- 17--
     कुछी
                                                      -----
     बोदागादी
                                                      t-----
वक्तर १
     तार <del>— स्टेंबर्ड बमुक्ता क</del>म्पनी
                                                     Y-(Y-+
     चोची
                                                      ---
     पत्रवाहक
                                                      --Y--+
     वसमार
                                                     ·--!--
     <u>घोडागाडी</u>
                                                      t----
मक्चर / हे
     टिकर — बम्बईको
                                                      t~t t—•
     तिसक<sup>4</sup>को तार
                                                     ₹—•—•
     क्याको
                                                    t t-t ----
     चोडायाडी
                                                     २—२—•
     कृती
                                                     -----
     पानीका बर्दन पानी
                                                     ---Y---+
     चानसामा
                                                     1----
     रसोदया — दनाम
                                                     ₹—
     हार-स्मनोंको
                                                     ?--Y--
     चंगी
                                                     •---Y---
     स्तात-वरका वादभी
                                                     +−₹₹──
     द्याग-दिकट
                                                     --१२---
     करना मिर्मा—पार्चनके किए
                                                     1----
     शेरन
                                                  t -- tY--- •
नवन्तर १४
     नारना और इनाम
                                                    1-1 ---
     मोदन
                                                    <del>7----</del>
     काफी
                                                     ---
```

१ महान नारतान भेता : शोधनान्य वाच प्रयोश निष्यत देखिए वर १४४ ।

मारहर्ते प्रतिनिधितनः वास्तविक वर्षेत्रा दिखान	141
भ्यास्	
ना मा	-Y
पेष	
गाडीबान भूमा हसेन	t
<u>घोत्री</u>	•
तार — तिसक	₹ ?
मरापर १५	
नास्ता	7-1
भोजन	₹—₹—
तार — भवा मियाँ	ċ
तारवाका	
ध्याल	₹
वाक-टिकट	
मरम्बर १६	
रेस किराया — बम्बद्धि पुना	\$Y-}Y
<u>पूजी</u>	Y•
भोड़ाभाड़ी	₹—८—•
घोडाघाटी पूनार्थे	t-t
मे पमे र	
तार पूनाको	₹——•—— •
नरापर १०	
पू री	•
चोडा नाडी	Y
नराप १६	
राफ-टिक्ट	t
नवन्तरः / १	
<i>चोड्रानाची</i>	*
नार्द	Y+
नरनर १	
दुशक	• †•

सम्पूर्ण गरेशी बाब्सब *** नानर ११ मोकागाडी नवन्दर २० बाय-टिक्ट 2-6-अववार नवन्तर १८ ----**बोडापाडी** येभियम चला 1----वान्त्रे प्रमुख 1----बम्बद्दै जिला बोई ऐस्ट Q--------नारी रमोद्रमेको इनाव 4----मक्तर ह पाटीको इनाम नोक्ट सालको t -----बाब-टिकट -- २ पत्र भेजने और एजिस्टी करने है किए १-----तिकाचे __Y__e रिको ---1---पुरितकाक किए कावम -- विनक्ते अनुनार ~~···· मितरबर १३ कन्त्रीय नवस्यी प्रानेनास्त्री 14---- ब्रवानी प्रार्थनापण रप्टवासा-सम्बन्धी दिल्लाचर्य विकास १० नामवाकी ६ प्रतियोधी क्यार्ट र रेन्द्र सर र पर १९९-३ र और ११ -११४। व देनिया संप्राप्त दुव वर्रक-वर्ग । E 847 18 44-06 1

मारतमें प्रतिनिधितः नास्तमिक सर्वेका दिखान	123
सितम्बर <i>४</i>	
वस्वाईका मापण १२ प्रतियो	4.
सित ाप र ४	
रजिस्टर्ड ३ ६ के फिए — मद्रासकी	19
पुस्तकें करूकता मेशनके मिए पैकेश	Y
रजिस्ट्रेयन कमकत्ता २ क	11
धिक्रमर	
टार्म्स मान् इंडिया बार्यरेक्टरी	१ −१५•
भसूपर	
मनोबाडेरसे १ ६ मेजनेका वर्ष	3
वार मंद्राच	₹
<i>परम</i> र	
पत्र निष्यतेका कायत	*11
मक्ष्यर 🛊	
वाइतरायके तन्त्रवाही तार ¹	4-Y
क्षिक्ष १०	
सार वर्षमङो	?? ?•
<u> शिवाम्बर</u> ११	
तार—तर बदम्यु इदम्यु हेन्स्का	111
भीतभार नवल बदद आर्टि करनक लिए	₹•—•—•
2.4	√—९—•
निर्धे	•Y•
शह-दिवट	
मन्द्ररपुम्तकें इस्टिस्पूट 🕈 जानेक टिए	*\$
नर्भार १४	
वादसकी बुहर	₹—-C—-•
१ देखिर १४ १४८ । १ यह कार्यन्य स्वी है।	

सम्पूर्व वांची वाङ्क्य

१९ "कूरलंड" चहासपर मुलाकात तर राग रोक्षेत्र तारिका शक्त प्रमाश क्रांस क्रांस

रिशासर १८ १८५६को करंग गर्डेचे । बाजूरी नासका रक्त मन बहात मी ४ मारतीन हुत्ताविरोक्त केंद्रर उसी त्यान गर्डेग श्रीचा । सर्प्या इस होनी सार्वीकें सारी वैस्तरनारने माने नती कर्य रिशा नता इस्तर में म्यान लाखा गर्या वह स्त मा कि बस्तरीं, बहुँगों ने सहात करे हैं 'देशकों वीह्मारी वेसी हुई हैं। उसने मानी हाता नामा होना एउताहरें मनिकात हत्यामा रोग एनमणी बहुत (करारीन मि इसा स्त्रा । दरार दुरीऐस मोन मारतीकों आरादीने ऐस्टीके मिर संस्तर

उच्चा चच्चा उपरच पुरापन कल मालावाच्या करावेट ऐस्तेके किए बारांग कालाना के हुए वे लीन भागतिहर्त मालावाचे महिल्लि एवंचे हे नेतानेत्र वरिवारते प्रतिकृति कालावाच्या का उपरच क

१ कुण प्रतिमें बाज इक्कर बाय दिक्त प्रशा है और बहु बात हुको उर्ज पर ने जावा लगा है । व ऑपडे बहा छोड़ रिवे यदे हे और निर्माणारियों वास बताया नवा है।

225

कारती [१३] १८९७ इच्ट छत्तरवाना नवते पहुला प्रश्न उनमे यह किया गया कि अवधन समितिके कार्यके बारेमें आपके गया विचार हैं?"

"मेरा निर्माणन प्रयास है कि प्रकार बहुत ही बहिचारसे किया पया लाम तीरते तब जब कि दमें करनेवाले कई ऐसे प्रानिनेधी हैं जो अपने आगरो किया प्रशने प्रति कर्मायार बताई है। और भेरी मुझ रुकरता ती अभी नहीं भी कि मायका एक हरतक पहुँच बायेया। बाने मर्थानने मे गैर-करप्रारिणि अपनन निर्माण भावना प्रयट कर रहे हैं और एक्टा अपन न निर्क गारे उन्तिनेधमें बन्धि छारी बिटिय छामायम्बें — भारतमें तो और भी नाम तीरते — महसून किया वायेया।"

वित्र प्रकार? "

"यहाँ आये हुए जारनीयोंको जिल बाठते बुन्त होगा वह निश्चय ही भारतक सारे निवासियोंके बिए बुत्तकायी होयी।"

आपना मतलब यही है न कि आरतमें इस देशके प्रति दुर्जाव कैन जावना?

"हो। और यगमें भारतीयोंने ग्या कुर्वाच पैदा होया जो जागातीयें इर नहीं दिया जा गरेगा। इसक अप्यादा जारतक दिया कुरते विधिय गानियोंने में भारतमीरच कुरति देवा हो गायेगा। केपा बनाव स्वाही है कि आज आरतीयों और जानियोगियोंके बीच आज गीरपर कोई सहुत आरी दुर्वाच है। पान्यू कृषी यह निशिया काले सम्ता है कि यानियोगी नहीं यो हुए कर पहें हैं जाने भारता जी जनूवान दिया गायेगा कि हरण्य हुन्दे दिग्या अनियासी में तर हिंदी हुन्दे की स्वाही त्र मुनत्र विधान पहुँच मई है मान अनियासी मुनिर्दे ही होती है। वसने यस जनवारों ने

gretare and go as with final stay made article anible

रिक्ट बनाग्यस्य प्रशीत क्रमीन चान्त्र सा ।

१ राष्ट्राः कुणावणारे गारित्र वही थी । राष्ट्र व त्रवार लागस्त्रवर (गारामो एवं १६६ थे स्मार्थने वर दश्य है कि आहारे उन्होंने हिंद केते रोग होता का किया गारे वित्र प्रदेश रोग होता का किया गारे प्रदेश (राष्ट्रवर्षेत्रहादा पत्र वर्षाने असने कुणावणा वर्षाने १ लाग का का वर्षाने किया आहे होते है व १ ४ का कार्याने कार्य केते पत्र प्रदेश कार्यों केते होते व्याप्त कार्यों केते कार्यों कार्यों

सन्पूर्व यांची वाह्यव को समाचार और दार प्रकासित होते हैं स्वतंत्रे दो रक्तिय वाधिकाकी स्चिति ऐसी ही विकाई वेती है। " किटिया प्रचानन वासी वलीस

114

"निश्चन ही आपका दो यह दुव निचार होगा कि नेटाइको मास्टीयाने मानेपर रोक समानेका कोई बनिकार नहीं है? "

भी। निस्पन मेरा यही समाल है।"

"किस जाशास्पर?" "इस माधारपर कि वे बिटिय प्रजाजन हैं। और यह भी कि तपनिवेध

एक वर्षके भारतीयोंको तो का रहा है, किन्तु दूसरे वर्गको नहीं चाहता । "यह बड़ी बेमेल बात है। यह साझेदारी तो भड़ मीर मेडियेकी वास्ती

वैसी कवती है। मारतीयेंसि जितना काम मिक सकता है वह ठी वे चटा सेना चाइने हैं। परन्तु यह नहीं चाहते कि मारतीनोंको विस मर भी बान हो।

"इस प्रत्यार मारत-सरकारका ग्ला क्या होगा? "यह मैं नहीं बठा सकता। अभीतक मसे पठा मही है कि मारठ

सरकारकी भावता नया है। परन्तु ही भारतीयोके ब्रिट संदासीनताकी भावता वो हो नहीं सकती। सहानुमृति ही होती। किन्तु वह इसपर नमा अवस बक्रमेगी यह तो कई परितेशवियांगर निर्मेर अस्ता है। इत्तरिए वह स्वा

करेनी यह जनमान संगामा बहुत महिकल है।" नवा इतका परियाम यह हो सकता है कि अयर वहाँ स्वतन्त्र भारतीयोंके अवेद्यपर रोक कना दी नई हो मारत सरकार वर्तवन्त भारतीयोंको भेजना अलाकर दे? "

"ही नते तो पत्ती ही बाधा है"। परन्तु मारठ-परकार ऐंदा करेगी या नहीं यह श्रमरी बात है।"

१ वह करकेत्र स्वतन्त्र भारतीयां — न्याचारेशं और बारीवरां — बा है, निरमिरिया बजारिक वर्ग किन्द्रे मानेकी श्यान्त भी ।

व वास्तवमें वक्षिण माकिया भारतीयोंने क्रिरेन और भारत बोध्यंकी सरकारकी बार्चनारम् केश के कि अगर निरोमरकी अवधि पूरी कर कैनेताके वजरूरोगर समर्थि गर्दै प्रतिपान कराये से बार्वे से और अधिक कवारीका कानेकी अनुसारि के वी जीवे ।

देशिए कुल्य १ पुन्न १११ और १३४-३५ ।

प्रदर्धनकाके प्रस्तार किर लौटत हुए भी गायौने कहा मुझे सबस लिक खदाल तो इसी बातका का पहा है कि प्रस्तेनकारियोंने प्रतके माझाग्य-वाक्त्मी पहतुको एकरम मुका दिया। यह यो गायी हुई बात है कि सारत विटाग मुदुत्तको एकरम मुका दिया। यह यो गायी हुई बात है कि सारत विटाग मुदुत्तका बसे अविक मुम्पवान एत है। येपुस्त सम्बद्ध बिकास स्वाप्त पारतके साथ ही हाता है। इसके बसावा संवारके प्राय-समी हिस्सोंने केट विटेनकी सरफ्से सहनवाले गुरसे गुर सिपाही बारस ही है। है।"

प्रस्कताने बताया कि वे डीक्ट [मिस्र] से आये तो कभी नहीं यथे। और भी पांचीने मौनपूर्वक यह प्रसम्मुबार स्वीकार कर किया।

उन्होंने बागे कहा "चालाव-सरनारकी नौति हमेधा मिथा-युकाकर लाम करनेरी — माराणियंकी बोर-जबरहालीय नहीं प्रेममे जीतनकी रही है। हर विदिश्य स्मित्त मानता है कि विरिध्य प्राप्तान्यता वेशव राजीवक है जबतक उनमें साराणिय वालावन्य यामिल है। सुर नेदान भी अपने वैमारे मिथा जाराणियाँ। क्या कृषी नहीं है। ऐसी कुरानों नेताकि उप निवेशानामियाँगा स्वाप्त भाराणियोंके प्रवेशका इतना दुरावहके तान विश्वा करणा लाय हो कोई देखानिलया नाम नहीं कहा जा नहता। किमीको भी हर पानकेश नीति सब पुरानी बीट किस्मी हो कुछ है और उनकिंद थियोंको बादिय कि व माराणियोंके ननामिक्स प्राप्त करें। मान हो ला माराणियोंको क्या क्या करते प्रवर्श करें। करों वा नीति के माराणियोंको ननामिक्स प्राप्त करें। मान हो ला बर्ग करें। में तो नहता है कि जबर मामान्यके ननी बंगोंको प्रेमके मान हिन्द मिनकर एउना है दो नामी उनकियोंकों हती नीति नाम निम्म प्राप्त करा है।

"रुक्त अभी बिटिया साम्राज्यने तत्राम हिस्सोंमें भारतीयोंको बाने दिया बाता है रे

बाल्डियार्थे बनी-कार्ध यह त्रयात पूल हुना है कि बार्खायोंकी बातें न दिया यार्थे। परणु दिवातपारिवारे हुए दिरायों नारवार्ध दिवारको तार्थेत् कर दिया है। परणु साम्बद बात में कि बार्ड्डियार्थ यह नीति स्थाद भी हो बार्ग है जो की हर्वेदरी नारवार दने बहुतक बेलूपी देखें पर देखते हैं बात है। बोर किर बार नियार्थिया दनमें नारक हो बायें हो भी नेतानके नियायर बन्धा नहीं होता कि बहु एक बरी बातमें दूबरेका **

बनुकर्थ करे। यह प्रसुके सिए बन्तर्में बाकर आत्मवातक ही सानित डोगा।″

मारतमें भी गांधीका मिछन

"मारत कानेमें सापका मुख्य हेतु क्या का?"

"स्वदेश जानेका मेरा हेनु को जपने परिवार, पत्नी और वर्जीसे मिळनेका ना जिन्हों पिकके बात नर्पोंसे में प्रायः क्यातार दूर ही रहा है। मैंने वहीं मारतीयोंचे कह दिया ना कि मुझे श्रृक समयके किए स्वदेश जाना होगा। धन्तें कता कि इस पातामें सामय में तेटाल-निवासी देखवारयोंके किए भी कुछ कर सन्दें। मुझे भी ऐसा ही सन्या। और मैं आपको मही बोड़ा-सा निपना न्तर करके बता है कि नेटाकमें इस मुख्यतः भारतीयोंकी स्वितिके बारेमें नहीं किन्तु केवल एक विद्यान्तके किए कड छो हैं। हमाछ वहेरन यह गहीं है कि हम उपनिवेसको भारतीयोंसे भर वें या मेटाक्से भारतीयोंकी स्थिति स्था है इसका निरुप्त को वाये। इसारा असली स्टेश्य ली यह है कि विदिध मारतसे बाहर सामान्यमें मारतीयोंका स्थान बया होवा इसका एकवारनी निश्चम हो जाये। हम इस साम्राज्य-सम्बन्धी प्रस्तका ही निर्णय करनेका प्रयत्न कर रहे हैं। जिन कुछ भारतीय सन्त्रनीको इस प्रश्नमें विसनस्पी की उन्होंने वर्वनमें मुझसे चना की भी कि भारत पहुँचनेपर इस बारेमें मुझे नवा करना चाहिए। भीर कार्यको धोजना सिर्फ यह रही कि मुझे मारवर्ने बाचा करनेका सर्व नेटाक कांग्रेसदे मिलेया। वैसे ही मैं भारत पहुँका मैंने बद्धपुरितका प्रकाषित कर थी।^{स्प}

"यह पुरिवका जापने कहाँ वैदार की?"

"मैंने बसे नेटाकर्ने नहीं किया । धारीकी सारी पुस्तिका मास्त वाते हुए वहाबपर विसी।

"पुस्तिकामें जो बातकारी यी हुई है वह आपने कैसे प्राप्त की है

"मैंने निरमय कर किया था कि दक्षिण आधिकामें भारतीयोंकी रिमिनिक बारेमें सारी जानकारी मुझे होनी चाहिए। इस हेनुसे मैंबे वह प्रवन्त किया कि इन प्रश्तम मन्दान रखनेवाले द्वान्तवालके कानूनोंका बनुवार मुसे मिक जाये। इसी प्रकार रेज उपनिवेध और विधिय बाकियाके इसरे हिस्सॉर्मे प्ट्रोबाने मिनोंसे भी मैंने कह रचा था कि उनके पास इस बारेमें को भान कारी हो घन ने मेरे पाम मेन हैं। इस तरह मारत जानेका निरम्य करनेसे पहले ही मेरे पान मह सारी सामग्री तैवार पड़ी थी। और मैंने बसे पड़ सिमा था। नेटासके मारतीयोंकी तरफने इंग्लैंगको सरकारको नो स्मरण-मर्थ समस-समय पर मेने पर्ने उनमें साम्राम्यके इंग्लिंगको हमेचा ममुखताहुर्वक सामने रागा गया था।

"क्या ये स्थरफ-मत्र नतापिकारके सम्बन्धमें वं?"

"रैनम वही नहीं। उपनिवेशने बाहरके कोगोंके प्रवेशके वारेमें को कानून मंजूर किये हैं जनका तथा ट्रान्सवालके बान्योकन'का भी उनमें जनसेव था।"

"उन पुस्तिकाक प्रकायनमें भाषका हेतु वया वा ?"

भरा हेतु यह वा कि मैं भारतीय जनताके सामने ये गारी वार्ते रन है कि सीयण मारिकार्य भारतीयोक्षी स्थित क्या है। सूकि सोगींका बयाक है कि भारतमें जनताको ठोड-बीक चता नहीं है कि दिनने भारतीय विदेशोंनें है तथा बड़ी उनकी रिपित क्या है। इत विश्वकी तरक भारतीय जनतावा प्यान दिसामा ही वर्ष पुलिकाक प्रकारनका हेतु वा।

"रिन्तु क्या इसक करावा और कोई उद्देश्य कारवा नहीं रहा?" "कुरुस प्रदेश्य यह था कि देशके बाहर प्रार्तीओंकी वह प्रतिस्ता मिले

जिनमें इसे मदार हो। अर्थान् नन् १८५८ नी चीवमाके जनुसार।"

।तनम इस सदार हो। बदलू नत् १८५८ वा बारमारः बनुसार। "स्या बार बाया करते हैं कि इसमें भार सफल हो नकेंने?"

न्या नार नाया करत है कि इसने नाथ शक्त हा तकन : "निष्यय ही मुत्ते भाषा है कि भारतकी जनताकी सन्दर्शे हम अपने जारमर्भे नृत्व कस्दी सफल हो जायेंगे।

"तो दमने निए साथ दिन दमायोंका अवतायन करना चाहने हैं?" "हम चाहने हैं कि वे इसके निए जारतमें वैध बालोनन करें। वहां

हम चार्टी हैं कि वे इसके निष् आराहमें वैध आव्योजन करें। वरो विननी भी एकाएँ हुई वनवें न प्रत्येक्त इस साध्यके प्रश्नाव स्वीहन किये यो कि सभाके अध्यक्ष भारत-नरवार और इंग्लैंडनी नरवारक नाम वसरपत्रक

र देशिय राज्य र पुत्र रेडिक-१९८ १८९-१११ १९७-१११ १५८-

र यह माराज्य राज्याणी इस पानूबी शिक्षक वा रिज्या बेटा भारतिकी निष्य पृथ्य गीलांधी रहते और महत्त स्वास्त्र हो वही पानेहे किह राज्य बात वा । देवार राज्य र पुरा १८६-११४ ।

वैसार करें और जनके द्वारा पश्चिम बाधिकामें मारतीयोंकी दुर्वपाकी करण जनका ध्यान दिखायें। ऐसी 'समाएँ छारे सम्बद्ध और महास प्रान्तमें दवा

ककरता'में हुई हैं।"
"मारत-सरकारकी तरकसे इस विवसमें मापको कोई बरसाइवर्षक बवाब मिला है?"

"नहीं उसका छत्तर निक्षतेसे पहले ही मुझे यहाँ करे माना पड़ा।

नेटाखपर माछन मगानेकी रूप्या नहीं

भी गांधीने जाये कहा "कहा गया है कि मैं नेटाक वे व्यक्तिविधिकीं सामरानगर सातन कमाने के किए मारत यदा सा। इस मारता में वोर्क गांध प्रमाण करता है। सामर कोगोंको बाद होगा कि वो वर्ष पढ़े के नेटामड़ी संस्कृत एक जुली किट्टी "किसी सी। और उसमें मैंने कहाना का कि यहाँ भारतीमीके साथ कैता सकक हो उसा है। भारताकी करताक

का । क्रमहा भारतामा कसाम कता सकू सामने मैने ठोक बडी सारी वार्वे रखीं।

101

" एक दो यह है कि कानी पुरितकारों मैंने उठा 'तुकी विद्ठी' का हो एक हिस्सा दे " कारती मेंति हास उठा छानव की सा स्माहर है 'दा पार्टी को पार्टी के साम उठा छानव की सा स्माहर है 'दा पार्टी को कि ने में है कि मोर्टी के सिंदी है। भीर का वह मकाधित होई की उढ़ उठके उछा हिस्सेपर कियोंने कोई कामित बड़ी की बी। उब कियोंने यह नहीं कहा कि मैं पानिशेषियोंक नामकास का हो हो। दरलु नम नहीं बाठ वह पार्टी का पार्टी है। पर पार्टी का नहीं बाठ वह पार्टी का वार्टी का हो। यह हो कि हमने क्यां का हो। यह है कि इनने अपनिशेषियोंक नामकास हो। यह कि हमने अपनिशेषयोंक नामकास हो। यह विद्वीपर बजारामी

र फाल्ट्रेडी जिल नाम समाने पांचीओ मापन गरदेशके के (देदिए इंच (१५) वह रह कर ही यो भी न्सेकि पांचीओचा सत्यान होजाति कार्य परिन्त मानिकार्ड क्रिय रहाता होना पत्र मानिकार्ड परित हुए ११ — १५५)। शास्त्र की पांचीनीर्ड प्रियुच परित मानेहिस्तमार्थ करियों के मानाव्य पित किया है, कियी बन्तीन बातन किया वा मीट मिन्नी पहिल मानिकारात्री भारतीयोगी (परितर्ध नार्यी मारास-मानीने व्यावस्थार मिन्नीय निकास किया या। सार्ववस्थित तर्यान्य मानावस्थान हर्यान्य मानावस्थान हर्या

१ देनिए गारशिकार क्या है ।

1 karres

भवाँ जी हुई। किन्तु किसीने मेरे रूपनका प्रतिवाद नहीं किया। वस्कि सभी अखबारोंने सगमग एक स्वरसे मही कहा कि मेरा वर्गन अत्यन्त निष्पन्न है। ऐसी सुरहमें मुझे सना कि मैं अगर उस असको सद्भव करता हूँ ता इसमें कुछ भी अनुचित नहीं है। मुझे पता है कि समटरने उस पुस्तिकाका सार' तार डारा इंग्लैंड भेगा। बढ़ सार मेरी जस सुनी पिट्ठीसे मेल नहीं बाता था। और प्यों ही अपको वह पुस्तिका मिली त्यों ही अर्वनके दोनों समाचारपर्वाने किया कि रागटरका सम्बेश बढ़त महिर्देशित है। रागटरने क्या कहा है और बसका क्या विप्राय है, इसके मिए मैं जिम्मेबार नहीं हो सकता। मेरा तो समास है कि प्रदर्शनकारी दकके कोनोंने नभी तक न तो मेरी वह बुकी विद्भी पत्री है और न वह पुस्तिका। उन्होंने ता यह समझ किया है कि चामटरका मेबा तार पुस्तिकाका सही संबोप है और, इसकिए, वे इस प्रकारकी कार्रवाहमाँ कर रहे हैं। सगर मेरा यह समास सावार है तो में बहुता हूँ कि बहुकि मेता भारतीयों और उपनिवेसकारियोंके साम भी अन्याय कर रहे हैं। मैं तो निश्चयपूर्वक नहता हूँ कि जो बार्चे मैंने महा प्रायक कही है उससे समिक नारतमें कुछ भी नहीं नहा है। और मैंने को इस मामकेको वहाँ पेरा किया उससे इसमें कोई बिगाइ नहीं हवा है।

गिरमिटिया मजबूरोंका प्रका

"अपनी इस भारतीय मुद्दिममें शर्तनन्द मास्तीय मनकूराके प्रवतके आहेर्से भाषकास्त्रानगरका?"

"बागी पुस्तिकार्ने मैंने साफ-साफ किन्द्र बिया है कि संसारके हमरे हिस्सॉर्ने भारतीयोंके साथ पैसा स्थवहार हो रहा है नैरासमें न शो इसमें अना है और न बुख। मैने कहीं यह बतानेका प्रयन्त नहीं किया है कि सनके साथ कुरता हो प्या है। सामान्य क्यसे वह तो समान मारतीयोक प्रति कुर्मबहारका मुझे बहित कपार करते यह सहसारी बिन्दार्श के प्रकार करते हैं। पुरिवासों में हैं नहीं बहित कपार करते से पहें सहसार के प्रकार करते हैं के महत्र करते हैं कि मेरी किया है कि मैंने वो उदाहरण पेस किये हैं ने महत्र करते हैं कि मेरी मुख्येनहारकों पहलें स्थानियेसवाध्यिकि दिवसे मध्य हुना पूर्ववह है। और

१ देशिक इच्छात्र ⊷त्र १। व देशिक इच्छात्र ०—व्र १।

सन्दर्भ सांगी नाज्यन

मैंने प्रमास यह बतानेका किया है कि भारतीयोंकी बाबादीपर बन्धियें कमानेबाके कानुनोक्ता सम्बन्ध इस पुर्वसङ्गते हैं।

भारतीर्योपर भगी कानूनी बन्दिशें

YWS

भैने भारका बहाया कि यहाँके भारतीयोंने भारत-धरकार, कारतकी बनता और इंग्लैंग्डकी सरकारसे यह अर्ज नहीं किया है कि उपनिवेधवासियांके दिलोंमें उनके प्रति जो दुर्मान मर्च हवा है उससे उन्हें क्ट्टी दिकाई बाने। ड़ी मैंने यह तो बदस्म कहा है कि दक्षिण आफ्रिकामें भाष्टीयोंको अधिकते विक नफराजी निगाइसे देना बाता है और उनके साव बूरा स्पवहार भी होता है। परन्तु इस सबके बाबबुद हमारी माँग इनसे पूर्टी पानेकी नहीं बहिन उतपर को कानुमी बन्दिमों सभी हुई है चन्हें इरानेके लिए है। हमारा विरोध दो दुर्मावके माधारपर बने कातुनांकि प्रति है और हम राहत इन कानुनोंसे बाहने हैं। सी वह तो भारतीयोके किए केवल स्ति व्यक्ता रखनेका प्रकृत है। उपनिवेशवासियों और विलेवकर प्रवर्गन-मसिनिने जो स्क नारण कर रखा **है** वह तो वसहिब्ब्*ता*का है। असवारींमें किया गया है कि भारतीय इस प्रवत्तमें है कि संपत्तिवेशको भारतीयीसे भर दिया वाये और इसका बदुआ में हैं। यह क्ष्मत एकदम मूठा है। इन मुसाफिरोंको बानकी प्रेरका देनेमें मेरा उतना ही हाब है जितना मुरोपसे मयाफिरींको आनेकी प्रेरणा देनेमें। सवकत यह कि ऐसा कोई प्रयत्न ही कती नहीं किया पना।

म्त्रा नहां क्ष्मा पत्नाः ृ"मैतो समझदार्हेकि मापके इत मान्दोत्तनका मीर सकटा मसर पड़ाः

होपा। "तथपुत यही हवा। मैंने दुख सम्बनोंने यहां वालेके वारमें वातचीत की। हेतु वह वाकि मेरे चके जानेके बाद में मेरे कामको संभात सर्वे। परस्पु मुखे करा मी सफकता नहीं निकी। उन्होंने मही मानेते कनकार कर दिवा।"

मुसाफिरोंकी संस्था बढाकर बढाई गई

क्र्सेंड और शहरीपर नाथे हुए मुसाफिरोंकी संबंधा भी बड़ा-चड़ाकर बताई नई हैं। चहाँतक मुखे पता है इन वो बहाबॉपर ८ नुसाफिर

१ देविय कुछ ११७—१८ ।

व देशिक कुछ वय १८-१ अस ११४-१५।

ल्ही हैं। उनकी कुल पंचा ६ ० हैं। इनमें से नेटाल जातेवालीकी संस्था केन्द्रस २ हैं। जीर बेप मुखाफिर डेकानेलाने मारीसा बोरान जीर इम्मलान लागेंगे। और नेगा कातेवाल के नर में से भी केन्द्रल १ नरे के कि कि का नरे जावन के कि नरे के लागेंगे भी कात्रल १ में से भी केन्द्रल १ नरे वावन्त्रल के में स्वार्थ के सावस्था के स्थानसे भी सावस्था है। यहार के स्थानसे भी सुवाफिर सावे हैं उनका कार्यों भी सेस कोई हान नहीं है। एक यह भी सम्मलिए कार्य है कि बहावर्य कोई सावस्था मन ५ सुवाफ और कम्मलिए मी है। यह एव विक्कृत कुर है। यह सब कर्मन से एक कम्मलिए मी एक स्थानिल के स्थान कार्यों में सेस क्षेत्रल के स्थानिल के स्थान कार्यों में सेस कर्मन कार्यों में सेस कर्मन कार्यों में सेस क्ष्यों मार्थ के स्थान कार्यों में सेस क्ष्यों मार्थ के स्थान कार्यों में सेस क्ष्यों कार्यों में सेस क्ष्यों कार्यों में सेस क्ष्यों मार्थ कार्यों में सेस क्ष्यों मार्थ के सेस कार्यों मार्थ की कार्यों में सेस क्ष्यों मार्थ के सेस कार्यों मार्थ की सेस क्ष्यों मार्थ के सेस कार्यों मार्थ की सेस कार्यों मार्थ की सेस क्ष्यों मार्थ की सेस क्ष्यों मार्थ की सेस कार्यों मार्थ की स्थान कार्यों मार्थ की सेस की सेस कार्यों मार्थ की सेस कार्यों मार्थ की सेस कार्यों मार्यों के सार्थ की सेस कार्यों मार्थ की कार्यों की सेस कार्यों मार्थ की सेस कार्यों मार्थ की सेस कार्यों कार्यों की सेस कार्यों मार्यों की सेस कार्यों मार्य की सेस की सेस कार्यों की सेस कार्यों की सेस कार्यों की सेस की सेस कार्यों की सेस कार्यो

कानुनी कार्रवाईकी घमकी

"यह भी कहा नमा है कि बहानोंगर नाये हुए मुखाधिरोंको में खनाह दे यहाँ है कि उन्हें कानुनके बिसाय को रोक रका नना है उन्हर ने नेटानकों सरकारके बिनाय कानुनी कार्रवार्ष करें।' यह एक हुएये तिराधार नात है। मेरा ज्येंन को नोतीने जीन अपनुके बीन कोना नहीं बच्छि उनके बीन उन्हर्मान देवा करोनें महर करना है। जिन्तु हस उर्वचर कि उन्हर रेक्ट में पोचना उन्हें को प्रतिच्छा प्रधान करती है उन्हर्म किया प्रचार भी करी स्वीवाद करोके किए उनने न कहा बाने। कोशवार्म डाफ बहु। पहा है कि उनमाबीक सत्तन काराधि प्रवादनों के बान कमताबाद स्ववाद होया। यहें ने विनी बानि वर्ण वा बांके हों इसमें कोई सेवमाव नहीं बरवा

र देख्य पुत्र १२८ और १३१।

सन्त्र्वं योगी नार्यम

मुझे हरू है कि बहु घोषचाये बाहे वितता मी असहमत क्यों न हो छमें सिहम्पताकी बृति बारन करनी चाहिए। एक दुक्ति दो मारतीयोक मति विसीको कोई बारावि हो है। नहीं सकती। कमोशियक पैट्टिमारिक पृतिक [बीपनिविधिक वेशमनत संगु! ने बताय निकाले हैं कि कारीनर-वर्षमें बेनैनी पैना हो यह है। किन्तु मैं तो बहुता हूँ कि मारतीयों और यूरोगीयोंने बीच होड़ है ही नहीं।

"यह एक है कि कभी-कभी कुछ भारतीय मेटाल सा बाते है। परमू गेटालमें उनकी को संख्या है उसे बहुत बहुत कर तावा जा रहा है। और नये जाने बाढ़े तो सब्दुन बहुत कम है। किर एक देनी कोटिन दुरोगीय और प्रमुख्य मामूछी भारतीय कारीगरके बीच होड़ हो ही कैसे सनती हैं? येरा मत्तवाके यह नहीं है कि एक भारतीय कारीगर पूरोगीय कारीगरकी होड़में सक्तवाके साथ बाब ही नहीं रह एकदा। परन्तु में किर कहना बाहुता हूँ कि ऐसे देने दर्जेक और सही प्रकार कारीगर यहां बाते ही नहीं। वे बयर मार्ग भी तो उनको यहां काम ही नहीं गिमेगा — वेने कि हुमरे येथेवाफोंक किस यह कोई बहुत सक्ति काम ही नहीं मिमेगा — वेने कि हुमरे येथेवाफोंक किस यहां कोई बहुत सक्ति काम ही नहीं मिमेगा —

धी संधी वापस क्यों आये?

ं^वरापस मही भानेमें भापका तया हेतु हैं।

205

"मैं यहां कमाई करनेके किए नहीं बक्ति को कीनोंके बीच उद्गान वैशे करनेके नाम उदेशनों बावा है। इस कीनोंके नीच कमी बहुत मधिक कन्छ-न्यानी है। बाद प्रवटक कीनों कीमें मेरी उपनितिष्ट एत्सान नहीं करणें स्वरूक मैं यहां कोनोंके बीच स्वसान कीनाकेना यान करता गईगा।

"बारने भारतमें जो-बो भी बार्ते कहीं और जो-बो भी फिया उन्हें अरातीय कारोनोंने पानक कर निया?"

"मेरा प्रयान तो बैधक मही है। मैंने थो-पूछ वहा अनुताने नाममें ही वहा।"

"इन बहुआंपर कीई निरमिटिया भारतीय नहीं है?

र वर्षमीक मुरोरीलोने माम्मर १८९६ में स्थानन अस्तीलोक आवजनक रेफनेते पिर रहा संपन्न सेनाम किया था। देशिए पूर्व २ १-१। १ वह असेना मेरान भारतील विशिष्ट्रा है। दक्षिर राज्य १ पूर्व ११ ।

नहीं। कुछ ऐसे क्षोप अवस्य हैं जो मामूबी सर्वोपर स्थापारिमौकी बूकानेमिं सहामकोंका काम करनेके किए आये हैं। परन्तु ने गिरमिटिया मजबूर नहीं है। भारतीय प्रवासी कानून (इंडियन इमिग्रेयन कों) के बनुतार, किसी अनुविद्य व्यक्तिका किसीको वरेस सेवाके किए गिरमिटमें वावकर भारतसे बाहर से बाना गैर-काननी है।

प्रस्तावित भारतीय समाचारपत्र

"क्या भारतीन कांग्रेस नेटाकर्में कोई समाचारपत नहीं निकासना चाहती?" 'भारतीय कांग्रेस तो नहीं परन्तु हो। उससे सहानुमृति रसनेवाके कुछ कार्यकर्ता एक पत्र निकालना भाइते थे। फिन्तु लग्न कम्पनाको क्रोड़ देना पड़ा --- केवल इसकिए कि मैं दूसरे कामोंको करने हुए उसके किए समय नहीं निकास नकता चा। मुससे कहा थमा था कि में टाइप और इसरी सामग्री मारतसे कपने साव केता बाकों। परन्तु मैंने देखा कि मैं यह काम नहीं कर सकूँगा। इसनिय में यह कुछ नहीं साता। में जिल सरजनसे बातचीत कर रहा या वन्हें अगर यहाँ आनेके किए राजी कर सकता तो मैं यह एवं सामग्री से आता।

किन्यु मने छंचमें सफल्या नहीं मिकी इसकिए कुछ नहीं काया।' ''लपनिकेमके इस सान्योतनके सम्बन्धमें भारतीय कांग्रेसने नया कदम

क्टामा है? "बहौतक मुझे पठा है कांब्रेसने कुछ नहीं किया है।

थी गांधीकी योजनाएँ

"बपनी मुद्दिमके बारेमें बापकी क्या मोजना 🕏 ?

कपनी मुद्दिमके बारनें मेरो मोजना अब सह है कि कपर मध्ये समय दिया गया तो मैं नतार्क कि हमारे दोना देखेंकि हिलोंमें कोई विरोण शही है। और यह कि जरनिक्यने जो क्स मिल्लियार कर रखा है वह हर शरहने मन्त्रित है। मैं ज्यानिवेधियोंको यह भी समझा देना चाहता है कि मैंने को काम हानमें ले रला है उसके लिए मैंने वो कुछ भी किया है यह उनके हिएकी वृष्टिने भी सामराजक है। वैशक वर्षानकसर्वे भारतीयोंक स्वनन्तरायुक्तक वानेमें स्कावट डाकनेके किए जो भी कानून बनावा जाये उसका विरोध हो हमें करना ही चाहिए। इस विपनमें भारत सरकारको तरकते पूरा समर्थन मिले ऐंगी न्यमायत मेरी भवेचा रहती। धवनिवेसमें प्रशासी आस्तीयोंकी सरमार ही कारेगी यह बदारा तो बितकूब है ही नहीं। कुर्सिट एक बार अपनी 205

फेरियों में करीब सी नमें जागन्तुकोंको बापस भारत के पया वा। इसकिए मैं निवेदन करना चाहता है कि नेतागच उपनिवेदक सामने कोई करोर नीति पेड करें छससे पहले अपने तुष्यांकी बानकारी पनकी कर के। स्वतन्त्र भारतीयोंकी संस्थामें इयर कोर्न वृद्धि नहीं इदे हैं। उपनिवेशमें इन आने आने वाने नार्वे की संस्थाका नियन्त्रन पूर्ति और गौरका कानन ही कर रहा है।

सी पांत्रीने संवादवातासे जनरोव किया कि वह रवनधेश्वरके सम्पानको **एनकी तरफर्स बम्पनाव दे कि उन्होंने उनको (थी गांबीको) बपने निचार** प्रकट करतेला अवसर प्रवास किया।

भी नांचीसे निवा केंद्रे समय संवाददाता ने उन्हें बताया कि इस तमय अर्बनकी बनदामें चनक प्रति सीम है इसस्पिए चनको अपनी सुरक्षाके किए बहाबसे उठरनेके बारेमें बहुद ही सामवान खुना चाहिए--- स्वॉकि भी मानी उत्तरनेत बारेमें इस निरुप्त में।

[क्येगीरो] वैद्यम रहनदीइनर १४-१-१८९७

२० पत्र महान्यायवादीको नगपरी ११. १८९७६३ कुरसिंड जवायने क्यरमेनर वर्गयमें अवर्शकारी मीलंड एक हिस्सेन बाजीनीनर इसका फिला जा। वस समय कमती इत्या ही कर बाकी गई इत्ती। समा प्रदुष्टे तो वर्षवर पुक्तिस सुपरिटेडेंटकी पत्ती श्रीमदी सकेनीकरके वीरवारके बलाक्षेत्रके कारण और वाल्यें, जब वह सम्बन्ध केर लिया गया। जिस्सें बांबीय को वे स्ववं वस नवस्त्रकी बहुदस्ति उसके प्राथमित रहा हो स्त्रं । वरनिष्ट मानी मी केन्यरकेराने केटाक-सरफारको सार विका कि किस कोनावे गांधीनीतर मान्त्राम क्रिया है अवस्य मुख्या चनावा आवे । स्टब्स वस बहान्यास्मारी (करनी-कारफ) हो एरफम्बने उवपर मुख्यमा चलानेके लिए ग्रांबीजीने तरह माँबी तर वंदीयोने वह रच्छा च्याच की कि इन सेगोंके क्षिणंत्र कोई सर्ववाह व सं बारे । महत्त्वाकारीने वह नात निव बेनेको कहा हो प्रोबोगीने कुरस्त निजानियन रक किया क्रेया जो नागों जो चन्परहेतके शाम क्रेक क्रिया तथा था ।

र मुरोरीकोने महानार १८९६में, यह "क्कोदिन्त निर्मादिक मुस्लिन" (जीतनिवेदीय केपानक संद) की स्थालक की वी, मिलक कोल्य 'स्वकृत परिवासनीनी और मिलक मामारको रोकने के बचाव करता था। वेकिस कुछ र र। २ इत पत्रध पाठ सम्बद्धानी कारच (एत वस ११५६)में भी बरकेन्य है।

बीचग्रंच हर्नेत कत्त्रसी १ १८९७

मेकार्वे माननीय हैरी एस#स्व महास्वायनादी वीटरमैरियावर्ष

महादव आपने मेर बारेमें जो इपापूर्य पुस्रतास की है और पिछने मुख्यारकी बटनाके बाद सरकारी कर्मबारियोंने मेरे प्रति को सहबयता दिलाई की उसके स्मिए में नापको और सरकारको बस्पवाद देखा हैं।

मेरा निवेदन है कि मैं नहीं चाइशा पिछने बुववारको कुछ मोगाने मर साम जो बरताव किया का असका कोई समाक्ष किया काते। जम बर नावका कारण मैंने एमियाइयोंके प्रकार सम्बन्धमें भारतमें जो-कुछ किया उसकी यकत-ऋसी वा इसमें मुझे कोर्न सम्बेह नही है।

मेरा कर्य है मैं सरकारको बना दें कि ममुद्री पुष्टियन को आपक आदेखेंकि बनसार मुझे गुपचप राठको निकास ले बातका प्रश्नाव किया वा किर मी मैं बी कॉरन के मार्थ तरपर बसा गया। यह मैन बपनी किम्मवारीपर किया और समझी पश्चिमको इसकी सूचना नहीं ही।

मापदा जाति

(**# मे # मे**

मों क गांधी

मुख्य चपनिवेद्यमन्त्रीक शाम नेटाकके यहर्नरके खरीता नं ३० ता ३ मार्च १८९७ का सहात्र।

र वर्षमके एक बूरोपीय शवशेषित को गांची हैंने किस से ।

२१ इर्धनमें जहाअसे उतरनेपर' [बर्गन मनवरी २८ १८९७] <u>धेवस</u>

नारतीय

वेदार्चे

(१) श्रुकान (२) सर विनियम इंटर, मारफर क्षाना

(३) भावनगरी क्षेत्रन

दो भारतीय बहान क्योंड *माइचै* ३ नतस्वरको बस्वति

शके। १८ विषय्वरणे बाये। नारी यात्रामें पूर्व स्वस्थाणा प्रवायत्व द्वोनेतर भी ५ दिन सूतक (वसारीन)में रिण

गरे]। बरबई रोग-मंत्रमित बन्दरताह बोधित तुमरे दिन। स्वास्य

अधिकारी मुमतिका दूसरा निर्म्पा बहु २४ को बहायमें बाया।

घोषक-नदार्र पुरान काड़े पट्टियों आदि जनानेदा बादय दिया। ११ दिनदा मुक्क जारी दिया। जनाना बादि २५ को हुना।

२८ वो वृष्टिम बदमर भागा। किए गद्धारं-गोपन विमा। विमाप

कोरे कार्रे आदि अनावै। २० का न्याका अधिकारी अहानमें भाषा। नृत्योग प्रकट किया। हिर १३ जिला नृत्य

भागे विद्या: प्रैनीक १ जनगरीको जिल्ला वा, ११ ^{को} १ इस लाजे प्राध्नांत्रम तथाय बालानेचा निराम को वैश्वाहेरके मान

शारे तम (कुट १९७-११) में निग्मादे नम तैया गया है। र बन बान्डी रहन्ती स्थलने बारिन सही है। बही को बारिस ही सी है प्रमाद्या आराप तम भिष्यम विकास हारहे तम कराती वह १८९७ है गरी

रम मान्या कांध्य है (देनिया प्राप्त १८१) । a mere mille etants demartates mest ent s

र कार्तित न्याना । रही और बहुती ब्रह्मता है है, रहाजा हुना हों। हेक्स कर र व

a lite name or mark you constraint will seem to? क्ष पूर्व वर बतारा क्षणांत्र केन का आ अस्तिको क्ष्मान्त्रके अन्य कार कार विया वदा। बहायके पहुँचनेतर स्वयंश्वक अञ्चली जीर दूसरोंने बाविपोँको उत्तरनेते वदल रोकनेके छिए समाएँ क्षराः प्राजिकि किए नगरके समामका (टाउगहाण) का करमोग हुआ। स्याक्ष्माणाने घोषमा की-करकारकी सहातुमूणि है रस्तामेपीने कहा है कि सरकार मीड़का विरोद नहीं करेगी। बीर कहा-दोनों बहाजोंने नेटाक मानवाले ८ सावी हैं स्थानिय कारीमार बीर धनवूर हैं मार्गीयों उपनिवेशकों पर हेनेथे योजना है, बहुत्य के सापनीयों उपनिवेशकों पर हेनेथे योजना है, बहुत्य के सापनीयों प्रवित्त है नार्थ। येथे क्वान्य कार्योक्त बहु कोग प्रहेंके। एवं यह है, याणी पिछं ६ नेटाक बानेबाके २ से क्याचा नहीं सो बी क्याचा प्रति सापनीय प्रति सहस्थानिय क्वान्य स्थानिय क्वान्य स्थानिय स्थानिय क्वान्य सापनीय स्थानिय स्थान क्लो। जपनिवेदपर का बानेकी कोई योजना नहीं। कपाईकी कार्य नामान का बाजका का बाजका नहीं वाजका की कार्य कार्य नामान नहीं वाजका कार्य निवृत्त सुरुक-सिरिकेट एक छरस्यने पीड़नी की इस्कीका नेपूल किया। यानियोंको चेणनती (सी गर्द कि) वर्गको हुवारों कोर्योंका निरोध न सहसा ही सी मार्ट की स्थान की सामा की सामा कार्यों हों से सामा की सामा की सामा कार्योंकी मार्ट वाकने की सामा की सामा कार्योंकी वाजकी सामा सामानेकी वाजकी। महाबके एवेंटोंने मूतक कमानेकी वर्तनता नताकर सरकारसे पानियोंको पाइत और संरक्षक देनेका अनुपेत किया। तेरह ताप्रका प्रस्तिक शास्तक एवँटीके पत्रकी जनेका की गई। वारीकां प्रस्तंतकं कारतक एवंटीक वक्की जरेशा की गर्दा।
यहारी रेक्कोंक कर्मवारियों स्वयंविक्की के कर्ट्सलय काफिरों
पहिंद हवारों कोन "कंक्सल पड़े वो बन्दरस्ती मानियांको
विदार हवारों कोन "कंक्सल पड़े वो बन्दरस्ती मानियांको
विदारमें क्षाइको चाट्यर कार्य। व्यक्षीने मीवकं वासने
मायम क्रिया। भीव बरवास्त हो गर्दा। यादियोंको गुरावारम
वारवावन दिया चया। बुख तीवरे वद्दर उत्तर वर्दे। धेव
इमरे दिन वर्दर। वरकारने वाधिको नुम्दुम चातको उतार
वेनेका मस्ताव क्रिया। वे तीवरे वद्दर देशी चतरे। वावये
पहलोटेट करिन वे। धोवने हास्ताव की महार व्यार।
पुक्तिमें बचाया। बचवार प्रस्तांनकी नित्ता कर रह है। संजूर
करते हैं कि बालोननकारी गुटे बमानींगर करें। मानीको

सही बवादे हैं। कुछ पत्र सरकार और आन्दोकनकारियोंनें मठबन्दनका चक करते हैं। मानियोंको मारी हानि पहुँची है। घरकार कोई ब्यान नहीं वं रही। सुतकके दिनों मारागैय मूबकवासी-सङ्गासवा निवित्ते विस्तर, भोजन बादि दिया नवाः सरकार मारतीयोके विकदा कानून बनानेके किए ब्रिटिश सरकारके सार्व क्रिया-पड़ी कर रही है। क्रुपमा चौकसी रहिए।

सन्दर्भ गाँची नाकस्य

इस्लिक्षित संग्रेगी प्रतिकी कोटा-नकन (एस एन १८८३)से।

२२ पत्र ब्रिटिश एबॅटको

[सेंडक केस्ट स्टीट वर्गन]

मगरी १९ १८९

सवाने भीनात विशिव एवंट

tct

प्रिटोरिका भीमस नास्र्य टाउनके रास्ते ट्रान्सवाक वानेवाके जनेक भारतीयोंको शीमा पार

करनेमें कठिनाई होती है। कुछ दिन हुए सीमापर नियुक्त कर्मचारिमीने वन भारपीयोंको विश्वे पास २५ पॉडकी एकम की टाम्सवाक्रमें अपने-अपने परान्य स्वानको जाने दिवा था। जब कहा वा रहा है कि पहले मसे ही कुछ भोन अने गये हो परन्त अब सीमाके कर्मचारी किसी भी हाकतमें बारतीनोंकी सीमा पार मही जाने देंगे। मेरा निवेदन है कि नवा जाप समाजीक भाष्टीय प्रमामतोकी मोरसे निरिचत पता बनानेकी कुपा करेंगे कि चर्नी किन परिस्थितियों में सीमा पार करने की बाबेती?

नारध्य नार्षः

(क्लेक्ट्री) मो कर गांधी

प्रिटोरिमा भार्काइम्ब और क्कोनियल बाफ्रिन रेक्ब्स साउब बाफिका बनरह १८९७ ।

२३ पत्र विलियम विल्सन हटरकी

वर्षन कतवरी २ १८९७

[सर विकियम हॅटर नंदन][†]

नदनः]' श्रीमन

भी १८ दिखन्तर हो नेटाल पहुँचा परलु १३ चनक्यों के पहुने वर्षनों छटा नहीं सका। मह देशी जिन परिस्थितियों में हुई से बहुठ वर्षमधी है। क्या नाती का नाती नमानने आपको एक चहुत करवा तारों होता है। उपमें करों होती होता था जुका है। भी नी से ने परिस्थितियों बडानेकी हसाग्र तीता है जिन से नाती है। भी नी से ने परिस्थितियों बडानेकी हसाग्र तीता है जिनका अन्त वर्षने भे, बोगीन प्रवर्णनों बडानेकी हसाग्र तीता है जिनका अन्त वर्षने भे, बोगीन प्रवर्णनों हुवा। पर्याचन वर्षने भी साम्य प्रवर्णनों क्रा मान्य का स्थान क्या करता था। इस बहुनों है। इसार वर्षने हैं। इसार वर्षने हैं। इसार वर्षने मान्य करता था। इसा बहुनों हैं। इसार वर्षने हैं। वर्षने हैं। इसार वर्षने हैं। इसार वर्षने हैं। वर्षने हिनोजन कम्मणीका।

यत समस्तरे साराजके सानामा टीगाट राकार कमानीने प्रवाणी ज्याध किवाय (इमिप्रेणन इट्ट कोई) को सर्वी थी थी कि पिरांक्ट प्रवाणे सम्तर्कत स्मार्ट्ड भारतीय कारीमांकी का रिया जाये। ' इसमे साम मारतीयोंकि सिकाक पूरोगित नार्टिंगोंने मंत्रीट्ड विरोक्ता पुत्राचा हो यथा। उनेन मेरिटानको और सन्य गहरोंने पुरोगिय कारीमारीकी नहीनकी छमार्च हुई सौर उनमें एकर कमानी हारा भारतीय कारीमारीकी नहीनकी छमार्च हुई सौर उनमें पान के सीरांचींने सामानके सामने मुनने टेक रिये सौर सम्मी सर्वी सामन के सी.। पराचु सार्टीमान वारी पहा। नेहासोन पूछ गाँउ नव मान की

रे नुस्त पाक्षी मकती नव नवा की जनता कि बह किने नेना गया था। गया ला तिर्म्च्या विलान बंदरने कारने कारनी १६ १८५७ के पर (पण पन भरों में वाली शामिल क्लीकर की है। इसने लात है कि बह वनका निरा या। सम्बन है कि वारामार्गे लिप्टी और सह अंबरारी महामार्गिक्ष की लिये। गिर्मे निर्म्म कार मार्ग का कारने कार ने कारने था।

र सिंगर इस्ट स्ट ल्टर ।

s gent Les fe mes

y Par ye tee !

तुन्दे गाँवी वादमद

भीर मान्दोकनको क्यमन विना भेदके सार्दे सारे भारतीयोकि निकाप बढ़ने-डैक्टने दिया। बलवारॉमें घारतीयोंके विदश्च मार्वेशपूर्य पत्र छप्ते प्दे। इनमें से विभिन्न र बनावटी नामोंसे किने वाले वे। वर्ष बहु सब जारी ही या तन जनवारोंमें इस बाधमके वस्तम्य प्रकाधित इए कि भारतीयोंने उपनिषेशको स्वतंत्र माराधीवाँसे पूर देनेके किए एक बायोजन किया है। इसीके बासपास मेरी पृस्तिकाके बारेमें रामटरका तार प्रकाशित हुमा। उसने क्पनिवेधियोंको भावनबुका बना दिना। तारमें बतावा नमा वा कि मैने कहा है भारतीयोंको कुट बिया बाता है मारा-पीटा बाता है बादि। परन्तु बब पर्शोको मेरी पुस्तिकाकी नक्कें प्राप्त हुई तब उन्होंने मंजूर किया कि मैंने ऐसी कोई बात नहीं क्यी जो नेटाकमें पहले नहीं कड़ी गई और को सही नहीं मानी का चुकी। परन्तु सामान्य जनताके जिसने राज्यरके वारसे बपनी राम कामम की नी अनुमें कड़वाहुट बनी रही। इसके नार नम्बई और महासकी समाजेंकि बारेमें तार जाये। ये गलत तो नहीं ने परन्तु इन्हें रायटरके संक्षित्व समाचारके सान मिला कर वहा नया मीर

जहाजींचे को क्यमय उतने ही मारतीत बापस जाते के उनकी जोर प्यान नहीं दिया गया। और कारीगरींको विना किसी जावारके यह विश्वास करा दिना नमा कि ये बहाब वशिकतर भारतीय कारीगरोंकी का रहे हैं। इत्तरी भारतीय-विरोधी सवी का संगठन हवा। जनकी बैटकोर्ने प्रस्ताव गास करके नेटाक सरकारसे माँथ की यह कि वह स्वतव मारातीमॉकी बाहको रोके और भारतीयोंको जमीन-जायबाद बावि खरीवने न दे। इन संबोंको ज्यापार-वानिय्य करनेवासे लोगोंका बहुत वक प्राप्त नहीं है। इनमें मुक्ततः कारीगर बीर योड़े-से निजी पेसे करनेवाके कीम सामिक 🜓

इस बीच मारी संस्थाने आरतीयोंको केकर बहाजोंका बाधा बारी ही ना। जानेवाधीके समाचार प्रमुख रूपसे और कहा-वड़ा कर छापे परे। धन्हीं

वब मधु सब हो रहा था उन्न समय खबर बाई कि क्टक्रेंड और *नावरी नाम*के दो बहाद भारतीय वात्रियोंको केशर नेटाक मा को है। ये करहेंद्र हास वात्रा

tcv

इनसे पाननाएँ और भी कद हुई।

श्केमीच्युक्त र ।

e berren ett.

वरोरीन रक्षद्र तम और बीनमिनेतिक वेसमक स्वा वेदिन कुछ र १-२ ।

कर रहावा। मुझे वानातो थाएक ब्रिटिस इंडिया वहावसे परन्तु दर्वनसे एक तार वा गया विश्वमें मुझसे तूरन्त बीटनेका बनुरोप किया गया था इस-किए मेरा कुरसेंबचे मात्रा करना नकरी हो तथा। मैसे ही यह समाचार कोयोंमें कैता असवारों और उर्वतकी नगर-परिपदने भाग की कि बस्वईको संस्थानक रोपप्रस्त बन्दरसाह वोपित कर दिया वाये। बहाब १८ ठारीलको नेटाक पहुँचे और उनपर बन्दई कोड़नेके दिनते रहे दिनके नियु संस्थानक रीय सम्बन्धी पूर्वक (क्यारंटीम) बारी कर दिया थया। बम्बईको संकामक रोक्से प्रस्त बतानेवाकी बोवजापर १८ विसन्बरकी तारीक पड़ी भी और वह १९ तारीसको सर्वात बहाबोंके मानेके एक दिन बाद एक विशेष सरकारी गबटमें प्रकाशित हुई थी। जिस स्वास्मा-विकासीने वहाजेंकि बाजईसे रवाना होनेके दिनसे २३ दिन पूरे करनेके किए पाँच दिनका सूतक कारी किया ना वहें बरकास्त कर दिया नमा और उसके स्थानपर बुसरे स्थन्तिको नियुक्त किया गया। नमा व्यक्ति पहले सुनकके बीठनके बाद बहाजोंमें गया और जनने क्य दिनसे १२ दिनका सुद्रक भारी कर दिया। सरकारने यह रिपोर्ट देनेके किए एक कमेटी निमुक्त की बी कि दोनों बढ़ाजोंके बारमें त्या कार्रवाई की जामें। उस कमेटीने यह रिपोर्ट दी कि बुवाँ बादि देनेके बाद १२ दिनका सूतक बरूधे होना। इस समय स्वास्थ्य-विकासने बुजी नाहि देन और सोपन करतेकी नुषताएँ में जिन्हें पूरा कर दिया गया। इसके ६ दिन बाद बानों जहाजीनें एक-एक अफसरको पूजा देने आदिका काम वांचनेक किए भेजा पता। बादमें स्वास्थ्य-वांचकारी फिरसे आया बीर उसने उस दिनस १२ दिनका सुद्ध आरी किया। इस प्रकार मंदि कमेटीकी रिपोर्ट पणित भी हो तो भी १२ दिनका मृतक मूक द्वांनेक पहले साफ ११ दिन वरवाद हुए।

बब कि बहान इस तरह बाहुए लेगरस्वकों पहे हुए ये भी हुए स्थार्थ सामदे एक स्वापिक कठाईने था कि स्वारेडेक देताओं नेटाक मार्टेट एएस्प्ट टकडिका क्यांत है, बसने हुस्तासरोंने एक पूक्ता प्रकाधित की। वहनें ११ तरिककों बायोजित एक बास समाम सामिक होनेते किए करेनके हुएएक सारमीका बाहुक दिल्हा एवा वा बोर बहावा पना वा कि

१ क्षेत्रर १७ १३५।

द रेक्ट कार्याचे ४ इन्ह १८ ।

१८६ छन्त् यंत्री नाहस्य

त्यापि इसकी वह विकारत वी कि समावक बयेसाइत क्याया एमकसर कीय बारनेकमर्ने विकित माग केमेर्स इर गई। यह भी याद रवते अमर्क है कि पहले बिन संपर्केत किक किया था चुका है उन्होंने भी इम बान्यों लगमें मान गहीं किया। उत्पर बताई हुई करेटीके एक उदस्य तथा बहानी काहिद हमर्डेदिके करतान वा मैकेंबी और एक स्वात्मीक खांकिस्टर तथा वर्षने काहिद हमर्डेदिके करतान वो मैकेंबी और एक स्वाद्मी एउसे मुक्य ज्यावा वे शत्मार्क स्विद्यक मागल हिमें कर्यात भी वे एस बाह्मी एउसे मुख्य ज्यावा वे शत्मार्क स्विद्यक मागल हिमें क्यांत्र भी वर्ष है अपनि स्वर्ण स्वात्म क्या प्रविद्या क्या क्या है व्यव्य कि होनों बहानोंके सामियोंको उपनिवेशके स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण है वीर प्रविद्या नरता है कि वह स्वर्ण मुख्य प्रश्वाचने क्यांत्रीत्व करोमें सक्तारके स्वाह्मरा होनेसी इरिट्स देखाने केन्द्रक जी मांस होती उदे पूर्व करोग स्वराह्मर

हमें पुरिष्टे समर निरुद्ध हो उससे जब कहा बायेनों वह बन्दराहरू पर हामिर होगा। समाने यह सुभाव भी दिवा कि युवककी समीन बीर बता दो बावें और समर ऐसा करते के सिद्ध बकरी हो तो संस्पक्त एक बिनेय बाविसेसन स्थिमा बावें। मेरे नाम मससे समाने सुप्र महार साहरू कर

"तमाका उर्देश्य एक प्रवर्धनका आयोजन करना है ताकि प्रवर्धनकारी वस्तर साह्यर जार्से और एधियाइमेंकि उत्तरनेका विरोध करें।" इस समामें वहुँ वहीं संक्यामें सोम सामिस इस वे और यह वर्षनके नवर-भवनमें हुई वी।

दिया कि पहुंचे जो मुलक कारों किया गता वा उसका मंद्रा शिर्फ यह वा कि माराजीवीको प्रत्या परेबान कर दिया आहे कि वे बारत वापस कड़े आहें। सरकारने तार हारा प्रस्तावींका सत्तर दिया। वसमें कहा था। कि "हों कामानिक प्रवाद किसी वर्षकों स्थानिकों से स्वरुप्ते रोकनेता सुरुक-बालुगोर्थ प्राप्त अधिकारीके कथाना और कोई ज्विकार नहीं है। वसमें कर्यनुक्त दूसरे प्रस्तावनों सुमाद वह कार्यकारी तिला भी की मुद्दी। इसपर नगर-कवनमें

प्राप्त व्यक्तिगरिके नामाना और कोई वाधकार मुद्दी है। वहारें उपरुक्ति पूचरे प्रस्तावर्ते पुतारे वर्षे कार्यगरिकी तित्वा भी की गई। इत्यपर समान्यत्वारें दुसरी दाना की गई।' भी बार्डमीने चयाँ यह प्रस्ताव किया कि नूसकरी वर्षित कार्तिके जिल् र्यंस्वका एक विशेष अधिकेशन किया नामे। यह प्रस्ताव स्वीह्य हो गया। भी बार्डमीने मो मायन दिया उसके कुछ बर्वनमित मेंब

१ देखिल इन्दर ⊷-११।

र कार्रीन बागडी कोडी शक्की राज्यकरे केस सेमेद्र ।

a देविया प्रकारश्य−१८ ।

मे 🕻 "कमेटीने कहा अगर सरकारने कुछ नहीं फिया तो वर्षनको स्वयं करना हैंगा और रह-नमर्थ ताब स्वरणाह्मर बाकर देखना होगा कि स्थानुष्ट किया वा परता है। और, सबसे उत्तर उन्होंने कहा "हम मानते हैं कि बापको इस वपनिवणको सरकार और वैच मताके प्रतिनिविको हैंपिसतम हमें रोकनेके किए गैन्यवक साना होगा।" महान्यायवादी और रामानी भी एरकस्थने कहा "इस ऐसा कुछ नहीं करेंगे। हम आपके साथ हैं और हम आपको रोक्तके किए ऐसा कुछ भी करनेताल नहीं हैं। परन्तु अगर आप हमें ऐसी स्थितिमें डाल हेंचे तो धायद हमें उपनिवेशके गवर्नरफ पान जाकर कह देना होगा कि जब हम शासन जमानमें जसमये ै इमिलिए भाप उपनिवेचकी बागबोर नव सँग्रानिए। जापको कोई दूसर मादमी सोजन होंगे। दूगरा प्रस्ताव यह का नि "भारतीयोंके जातेपर इस प्रदर्धन करते इए बन्दरपाष्ट्रार वार्वेचे परन्तु इरएक स्पनित अपने नताओंकी भाजा भारतकी प्रतिका करता है। आपर कर्राजीने योजाओंको मेरे खिकाक खास शीरमे प्रश्नाता। सौमोके इस्ताहारोंके किए एक वर्षा निकास स्था था। क्षमका वीर्षक यह का "मन्या या प्रधा-महित सुकी-तन सहस्योंके गामोंकी को अन्तरनाइपर जाने और, अरूरन हो तो अल्पूर्वक एविपाइसँके छतानका बिरोप फरने और मेता नोच जो भी आदेश दें बनका पामन करनक मिए राजी है। जान्दोलनका दूसरा करम यह वा कि प्रदर्शन-समितिन कार्नेटक क्यानको अध्यम बेताको भन्नो हि याची उपनिवेशके सर्वेपर भारत हो? बार्वे और बगर वे नहीं मानेंगे ती वर्षनके हुनारों कोण उनके उत्तरनेता प्रतिरोच करेंगे। इसकी कम्मय जीता कर की पर्छ।

त्रव बाग्रोलन रन नायु वह यह या वन समय एवँटीने सरकारक गांव किमान्यी को और वास्त्रिके बंद्यानार मांन को। इनका कोई वस्त ११ नार्गन तक जब दि वहांव बन्दर्याद्वरर नाया थया नहीं दिया गांवित जिम तार की एक बरक हमके नाव करते है बमसे बहुन-बून जाहनेवा नहीं गा। बहैनेक मुकरण हमनेको बान है बक्का बारण मेर बारणे मनवारोंने प्रवासिन माजवादिया थी। प्रयक्त आक्रकन वैर-जिम्मेबार कोगीया कात्र या। और निर्दे वर्गानों देया जाये का गांवित विकृत नायान करते था। कारण नहीं है। बेदक वै करती स्थार बाल-बाल क्या गया। बारवार

e the en ic i

इस नियममें एकमत है कि मैंने ऐसा कोई काम नही किया को में किसित हैं होनेपर कोई कुमरा व्यक्ति न करता। में बहु भी कहु हूँ कि हमते बाद संस्कारी कर्मचारियोंने मेरे साथ कहुत सहस्रताका व्यवहार कि बौर मुखे पेरतक प्रहान किया।

अब सरकार भारतीमोंकी बाइको रीकनेकै किए जगले मार्च महीने कानून बनानेका इरादा कर रही है। नगर-परिवर्षे सरकारसे समिकसे अभि व्यापक मधिकारोंकी माँग कर रही है ताकि ने मारतीयोंकी व्यापारके परवा वाने और अमीन-कायबाद खरीबने आविधे रोक छकें। परिचाम क्या होग यह कहना कठिन है। इमारी आचा नेपल आपमें और उन सरजनी निहित है को हमारी औरसे अंदनमें काम कर रहे हैं। किसी भी हाकत कव श्वमम का नमा है जब कि विटिश संस्कारको भारतसे बाहर जातेगा भारतीबॅकि सम्बन्धमें क्येगी गीविकी कुछ भोषका कर बेनी आहिए। वर्तना परिस्पिविपॅमिं नटालको सहायवायुक्त प्रकास आही रसना बहुत मर्सन मासून होता है। एसिवाहपॅकि चरनिवेशमें था नानेका बतरा विस्कृत 🕻 🕻 नहीं। भाषतीय और शुरोतीय कारीमरेकि श्रीत कोई प्रतिप्रेष्टिया नहीं है यह कड़ना करीब-करीब ठीक ही होना कि नटास आनेवाले हर मास्तीय पीछे एक मास्तीय मास्त्रको बाबत बता बाता है। इस वारी बातपर व चेन्बरहेनके नाम एक बार्मनारम'में पूरी हाख् प्रकाश बाका आदेश । मार्बना पत्र दैयार किया जा रहा है। इनी बीच यह पत्र इसकिए नेता वा रहा है कि आवयो पिक्रमी बटगाओंका सार-स्पर्मे परिचय हो पार्थ। इस माना हैं कि आएका नजब बूजरे भावोंमें कान्द्री पिशा चहना है। परानु हन आएके करट देनैंके किछने भी जनिकारक ही जगर हमें ग्याय बाज्य करना है है हमारे बान इनके सिवा कोई बारा नहीं है।

नेतालय भारतीय समावदी औरने नवस्पनाद

भारक सम्माकारी नेपड मो • का गोधी

अंद्रेगे रातरी प्रतिकी कोटो-मकन (एत एन १९६७) से।

e bifre eu eco i

२४ भारतमें भकार

व्य बरोज और रिवेच बार्जियों करायों विशिष्ट वर्गीके द्वार राज्ये नारणे रॉब करीके राव्यक्रियों केंद्रीय कराव्यक्तीवित व्यास्तानवितियों बहुरोपार निकासी गर्रे थी। इतिहिद्दे विदिश जानिकेशीकों करायों भारतील करूक व्यास्ता घोरार्वे कराय वेतेले करीक थी। नामक १८९६-५७ में दश मा।

> वर्गम सरी २ १८९४

सेवार्मे सम्पादक मेटाक मर्क्युप

महोदय

मैं मारतके मकाभपर कुछ विचार न्यस्त करना चाहता हूँ। उसके सम्बन्धमें ब्रिटिस उपनिवेशींसे बनकी बंगीस की नई है। स्रावद बाम श्रीरधे कोय बानते नहीं है कि भारत बपने राजा-महाराजाओंकी सम्पतिके बढ़े-बढ़े बजानके बावजूब बुनियाका सबसे बरीब देख है। सबसे बढ़े भारतीय विविधारियोंका कहना है कि श्रेप पांचवा हिस्सा (अवश्रि विटिश भाष्त्रकी आवादीका) या ४ करोड़ लोग पेट-मर मीवनके विना सारी जिल्ला वधर करते हैं। यह ब्रिटिश मारतकी सावारण वदस्या है। सावारवतः हर कार नर्पमें नहीं अकास पहता है। ऐसे समयमें उस वरिवताके मारे वेसके कोगोंकी डाक्ट कैसी डोली इसकी करपना करना कठिन नहीं डोना चाडिए। बन्ने बपनी माताबाँसे दिन रहे हैं परिनयाँ अपने पतिबाँसे। इसकेने इसके नष्ट हो खे हैं। भीर यह हाक्ते हैं, एक अल्पन्त उदार सरकार हास की नई पेशवन्तिमें के बावजूर। हाकके सकाओं १८७७-७८ का सकाल सबसे वय था। समर्गे भरे हुए कोलंकि कारेमें बकाल-बायुक्त (सैमिन कमिरकर) की रिपोर्ट इस प्रकार है । भारतके बिटिस शासनाचीन प्रान्ताकी कुरू बाबादी थी। जनुमान जगाया चाता है कि १८७७-७८ के बकासमें इसमें से ५२,५ कोच मर गमे। मौसम ताबारचंत्र स्वास्त्रकर होते पर को मृत्यु-संस्था होती वह इससे बाद कर दी गई है। इस संकटमें इसा कुल पर्व १ करोड़ पींडसे ज्याचा है।

स्रम्पूर्व खंबी बाब्यब

बासार ऐसे बीबते हैं कि उपतामें वर्तमान बकाक पहुसेके सब अकानोको मात देनेबाका द्वोगा। संकट बभी ही उच्च हो चुका है। परन्तु गरमौका धमय सबसे मीयच होगा और वह अभी जानेको **है।** मेरे खमाझसे यह पहला ही मौता है कि मारतने ब्रिटिश उपनिवेद्योंके सामने हाब फैसाना है। भाषा है कि इसका एकर जवारतापूर्वक दिया जायेगा। कबकतेवी केनीय

ककाल सहायता समितिने जननिवेसींसे प्रार्थना करनके पहके बौर दमाम धानमॅकिंग नटोर ही किया होया। बीर बगर इमारा उत्तर प्रार्वनाकी

आतुरताके सनुरूप न हुआ दो वडी दवनीय आद होसी।

बात सच है कि बिस्स माफिकामें भी परिस्थितियाँ कुछ विसेप सुकर नहीं हैं। फिर मी यह तो मानना ही होगा कि भारत और बंधिक बाफिकाके संस्टमें कोई तुकता नहीं हो सकती। और, इसकिए, मैं भरोसा करनेका साइस करता है कि नेटाकके वितक भारतमें मक्से मध्त हुए अपने करोड़ों बन्द-सदाबनोंकी सहायदामें कपने सीसे साक्षी कर देंगे। बगर उनके सामने इक्षिण आफिकाक ही परीवॉनी सहामताका सवाल हो हो भी उससे उनके इस दानमें कोई स्कारत नहीं जामेत्री। मेरा विस्तात है इंग्लैंडमें और

छपनिवेक्सेंमें सर्वत्र बिटिय परीपकार-मावना मी प्रवक्त हो बडेनी। पिछल अवसरोंपर जब-जब मानववादिपर संबट बाबा है वह प्रवच होती रही है। इस बातका कार्ड कमारू नहीं हुआ कि संबद किस स्वातपर है और

नित्ती बार बाका है।

[अंग्रेकी] नेप्रस सम्बद्ध ४-१-१८९७

१ देशिय पद्म ३४५−५

२५ हिन्दुस्तानमें बड़ा दुकाळ

नेटाल राज्यदेश्यांने आर्थन कार्यक्ष जान स्थितीर विभागानको कार्यक्ष साथ मार्थित कार्याक क्षेत्र ने साथ मार्थित कार्याक क्षेत्र में साथ कर अपने कार्यक्ष साथ है कि किये से साथ के सिन्द कार्यक्ष के साथ कार्यक्ष कार कार्यक्य कार्यक्ष कार्यक्ष कार्यक्ष कार्यक्ष कार्यक्ष कार्यक्ष कार्यक्ष कार्यक्ष कार्यक्

इ.स.इ पटन है, जिसमें माधानों माहित्य यी कोई कई नहीं किना नवा ।

हों और यह जरीक करपार्टकों मेंब दी दर्ज । मीचे जा पार दिया का रहा है यह स्वयंत्रकों संपद्मकरने करकेन्य किसी प्रतिकी

िकरवरी **१** १८५७ वि

हिली माईबंद। बयन हुनेय बारोने महा करत है बौर हिल्कुस्मारमें काडो बारमी शबने मरत है यह नारेने बयनेट स्थाक करना चाहीए बायनु मानम होना कि बायनां हिल्लुस्मारमें यसात्रके और वाद ती हुना है और काडो मारदी मरते हैं उसकू मरद करोजे बारते गयी एरकारके पर मुक्तों अपने हिल्कुस्वानके वह वह नारमी नरती करते हैं ऐसे ओक्टू सपने हिल्कुस्मारी ओक्ट्रो मदद करना वा वहीं करत है कोई ऐसा नहीं केने एकते के हत हा करा में तीन पानेने पैसा बैद्या में पह जादमी नुमारा दरनावा पर मुक्तो मरता तब तुम एसा बोरने सपने एक बादमी नुमारा दरनावा पर मुक्तो मरता तब तुम एसा बोरने सपने क्षा मारद होना एसा वह बारा कि तुमारे देनेसे इन्द्रान बोर मारदीकू क्या मदद होना एसा वह बारही बार सब्दु बारीनी कर्डक बोरनेट है बाराने बीदाना कर देवना क्या काहि, इस बार सब्दु बारीनी कर्डक बोरनेट है काराने बीदाना कर देवना क्या काहि, इस

स्ता है हि मालक्ष्य महास्थानीहर क्रायाने शहरवारों प्रश्नी हर बर्गक्रव स्वरित्त कराते व के देखा दिया तथा होता । त्वा च ता करी दिव मात्र मध्ये च प रायरिय इतिहित्त देखां रायेखा हुए हिता । सामत्त्री इतिहास्त्री एवं मित्रियों रायती मात्री तील काव बाहाबी — उनती, वहुं बीद हाहित में बत्त्रण हैं। क्यों में हिल साधिना होन्दित का मात्री तो है। रायों मौतीहरे रात विरक्षणा यो कावेखा हिल्ला हैं। हुए इश्चन्त) वहने रहां है कि पर सोने कर कावानी की केता है जो सो ।

ए पैसा जाना करने के वास्ते एक जमात हुई है और को कोई आवनी कमती में कमती वस सीबॉन वेमका कसका नाम हिन्दुस्मानके बड़े बढ़े करीमें भावना-बमाठमें बाबु बाबा अबदुमा बाबु महमद कासम कमक्दीन बाबु आबम पुषान हुसैन बाबु मोइनलाल राज बाबु मैयर महमद बाबु साममन बैदमुट, बाबु जादमजी मीयासान बाबु बस्तमत्री बाबु पी बाबजी महमद, बाबु मुखा हाजी कासम बाबु बाउद महमद बाबुदन बाबुरादपन बाबुओरेग्स बाबुबोडके, बाबुधसमान भागव नानुएत भी जोची बाबू जोस्युका बाबू गेबीभक्त नानुहानी बन्धुका कानुहासम सुमार, बाबु पीरन महत्रद, बाबु मोगरारीमा बाबु एम के मांनी और दूसरे बाजू कोक है

कमतीमें कमती अपने कोकमें एक हजार पीड़ होना बाहीए और छमसे बास्ती पन होना चाहीए केकीन कीतना होना नो तुमारी दीकसोत्री उपर है इंक्लीब भीर वामीक्सें कीक्षेत्री रक्षीय माने पहोंच बीना कोइकु पैसा वेला नहि। उसमें सदी बाबु एम के बाबी और जो बाबु पैसा लेनेचु

बापना सस्की होता बाह्रीए. दादा अवदुस्ताकी कपनी एम राय महमद कासम कमक्वीन सुरुमान दाउणी

वाजम गुरुगम हुसेग सेयद महमद पारसी संस्तमणी मोगरारीया

रेव सीमन वेदमुद् जोसफ रोयोपन मुसा हाथी कासमें एम० ६० कापराटु पी बोक्की महसद बी सोरेन्स

ए सी पीछे ए जोस्युका वादमजी मीयाचान थी**∘** गोडफे हाजी व्यवद्रका जे इन

वाचव महमद गेबील प्रमर्स **उसमान भहमद** पीरन महभव

हुसन कासम हासम सुमार मुसा हाजी जादम एम कें०गोमी

साबरमती संप्रहासममें गुरिवत द्विली नक्क (एस एन ३४७६)से।

२६ पत्र जे० बी० राविम्सन को

े मेरट स्टीड वर्षन करवरी ४, १८९७

मेवामें वे बी राविस्तृत महोदय कोडानिसवर्म

भीमन

हम नेटाकवारी मास्तीय समावके प्रतिगिमियोकी हैसियतरे नायको बोहानिस्तरकेरे निर्देश समावका एक नेता मानकर, नायकी वेवामें मारस्पूर्वक करियत हो रहे हैं। हम निस्त निस्तर्यों निवेशन करना नाहते हैं उसे हमास्य वृद्ध विद्यास है नायकों पूर्ण सहुतन्त्रित सीस सम्बंग प्राप्त है।

सारको वर्णवान बकाबने फिल्मों यह बकाबाँको मार्च है भी है और मुख्यार्थ क्या उत्तर कि से हैं है भीर मुख्यार्थ क्या उत्तर कि स्वास्त्र क्या कि स्वास्त्र कि स्वास्त्र के स्वस्त्र के स्वास्त्र के स्वस्त्र के स्

इंग्मैंडके पत्रोंने पूरी संबीदतीके साथ इस विपयको जलाग है। बीट, दैसा कि बायको मारूम हैं "मैसन हावस" फंड के नामसे एक सहायता-कोस

१ वस पत्तर क्लके नाके तो दूर्व अनोकने निर्माण समिति के सरक्लोंने वस्ताकृत
 भिने ने ।

१ जर्बके मेक्स्य विवासत्वात ।

144 जारी कर दिया गया है। कहा जाता है कि दिदेशी धाम्योंने भी सहायताका वचन दिया है।

सम्भवतः भारतके सकाकोंके इतिहासमें यह पहुला ही मौका है कि उपति वेशोंसे बहायता-कोप कोशनका अनुरोध किया गवा है। और हमें कोई सब्देह नहीं है कि प्रत्येक बचाबार बिटिया प्रजाबन जायिक सहायता देनेके इस ववसरका कुसीसे काम स्वापना और अपने करोड़ों भूकों मध्ये हुए प्रवा-बल्बुबॅकि भवातक करटोंको घटातेके किए जो-कुछ मी बाधिक सहानता दे धक्या है अवस्य देया।

करूकतासे बड़ाँकी केन्द्रीय सद्दानता-समितिकी बोरसे बंगावके मुख्य न्याया बीसके दारके फकरनरूप मेगरने मपने उत्तरशामित्वको महसूस करके और जपने कर्तव्यको माध्य करके एक ऐसा कोप पहले ही जोक रखा है। दुनियाके सब हिस्सोंमें रात्नेवाचे मारतीय इस विषयमें बोरवार प्रवल कर पहे हैं। बीर केवल बर्वनमें डी कड़ तक वे कममय ७ थींड चला जमा कर चुके 🕻। दो पेडिमॉर्ने छी-सी पौडसे ज्यादा और एकने ७५ पाँड चन्दा विवा है। और यह माधा नरनेक किए काफी बाबार मौजब है कि मह चन्दा समजय १५ थींड तक पहुँच जायेया।

महोबस हमने आपकी सेवामें निवेदन करनेकी स्वतन्त्रता दशकिए की है कि इमें पूरा मरोसा है, आपको इमारे ध्वेत और सहेत्वते सहातुमृति होगी। नत इस नापसे बनुरोन करते हैं कि नाप एक सहायता-कीय चारी करें। निस्सन्देड जाप जपने सपार प्रभाव और कार्यस्थितने जकानके प्रकोशके मीपच परिचार्मोंचे करोडों पीड़िवाँको बचानेके प्रमलोंमें भारतको अनवाको ठोत सहायता पहुँचा सकते हैं। मीर हमें निश्चय है कि बक्षिण वाफिकाके कम्य सब माय मिलकर भो-कुछ कर सकते हैं अतसे बहुत अविक इस दिसामें वपनी बपार सम्पतिसे बडेका बोह्यतिसवर्ष कर सकता है।

हम यहाँ कह देवेकी दवाजत भाइते हैं कि हमने दक्षिण आफिकाके दिशिश भावों में पहनेवाले भाष्टीयों से अपील की है कि इस विषयमें बिठना की कर सर्वे स्व करें।

र रेनिय एक १४९ ।

जाता है कि जाप इतपर पुरस्त प्यान देंगे। जापके मूक्यवान समयमें वज्जन देनेके किए क्षमा-वाचनाके साथ जापके महानामती लेक

गोधीजीके इस्तासरोंने एक अंग्रेजी दश्तरी नकस (एस एन १९९६) से।

२७ धर्मीपहेडाकॉसे अपीड

बीक्सीन वर्षन फरनरी द, १८९७

सेवार्से

मैं आपको बर्वनके मेयर द्वारा जारी की यह मारतीय अकारु-मीवित सहायता विभिन्ने बारोमें किसना चाहता हूँ। कस मेयरले नगर-मीरित (टाउन कीसिक) में कहा था कि अवतर केवल एक बुरोनीयले कथा दिया है। इसकी आर

मैं नम्रतापूर्वक सायक स्थान नार्क्षित करता हूँ। धारत पूरी भारतके उन करोड़ों पीड़ियोंक करवेंका नर्मन करता न होगा पहलें सिक्के कांध्री मुराफ न मिलनेके कारम मेरिके मुंहों समाना पढ़ सकता है। मेरा निवदन है कि नाथ है तारीकके मन्त्रुपैमें प्रकाशित मेरा पत्र पढ़ हैं। उससे मारिको हुए कम्पना हो बायेनी कि मारतकर इस सम्म किसना भारी संकट प्रधा हमा है।

भारी संकट छामा हुना है। मैं भानता हूँ कि [कक] गिरजा-गीटसे इस वियमकी चर्चा और योताबोसे चनकी मरीक करना मास्त्रके करोजों वैदिलोंकि प्रति चनताकी बानगीस

सहानुष्ठि जायंत करनेनें बहुत सहायक होया।

नास्त्र माहातुरती क्षेत्र मो० कः पश्चि

ामीनीके इस्तासरोंमें एक अंदेनी वस्तरी प्रतिकी छोटी-नक्त (यम । एन १९४३) सं।

र रहान: संबोधिका सीच करने कानग्री को नक्ष्मी जीर है को करन स्थापन काने पारागे पत्नी प्रकारित हुआ था। देखिन कुछ १८५-५ । १ मूल कोची प्रतिकेत हैं। रहान्ये पाराची पुण लेग कहा को कागा। संपत्ताच्या वर्ष अभिग्री (अस्पत्नी करने हैं। कान्यों करी शीवना सा।

२८. पत्र भी कैमेरॉनको

वीकारेन वर्षत करवरी १५, १८९

ए एम• **बै**मेरॉन^र डायमर कार्गल रोड

प्रियवर.

मापके १ तारी बके यन और मुस्यवान सुधार्वीके किए वस्त्रवाद। गु बहुत मुखी है कि आप बर्बन जानेके किए कुछ दिन निकास पर्केने। इसी

साम तीन पाँडका चेक नेज रहा हैं। मनर आप पहले वर्जेंसे मात्रा करना चाँ तो कर सकते हैं। भाषका और बो-कुछ खर्च होया बढ़ बढ़ा दिया वायेगा।

शापका संख्या मो • क • गांधी

गानीजीने हस्तासर-युक्त एक मेंग्रेजी प्रतिकी फोटो-नकक (एस एन

1484) 181

जी कैमेरॉन हुक सनद तक डाइन्स आकृ इंडियाके नेटाइ-संवादवाता रहे में (देदिए १५ ४ १)। वांबीजीने रुविण आफ्रियी मार्श्वनीक प्रवस्था मरिपारम करनेत्र किय कर कर विकासने हैं सोने सकता करनेते रहते को अपन तमाना था।

नवापि हेटियम ओपिकियम १६ ३ में पाडे नहीं निवास वा सर्व । र रोटर मेरेल्ल्मीये स्थाना र मीक्स रह धीर ।

२९ प्राथनापत्र श चेम्बरलेनको

गांत्रीयो १६ करली १८९७ को बर्नेनों करो है। कर्क गर नेदाक मीर राविण माविकारि मन्त्र म्यानीने स्वयास्त्र जिन एक पत्र प्रकार कर कर्क किया मन्त्रेर रिस्ताक विश्व कर गांधा करोंने यह किया कि उपिनेकीची सब्दारें मानिकारी और मन्त्रित स्वयानीनीचें पत्रित्त माविकारी मन्त्र समेती रीकने वीर्प रेडी परिवित्ताका पत्र करोंचा ह मन्त्रम करोगी जिल्ला कि प्रकार करियों के प्रकार करें के माने निर्मेश स्थापने स्वयाननीत कर्मा माराधीकी मामान्त्रीयों करों मी और क्यून प्रकार का हम्मान्त्री माराधीकी मामान्त्रीयों स्थापने क्या माराधीकी माराधीने विरोधी परिवेत्य एक्सर का हम्मान्त्री माराधीकों क्यानीकी १६ माराधीने माराधीन विरोधी पर्याच्या सन्त्रा कर्म क्यामा केम क्यानीनविधीयों गोविका महास्त्रम स्थापने क्यानीनविधीयों माराधीकी माराधीन रहे मीराधीकों माराधीनिक स्थापने स्वयानी क्यानीनविधीयों गोविका महास्त्रम स्थापने करियों माराधीनविधीयों भागित माराधीनविधीयों भागित माराधीनविधीयों माराधीनविधीयां माराधीयां माराधीनविधीयां माराधीनविधीयां माराधीनविधीयां माराधीनविधीयां माराधीनविधीयां माराधीनविधीयां माराधीनविधीयां माराधीनविधीयां माराधीनविधीयां माराधीयां माराधीनविधीयां माराधीयां माराधीनविधीयां माराधीनविधीयां माराधीनविधीयां माराधीनविधीयां माराधीनविधीयां माराधी

 श्रावनात्व स्थान्त्रत क्या क्या क्या क्या क्या क्या निम्तांकित प्रत्य साथ नेप्यत्ये स्थानिकी मेन विश्व गया का

> वर्षेत्र अप्रैक १. १ ९७

सेवामे

महाविषय स्टब्सीय

पर शास्त्र पद हेवी-द्विल्ला के शी यम जी प्रधान हेजापति तथा शासस प्रकारिक नेटाक: और देशी क्षापतिक सर्वेतिक प्रमास

महाश्रुमान ब्लाव देनेकी हुए। दुरै,

में इसके पार्टीक-विरोधी 'परस्ताक' पार्टी शक्त छात्र अपने और अन्य कोरोबि इत्याक्तरे सम्बन्धि सुक्त कारिकेश-सम्बन्धि वान अस्वन्त वारस्पृत्व वस पार्थनास्त्र मेन स्ता है।

स्त्रामुजनमें नज निवेदन हैं कि इसे अपनी महाकुष्ट राजके साथ सम्प्रामित सुरान कारिकेट-सम्बन्धि क्षस नेज हों।

र्व शर्लें साथ अर्जन्त प्रार्थतात्रकारी की लड़कें भी मैज रात है।

मारक वादि

(() सम्बुध क्रीय सच अलय

स्त्रमं भौदी शहसन सार्च १५ १८९४ मेकार्वे

परंग माननीय बोबेफ चेम्बरकेत

141

मक्य चपनिवेश-मन्त्री समाजी-सरकार भंदन

नेटाच उपनिवेधवासी निम्त इस्ताकरकर्जा भारतीयाँका प्रार्थनायव नम निवेदन है कि मापके प्राची भाषको सेवामें नेटासके मारतीय समाचके प्रतिनिविर्मीकी हैरियक्त नेटाइकी भारतीय समस्याके सम्बन्धमें यह प्रार्थनापत्र येख करनेका

चाहस कर छो हैं। १३ जनवरी १८९७ को कुरसद और शाहरी मामक

नहाजींसे एसियाई कोगोंके उठरलेका विरोध करनेके किए वर्डनमें को प्रवर्डन हुआ था सबसे इस प्रार्थनायमका विशेष सम्बन्ध है। प्रदर्शनका नेतृत्व एक कमिश्रत-प्राप्त अफसर कप्तान स्पार्क्षने किया ना। सपर्यस्त दोनों बहानिक माकिक मारतीय है। वे दोनों शहाज धगमग ६ मात्री बेकर १८ विसम्बर १८ ६ को उर्वन पहुँचे ने। जब जनके मानी तटपर सतरे उस समय जनके विरुद्ध संगठित किये गये प्रदर्शनका परिकास सह हवा कि प्रदर्शनकारियोंने एक मात्रीपर जाकमन कर विमा। यदि वर्बन नगरकी पुक्रिस चतुः परि काम न लेती तो प्रदर्शनकारी उस यात्रीकी हत्या ही कर बाबते। नेटाकका भारतीय समाध बरसेसे जनेक कानुनी निर्वोच्यवाबाँसे पौड़ित है। इनमें से कुछके सम्बन्धमें समाज्ञी-सरकारको प्रार्वनापत्र भी मेथे वसे हैं। उनमें निवेदन किया था चुका है कि उपनिवेधियोंका बन्तिम अस्य स्वतंत्र मनुष्योके क्यमें भारतीयोंकी इस्ती मिटा देनेका है। वह भी बता दिवा नया है कि भारतीयाँपर क्याई नई एक-एक कानुनी नियाँम्यता बादकी जनेक नियाँम्य

पह सकें। इन तथा इसी प्रकारके अन्य बाबार्सेंपर प्रार्थना की वई भी कि नेटासमें को कानन बारतीयोंकी स्वतन्त्रदापर प्रतिवन्त्र स्वानेके क्रिए बनावे र रेक्टिए एक रंबर रदर रदद रूपक मेर देशर। a the wir to go tto-ac ten-ett ato-se ene-t

11 -14 MX 331-344 I

ताओंका कारन बन वाती है और वे कोन क्यनिवेसमें पारतीमाँकी झक्त इतनी विगाद देना चाइते हैं कि वे बपने बीवन-भए (नेटाकके नहात्पास-वादीके सन्तर्में) "सनकड़ारों और पनिहारों" के जनावा कुछ भी जनकर न

199

जार्ये उत्तरर सम्रामी-अरकार अपनी स्वीकृति न दे। इन प्रार्वनापनेकि उद्देश्यके

साब सम्मानीकी सरकारने सहानुमृति तो प्रकट की परन्त जिन विभेवकॉपर इनमें जापत्ति चठाई गईं की उनमें से बनकपर सम्मानीकी स्वीकृति रोक सेनेके किए वह तैमार नहीं हुई। अपने अस्तिम धक्यकी पृतिके किए मुरोपीयोनि परीक्षणके क्यमें जो प्रथम प्रयत्न किये ये अनके नहुत-कुछ शफल हो जानेका परिशास सह निकला कि गत सात सहीतोंमें उन्होंने बनेक माध्यीय-विशेषी संस्थाएँ संबंधित कर भी और इस समस्त्राने वृति विकट रून बारन कर किया। इन परिस्थितियोंने भगतके भारतीय समायके हितकी रखाके किए. प्राची अपना करोंच्य समझते हैं कि यत शांत महीतोंमें को भारतीय-विरोधी बान्दोसन हुवा उसकी एक पर्मामोचना समामी-सरकारक सामने उपस्वित कर हैं। सप्रैंड ७ १८९६ को टॉनाट सकर कम्थनीने प्रवासी स्वास-निकास (इमि बेधत ट्रस्ट बोर्क) से प्रार्वना की कि वसे भारतसे निम्नसिक्षित एक-एक कारीयर का दिया बाबे राज रेककी पटरी विकानेबाका प्रस्तर करनेवाका रंबसाच नाडी बनानेबाचा पहिसे चढानेबाका बढडी बोहार फिन्ट बरादिया बर्बना और पीतसमर। स्थास-निकायने यह प्रार्थना स्नीकृत कर सी। यह मुचना समाचारपर्वोमें प्रवासित होते ही उपनिवेद्यमें प्रतिवादका तुष्प्रम-ता कठ सवा हवा। स्थानीव पर्नोमें विज्ञापन निकक्ते क्रये कि पीटरमैरिस्सवर्ष भीर दर्बनमें इस स्वीकृतिका विरोध करनेके किए, समाएँ की जावेंगी। पद्दनी सभा अर्वनमें ११ जगस्तको हुनी और उसमें सरमागरम भागव किसे यमें । कहा जाता है कि इस समामें स्परिवृति अच्छी थी । इस बाल्योकनका फल नह हुआ कि टोंगाट शकर कम्पनीको अपना प्रार्थनापत्र यह क्ष्मकर जापस के लेगा पड़ा "चूँकि इसारे प्रावेगापत्रका इतना तीत और सर्वेशा अफल्पित निरोज किया जा पहा है इसकिए हमने उसे बापस के लेनेका निस्त्रव कर किमा है। परन्तु बान्योकन इस प्रार्वनापत्रको बापसीके साम श्रोत नहीं हुना। एकार्य हैदी रही और उनमें क्या उनकी मर्वासिमें भी नार्वे बनकर भाषक करते रहें। आधिरोंका नम विचार है कि महीक कुमक मनदूरिकों शरकारी संस्थानें नानेज दिलार किया नया वा बही-एक ये एह प्रारंगामका विरोध क्या तथित ना और सर्वि आस्तेलन चिंदत सीमार्ने च्युता दो इसके बाद की तटनाएँ वटी वे न घटती। इन

समाजॉर्ने कई बस्ताजॉने जोए बेकर कहा कि इस आमसेर्ने मारतीबॉको शेव

समाचारमर्वोर्ने प्रकाशित चिट्ठी-मधियोंका रख भी बहुत हुछ ऐसा ही व भाग्दीसमकारियोंने हासर्वोका बहुत बढ़ा चढ़ाकर बयान किया सारी भा शीय समस्याको बीचमें बसीट लिया और भारतीयाँकी जी भएकर निर की। प्रावियोंका क्रम सब है कि इस समावोंसे भारतीय सनाजके इस बाव-

धमर्थन हो समा कि उपनिवेक्स्में सबसे निवक बना और अस नास्त्रीनी ही निष्क फैला हुना है। एन्हें 'विनीने कीड़े' बर्तकामा गया। मैरिएएकर्म एक समामें एक वनता ने कहा "कुछी और तेममें सने विमहेकी बु ही जिल्हा एवं सकते हैं। एक बोद्याने माबाज कगाई 'दूकी कीम म भाकर पहाँकी तरह बढ़ने बगते है। एक औरने धिकावत की "सन मुक्तिक बात तो यह है कि इस उन्हें नीकी मारकर करम भी नहीं व क्षकते । वर्षनको एक समार्थे एक बोताने चन्त्र प्रार्थनायमके विषयमें रहा वि "यदि मारतीय कारीयर नामे तो इन अन्यरनाइपर जारेंगे और उन्हें उता नहीं देंने। इसी समामें एक और बाइमीने कहा "कुछी भी नहीं नादः होते हैं!" इन वार्तीये प्रकट है कि यह जनवरीकी बटनाओंकी मुनिका वयर १८९६ में ही बाबी वाने सगी थी। इस आन्दोक्सको एक और विशेषता म बी कि मजदूर छोबोंको इसमें जाग सेनेके फिर उकतामा था रहा था। प्रवासी-त्यात निकासकी कार्रवाईपर ठीक प्रकारसे विचार करनेका सम बाया ही था कि १४ क्षितम्बर १८९६ को सनावारपत्रोंमें रायटर समावाः पर्वेतीका यह तार प्रकाधित हवा मारतमें प्रकाशित हुई एक पुस्तिकामें वहा थया है कि नेटाला नारतीयोंको लुटा और वीटा बाता है जनके ताब बग्रजॉका-ता बरता

किया भारत है। भीर वे भरती तकलीकोंको एका करानेने सतनने हैं *टाइम्स आए हैर्दिपाने* इन जिकामगाँकी बॉबरी हिमामत की है। इन छारत स्वकारत उपनिवेतको जनता अवस गई और इनने मार्ग बीडी बाहुतिहा नाम निया। यह बुस्तिका बस्तुतः श्री मो क नार्थ हारा निर्मित होतिन जाहिराके ब्रिटिय भारतीयोरी क्यट-नावा बी। मी द्धित वाक्तिको जारतीय ननाजके प्रतिनिद्यिन "वास्तर जदिसारियाँ कोरपरायम व्यक्तियाँ और और-मन्याओको एन मनीवनीरा परिचय देनेके

₹ १

किए, जो बक्तिण बाफिकामें भारतीयोंका मोतनी पढ़ रही हैं " उनको नियुक्त

िना था।
यही प्राविश्वोंको सावस्थक जान पहता है कि प्रकारपंग्ने तिनिक हुन्कर स्थितिको
स्पष्ट कर दिया जाये। प्राविशोंको बह कहमने पेठीक नहीं कि उत्तर तारलें
जा कुछ किया वा उपका उत्तर पुरितकारी समर्थन नहीं होता था। विश्व विभन्ने बोर्गो बस्तुर्य यहाँ वी उद्य-उपने दश स्वादिको साना था। विश्व कम्मुरीने तार श्वेषकर जो रक्त क्यानाया था उसे पुरितका पहोंके परवात्

वर्षकर ये स्था किये वेर अपने वेशवाधियांकी ओरसे ऐसा कुछ नहीं किया गांतिने वस्त्रे कीर अपने वेशवाधियांकी ओरसे ऐसा कुछ नहीं किया गिते करनेका उन्हें सनिकार नहीं हैं; भीर जिस तिहालका ने प्रतिवास्त्र कर रहें है यह उनकी वृद्धित जीत सार नीव है। वैता करनेका उनका अनिकार है, और जबतक ने ती ने और विनामारीके रस्तेपर रूपेंस तबतक न तो उन्हें वोश्व विरा का लग्नेमा और न उनके कामसं कासर हाने ता सेनी। कहाँचक हम जानते हैं ने सरा इसी परवेशव कासे आते हैं; और हम इंचानवाधीने यह नहीं के तबति कि उनकी पूर्वित काम कास हैं। त्रित काम प्रता है काम प्रता काम है काम प्रता है काम प्रता है काम प्रता है काम प्रता काम है है। (१८ निताकर १८६६)

वर्गा तारीचके नेदास रहवर्दोहगरने किया या

भी गांतीको को दुस्तिका हालमें बम्बर्सि प्रकासित हुई है वने पड़कर यह विध्यास निकलता है कि रायदरके तारमें उसकी बानों और उद्देशीको बहुत बोलका हिला प्रथा का ग्रह बोक है कि भी गांबीने पिर्दासिया बारतीयों के ताब दुए दुर्घाद्वार होनेकी विकास की है पराचु उनकी हिलाकों देता पुर नहीं है जितके बारत यह वहा का तक कि नेदालनें बारतीयों करा बीर दीया बानों है। और उसके ताब पहांचीकाना करा बीर दीया बानों है। और उसके ताब पहांचीकाना

202

बरताव किया बाता है। जनकी तो बही दूरानी विर-सरिवित विकासत है कि सूरेरोय कीय मारतीयिक शाव ऐता बरताव करते हैं सेने कि वै किसी दूरारे वर्ग और बातिके हीं जाई ने कोन व्यवसेते किस कारिके तमसते हैं। भी नोवीकी दूरिकों यह बात बहुत कोकनीय हैं। बीर क्लें तमा यूनके वैक्कासियोंकि ताब बातानीके सहावुन्ति रक्षों का सकती हैं। नव किर मुख्य बात। यदिन बोहे-से कोनीन उनत तारका देखें नविप्रात समा परानु अधिकतर कोरीका विचार सारतमें प्रकाशित पूरितकाके विचयने वही पहुंच कि ठक्ता तारों कर नाया का एक सर्पत समाचारकों मूरोगीयोंकी भारतीयोंके विचक सङ्कानेवाकी विद्धान्यों प्रकाशित होती रही। १८ विचन्तर १८९६ को मेरितकारीयें एक समा करते स्पूर्णनीय एकक सर्वा (पूरोगीयन प्रोटक्यन करोसिएयन) नामक एक संस्का संस्कृत कर किया पया। स्वाधारिक मनुसार स्व समाने केवक १ व्यक्ति तरिवात करोके विद्य सुकाई नहीं की किर भी 'स्वास्थ्यक' का कार्यकर बात कराने किया सुकाई नहीं की किर भी 'स्वास्थ्यक' का कार्यकर वाह कराने विद्या सुकाई नहीं की किर भी 'स्वास्थ्यक' का कार्यकर बात कराने किया सुकाई नहीं की किर भी 'स्वास्थ्यक' का कार्यकर

विवस्थर ८ १८९६ के *मेरास विश्वेत*के अनुसार

रतक धंवका गुरुष प्रयत्न वर्षानिवेधमें एकियाइयोंका प्रवेश नियंकित करानेवाल कानुनीयें और थी जुबार करवालेका रहेगा; और यह ये बाल करवालेवर विशेष च्यान देशा (क) वारतीयों तथा क्या एकियाइविक सामानते सत्यान्य रखलेवाले सब संप्रत्योंको सरकारी स्तुमत्या या मोरसाहत दिया बाना वण्ड करवाला, (ख) संवरको ऐसे निवन तथा कानुव बनालेकी बाव्यानकामा किवाय कराण जितनते कि कारतीय कोच कानुव निर्दारिया-काल धामान होनेवर चर्नानियों कोच बानोके निय् सवसुव विश्वाय हो नार्य (व) ऐसे यह उत्तरा करवा जो कि च्यानियोंकों तार्ये बावेवराले सारतीयोंकी संवर्धा सीमित करनेके किए व्यवित्य कानु बीर (व) नेताल्यों जो सल्होनियाके प्रवासियों-सम्बन्धी कानुनीको बागू करवानेका स्रयता वरणा ।

करवानका असला करना। इनके परचाल् नवाबर २६, १८९६ को उर्दनमें 'क्वानिवेशके वेसमन्तींका नव" (कोकोनियक वेडिकॉटिक युनियन) नामसे एक संस्था संपठित की नई। इस संस्थाका तस्य "देसमें स्थरंत्र एपियाइयोंका और अभिक आयमन रोकना" बत्रक्षाया यथा है। उसके हारा प्रकासित बन्तस्थमें निम्नस्थिबत अनुस्केर स्थरकल हैं

प्यनिवेशमें एप्रियाई बादियोंकी और नरमार रोककर पूरोपीयों कतियों और देशमें इस समय विद्यामन मारतीयोंके हिलांकी एका की कामेपी। संय पिरामिद्धिया मबकुरीके आपमनमें हराकी नहीं करेगा, बकरों कि जनकी जगना पिरामिद्ध्या-नाल पूरा करनेके किया, अपने बाक-बन्दीके साथ परि कोई हो तो मारत कीत्राया वा तके।

यह मंत्र घरकारक नाम निम्न प्रार्थनायत्रपर कोमीके हस्वाक्तर करवानेका प्रमुख कर रहा है

हुन शीचे हुस्ताचर करनेवाले नेदाल वयनिवेशके निवाली सरकारते सावर प्रार्थना कर है है कि यह पेने वयाय करें कि इक व्यक्तियों वे एंगा वार्ट कार्तियों का नरकार रक कार्य (१) जारहें निया और ग्वृत्तीनंक कि विदेश वयनिवेश हुनते पुराणे और आविक सम्प्रार्थ है। वक्ट्रीने पो अनुमन कर किया है कि जवाधियों का यह वर्ष वहिंक निवासियों सारतिक हिशेंका प्राप्त है और इतिकार वर्षों है जिनका स्वार्थ प्राप्ता कार्य पा के कर दिये है जिनका कार्य प्रीप्तायां का जानान नकी पोणे वेते हैं। (२) इस प्रयन्तिवालें पोर्ट सार्वेश के विद्या कार्य है कि यह विद्या कार्य है कि सार्वेश के विद्या कार्य हो सार्वेश कार्य का

नंपके इन वायवसके नाव भरवारते अपनी पूर्व शहानुमूखिकी मीयका कर वी है। यब प्रवानी वानुत संतीवन विभेगक' (इमिपेशन ना अवेंडसेंट विक्र)

र वेक्टिसम्बद्ध कुछ ११८ ।

पास हुना वा तब बापके प्रामियोंने सथ प्रकट विद्या वा कि प्रवासियोंने

* ¥

पांच हुआ जा वस वापक आध्यात यह पूर नहा जाया है। इस्तिक्या एवं विषये क्यांत्रकार प्रशासकार प्रविद्यन क्यांत्रका यह पूर नहा जाया है। इस्तिक्या एवं विषये क्यांत्रकार प्रशासकार कर विदेशकों एरकार भी अपनी स्वीइति वे चुड़ी है और आपके प्रावस्तार कर पर पर पर पर है। अब यह हु हारी बात है कि एरकार के ऐसे एरकार के ऐसे एरकार के लिए एरकार के एरकार क

संबक इस प्रापंनापवसे सम्बे पुरस्काविक्त स्वेतांत सज्जान और भारी राग्येय भी प्रषट होता है। प्रापंचांको यहाँ वह बताबेज सामस्वकता वहीं कि दिन सिर्टेस क्वारित्योंका इस प्रावंनाप्यामें निक दिना वधा है स्वेत बताब के स्वापंचांत के स्वापंचांत के स्वापंचांत के स्वापंचांत के स्वापंचांत स्वापंचांत्र स्वापंचांत स्वापंचांत स्वापंचांत्र स

नोरी और काली जातियोंमें अनुपात अवस्य बहुत निपम है। परन्तु इसके मिए मास्तीय किसी भी प्रकार किम्मेदार नहीं ठड्स्पये का सकते उनकी मिनती काली वादिकोंमें ही क्यों न कर भी आये। इस विधमताका कारन बहु है कि दक्षिण आफ्रिकाके दर्तानयोंकी संदया तो ४ खाल है, और उनक मुकाबक्षमें मुरोपीयोंकी केवस ५ हवार। मारतीयोंकी सक्या क्रयमम ५१ हवार है। वह यदि वहकर १ काल हो अबे तो भी उसका इस अनुपातपर बहुत मधर नहीं पढ़ सकता। प्रार्वनापनमें किसा यसा है कि "एतियाई भातिमोको सहाँ बात रहने देनेथे इस उपनिवशके बतनियाँको भाषी हानि हो जागेगी क्योंकि एसियाई मजदूर इस्ते पढ़ते हैं। अब बतनी तो अविकने मिक्क किरीमिटिया मारकीमोंकी जगह भे सकत 🕻 परन्तु संब गिरीमिटिया मारतीयोंको ता रोकना चाहता ही नहीं। बल्क सचाई यह है कि उच्चतम मिनगरियोंने नतलामा है कि नतनी स्रोग नह काम कर ही नहीं सकते -- नौर करेंगे भी नड़ी -- जो कि गिरमिटिया भारतीय कर रहे हैं। सरकारक प्रवास विभागकी रिपोर्टमें बदकादा गया है कि इस जान्दोकनके बावजूद गिरमिटिया भारतीयोंकी गाँव पहले कभी नहीं बी इतनी बढ़ गई है। इससे प्रमाणित होता है कि बतनी कान मारतीयोंका स्वान नहीं से सकते। इस रिपोर्टमें यह भी बनासामा नमा है कि स्वतंत्र भारतीयों और बतनियोंमें काई मुकाबसा नहीं है और संपन्नो मापति स्ववन्त्र मारतीयोंके ही विरुद्ध है। मारतीयोंके विरुद्ध हीन माचार भीर मैकी बारतींकी वा धिकायत की पर्द है उसके विषयमें प्राजियाको पुरू बहुनेकी सावस्थकता नहीं है। उसत तो सिर्फ यही पता कगता कि इस प्रापंतापत्रके पुरस्कर्ताबोंको राग-क्षेपने किटाना सन्या कर दिया है। प्राची समाजीकी नरकारका स्थान करक हा बीक्टर और इसी प्रकारक चन प्रमाणपत्रोची जोर भीचनकी अनुमति चाहते हैं जो कि ट्रान्धवास-मारतीयोंके पंच पैनक सम्बन्धी प्रावंतारमक साथ तन्त्री किये गये था। उन प्रमाध्यत्रोंमें वतनाया वया है कि ववकी वृद्धिम दवा जाये तो भारतीय क्रोप भूरोतीयोंकी मरोधा मधिन बच्छी तरह और अधिक बच्छे निवास-स्वानीमें रहने हैं।" परम्मु परि भारतीय यूरोरीचंडि बराबर मधाईंश स्थान नहीं रखत तो एमें कानून नीवृद हैं जिनमें उन्हें स्वच्छनाक नियमों मध्यन्यी कर्नामोंका पातन करनीके फिए विकास किया जा सकता है। कुछ ही इन नवाजीने इनक

[।] देशिया स्वतः १ दृष्टः ६-१ क अवि सद्दारण वृद्धः ४५।

६ सम्भूष प्रोत्ती नाहरूल एक हमाचाएमोर्ने चानी हुई चिट्ठी-समीने और समाईकी कोई विधेष एका किने बिना इसमें कही यह बातोंने बनताकी छत्तेबना काम्म रखी रि. छत्ते बहस्या दिया।

ार उठ वहाना राया। दिसम्बर १८ को दोनों समाप्ते बहान क्लूकेंट बीर *मार्ग*े नहीं हुँचे। दनमें से पहिलेकी मास्त्रिक दो एक स्वानीय माय्योम देही है और हरेकी परिचयन स्टीम सैसियेयन कम्पनी बम्बर्स निषके भी एवँट पहुंचे हामके आफिक ही हैं। इस नहार्जोंकी पहुंचेने बादबी नटनामोंका निक करनें पिनोका इराया कोई निजी डिकाम्पर करनका विकट्टन नहीं है। इस प्रस्तुक

त कोनों बहावोंकी मार्किक और एवंट बाब बक्युंक्ता ऐंट कम्पनीये का सम्बन्ध है उन्हार्ज क्वी कर्ता करना प्राची प्रवाहित टाकेंगे। वक्ता विकर वे केवल तता करेंगे किता प्रमाद प्रमादी प्रधानिक हित्यों वृद्धिये करना वात्रपण्य काना कि वात्रपण्य काना प्रवाहित करना वात्रपण्य काना है। व्यवस्था क्वा उत्तर किता का स्वाह्म क्वा प्रमाद करना प्रधान केवल केवल होता किता का कि वासकि दुष्ट भागों में इक्ता पिरटीयाका केवल केवल हमा है। इपिया में बात्रप्री प्रकाश रोग सम्बन्धी प्रकाश करना हमा है। इपिया प्रमाद केवल किता हमा हमा पर भी प्रवाह का स्वाह्म क्वा वाद्धिया हमा विवाह का स्वाह्म क्वा का स्वाह्म का

मारिक फिन्सेब बहुत्वस्थारते २८ नवास्तर १८९६ को सीर सूर्वेक १ । स्वास्त्र मार्ग एकंक महा सूर्वेक्षण सास्त्रस्थात्रिकारीने वर्त्ते, 'बन्मविं स्वास्त्र से स्वास्त्र स्व

[कितारिको सिक्कर पुक्र कि यहाजोंको सुरुव्यें नहीं रखा का रहा है।
परिचित्र प) । इसका कहें कोई कर नहीं पिका। वसी महीजेरी २१
गरिकको यहाजाकिकोंके सोसिसिटर मुक्कि केटल रेड कुकरे वेटाकके
सम्बद्धा सामित्रकेंकों सह सम्बद्धां रह सार दिया और पूक्क केटाकके
सम्बद्धां सामित्रकेंकों एक सम्बद्धां रह सार दिया और पूक्क कि क्या
वर्तर साहुस मामित्रकेंकों पर स्वयंत्रकों सामित्रकों हुएस करेंदी (परिचित्रक न)।
सक्ता उत्तर सीरास्त्रकोंने २२ सिस्मान्दको सामा कि सिस्टर्सककों कोई
समस्वता नहीं है। इसके को कारण बरानापे पने समझ सम्बद्धां परिचित्रक
स्वे मित्र परा है। सर्व्यु कर सीमित्रकर सार मेव कुके तम कई का
स्वा कि सर्वर साहते साहते हैं। है। इसके स्वीने उसी साहतका एक

नव माननीय हैरी एसकम्बद्धी मेवानें किसा (परिधिष्ट च)। धनका उत्तर यिका कि इस मायसेमें मन्त्रियाँसे सनाइ शी नायेगी परन्तु यदि विष्टभंडल बाहु तो गवर्नर माहुब जनमें २३ दिनम्बरको मिल केंमें (परिधिष्ट छ)। २२ तारीलको क्रिकेट मास्टरने संदेव हारा यह सन्दर्ग मेना "हमारे िन पूरे हो गव नया सब हम मूनवसे बाहर है ? मूतव-अधिवारीमे प्रकर बननाइए । हम सब बच्छे हैं। पत्यवाद " (परिधिष्ट क) । इसका बलर नने उद्दारा इस आरायका दिया गया कि अभी तक मूनककी नविभवा निजय नहीं हुना। नाइरीने भी इसी नागपना मन्देश सामा और उसना भी उत्तर इसी मारावदा दिया गया। इस प्रगंपने प्रासी पृथक रूपन यह बतला बता पाहत है कि जदाजोक मानिकों बीर एवेंटा का यह नूबना बिलवुक नहीं वी र्फ मी कि बहानेकि अधूनरी और तनके अधिकारियोंने क्या कार्रकात चन प्ही है। दिखम्बर २३ वो नाइग्रीमें मिल एक मबेल-मन्दर्शन उत्तरमें बतनाया समा "सुत्रक-अविकारीको अवनक भी कोई द्वितायत नहीं मिनी (परिविष्ट स) । सॉनिनिटरोंके पत्र (परिविष्ट त) से इतना पदा मनदर्य चन्ता है कि रवास्प्य-अविशासिन क्योंकि यह बाजा ही भी कि बहाओंसी बार्वाने रवाना होनके परवान् २३ दिन बीन जाने तक नृतवर्षे रहना होता इनिना बने मुत्रतिक या बरगान्त कर दिया तथा और उनके स्थानक भी बर्ग्यलको नियुक्त कर दिया गया। २४ टिमम्बरको भी बर्टबल और मनडी पुतिसके सुर्वारिटेंडेंट बहाजींगर बचे। बन्होंने मन्ताई। और मानियोंग बानबीत की बहाबाका बीयबियों तारा गोवने व पूर्व तत्त्वावकी और मैल क्पड़ों नव कट्टियों टोर्डियों और बकार की बोड़ी छनकी महरीयें बना बान्तकी हिराबत ही और क्तेंड तवा बाहरीको बसरा ११ और

नार्वा कुलार पुल्लार द्वारा स्वितियों नात योचने व यूर्व नार्वा और सेन कार्या नव पहिसों होड़ियों और कार कार्यों के यूर्व नार्वा और सेन कार्या नव पहिसों होड़ियों और कार कार्यों के उन्हों नार्वा हो से एक्टेंड तथा नार्वा के प्रसार है? जोर हो सि एक्टेंड तथा नार्वा क्या है? जोर हे दि तर मुख्यें एक्टों कार है ये (निर्तित्य के जोर ल)। तथी हिंदी जोर कर पहिसों कार्य कर के से ल)। तथी हिंदी जोर कार्य कर के उन्हों कुल है दिया नार्वा के दि तथा नार्वी कार्य के प्रसार के प्रसार के प्रसार के प्रसार के प्रसार के प्रसार कार के दि तथा नार्वी कार्य के प्रसार क

१८ सम्पूर्वनीयी बाइसव कर रहे हैं।" इसपर या बटेबेसने पाकर जहांबीको देशा और कहांकि मेरी बाबस्योंका समय दिया स्टब्स किस्स स्टब्स के स्टब्स के स्टब्स के स्टब्स

कर पहुंह। इसराबा बटक्सन वाक्य सहानका क्या जार कहा करण नाबार्कों जा मानन विधा प्रकार किया पता है एकसे में बन्दुन्द हूँ परच् फिर मी ज्योंने व्हाबोंके बस सारीवासे १२ विशा कर और सुकर्मों प्रवें वानेकी बाबा थी। स्व कूर्जीकों मास्टरने सर्वेस मेजा कि

सरकारकी सामासे सब पानियोंके निकाले कामसे का कुछे हैं हम-तिम्ह सरकारते प्रार्थमा है कि यह दुरास्त गये कम्ह मेले। उनके निवा पानियोंके कीवनकी कीवित्त है। में चाहता हूँ कि मुने तिककर दिहास्त में बामें कि मुत्तक किसते दिन करेगा नयोंकि कामती मात्रा कर-बन्ध मुतक-मानिकारी माता है तक-दव परक कामी है। इस बीच कोई मी मानी बीमार गूरी हुआ। सरकारको इसका बीबिए कि हमारा बहाब बन्बाई कमलेके बाद प्रतिनित्त कोवा चाता च्या है।

भाक्रीसे ३ दिसम्बरको सह सन्वेस सेवा समा

बहु द्वारत्त ही २५ कम्बक नेज है। यात्री उनके विचा सहुत कम्बमें है।
नहीं तो याध्यिकों द्वारत जातार बायो । बाधी सर्वी और जीनसे पीड़िज
है। स्य है कि बस्ति किता बीसारी न कैत बासे।
का प्रविधीरर सरकारते कोई स्थान नहीं विचा। परन्तु धीमास्वर्ध,
वर्षन्ते भारतीय नायकिने एक सुरुक्ताधी-शहाबात।तिहिं बोक ही बीर

सरकारसे कहिए कि उतने को कपड़े करूबा दिये है उनकी कपह

उसके बारा पुरस्त ही बोना बहानीके एवं सामिनोंके किए कस्मक तमा गरीब सामिनोंके निष् मुक्त काब-नवार्क सेने पने। इस समयर कमये कम १२५ पीडका स्मय हमा। निस्त समय बहानोंकर सह कार्रवाई नक रही भी उदी समय करके सामिक बीर एवंट सुराक्ते भीर उसके कुछ समझी स्पीकेले विकास क्योंकि वह नार नार बरककर बागू किया जा रहा जा प्रतिवाद करनेने कने हुए वो-कार्यकर कार्य किया जा रहा जा प्रतिवाद करनेने कने हुए वो-क्वार स्वत्कर बागू किया जा रहा जा प्रतिवाद करनेने कने हुए वो-कार्यकर विकास कार्यक्र एक प्रतिवाद करनेने क्या कि कार्यक्र क्षेत्र कार्यकर वे वेनेक किए कह विधाय समें (परिधिष्ट क)। इस प्रार्थनायकर साम प्रार्थनिक हुए नायकर प्रमायकर में सम्बी कर विकास के क्या कार्यकर स्वार्थ करने स्वार्थ करने स्वार्थ करने स्वर्ध करने स्वर पया बहु अनावश्यक वा (परिचिष्ट ज के मेन्नन पत्र जह और जल्ला) । मासिक्षीके ग्रामिनिटरीने तार भेजकर अनुरोव किया कि इन प्रार्थनायत्रका पत्रदर्शीय रिया वार्थ (परिचिर्ट म) परन्तु उत्तर कोई नही जाया। २४ हिमान्यको मासिक्षीक ग्रामिनिटरीने स्थानापत्र स्वाप्य-विकारीको रिका कि तत्रक कर्म मिनिट कारबीने पोर्डो जहांजीको यात्री उठारनेकी इनाव्य इ दनी बाल्य (परिचिष्ट म)। इस जरूमने उसी दन क्षतर रिया

में स्थारम्य-विवशरीओ हैतियतरे तब हिसेंका प्रथित स्थान रसते हुए अपना कर्मम्य बालन करनेना यत्न कर द्वा है। में इस बातके निध् तैयार हैं कि जितने भी स्थानी उतारे बाले हैं उस सबको स्थरपाहनी दक्ती (ल्ल्क) पर मुनकर्न रननेची हवाजत में हूं। इतना नर्फ बहार्वों कि जिस्से होया। बाद यह प्रकृत हो स्थिता तह, मेरी हितामर्तेषर समस्व करनेक बाद

क्शाबोंकी गांधी उतारनेटा सनुमतिकत्र दिया का तकेगा (वरिशिष्ट व) । जारार प्रांची बायका प्यान कादर इस बातकी ओर सौचना चाइने हैं कि

स्वास्थ-अधिवारीण इस पपने भी यह नहीं तिया कि यनकी हिरायों हैं बता। १ शियान्यको आतिकाँके श्रीविभित्रित हाजाया स्वास्थ-अधिवारीओं हर जिला कि जात हमार १४ शियान्यके वस्ते पूछे यो धानका बसार दनी हमा करें (वरितियर ह)। स्वास्थ-अधिवारीओं उसी दिन कार्व दिया कि मैंने थी गाँ लगाई हैं उन्हें पूर्ण किये दिना में नदानोंकों सामी ग्रामानी राजन कमा नुर्धाण नहीं क्यान्त्र (शिवाद ह)। जानिकाँक सामिनिहारीने उसी दिन दिन किया कर जातर देशी और यह देश-बैठ बन्दानयों हमा करें कि जात अग्र उसार देशी और यह देश-बैठ बन्दानयों हमा करें हैं (वर्षात्र कर) अस्त देशी और यह देश-बैठ कर्मा पर दे गकरे हैं (वर्षात्र कर)।

मानी जनारनेती इयाजन तथी दी बा सबनी है कर कि यनकी नर्मा रिवे मीर १ चर १ - १ नर्गन्यके एक प्रान्तिके छो। है न्या रखी है जिले

यदि यात्रियारो भूतरके अवानीने बतारमा स्वीहत न हो भी बहाजीको

[्]रे वा राज्यसम्भावके का माध्यिके को है कि उसी है सिन्हें साथि द्वार का स्टारमा क्लिमी कुमा है। वाँच व्यवस्थि दायदे सावेदे मिलामी जानता है।

सम्पूर्वगांदी वाष्मव

प्रत्येक बहाकके करनामको करवृति नियममें मेरे हारा वो नई दिशासीन मनुसार एम्सिमाती कार्रवाई किये हुए, अर्वात् कर्त्व क्षेत्रे व सीवित किये

4 8

मौर काकतु चिवरों पठ्नियों वैसी आविको चलाये हुए, १२ दिन बीत कार्ये। यदि माक्रिक सतकका कर्व पठालेको सैधार हो तो यात्रियाँको क्तारवेसे प्रकृते कृती देने बादिकी प्रृतियाली कार्रवाइयाँ क्रयर किसे अनुसार कर देती चाहिए, और सब बहाअंचि लिए यहाँसे चलेकी सहस्रिक्त कर वी वायेगी। परस्त तबके साथ सम्पर्क जवित प्रतिवन्त्रोंके विना नहीं किया का सकेया। यदि साप चाहते हों कि चड़ाच स्त्रुति चले बार्ने तो पतका सकते सुराम उपाय पही है कि नातिक, बद्दालको बुनी शमा केने नारिके परचात १२ दिन तक, और पदि आवासकता हो तो अविक समय तक पात्रियोंको सरको सुराव-वरोंमें रक्षतेका क्षर्य प्रठानेके सिए हैपार हो बार्मे (परिकास म)। इसका उत्तर गांडिकोंके साँकिसिटरोंने नहीं दिन है दिवा और एक्त अपि कारीका ब्यान का भिन्त तथा का हैरिसन हारा विवेहए अपर निर्विद प्रमानपत्रोंकी बोर बीचकर, उसके द्वारा क्याई हुई सुरुष्टि निकट प्रतिवाद किया । जन्होंने यह विकासत भी की कि यद्यपि बहाजोंको यहाँ आने साठसे निक दित बीत बने है, फिर भी उन्हें बापको प्रस्तावित विविधे बनुसार शोवनेके बिए नवतक कुछ नही किया थवा। सन्द्रोंने यह भी सिखा कि इमारे मुबल्कि यात्रियोंको तटपर मृतकर्ने रखने बादिकी किसी मी कार्रवाईमें माग लेनेकी तैनार

स्वास्थ्य-विकाधिये "लगा यह यह प्रदेश क्या था कि वहानोंकी साथी कहारोंकी इसावय विद्या किसी कहारे वी बा सकती है और पिर पर विद्या करते दिना वार्य दो वह अनुसरितन वे तेथा परना इसार कर्य मुम्मीत कर दिया गया। बीर "वाले दो यो एकज्यने सह विद्यार्थ के अंदेशी विद्यार्थ के अंदेशी विद्यार्थ के अंदेशी कीर वा अपूर्णने कार्यों तीएएर बाहबीत की और किर भी एकज्यने हैं पूर्वानों कार्यने कार्यों की माने उन मोनीकी मानी उठारनेकी अनुसरित केरी दूरकार करने विद्यार्थ करना बीमाया केरी विद्यार्थ कुरावर्थ (परिण्याय ह)। वह पानकार और पाणिकों सोतिस्टरीये कुलक्के प्रकार रहा प्रकार पर प्रकार करा सामित के सीती अहरनीई सामियोंकी मारी करने

नहीं है क्योंकि प्राणियोंको उठारनेकी इवाजत न देनेको बादकी कार्रवाईको वे कानुरु-संगठ नहीं मानते। सन्होंके यह भी बतनाया कि अग्यसे पहलेके भीर कांद्रनावसका सामना करना पड़ रहा वा उसी समय पूरकमें पड़े हुए सामिनोंको किनारमर न उत्तरने हेनेके सिट, व्हेनमें एक मान्योकन बढ़ा दिसा वा रहा था। व दिसम्बरको नेसम्ब रहर्ग्यास्त्ररमें सभाजीक एक कमियन प्राप्त विकास विकास मार्गियक नमादे बच्चन हीरी स्वारम कि हुस्ताबरके पहुंची बार यह विज्ञापन निकास

सावायकता है, वर्तनके एक-एक मर्वकी एक समर्ती हातिर होनेके तिरु — सोनवार, ४ कारपीकी, सामंत्रात ८ वर्त निक्तीरिया कारके वह कार्यों । समाका मरीवतः एक कुन्तकत तंप्रत करना, को कहा-स्थायक बारों और एसियाइसीके कारों कार्यों के सिद्ध सावाज कुन्य करें।

बास बार प्राध्यवाक करार बानक विश्व सामा नुरूप कर।
बहु एमा जालिर वर्षन्ते नगर-सननमें हुई। क्यां उद्योजनापूर्ण प्राप्य
हुए, जीर करवान स्थापके विश्वित्य मी कई क्षियान-प्राप्य विश्वारियोंने
क्वां गरमागरम कार्रवासें मात्र किया। बदकाते हैं कि समस्य उपस्थिति
कमस्या २ की सी सीर क्यां विश्वकर तीम कार्रायर से। उसमें
निमा प्रस्तात वाग किये परे

इस समाज्य दृष्ट जत है कि सब सनय जा मया है कि इस बयनिवेसमें और धरिक स्वतन्त्र मारतीयों मा एसिमाइयोंको बारनेते रोक दिया बाये। इसकिए यह तमा तरकारते वालेस देती है कि इस समय "नादरी" और "करकेट" क्यांत्रीपर की एसियाई मौजूब है वन्तें कर जपनिवेसके कर्षपर भारत सीमा देनेते वनाय करे और दूतरों की की कोई स्वतन्त्र मारतीय मा एसियाई वर्षनों कहारे बार्ये करें रोके।

तनामें उपस्थित प्रत्येष्ठ ध्यक्ति इस प्रस्तावते तहमत है और इसे विध्यम्पित रुप्तेमें तहकारको तहास्ता हैनेके लिए अपने आवशे पायम करता है कि उत्तरता देश उत्तरे को बाहेश्वा तो यह करेगा। और दत इस्थित यदि बायस्थकता होगी तो उसे बच कभी नहा सायेगा वह कमस्ताहरू बालेको तैयार प्रदेश।

पूपरा मस्ताव वा पैकेंबीने वेंच किया था। वैद्या कि पहले मिखा वा पूका है के उन कोवोर्ने के बे जिन्हें भी एस्कानने नृतकका सबस सिरिवा करनके तिए कनायां था। उनके मावकके कुछ और से हैं * 7 *

भी गांची ---(वेर तक इस-इस और हो-होकी आवार्षे)--- वह बन भावनी नेदाल जाया और दर्बन नगरमें बस गया। बड्डा प्रसना सुना भीर निर्माकीय स्थावत किया गया। यो भी विश्वकार या ताम 🜃 क्यविवेदमें बसे मित्र सकते ये वे बसे मिले। बसपर ऐसी कोई पालकी या रोच-दोक नहीं समाई मई जो कि माप कोनों या मुसपर कायू नहीं

है। हमारा सतिथि होलेके सब सविकार उसे मिले। इसके बरके क्यमें भी गांबीने नेटालके बपनिवेक्सियोंपर आरोप क्याया कि वे नारतीनी साय क्रमाम और दुर्ववहार करते हैं और पन्हें सुबते और इस्ते हैं! (एक भागाय- 'कृतीको कोई नहीं ठम सकता')। में आपसे पूरी तप सक्रमत हैं। भी गांबी लौटकर भारत गया भीर वहां उसने हमें नारियोंने

क्तीबा और हमारी ऐसी करनी और मैनी तत्त्वोर खींची कि बैसी वसकी अपनी बाल-है (ताकियाँ)। और इस व्यवहारको ये क्रोप, नकी भारतीय बोलक्षासर्वे नेदास द्वारा दिये हुए अधिकारीका सन्नास्पूर्व तथा बौरोबित बरका बुकाना कहते हैं। इन बरभ और नामुन जीवजारियोंका इरावा ना कि ये क्ल एक भीतके सी मासिक वन वैहें को कि वर्षे इस देवके सारुकॉने नहीं दी नी -- बर्वात कराविकार। इनका इरादा ना कि संसदमें बुत्त कार्ये और मुरोपीयोंके किए कानून बनाने समें। बुद बरके प्रवत्वक वन बैठें, और पुरोपीयोंको रसोईके काम पर रखें। इमारे देशने फैसला किया है कि यहाँ अब पृशियाई और जारतीय

बहुतेरे मा चुडे हैं, और पदि वे सीने रहे हो हम उनके ताब उचित और सच्छा ध्यवहार करेंगे। परन्तु सदि वे नांधी जैसे सोवींका तार्व देने समे इसारे बातिप्यका दुव्यकोय करने क्ये देते ही काम करने सने बेसे कि गांबीने किये हैं तो उन्हें अपने साब भी उसी व्यवहारकी माधा करनी वाहिए जो कि योत्रीके ताब किया जानेवाता है (तासियाँ) ! यह इन कोर्पोका किसना ही बड़ा दुर्माव्य क्यों न हो भें काले और वोरेने भेरको मनते नहीं विकास सकता।-- मेटाक एडक्टांडलर, ५ अववरी।

इमपर कुछ मी कहलेकी आवस्यकता नहीं। अवसे पहछे जो कुछ बताया बया है उससे स्पष्ट हो चुका है कि भी बांधीके दिववरों जो कहा बया प्रस्के

कामक बन्दोने पुछ भी नहीं किया था। बारतीय छीत कामून बनानेश

सनिकार ऐना चाहते और पूरीपीयोंको उन्नोदेयनमें प्रकार चाहते है यह देवल इस बहुतुर झावराके वर्षर मस्तिकाको छात्र है। इस बीर ऐसे क्रम्य भाषकोंका पहीं विक तक न किमा जाता यदि बनाके मनपप उन्नार कार न पड़ येवा होता। क्ष्यान स्थानने इस वसाके प्रस्ताक सम्बारके पास तार झाटा मेव बीर स्कारत वसावसें बसे निम्न तार दिवा

सवासमें में बतासाना साहता है कि इस सामम सरकारको सामाधीकी प्रताक कियी भी वर्षको सर्पाक्षियों निर्माण निर्माण नाक स्थाना और कोई स्विचार पहुँ हैं जो कि यह मुठान्द्र कानूनों हारा निक सकता है। उरान्तु में सकता है कि इस प्रमण्य स्विचार प्रमण दिया गया है, दिया साम्याण स्वाप्त स्थान दिया गया है, दिया साम्याण स्वाप्त स्थान स्थान दिया गया है, दिया साम्याण स्वाप्त स्थान स्थान स्थान स्थान स्वाप्त स्थान स

इत्तर्गे प्रसन्द है कि सुनक्का अभोजन जनतिवेशमें निल्हीबाल प्यवश प्रवश रोजनकी सरेशा यात्रियोंको भारत सीन बालने तिए त्रंग करना अभिक वा । इत्तर जायराने नरकारकी यह तार दिया

गायिनि मुन्ने इस तारवे नियु आपको पण्यवाद वैन और अव सरकारते यह प्रार्थना करनेको वहा है कि वह "नारवे" और "करना" बहायियर मीनूर एगियाइयोरो बनाता वे कि पहाँगी सनमा उनके असलेको किनाती किरोबी है और उन्हें सताह वे कि वे उपनिकारी सर्वपर सारत तीर बायें।

भागान स्वास्पेने एक और नमा अवन्यतीको हाउन हारूमें हो बनाई और पनमें निमन आगाव पान किये गाउ

यह सवा सरकारने प्रार्थना करनी है कि वह संसदक एक जिनेय सविवेशन सुनावे जिलने कि सवसक दर्शनवेशने स्वतंत्र सारतीयोंका बायमन रोक्नेके अधिकार सरकारको देनेका कातून नहीं कर बाहा हफाक

215

वह ऐसा करनेके सिए अस्वायी क्याय कर सके। और वह कि, भारतीय पात्रियों के कलस्याहृत्य कररनेपर हम बहु प्रदर्शन करते-करते वार्सेने, परका प्रयोज करित करते नेताकोंकी स्थानको स्वनार करतेया।

परन्तु प्रयोठ व्यक्ति अपने नेताओं की सामाने सनुधार बानेया। इस समानें जो भाषक किये यमें बनसे स्वय्ट होता है कि सरकारकी इस समाने जरेरपकि साथ पूर्व सहानुभूति जी। जोर सुवक और कुछ नहीं

पानियोंको उत्तरमेरी रोक्नेको छावन-मात्र था। बीर घेयरका विशेष वर्षि-वेपन हासिए युकामा बानेवाका या कि पुतकको वर्षाय वर्गियका काफ्ने किय वहानेका विशेषक पात किया वा सके। इस तमाके मायलोके निमा बंधीने हुनारी बातको तुर्फिट हो जाती हैं

यदि सरकार हमारी सहायता न कर तके तो (एक आवाम---

इन जपनी मदद आप कर लेंने) हमें अपनी सञ्चायता आप करनी चाहिए (भोरती ताकियों)।

बताया जाता है कि क्योंन बाइबीने जपने भाषधर्में कहां जातको यह पुरुक्त बुधी होगी कि जातने वो कार्रवाई की वी पतने

विध्यमें सरकारी सम्बद्धारिमीने कहा है जि बससे सम्बद्धा पृतिमें विश्वनी सङ्घ्यता मित्री है पतनी समात्रक वर्षान्येसमें हुई और किसी भी कार्रवाड़ी नहीं मित्री वी (साज्ञयों)।

नहीं मिली भी (ताबियी)। इस तरह साबद स्पष्टीने इस भाग्योक्तमने पुरस्कतिर्वोको बनवाने निन्द्र निन्नित स्पर्ते भीर भी कार्रवाई करनेका बहाया दिया।

ारत स्पष्ट बार भी कारबाद करणण बढ़ाया ह्या। राज्यु साम ही आपको प्यान राज्य वाहिष् कि जान यह वार्व करते हुए ऐसी कोई आयेच्या यात म कई जिसते कि जानके सामने उत्तरित्ता करूप विकास हो यांगे। बारबी प्यान रहणा वाहिए कि वार आंक्ष मीक्कर बायर से कुर न बार्य और को बीरोंके कारनेके किए

कालीन फोड़ वें (हेंसी)। बाक्टर मैंकेंबीने पिकसी समार्ने कहा पा

बास्टर भरुवात (पद्धका ध्यान कहा था यन भारतीय जोगॉर्क निम्पू यस्तुका स्वात दिल्य महातापर ही हैं (हुँती)। यन्हें वह हाडिड करने दौनिये। हम बहुडि वालीपर वार्के इक्का विरोध नहीं करेंगे। परन्तु आपको प्यान रचना बाहिए कि आप उन्हें उन्त महासागारक साथ शरी हुई बमीनपर शया करनेका अधिकार न हैं। भी एस्कम्बने आज बलाकात ही घंटे तक छवित भीर म्यायपूर्व इंग्ले हमारी सनितिके तदस्योंके साथ बातबीत की थी। परहाँने कहा था कि सरकार आपके ताथ है और आपकी सहायता करना चाहती है और तब तम्भव उपायोंसे इस मामलेको धीप्र मुख्याना बाहती है। परम्तु साव ही जापकी स्थान रखना जाहिए कि माप ऐसा कोई काम न करें जिलते कि सरकारका हाम दक जामे। जनके तान वर्षा करते हुए समितिके सरस्योंने चन्हें कता दिया कि धरि कापने कुछ न किया ती हमें स्वयं कार्रवाई करनी पहेंगी और यह देसनेके लिए बड़ी संस्थामें बन्दर पाहपर बाना बढ़ेगा कि क्या-कुछ किया का सकता है' (ताफियाँ) । यस्तुनि यह भी कहा कि हुयें रोकनेंक्रे किए उपनिवेश सरकारको चीज बुसानी बहेंगी। भी एस्कम्बने कवाब विया कि "ऐसा कुछ न होगा (ताकियाँ) करकार जानके साम है। परस्तु महि आप सरकारको ऐसी किसी स्थितिमें शक बेंबे वि वर्ते मबर्नरके पात लाकर वसते कहना वहे कि सातनका तुष जाप अपने हाचमें से सीजिये तो जापको किसी और आदमीकी तलाश करती पत्रेगी (गडवडी)

(बापके प्राची निवदन करना चाहने हैं कि दा मैनेंद्रीके इस दयानका मान तक संक्रम नहीं किया गया और इससे सुगमतापूर्वक करपना की जा मरती है कि इसम भान्दोधकरो विनना बहाबा मिना होता।)

पुष्ठ संग्यनीने कहा है कि सुदक्षी अवधि बड़ा थे। बीक पटी रात शंबर करनवाली है (तालियाँ और 'बहाबको दूबा वो' की मातामें) : कत राम नैने एक नमड़ी सैनिकनो यह पहने मुना या कि को कोई जहां बप्त योला कोड़ देवा उसे में एक महीलेशी तनत्वाह देवा। क्या यहाँ भौजूर हरएक व्यक्ति इस समाके उद्देश्यरी पूर्तिके सिए एक-एक महीनेकी ठनाचार देनेको सैपार है? (सासियों और 'ही हा' की आवार्जे) । हो किर तरकारको बना बन बाववा कि हमारी बीन्कर क्रिज़ी साकत है। हनारी तनारा एक प्रदेश्य सरकारको अवनी इन इन्छाको नुबना वे दैना

११६ स्टर्गसीची नाइमच

बुकाना चाइते हैं (वाकियाँ) । स्नरक रखना चाहिए कि बलकाबीमें बनामा हुआ कानून अपने प्रदेशमधी पूरित बहुत कम कर पाता है। परन्तु ऐता कानून बनाया का सकता है जिसते कि इमें समय मिस बामे और अब हम प्रथमुक्त कानून बनवानेके लिए लड़ पहे हों पस बीच यह हमारी पता करता रहें। हमने भी एस्कम्बको मुक्ताया वा और वे हमते सहनद हो पये कि ज़िक कुतकके कानून सुसकको अनिशिवत काम तक बड़ा रेनेका अविकार नहीं देते इसलिए यदि जानस्थकता ही तो ऐता कानून वास करनके लिए पक हो या तीन दिन तक संसदकी बैठक की आये जिससे कि इमें बस्ताकी **क्ट्रका क्षेत्र जोवित करनेका मविकार मिल कार्ये। हुन उसे बैसा जोवित** करते हैं: और करतक यह चौवना नापत गड़ी से सी वाली तदलक कोई भी भारतीय बम्बर्डले यहाँ नहीं ना सकता।' (बोरकी तालियाँ)। नेरा क्षपात है कि हमारे प्रिष्यमंत्रसकी साज प्रात कास थी। एरकम्बके साथ थी। बातचीत हुई उत्तते हुम यह अनुमान सथा सकते है कि यदि हुमने अपना कान ठीक प्रकारते किया और सरकारके नार्नमें बाबा बातनेकी कोई कार्र बाई व की तो हम संसदका अविवेधन यवात्रीत बुसदा सरेंगे और अवसक कोई कानून सबके लिए पाल नहीं हो काता तबतक और कुलिमोंडी वतरनेते रोक सक्ना (तानिया)।

नी है कि हुम नुवक्तकी अविध बढ़ातेके लिए संसदका विधेव अधिवेधन

का सैक्टेंकी

दमिले कहें इस स्वयमें ग्रांक्य एकात हैं। (बादी ग्रंवरारों देंग्य कराके निरामी)। अने बहु, "बांक्ये वह"—स्वीत हत कार्यों। बाताता हुए को निया में बादपर कर रही हैं (हेती और हातिकार)। और, अनवारोंकी बाहमें काल वाचनर बंधे हुए को में देंगे हैं यह तो हव अववारोंके हुए अनकेंगोंने काल में तर हैं। यह तारे विशे हुए हुए कतारेता और बहुराकि उपरोगोंने ही जान से तरते हैं। यह बादरी की हत तरहरी बारोंकर कोर केरे हैं यह बादने हैं कि नागरिकार बाता है। नहीं, नहीं ह नागरी सेवारों तार ने एक बाद बाद कर निकार एक वार्य की

१ वण्याय मदाच्या समस्त तुः वेतिर वृत्यः ३१५ और १७८-७५। वया है। बाह्य कई कहानोंगर सीनुस नायमियोंने से एकके सिवा जीर दिलीको ऐसा सम्बेह करनेका कारण नहीं है कि इस क्यनियोगं। प्रवासियोंके तौरपट उनका स्वास्त बुतासे नहीं किया कामेगा। तिज्ञारोह एक भारतीको इस सम्बन्धाने सम्बेह करनेका कुछ कारण हो सकता है। वह मनामानृत (यांची) इनमें से एक बहानपर है; और इस समय में को-कुछ कह रहा हैं वसमें में उसकी कर्मा नहीं कर रहा। हमें सम्बन्धानों वन करनेका सर्पकार है, और हम उसकी वन्न करनेका हमारा रखते हैं (सातियां)। इन सोयोंके साम इन बहानोंकि पानियोंके साम विकास तमुक करेंगे, और एक इस सक का जास मानियों साम वीचत समुक करेंगे। परण्यु मुसे माना है जि हमारे सनुकते साम कर्म देसा ही करेंगे। परण्यु मुसे माना है जि हमारे सनुकते साम कर्म देसा ही करेंगे। परण्यु मुसे माना है जि हमारे सनुकते साम कर्म देसा ही करेंगे। परण्यु मुसे माना है जि हमारे सनुकते साम कर्म देसा हो करेंगे। परण्यु मुसे माना है जि हमारे सन्दर्भ साम अपने नेताले हुएई कर वेंगे और साम उसने हमते कुछन क्षा करा है। हम देक क्षा करने का स्वर्थ करने करने का स्वर्थ करने का स्वर्थ करने का स्वर्थ करने करने करने हमते हुए करने की क्षा स्वर्थ करने करने हमते हुए करने की करने हमते हुए करने की करने करने हमते हुए स्वर्थ करने हमते हुए स्वर्थ करने हमते हुए स्वर्थ करने करने हमते हुए स्वर्थ स्वर्थ करने हमते हुए स्वर्थ करने हमते हुए स्वर्थ करने हमते हुए स्वर्थ स्वर्थ करने हमते हुए स्वर्थ स्वर्थ करने हमते हुए स्वर्थ स्वर्थ

प्रदर्धन-ममितिने कर्मनके कर्मचारियोंमें एक पत्र चुनावा जिसके कपर फिला था

चन सरस्वोंके नामीकी प्याचार या ध्यवताय-यह सूची को बन्दरनाठ्वर बाने यदि आवायपन्ता हो ती एप्रियाइचोंकी बतरनेते जबरदस्ती रोकने और जपने नैताबोंकी फिन्हीं नी धाताबोंकी जाननेके नियु तैयार है।

तारीय ७% समाने मारामें करतान स्वास्त्री यो प्रापन किया वा उत्तरे निम्न बंगने रम बानक रूप्ते बन्दाना कर नकता है कि तमितिन प्रद्यानमें सामित होनेके किए मोगींकी भीं दिस प्रकार की बी

हम नगरके म्यानारियोंने बायटू करना बाहते हैं कि से अपनी-करनी हुमाने जीर स्कार सन कर दें तिवारी कि जो नेत प्रसोधने जात नेता बाहें में बंका कर करें (शास्त्रित)। इनते हमें नात कर वासेया कि कौन-बीन हमारे लाव है। कहें म्यावारी यहने हो हमें बचन से बके हैं कि

र देखिर का क्षत्र-वस्त्र

१८ छम्पूर्णगर्भश्च

बनते जो हो लकेगा बहु सब में करेंगे। सेव सबजी हम असली कर्कड़ बोठ वेना बाहते हैं। ('उनका बहुएकार करो' की आवाजें)।

मही यह भी जान सेना उचित होगा कि मात्रिमोंको छोडिपूर्वक करारे रेनेके किए बहार्जोंके माध्यिजें और उरकारके बौक्से तमा हो रहा वा। प्राची यहाँ वरकाना बाहते हैं कि जनवरीके प्रथम सप्ताहमें नगर पूर्वतमा उपितेश्व पह नगर के स्वाहित के स्वाहित निवाहित्योंके किए सह समय पत्र और विद्याला या और यह वर कव रहा वाकि किसी भी कब दोनों छनावोंने उनकर हो एकती है। ८ जनवरी १८९७ को बहार्जोंके माध्यिकों और एजेंटने एरकारको सेवाने एक प्रापंतायन मेनकर उसका स्थान इस बोर दिकाल

सरकारको सेवामें एक प्रार्थनाएक मेनकर उपक्रा ध्यान हुए बीर दिसावा कि माराधीय यामिपाँके उन्नराति विस्तव वर्षणको करावा के मान कैंग्रे माने हुए हैं। वन्नति यह मार्थना सी की कि "उरहरर यामिपाँके बाल-मार्थन कर्मुमके बिकाय कार्रवार्ष करलेबाकाँचे—माने वे कोई मी धर्म न हाँ—स्था करें और सरकारको विस्ताय दिसावा कि "यामिपाँको बुरवाय निना क्लिको मापूम हुए, एकारफेंने निर्मा थी भी जगाय करने मान्यस्व हुँगे एन्हें करने वे मरकारको स्वता करने वालि सहरारको ऐता कोई काम न करना पढ़े निराध सनवार्मी बर्गमान सौर भी वह बावे" (विधिय य)। १ बननारीको एक दम मेनकर सरकारका स्थान पुत्र बनतार्मी मुमाय समें बम कर्मुकन वनकमो बोर कीया यथा निरामें कि यानियाँको उचरनेसे करवरस्ती रोकनेकी बाव कहीं गई थी। सरकारकार ब्यान हुनर भी योचा मना कि

रेलने-कर्मचारी सरकारके मौकर होते हुए भी इस प्रवर्धनमें भाग सेनेवाले हैं और बससे यह सास्थासन बेनेकी प्रार्थना की गई कि "सरवारी वर्षे

वारियोंको इस प्रश्नेममें जाय लेनेके रोक दिया जाये" (परिधिण्ड के) । इस पत्रका करार मुख्य जरतिकाने ११ जनकरीको यह दिया यारियोंको चुपकार और विका किसीको मानूब हुए प्रतारनके जानके गुगाकरा ज्ञास करता अंतरनाव है। सरकारको करा काम है कि आपने जररवाहके करातानी अनुरोव क्या है कह वह वहानोंगेये, कास दिशास्त्रीके विका जनदरनाहों न साथे। जानकी हम कारियारै और

भागके इन वर्षोते प्रकट होता है कि आप भारतीयोंके प्रतरंके विषय जपनिवेद्रमारमें विद्यमान तीव भारताओंने भ्रती-भाँति वरिप्रित हैं और जनको इस भावनाओंके अस्तित्व और तीक्ताकी सूचना देनी ही चाहिए (परिक्रिय्ट प)।

गरकारने इस पत्रक बन्तिम सस्य मिले इसपर यहाँ प्रार्थी सेव प्रकाशित किमे बिना मठी रह सकते। गरकारचे रक्षाका बारवामन गाँगा वटा पा परन्तु उसने वह मारवासन बनने बजाय महाजेकि माक्रिकोंको स्पष्ट सम्दीमें सराह दी कि वे वात्रियोंको सीट वात्रके लिए प्रस्ति करें। प्रापियोंकी सम्र सम्मितमें बन्य किनी बातकी सपेक्षा इस पत्रसे यह समिन स्पष्ट हो जाता है कि सरकारने भाग्योधनको परोश रूपछे बढ़ाबा विमा और अपनी निर्वसता प्रकट की। यदि बढ़ बढ़ सम्मति प्रकट कर बेती तो यागर यह बान्दोसन दब पाता और मारतीय समानको समाजीको प्रवामीके निर्वात प्रवेशकी नीतिका निरुपय हो आनेके बरिटिन्त उसने स्थापपूर्ण इरावेकि विषयमें बनताके मनमें सहसमन्त विस्तात पैदा हो जाता। १ बनवरीको माननीय भी हैरी एस्फन्य इबंनमें ही ने। इस्रक्रिए माकिनेंकि साँमिसिटराँकी कर्म भेततं पुर्वारण सॉरन ऐंड पुरुष भी सॉटनने इत बबतरका साम कठाकर धनते मेंट की और उन्हें एक पत्र मेंबकर उनमें उनके साथ हुई अपनी बावचीतका सारांच सिख दिया (परिचिष्ट न) । इस पनसै प्रकट होता है कि भी एस्कानने उत्त बस्तस्थाना प्रतिकाद किया जो कि भी नाइलीने चनवा दिवा हुआ बद्रकाया था और जिसका जिल कपर किया था चुका है। इसपर से यह भी मानुम नहा है कि सरनार इन वार्तीको मानती वी

नृतककी सर्ने बूरी हो चुन्नेकर "नृत्सेक" और "नावरी" चहानीको यात्री बतारनेको दुनानत सदाय वे वी मानी चाहिए। यह इनानत मिल स्रत्नेय चहानोक सिल्कार होगा कि वे अपने यात्री व माल पास्तर यत्तार वें। ऐसा वे चाहे तो स्वयं पास्तर साक्तर करें और चाहे पीटी नाविके हारा। यात्रियों और मालदी वंगाहणीते रसा करनेकी जिल्लेशारी सरकारकी है।

जनपरी ११ के यह (पॉपियट प) के उत्तरमें बहायना कि इसमें क्रिय मेंटरी वर्षां की नई है को आपनी बूग ही एनवड़ा प्रथमीन हो गया था मेंटरी को निर्मेष पत्रों जो वार्ष कानगा थी। एकट्न और भी फोटन इसा वहीं भी बानगाई पहें है ने टीक नहीं है। ११ जनपरीको हतके प्रमास में निर्मेष मार्गिक मेंटर कुनने भिना कि भी कौननने दक्त वेना चाहते है। ('जनका वहिएकार करो' को नावालें) ।

यहाँ वह मी काम खेना उचित होगा कि मानियोंको श्रांतिपूर्वक घटा देनेके किए बहाओं के माधिकों भीर सरकारके बीजमें क्या हो रहा जा। प्रा यहाँ बतकामा चाहते हैं कि चनवरीके प्रथम सप्ताहमें सबर पूर्वतया उत्तेषि अवस्थामें था। नगरके भारतीय निवासियोंके किए यह समय भग में चिंताका वा और सहबर कर छहावाकि किसी भी कव दोनों समार्थ टक्कर हो एकती है। ८ बतवरी १८९७ को बहानोंके माकिनों भीर एवेंटे सरकारकी सेवामें एक प्रार्थतापक भेजकर उसका व्यान इस मोर दिसा कि भारतीय यात्रियोंके उठरनेके विश्व वर्तनकी बनठाके भाग केंग्रे कर हुए हैं। चन्होंने यह प्रार्थना मी की कि 'सरकार वात्रियोंके जान-मारू' कानुनके विकास कार्रवाई करनेवाकोंसे—मन्ने वे कोई भी वर्षों न हीं—रा करे. और सरकारको विस्तास विसाना कि "मानिमोंको चुपचाप जिना किसी। माकुम हुए क्यारनेके किए जो भी सपाम करने बाबस्तक होने करहें करने वे सरकारचे सहयोग करेंगे वाकि सरकारको ऐसा कोई काम न कर वड़े भिससे अनवाकी वर्तमान असेजना और भी बढ़ बामें" (परिविष्ट म) ९ जनवरीको एक पत्र मेककर सरकारका ब्यान पुनः जनतामें नुमाने वने प उपर्युक्त पत्रकृती और चौचा ममा जितमें कि मानिमोंको उतरनेसे सदरवस रोकनेको बात कहा गई थी। सरकारका ध्यान इवर ती सींचा तमा पि रेसने-कर्मभारी शरकारके तौकर होते हुए भी इस प्रदर्शनमें माम सेनेका है और प्रसंस यह भारतावन देनेकी प्रार्थना की नई कि "सरकारी कर्म भारियोंको इस प्रदर्शनमें भाग क्षेत्रेसे रोक दिया जावे" (परिचिष्ट व) इस नवका उत्तर मुक्त उपराधिकने ११ जनवरीको सह विमा

नानियोंको चुनकार और बिना किसीको मालम हुए प्रतारन थापके गुसावपर अयस करना श्रवस्थन है। सरकारको पता जना कि आपने बन्दरमाहके बन्दानते अनुरोध किया है कि वह बहानों है कास दिवासरीके विना, बायरपाठमें न कार्य । भागकी इस कार्रवाई औ आपके इन पत्रोंते प्रका होता है कि आप भारतीयोंके ज्वारनेके किस उपनिवेदानस्में विद्यान सीव माननाओंसे अली-अंति परिवित हैं, मी उनको इस मानगाओं के मस्तित्व और तीनवादी सूचना देनी ही चाहिए (वरितित्व थ)। सरकारी इस पत्रके मन्तिम सम्बन्धित स्वपर यहाँ प्रार्थी और प्रकाशित

निये किना नहीं यह सकते। सरकारणे रकाका कारवासन माँगा पया वा वरला उसने बहु बारबासन बैनक बनाय नहाजीके माकिकोंको स्पष्ट सब्दोंमें सलाह दी कि वे यानियोंको सीट जानके निए प्ररित करें। प्रावियोंकी नम सम्मतिमें मन्य किसी बातकी बयेशा इस पत्रसे यह अभिक स्पष्ट हो जाता है कि सरकारने बाम्बोलनको परोज क्यते बहावा दिया और बधनी निर्मेश्वता प्रकट की। यदि नड बुढ़ सम्मति प्रकट कर रही तो शायर यह भाग्वीसन दब जाता और भारतीय समाजदो सभाग्रीकी प्रजानोंके रिवर्डि प्रवेषको नीतिका निरुवय हो जानके अविरिक्त उसके न्यानपूर्व इसर्वकि विषयमें जनताके मनमें सहतमन्त्र विम्तास पैदा हो जाता। १ वनवरीको बानबीय भी हैरी एसकम्य डर्बनमें ही थे। इसक्रिए मारिकोंके सामिश्वटरॉडी क्षमें भेसर्प यूडरिक, बॉटन ऐंड कुकर भी कॉरभन इस बदसरका काम उठाकर दनमें मेंट की और उन्हें एक पत्र मेजकर उनमें उनके सात्र हुई अपनी बानबीतका सारोस सिल दिया (परिधिप्ट न) । इत पत्रसे प्रफट होता है कि भी एरवास्त्रने उन बक्तांपका प्रतिवाद किया थी कि भी बाइलीने उनका रिया हुना बदलाया या और जिसवा जिक कगर किया का बुका है। इसगर ने यह भी मानुस बड़ा है कि सरकार इन बार्सीको भानती थी

पुरुष्यो सर्ने दूरी हो चुन्नेदर "क्र्लंब" और "नाररी" क्राजेंच पानी वाररेरी इनाजत सवाय दे दी बाली चाहिए। यह इवाजत निरु वानेदर क्राजेंची व्यविचार होना कि वे बाने वाली व नात पावदर वारर दें। ऐसा वे चाहे तो त्वायं पावदर आकर करें और चाहे प्रोयो मार्चीके हारा। पाविसों और बातदी बंगाइसोंने रक्षा करदेशी जिस्मेदारी सरकारती है।

बनवरों ११ के वब (पॉर्सिय्ट प) के उत्तरमें बहा बना कि हशमें जिय मेंग्डो वर्षों को गई है एवं सामने बूल ही लगदेना कम्मीमा हो नवा बा मीर भी मोतने तक्षों जो बाने सामनीय भी एम्पन्स भीर भी मोन्स हारा को पई बालाई पर है व टीफ नहीं है। १७ जनवरीको सबसे बनामों सनमें गृहित्व बोला हैं दू कुने शिमा कि मैं मोनने उत्तर मुमाकावको निजी क्यों महीं माना और प्रार्थना की कि भी। खेंटनके विवरफर्ने

को मुखे रह पह होँ छन्हें मुकार विद्या कामे विकास कि परस्पर कोई प्रन म रहें (परिधिष्ट क)। बहुतिक नापके प्राविचोंको बात है हर पक्का कोई करर नहीं दिया गया बहुत्यके मानिकोंने छती दिन सरकारके मुख्य कपाधिबके ११ जानशीके पत्रका करार भी एक्कास्त्र देवामें गेवा (पीरिधर न) और उसमें मारुपर प्रकट दिया कि हमने सरकारका ख्वामें पीत्र कोईक

तन्त्र ने गाँवी बाहरूप

शारीकी बोर बीचावा बतका एसएपिवके पनमें जिक तक नहीं किया नया। वह पनका एक अनुच्छेद सह वा बहातोंको बलरमाहते नरे बंगर बाले हुए साव २४ दिन हो घरे। इसका बर्च हमपर १५ पींड प्रतिदिन पड़ रहा है। इसक्रिय हमें विश्वस ह कि बाय हमें कक दुसहर सक दूरा उत्तर दे देनेका बीचिया नवस्ते। हम अन्यको यह एकना दे रेगा भी जिला समस्ते है कि परि हमें रेगा

हम बारको यह पुकार से देना भी वर्षित समानते हैं कि यदि हमें ऐसा भोडें वतर म मिला जितमें कि यह बारवातन दिया यसा हो कि हमें यत राविवासी कमाकर १५ भीड प्रतिनित्ते हिलानडे हरवाना दिवा बानेया और हम यात्रियों तथा मानको उतार सकें इतालिए बाद बंगाउनेंको बवानने प्रभाव कर रहे हैं तो हम तरकारके संरक्तका अमरीता करके कहाजेडों बच्चरात्त्रमें समनेते हैं स्वारियों एकदम सुक कर देंगे हमारा तावर निधेवन है कि सरकार हमें यह संरक्षक देनेंके लिए बाम्य है (परितिष्ट य)। इस नमका दसार यी एकक्ष्मने १६ जननरीके १००५ नने जहाज-बाटवे राग प्रमान दसार यी एकक्ष्मने १६ जननरीके १००५ नने जहाज-बाटवे राग प्रमान दसार यी एकक्ष्मने १६ जननरीके १००५ नने जहाज-बाटवे राग प्रमान दसार यी एकक्ष्मने १६ जननरीके १००५ नने जहाज-बाटवे

बन्दरमाहरू क्यालने हिरायत वे वी है कि सहाब आज १२ वर्षे गीना बार करके पाटपर आनेटे लिए तैयार हो बाये। व्यवस्थारी रागके सम्बन्धने सरकारको प्रसारे जिल्लेबारीनी बार दिसाई बानेकी बरस्त मही है (बरिशास भ)।

नान्त्रयम् तरकारमः वतारः । सन्त्रयासायः सारः स्तादः कातमः वरसः नही है (वरितिष्यः कः) । सावितीयौ रणादे सरस्यये साठियोको सरकारणे जोरण वहनी वार सर्वोद्दानन दिया वता और जैना वि जाग वनकर बनतास वासना वर

भी तक दिया गया जब कि याचियाको आरत सौर बालैन लिए विकस करने हैं सारगीरकी प्रसरी को आदिते जब सामन विकल हो गर्ने। बब बहाबॉकी बात मुनिए। ॰ बनवरीको नावरीने यह एक्ति-एन्सेप दिया "मुदक पूरा हो वया। बतलाइसे मुझे वाली उठारीको हवाबत कव मिलेगी? इसी प्रकारका एन्स्य कुट्टेंबने १२ बनावर्ग भेना। पर्यावर्ग स्वावर्ग ११ बनायी १८५०के दुमहूर बात तक नहीं दी गई। उसी दिन कुट्टेंबके मास्टरको ८ बनावरी १८९०का मिला निम्म पन निका निस्पर हुटेंहेबके मास्टरको ८ बनावरी १८९०का मिला निम्म पन निका निस्पर हुटेंहेबके मास्टरको ८ बनावरी १८९०का मिला निम्म पन निका निस्पर

शायद जाएको पता न होया और न मापके यानियोंकी ही होगा कि इयर कुछ समयसे एक्रियाइयोंके आगमनके विवयः अपनिवेशको भावनाएँ बहुत अहबी हुई हैं। आपके बहाब तथा 'नादरी" के पहाँ वानेपर तो वे बरन सीमापर पहुँच धई है। उसके बाद वर्वनमें सार्वजनिक समाएँ हुई है, और बनर्ने संकल प्रस्ताव बत्साहपूर्वक पात किये गये है। इन तमाओंने उपस्थित इतनी नविक भी कि भी सीप इनमें धरिमसित होना चक्कते में में तम नगरके समा-भवन (शाउन हाक) में प्रनिष्ट नहीं हो सके। अर्थनके प्राप: प्रत्येक व्यक्तिके हस्ताक्षर करके अपना शंकरूप प्रकृत किया है कि वह सापके बहान और "नाहरी" के पात्रिसोंको उपनिवेदार्थे गहीं उतरने देवा। हुमारी प्रवत्त इच्छा 🛊 कि यदि सम्बद हो तो दर्बनके लोगों और आपके मात्रियोंमें दशकर न हो। उन्होंने यहाँ चतरनेका बल किया तो विसकृत निरंधव है कि यह बक्कर होकर चोती। जायके यात्री यहाँकी भावनाजाँसे सनजान है और अनजानपनेमें ही यहाँ मा पर्य है और हमें महात्पायवादीने मालम हमा है कि पदि आवके जावमी भारत लीट बाला बाहेंगे तो उनका क्षर्व उपनिवेश वे वेगा। इत्तरिप् मदि बहानके बाटपर सगरेते बहसे ही जापके पातते यह प्रसर मिल कार्य हो हमें सुती होगी कि जापके वाजी वपनिवेशके क्षर्वपर भारत लीड कला पतल्द करेंगे या, महाँ की हुआरों आदमी धनके उटरनेका विरोध करनेका मौला देखते हैंपार खड़े हैं बनका सामना करके वे सवरदस्ती धतरनेका प्रयत्न करना वाहेंने (वरिधिय्ट क्

नव धोनीं जहारोंके सास्टरोको यह पता नका कि यानियोंके उत्तरको विवस्त भावनारे महत्ती हुई हैं सरकारको भी इन आलोकनके साथ सहानुमूति है वह वावियोंको रसाका प्रायः कोई सारवानन नहीं व नहीं और स्वसहारमें १११ प्राप्त

प्रदर्भन-समिति ही सरकार बनी हुई है तब स्वमाधत वे अपने साबियोंके निषयमें चितित हो समें और उन्होंने धनितिके साम बातनीत करना मंनूर नर किया। (समिति ही जनमी तौरपर सरकारका प्रतिनिधित कर पी है वह बात क्रूर्जिंडक मास्टरके नाम किसे हुए असके पत्रसे तो स्पष्ट वी साव ही इससे भी स्पन्ट भी कि ११ भननरीको मूनियन स्टीमसिप कम्पनीका *मीक नामक* जो जहाज देखानीजा-ने से कुछ मारतीय मात्री खेकर जामा ना सरके वानियोंको समितिबाओंने बिना किसी रोस्टोकके तेन किया ना बन्दरगाइके सविकारी उनके स्पवहारसे प्रायः सहमत ये और युनियन कम्पनीके प्रबन्धकर्ता सी समितिकी "बाहाबोंका पाकन करने" को तैनार ने आदि)। इसकिए ११ बनवरीकी सामको उन्होंने तटपर जाकर प्रदर्शन समितिके साथ बातचीत की और समितिने एक कायज क्रियकर मास्टरीके इस्तालरोंके किए तैयार किया (परिशिष्ट व≝)। परस्त उन्होंने उसपर इस्तासर नहीं किये और वातचीत बीचमें ही रह गई। प्रवर्धनसे ठीक पड़के समितिकी स्थिति क्या की यह भी वेल लेगा कवित होना। समितिके एक प्रवक्ता वा मैक्बोने कहा "हमारी स्विति बड़ी है को पहले की अवस्ति हम एक भी मास्तीयको यहाँ नहीं उतस्ते हेंचे " (वाकियां)। छमिविके एक बल्प तरस्य कृष्वान बाह्बीने घायण की इए "पांची कहा है? के जवाबमें कहा

सायका स्वयाक पता है, वह कहीं होगा? हम (बहास्वय भेता हुना तामितिका सिन्दर्गंडल) पता 'जसे वैक पाने? नहीं। 'क्एर्वंड' का कप्ताल कांगीले भी बेता ही बदाता कप्ता था बैसा झान पानियाँते (तासिन्यी)। वह जानता था कि हमारी राम्मति उपके क्वियमों नया है। वह हमें बहुत अधिक कुछ वहीं सतका तका। 'जारके पत्त उसके क्षिप् सामर (कोस्वर) तैयार है धा नहीं नह बाबत तो नहीं जीड कांग्या हमें बूर्त जाता है कि पारतीम मीड कांग्यें। से नहीं लीटेंने तो सामितिको सर्वेक्ष नदीलों कक्षर होगी।

मेंडा एक्टवर्डनर (१६ वनवरी) ना कपन है

वाब यह कार समी कि "क्रकेंड" और "नाररी" वानरपाहर्वे वालेकी ड्रिम्स्स कर रहे हैं और कार बुववारके बस्ता १ कडेके शुंध बार

and therefore by the No er's. be grate i iringemen Mer to Depute 1 the factor Empire as pay and u my her forts to brown more on married support h Al Rellay Atra Sella Aniad wagen ansen Souto d'O como

দাৰ্থ २৬ (८९৬ & মাৰ্থপান্য কা কলিল পূচ্চ বিচলী পাংলীবাঁজি নিউ মাৰ্থপান্যাকা মালিপিনিক চৰকৰ সকত চীলা है



वियुक्त्वाले उर्वनकी पविद्योंनें क्लोंने माणे लगे तब जाम बयाल यही हुमा कि यदि भारतीय सामियोंने कारणेका प्रयत्न किया तो वेकारोंकी बहुत दुर्नित होगी। और यकि वे उत्तरोंने बरकर बहुतवपर ही रखें तो मी लोगोंकि विद्याने पिल्लाने और गुर्निति ने बहुरे बीर पागल हो जायेंथे। और भावित कला खड़ी होता को एक्ने सोखा गया चा — "कुक मी क्यों ज हो कलें उत्तरों नहीं विद्या कायेगा।"

साकिकोको जब यह बठाजाबा गया कि बहार्योको सन्यरमाहर्से काने दिया बायेगा उपने बहुत पहुंचे हराकी सुन्यना प्रहर-मारको निम्न नृत्यो थी। कोर्योको सन्दर्शा होनकी सुन्यना प्राठ १ - ६ को विश्वक क्वाकर सी पर्दे एक बुकानवार्योते कुराने बहु सी और लोग बाकर बहुत-बाटसर इक्ट्रेट होने कवे। वेटाझ रक्वर्योत्तरमें बहुँ एकच हुए ठोमॉको निम्न सुन्यी ख्यों वी

१२ वजेते फूड पहले बक्रेग्बेड्डा स्ल्वेमरने हाबिया पूरी हो पर्द। बड़ाँतक पता समाया का तका है हाजिए बोगोंके विभाग में वे : रेसके-अर्मचारी ९ + से १ सकः नेताः बाइनीः सहायकः की क्षेत्रत उक्तप् कोल्स, प्रांट अस्तंगांट, डिक, डचुक, रलेक, कैरडर, टिवरिज । गाद-स्कार पाइट-लाव और रोहंप-ताव १५ । नेता : मि वैन डेकर: सहायक सर्वधी ऐंडर्टन गीश्वतवरी हटन हार्पर, मरे स्मिन बास्त्रन बुड पीडर्स ऐंडर्सन कात कोकेमर, शीवार्व। बढ़ाई, ४५ ; नेताः पूंडेन; तहायकः एव बक्यु निकस्त चैस हड, डी. बी. हार्पर। कारोबानेवाडे, ८ ; नेता: आर. दी. साइन्छ; सहायक बस्त्यू पी. फोर्मन ई. ध्ववर्तस खे. ग्रीकस्थन ई. दाली, ही. बार्मस्टांग । बुकान-कर्मवारी बगभग ४ : नेता: ए ए पिनाव भीर के मेक्टोरा तहायक : एक विवर्धन, उक्यू एक किन्समैन में पार्टी, डासन, एस ऐडम्स ए बमरी में बाइबेक मांस से. रैप्सन वेनकीस्ट, एवरिस बास्टिन । दश्री और काठी सीनेवाने, ७ ; नेता : थे. बी. मानिटेस शहायक एथ मलहालैंड, थी. बुल, आट. पाडाडे, ई. नैवर्तन ए रीज के बसप बेंट, सी बाउन। राज बौर पत्सतर करनेवाले, प ; नैताः वा नैकॅमी; सद्भाग हार्नर, बील, बाउन, बेनुकिन्सन । बार नजबुद, बोहेरो; नेता : में दिक; सहायक : पिम्बद, स्तैनतरम, बायसन सन्दर्भ योगी बाह्मव

इक्कियंद्र, पार। साधारण जनता कोई ? ; नेता टी. ऐडम्स; स्मृत्यक प्रेडिंसन ए एक पार्वद, जी. उक्का संग्रह पीए तीमाई पी. एक सर्वद जीर जावनाई वतनी सीम १ । इनका संग्रहन जी. स्पेडमो जीर कार निर्माद किया वा और वे दोनों प्रदर्धन संग्रहन जी. स्पेडमो जीर कार निर्माद के प्रदेश स्थापन करने प्रवाद के पूर्व । कार्यों कर्ष वतनाया कि पुन्दारा नेता एक वेले बतनीको बनाया गया है। वह इन्हें साध्यात के प्रकृत निर्माद करने पार्थ और कब वह इनके साध्यों सावता और कस्त्रा-फिरता वा तो ये सोम बूब सुधा होते वे। कस्त्री कार्यों समझते कस्प एक सेने किए पड़ नगोर्यन कस्ता हा। वादमें पुरिस्टेंडर अनेक्वंडर एक सोनेप प्रमास और उसने इन सोनेपीको स्वयंग्रह सहुर इसा दिया।

बहुत्व बन्दरनाहुमें कियु प्रकार कार्य प्रमे मौर नावको क्या हुमा इस स्वक्त हाल बतकानेके लिए, बायके प्राची उसी पनके १४ जनवरीके मैकको सब्देव कर देना सबसे सच्छा कमसंदे हैं

 भीतर प्रविष्ट हुमा तब सबकी आँखें यह बेकनेको उत्पुक्त भी कि प्रदर्शन क्या कर बारण करता है। बाटके दक्षिणी किनारेते बत्तरकी औरको नुक दर तक कुछ सीय एक पॅक्सिनें कड़े ये परन्तु वे बड़ी प्रांतिसे काम मेरे नकर बाये। बहाजपर के भारतीय मात्री बहुत करें हुए नहीं जान पड़े। भी गांत्री और कुछ जन्म मानी बहाजरी छतपर कड़े देवने रहे। उनके चेहरोंसे प्रवरष्ट्रतका कोई नाम प्रकट नहीं होता ना। प्रवर्धनकर्तामींकी नुस्य जीड को बन्दरमाहरी नुका गोडी (श्वार्क)में कड़े बहाजॉपर एकम ही गई भी भीतर अले हुए बहाजॉपर से विकताई नहीं पहती थी। "करलेड" काफ [देकरी] के मार्गपर यूग गया और वहां आकर सड़ा हो यया। इतते भीड़को को मात्रवर्ष हुता यह उत्तरी हरकतींसे प्रश्व होता था। सीन इमर-क्वर बॉवर्ड-आपर्ट नजर महो वे जीर क्वरी सभारमें विसङ्क नहीं का रहा वा कि आगेकी कार्रवाई चेते करें। कुछ बेर बाद सबके सब अलेग्बंडा स्क्वेग्ररकी समामें अले गये। जिस प्रदर्भनकी इतनी चर्चा भी एतका मन्तिन रूप बहाजवालॉने यही देखा। इती समय भी एरकम्ब एक छोडी नावमें लगार होकर, बन्दरपक्तके कप्तान वैनाई गोदीक मधिकारी भी रीष्ठ और मुवॉरन-मास्वर थी तिल्पक्रिनके साम "क्रुस्तंड" वी वगलमें आये। अटमी-सन्दर्भने कहा 'कप्तान मिले भे बाहुता है आप अपने वात्रियोंको बतला दें कि वे नेटाल-सरकारके कानमेंकि मात्रात अपने आपको बैना ही नुरस्तित सनमें बैसी कि वे अपने लरक पर्वित हों। कप्तानने कुछा कि क्या ने पानियोंको बतरने वे? भी प्रश्निको जवाब दिया अन्छा हो कि आव बहले भनते जिल लें। यही बात प्रशृति "नादरी" के किए भी कही । बादम वे समायें मायम परमें के तिए तरकर में बावे गये। "क्रानंड" और "नाररी" अपन-बयतमें आकर्त राबारीयाह चर लया विधे यहे। "कर्नड" तटके अधिक समीन ना। गह बारबान्त दनक बरबान् भी तन्त्रम अनेग्रीहा स्ववेशमें दन स्थानगर

यह बारवाल वनक वरवान् भी छन्त्रम्य अनेर्येट्टा स्ववेशम्ये वन स्थानवर वन वर्षे वर्हा प्रतिकारी एक हुए थे। बर्ग एवन भीति छानन बारवा वर्गों हुए क्षेत्रि उनको विकास क्षित्रया हि इन बानवर विवाद नामते निर्ण गीरा ही नवहरा अविवेदन हाता। उन्हेंन उनके विस्तित हो बानवर अनुरोव विचा। गर्निको हुए स्टब्सने भी बारत विच और असमें भीह 226

चेंट गई। में मायच सुनते हुए थोताकॉने को बादावें स्तराई **नी** बौर ननताजॉने को कुछ कहा वा उनकी कुछ बानगी यहाँ वे बेना छपमोदी होना

"दर्शको पापल सौटा दो।" "जाप गांचीको स्टप्पर वर्षो नहीं ससी "बागर और पंच तैयार रखो।" "इन भारतीयोंको बारस सीटा दो।" "यदि हमें वी पारतको सामाजिक गानियोंने बदवका कुढ़े-कवरेके साथ एक बम्ह देशकर रक्षा पदा हो दक्षिण आधिका ब्रिडेनकी मुद्दशैन ^{हर्} प्त सकेगा" (वास्थित) -- वा मैकेंबी। "मै जी कृतियोंकी परदन दक्त कर क्रेंब देनेके लिए सबसी तरह तैयार हैं। (तासियाँ) वांबीके बारेंनें मुनिए (ताकियाँ)। बाप बाहें तो उसके विवद विस्ताते रिवेर पर मलपर इतना भरोता राजिए कि मैं उतका कास निम हैं (हेती)! गांची इन्होंनें से एक बहाजपर है और उत्तकी सबसे बड़ी सेवा वह होती कि उसे पामन कर दाना वाने । मेरा सवान है कि गांवी अपने उद्देश्यनर कुर्याल होते और शहीब बननेको बड़ा जलक है। उसको सबसे वरी सबा यह थी का सकती है कि अार उसे अपने साथ रहने यें। यह मार्ग्य साव रहेवा तो जायको प्रतपर वृष्टनेका भौका निकता रहेगा (हैंडी और तासिया)। आपने प्रसे कत्न कर विया तो वह मौका आपके हानते बाता रहेगा। मृहपर यदि यक्तियोंने हर कोई वके तो में तो काती सपायर भर बाना पत्तम्ब खबेया --- वैन देसर।

बीड़ छैट जानके सन्वयम दो पटे बाद यात्री छोटे-छोटे दसोमें नार्दो हारा किनारेपर प्रनासे समे। भी नांपीके विषयमें भी एस्टम्बने समुद्री कृतिनी मुपरिनिर्देशको हिरायत है। कि बढ़ आकर उनसे प्रस्ताब करे कि उनको और प्रतके परिवारको बाज तान चुपनाप उनार दिया जावगा। श्री मांबीने ^{बहु} प्रमाय सम्प्रवारपूर्वक स्वीकार कर निया। परन्तु बावको भी साँटन वनी दिन भिषको हैनियतमे पनमे मिलने बहाबार यह और उन्होंने सुगामा हि इन दोनों नाब-नाम उन्हें। थी गांदीने वह नुसाब मान निर्मा और 📳 भरती ही जिल्लेवारी तथा जोशियपर समुद्री पुतिसको विना कोई बु^{बता} रिय कोई ५ वज भी लॉटको बाब लॉडिंगनक नमीप उत्तर गये। 💯

र देशित क्षेप्र १७८-७९ ।

सदकॉने सन्हें पहुचान किया और वे इनके और उनके सामीके पीछे कप गये। जब में दोनों हवेनके मुख्य मार्थ बेस्ट स्ट्रीटवें चुजर रहे ने तब भीड़ बहुत बढ़ पर्छ। कोनोंने यी कॉटनको भी गांनीसे समग कर दिया और ने उन्हें सातों जुनों और चानुकोंसे मारने सगे। उत्तपर सड़ी-नसी मककियां और केंद्रकर मारनेदी इसरी बीवें केंद्री वहूँ। बनकी बांसमें बोट करी और कान कट गया। जनकी पराही बनके सिरपर से तकाल दी गई। वन मह सब ही रहा वा तब स्पार्टेबेंट पूक्तिको पत्नी संयोजनस उपरसे पूजरी और उन्होंने बड़ी बहादुरीचे अपनी कवी शामने करके मीड़वे चनकी रक्षा की । कोर्पोकी चीखें और जिल्लाहर पुतकर पुक्तिस भी मौकेपर पहुँच गई और उन्हें बचाकर एक भारतीयके करमें के वर्ष। परन्तु अवतक भीव भी बहुत वह क्की बी। तसने मकानको सामनेकी शरकसे भेर मिया और वह गावीको निकासो की बावाजें कमाने क्यों। बेंबेरा बना होनेके साव-साव भीड़ भी बनी होनी क्सी गई। पुलिस सुपर्टिटेंडेंटकी भव होने क्या कि मारी रंगा ही वावेगा और क्षोप बंबरण नकानमें बुस बार्वेगे इसकिए उसने भी गांबीको एक पुरिस रिवाहीकी वर्री पहनाकर भूपकेने पुरुत-नानेमें पहुँका दिया। आपक प्राची इस पटनासे कोई काम चठाना नहीं चाहते। चल्होंने यहाँ इसकी चर्चा क्षेत्रक बटना-कमके एक अंगके क्यमें कर थी है। वे यह मान सेनेको तैयार हैं कि यह जाकमन नैर-जिम्मेदार नोगॉरा काम था और इस दृष्टिसे विश्वय ज्यान देने मोम्य नहीं है। परन्तु साथ ही ने मह नदे दिना नहीं रह गरने कि मदि प्रवर्धनसमितिके जिम्मेदार सदस्योंने सोबाँको जनके विवद्ध सब कामा न होता और सरकारने समितिकी कार्रनाइमींको वर्गस्त न दिन्या होता तो वह घटना कभी न वटी होती। प्रदर्धनकी कहानी वहाँ समान्त हो

अब नापके मार्पी प्रदर्धनके शास्त्राकिक कारलींगर विचार करलेकी नतुमति चाहते हैं। समाचारणतीर्थे इस जासमते बनात निकते से कि जहाजींगर ८ यात्री है और वे सब नेटाल जा रहे हैं स्थानें ५ सीहार जीत २ रूपोबीटर हैं और क्रूपोर्ड जहाजार एवं स्थानाना भी आबा है और भी सोती ने —

बह स्वयात करके भारी गमती की कि वह प्रतिवात १ से २ तक मपने वेप्रवातियों हो यहाँ उतार देनेके लिए भारतमें एक स्वतन्त्र ऐसेली संगठित कर लेपा और नेहाकने पूरोपीय बुपबार केंद्रे पहुँचे। (नैटार्ड सकर्युपी ९ बनवपी)। स्वयंत्रके एक्सार सम्बंध स्वयंत्र सम्बंध स्वयंत्र सम्बंध

प्रदर्शनके परकात् उसके नताने एक समार्गे उसका कारण इस प्रकार सम-मारा का

विसान्तरके करतमें नेने मेटाक अक्युरिने एक केलांब इस बाधनकां देखा या कि "क्एकेंड" और "नान्तरी" बहुक्तिके यानिकीकी तरकते थी गांची सरकारण हरकानेका बाना करनेकी सोच रहे कि उन्हें पुरुक्ते वर्गे रखा गया। यह पड़कर नृस्तिके मारे मेरा खून बौकने काम। तर्क नेने लागता हाचने जेनेका निश्चय किया और वा येखेबोले मिलकर पुगाया कि इन नोचेकि व्या जरानेके विच्या प्रवर्धनका संकटन किया आमे।

इन तनकाने जलामें कहा: में स्वयं तीनिक हूँ और २ कर्ष तक तेवां कर जुका हूँ। में किसीलें कम राज्यवत नहीं हूँ। परन्तु विदेश वाद एक तरक कारतीय कोशोंकों और हुयारी तरक मेरे घट-वाट, मेरे परिवाट मेरे बच्चोंके जनातिह्न अविकार, मेरे प्यारे माता-पेदातकों स्मृति और साम यह वेश को नुकुक हैं वह कारोंके किए वाहोंके तो-कह दिवा करें जलाने कांग्रे तो ये एक्साम वहीं काम करेंना को में कर सकता हूँ और जिलाकों बार मुनसे आसा एकरें होंने (तातिकार्त)। इस बुराईको लहानें जनाम ने इस मानाकों इनकालात तरकारकी बसायर कोड़ देना काल्य कर्कमा। इस बुराईके पुष्टाकोंने यह काल सनुसर्वे एक बूरके बरावर होगा। (स्टाक अक्ट्रेप्ट) १८ फरररी)।

यह मी रुहा गया ना कि भी नांचीने भीर ने कपने छान जिन दूवरें नकीनाओ नामें हों उनके बहुकामें जाकर सायतीय मात्री छरकारण्य हरजानेका यात्रा करेंगे कि एसने पनको कानुनके विकास सुस्तकों रजा। नियक मन्त्रीयों है विद्यानस्थ अंकों निकास पा

इस करागे कि "मारारी" बीर "कूर्तिड" कहानेकि नारतीय कानुसरे विकास कहानेकि मुक्तकरें रखे वालेक सारण तारकारण दावा कराकी भोक रहे हैं इस स्वत्यहणे प्राया पूर्वि हो काती है कि वी नांची मी जहाजार हैं। उससे सचनी तीस नामुनी सुसन्तालों एक ऐसा महिया नुकारा बुंड किया है जिसके हारा वसे मुनककी हुकावामी मेर और कार्य-किक बताकि गोमक स्थानते पुरकारा मिलते ही मानवार मिहन्ताना मिलता रहेगा। इस कामके किए करवेदों को नही-नहीं रकते एकत्र की गाह स्ताता है वे स्वत्राकता जी गांबीको मिलेंगी, मुक्यमेंने बाहे हार हो का बाह बीत। और परि यह यह सस्य हो तो हत कर्क ब्रावसिको, तटबर आते ही करना प्यान क्यानेके किए इस नगोर्थक मुक्यमेंने बहुकर इसरी बीज नहीं मिल सक्ती। उत्तरे साथ बहुत्वपर सायद बुक्त और सारतीय कर्कीक की है जिनतो पहीं कानेका बसने हरावा बताया था। बीर उन्होंने किलकर बहुत्वके बन्य नारतीय यानियोको हरजानेका शवा करनेके किए संसार कर किया होगा।

२९ विसम्बर्फे मैटाझ रववर्यकृत्यसँ नवाकपित कानूनी कार्गवाई सम्बन्धी सुपना वी और वपने विसं सस पत्रमें निक्रमा वा

स्वतन्त्र वारतीपोंकै चौकके चौक यहाँ बानेच विच्छ माधना उर्धनमें निरंतर का होती रही है और हालमें "क्रफेंड" तथा "नाररी" बहाजों द्वारा इसी प्रकारके ७ और भारतीयकि यहाँ पहुँच वालेसे तो प्रतीत होता है, वह और भी तीय हो उड़ी है। इस प्रश्तने इस घोपवाने कारण भीर भी बुजाबायी तथा तील रूप बारण कर किया है कि, मारतीय भीवाँका एक गुर बहाजेंकि रोक रखे वालेके कारण, नेराज-सरकारपर नारी हरजानेकी नानिश करना बाहता है। तन बुपहर बाद शहरमें एकदन इस माजगका प्रकार किया जाने कथा कि और मधिक नारतीबोंके यही जतरनेके विषय किसी न किसी प्रकारका प्रतिकाद किया जाना चाहिए। इस प्रकारके मुसाब वुने मंतीरताले दिये जाने समें कि जिस दिन मारतीयोंका "कुरमेंड" और "नाबरी" से उत्तरना स्थिर हो उस दिन मुरोपीयॉसी भीड़को बहाब-यहपर पहुँककर पाधिवाँको उत्तरनेते शोरू मेना बाहिए। इसके किए गरीका मह लोका गया था कि मुरोकीयोंकी मीड़ एक-मूनरेके पीछे मारनियाँकी तीन या चार पंक्तियाँ बनाकर ऋदी हो काये और अपस-वनकवाले मारमी मुद्दीमें बुदकी और बहिसे बहि बॉबकर, प्रतरनेवालॉक्ट मामने एक बीत बीबार-सी बना वें। परन्तु बहु झावह कीपींचें सामारण ₹ ₹

चर्चामात्र थी। एवियाई-चिरोपी मानना मृत्री हुई है इसर तो तींद्र किया ही नहीं चा सकता; और एक मन्य काकममें भी हैरी स्मलके हस्तासरोंसे प्रचासित वह विकारण इसका प्रमाण है "बावरक्का है, ब्रेनके एक-एक महंकी एक तमारी हाजिर होनेके किए—सोमवाध-४ धनवरीको सार्यकाल ८ वर्ज विक्शीरिया कालेक वह कमारें। समाना प्रयोजन एक जुल्हका संगठन करना वो चहाक-सरप बाने और एथियाइसीके कारों बानेके निकक्ष नावाब बुकन करें।"

वापने प्रार्थी पहुंचे क्ता चुके हैं कि कौत-सी घटनाएँ कमस प्रदर्धन धंनिध्य करनेका कारण बनीं। परन्तु यहाँ सब्देव अंग्रमें प्रवर्षनका तात्काकिक कारम कुछ और ही बदका दिमा गमा है। इन दोनोंमें अन्तरकी और आपके प्राची भाषका ब्यान विशेष क्यरे शीच देनेकी बनुमति चाहते हैं। इन्हें बमान पत्रोंने प्रकाधित न होते तो सम्मव है कि प्रदर्शन होते ही नहीं। वे बबात सर्वेचा भिराचार ने। बापक प्रावियोंका निवेदन 🕏 कि यदि ने सर्व मी होते हो भी प्रदर्शन-समितिका कार्य किसी प्रकार अधित न ठड्डा समितिके सबस्योंने यूरोपीयों बत्तियों उपनिवेसमें विद्यमान भारतीयों और करने तथा भी नांभीके साथ करवाय किया मुरोगीयोंके साथ क्योंकि प्रत्मी कार्रवाहमीके कारण मुदोनीयोंमें कानून शोड़नेकी मावना फैक वर्ष वहनियोंके साम क्योंकि क्षारमाह्मर चन कोवाँकी उपस्थितिके कारण — इतसे उ मतलब नहीं कि उन्हें बहुँ कीन सामा-उनका सावध तथा उनकी लड़ने मारतेनी प्रवृत्ति भड़कनेकी सम्भावना हो गई, और ये कीम एक वार मक्त जाते हैं तो काबूमें नहीं रहते भारतीयोंके साथ क्योंकि उन्हें गरिन परीक्षामें से पुत्ररता पढ़ा और समिविकी कारवाइमेंकि कारण उनके विका भावनाएँ बहुत भड़क यहँ अपने साम नयोकि छन्होंने अपने बबानीती मचाईको परमे दिना ही कानून और स्वयस्या संग करनेकी अवंकर विग्ने बारी अपने निर उठा ना और भी मांत्रीके मात्र स्वीकि भी गांत्री जीर वनके कामीके विषयमें मारी भ्रम फैका दिया जानेके कारब-निवर्णे अनवानमें--उनके प्राण गैंबानेकी नीवत जा गई थी। नेटाल आनेवाले बानिबीरी गंक्या तो ८ थी ही नहीं दोनों बहाजोंने सिनावर भी सगनन ६ हैं। मात्री थे। और उनमें भी नैटार आनेवाने तो केवल १ थे। यह सर् करागोत्रान्वे सारियन या राम्सदास जानेदाने दे । इन २

नटासके पुराने निवासी में भी भारत जाकर बहाँसे सौट रहे ने ! नमें आनेवाले से भी कम वे और इनमें भी कोई ४ स्थियों वी जो नेटासवासियोंकी पहित्यों था रिस्तेशार थीं। श्रेष ६ था तो कुलानशार में या जनके छहायक और फेरीबाले। पहाजींगर श्रीहार या कम्पीबीटर एक भी नहीं था और न कोई छापालाना ही या । श्री बाबीने नैदाछ एडवर्टीहरू के प्रतिनिविक साप कात करते हुए इस कातसे कुम्ममलुक्ता इनकार कर दिया था कि सन्हति जहाजोंगर कभी किसीको कानूनके विकास सूतकमें रखे बानेके कारण सरकारपर दावा करनेके निए उक्ताया है। इस दनकारीका प्रविवाद अप्रतक किसीने नहीं फिबा है। यह अफनाइ फैनी कैसे इसका पता आसामीसे त्तगावा चा सकता है। भी हाल पहले बतलाया जा चना है उससे प्रनट है कि बहाबंकि मामिकों और एबेंटोंने कानूनके निकाछ मूतक और शोक-टोकके कारण सरकारपर दावा करनेकी बमकी दी थी। अपनाहोंने दावा करनकी बान वावियोंके भिर नड़ दो गई, और नैदाल मन्यूरीने यह प्रान्त करणना कर की कि इस मामलेमें की बांबीका हाब अवस्य होया। की गांबीने उसी गापन द्वारा इस बावता भी धन्त्रन किया है कि उनके नेतृत्वमें कोई एना संबद्धन है। जिलना चर्नेम्य इस चपनिवेशको भारतीयोंने नाट देना है। प्राची गन्नामीकी सरकारको विस्ताम दिसारी है कि भी गांपीके अधीन ऐसा को रांपठन नहीं है। वे तो स्वयं क्लॉस्ट्रेड एक यात्री मात्र वे। उन्हांने उस बहाजन मात्रा की यह भी एक निरी भावन्तिक बाद भी। प्राविकॉर्ने १३ नवस्वरको उन्हें नेटाल बानेवा तार दिया और उन्होंने क्लॉड बहाबवा दिवट खरीद निया नवींकि उन नारीलके बाद नेनातके निए बड़ी बहुना जहात था जो गुपमनाधे जिल सनता था। इन इनकारियाँकी यमार्थेता कभी भी जालानीधे मालग की जा चकती है, और मदि ये सूत्य पाई जावें तो जापके प्रावियोका निवेदन है कि नेराक-गरवारको चाहिए कि वह इनके अध्यक्षमें अपना पन प्रस्ट करने जनवानी भन्नी हुई भानताकी साठ कर है।

जूनरके विश्वमें जी कुछ करवाएँ उस्लेकनीय है। उनमें प्रश्ट होता है कि जूनरकी व्यवस्था अस्तिकाको स्पिटीशाल स्तैयने वचानेते आपके बनिस्वत

² MAY 84 1041

व के पिर कुछ १७५ १५८ ४ --४ मी ४ --६ । व स्वेबीनेडी वर एस १३ लगमा १८५६ वा मिलाबा स्टिन्ट कुछ १३५ ।

२६ दिन पूरे होने तकके किए नी। उसर बाक्टरोंकी समितिको निस रिपोर्ट (परिविष्ट व) का बिक किया गया है स्तर्भे बहार्वोको सौवने भौर धृती क्यानेके बाद १२ दिन तक सुतकर्ने रखनेकी सकाह दी यह बी। बहार्बीको शोबने और बुनी समानके सिए छनके बर्बन पहुँचतेके ११ दिन बाद तक कोई कार्रवाई नहीं की गई। इस बीच पानी और मोजनकी कठिनाईके जनके **एल्डेचॉपर भी कान बड़ी कापरवाहीसे दि**मा गया। रुद्धा **वाता है** कि महा न्यानवादीने सामग्री तौरपर जाक्टरोंसे बातचीत की और उन्हें सतककी बनविके

* 8 * मार्खीयोके विका बसी पई एक रावनीतिक वाल ही अधिक थी। यह

विवयमें अपनी सम्मति देनेको कहा (परिशिष्ट त)। बाविबॉके विक्रीते नौर क्याब जम्म बामे गये और मचपि इस बरवारीके बाद प्रत्वें १२ दिन तक बहाबॉपर हो खना वा फिर मी सरकारने -- बहाबोंसे सबेद बेना भानेपर भी — क्यंडे बौर विक्रीने देनेका कोई प्रवन्त नहीं किया। बौर नवि हर्वनके कुछ परीपकारी भागतीय अवादता न विस्तात तो सानिवाँको इतने समय तक विकारों और काफी क्यडोंके बिना ही खता पडता। सायद इससे वनने स्वास्थ्यको सौ मारी डानि पडेंच वातौ । प्राची अधिकारियोंका विचत सम्मान करते हुए भी यह कहे विना नहीं एक सकते कि भारतीय समायके प्रति उनकी कृतनी ज्येखावृत्ति यी कि उन्होंने बहाजोंको पहुँचे वस दिन बीठ भावेंसे पहले अनुपर से बाक तक दठवाकर बेंटवानेका प्रवन्त नहीं किया। इतसे मारतीय व्यापारियोंको सारी समुविधा हुई। इन सिकास्टोरी बर्किक पुष्टि करनेके किए बापके प्रार्थी कापका स्थान इस समाईकी जोर सीवना चाइचे हैं कि क्लॉडिको मानी उतारनेकी दबावत मिल नई और यह बाटके पात का गया तब भी ठसे कई दिन तक बाटपर सगनेका स्वाम भड़ी दिवा बया। की बहान उससे पीछे बाये सनको स्वान वे दिया गया। इसका प्रमान निम्न विवर्त है "ब्रुरतेड" के कप्तालने हुमारा प्यान इस क्लुल्वितिको धोर बाँका है कि यद्यपि जनका जहाज गत जुनवारसे अस्परशाहके भीतर कहा है किर जी उसे मुख्य योदीयर आलेका स्वान अवतक नहीं जिस सक्ता। पिछले दिनों कई बहाज यहाँ साथे और यहाँप "करलेंड" को बनसे १ केदिल इच्चर ८।

पहले स्थान पानेचा हुन वा बीले सानेवालींका तो बादपर समनेकी बातृ सिक पर्द और "कूफोर" पारामें ही बढ़ा रह गया। "कूफोर" को स्थानय ९ तम साम क्यारमा है और नायाग ४ तम कोयमेंकी सावस्थकता है। क्यारेने यह तक तामान कोचेचा व्यव बहुत क्यादा होगा। नेटास्ट एकनट्योंक्तर, १९ बनवरी, १८९७।

प्राची सह दिवालानेके लिए कि प्रदर्शनसे पहले और पीक्ने स्वयं कियमों वेसिस पर्शोका सब क्या का उनके उक्तरण दनकी दवाजब चाहते हैं

नारतीयोंके सापमनके सम्बन्धमें नेडाककी वर्तमान कार्रवाई सन्तुक्तित नहीं है। भारतीयोंकी यहाँ प्रतरने बेनेके विश्वत आन्दोलनने वर्वनमें एकवम तीब क्य बारक कर किया है। बाहरके संसारका व्यान इतसे ठीक उत्तरे इत मनानंताको और यथे दिना नहीं रहेमा कि अवतक दर्बन बम्बरपाह ही विश्वन वाधिकामें नारतीय लोगोंके प्रवेद्यका प्राप एकमान हार पता है। यह करूमा कोई कठिनाईसे ही कर सकता है कि को बेघ इतने बीर्य कारती सुरक्षमञ्जला भारतीयोंको आनेक किए जलादित करता बाता का रहा है बहु, सर्ववा मक्तनातु, वर्वनमें उतारमेठी प्रतीका करते हुए दो बहाबोंके बाजियों पर उत्तर पड़ा बीर उन्हें उतारनेसे रोकनेकी हिसामय कनकियाँ देने लया। बर्वनके लोगोंको की इस अएदोलनके साव में इतनी ज्यावती करमेंके बाद जनके इस दसके किए बचाई देना नुष्यित है। चनका इतना बाये वह बाला दुर्नाव्यकी बात है नवींकि इस समय बाहे भी दूछ हो अन्तर्में उन्हें निरूप ही निरामाका सामना करना और नीवा बेखना पहेगा। सब-एक बहुने और करनेके बाद भी तबाई यह रहती है कि मेरासके सोगोंकी बहुत बड़ी संस्था जानती है कि इस अपनिवेशमें भारतीयोंके जापमनसे उनको बहुत अविक साम हुया है। ऐसी करनना करना ठीक ही होगा कि नेटातर्ने निरम्तर नये-नये भारतीयोंका मायनन जनकी इस बानकारीका ही परिचाम है कि जनते वहने धानेवालाँको अपनी नई बदरवाओंने नुस्न निना था। अब सवात यह हो सकता है कि नेटासमें मानेवाले बहुत्ते भारतीयोंकी यहि बुरोनीय सोय किसी भी प्रकार सहायता व करते तो वे सूची और ९३४ रासूनै ग्रंबी शासन

तमृद्ध हो ही केंग्रे सकते ? और इसीतिए यह भी करपना की वा सकती कि पुरोपीय कींग इन भाक्त भारतीयोंकी तनुद्धिमें सहायक न होते. वर्षि इस सहायताके कारण उन्हें अपनी समृद्धिमें भी सहायशा न मिक्रती। की मारतीय नेदालमें बाये वे वो प्रकार के वे --- एक विरमिधिका और दूसरे स्वतन्त्र । इन बोलॉका अनुसव यह है कि क्रमरी विरोधके बावबुद मुरोपीय उन्हें काम या 'सहायता' देनेके कियु तैयार रहते है और इस प्रकार दे न केवत उनको समृद्ध बनाकर सुबी और सन्तुष्ट करते हैं बहिक अधिक र्यस्थाने नलेके लिए नौ बल्हाहित करते हैं। विरमिक्षिया नारतीयोंने ते मिक्तरका उपयोग मरौसीय किसान करते हैं। स्वतन्त्र भारतीयोंने से बो कोय व्यापार करना चाइते हैं उनकी सहाकता परीपीय व्यापारी करते हैं। धेव सबको यहाँ जाने और वस बानेका उत्सद्ध इस कारण होता है कि धन्तें किती न कियी प्रकारकी घर-पृष्ठस्तीकी नौकरी मिल बाती है। गिरमिविया नारतीयोँको आवस्यकता नेटाकको निगवर्ग करते 🛊 स्वीकि काकिर सोवॉमें से वो नवकुर निसते हैं वे अन्यरवाह और वेनरोतेकार होते हैं। इतका प्रमान यह है कि इवारों नारतीय बेतों और वरोंकी नीकरियोंमें सने हुए हैं, और प्रायः प्रत्येक बाकते सैकड़ोंकी मीर र्मांच भारतत्त्रो भेजी बाती है। "परन्तु" बहुवा कह दिया जाता है। "बार्वात गिरविधिया नारतीयोंके बालेपर वहीं स्वतन्त्र बारदीयोंके बालेपर है।" हवापि पहली बात यह है कि विरमिधियां कुमीको भी साहिए स्थलक होना ही है और इस प्रकार नेटालके सोन भारतीयोंको पिरनिविधिक क्मों बुकाकर अवहारतः स्वतन्त्र भारतीयोंको भागावीके निरत्तर स्वते रहनेका मार्ग कोल देते हैं। यह सही है कि विरनिदिया भारतीयोंको धनका इकराएनामा समान्त ही बलेपर बाबत बीटा देनेका प्रमल किया पता है परना अभी तक इस प्रकारके किसी कानुसकी अनिवास नहीं बनावा वा सका। अब पड़ी बाद स्वतन्त्र नाप्तीयाँकी। वे सीम न्याचार, चेती, भा चर-गृहत्त्वीकी नौकरीमें ते किसी एक कामनें समे हुए है। इनमें से फिली भी काममें से प्रत्यक्त मुरीपीय सद्वासताके जिला सकत नहीं हो सकते थे। वहाँतक भारतीय व्यापारियोंका सम्बन्ध है, वर्ते तो पहले-पहल सङ्गारा बुरोरीय व्यापारियोंते ही निकता है। डर्बनमें झामर

214

एक भी प्रतिस्थित स्थापारिक पेड़ी ऐसी नहीं विकार्फ का सकेगी जितके एअँट बीतियों भारतीय न हों। हुती कितानों की सहायता और रक्ता प्रोपीय को प्रकारते करते हैं। उन्हें बोतीके लिए बमीन मूल मुरोपीय मासिक्से ही करोहनी था किरायेपर सेनी पहती है। और उसकी पैदा-भारकी भी मनिकतर धपत यरोपीय घरोंमें ही होती है। यदि चुती बायबान और फेरीबाले न होते हो दर्बनके (बीर उपनिवैशके सन्य नायोंके) सोप अपने रहोई-बरकी बहुतही आवश्यकताओंके किए तरहते रह वाते। यर-पूरुरबीक मारतीय नौकरेंकि विषयमें केवल इतना कह बेना काफी है कि वे दाम दरनेका सामध्ये विस्वात-पात्रना और आज्ञा-पानदरामें औसत बरबेके काफिरकी अपेका कहीं क्रेंचे सिद्ध हुए हैं। सायद बारीकीसे वेंसनेपर पना समेगा कि जिन सोगोंने हासके बान्दोसनमें भाग किया या उनमें से नईके परोंने भारतीय जीकर है। सरकारी जीकरीने भी बहुतसे कुसी सर्वे हुए हैं । उन सबके सिए सरकार शिक्रमको भी प्यवस्ता करती हैं और इस प्रचार वह अनकी अमेतिने सहायक होती है। इससे स्वच्य है कि को भारतीय उननिवेशमें पहलेते विद्यमान हैं उनकी मुख-समृद्धिका मूल कारण पुरोपीय ही है। और इसनिए यह बात बुक्तिसंगत नहीं जान पहुती कि बही सीय जनके और अधिक संस्थामें यहाँ आलेके सकत्मात् विरोधी बन बार्वे। इत सबके व्यक्तिरस्त इत प्रानका साम्राज्य-सम्बन्धी पहुनु जी हैं। और यह तबसे विषय है। अवतक नेटास दिदिय साम्राज्यका भाग रहेवा (और इसका बारीमहार मेटालपर नहीं ब्रिटेनपर है) तबनक तामारय-तरकार इत बातका आवह रखेगी कि वर्गनवेदायें ऐसे कोई कानून न बनाये जाने को कि साझाउपके सामारण विकास और नामेंकि विरोधी हीं। भारत साधारवदा एक मान है। और साधारव-नरकार तथा भारत-नरकारका संकल्प सम्य सेसारके सामने यह तिह करके रिमनानेश है कि बिटेन भारतवर शातन भारतीबैंकि ही नामके निय पर रहा है। बरि भारतके प्रमे हमसीरी आवादीरो कथ परके उन्हें रहन प्रुवानेके निय् पूछ न दिया का तका तो यह निश्च नहीं हो तरेया। भीर बढ़ बान जन हिस्सोंके नारनीयोंकी देशने बाहर बानेके लिए बहाबा देगर ही रिया या तरता है। जिनेकों म तो यह मक्तिए ही है और न यह उसको इक्छा है कि वह भारतको जाननू आवादीको दिसी जम्म देशपर लाद दे। परन्तु जनने यह जनिकार सदाय है कि मेर्न विद्या लाग्नामके किसी सामग्री जावादीका एक हिस्सा माध्यीम कोर्नेस इनामें तो वह उसी आवादीक किसी हुतरे भारतको उनके प्रदेशक पर बाजा क्या न नगरी दे। और बहुदेतक नेदालका सम्बन्ध है, यहाँदी प्रतिको भारतीय जबहुरोंडी नहुँ मोगके नियु जिठने प्रार्थनाएक बाते हैं जबको देखते हुए कहा या कहना है कि यदि जिलो कारण उनका आला पहीं है कि स्था पता है कि यदि जिलो कारण उनका आला पहीं है विद्या सम्बन्धार दे कारणी करेता अधिक हानि नेदालको ही है विद्या सम्बन्धार दे कारणी १८९७।

यदि नाम सम्में नेता हती विश्वाम पर पहुँचे कि ऐसा करना जान-पत्त हैं तो ने मार्ग तिर मारी दिस्तेवारी कहा सेने प्रति वर्ने उत्तरे के परिशास प्रकारे किए तैयार रहना वाहिए। उसने हत हतावर बीर मार्ग हो पड़ बार्य कि नेताक मार्ग यहां और एहियाहरों को नहीं आगे देग बाहता, एएनु हतने क्या जगीनेदिस्तर किया किये पढ़े हत सारोपने नुस्ति नहीं होगी कि ने सामार्थ के रामार्थिकार व्यवहार करते है? — गैटाक एडवट्टीइस्ट ७ कमार्थी (८५७)

हैं ? — गैटाल एडक्टोइकुए, ७ समर्थी १८९०। हमारा स्थास है कि तसार्थे से हो हमार जादमी कारिया सतकार्थे मार्जे हैं पगर्ने से कृत कम कोई कानूनके बिलाफ काम कार्यके तिस् तैसार होंथे। कनून ऐसा गोई जरिकार गृही बेता जिससे सुतर्यों रखे हुए प्रधियाइसोंको बारस घेवा बा सके जववा नयोंको यहाँ आनेते रोडा बा तके। इसके मतिरिक्त विदिया सोक-सना ऐसे किसी कानुतको स्थोकार नहीं करेगी को कि मारतिस प्रजासिक प्रामानिक पित्र करी कर सामने किसी मारति मारति सामने किसी प्रधास के किसी मारति के बात कुछ विद्यानिक रे पर्यु इसे मुकाय नहीं बा तकता कि वेपिक करतानका संविचानका मून आवार है। क्या किसन की सामने बीर पीनी बातियोंकी प्रतिपायसि बहुत परेसाल हैं। को कीरी बातों हारा प्रियासमानिक सिना तकते कारत सोमने सामने स्वाप की कीर पीनी बातियोंकी स्वता सामने करता है कि वे तस्ते आवी मारति कर रहे हैं ही उसे करीड कारी कीर सहाया सहाया करने में कोई सोम मारति करता है कि वे तस्ते आवी मारति करता है ही वो उसे करीड कर उनकी ठोस सहाया करने में सोई संकोच नहीं करते। — टाइस्स आकृ मेटाल ८ वनवरी १८९७।

प्रधान-वाग्योतनके नेतानीने गुरवारकी तवार्थ वर्गा पिर गर्नार विभावित्त की है। कुछ पावन सीम्यतार्थ तियु वर्गवनीय नहीं थे। वर्षारुवार्थ के भी थी। कुछ पावन सीम्यतार्थ तियु वर्गवनीय नहीं थे। वर्षारुवार्थ के अर्थनेने भी सीम्यतार्थ के स्वार्थ नहीं तिया कैतीस कि वे से सकते थे। वर्गोने भी सीमीक ताव प्रवाहरके समझाने की काश्यत की काश्यत कि तियो के सावनी काश्या के सीम कुछ की काश्या काश्या की काश्या कर कर कि काश्या की काश्या कर कर कि काश्या की काश्या कर कर की काश्या काश्या की काश्या की काश्या की काश्या की काश्या की काश्या की काश्य की काश्या की काश्य क

वर्गमान मान्योतन नरपन्या प्रवाती-निरुप्त (इस्विदेशन वोर्द) हारा भारतीय रारीगरींदी नानेके प्रधानका वरिष्याय है। उनदी स्वातीय वर्दीने पुरस्त बीर वन्युर्वेक निरद्धा थी. यो पराष्ट्र बाद बहुन आने सहीं बड़े सन्दूध गाँची नाइमव
 भीर चन्होंने अलामधिक तथा जलांगत प्रश्नलोंका समर्थन नहीं किया.

286

इतकिए बनकी बनाय-जनाय प्रक्रोंमें निन्दा की गई। साधान्य-तरकार प्रियाहवाँको रोकनेके तिए कोई तीत्र ज्याव करनेको तैयार नहीं हुई-कैयल इस कारण हम उसकी निल्दानशीं कर सकते। हम यह नहीं मुख सकते कि जनी, इस क्षण तक, स्वयं नेटाक-सरकारका उपयोग हमारी स्वार्य-सिक्रिके लिए एसिमाइपॉको महा बुलानेको किया बाता पहा है। एक रक्षील ग्रह वी का सकती है कि पिरिमिडिया भारतीयोंके आनेपर नहीं मापति नहीं यो स्वतन्त्र मारतीयोंके मानेपर की बाती है। वह बिलकुरु कीक है। परन्त स्था लाकान्य-सरकारको और मारत शरकारको गी. मत विकास मही देगा कि हम बह भेद केवल अपने स्वार्थके किए कर पहें हैं ? यह किसी भी प्रकार त्याय-संबद नहीं है कि हम अपने कामके किए भारतीमोंके एक वर्गको सो वहाँ आनेको प्रोत्वाहित करें और बूसरे वर्गका प्रवेश रोक देनेके लिए इस विनापर श्रीख-पूकार मणाय कि, हमारा समाल है उससे हमको पुष्क हानि हो सकती है। — नेटास प्रवर्णाहरू ११ मनवरी १८९७। वर्षनकार्वेकी नीति सम्रिक्ट और कटल-नार है। वहाँ सरकाराँकी समन्त्रित नीति अववा कुरनीतिक विचार-विनित्तय वैसी कोई जीअ नहीं है। साराका सारा नगर बहाल-बाहपर नहेंच आता है और ऐसान कर बेला है कि वदि साम्राज्यकी कुछ प्रमाजींने सरपर असरनेके अपने जसंदित्य अविकारका प्रयोग किया तो हम जनका चून कर वेंगे। अकेने-अकेने ती ये लोग भितन्त्रमी भारतीयोंचे तस्ता माल बरीदनेको वैमार खते हैं, वरण्ड क्रम सब मिल कारों है तब जनने आफ्पर और एक हुसरेनर अनित्नात करते हैं। क्षेत्रकी बात यह है कि जल्बीकनकारियोंकी जापस्तिका जानार ही पकत है। बारतबिक जिकायत आर्थिक है। उत्तरा आबार एक ऐसा क्लूनव है, विसका तिखाल सबकी समझमें नहीं बाहा। उसे हुर करनेका सर्वोत्तम भीर वांतिपूर्व क्यान वह है कि व्यापार-रक्षक तमार्वोका तंत्रवन कर सिया बामें जो कि गिम्तवम मुख्य और अधिकवन पारिभनिकका निश्चन कर वें। अर्थन स्पेनके पूर्वमें नहीं है, इस्लॉकि वह क्रयनन वसी महालोकार्थमें हैं। परन्तु प्रतीत होता है कि हर्यनशक्ते दन सोपॉर्ने से हैं

जिलके बीज वाहबिकको यस बाहाजींका बाहितार ही नहीं है फिर हाहाजाओं कानुगीकी दो बात हो बचा। यहिन्दानि एक हुद्देशर चोहिन्दा वरसाकर पुत्रा करनेका तरीका तथ्य लोगोंका नहीं है। बाँद जीविक वरसाइत्ये तिया जानें बहुत करिन करते हैं तो वानुं करते कम कानुगत्रे हुस्य तो रहुना बाहिन्दा। यह तरीका बंगा करनेते बीर किसी जानोंकनकारी हारा हुआरों जारिनियोंको हमिनार बांसकर सहा हो बानोंके तिम् वकतानेंसे कहीं हातें महाने किस करता न बहु बेसा पत्रक करता है। विरिश्च होतें ति संस्काको व्यापार-नीतिका तीक विरोध किसा करता है, बीर पुन्त-हार व्यापारको बाहबिक्ते असम बार और करिना करता है, बीर पुन्त-हार व्यापारको बाहबिक्ते असम बार और करिना करता है, बीर पुन्त-हार वाहा हो। वर्जनानें स्थानकार बाहने हैं से वन्तें के सम्पान मार्थ आता बाता है। वर्जनानें स्थानकार बाहने हैं से वन्तें के स्थान समी कि वे वनको कानुन-विरोधी कार्यवाहमेंके सह सेने सा नर्ववातिक बायो-करोंको मोत्ताहित करेंगे। — विराधी प्रमुख १२ बनवर्गंट १८६७।

 सम्पूर्भ गाँची अस्वसद

कार्रवाईकी अपेका इवा-वरकीयर सा-मंबाके शरदार की पायसप्तवरण वड़ाईते अधिक मिलता-कुलता है। उपनिवेशी सिरकिरे और पायम हो परे है। उनके साम को सहालुनुति होती। यते उन्होंने बहुत-कुछ को दिना है। हमने सुना 🖁 😭 बिबिस कोग भड़क बायें तो इससे बड़कर उपहुत्सास्बर मीर बुख नहीं हो सकता। रामक हुटके सम्बोर्ने "विचार सीर कार्य बोलों न रहें दो बुराई सिरपर तबार हो बाली है।" यूरोपीम कीप को कार्रवाई इस समय कर रहे हैं उससे निजाबोह वे मपने ही कार्यसे हानि कर रहे हैं। — मीडानिसकों टाइम्स

नेदानमें भारतीयोंके प्रवेष्ठका विरोध किती भी क्यमें भी चेम्बरलेनके कार्यकालको सबसे कन महत्वको घटना नहीं है। इसका प्रमाद इतने अविक लोनॉपर पड़ता है और पेड बिडेनका सम्बन्ध इसके साथ इतना वनिष्ठ है कि ग्रह कहना सत्पृष्टित न होया कि उनके सामने इस करनेके लिए नवत्त्व को समस्याएँ बाई है जनमें यह सबसे कविन है। वर्गनमें पीके हुए प्रवेद्याची जत विशास जनताने प्रतिनिधि है को यह विश्वास करनेकी सभ्यासी बनाई जा चुटी है कि हुआरे एसक और शोधक वही लोग है की कि सब हमारे सावियोंको एक नये देशमें कर रसने देनेले दनकार कर रहे है। बारत-मृश्विको यह बारतेरे किए प्रोत्साहित किया जाता रहा है कि बह साम्राज्यकी यस प्रिय पन्नी है और दिशिय बाइसरायोके तरेंनी मातनमें रहरूर वसे अपनी स्वतन्त्रताका दादा इत प्रकार करनेका अस्पाती बनाया का चुका है कि वह अधिक्रित पूर्वी सीगोंके किए सेंड्रतमान नहीं है। यह विकार मनतमें व्यवहार्य तिक नहीं हुना। जारतीय कोपॉको वही बुलावा तो इसकिए पवा था कि वे वैद्यही सबद बतानेमें उपनिवेदियोंनी त्रहायना करेंगे परस्तु सब वे अपने मितान्यवी स्वजाबके कारच स्थानारमें मधंबर प्रतित्वर्षी बन बैठे हैं। वे यहाँ बतरर स्वयं उत्पादक वन नवे हैं और अब बह दर हो एहा है कि दे नहीं अपने पुराने नासियरो माश्रारमे निकास ही न हैं। इसकिए भी चेन्वरसंनके सामने को समस्या

र मोरिम-इस बाम निवन्तीर सबढ दुराध्वा प्रकृत वाव को बवायवरीकी राता बावस्य स्वयं नार्त नाता है।

वर्गास्त्रत है, बसे इस करना पुनन नहीं है। नैतिक दुम्पिसे भी बेम्बरसेनको सार्ग्यायोके पत्तको स्थाप्त्रताका समर्थन करना ही प्रवेश मार्थिक दुम्पिसे वर्ष्ट्रे वर्षामेशीसपोका साना नाजिब मार्कना पढ़ेगा मोर्थ राजनैतिक दुम्पिसे स्थिती भी नमुम्पके किए यह निश्चम करना कटिन है कि वह किशका बाबा मार्थ करे। — स्टार, बोहानिसमर्थ कमनपी, १८९७।

गुस्तारको तीलरे पहर क्वकि कारण जो लावेंजनिक लगा जारूँड स्क्वेयरके बदते टाउन-हालमें हुई थी असमें प्रपत्नित अववा उरहात्ती कोई क्यी नहीं थी। बाउन-हाकर्ने क्येंनके सभी वर्गेक क्रोग मीजूद में। सक्कर और ऐडोबर कोच कन्मेले कन्या मोडकर बैठे में। इससे प्रकर हो रहा वा कि कनताके सभी बर्गीमें ऐकमस्य है और वे प्रपतिवेशको एश्चिमाइयोंसे पार देनेके संपठित प्रयत्नका किरोब करनेके तिए बहसंकरूप है। भी पांगीने यह समक्रकर भारी भूत की है कि अब मैं अपने देखनासिबोंनी प्रतिनात एकते दो हवार तकती संस्थामें यहाँ नेवानेके किए कोई स्वतन्त्र एकेन्सी भारतमें संबद्धित करता हुँगा, यस समय महकि मुरोपीय क्यकार बैठे रहेंगे। जन्होंने यदि यह समझ किया है कि बरोनीय लोग ऐसी किसी मोखनापर विना फिसी विरोधके अनक होने वेंगे ती चन्होंने मुरोरीय स्वमायको सन्तरानेमें बुरी तरह मूल की है। मुम्होंने अपनी तनाम बतुराईके बावजुद यह श्रीक्रमीय भूत कर बाती है। और यह मूल ऐसी है कि इसके कारण जनका सीचा हुआ समय निरंचय ही पूर्णत: विकल हो बायना । वे मूल गये है कि यहाँकी प्रमुख प्रधातक बारिके नाते हमारे क्रमर एक बड़ी जिस्मेवारी है। हजारे दूरवॉने इस देखको ससवारके बक्तपर बीता या और ने इसे हुनारे लिए चन्नतिक मनिकार तथा विरा-सतके रूपर्ने छोड़ गमें हैं। यह कम्नतिक स्विकार जिस सरह हवारे हाथोंने आया है, यती तरह हमें इसे अपने बेटों और वेटियोंको उनके अन्तासिद्ध अधिकारके क्यानें सींप वेना है। हुनें यह आपवाद समस्त विविध और बरोनीय ब्रातियोंके किए बंबपरम्परागत करमें निकी है, और यहि हकते इस सुम्बर मुनियर ऐसे सोगोंका अधिकार ही बाने दिया को कि अपने रक्त, स्वनाव परामराजों, वर्ग और राष्ट्रीय जीवनकी जेतनून प्रत्येक बातमें इससे निम्न है तो हम अपनी विरासतके प्रति सबबे सिद्ध गरी हो एक सम्पूर्व वांची वाहम्ब चक्की। इस देक्के मूल निवासियोंके हिलाँका राजक होनेके नाते भी हुना सिर एक भारी विस्मेवारी है। लेककके जावा करोड़ काली कोप वो

मारमीको उसी वृध्यते वेकते हैं कितने कि बेटा बारको वेकता है जी इतकिए स्थापका तकाका है कि बीट कुछ नहीं तो हमें कल-ऐ-कम नैटाला

282

वतिनयंकि इस धविकारकी यवास्त्रित रक्षा करनी वाहिए कि वपविवेश नमपूरी करनेका बायन मधिकार उन्होंका है। उनके मसिरिका भारतीय भी हैं जो उपनिवेशमें बहुड़े ही बत चुने हैं। इसमें से अधिकारण हम ही यहाँ आये वे और इसकिए हमारा कर्तव्य है कि हम देखें कि वे ऐसे किन्हीं करिनाइयों और शानिबॉके सिकार न हो बायें को कि यनके देश वासियोंकी पत्रों बाद वा वालेके कारब प्रत्यस हो कार्येंसे और जिले कारच उनके लिए ईमानदारीले बाचीविका कमा तकना कठिन हो बामेवा इस समय इस अपनिवेशमें कमसे कम प्रवास हजार मारतीय मीजू है। वे पहाँकी आवस्पकतानोंके किए बहुत काफी है। उनकी संक्य मुरोपीमोंते भी अधिक है। इस सम्बन्धमें सरकारके दक्की मुस्तारक चमार्ने भी नाइलीने वड़ी योग्यताचे चमका दिया ना । वा मैकेंबीने कहा ना कि मुझे सरकारकी कार्रवाहिते पूरा-पूरा सन्तोव है और प्रदर्धन-समितिके और सब सदस्य भी भेरे सनान है सम्बुद्ध है। इत प्रदेशको ताब सबके तहबत होतैके कारब पूरी आधा है 🏁 यह प्रदर्धन पूरे-पूरे अर्थमें प्रांत रहेगा । इसका उपयोग नारतीयोंके नियु एक वदार्वपाठका भेता होना चाडिए कि इत उपनिवेशके की हार उनके निय इतने समयसे जुले हुए ने वे जब बन्द होनेवाले हैं और इतसिए वर्षे कारिए कि वे जबतकरी तरह आरहमें वर्तमान अपने मित्रों और नातेशरों हो यहाँ जानेके किए प्रेरित करनेका प्रयत्न न करें। यह प्रदर्शनको भनी जाँति कामुमें रखा पमा भीर नेताओंने को कार्यकन रखा है उसे अभी प्रकार पुरा किया गया तो वह अपने अल्पों हानिकारक नहीं हो सकता। चैता

हि हुन बहुने बता चुने हैं समस्या देवल हतनी है कि ओड़को गुपमतातें शिक्तकर्म नहीं एका का सफता बीर इससिए मेहालॉकी जिन्नोती विचेट हैं। वरणु मेहालॉको यह नियमक रत सकनेको अपनी सोम्मतानी विकार मामुक बहुता है, बीर दें कररायहुर कारेके करने कार्यक्रमणे हुरी करनेके निरुवयंवर बुढ़ है। यदि सब कुछ असी प्रकार निम गया तो इस प्रदर्भमसे सरकारको बहुत अभिक नैतिक वक प्राप्त हो जानेया। इससे यह भी प्रकट ही बायेगा कि सीय इस माम्बोक्तका साम हरवसे वे रहे हैं। थी बाइलीका यह करन विलक्षक सत्य वा कि हमारे हायमें को धन्ति है उत्तका हुमें प्रशान तो करना चाहिए, परन्तु तकतता उन्हीं छोगोंकी हो सकती है को यस प्रक्रिका प्रयोग उसका हुक्स्योग किये दिना कर सकें। इसकिए हम कानून और समन-अमानको पूरी तरह बनाये रक्तनेकी शाबद्यकतापर जितना जो ओर वें बतना ही बोड़ा है। अस्तिम सफनता इस बातवर भी क्तनी ही निर्भर करती है क्तिनी मन्य किसी मातपर। मीर इमें विश्वात है कि प्रदर्धनके नेताओं में इतनी समझ तुम-बूम भीर बुद्धि इ कि वे अपने अनुवादियोंकि बत्ताहुको विवेकका प्रस्थित नहीं करने वेंथे। — मेटाल मक्पेरी ९ बनवरी १८९०। यत बळवारेने दर्बनमें "कुरलंड" और "नावरी" बहाजोंके भारतीय

माबियोंको कराने और करानेते रोक्नेके सिय को कुछ कहा और किया बा बढ़ा है उसके पश्चातु भी ईमानदारीने यह नामना पहता है कि प्रदर्शनका अन्य तरबाजनक रहा। यद्यपि प्रदर्शनके नैता अपनी हारको स्वनावतः भीतका दावा करके क्रिपानेका प्रयत्न कर रहे हैं तौ भी मह सारा शास्त्र बहुतिक इसके मूल और घोषित जहैंस्पका सम्बन्ध है, पूरी सद्ध अस्पत्त तिक हुआ है। उद्देश यह बा -- और इसते क्या या क्यादा कुछ नहीं --कि इन दोनों जहाजेंकि भारतीय वाजिबोंको नेटालको भूनिका स्पर्ध किये विना एकरण भारत सीटनके लिए बाल्य कर दिया जाते। यह पुरा नहीं हुना। अर्तमान करनून किसी भी देशसे मानेदाले लोगॉसी यहाँ प्रदेशकी की इजातत देने है जलके नैटालके लीम अक्त्यान ही अपनी किती मुर्वतापूर्व कार्रवाई हारा हालसेप नहीं कर तकते। सम्मद है कि हानमें मो प्रदर्भन नारतसे मापे हुए सौगॅरि विषद घड़ा दिया गया वा वह उन्हें करानेने तकत हो बाता, परन्तु बतके पत्वात् भी ऐसी चौई बात हानित न होती जिसपर प्रश्नीतराधी सबमुख अजिमान कर त्तरते। यदि अन्तराय कुनियोंका घोडा-ना क्त वहाँ वने हुए यूरीकीयों इत्ता, जिन्हें चौचते-बिस्तारे वाचिरीके वक विरोहरी सहायता प्राप्त ची, १४४ छन्दुर्व संबी बावन्तः पीने वालेके नयले लीट यी बाता तो यी यह बीत घोषणीम ही होती। करकिरोंकी यह स्थापना उन्हें केवल इस कारच प्राप्त हुएँ वी कि करियर

तौ अपने प्रतिस्पर्यो कुलियोंके प्रति अपनी अप्रीति प्रयक्तित करनेका अक्तर पाकर सुध-सुरा हो यसे थे। इत प्रवर्धनका अन्त वैद्या हवा यह यहते

सच्छा हुसा। पुरवारको वर्षवर्षे हुई घटनासीका शोधनीस पहुल किंदे ज्य बा कि सी गांधीपर बालमान दिया पया। बहु ठीक है कि तेवलके बोत उनते इस कारण बहुत नाराज है कि उन्होंने एक पुरितका प्रकारित करके उनमें उनकर चिरानिस्था नारतीयोंके सान सुर्ध्यकार करके नारिक कर्मया था। हमने यह पुरितका देवों नहीं है वरन्तु पदि इक्से नेठानिस्पेके तारे सामान्यर बालीव किंदो गये हैं तो के निरावर्ग है। किर भी इन्से तमें साह साह करते हैं कि साह के स्वाप्त है। क्या पह नुक्सोने प्रकार हो नथा वा कि कससे कम यही एक कायावरण अध्यत हुए व्यावहार

जराहरण पाँचत हो चुके हैं और इसिलए एक धिलित बारतीयके नारे परि भी पांची भएने देशवासियोंके साथ ऐसे दुर्ध्यवहारले कुढ होकर जतका कुछ उचाय करना चाहते हैं तो उन्हें देश नहीं दिया बा सकता। क्रांतरक

की यांपीपर बावनका तानाव है वह नोहके तिन्हीं तानातित व्यक्तियों हारा किया गया नहीं बात बहुता। वरणू किर की वह कर्तिया है कि जिन नवपुक्ति से तोनोको बायक करनेका सक विधा में हर प्रश्तिक हिम्मेवार लेक्टबक्तीजिक नत्तरंत भारतिक कारण है जाक हुए वै। यो गांधी कोई बड़ी कोट बाये दिना और सायद वयनी बात कोनेते में क्य मये यह पुनिक्ति बुत्तरीका ही कम बा। वरणू दक्तिन मार्किन हत तत्त्रय एक परिकर्तनको अवक्षाने पुनर रहा है। यतका उन्हें नातक सर्वान एक परिकर्तनको अवक्षाने पुनर रहा है। यतका उन्हें नातक सर्वान एक परिकर्तनको अवक्षाने पुनर रहा है। यतका उन्हें नातक सर्वान एक पिक्रु-नान है। यह तारा देस मार्नो मण्डे कड़क्यपर्थ है और कड़क्यों अवने अवकृतिक कैतारा सारीहिक वतके कुन्ते प्रयोगके जारा करनेका सौक होता है है। हम दुस्तिने देशा मार्ये हो हमें क्या है। करनेका परिकर्ण करने हम करने हम

वर्ग अस्पन्त महिल राजनीतिक और आर्विक तमायाजींका को हैवल मेडालके लिए ही मही, बरिक इंग्लंड, भारत, और समस्त वशिल आफिरार्टे निया महत्त्वपूर्ण है अन्तिम हत निकासनेमें तहावता मिनमेकी अपेक्षा बाबा ही पहती है। — स्टान्ट, बोहानिसवर्ण बनवरी १८९७।

भारतीयोंके साथ ब्यापार करनेका चलन वन कोरोंपर है तब "नाइरी" और "क्रतंड" के कुछ ती पात्रियोंको उत्तरनेसे रोक्नेका स्था कायदा ? कई वर्षकी बात है कि कब की स्टेटमें संतद (कीनाराठ) है बर्तमान कानुनपर अनल सुरू नहीं हुआ वा तब हैरीस्मियमें भरव लोगोंने अपनी इकार्ने सोली भी और वे परानी सभी हुई इकार्नोंके मुकाबलेंमें एकवम ३ प्रतिशत कम मृत्यपर माल बेचने लगे थे। बीजर लीग रंगके विद्यु सबसे अविक शोर मचाते हैं और उन्होंकी इन अरवैंके पात नीड़ पहली थी। वे तिकालाकी हो लिग्दा करते वे परम्यू नका बाते हुए उन्हें संकोच नहीं होता ना। बाज नेटातमें भी बहुत कुछ बड़ी हात है। पात्रियों म तीहारी बदृश्यों कारपूर्वों और काराबानेदातीके होनेकी बात नुनकर 'मजबूर समाज' नड्ड यमा और निक्तानेह बतका समर्थन यम तीयोंने किया जिल्हें सर्वध्यापक हिन्दुके बदावका बीवनके अन्य क्षेत्रोंमें अनुभव हो रहा था। परस्तु इनमें से कितीको भी सापर इस बातका स्मान भही था कि वे स्वयं भारतकै क्रावित नजरूरोंडा प्यान वेडातकी ओर आहुन्द राजेंगें सहायक बने हुए है। को सहित्रयाँ कल और नहस्तियां नेटासमें भीजनको मेडोंटी शान बड़ाती है जन सबसे दूनी ही बोर्त वकड़ने और बेक्ने हैं। इस्तरस्वानॉस्ट कोई और कुती थोता है। प्रायद मेहनानॉस्टो भारत गरोत्तरेका भार भी पुत्ती हमूरिया ही करता है और वे पुत्ती रतोइयाका ही बनाया हुना साना याने हैं। नेडार्तियोंको साहिए कि वे ऐसे परस्पर-विरोधी काम न करें। उन्हें चाहिए कि वे कृतियोंके स्थानवर पर्ते नपनी मातिके परीच नोपोंने कान सेना गुरू करें और इन तरह बारतीय सीगोंडी निरासनेरा आरम्ब करें. और निरोधक कान्य बनानेका काम अपने निर्वाचित प्रतिनिधियोंके लिए छोड़ थें। जननक नेतान एमिनाइपेंके निए इन बकार स्ट्रनेका धन-नावना स्वान बना रहेवा और बदतक मेरालवाले काले लोगोंकी सानी अवदृत्योंने बडी संस्थाने सान उदाने रहेंथे, तबनक उनके बड़ी जानकनको विना कालम बनाये ही, इयाउसी *** सम्पूथ गोधी बाइसद न्याश वटा देनेका काम यदि अकस्पित रूपसे असम्भव नहीं हो करिन नवस्य रहेमा। -ही ऐस स्यक्त बनवरी १८९७। मारतीय प्रवेकावियोकि उत्तरनेके विकास को प्रवर्शन किया गया करने इतनी बात सबके किए भनी हुई कि डा भीडेंडीकी इलेंबक बनोबाबी बौर भी स्पार्श्स तथा उनके नमें चेंचे दैन टेकरकी अञ्चीनी विकरा-कडियोंनर नेटासके नेक क्यनिवेश उग्रके परेश्वल निवासियों या श्रृप्तनिवित "कुकियों" पर हवाके वृत्तवृत्तींसे अधिक कोई ससर नहीं हुआ। अपने मृह आप देशमध्य कननेवाले इस इविकारपूर्व प्रदर्शनके संगठनक्टाजिने करन हो किया वा रोमन विद्यवस्था नाटक सेलगेका परन्तु धनकी तलबारते मीत धनकी भपनी ही हो नई। तौज्ञान्यक्त अविक वस्भीर बता कोई नहीं हुई, वरन्तु जिन्होंने जीपोंसे इक्ट्छ होने और ऐसा सर्ववानिक काम कर नुबरवैकी अपीत करनेकी जिम्मोदारी अपने शिर की वी उनकी मुर्बाश कर्वनकी नीडकी अस्तिम कार्रवाहबाँते जैसी प्रकट हुई वैसी इस समाम इस्ते-पुस्तेनें मन्य किसी समय नहीं हुई : बन इस बीइका कुली प्रवेशावियोंकी प्रतरनेसे रोकनेका प्रयत्न बसफल हो नया और बब इतने देख किया कि हमारा प्रदर्शन डॉक-डॉय-फिस्स रह नया है, तब यह बिड़ पई, मीर भोग तथा अपमानके भारे इतका सारा प्यान एक बारतीय बैरिस्टर भी पांचीपर केरियत हो यथा। उनका शक्ते बड़ा अपराच नेवालमालॉकी नजरमें बह ना कि उन्होंने अपने देशवादिवाँकि भागतींने पृथि ती और रवेच्छाते विजय जाडिकाके भारतीयोकि वकीलकी मुनिका असता सी।

महातक तो प्रदर्शनसे कोई डानि नडीं हुई और क्रमध तसना कितनतके मक स्वानते की का सकती थी। परन्तु जब की यांची दिला किसी दिसानेने पतरकर, एक अंबेज सांतिसिटर भी लॉटनके साथ चुपचाप ध्रहरमें बले भा रहे ने तद हातालने एकश्म अंपनी क्य कारण कर तिया। हम न तो पत्तिम आधिकाके भारतीयोंका पत सेना और न भी गांबीकी

पुल्लियोंका समर्थन करना चाहते हैं। परन्तु इन तम्बनकी की छोक्नीय पुर्वति को नई वह कलंकनय और निन्तनीय है। कुछ सिर-फिरे लोगोंनी

हु-हा करती हुई भीड़ने औं नांगीको ग्रेर तिया, चर्न्हें करतों और मुक्कीका नियाना बनानेकी कमीती हरकत की नहीं और उनकर कीवड़ और तड़ी: गती महातियाँ केंद्री बईं। एक मानारा बारमीने कर्हे घोड़ेके जानुकते बारा और प्रते प्रत्ये प्रवही प्रदान दी। हमें मानुब हुमा है कि पत आक्रमलके कारल वे "बहुत कहु-सहात हो गये और प्रतकी गरवनसे जून बहुने लगा।" जन्तमें वे पुलिसको रकामें एक पारशी की दूकावर्में ले जाये यमे। उस इमारतकी रक्षा नगरकी पुलित करने क्यी। जनामें के भारतीय वैरिस्टर वेश वश्तकर वहाँते निकल गर्मे और इस सरह कर्त्होंने अपनी रक्ता की । नेशक, जवाकी भीड़के लिए तो यह एक बड़ा तमासा ना परन्तु इसे यदि कान्त्र और अमन-अमानके अनुकाँछे न भी देखा जाये ही भी बब अंग्रेज एक दिना सुजा पामे स्वतन्त्र व्यक्तिके साव ऐसा बतुरजनोजित और पाताका स्पवहार करनेवर बताक हो वार्ये तब समजना वाहिए कि वर्वनमें स्थाय तथा शीक्तियकी विविध भावनाका निन्वय ही इत यतिले लीप होने लया है। नैहातवालोंने यह मारपीद "बिटेनके शानदार नाधित देश" -- भारतके एक जनावनपर की है, और भारतकी निविश रावमकुरका करन्यनतम निम नहा बाता है। इस्तिय ब्रिटेन और नारतंत्री सरकार इस मटनाकी सरकते प्रशासीन नहीं रह सकेंगी। --- सी*डानिसबर्गे टाइम्च* जनवरी, १८९७।

वर्षनके भीग अपनी शिनामानोंको वहा-बहाकर प्रकब करना बाहुने हैं और बैसा करने सिए पन्होंने उराजे-साकानेके दिन नामुक्तियोंने गौरिरोंनो जरनाया वननी नवाई पह नहकर में वा एने हैं कि भी दिन सब्दानें वह गये थे वे आपना महत्त्वपूर्व थे और अवनक इन सरीजोंने परिमाय सन्द्री निकते हैं। यहाँच चरानेलेक्सों पूछ अपने भोगोंनी ऐसा नाग रहा है कि सानको जीवनार प्रस्तेन-आयोगनको नेनामोंनो सीच सिये पत्रे वे वस्तु जायोगनमा संवासन और नियमक शुक्ते आधिर सक, बुनवार और दिना दिनावें साह में नियमके प्रातक नोप हो कर रहे थे। — मेटाइस स्मार्थीय १४ कनकी १८९७।

रमणी विभिन्ने प्रवर्धन नवस एट्। ऐसा विभाग निरा वस्त्र होता । भग वन्दरगाज्यर की व्यास्पानवाजी हुई उनवी जावाज सार्वजनिक समाजीक

र एक कराचि को कलायों को चानी सम्बद्धी शाली बरिन्द है।

९४८ छन्त्रं ग्रेणी शहसर स्थारमानोंके स्वरते बहुत निम्न वी। उत्त सबसे यह तवार्ष क्रिण गर्हे

तकती कि प्रदर्शनका मूल उद्देश्य सर्यान् दोशों बहाओंपर के यात्रियोंकी

उत्तरनेते रोकना सिक्क नहीं हुआ और जितना सिक्क हुआ बतना अन्य जपामींसे भी हो सकता था। हम सवाते यही कहते आने हैं। हम जानना चाहरी है कि कलकी कार्रवाइमेंसे मिला नया? श्रीव यह कहा कार्य कि जनसे एग्रियाई आक्रमचको रोकनेकी आक्रमकता का महत्त्व मॉर्ट पादित ही गया तो हमारा कवाब यह है कि उसका प्रतिपादन तो उत्तरे हैं। वलपूर्वक सार्वजनिक समाजीते भी हो चुका वा। और शिवपर इतका समर्थन सभी करते हैं। यदि कोई यह तर्क करे कि उनसे अच्छ हो यथा कि सौय विकते क्या कहते है तो हम इतते तहमत नहीं हो सकते. क्योंकि कोग तरकारके प्रतिनिधिशे बही बाध्यायन मुनकर बापल लौड बसे जो वतने एक प्रचाह बहुले ही दे विया जा। तब सरकारने बचन दिया जा कि बहु इस समस्याका इस करनेके किए कानून बनायेगी। कम भी भी एरकम्बने इसी अस्पालनको बृहराबा, और इसले सविक कोई वक्षन गर्ही दिया । न ती उन्होंने संतरका विद्याप अधिवेदान बुकानेकी बात कड़ी और न भारतीय वानियाँको सीटा देनेका क्वन दिया। अब श्रामितिने बीयका की है कि यह सारा मामका सरकारके बावनें क्षोड डेनेके किए तैमार है। ऐता करनेके किए को कारण एक सप्ताह चहुने ने उत्तते निक्क जब कोई नहीं है--- और प्रदर्शनका घोषित नक्य भी नक्तक अपूर्व ही पड़ा है। इसमें आक्ष्यांकी बात कुछ नहीं कि बहुतते लीप इस सारे यावलेकी निर्ध बाय-बाय-फिस्स --- बन्दर-बुड़की -- कहते है और ऐसा विस्ताल प्रकट करते हैं कि जब परि ऐता ही कोई और प्रवर्धन किया पता तो वर्षनके कीय बचमें धानिक होनेको सैयार नहीं हुँवे। सप्ताइ सरकारने अपने कर्तव्य और अधिकार विश्व प्रकार समितिके इकने क्रोड़ दिने में मह इतना मसामारम मा कि बतते थत सम्बेह हुए विना नहीं रह सकता कि यह सब नायक पहुंचेते रचा हुआ था। बहुतिक इस

प्रमाणा राम्मण्य है, यह स्थानिकांचित समिति आसी आपको माणानी सरकार ही पत्रजाने सभी थी। यह बहाजीके आवासमाच्या निरम्भण करने सभी और जिन स्थानिकाँको उत्तके बराजीके समान ही वहीं स्वीरण अधिकार वा बनको भी महाँ बतरनेकी "इजाजत" देने समी मा देनेते इनकार करने सभी थी। उसका इराहा बहुतिक था कि वह "डेनपेस्ड" नीतिपर क्रमेगी और उसके किए कोवॉर्स बन बमुझ करेगी। इस सारे समय सरकार चपचाप बेसती रही उसने पात्रियोंकी रसाने सिए कुछ नहीं किया और केवल रस्मी प्रतिवाद करके सन्ते कर्तव्यकी इतिथी समझ सी। वन हम इत विवादमें पड़ना नहीं चाहते कि समितिका इस मार्थवर बक्रना पश्चित वा या नहीं। उसका क्रयान है कि जबित था परन्तु इससे इस सवाईका बारबन गडौँ होता कि उक्तने मानने व्यवहार हारा कानुनके विकट्टन विकास, सरकारका स्थान पहुंच कर तिया था। देर तक सम्बी-पीड़ी वातबीत बनती ग्रही। यस बीच जनताको निरन्तर महकामा बाता ग्रहा। बाबिए विमन बजा, और सारा क्वेंन चठकर और करने या मरनेके किए तैयार होकर "बन्दरपद" की तरफ प्रमड पड़ा। और तन अकस्मात ही ऐंग मौकेपद महान्यामकाकी महोदम "प्रांत-कम्मीर मार्की उपन पढ़ें" और कोपॉकी मनेनानत बननेटी सकाड़ देने कमे। उन्होंने नोपॉको बादवासन दिया कि बी कुछ करना ककरी होगा ने सब कर्षेगा आप "बन्ती नजर अपने एस्कम्बन्द रखिए और वह बावको नार बतार देना।" त्तमितिने भोषणा की कि अतका इरामा कमी भी बरकारके विश्व कुछ करनेका नहीं वा और वह सारा मामला सरकारके क्षावमें कोड़नेकी वितकुल रीयार है। वस समाधीका प्रयन्धीय होने समा---वारों और मामीर्पाद बचन मूंब चडे। तब कोम सुध-सुदा बक्ते घरोंडो सीट नमे। प्रवर्धनकारी निवनी फुर्नीते एकन हुए में जवनी ही करनी विकार करें। और सब जित भारतीयोंको भक्ता दिया पदा में अपनाप तहपर उतर आहे माली कमी कोई प्रवर्शन हुना ही नहीं था। इस सबके बाद बीन यह सब्बेड फिये बिना रह सकता है कि सारा मानना पहतेसे एका इसा और वाना-नाना वा ? "क्रालैंड" के कप्तापने पावेंके ताच थड़ा है कि शमिदिने मुझे विश्वास विसामा ना कि वह तरकारकी तरफते काम कर रही है। यह भी क्लानावा गया

र जिनकार्रशाणे माकालकारिशको यह देवर कीटा देवे वा बलते रक्षाके निव विदेश कलतान्त नवावा करेनाच्य कर ।

सन्पूर्ण गाँवी वात्रमन है कि समिति जो-कुछ कर रही की जल सबको सरकार जानती और

पसन्द करती थी। ये बयान यदि सब हों तो इनते सरकार या समितिकी

हैंमानवारीपर पन्नीर बाक्षेप होता है। यदि समितिको सरकारकी स्वीहति प्राप्त भी तो इतका मततब है कि सरकार दोर्गुहा खेल खेल रही थी। पत्तने जिन कार्रवादयोंको अन्ते प्रकाशित पत्तरमें नापसन्त किया ^{का} प्रमृक्ति वह मीतर-मीतर बहाबा वे रही थी। अनर से बयान सही ^{सही} हैं तो बोर्मुही चालका आरोप तमितिके सिर मना चालेगा। अस ^{हम} वयालॉपर विस्थात करना नहीं बाहते क्योंकि किसी नी बड़े सम्पनी पूर्ति ऐसे क्यावाँते नहीं हुना करती। — नैटाक यहपर्याहकर १४ प्रतक्ती १८९७। इसने कक "क्रतेड"के कप्तानके नाम प्रदर्शन-समितिका की पत्र प्रकाशिक किया का उत्तरे इस आरोपका समर्थन नहीं होता कि समितिने मुठ-मुठ ही ऐसा प्रस्क कर दिया वा कि वह सरकारकी सरकते कान कर रही है। परन्तु इस पनवी को ध्वति है बीर इसमें नहाम्यानवारीका जिक विश्व प्रकार किया गया है प्रसारे वैता समग्र केलेके किय कप्तालको मी बीची नहीं माना था सकता । परन्तु क्रम नवमें बहु बूसरा सन्देह ही जानेकी र्गुबाइस मीजूर है कि, कानुक-विद्येजी कार्रवाहर्योक विकास सरकारकी को जैतलनियाँ प्रकासित हुई उनके वासकूर नमको तौरपर सरकारने तमितिके साम गठवानम कर रक्षा या। इत पत्रके अनुसार महान्यायमानी पक्त सो यह मान किया का कि नारतीयोंको क्यनियेक्टो नवार ही रोक देनेका कानुनी क्याम कोई नहीं है, परन्तु पीछे से महरीक माने नह

चित्र प्रकार फिला पता है प्रसार वैका समा केलेक किए करालको में
वीली नहीं नामा बा सकता। परानु कर वसमें यह सुरार समेह ही बालेको
वीली नहीं नामा बा सकता। परानु कर वसमें यह सुरार समेह ही बालेको
को केरावाधियाँ प्रकाशिक हुई उनके बावजूद जमको सीरपर सरकारणे
को केरावाधियाँ प्रकाशिक कर रक्षा वा। इस उनके प्रमुदार प्रकाशिको
वाद्य सिंग पद्म मान किया वा कि नारातिकोठी क्यानिकोठी बाद्य सी
रोक बेनेका कानूनी क्याम कोई नहीं है, परानु तीके वे स्पृत्तिक बाने की
यो कि जानूनी पूक ऐसी संचाले बहुने सिंग किए कानूनी सामि हुक
नहीं नी जीर को करानी-कान्याके किए कानून-विकास वामार्थिक व्याप्ति
के रही की बाये हुए कोरोको नेता विकास करान करकेशे नीति सिमार्थिक
किए बानताके बानका संकास कर दिया। इस पत्रको कान्यते सिमार्थिक
क्यानी कार्य स्थापिकी कान्य स्थाप विकास कार्य है। वस व्य साम बड़ी बजी तब प्रसार किया नाम और ऐस सीकेपर स्थापनावस्ता सामस बड़ी बजी तब प्रसार किया नाम और ऐस सीकेपर स्थापनावस्ता सामस बड़ी बजी तब प्रसार दिवा नाम और ऐस सीकेपर स्थापनावस्ता सामस बड़ी वसी तब प्रसार दिवा नाम और ऐस सीकेपर स्थापनावस्ता वस समाहकी सब पाने-वाजी कवायर और विश्वक-वाजीके बार मी वर्तनोंद्र मार्थी क्षांत्र मार्थी क्षांत्र मार्थी कर सके — हो, यदि जस न बहुने तायक पार्थीकी अधिवार सहे हुए आनुका नियाना वीवना कोंद्र मेंद्र से मार्थिक साथक स्थान है। भी का नियाना वीवना कोंद्र मेंद्र म

प्रस्तेनमें कुछ सी कांकिरींका वस्ता नयीं शामिल का, इस बातकी सक्तक नहीं हुँ है। इसका मतनक बगा यह का कि पोरे और पतनी कोंकिश जम एक ही हूँ ? बरना यह कीर फिन काराजी निधानी की ? एक बातने तोकराजी सर्वतमांति है। तोपीने को परिवास किया है, बहु कीर हो सक्तरा है, बरना वहाँ यह किया तक तो नहीं होगा कि सारा मानका सरकार और इस जब्दुन आकोनक के नेताकी काराजी स्वयंग्रित सीमीत इसमें सरकार बहुँ हो तकी। इस बुछ नाइकीय हुककेपनते हो पया। मीनवर्गीक एक ऐसी सीमीतिको कपने निवास हो परियो सिमातिकार एक ऐसी सामा वा कि बहु करनारों प्रतिनिधित है। उनका बहुना वा कि वृत्त हुछ नी करों नयर वैचानिक इंग्लो करों। यह सम्बोध सन तक पहुँचा दिया सथा, और वैधानिक कार्यार्थिक कार्यार्थिक सामा की स्वयंग्रित कार्यों के सीमित कार्यों की सामा कि सामा की स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्रित कार्यों कार्यों कार्यों कराया स्वयंग्रित कार्यार्थिक सामा कि स्वयंग्रित स्वयंग्य स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्य स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्य स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्यंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्वयंग्रित स्

हरतकोप नहीं करेंथे। जन्होंने कह सिया वा कि हम तिखें वर्णात नार्वे वार्षेने सौर उसते कह देंचे कि हमें पर-पारके मुक्त कर सैनिए। समितिने सर्वेना वैजानिक विविद्ये मीड़ इक्स्ट्री की जनमें करती कोपीमें

समर्वे गोपी गळक

भी धारिमक किया और यह कुछ विश्विध प्रशानोंको एक विशिव कपिनेकर्ते कतरनेसे नकपूर्वक रोकनेके किए निकल नहीं। इस मोहक नामकर्त्र जीतमा स्रेक वनस्रपाधूनर खेका नता। उससे तमितिने करने जीवन्ता स्था एक्समक्के जाता स्थादा क्ये सरकारको किर मीतिक्वत कर दियो एका और मायेक ध्यक्ति सम्मुख्य होकर घर कीठ गया। धार्मितने प्रधारि बबाई-नयह मुंदुकी बानी पड़ी किर भी उपका दाया है हि

444

नैतिक बीत जतीकी हुई। क्योंक्व तो जल्मी "एक ही मुनिका" वर त्राचता रहा। जीर नारतीयाँको पदिप उत्तरनेवी इवाकत विक्कृत नहीं दी जलेशानी पी, किर जी में नीड़के केंग्री ही एक-ताच जतर वर्ष। — नेटाक विटानेंस कावती १८९७। भी नाइबीने उर्वत्रती सतामें को कुछ भी एस्टम्य हारा विद्यास्त्रकों कहा पदा कलस्या वर, पत्रते इतकारीको तो बात ही क्या उसके किती हिस्तेका जिल तक नहीं किया गया। इतिलए यह कल निर्मिण रण्ड

मीजूब है कि मनिवर्धीन निश्चय कर किया वा कि उर्वेननें तनिक भी वंग हुना तो भीड़का राज ही तर्वोधीर रहेगा। "हम यवर्तरले काकर कह वेवें कि प्रातानका मुक्त कापको जरूने हार्वोसें क्षेत्रा होया।" तब पानते हैं कि नयें

आप जुनाब बन्धी हो होनेवाले हैं। चराजु बह् कितीने भी नहीं तीचा होगा कि कोई वरिकारंटर केवल कोगोंके स्ता प्रस्त कारोके लिए प्राने गीचे चरत नावचा कि किसी वहे सहरकी जनतावने कलून गोज़रेने साजसी है हैं। — मेदाल जिल्लीस बनवरी १८५७। बहु नहीं हो चराता कि साल वित्तिविद्या मारतीयोंको हो सेकॉमी संस्थामें यहाँ बुनाते खुँ और स्थानम पारतीयोंका साल निकड़त बन्द कर है बरान कारको निस्सान्य साजसा करना चहेना — मिटीटिंग

प्रेष्ट मनवरी १८९७। मी नाइनोने भारतीय विरोधी आमोलनके पुरस्वर्गार्थी और बी एक्स्पने हुई बातधीतका बी विवरण दिया है उतके मनुनार इस मानतेने सरकारका दल मंत्रीर निम्हाका विषय हो सकता है। यद्ववि सौ बाइसीका क्यान स्पन्न शब्दों में ना, फिर भी उसते स्पन्न है कि समिति ऐसा काम करना बाहती बी को कि कानुनके फिलाफ था। समितिने कहा या कि "हमारा क्याल है कि इस उपनिवेशकी तरकारने प्रतिनिधि और अधिकारीके नाते हमारा विरोध करनेके लिए आपको बनका प्रयोग करना गड़ेगा।" इतके उत्तरमें भी एस्टम्भने रहा बतपान है कि "हम ऐसा कोई काम नहीं करेंगे। इम आपके तान ई और हम आपका विरोध करनेते किए कोई काम नहीं करेंचे। परम्नु यदि साप हम ऐसी स्पितिने बात बंधे तो हम इस उप निर्देशके महर्नरके पास जाकर वह देंगे कि क्वतिवेदाका शासन-पुत्र आप अपने द्वाबम से सीजिये। हम जब सरकारको नहीं बता सकते और सापशे किन्हीं और बारनियोंकी हतारा करनी होयी।" इस बयानके अपुनार शरकारने बहुत ही घोषनीय निर्वतना प्रकट की है। यदि किसी नंत्रीको यह कबर वी बाये कि कुछ लीव कोई कानुबढ़े लिलाक कान करना चारने हैं तो उते चाहिए कि वह नतजर जी संकोचके जिना जयनैसे निमनेवालींते वह वै कि कल्लाम श्ली-अर भी शलाखाओं नहीं होने वी जायेगी और यदि जानस्थलना हो तो नग्जीनो साढ सम्बॉर्ने नह देना चाहिए कि चानुनदी रता तब तरत और तब उपलब्ध नापतींसे की बार्नेगी। इसके विपरीत भी एश्वानके बहुनेका शाब गर वा कि तरकार इस कानुन-विरोती वार्रवाद्या विरोध करबडे सिए वृत्र नहीं करेती। ही सीप सुन्तमपुरता मारतीय प्रवेशावियोंके तिए हिन्द बहासायरकी प्रयास स्वान बनाने है जनक हावाँमें लग बानेते पहारह सरकारने एक नरस्पनी शोवनोप निर्वतन्ता प्रवट होती है। -- टाइस्स आफ बेटाह मनवरी, १८९७।

आपने बदाप भागी मार भार है। वर्षण गरे है। बाद अपने नेताबार बंधन वरण अपनेतरी निरास थी है। वर्षोत वह जी स्थितनाया है जि नेत्वापत्र निर्माणी सारवादी नहासा दिया जो आपी वर्षों यह जी किस पर दर्श मारत है जि रुपने जो बदानेत्री नेताबोने राग बातमा इतहार विदाह है कि बाधार की रुपने की अपनेत्री हो तथा भार किए जी बहु तथ नेताह है और अपनेत्र वास्त्रीत वह स्थाह है जिस्सा मार्था कर जी बहु तथ र**म४ सन्**नैगॉनीनाह्सन

जीर भी बाइडीमें हुई बादणीयके सन्तन्त्रमें भी बाइडीके वक्तम्बका संहर कर देती और सार्वजनिक स्पासे यह जोपणा कर देती कि साजिसीको ध केनस सरकारसे रसा पानेका विकार है विकि सावस्थकता होनेपर जनरी रहा की भी बामेंकी दो संद प्रदर्शन होने ही न पादा। अब दो सर्व सरकारके ही मुक्तपत्रने कहा है कि यन आखोकन चक रहा ना राज "सरकार ही पराका संभातन और गियंत्रभ कर रही थी। उन्त सेवरी दो ऐसा समा है कि सरकार बाहती भी कि यदि भीड़को सभी मंछि नियंत्रक और संवर्त रक्ता जा सके तो ऐसा प्रवर्धन अवस्य किया जाये जिससे कि वह गावियोंने किए एक नमूनके समकका काम दे। नेपाल-सरकारका पूरा किहान करते 👯 भी कमसे कम इतना दो कहा ही का सकता है कि एक ब्रिटिश प्रपतिबेसकी सरकारके बारा कराने-असकानेके इस वरीकेकी बजाजवका या बढ़ावेश दिया जाना एक धर्मजा नया जनुमन है और यह ब्रिटिश धंनिधानक परने मंजित शिकारोंकि सर्वना विस्त है। प्राविमोठी नाम सम्मति है कि हुई प्रवर्धनके परिचाम सारे स्पनिवेध और भारतीय समाज बोनोंके हितकी पुष्टिए मनकर हुए दिना नहीं रहेंगे क्योंकि मारतीय कोग भी बिटिश धामानका वैसा ही अंग होनेपा पाना कच्छी है जैसा कि मुरोपीय ब्रिटिस स्रोप। इसके कारण बोबों समाजांकी भावनाओं विषाद पहुंचे ही बढ़ चुका है। इसके कारण यरोनीय क्यतिवेधिकाँकी वृष्टिमें भारतीकाँका बरका थिर गया है। इत्र कारण मारतीमोंकी स्वतानता कम करलेके बिए बनेक कठोर उपाय तुलाने भागे भगे हैं। आपक प्राधिमींकी गाम प्रार्थना और जाना है कि सामान्त्र^{की} सरकार इस सबको स्पेक्षा और निविचन्त्रसानी वृष्टिने नही देख संवेधी भौर न ही वेरोनी। जो मीन बिटिश-साम्राज्यमें नेक-ब्रिसाएकी एसा करने बीर प्रजावनंकि विभिन्न भागोंमें स्थावको बनावे रलक्षे किए जिम्मेवार है बही जनमें फूट भीर दुर्भावनाओंको जनाम अववा जलाहिन अपने सर्वे हैं। विभिन्न हिनौरा सूचर्य होनेकी स्वितिने इन सुब भागोंको परछार मेल-निवार रगनके निए प्रेरित करलगा कार्य पट्टन बहुन अधिक कठिल हो आवेगा! और बरि साम्राज्यको सरकार इंग तिबालको जानती है कि जारतीय डिटिंग प्रवाननोतो भी नाग्रास्यक तन चपनिनेगकि गांच सम्बद्ध रमहारी स्वतंत्री होनी चादिए हो प्राची वह निरवास करनेश साहन करने हैं कि हाआर-नरकारण जोगने एसी कोई घोषका कर की जायनी जो कि जीपनिकणि सरकाराती बोरने गेमा धोषनीय बतायत होनेकी नम्बाबनाकी रोक है।

इस संबर्धके समय जारतीय समाजका व्यवहार केसा एहा ना इस सम्बन्ध ६ बनवरोरे मेटास रक्षयदेवारों को गई निम्मकिसित टिप्पणी बैसित करने होगा है इस सरसस्त्री बनोकनाके समय कर्मको मारतीय कनताने को व्यवहार

किया वही सर्वेवा इंटर वा। तिरुवम ही अपने वेग्नवासियोंके ताथ नगरके सोमॉका व्यवहार वेककर उसे बृज्य हुआ होता, परन्तु उसने अवसा सेनेका कोई प्रयत्न नहीं किया और अपने शांत व्यवहार तथा तरकारमें विश्वातके हारा प्रसने सार्वजनिक प्रांतिकी स्विर रखनेने बहुत सहापता की। भी गांबीके साथ को कुछ बीती उसका प्रार्थी और वश्विक विक्र करना शहीं भाइते थे। परन्तु वे नेटामर्ने दोनों समाजेकि बीच माध्यकर्ताका कार्य करते हैं। इतकिए यदि उनके सम्बन्धमें कोई यसतुरुद्धमी एड यई हो तो भारतीय पक्षको मारी हानि हो बानेकी सम्मानना है। बजिय बाधिकांक मारतीयोंके नामसे धन्हींने भारतमें को कुछ किया जसकी सफाईमें इस प्रार्वनापत्रमें अबसे पहले बहुत कुछ कहा जा जुड़ा है। परस्तु इस मामसेको और अविक स्पष्ट करतेके किए प्रार्थी सामान्य-सरकारका क्यान परिधिष्ट स की और बाह्यस्य करना बाहते हैं । उसमें सभाबारपबंदि कुछ उद्धरब परुत्र दिये धरे है। सबस पूर्व प्रापियोंने साम्राज्य-सरकारकी सेवामें जो प्रार्वनापत्र दिये हैं चनमें भारतीय बिटिय प्रवादनोंकी भारतचे बाहरकी स्वितिको स्पष्ट करनेहा ममल किया गया है। और यह कम निवेदन किया पता है कि १८५८ भी रवानु भीपनाके बनुसार वह स्थिति साम्राज्यके सन्य प्रजाबनोकि समान होती चाहिए। महामहिम मारस्विध बाफ रिपतने उपनिवेशोंक सम्बन्धमें जो सरीता भेना या उसमें पहले ही यह उस्तेल कर दिया नया वा कि "साझाज्य सरकारकी इच्छा है कि महाराजीकी मारतीय प्रजानेकि बाब शासाजाकी अन्य सह प्रभाविक समान ही व्यवहार किया बावे।"" परस्तु बतके परवात्

१ जिरिया सम्प्राप्त नाम मानेवास्त्रोते किया क्षेत्रस्य बाव १ इस ११०-११८ १८९-९११ ११०-१११ १९८-१९ ११ -११४ और १११-१४४। १८९-४ पोतासकी पृथ्वित विक्रिय प्राचित सम्में सामावित्यो मानावासिक विश्वस्य विक्रासमा १ इस १ ५-१ १९४-३ १४४-५ १४४-५ और १९ नामाव्यास्त्र क्षेत्रस्य १४४-५ और १९ नामाव्या इस १७५-७६।

र विस्तास्य र प्राप्त र प्रा

सम्पर्क गोबी बाइसब 242

इतने परिवर्तन हो पके हैं कि एक नई बोपणा करना आवश्यक हो नवा है। विशेषतः इस कारण कि इस उपनिवेशमें ननेक कानून ऐसे पास किये जा चुके हैं भो कि उन्त मौतिके विरोधी है। प्राविभोंका निवेदन है कि इस प्रदर्शनके सम्बन्धमें एक और बटना भी

म्यान देने योग्य है और वह है बन्दरनाहपर बतनी कोमाका इकट्ठा होना। इसका पहुके भी जिक किया जा चुका है भरन्तु वर्वतके एक प्रमुख प्रतिनिधि सी भी ए डी'सैबिस्टरने ननर-परिपद (टाजन कौशित) को को पन तिका है और इसपर सरकारक ही मुख्यमंत्र केंद्राक मन्त्रुंगिने भी दिप्पणी प्रकाश्वित की 8 समसे परिस्थितिको गम्भीरताका परिवय मधी मांति हो बाता है

" सज्ज्ञतो -- में चन अनेक प्रतिनिधियों में से हें जिल्होंने करूके प्रवर्धनमें भाग सेनेबासे बतनी सोबॉक बंदाई बरताबको विन्तापूर्वक बेला वा। बन्दर

नातक मार्नपर वसनी सीमोंक कई बस साठियाँ बुमासे और पूरी भाषानते विक्लाते कई अगह धररीपर करता व्यवकर कहे हो को में में; और जन्दरपाइपर कोई बाँच तो या छ तो लड़के इत्वॉमें साठियाँ निये और गाते और जिल्लाते हुए इकटडे थे। जनमें सक्षिकतर सहके जैसे-ति क्षेट पहले हुए थे। ऐसा आसम पहला वा कि वे बांति भंग करनेही कसम साकर आपे है। इस मानलेका अधिक विवरण गुपमताले निम सकता है। धरि जाएको सम्मानित संस्थाने इस नगरमें कानून और जमनकी तरिक्रिका होनेके नाले तुरन्त ही यह प्रकट करनेके क्याब नहीं किये कि वह

इस प्रकारके व्यवद्वारको सहन नहीं करेगी तो बतनी कौनॉपर कलनी कार्रवादेशा बुरा अंतर और भी वह बावेया। बातीय विदेव बनिक कैन जायेगा । यह समझनेनें कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि कसके बर्धनेनमें बतनी लीनोंको जिल तरह इक्बुठा किया गया का बैला करना जनरके तिय फितने वहे संबदका कारण हो सकता है। मुख सनय हजा सर्व कि वृक्तितके ताम बनका अपहा हो यया या और बतनी लोग पहरीहरू मैदानपर इक्टडे हो वर्षे ने । उत्तका भी ऐसा ही दुष्परिकाम निकता था ।

मेरा निवेदन है कि कलके प्रवर्धनमें बतनियाँको ग्रामिल करनेमें वर्षमके बक्तवस बारवर ऐसा बाबा कर बया है जिसे दूरना है। मी कातना आपका कर्तमा है। और मै वह नहनेका साहस कर सकता हैं

कि स्वीर जानने इस नामकेको कोरोसे हावमें किया तो असके असिक्ट-सर सहस्य इसे सक्तीयकी बृध्यित केमी। येरा लास्य दुसान है कि नगर-निगम (कारपोरेजन) को पहुका काम यह करना वाहिए कि वह सौक करें कि इन बानों नोगीको कही इस्ट्रा करने और उन्न अवसरसर इनके बरताव और नियन्त्रकरें लिए जिस्मेदार स्थित कीन था। और स्वीरस्थ्यों इसकी नुगरवृत्ति न हो इतकिए अगर मौजूबा उन्नीमस्य इस सनिक्छको रोकनेके लिए काकी न हों ती विद्याप वर्णनियम भी बना विद्यों कारों।

बहु इस जारण और भी जावस्थल हो जमा है कि जटलि-जनरक तासूको उनर लिखे हुए हानाशमें वो देगाई और जतरनक जीम एकत हो यमें में जनका कोई लिखा नहीं लिखा। स्पानु मुझे विकास है कि जनसे नहीं सेखाओं मुक्त केवल इस जारल हुई कि उनहोंने वह ताब हुई का जनसे नहीं देखा को कि मेंने और जन्म कोचोंने देखा था। मेरा खपाल है कि उन कोट भारी कवालोंका पता मुगमताचे नवामा जा तकता है। जन्म कोम सनितिक सदस्यों मेंडीका विभाग करनोंने निस्म सन्ती दुकाल के नीकरोंको बही मेन दिया था। करने से हुएएकडे हुएलों दो सा सीन कामियों भी और उनकी पीटनर बड़े-बड़े स्थारोंने पैतीका नाम निखा था।"

थी सैनिस्टरने कारपोरंधानको को नज लिला है, निसमें नस नुनवारको अवधीन करनेके लिए लाधियोंने लीत सातरी लोलोका कम एकन करनेके सारकारी और ध्यान बीवा पाय है जीर जिलते नरप-पित्रकार कारानेके सारकारेके लिए कहा पात है, उनकी प्रपेश नहीं को बातरी व्याह्म है की करनेके लिए कहा पात है, उनकी प्रपेश नहीं को बातरी व्याह्म है कि सतनी लोलोके पिरोहको कन्यरपायुपर इन्द्र कारनेकी निय्मेदारी अर्धनन्तनितिस्टर किसी की प्रकार नहीं है। व्याह्म वातनी लोक बही लवर जी मही करे होंगे। जीर इसिब्ध इसिब्ध करनेकी निय्मेदारी अर्धनन्तिनित्र किसी की प्रकार नहीं है। व्याह्म प्रावदेश की कार्यक्र करने किस सामा वाह्मिए क्रिस्ट की सामा करने किस से पह पाननीर जनारसाधिक्त करने दिन से लिखा का। बी

२५८ सन्दुर्वगीवी बाजसव

कैविस्टरका पह कवन सर्वचा क्षत्रित है कि प्रवर्धनमें बतनियोंकी उपस्थिति उर्वत्तके जरूबल मामपर एक कर्बक है और इसके परिचास बहुत सर्ववर हो तकते थे। भारतीय और कतनी एक-बुसरेको प्रसन्ध नहीं करते। वर्षि बत्तियाँका कोई वस इकटठा करके उसे मारतीयाँके विकट महका दिवा भया तो इतका परिचाम चर्यकर और दुःश्वदायी हो सकता है। ऐसे भामकोंको बतली कोप दलीतले नहीं सनझ सकते हनका बीच तर बढ़क बाता है और बनका स्वमान कड़ाक है। तनिबन्ती प्रतेषमले वे भाग-वन्ता हो बाते ई भीर वहाँ सुर बहानेकी बात हो वहाँ तो वे कुछ भी कर नजरनेको तैवार रहते हैं। इससे भी अधिक सरवामनक वारा बह वी कि कर भी गाँधी बतर भने और उन्हें चीस्त्र स्वीदनें ठहरा दिया पया तब बतनियाँको भारतीयाँपर हमका करनेके किए बकताया नया। परि पुलित चौक्सी न होती और वतनियोंको तितर-वितर करनेमें तफर न हो बलों तो बनवारको रहाका अन्त ऐसे मर्बकर इंग्रेंकि लाव होता मैसे कि कमी किसी विदिश प्रपतिबेक्षमें न हुए ड्रॉने; क्योंकि एक बंगती नड़ाकू चातिको एक व्यक्ति सम्प और शाला चातिके विदय प्रत बोलेंसे व्यक्ति केवी वातिके कोर्गोने अङ्का दिया वा । इसके कारच यह प्रयुक्तियेश बहुत दिनोंके तिए वदनाम हो जाता। जिन चार काफिरोंने कीस्ट स्टीटमें घीर मजामा और लाटियाँ मुमाई भी कर्त्ते गिरकार करनेकी बजाय यन गोरे लोगोंको निरस्तार करना चाहिए वा जो उन्हें वहाँ आमे थे और जिल्होंने उन्हें महकामा ना। और उन्हें मजिस्ट्रेडके सामने पेत्र करके काकिरोंकी की भूमाना किया बया उत्तके सनुपातमें ही भारी भूमाना कराना बाहिए जा। काफिरोंको तो बतिका वकरा नात बनावा नवा और यह उनके मति क्यारा कठोरता हुई। क्वोंकि उन्होंने तो सचनुच येते कोगोंकी आमाना पासन मात्र किया वा जिन्हें ज्यादा समझदारीते कान सेना चारिए था। इस किस्बर्क मामलेमें बत्तियोंको बतीवना प्रतके शामने ऐसी वर्षेत्रताका प्रदर्भन करना है जितते हुनेशा बचना चाहिए। हुने विद्यात है कि बतनियारि सनान भड़कोने नोनीके बातीय पूर्ववहाँ हो पकताने बैती श्रतरनाक और निम्मनीय कार्रवाईको पुनरावृत्ति प्रविष्यमें फिर कमी नहीं को बायेगी। — वेटास मञ्जूरी १६ बनवरी १८९७।

इस सम्बन्धमें कुछ तथ्य सामने रूप देनेसे सभाजीकी सरकारको धायद नेनैवपर पहुँचनमें गुगमता हो जामेंगी। मारतीयोंका यहाँ निर्वाप आसमन रोक देनेकी मौग यह ममसकर की था रही है कि कोई संगठन हो या त हो इसमें बहुत अधिक भाषतीय इस उपनिवेशमें पुत्र साथे हैं। परन्तु वाची नि तनाच कर पनते हैं कि तब्योंने इस मयना समयन नहीं हो सकता ! यह कहना ठीक नहीं है कि यत वर्ष उपने पिछले वर्षकी वर्षका अधिक भारतीय यहाँ भागे। पहले व अर्मन और ब्रिटिंग इंडिया स्टीम मैवियसन कम्पनीके जहाजोंने यहाँ बाबा करते थे। यह कम्पनी वपने पानियोंकी वेसा नोबा-बर्ने दूसरे पहार्जीने बदल दिया करती थी। इस कारण भारतीय छोटे-छोटे बर्लोमें बहुर पहुँचते वं। बीर उनपर विचीका अविक ब्यान नहीं जाता था। नत वर्ष यो भारतीय स्थापारियोंने वपने जहाज करीड मिसे और अस्पर्द तथा नेटानके बीच प्राय नियमित और बीधा याताबात कारम्य कर दिया। देशिय आफिना जानक इच्छुन अभिकटर मारतीय इन बहाजोता नाभ बठाने रूपे और इस प्रकार छोटे-छोटे बलॉमें बॅटकर आवेडे बदमे महा एक-गाम पहुँचने समे। इससिए स्वभावत उनकी मोर शवका स्थान बना गया। इनके बनावा जो भारत सीटने ये उनकी और किमीका भी ब्यान यथा नहीं मानून पडता। निम्न नुषीने राष्ट्र हो बायगा कि इस जातिबेयके स्वनात भारतीयाँसी नंस्थामें बहुत वृद्धि नहीं हुई है। समय सम बढ़ इतनी तो हुई ही तहीं कि उसने कारण दिसीनो कोई बर सबने सम । वह बाव भी प्यानमें रगती चाहिए कि मुरीपियोंका मागुनन बन को रस्तान नारतीयीके भागमनको अपेशा बहुत भविक है हो पहले भी नदा लेवाही एता है।

त्वानास्य प्रवाती-मंत्रक यो वी श्री १४९९वीई द्वारा एन्डाजरित एक विवरणने नान होता है कि यात अस्ततने जववरी तक सान उहानी विद्या ११९८ तकान्य जाएनीयोंको इन व्यक्तियोज बाहर से वह और इसी व्यक्तिये वही वैद्या १९६४ आरतीबोंचे प्रांत नाई । उनये से व्यक्तिया अप्ताती व्यक्तिये वही विद्या अस्तियों

वह रिप्पायन नर्पमा निरामार है कि बरोगीय और भारतीय बागुगरानें वोर्दे होये हैं। बायक मार्ची निजी आनवारीके आधारार कह नक्ते हैं कि इस वर्गनिवारों लोगार, बार्द और गाम आर्थ करन कम बारीयन आर्मीय त्तरपूर्व नांदी बाद्सव

۲.

है और को है वे भी मूरोरीय कारीपरोंचे मीचे बरवेजे हैं (की बरवेजे मारातीय कारीपर नेटाफ जाते ही नहीं)। कुछ की जीर मुनार मी उठ व्यक्तियें हैं परन्तु में केका मारातीय कारावा मारावा की जीर मुनार मी उठ व्यक्तियें हैं। यहांत्र के मारावा को मारावा मारावा मारावा होंगे कर स्थानित की एक स्थानित की एक हैं। यहांत्र के एक स्थानित की उत्तर मारावा की मारावा है कि यह होने मीं कुछ है भी दो मारावायों में मूरोरीय स्थानपीयों डाटा वी मई मारा पहांत्रकों कर हो हैं। और मूरोरीय स्थानपीयों डाटा वी मई मारावा हा स्थानित कर हो वी हैं। और मूरोरीय स्थानपीयों डाटा की मही हैं। की मारावा मारावाय स्थानी हैं कि मारावाय स्थानपीयों के स्थानित की मारावाय स्थानपीयों हैं। कर ही उनका स्थानपार हुक ही नहीं होंग है ना कि मारावाय स्थानपीयों हैं कि मारावाय स्थानपीयों हैं कि मारावाय स्थानपीयों हैं कि मारावाय स्थानपीयों हैं कि मारावाय स्थानपीयों हैं। कर स्थानपीयों हैं कि मारावाय स्थानपीयों है। स्थानपीय हैं के स्थानपीयों है। स्थानपीय हैं कि मारावाय स्थानपीयों हैं स्थानपीय स्थानपीयों है। स्थानपीय हैं कि मारावाय स्थानपीयों है। स्थानपीयों हैं स्थानपीयों हैं स्थानपीयों है। स्थानपीयों हैं स्थानपीयों है। स्थानपीय स्थानपीयों हैं स्थानपीयों है। स्थानपीयों हैं स्थानपीयों हैं स्थानपीयों है। स्थानपीयों हैं स्थानपीयों हैं स्थानपीयों है। स्थानपीयों हैं स्थानपीयों हैं स्थानपीयों हैं स्थानपीयों हैं स्थानपीयों है। स्थानपीयों हैं स्थानपीयों स्थानपीयों स्थानपीयों हैं स्थानपीयों स्

हुने निरुप्त हो गया है कि पूरोरीय उपनिवेधियों मनने इस कारि-नेया तारी ही नारतीय नावसीके विवद को विकासहर मीनून है वर बहुत कुछ उन बाद व्यापारियों कारण है, जो होड़ होनेपर, पूरोपीन व्यापारियोंको नात दोने तादा हो गयन हो बाते है — विद्येषण चातर कींग्री बादुबीके कामार्थ निरुद्ध करता अनिकार प्रवासी नारतीयोंकी नावसीय होती है।

हमारी राय है कि ये करक व्यापारी कैंडाक्की जीर बाहुन्य वन भारतीयोंके कारम हुए हैं किन्तुं कि यहां प्रवासी-कानुवांकि अनुवार लावा पया है। इस समय इस करनिवेदमों बते हुए भारतीयोंकी संक्या वे

प्या है। वह तसम इक क्यांनिकार्य नते हुए मार्टायोकी तेवा है है। यह तसका नृष्य बाद्य चायन हैं। यह इक सुर व्यापारियोदें इर्ग बोदको बहुँ बाले न बेकरेते लिए सम्ती चतुराई और कविकार क्यांने ऐसी तफकातों किया है कि बहुँ बहु कुक वर्ष पहारे रहे जिलित मति बोरीके मान विका करता ना बहुँ १८८४ में फलका नृस्य केवत हैं? धिर्मित्य मति बोरी रहु पया। बहुं बाहता है कि बाकिर लोग बार्य स्थापारियोदें अपनी बकरता की में कर या ताल वर्ष नहते के नृस्योदें बदेशा हर से हैं मिलात तक सारो नाक्यर करीन तकने हैं! दुछ स्रोव एमिसाई या "बरह" व्यापारियों र सो पास्तियों रामसाना साहते हैं इनपर विचार करना मायोग (स्तियन) को तीये गये सामसे सायोंने नहीं साता। इस यहाँ केच्छ इतना क्रिलकर सन्तीय कर सेते हैं कि इन स्थापारियोंन्य यहाँ साना सारे ही उपनिवसाके दिय सामसायक विद्य हुमा है, और इनके विरुद्ध कोई करनून बमाना, यहि सन्यायपूर्ण नहीं तो अनुश्चिमतापूर्ण अवहण होगा। यह सम्मित हम पहुत सरवयनके परचात एक्ट कर रहे हैं। (अतरोंने यह ग्राहियोंने क्यित हैं) प्राय ये सभी स्यापारी मुतनसान है। ये प्राय या तो विनदुन ही नहीं बीजे या बोड़ी बीजे हैं। इनका स्वसाद ही पितायों और सन्तृत्यहें स्वष्ट चलनेका है। एक सायस्य थी नांस्तिने बचनी अतिरन्त रियोंनें क्यित है।

बहुरिक स्वराज चारतीय व्यापारियों, जबको स्पर्ध और उसने होने-धानी नावोंकी नम्बीका सावन्य है जिसने कि बनताओं साम पहुँचरा है (और आरखें यह कि बहु उसके किमाब हैं। शिकायन करती है) बहुर्तक यह बात स्पन्न हैं कि ये बारतीय हुकारों गीर प्रापारियोंकी अधिक बहुर्ग देशियों करवा हो बनती हैं। ये दीहर्य हुन हुनारोंका अपने सनम्य वपने पोषण करती हैं। और इस हायह के सपना नात नेकाके किए इन बुकानरारोंको अपना नौकर मेना बना सेनी हैं।

जार बाहूँ तो बाहतीयोंका जानगर रोज हैं। जार अभी जारी नवान बादी न हों तो जारों का नाहतीयोंनी को आंको रूप आकार देवां के उस्त व सरतारी प्रतित बहुत हैं निवासकर और जारी कर ते हैं वरण्यु इस एक किरवारी उदाहर्शकों तीराच उठावर अस्तिय, और इसके परिमाणीना बना नामाइ। बना नामाइ कि दिन क्षान् मामावीद आंभी वहें रहनमें जायार और लेन्यूनिटीजणी बोमन प्रत्यी हैं और वैभी इसके बाद स्थारतीट आहारायों और उसकर निवर्ध करनेवारों हुन वै स्थानारी तथा इस्तरीने मिनटोज आजा अनिवास हो जाता है। देविए कि इसने बोरे विविजयोंनी जीए क्षेत्र कर होती है और इसने मोसीनो पर्य करवेंगी प्रतिक कर हो कानेने वेंगे राज्यकों करने। अनेता नरनी सम्पूर्ण नांबी बार्मव

255

होगी। किंद्र, छेटतीको था कर बहानेकी था नोगॉकी करणा। इत परिमामका और दूसरे परिमामॉका को इतने अधिक है कि जनका दिस्तारपूर्वक वर्षन नहीं किया का सकता मुख्यकता बीजिए, और किर नगर अंभी जाति-पानना या ईप्यों ही प्रवक्त होती है तो खों ही।

हाक्रमें स्टेंगरमें हुई एक समामें माधन करते हुए एक बन्ता (भी क्लेप्टन) ने कहा था

कुकी मजदूर ही नहीं अरब हुकानदार भी इस उपनिवेचके किए कार्न-दायक सिख हुए हैं। मैं भानता है कि मेरा यह विचार कोक्प्रिय नहीं है, वरन्तु मैने इस प्रक्रांचर सभी बुन्दियोंते क्यार किया है। इमें विश्वताई न्या पड़ता है ? मार्केट स्ववेपरके चारों ओर मकानोंकी बमीनपर कामका इतना बच्छा रातमूल केवल बरव बुकानशारीके कारण उपलब्ध हो प्रा है। अमीनोंके नासिकोंको साम सेवल इस कारण इसा है कि बित्त अमीनको थन्य कोई कमीन केता उसे कुती सम्बद्धोंने से किया है। सभी उस दिन मार्केट स्लोबरके साथ छगी हुई मकाबाँकी बमीनका मृश्य नीकामने इतना क्रेंबा पता कि दुख वर्ष पहुचे उत्तकी कोई कापना तक नहीं कर तकता बा। भारतीयोंने यहाँ एक ऐसा ब्यापार सूक कर विया 🛊 जो कि पुराने डॅक्की इकानवारीते कनी कुक न होता। नै मानता 🛊 🕸 क्हीं-कहीं एक-नाम भूरोपीय कुकलबार भारतीयोंके कारण दुव गया है परन्तु पत्तके महाँ आनेसे बन्तवा जन विनोदी मपेका अच्छी हो गई है क्य कि सारे व्यापारपर कुछ ही कुकानदारोंका एकाविस्तय था। वर्तान क्यीं कोई अरब दुकानदार दिखाई देता है, श्रम वसे कानुसके मुतादिक ही असता बेबले हैं। हमने लोगोंको ध्यु कहते पुना है कि उपनिवेक्तियोंनी सपना कमित्र अविकार नहीं कोड़ना चाहिए — बन्हें अपनी कमीन^{पर} भारतीओंको कम्बा नहीं करने बैना बाहिए। नुझे मामः निश्वम है कि में पदि अपनी सत्तातके किए कोई बगौन छोड़ बारूपा तो यह प्रसन्त स्वयं मेहनतः करनेकी जनह कते पश्चित सनावपर भारतीबाँकी कठा बेना फ्लन्ब करेगी। मेरे विकारमें इस सधाके सिए एक्टिबाइयोके विकास निन्दा ही क्लिका प्रस्ताव बास करना स्वाप-संकत नहीं होया।

मे*ताब सक्पेरी*के एक नियमित संबाददाताने किसा है

हम कुलियोंको यहाँ अपनी बकरतसे कामे वे सौर इसमें संवेह नहीं कि उन्होंने नेटामकी उपतिनें बड़ी सहायता की है।

पन्नीस क्यं पहुते बहुति बहुतों और इस्बोंमें इस, सब्बी और मध्यी कोई कठिनाईसे हो करीद सकता या। गोमीका एक पूरु पहाँ हाई सिकियमें विकता था। यहकि किसान सम्बोद्धी खेतो श्रमों नहीं करते में ? सम्बद्ध है कि इतका कुछ कारण उनकी सुस्ती भी हो परम्नु बोक पैदाबार करना मी वेकार था। में ऐसे कई उराहरण बालता है कि माहियों कर हुर-हुरके महरोंने अच्छी हालतमें पहुँचाने परे परन्तु वे बहुर दिक नहीं सके। वी प्यक्ति योभीका एक-भाव कुछ हाई शिक्तिवर्षे सरीह सकता हो। यह स्वमानत पूर्वीसे सबी पाड़ी देखकर एक कुछके लिए एक शिलिंग देते हुए संकोच करेगा । इससिय् हुने ऐसे मेहनती केरीबालोंकी करूरत भी को अपना निमाँह भितम्पपितासे करते हुए, इन चौजोंको बेचकर, शाम और सुख बोनों प्रक्र सकें। और हमारी यह वकरत धर्तकन्दीकी निवाद करूम कर चुकनेवाले पिर्रामित्या कृतियोंने पूरी कर दी। और परीं वा होडलों बादिमें रतोडयों जीर हुन्धिर्मेंकी अक्ष्या नी कुतियोंने दूरी कर वी क्योंकि इन कानोंमें हमारे नतनी सोग बेग्रकर तिद्ध होते हैं। जीर को ऐसे नहीं होते वे बैसे ही बनको मेहबत करके काम तिका दिया यदा देते ही, अपने गाँबीका रास्ता नार लेते है।

स्वतन्त्र कुली मनपूर, बहु कारीपर हो ती, कम धनपूरी केलर भी कुमीते पूरिपीय कारीधराठी बरेता ब्रस्कि समय तरू काम करता एका है। बीर कुली ध्यापारी तृती करवळ गोरे बुद्धानदारसे बाना-रुवा सत्ता वेच देना है। बन बाठ दुननी हो है।

नित्तय है, मालकी वयलिक और मीगठी जाविक पुकार, जायका विरिध्म जनावींका नेपालका सेच जायका मूल्त प्यापाएका धावदार नारः, जितमें वपान विद्याल क्ष्म करतेके किए चान-कुक्तो नाकों को वावकर कीनत पुकानी पहती है—इन सबका तकावा है कि यह बीक-पुकार न हो।

आस्ट्रेकियाने जपने यहाँ काजे कोमॉका प्रवेश निविद्ध कर निवा है। परस्यु हुड़तालों और बेकोंपर वार्वोते कोई यहा सुन्वर प्रदाहरण मस्यून नहीं होता। धुनी सीय युरोपीयोंकी स्पेक्षा इकके कपड़े और सूते पहले हैं। फिर भी में इस मामबोर्ने हुनारी पूजक मस्तिमोंने रहनेवाने क्तिनिर्मेते भागे हैं। कई करस पहले सेतॉपर कान करनेवाले भीरे पुस्तों ना रिजर्मोक, या बहरोक बढ़नेवा समाजके बक्कोंके पैरोंनें भी, बक्तक वे किती पार्क मा समामें न बाते हीते कुढ़ भागव ही कभी वेबनेकी मिल्ले के। पह रियास जुता बनालेबालोंके किए मने ही बाराब रहा हो अनके पौर्वोंकी इतसे कोई नुकतान नहीं होता था। कुकी कोन मांस नहीं कार्त और बराव मादि नहीं पीते। उनकी यह मादत मुझे फिर कहना होपा, कराइमाँ और गरवाना-प्राप्त ककारोंकी वृश्विले चाराज है। विश्वास रक्षिए, में स्व बातें बीरे-बीरे ठीक हो बार्वेको, परन्तु (सन्द्रता शिव्यक्त वा संवयको वृश्विते का-दिसके लिए जितना करना कवित है उससे भी जाने बढ़कर) नोपॉरो काल-पान का पहरावेक मानकोंचे शंतकके कानून द्वारा विकास करना निरा कत्याचार है चन-द्वितकारी कानून बनाना नहीं। नया नोरे प्रवेशा-नियोंके समुहोंको भी बाहर ही रोका काता है ? बबतक यहाँ करनी मानानी है तकाक, गोरे सोए, केवल पुवारे सायक मजदूरी बेकर कान करनेको रीपार नहीं होंने। ने निरुक्ते बेडना पतल करेंने, काम करना नहीं। हाँ यन सबको बाद डॉक सकें तो बला और है। हम झालातले बचकर नहीं चल सकते। इबारा उपनिनेत काले

हम हमानाले बक्कर नहीं जल लकती हवारा उपनियंत्र काले लीजींका देश है। और में कितना ही वर्षों ल बाहूँ कि हवारे बतनी लोग लग्ने परिता स्वानपर रहें; और हुनों भी को लग्ने उदित स्वानपर रहेंकें निया क्याना रजाल्य हैं। किर तो गोरे लोजींका काम तो लातिकान ही है, और रहेंगा जी। हो जो जाने चीजिए। में यह वर्षों करणा नहीं वाहाता कि कित ककार परीच विज्ञान करने सीकीन बोला नवींत्र कहते लारोगोंका निहत्तामा नहीं चुका ततने और हत्तीलए से निर्मों करने लारोगोंका निहत्तामा नहीं चुका ततने और हत्तीलए से निर्मों करने लारोगोंका निहत्तामा नहीं चुका ततने और हत्तीलए से निर्मों करने लारोगोंकी हतनी लीज क्यान करना चाहता हूँ कि बे करना मारिकालि सर्च नियम करने और उन्होंने लागुन्द रहनेनी हना करें। से करने निर्मंत विरोजियोंसे न वरें। और श्योंकि यहाँ में यनकी संस्था कहीं विषक हैं सर्तित्य वे वर्स-पेपरेंते, सर्ति-कहाई वक्कर कहें। सुयोग्य कारमीको अपनी पूर्व कीनत हनेया मिलती हो है। यही बात में मच्छे प्यापाधियों कारनी स्कृता हूँ। देहातीक दूकानशरोंको अपनी कीनते वाती मदानी ही नयों न पढ़ वारों वे नयर निष्क्य ही नहीं होंगे। प्रति सम्बद्ध वार-यो संस्क सीरेडी नकर विश्वे चोड़ी नहीं होंगे। प्रति सम्बद्ध वार-यो संस्क वात माराके नवने साथी प्रवानगाँका विह्नकार करनेडी है। माराको नीर सीरेड इकारे सैनिकार पायोगोंने विहास करने निष्क्र करा निहासर सह चुके हैं, उसकी सीराई जांक राज-रेकिंग राजांने हानारे संजेंक सम्मानकी रहा कर चुकी हैं। भारतने बहुतेरी पूरीपीन कुछानें हैं। चनको पाहकी बहुत अन्त्री है जीर वे बक्जी कमाई कर रही है।

शारियोंकी नम सम्मति है कि बहुए-सी बड़ी-बड़ी यूपेरीय पेड़ियों स्वेडडी दूरेरीय मुहिर्सी मेरे स्वास्त्रकोंकों मोकरी है है इस कारण सकती हैं, कि इतका माण मार्टीय दुक्तमार केले हैं। बापने मार्वियोंके सिदेश हैं कि परिध्यों कीर मिठन्यों मार्टीय कोर मीरिक मुक्कि क्यतियें सहावक हुए दिला मित्रों की बांकि प्राप्ति कोर मीरिक मुक्कि क्यतियें सहावक हुए दिला महिर्म देशे मेरे परिध्यों की सिठायाई है को से कही ठठ के कि उठ कि दिले मी मार्ग्ड है। गाम्याक्यादी परविध्यों (एटकॉन्स्ड)का नमाज एक ऐसा मार्ग्ड है जो बीरिज मार्टिकार्से मार्टिकार्स क्यांस्तिका विकट्टक जवगढ़ किरोप करात पहना है। उक्ते पिरवर्ष एक्टरी किन्न है

विषय आधिका एक बया देश है। इसिक्यू इस्का बरबाजा सबके तियू जुला एक्षा वाहियू। केवल किसीकी गरीबीके कारण इसे वाले तियू बया नहीं कर देना वाहियू। आज यहां को लोग इसने पत्नी दिखाई पढ़ पर्टे हैं, उनमें से अधिकतर अपनी केवले केवल कहावती जाया कारण [बाई विशिला] वालकर पहीं जाये थे। हाँ हमें पहांकी आवासीके लेक तासकी रता जवस्य करती वाहियू। परन्तु देखा मी भागपारामां भीर गुंडागिरीके विक्त स्थानीय कालुमीका प्रथान कराया और करोगानों करके ही करना चाहियू। जये आमेगपांनीकी पह भानमेरी पहुंचे ही अभगाने हैंगरी रोककर नहीं कि नपे हैंगर्फे भविक थच्छी सवस्थामीमें ने पहुँकि तपयोगी नागरिकीके बीच भपना स्थान ग्रहण कर सकेंग्रे था नहीं।

यह टिपाणी कुछ जावस्थक परिवर्तनीके परचार भारतीय समाजनर सक भीतनाव्य सामू होती है। बीर सिंद इसमें बिफ्त स्वित स्वति सर्व हो गौर वह परदेशियों के बारेने स्वीकार्य हो तो जानके मार्च साहकेश का निरंप करते हैं, वह वर्तमान मानकेंगे और भी विकार स्वीकार्य होनी चाहिए। नेटाक-सरकारने प्रदर्भन-सीमितिकों को चचन दिया वर्ग सबसी प्रक्रिक किए वह ८८ मार्चेस आरम्भ होनेशाओं मानतीय विभान-समामें निम्म दीन विवेषण पेस करना चाहती है

स्तक (क्वारंटीम) -- (१) बन कमी कोई स्वात, १८८२ के कानून ४ के अनुसाद, रोब-पस्त क्षेत्र घोषित किया जाये तब तपरिवद गर्यार भारते तो एक मतिरिक्त घोषणा द्वारा यह जाता दे सकता है कि पन्त स्वानसे जानेवाले किसी भी बद्दाबाडे किसी भी यात्रीको यहाँ न पतारा भामे। (२) यह बाजा बत जहाबपर जी लाय होती जिसपर कि पका रोप-परत घोषित स्थानसे जाये हुए यात्री मीजूद ही वे यात्री मले ही किसी सन्य स्थानसे बहाजपर सवार स्था न हुए हों या बले ही ब्याजने अपनी पात्रामें भोजित स्वानका स्वश्नं तक न किया हो। (३) वस्त नाजा तकतर्य लान समसी नायेगी चवतक कि यसे राज्य बोबचा द्वारा वासस न से किया कार्य। (४) को कोई काकित इस कान्यका उल्लंबन करके पद्धा पतरेपा जले पवि सम्मव होना तहे तरना ही जली बहाजपर बापत भेच दिया कार्येमा जिससे कि यह नेटाल आया था। और उस ब्याजरा भास्तर पत यात्रीको वापत लेने और बहाजके मातिकके स्थमनर पते इस उपनिवेशसे बाबस से जानेके किए बाध्य होवा। (५) जिस बहानसे कोई यात्री इस कलूनका पत्नंत्रन करके यहाँ पतरेया पत्रके मत्त्वर और शांतिकोंको, इतना कुर्माना किया का सकेपा कि वह इस

१ वैमिनर १९४ व्यव्हः २ विमेरा एक व्यव्हानीर वेण्टल्लाक्षः

प्रकार उत्तरे हुए प्रति यात्री गीं हे एक सी बींड स्टॉक्स के मान रहे। सर्वोक्त न्यायाल्यको सामसे वह मुर्माना उद्य बहुताली बसुक किया का एकेसा। बीर उत्त बहुतको प्यूप्ति विदा होनेकी इकानत तल्यक नहीं वी सामेगी बदतक कि यह मुर्माना स्वान कर वे जीर बदतक उत्तका सास्टर इस प्रकार उत्तरी हुए प्रत्येक मानीको व्यनिवेशसे बागस से सामेकी स्यवस्था न कर वे।

परकाने (बाइसेन्स) -- (१) कोई भी नगर-परिषद (बाउन कॉसिक) या नगर निकाय (बाबन बोर्ड) ब्रह्नरमें नोक मा फूबकर स्मापार करनेके किए आवस्तक वाधिक परवाने (१८९६के समिनियम ६८ के परवाने नहीं) जारी करनेके प्रयोजनसे समय-सनयपर किसी जनिकारीकी नियुक्ति कर सकता है। (२) जो स्थवित इस प्रकार १८८४के कल्प ३८ या इसी प्रकारके भग्य किसी स्वान्य कानून या इस कानूनके अनुसार भोक या फुठकर अगुपारियोंको परवाने देनेके किए नियुक्त किया बायेगा पते क्षत कानुनके अवसिं "परवाना देनेवाका अविकारी" नाना कायेगा । (४) परवाना वेनेवाला मधिकारी किसी भी बोक या फुडकर व्यापारीको प्रयामित परवाना (१८९६ के अविनिधन ६८ का वरवाना नहीं) वे सकेमा या बेमेसे प्रमुखार कर सकेमा । और क्रमून परवाला बेमेकाचे अविकारीके परवाना दैने या न देनेके निर्नयक्ट अगली बारामें बतकाये हुए प्रकारके वितिरिक्त सन्य किसी भी प्रकार किसी भी वदाकतमें पुर्निकार, प्रति-निर्वय या परिवर्तन नहीं किया का संदेगा । (४) परवाना बेनेवाला कवि-कारी को निर्मय करेगा वह यनि १८८४के कानुक ३८ या इसी प्रकारके सन्य किसी कानुनके सनुसार किया यदा होया तो उन्नके विद्यु किसीको भी प्यतिवेश-स्थितके यहाँ, और अन्य मानलॉर्ने परिस्थितियों के अनुवार नगर-परिषद या नवर-निकायमें अपीक करनेका अधिकार रहेवा और

र परानोंके सम्बन्ध की कमून मासिक्यम संबु किया गया था करने किय देनिय एक ३८४-८६ ।

१ न्याना-विकासि वेलोके विचाय आनिके याँगे अनात उत्त निनंदकों यो स्वराजा की वर्ष नी कार्ने कीर वर्षे। दी इर्ड स्वराज्यने नोताना वर्षे ना। देशिय वर्षमा इ. इस १८५ ।

१६८ सम्पूर्व संबी बाङसब

ठपनिवेद-संवित्र या नपर-परिवद या नपर-निकास (विक्त रिटाने यूर्व सरीव को नई होगी) पह नार्रेक वे तकेया कि किस परवानेके विवद सरील की गई है यह रिया कार्य या नम्यूब कर दिया कारी। (५) को व्यक्तित कहा नार्ने पर भी परवाना वेगेवाके विवदानिको व्ह निकास नहीं दिवा तकेसा वि में को व्यापार करना चाहता हूँ तकसे प्रवक्तित विकास-कितावकी विद्योगी कोंको नारामें एक सकता हैं और १८८० के दिवालिया कहान १० की

कों में वियो हुए कानों क्यमिनेक-संविक या नेतानके एजेंड-कारण या वर्ग स्वितिकनकी सत्वसम्बद्धान्ति निम्न मेडाक-सरकार हारा नेताकने मौतर र तिन कारों स्वितिकन गर्म ९ १८९७ को व्योक्त हुआ या कहने व्याप्त ८ में ने एक बोक रिने करे ने तिन ग्राप्तकोर्ग स्वाप्तक करनेन होनों कार्यों निम्न क्या है। विनेत कर २८०। ९ असारी मोदित्यक मिनेक्सको तिन कार्ये व्याप्तकी स्वाप्तकी क्रियो है। वर्ग

प्रतिकालक जनिविधम" कहुनालेना। (२) यह जनिविधम इन लोगॉपर सन् नुस्रों होया (क) जिस कास्तिके दात इस जनिविधमके ताव संसन्ध अनुसूत्री

कुद १७९--८४ पर रिकागना है। व देखिए कुद वटन। या बाहर निमुक्त किसी अधिकारी द्वारा इस्ताकरित प्रमानपत्र हो (क) को व्यक्ति किसी ऐसे वर्गका हो बिसके नेडासमें डालेंके लिए, कानुन द्वारा या सरकारसे स्वीद्रत किसी योजना द्वारा व्यवस्था की जा चुकी हो; (प) बिस व्यक्तिको प्रवनिवैश-सजिपने सिखकर, इस अनिनियमके प्रमाबसे मृत्त कर विया हो; (ध) सन्नाजीकी स्वक और बन्न-सेनाएँ (इ) किसी भी सरकारके किसी पद्ध-पोतके अविकारी और कर्मेवारी; (च) जिस व्यक्तिको साम्राज्य-सरकार या अन्य किसी सरकार हारा, था उत्तकी माजलो नैदानमें सधिकत प्रतिनिधि नियस्त किया नया हो। (३) अक्की उपधाराजोंने जिन वर्गोंकी व्याख्या कर दी गई है, जीर आये बिनको "निविद्ध प्रवेदार्थी" कहा बायेगा उनके किसी भी व्यक्तिका स्वतः या अलगार्पेसे नेटालमें प्रवेस निविद्ध किया बाता है। वे हैं: (क) की व्यक्ति इस समिनियनके सनुसार नियक्त किली अविकारी हारा कहा बालेपर जपनिवेध-समिवके माम युरीएकी किसी आवाके असरींमें स्वयं बस क्यमें प्रार्वनायम किसकर उत्तर हस्ताकर नहीं कर सकेमा औ कि इस अविनियमकी अनुसूची का में दिवासाया नया है (का) को स्पन्ति इत अधिनिश्रमके अनुतार निमन्त अधिकारीको यह निरुप्त नहीं दिला . सवेगा कि उसके पास निर्वाहके किए अवनी ही निककियतके वर्यान्त सार्यन मौबद ई और उनका मुख्य बच्चीस बोडसे कम नहीं है (य) जिल व्यक्तिकी नेदाल तक अलेमें अन्य किसी अ्यक्तिके किसी जी प्रकार सद्वा-वतारी होगी ; (व) को व्यक्ति बहुनक या पायल होका (इ) को व्यक्ति किसी किसीने था अर्थकर झूतके शेवले पीड़ित होगा; (च) को स्परित करत या उर्वती बादि किसी गम्बीर अपराव या बन्ध किसी ऐसे निनित कलुन-विरोधी अपरासमें वरिक्त हो चुका होना जो सवाचारके विपरीत हो तथा निरा राक्नीतिक अपराय न हो और बिसे समा नहीं किया का १ देविद इन्द्र १७१~७३ और १७९ :

र बारों तरका संशोधन करके क्से कंग्रक के किर बहुत दिशा रखा शह विकास कर है

१ वर कारण कार्ने निकास दी और वी देविक इस हट ।

४ अधिनिक्सर्वे १८के द्वार वर्षो वर्ष वे अन्तर् और दिवा नवा था। वेकिए वह ४८ ।

.. सम्पर्य गाँची बाक्सब

वृका होता; (क) को बेहमा हो या को इसरोंकी बेहमावृत्तिसे कपना निर्माह करता हो। (४) बो-बोई निविद्ध प्रवेद्वार्थी, इस कानुनके विवासीकी क्पेंका करके, नेवाल बाता हुना मा नेवालने पहुँचा हुना पकड़ा कानेपा वसे इस अधिनियमके उस्तंपनका अपराधी माना बामेना परे अन्य रच्छके वितिरिक्त उपनिवेशसे हुडाया का सकेगा और वॅडित होनेपर पसे क मास तकवी तादी वंदकी सका दी का सकेवी; वरन्तु नपराचीकी क्पनिवेससे निकासनेके जिए जक्ता ५०-५० पॉडकी वो स्वीकरवीम बमानतें बैनेपर कि वह महीना-बरके मीतर उपनिवेसते बता बावेपा कैंग्यी सवापर वसल नहीं किया बायेगा। (५) को व्यक्ति इस विनियमकी भारा ३ के अनुसार विविद्ध प्रवेसावी कान धड़ेना परन्तु उन्त भाराची च्यवारा (व) (s) (घ) और (घ) के बन्दर न ब्रह्मा होया धर्मे निम्न ब्रह्मीयर नेउन्हमें जाने विवा बामेया : (क) वह ब्रह्मरनेचे च्यूने, इस नविनियमके अनुसार निवृत्त अविकारीके पास १ पाँडकी रकम अना करवा दे, (क) परि वह स्पन्ति मेटावर्गे आलेके बाद एक सप्ताइके अलर क्यमिकेन-प्रक्रिय या किती मिलाईटते यह प्रमानपत्र ते लेगा कि वह इत अविनियमकी निवेक-तीमार्से नहीं बाता तो उत्तके १ वीड थापस कर विये कार्येने (य) सबि वह एक सप्ताइके अन्वर ऐसा प्रमाक्पन नहीं से स्क्रिया तो उसके है थाँड अब्त कर किये बायेंचे और उसके तान निविध प्रवेदार्थी वैदा व्यवहार किया बाबेबा परस्तु को व्यक्ति इत धाराके अनुतार नेटाल आरोपा वह जिस बहाबसे सहकि किती सन्दरनाईने पतरा होया प्रसपर वा प्रतके नातिकाँपर किसी प्रकारका वासित्व नहीं भावेता। (६) को व्यक्ति इस अधिनियमके अनुतार निमृत्त किती अनि-कारीको किश्वाल दिला बेंगा कि में नेटालका पूर्व-निवाली हूं और में बारा (६) की अपचारा (व) (इ) (व) और (क) की नर्यांशमें नर्टें माता उसे निविद्ध प्रवेदार्थी नहीं माना वायेगा । (७) चौ व्यक्ति निविद्ध प्रवेशानी न होना सतकी क्लो और नासानिय शासक इस समिनिया^{की} किसी भी प्रतिकन्मते मुक्त चड्टेंगे। (८) जित बहाजते कोई भी निविध प्रवेद्याची प्रतारा साथेवा कसके मास्त्रर और मासिकीको नुवक-पुवक और सम्मिनित क्यमें बुर्नाता किया का सकेवा वह चुर्नाता एक सी वीड

स्ट्रॉलयचे कम नहीं होबा, बसे प्रवम पाँच प्रवेद्यापियोंकि पश्चात् प्रति पाँच प्रवेद्वार्षियोंके लिए १ पाँडके क्रिसामसे ५. पाँउतक बढ़ाया जा लकेया यह भूमीना सर्वोच्य न्यायास्त्रयके आवैशवर यस ब्रहायसे अमूल किया आ लकेमा और जनतक नह जहाज यह जुर्माना श जका देया और जनतक जलका मास्टर इस नियमके अनुसार नियुक्त किसी अधिकारीको यह निश्चय न करना देवा कि इसने प्रत्येक निविज्ञ प्रदेशानीको जावस से अलेकी व्यवस्था कर यो है सकतक उत्ते बहाते विवा होनेका अनुमतियत्र नहीं विधा कामैपा। (९) कोई भी निविद्ध प्रवेसावीं कोई व्यापार या पेका करनेके किए लाइ सेन्स पानेका अधिकारी नहीं होता। न वह बोई बसीन टेकेपर, मिल्कियतके क्यमें या जन्म प्रकार के सकेमा न सताविकारका प्रयोग कर सकेमा न किसी नगरका प्रतिनिधि निर्वाचित हो सकेना या बसके सतानिकारोंसे नाम किया सकेगा. और यदि उसे इस अधिनियमके विकास कोई लाइसेन्स मा मतामिकार मित चुके होंने तो थे रव नाने बार्नेने। (१) तरकार बारा इसी प्रयोजनसे समिक्स कोई भी शनिकारी किसी भी बहासके मास्तर, माकिक या एवेंटके साथ यह करार कर सकेगा कि वह नेटासमें नामें गमें किसी निविक मनेपार्थीको असके काल-वेपके किसी बन्दरगाहरक या बहुति समीवते किती बन्बरमाहतक से बाये। और कोई मी पुलिस अविकारी उस प्रवेशायींको बतके निजी सामान शक्ति उस अहाअपर सवार करा सकेंगा और परि वह ध्रवेगाची निर्मन हो तो उसे उस वहाजते उतरनेके परवात् अपने वीवभक्ती परिश्वितियोंके समुतार एक महीने तक निर्वाह करनेके लायक नकद धन दिया का सकेया। (११) वी क्यांका किथी निविद्ध प्रवेद्यार्वीकी इस अधिनियनके विजानीका करलेयन करनेमें सहायता करेगा उसे भी इस अविनियनका बक्तंपन करनेका सरराणी माना चायेगा । (१२) को स्थानत इस अधिनियमकी धारा ३ की क्यबारा (छ) के अनुसार निविद्ध प्रवेदावींकी नेटासमें भानेमें सहायता करेगा करें इस अविनियमके उपलंधकता अवरायी माना कायेगा और

र पर विरोधक जिल्ला करने स्वीकार क्षेत्रा वा करके स्वयं ११, १६ और १६ में स्वारतन राज्य कोच निकासका था। देखिल क्षेत्र २८०।

101

सवानतमें वैसा सिद्ध हो वालेपर उसे एक वर्ष सक्त क्षेत्र सकती सन यी का सकेगी। (१३) को व्यक्ति, उपनिवेश-सविव हारा हस्ताकरित तिकित या मुक्तित अधिकारपत्रके विना किसी पायक वा अध्यक्ति नेदासमें बायेगा क्से इस विविध्यमका उत्संदन करनेदासा सला बावेग और उसे भग्य दण्डके अतिरिक्त, अक्तक वह पागत या महत्तक इस वपनि वेडमें रहेना तबतक उतके भरभ-गेयमके किए उत्तरहामी टहराया बानेना (१४) कोई जी पुक्तिस अविकारी या इस अविनियनके अनुसार इत प्रयोजनके किए नियुक्त कन्य अधिकारी, इस अधिनियमकी भारा ५ की क्रतीका पासन्य रहते हुए, निविद्ध प्रवेशाचियोंकी स्वक्र वा कल-मार्गते नेदालने प्रविध्य होनेते रोक सकेगा। (१५) धर्कर वाहेवा तो सनव-सवयप इस समितियमके विवानीका पासन करवानेके सिए अधिकारियोंकी निमुस्ति कर सकेगा वन्हें अपनी इच्छानुसार हटा सकेवा और उनके कर्तम निर्वारित कर सकेया और उन अविकारियोंको बक्ते विनायके प्रवान अविकारी द्वारा समय-समयपर दिवें यसे बादेवोंका पाळन करना होता। (१६) तपरिवर धवर्गर चाहे तो इस अविनियमके विवालोंका अधिक अच्छी तरह पातन करवानेके किए समय-सबस्पर उनके नियमीपनियमींने संझोवन या परिवर्तन कर सकेया। (१७) इस अविनियमका या इसके अनुसार बनाये पर्ये नियमीपनियमॉका जस्तंपन करनेके तिए विया एथा बन्ध किन अपराजेंकि किए विक्रेंच क्यते अविक्र क्रेंचे बध्यका विवास कर रिवा भग है उन्हें डोक्कर, ५ वाँड बुमनि वा बदतक सुमन्तान पुकारा भागे तकतक साथी वा तकत कैंद वा चुमलि और तीन महीनेतककी कैंदते अविक नहीं होया। (१८) इस अविनियन या इक्के अवील अलाने यसे नियमोपनियमोंका अलंबन करनेके तब अपरावेंकि विदय और रै वींड सकते चुर्नानों या वसुनियोंकि सब सुकदमींवर, कार्रवाई करनेका सविकार मुक्तिवेदींको भोगा।

इस जीविनियमकी जनुसूत्री क एक दौरा प्रमानपत्र है; जिस व्यक्तिका भाग वसमें भर दिया जायेगा उसे "नेटाकमें प्रवेडके लिए योग्य और उसे

र पेकिए पुष्प स्टा

युक्त व्यक्ति" नाला कायेगाः अनुबूधी क उत्त प्रार्थनायकता कार्य है शिक्षे कि इस ऐनरके जनसते वरी होनेका वाना करनेवाले व्यक्तियोंकी अरुवा पड़ेगा।

से तीनों विशेषक धावर थीम ही विचारक किए समामीकी तरकारक सामने बावियों के विद्यापक स्वाप्त कार्येश विश्व कि हुन तो धावर सापने माविव्यों के विश्व के व

कि निम्न कदरणसं प्रकट डोता है। - मेटाब रडकरळीत्रारत प्रवासी प्रतिकल्पक सर्विनियमके नियसमें अपने १२ साथ १८९७के अफर्से सिवा है

पह जीमा-सारा और हैमानदारिका जमाम नहीं है, नवीरित हसमें हसके बास्तरिक ज्होसको किमाने बेटा की गई है, जीर जर्त स्वीकरा स्ती किया जा सकता है कब कि हस्तर जनत कहाई हमते किया बाते। हसके विज्ञानों की विद्या हमाने की माने किया कार्य। हसके विज्ञानिकों की ब्रिट्स किया निर्मा हो कहा प्रविद्या हमाने केसक एरियादायीके किट्स किया निर्मा हो कु एक हस्ती विशासे जनते क्रिक क्षणाय और जनीकिसकों कार्य हो व्यावेगे। यह वर्षनिकों एपि-सर्वा कीर जनीकिसकों कार्या है हो लक्ष्य हो कि हम एरियादाँ प्रवासी किरोसी विज्ञेषक चाहुमा है हो लक्ष्य हो कि हम एरियादाँ प्रवासी किरोसी विज्ञेषक चाहुमा है हो लक्ष्य हो कि हम प्रधान-सिर्मितिक सम्मानी सहस्ता हो तकते हैं वरण्य जक्षे हारा अपनार्थ पर पुल्लिबी

१ रेनिल पुर १८१-८४।

वन वर्षों ने बीडी विशेषक स्थोबार प्रणानन सम्यास की बेन्सनोबादी जुलाई व् १८५७ का एक प्रार्थनवर्ष केंग्रा नवा। विनेत्र कुछ कृष्ट और वृद्द १--७८ ।

कि दा केंद्रेजीने अपनी सहाई सार कहने और "विक्रिय सरकारपर स्कृत

तानने" की कड़ी-बड़ी कार्त कड़कर की। इस योग्य कास्टर ताक्की विकास दिला सकते हैं कि इस प्रकारकी कार्योते सुविकारी उपनिवेत्रियोंकी सकत्त ही होती है।

क्सी सरपडी पूरिके लिए पालवाजी और वोडोबाबीका सहारा सेनेसे बदकर विशिव सोर्पोकी साहवाजीको स्टोडिट करनेवाकी बाट बीर

समूर्व धंबी शहनव

नकरत ही होती है। नैसास विस्तेशने अपने फरवरी २७ १८९७ के अंकर्में किया ना

lwv.

कोई नहीं हो सकती और उपनिषेधमें प्रवेशवर प्रशिवण लगलेवाम प्रवृ विवेशक, बारतिविक उद्देशको बालावियोति क्रियलेका एक विश्ववीय प्रवल है। ऐते प्रयापीका सहारा लेकर उपनिषेध स्थान और वृक्षरिका भी सम्माल को बैठेगा।

विश्वीमिटिया प्राय्वीमोंको इस जिलके सम्बन्धे वही एक्सेकी वर्षा कर्यो हुए प्रकृत भाक्ष नैप्रक्रमे २५ करवाणिक बंक्से स्थित या इससे सावारकत्या सारे प्रयक्तिकों क्लंबसित अब्ब होती है। सभी बारते हैं कि विश्विदिया बारतीय प्रपतिकेश्व वस काले हैं और विश्

भी सब घर उससे कम निर्वावकोंकी एक बहुत बही बहु-संक्या मिरसिसिया भारतीमोंकी यहाँ बुक्तमेंका निरक्षण किसे हुए है। इस असंतरिकों और प्रमान परी निमा मही एह एकता और इससे एकस प्रकार हो मता है कि इस तारे मध्यपर मोक्सत किराना बेंटा हुमा है। मारतीमीन निष्का असरीत हर कारण को बसती है कि वे अक्षानी है, वे सुनियों और कारी-परिक क्समें हुमतेश मुक्तमाना करते हैं, और प्रमारणों में वे मिरसि सिंद्य होते हैं। यह लगरमीन है कि हालमें कर्ममां को हतमक हुई में उसमें मध्यनकरामोंकी मोड़ वेकसोम-बेसे हुक मारतीमोंको सेमर नारी

धिद्ध होते हैं। यह लगाणीय है कि हातमें उर्वणमें जो हात्रक हाँ वो सामें प्रदर्भाषयीजींकी भीत्र वेद्यानीजानीये कुछ मारतीयोध्ये लेकर जाये हुए एक ब्यानकी तरफ इस इरावेरों का पढ़ी की कि उन्हें करारीये रीक है। ऐसे परिवार क्लियोंने जानाज म्यानकर स्वाह कि ये नारतीय की ध्यायरी है और भीड़ समुख्य हो गई। वह बदना हाला बरातानेके निम्न काफी है कि उपनिवेदार्थ हुनिस्पेल प्रदेशका विरोध बनायांके बेदक एक मान हारा किया बाता है। थे ऐसी बुराईको राक्त्रेका दावा करते हैं जो कि मौजूद है ही नही। इतता ही नहीं यदि समाजीको सरकारने उपनिवेधमें बसे हुए बिटिस भारतीय प्रवाजनोंकी तरफसे बस्तन्याजी न की वो भारतीय-विरोधी कानुनोंका मन्त कहीं भी नहीं होगा। धहरोंके कारपोरेयनोंने सरकारसे प्रार्थना की है कि

हमें भारतीय कोगॉको पयक बस्तिमोमें हटा देते. उन्हें स्थापार या पेरोके परवान देनेसे इनकार कर देने (यह बात ऊपर उद्घठ विदेयकों में से भी दक्से पूरी हो वाती है) और भारतीयोंके हान जनके सम्पत्ति बेचन या उनके नामगर त्रभीत करनेसे इनकार कर देनेका अधिकार दिया जाये। विश्वास किया

भाता है कि सरकारने इनमें से प्रथम और मन्तिन माँगका कोई उत्साहजनक कत्तर नहीं दिया फिर भी में मीयें तो बनी ही है और इमका नया विकास कि मान सरकारका भूकाव पूछ कारबाँसे जिन मौगीको पूरा करनवा नहीं है. उनके प्रति उनका सकाव सदा इसी प्रकारका धरेगा। अन्तर्ने प्राविवोंका निर्वेदन है कि उत्पर जिन घटनाओंका वर्णन किया वया

है और जिन प्रतिवश्यक कानुनोंके मिक्पार्ने बनाय जानेका अनुमान समाया बंदा है उनको ध्वानमें रलकर या तो बिटिए भारतीय प्रवादनोंकी स्वितिक विषयमें समयपर नीतिकी एक भीवना कर की बाद या अपर जिस करीनेका विक सामा है जन पुन पुष्ट कर दिया आये जिससे कि शास-उपनिकास बसे हुए नमाभीके बिटिया भारतीय प्रजाननींगर सगी हुई पावन्तियों हुन

भी जायें और मनिष्यमें नोई नई नार्वास्त्यों न समाई जायें। अनना उननी एती महायदा की बाये जिनसे जनके नाम न्याय हो नके। और स्थान तना दयाने इस नामेंके निए, आपके प्राची अपना नर्तस्य

मानगर, तथा दुवा गरेंपे।

मध्युमवरीय हात्री सान्य (दाना बम्दुस्मा ऍट कम्पनी) व्यव स्थापित सम्ब

परिक्षिष्ट

(परिक्षिण्ड क) सकत

मित्रशर्फ इस सार्वजनिक पत्र हारा जिल किल्हीं क्रोग्रेका इससे कीई स्त्रान

[कासरी २५ १८९७]

हो का लग्जी विरिक्त और एक्ट कराया याता है कि बाज हमारे उन्ह रंजनायित्र पर हमार बाह ती राज्यांचेरी वर्षके करवारी जागके कन्यीवर्णे दिसा केराक अमितेर्य कर्मके कोशी चर्मकड शुक्र करता हमार इन्कें राम्युक्त कीर करतायुक्तांची नामाणी कर्मकितिर्गित क्षी वरणवार्षके तथा रात माराव नेटाकके हमा वन्यायाद्वके प्रीवरी अम्मे औं हुए कहा जा वा जामान्त करते हमें वनक तथा हुए बार्डक्यर जामां कुर्वक की साराव्येतिकार और कामान्त कर्मकेडक सिन्देने स्वयं जामार और वेच होत्रक की साराव्येतिकार और कामान्त कर्मकेडक सिन्देने स्वयं जामार और वेच होत्रक हमान्य करते की तथा वस्त्र दिया:

कत्ता नहान क्रिकीस नावारण नाक और १५५ वाडी बारबर कर व नात्त्रकी वास्त्रीय नार्यवादी कहा था और समेदी रिकार १८५६से १८वें रिज नार्यवादी ६ पंतर १५ मिनवर दश नगरावादी वादर क्षेत्र कावा वादमी राज्ञा होनेके दानी स्त्राचारी और वाविदेशेस क्षितीक्ष्म और स्थिती कावी अने रहत्वा होनेके क्षेत्र नगरावादी नेतारिया क्षाप्त कर पुत्रनेस माणावाद

हों है दिया क्या था।

नहीं बारावें तर बारी और स्त्याद बालेड श्यादके हैंक्कों सर्वता हुन्त देश

भीर तात यादि बारियाँके दिसम्भवालोकी लख्यें इसाहरी और वीपीय देश

होगा का बीनेरित कारेराकों निकार्युक्त दिया बाता रहा। और त्या पर्युक्ते

पर हता केंग्र दोनेगों वास्तियों बारावें इस शोलांके स्वावता-स्वावती स्वावता

यर द्वार को दोना। वर्गालन व्यावक कर कामक स्वयानक्यां व्यवस्थ क्ष्मतान वर्गालकोक स्वायन संस्थादित द्वार्ड यह दिने क्षेत्र कुछ ये होनेगर्ने वर्गालने दुपनेसा राज्यत प्रतिकारीने दुने व्यित्त दिशा कि करा वाणा सामक द्वाराव स्व सर्वेण स्वायन कि स्वी वर्गाने के यह सित वर्षों की यहँवे। व्यवस्थात पुरुषो स्वा के सुधिनेशको नासस्य वर्गालनस्थाल केया स्वी

रण रजोडी नवी होती मां ती हैं और दुछ साबी क्रेस्ट करनेस करून साब मनते हैं "ब्हाबरी लाते और भीति हांग गोतनक नाम स्टोरेसाने किने

ना रह है।

रिक्का ११को त्या के। श्रीदेशनेने तरका कि निम्ब स्वित-पन्देश मैगा इमारी सर्वादे पूरी हो पत्रे हैं। क्यू कर इन द्यापने निफल पते हैं। क्रमाध्यक्षिकानि सम्बद्ध क्षीतिय । क्रमाय क्ष्म सम्बद्ध है । प्रमास । रान्ध्य वह नहार क्षिपः " बारबडी विकार मन्त्रक तम नहीं हुई।" बारमेके हम

चार दिलोजें उत्ता वेण होनेनाके व्यासकी स्टाई और शोधन अंतिदिन विवा जाता

रहा और शुरुष्कर निवर्गोच्य सन्दर बडोरक्कमें किया बाता रहा । रिसन्दर १३६ी क्या रेड बोबेककेने का सीज-मनेश मेग पानी दिना

शंक्रमें हैं । बोहफे किए बास चाहित । बहाबरू कुन न्वरमना है । मारिकासि करिए हमें बराइने शुक्रनेक कुछ बक्त करें। दस्का नात वह किय मानिकांची राष्ट्रमें वानी मारमें तैवार कर ती। सहक्रमें ब्रूटनेकी कर आव

दुष्पर मिक्रनेडी बाद्या है। यान कठ तुवर निर्देगे। बाएके पान बाक है स्वा ! रिप्प्पर २४को स्वतस्य-अविकाश बाह्यकर आद्य और उनने आजा श्री कि सर पूरानी पहिला जाने विचले और पूराने बरहे अन्य दानो जान-मोदामके बजी

री और असरी मदेशी ब्यामी जन बस्ते के कुर रिकामा और करका छोपन करें मानदी पीत्र सविवदि नमाईते अन्य एको 🔫 सविवदि परन्येके सुरहे पर्वोक्ति रेमिक्सें तुराबी दावियोधी भी इन देमिल्डे इनके बोच्ये बहराको और स्टासको रीनले मक्त राजेडे कि और जी को दरना आवरबढ़ हो भी करो । अनदे क

भी बता कि बताब मानबी गारीमाने ११ दिन तक रहात । रिक्ला १५को चतिरोंके विद्यानेकी गुरानी पहिला क्या बाबी वह और

बारिबर्कि राजेके कर स्थानी राज्यन्ती और नेप्रायन्तीमा प्राप्त करके रूपरी 4रा पी नर्धा रिमम्बर १६को वाचिरोचा अरहाक्य बनके शहरतेने करत कार्योक्षक नेमित्रक

इंडके बोर्चने देशने गो । तरफ वह मंदित-स्पोश केंग थवा "बाजीके दिला नंबारे हैं। कुल नेती । बाह बरिवारींट अक्रानुमार वातेक क्या स्वास्त्र औ। बीरोपी उपार देनेने भी बचा दारे अवचन है ? मुम्ब-अधिवारी सी दसरी किन ही पुष है। नहारत कुन राज्यता है और मुख्य-मविद्यारिकी मानामीय बाल्य दिया का रता है। इसे करी नगली। क्ली देतीने बहुता बरण बुद्धी है।

VALUE 1" रिमान १७६) इस केंग्र होनेर देने तिर वह अधिग्रान्नता रिया । अन बार मणी हो पीट मेंब रहे हैं या नहीं। सन्तर मंदिन-केंद्र पर निमन स्टेन

रिज्याद गा बाली दन शह ६ दत्र वरचारेख ब्रचन दिया है। तर

सम्बन्ध गांची वाजमन

क्त देश दोनेनाकेने वह **द्वा_{य सम्}केत केंदा किया औ**र शिरम्तर दो बंटे **एक** स्पे

444

केंगा रखा पानीके निवा संबदने हैं। क्याकडी स्लाई और दोवनक कर पूर्वेतए कडोरताचे किया व्यक्ता रहाः रिसम्बर २८को वह संकित-सम्बेद्ध दिशा नहा स्वित्तरको और किस्मिने

धमा थागी इर्ड एन चीनें मेनो। चोहोंको स्वारनेके एन्टरनों डिचन्छ औ। रिकी ११ पत्रे सामान पुरानेशाची भाष-बाँका मेदाक आब्द बहाबकी राजनी वनी नीर शोपनके किए कार्येक्सि वेशित और कृती क्यानेके किए गुल्का सूचा गर्रे । ण्य प्रक्रित-मधिकारीने भी ब्याजनर माकर रव औषधिबोधा प्रवेल रोते हैंगा। इप राज्य चनौ भी क्लानपर क्लाबा क्या। वहानको सन्त्ये द्वप तत्वकरी कृती वृत् थी परे, बनर और भीचेडी प्रतोदो कार्वेन्डिड देशिको दरी तथा यो साम नग मीर भरे ब्यायमें रही बन्तुसाहरू औत्तिका प्रयोग विद्या नहा। तर निष्ठीने पहिंच नेके बोबरे, और सन्य जी किस दिली समानसे रोजबी कर क्लानेना कर ही सन्द

मा वह सन बहाबडी भरडीमें केंद्र दिशा पदा ।

तिसम्बर १९की बहानके कम-औरकेडी क्रमें दिए अवस्थित देशिको पीर्ट माँ मेर चरानके भाग मनामें भी बही मौतियदा हुने हाथी प्रशेष किया गया। क्ला पेर होने समेने वह संकित-समीश कार स्थापा : वृत्री और होपनके सामेंसे नहार-नः मौजूर अभिचारीको सन्ताह कर रिकाः नताक-अधिकारीको बकरन यनर हैं ।" चार बंदे बाद १ बाँग करत वेश दोनेवालेने फिर छटचर सम्बेध मैता । "बम रीवार 🗓 सुतक-अविद्यारीक्ष इस्तुमार है। ३-३ वर्षे अवन्तीक स्वर्तन नदामडी बालमें आई और सुलद-मिष्डारीडी बदाबरर छोड़ नई । बतने सारै बदाबाड़ जिल्ला बरनेके परनात पुत्र तत्त्वीप बच्च दिना दि मेरी बाजाओंका पातन बान बच्छी तरह दिया नशा है। बरना बड़ा कि बहाबड़ी जानडी सारीपते १६

दिन तक और शुरुकों रहता पर्ता । ३ नमें किए वह सन्देश केंदा किस गर्ना सरदारही आजाने तर चारियोंके विलादे केंद्र दिने तने लाखारी आपना है कि वने रिक्तरे तान्त है । उनके विजा वाहिरोध्य भीरत संबदने हैं । हमें किंद्रित हिराशन शाहित कि सुनक बननक रहेना नरोकि अराजी नताना तथा साल सालक अधिकारीके दर बार आजेके साथ शरकता रहता है। दर्ग बीच बीमार कोई भी नहीं बस । मरहारही भूपना है हि बसने इस बावसि पने तसी प्रतिशित हमारे कराबार शोधम दोना रहा है। हं मुर्पिया और हर मेरे मेरी । " कराबनी मार्ग और होधन बडोन्तापुर्वेड चन्ता रहा ।

अराव हो । बाबी ब्लारना चाहते हैं और तरभर सहाक बरने रहनेका सपना सर्च कार कार्यको सेवस है। दिसमार कृतको जनत नेश शीवेशांकेने किए वह समित-सम्बंध मैया । मारका

विवार मेरे समयगर और अन्ते रुन्देशीय बताव यह वर्ष देनेया है वा नहीं है नदानहीं सहाई और शीवन इनेशादी वरह बहोदासे दिया का रहा है।

क्यारी १ २ ३ ४ ५, इ. ७ और ८ स्नू १८५७को मितिहिन स्परे अवाजधी परी सदर्म धोपन और इसा रूपानेते बाम किने बती रहे और स्टाब्फे निकारिय क्योरताचे शतन किया नवा ।

अन्तरी १को भी लडाई और शोवन किर किश क्या । ५-३ वर्षे हामधी नेता भारतीय हात उस्त केत होनेश्तीको माहिकोची कांकरी भी मांबीडी आएका रह बाधवड़ा रह मित्र कि इन्हरी राह माहारे दिया बहानकी तिमाना को तल क्योंकि मरातीय वातियोंके किय जानका सनारा है। वातियोंको इतातेशी समयति भिष् गानैके परचार भी नदाक्को आगे म बदाबा करें ।

कतारी १ को यह सम्पेश केंबा किया गया । यहां किर शहास है। बार बुरोपीन बाहिनोंको रकरम नगरना चारणा हू । यानी और मानन-समझी भी और नेतो । योते बनारनेके गारेने क्या विकास है। याद्य मेतो । याद्य को कि इस म्म स्वरंत है। " में मन तम्बेड तहता पूरी तरह तको नाते रहे और हव साफे मनारवे शाची करर कार्म मानी रही । सदार्थ और शोवन वधावर्थ किया गया । कररी ११४) मान्य-विदारी न्यावार बादा और वास्तिको क्लारनेश अनुविद्या है नदा । है। नहें दुरहरही महन्तीधा नेटान से ब्लाहरू ४ ८ नेतन रामी श्रृंबाचा । पर बूरोसीर बाती यह रूप्येश क्रेंबा करनेके नार विमान क्षम करत कर यो " को बुराधिक कवियों है। सरल क्लूबरेंसे जेकन श्रमक्त कर रही है। दिशासन मेजी। ४ वजे गटकर लेकेन-स्टेश बदाने सबे चन्न शरमेके घर। बन्ध बननर नशमा नहीं या तथा। नर्धा और शोधन

और मीताबोधी दशा देनेके बाम नाम्मीने किने मते । यद दश मिला किन्यूर गानितिके अन्तव' हैरी न्यानोंके बन्तानर में । यह बनके राम आपी है और कन्पर द " रिद्व घर दिशा है। बनदी नहनें भी दन जनदी जदन्यद नार सन्त

र देजिर परिस्थित करू क्या १८१ ।

सम्पूण वांबी बाहमन

76 पी गर्द हैं। रष्ट पाने रुपके क्षण संख्या कुछ कानकत मैत्रनेशी करा किये थे,

परना में कात पेत्र शोबेसकेका मिक्के नहीं। मनसरी १२को छामके ४-१ वर्षे सम्बद्धं और इक्षा देने वारिका क्रम इमेसकी एस भी मानेके कर एउपर बह सबेश-सबोब केंबा बढ़ा हजा दिलाई दिव

बन रक्ता होता । क्लानरी १६को प्रात्त ७-१ को क्लाक्स मार्गवर्जक गार्थन क्लाज बीवनेताने सरदारी सीचा चर्चिक कारा माना सीर क्रमवे अन्त केश क्रोनेनाकेको बंगर उपाधर

१ -२ वर्षे वन्दरमञ्जूषे दानिक दानेके किय रीभार रहनेकी माला थी। वह बन्दरकारे करामंद्री बारकन सरकारको स्था बाह्य भी। बाँद बरोबि जनत देश होनेसकेके तमा कालाव 'के वारिकारी विभावत की कि बामारी एक बायतक किया गाँउ मत सरकता. इसकिर अपने करायरे वार्तराईड मार्चेको धार्वप की कि जल बार्विकीची भूकता दे हैं कि में सरकारकी नामासे नन्दरनावमें दाविक की दश है। ११-५ की सराज्ञा सर्वरार्जेट स्थान लॉबनेशकी बीजा दिनाई दिया असा दिए साथा। स्थानका क्स मीदाके साथ क्षेत्र बना और सोमाके यह बाँच के बाधा बचा। १९~४५ नजे नेरहरी लंगर बाप रिचा रान्त और अराज्यों फलरारोंके पक्षके साथ क्या रिचा वरा । १-१५ वत्रे स्वतिवेशके क्यान्यक्यानी हो। एकः एएकम बन्यात्वके क्याक्रके सर्व गाउँ भीर उस्त केश बोनेवालेसे सब वालियोची वह बाँचना बेनेवा अनुरोत दिया कि ने सन नेगल-एएकारकी रक्षाने हैं और वे अपने आपको नहीं। अपना ही सर्वेश्वर राजनें कितना कि अपने अध्योग प्रामीने । ३ वर्षे वन्यस्ताहके बन्तालने आसा निकी कि

वातियोची सामगा है भी काहे कि वे अगरवेके किए सत्तामा है। भीर जन्म अधेरीकर विकोधे कर यो बांचक की दि १९ जनकांको ककी शहर क्ला स्थाप इस बन्दरव्यक्ति जीनरी मार्गने आगर वर्नेचा ससी २३ कलारींड बन्दरन्यात नाम की बादक बनान हैक्केंद्र बनाव बाता है हो होने रहते हैं कि रिसा दिया नवा। इसी बीच पूनरे ज्याब आने मीर कहीं बादकर न्यान है दिया नवा। बन्तालको बन्दाको स्था केन बीनेक्टरेर त्याप वस प्रचलके ब्यालाका करण

बनवारेंने भी स्थाप्त वर विद्या कारी रह की जबन केन होनेताल सकेरीयर मिलने प्रतिके लोगी केरलीय बोक्टर में सबके करमन है। इसा. और उसने मधना महिनार निमारण किस्ता दिया।

प्रश्न केंग्र बोजेगाना और मैं दक्त धीरते भी सरकार वा स्वयंत्री अधिकारित के बन्त नानी और उनके कारन दूर गरे मुक्तमार और बानिने निष्ट गरिनाह नरते हैं।

ध्य प्रदर्भ, प्रांत देवली, वर्ष्युचा रिज, महीने मेरे वर्षको यहा राज्यव हरोदाने नाहर्षको इस्तेमिनी दिशा मेरे ब्यून हरण निर्मारित क्यों निज्यार रोहल विधा नया। (ह) मोर्च्छे पिचर, (ह) बॉर्च गृहर्षिक (ह) जॉर्च गृहर्षिक (ह) बॉर्च गृहर्षिक (ह) जॉर्च एम इक्त मोदरी प्रक्रिक (प्राणिन्य क्यू) महस्त्र वन्तरी ८ (८९७ वन्नान मिन्ने सर्चेत्र सात्र

वाबतावय जी चेम्सप्रेतको

265

चार समार्थ गय न देशा और व आपके वारियोची हो होगा कि रहर कुछ स्वारे सीम्प्राएगों साम्ब्रमांके निया समार्थ गये स्वारंग गये आहे. यह स्वारंग गरें हैं । आहे बार प्रश्नेत व्योक्तित तकरों हो हैं और संस्था स्वारंग कुले करता पूर्व चाल दिने को हैं। तम नवारोंने सारियों पानी निषद जी कि को लेगा रहते लंगाया होते चारों है है तम समार्थने सारियों प्रतान सिक्त होते में निष्य नहीं हो करे। प्रश्नों बार नार्येक स्वित्तने हसार्थ करते समार्थ स्वारंग सार्थ करता है है हि

विव स्वापन

न हो। अनीने नहीं अपनिया नाम दिया तो निम्मून निराद है कि वह दल्कर होगर ऐसी। जनके पानी नहींनी माहनानंत्री जनतन हैं और मनदन्तनेनें ही वह। या उसे हैं भीर हमें नास्पानांत्री मानून हुआ है कि वहि जाती जातने जातनी अनत संप्र जन्म पारें का स्वास तार्च नार्दिना है कि वहि जातने जातनी अनत संप्र जन्म पारें का सकता तार्च नार्दिना है कि वहि

प्रश्न इच्छा है कि बड़ि मध्या हो तो इच्छारे लोगों और अन्तरे स्टियों में इसर

२४१ सम्पूर्णनीयी बार्श्य

राजिए नहिं हो बहानों बारण जानेते रहते हो जानके पाणी पर वर्ण किंक बने को हमें मुझी होगी कि जानके नारी बनानेत्रके बर्णनर पाण केंद्र बना राज्य करेंगे था, वहाँ वो हमारों बाहते करते बनानेत्र हिये बहरेस केंद्रिय केंद्रिय केंद्रिय केंद्रिय केंद्रिय केंद्री दीवार को हैं बनाय सामा करते ने कारणात्री कारनेत्र प्रकास कारा पाणि

> (ह) **है** से स्वानमें समितिका अध्यक्

लाक्य संस्था

(परिज्ञिप्द सः) सक्तर

[कलरी ११ १८९७] मिरिसारके इस सर्वेतनिक १४ व्याप निन कियों क्रोनोक्स रहते की हामान्य ही

वन त्यारी विरिध्य और रख्य कराय बाता है कि मान इसके मह तंत्रस्तानिक रूप इसर माद जी तम्मानीर वर्षके जनगरी सामीन स्वीति दिन दिस्ता वर्षनीतिकों, वर्षनीक मोदी प्रतिकृत हमा कर द्वार इसके समुद्धा प्रतिकृत स्वतान स्वातान स्वीताने सामीको करिनेदिने वर्षाके स्वतानाहिक यादा त्याप कर वर्षाका स्वीतान क्षेत्री स्वतान क्षेत्र हम् इस्तिवानी को इस्तु १९६८ रह देन वा क्याप्ता काले ही बनाव क्षीत हर हम्सीवानी सन्दान काला में सामानीतिका स्वातानाहिक क्षाप्ता काला काला क्षाप्ता मान

नेता होता, प्रत्यपूर्वक मीरामा करके जिल्ला पात्रण हिंदा : जाना ज्ञारण विकीधा स्वत्यास्य सात्र और हुन, आपी आएका स्वा वृ [१८]] अञ्चलको वास्त्रिक स्वत्यास्य सात्र और उसने विस्त्या १८०६ के १८ वें स्वि

बराबरात बन्दार बनावर का या भार जान (एक्सर १८४६ के १८४ पन इन्दरात हा बरावराद बार बेन्द्र का गांच बनाने राज्य होनेने कार्य कार्य में प्राप्त कार्य कार्य

हे दिया बना था। सरी बातने तब रूपेरोडो प्रोप्तर तथ बादी और अल्पाद रोजने तुल्य है। बग रूपेरोडे डीए बस बने हैं। पाला १५ (क्लिपड़ी प्राप्तर को केलार क्ल्पाय

का त्यार्वक रात्र क्या का का का प्रत्य () (त्यायरक व्याव्यक का स्वाव्य का का दि को त्यार और दुरोंदी बोर्च काली दूर्ग केलारी हैं और उसीक व्याव्य क रिक्त्याबी कर जा नहां। वहीं वर्ष्ट्रेनिय उसर का दीनेराके व्यक्तिक व्यक्ति व्यक्ति कर रिते, और जब्द केंग्र होनेसाओं ब्यानिकों पूक्तिता लासकामानिकारीने करेंग् विकास शो कि काल क्यानको गाँव रित स्थापने राम क्योना किस्ते कि सम्बन्धि स्थापनारे सम्बन्धि सम्बन्धि केंद्र २१ दिन पूरे हो वार्षे ।

असके दिए व्यानकी इन्हें बॉट वाविकों तथा सरुप्रकृषिः निवसस्थान कोने जीर सोविक किने पने।

रिसम्बर र को बहानकी क्षर्य और करियों तथा मरूबाईकि निवास-स्थान को बाग्ने मने और एक्टी हुक्ते किरे तक ब्लाब्स पूरी तथा गोपन कर रिका पथा। रिसम्बर ११ को बहान को बाग्न कहा और सब स्थानकों व व्यक्ति नारिका पूरी

राम होतन इन रिच क्या और सहाबड़े किस्तोचा बळेगाले पानन किया क्या रियम्पर १९ को को बोर्ड को को स्टब्स्टरों व स्मृतो आदिका औमरियो साम प्रोपन किया रुप।

भिन रीच रिनिष्टे स्थिर खानको स्थानकारिकारी हाए च्याको स्था पर पा जनते स्थापन हो व्यक्ति स्थापके रिकारीय क्रमियानी स्थापन विश्व चा पुषके या स्थापने होनेत्रकीने व्यक्ति व्यक्तिकार विश्व क्षित्र क्षित्र — ब्याविन रिवार क्षेत्र होता हाएव क्यार रिकिट। " हाम्य करत वह सिल्य "च्याकरी वारिका विश्वेष नानी एक स्था हुआ।

रिसम्बर ११ को छण तुम्बास्य और तम स्थानकों और प्रतियोध कन्युक्तप्रध और सिर्फिये ग्रोपन कराय, कन नेया रोजेसकेने सक्यों किर बस् छन्देश रिशा — बालको विश्वने नवा रहा ? " रहाय करान क्रिया — बहुद्ध-करियारीकी दिशाली कामी कुछ भी नहीं ।

ला!" तथा बार क्षेत्र "वास्थानेकारीयो बेहाका नार्य हुए में नही। सिक्ता १४ के को में में में में में स्वान्तरीय मीतिया हुए हो एक किया बा। वही दिव, स्वान्त्र-मिक्सी और दुनिक्क्ष्मितिया व्यान्तर नार्य क्ष्मित्र नार्या के बीहरीयो एक्स्प्र स्वान्त्र मिक्स मिल्ला किया और न्यान्त्रय पूरी वार होत्त्र स्वान्त्रय। त्यान्त्र स्वान्त्रिक देशित और स्वान्त्रिक सारक्ष्मित्र प्रारम्य स्वान्त्रय प्रारम्य स्वान्त्र स्वान्त्रया। स्वान्त्र्यम्भीत्रयाचीयो दिहासको वास्त्रिके स्वान्त्र है कही बहुद्द राम्प्रीत्ता और मन्य केस्प्र पीत्र न्यान्त्रयो नार्मित्र कर बार्य का और बार दिवस्त्र वित्र स्वान्त्र भीत्र मन्य क्षित्र पीत्र न्यान्त्रयो नार्मित्र कर बार्य का नीत्र स्वान्त्रयो कर्मात्रास्त्र स्वान्त्रयो कर्मात्रस्त्र स्वान्त्रया स्वान्त्या स्वान्त्रया स्

रिक्तर १५ को स्था और प्रोधी स्थ प्रते स्थानस्थानिक स्थानिक स्थानस्थानिक स्यानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्यानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्थानिक स्थानस्

र जाग कार्रोंनेफ देशित और २ जान शारीकि बांग्से को बानी नव । विकास १६ को एमें कोई नई स्वात-सरोधा औत्तरिसे होतन किया क्या और

प्तारके निकाभ कानेताले पात्र क्या थया।

देशित और र भाग पानींसे बोलसे सोबंधी गाँ। दिसम्बर र८ को बात्री और क्रोडी छनें कार्तीकड परिता और पानींके बोलसे पोर्से

3 CY

र्ज । स्वान्नवर्धने सहेवी करवाई वर्ष । और नाम तक ब्राह्मके तिवर्धक करियार पान्न दिया गया वाहिराई विकीत नितान और न्या तैके करवेदी ब्याहमी पूर्वि मान्य क्यान नाम और कर व्यक्तिक करिये के क्रिकेट करवाई मी नाम नाम्य प्रान्त प्रान्त । पी गाँ। तम केर बन्द कर देवे एवं मीर सार्थ ५-१ तमे तक नाम्यो क्या आ क्या। तम्बादिक प्रदेश स्वाद स्वी तिक, दूवरे राज्येये वोटारीं राज्यक्ती भीर नामेक्टी भी बच्चे करवाई को का वाहित और तमान्यक्ती भी क्या नेत्रके नास्वादा करा। कर्षे भी क्यानी गई और वाहियोंक तम नियमन्त्राच कर बोक्टे स्वाद किरो मी क्या कर्षे भी क्यानी गई और वाहियोंक तम नियमन्त्राच कर बोक्टे स्व

रितम्बर १९ को कह रूनेचा ठरमर मैचा गया "योशनकार्य स्थापना मण्यिकी प्राचनीके स्थापना युग्त स्थापना स्थापन स्थापना स्थापन स्थापना स्थापना स्थापना स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन

रियम्बर इ. को मह स्वीवन्त्रमध्येष्ठ तरमा मेळ यथा "रुक्याने करों कि मी कर अपने सम्मा दिने हैं जानी माळ हिरता १५ करमा तेन है। यानिकोधी कर्मा दिया करा क्या है। बार्टा वर्मी दुरता कार यो। नामी दारी मीर कारी मीति है। जा है कि दम्मी करमा कर्ती तीमारी म क्षेत्र वाने। स्वतारी १ को बात तेन होनेसामेचे त्याची बद्दा शिका-स्मीत भीमा "याम्ब

करती ९ को कर्य के होनेतानेचे क्षत्रके वह श्रीकानकेक भेगा "याण्य हमारा हो क्या। चलितोचे कारतेची हसका उसे वह निकेशी हत्त्वा कार इंडिका

करारी ११ को शास्त्वनाविद्यारी बहानार बात्या और कांस्विकी कारतेनी शास्त्रा है गया। बहाना बंगा करार दिया गया। सक्तर केंद्र होनेसांबेट अपने मोनी अनुसर्व मेंत्री शर्या दुविन्साविक्षारी करेंद्र व्याप्त-साम्बेनी स्वन्य है तर प्रेति है तर करार कर है है। गया। "नेदान अर्थाव्यक्षी केंद्र अपना इसने कांस्व या नाइन क्षणाया और सरावाहके सार्वे को व्याप्त होंद्र दो और क्षण कैमिल क्षणा नाइन कांस्वा है स्वया कि हुए गया स्वया विश्वेत सार्वे मानिक

कलरी १९ को वस्त्रे कोई क्याय नहीं मित्र ।

मतन्त्री १३ को "चर्चिक बद सम्बन्धरी माला केवर माना कि १ -- इ बढ़े पाल तहरूर मानेके किए तैवार खना । सुने-नारच बजे दम पहा दोनेकाडेके अक्षाबो संबद्ध बाल्य सीर पष्ट "समीत "सी पालने व्या सना। १८-३ पत्र दशराज्यके क्षणावस बाजा किये कि वानिकोची बाला हो कि करही क्रारंकी tentrum É :

भीर अब बढ़ पेरा दोनेदालन और मैं बच्च मोटरी मी सन्दार का सरकारी मधिश्राप्तिक रूप बार्यों और समय बारा पुर नहीं मुख्यान और माइके विन्यू धारिकार अपने हैं।

रत बस्य दर्वन नेपाली, जन्देका दिन, क्योंने और दर्वकी बदा दरतावा करनेराने नगरांको उपस्थितिमें क्षिया और कामून हाय नियारित कपमें नियार रशीवत क्रिया गया ।

यक्त

(ह) जॉर्व नहरिक

(इ) गांडके बन्हर [मिन्हर]

(ह) कै वॉ रेफिन वस्त श्रयक-धार्त

(ह) बॉन एक कुक सोसी संस्थ

(वृतिभाष्ट ग) नवत

rla रिव्यक्त १९ १८९६

रशास्त्र अधिपात्री क्षेत्र नेतल

Ard.

नारगै जहां ग

पिक व्यक्तिक

वनने भार बान:दानने समन्ता में पहा कि उस्त क्लाओ बीमारी क्षेत्र क्ला थी । रामित वर्षे का देवार वहन अपवष हो गा है कि उसे समादे राज्यों ता ru I .

258 तुन्द्रभ नांची नाहस्य करी काल्डे किए इस मारडी कुछ क्रम मार्वेसे ।

आपने सक्ते. (इ.) बादा समस्या रॉड कम्परी

(नरिशिष्ट पः)

मार को साक्ष्में स्वयंत्र करन सावार हो जाने तो इमें बहुत प्राप्ताता होयी।

नकत

(तार)

विशासक करा १८५६

नेरकः व्हें सन

हेवाचे वपनिवेश-स्थित

देशिकानी

"क्रहेंव" और "बाररी | यो स्थान दिवने स्वाप्तिको कर और व ! तारीकोको सम्बंधि चन्नभर गत सुन्दरारको वहाँ चुँचे । क्याँ बीवारी बोर्ड सहाँ वी । पिर मी रोजों करी दिन इरवादरित परना करके दिन समित कोरक दारा **पाट**कों एक दिने को । मैं मान्तिके तरको मानेर स्रोतको साम बार्वजन तेवत का सा है। मीर विकारकारों केंद्र करके भीर कांग्रेसकी हैंशिक्से शामिर होसर वरस्तान कार्या हैं कि बार्यको हरिसे कर मानल कियरे निरिष्ट सकरका है। में कर नर्तना मी करना चलता है कि बताब बरना दिना नाने। रोचके बारण माहिकोकी क्षेत्रनी चींड अविधितका गुक्कान को पता है। और "बासी को हो स्वरिष्ठको कर्न्य वर्ष मिरले पर रामान के बानेके किए तब किया का लुद्ध है। क्या कर्नार महोरव बाबो रकामको विकासको विक स्टेपे र

(इ.) पुत्ररिक सॉटन ऐंग दुक

र नरं वारीक पत्रव करून होती है। सत्तवसँ "कूरीका ह को मीर "नाररी" १८ मध्यन्तरको धर्मासे रहाना द्वारा ना---केश्वर कुछ १ ६। संधीती क्लियोंने " कुरकेंग हो बाजा की नी, हा बनानर, १८५६की बाहतमें ने । वस दिन बन्दोंने बातस्यवस्त्रो रख सार नेया या — देखिर पुछ १४८ और १८९।

शावनारत श्री केन्स्फेन्डी १८७ (परिशिष्ट क्ष)

NEH .

(बार)

प्रेर्ड : तुकन चल्हिक सेनामें : भी रुद्र द कॉटन वर्षन

ता ११ — भारत्य सम्भा तर । हुने काल देरेवो क्या गया है हि मार्चवारको पर्वत समार्थ किय गरिक्येको रों । एप्येन विद्यानकम्या पर्वतिये विकास मीर करों तालने रक्षों केंग्र करना मनारक्ष्य हैं।

(शरीप्रेप्ट ४)

तकत

...

रिक्टमा ११ १८९६

रेशमें : बतनीय देरी रत्यम

शंकन्,

बाव मेंने मारको मा तह चीहतेहित्तन नेसा है करती तक हानमें सभी कर का है। होने पा नहीं या कि गार्नेट लाव दर्जने ही है।

"पूर्वेद और "बार्स" ब्याव व्यक्ति यह सम्मी १८ और १० राह्मिये बन्धर की वन हुद्दारको सुनि है। इसी दिन है वह बारण हारा सुन्दी रहा दिने से बादी होने बारण बारणे तैसी निम्मी देखते और ही भी। बीपन बाने दिन सम्मान स्वार्ध मानी बादीन की स्वं

t the miles se ter

200

१८८९ के बानून ४ के अञ्चलर सहतेर शहन अवनी बार्न-नार्रियों स्प्रितिकी संप्रति, सम्बन्धनस्त देशी महार्थि है स्वरों है और उसे निका क्या सकी है. वो विशिष्ट प्रशासी मानवन्त्रतायोकी वृद्धिक निम भावत्रक वो और किसी स्र निरुप किया ना सके कि फिटो अवागको किन परिरिश्वतिवर्गे कानूमके सनन्ते पूर्ण वा अंदात नहीं क्रिका का लकता है। में नवर्गर खड़क्के नाम आर्थनावर रोगार कर रहा है कि इस आयोगें नेता विशिष्य स्टिरिवरिया विकास है। मार्चनारम पेत्र बरनेके किए मैं नक्तर शहरको मिनचे एक दिकानामधी साम पारता है, और माकिसेंकि पर्यापको हैंसिकारे स्वयं करते सामने शामिर शेकरे मन्त्रिके प्रार्थनात्रस्य स्प्रार्थन करना चादवा 🕻 ।

कराजांके रीके कार्यके कारण उसके मालिकोमें से अलेकको केन्सो बींड अधिरिमस शकरान हो रहा है। इस बारत है गर्कर साहबड़ी सेवारे है ब्यारीसे बारी जो तिम मिक्त कर देनेकी क्या को उसी तिन व्यक्तिय होतेके किए क्साफ हैं।

> मारका माजाकारी हेरक. (इ.) एक ए कॉटन

(गरिक्षेष्ट 🖝)

538

rda.

दिसम्बर ६२ १८९६

वित्र की बॉरन.

गरनेर सदस्य तथे वह स्वनेती याता री है कि नवरि सावने वैसे यानेकी वे नियमन ही मन्तिनीचे समाद केना नस्तर कॉर्ने फिर भी नदि नात भावते ही हों हो कर मैरिएनचीमें ने क्य मान्तेलें स्त्रि प्रवन्तांके एकमानि दिश्यकन्ती क्षेत्र केरे ।

> नारक सुनेती (इ.) हैरी एसकाव

भी एक ए कार्टन

(परिविष्यः च)

तकत

<u>सेवार्त</u>े

म्बामहिम सामनीन सर बास्टर *मार्गानत होती हणिनसम* सेंट मारनेक भीर सेंट श्रीचेक प्रतिविद्यातम संबक्ते सम्बद्ध-कार्यकाः नेदाल कार्यिकानोः गणारे और त्रपात सेनापरिः वहाँके वाहस-एडमिला और वतनी करताचे सर्वोच्य काम्य

कुर्टिंग कहानही माहिक और नाक्षी नहानके माहिक्टिंगी प्रतिनिधि करेंग कारको राश कलाका देंड कम्प्रतीस हम स्वानांको एएको समानेके किर तथ प्रार्थनास्त्र ।

तियेशन है कि

ने *न्यान नाइरी* और कूसरेंड शरामासकी १८ और इ. सारीबांकी सन वर्गेकि इन्द्र और रुप्प पानी केन्द्र बन्दरी इस बन्दरगाइके क्रिय स्थाना इस वे मीर वह स्वीतेकी १८ हारीबाडी क्रम्स्ट उपबरके १ क्ले मीर शासके ५-१ वते अर्था सर्वेष वने ।

हत नीको ज्यानिक राष्ट्रपेने वहाँ व्यंत्रनेकै कावात सरकारी स्वास्थ्य-मधिकारीको बरकारत कि इन स्थानोंक न सो तह किसी अच्छादी कोई बीसरी है और स नम्बस्ति बढ़ी रायको बनकी बाचाने ही कोई रोमारी इर्द भी। फिर भी राय क्यरबाहरे अस सब्दरी लास्क-अविदारीने भारती यह गोरवादा प्रवास रेसर वानिवोको क्लारानेका अनुमक्तिएत बेनेसे स्वच्छार कर तिया ।

वत नोक्शापर वसी महोनेकी १८ वारील पत्नी वर्ष है और वह १९ वारीकोट नसाचारम सरकरी यक्टमें ब्राव्यक्ति हुई भी।

मामो प्रामियोच्य मिपेरज निम्त प्रमार है :

- (फ) कोई भी एरकारी बोचभा " वा को सम्बारी बाझारों प्रकारित वा सार्वविका निकारित होती है। अह बोक्स १६ तारीक तक क्रमाहित नहीं हुई थी। श्तरिक कर १८ ठाएँकको कहाँ सूर्वि अर सन कहाजीस लाग् கர் பிரைப்
 - (थ) मीरे १८८१ के मानूब ४ की बादा १ के होन्होंना किस्तुक डीक-डीक अर्थे किया बाने की नद मौतना नेतन उस क्याओंडर अगृही एकती हैं को वस बोलायके प्रकाशित होनेके करवात, किसी क्लूकी बीम्यरीमांके स्थलारसे फल्कर नहीं स्टेंने हो।

٠.

44 सन्दर्भ नांबी बाक्सब

(ग) पूर्व-शर्मत व्यवनों स वाक्षिकोची वही शंक्रवामें और होबेसे शैयारी और महामारी क्षेत्र सकती है । (१) बाक्टरेंके संख्या प्रमाणकांके प्रकट होता है कि इसके बाजी जाचारी कि

किमा मिली भक्के. छतारे का सकते हैं। (४) पूर्वोत्तत कारणोटी मार्किवोत्तो ऑस्टान केव-सी पाँच मितिरिक्का सकतान को

err tri रहाकिए जार्षिकोसी अभागा है कि कन्स्समृहके स्वास्क्र-अभिकारीको इन वहानोकी नात्री क्यारनेका असुमिद्धित देनेकी विशालय कर ती काने अनवा उनके कि**र** और कोई विकार सरिका कर को आने। और राज्ये किए आरके आर्थी सर्व प्रमा

(इस्ताक्षर) दावा मन्दरका ऐंड के

(परिजिष्ट सक्र)

नक्त

विस्म्बर १९ १८९६

प्राप्तिक क्षीरम देश कर

करेंचे आसि ।

बहारान — मानके अस्त्रीके उत्तर ने हैं (१) रिकरीनाते दुबार या प्येगकी भूत भगनेके बाद कियाने सम्बन्धे अपके विक

प्रकट की बाते हैं! रोग सम्बंधि बाद उनके विश्व प्रस्त्य होनेका साथ क्रुटा वरिते केन्द्र एक सन्ताह

सद होता है (अक्टीकड़ी प्रस्तुद, चीना संस्थान, १८६६)। में इन रीयनकीचीय रीय क्यांकर पहींकी २४ मंदीमें बारकर केर मुख्य है।

(१) वरि दिशी स्वानकी दलकी बीमारीवाले नम्बरमावसे वले १८ दिल को लुके को और उस बीच क्याकों कोई बीमारी क रही हो। सो क्या बस का की का रीय होनेडी सम्मादना रहेगी । — मर्दी ।

(a) ३५ कारानिको नन्तरवादकै नावर किली छोटे बहाको सम्मादी कर्तने नाग देर तह ईनाइर स्थानेचा परियास करा दोन्य ! -- आरहीवें के नित अलान्त मर्वपर।

Medicana (हस्ताधार) थे चरट प्रिम्म एम ही

KER

fre attre

समाजि इस गाल पने तर छोन्ते जानकों जातने जातीया अन्य व अपकी

करमार्थि कि कारण है गि हैं। चर्चा बन बहू है है होंगे करते है बन उपने कि बहुद हातेबा पास और दिन कर दोना है चर्चाद कर बन्दा कैस्ट्रेंट व्यक्ती का बाते तैस वह पित वह बाते हैं। इस्ट्रीय हिंग होंगे करते बना उसने बाद उसने बाद स्ट्रीया

 अंतर क्या कर समा है
 पूर्ण की सम्मित कक कहा है में सम्बन्ध सुनेता अभीत्व प्रस्तात हो सी सम्मित के साम्ये है। है क्या की हा स्वी

हों नो कर ने पर क्यांक्स देश हैं क्या है हैं क्या होती. ना है अन्यान देक्दश जह जान हैं हमीन मेर्ड जब हो है सम्बे दर्ज प्राप्त

> क्यार (समान (राजाधा) देश समान है स्टब्स राम की साम है देश

स्टब्स १ वर होन्दर १४ (

(11)

Brit we bested

2*~*!

्रणार्थः विकासे क्षाप्ताः, विकासे इत्यागः है। हो। क्षाप्त कार्यः प्रथ ए कार्यः वाच्याने हैं

(pense) auf e pi e de qu

(परिकिच्य म)

пен

क्षेत्र विसम्बद्धाः ३५ १८९६

सेवार्थ

...

नान - मी वैनिक्क कर्रकेक प्रमा - बी - च्यानापम्स स्वारक्त विकारी

नेटाक सम्बद्धाः शीमम्

हमें कुरखेंड कराक्यों सार्क्य कोर माहरी क्यांक सांक्योंकों होतिये कर कारणी रागा क्यांका देंव के ने मारच्या काल हह राहकों होर वीचें होती दिशासन भी है कि में रोगों काल करान रूपण हार प्राण्ये क्यांकोंकों किने हुए वस्पति वर्ग कारणाई किए कम्बर, का आधियों रह वार्ट्य मुख्यारी इस क्यांचाकों कारणाई कार कार्कोंची क्यांचे हुए हैं। इसल कर है कि क्यांचे होगों क्यांकोंक सारच्या रूपणें देवार के क्यांचार, इस मामके दोर्च्याच्या करते ही कार्काकर क्योंची देवार के और का जो देवार है कि ने मामित बतते हैं कि करते होगों क्यांचोंक स्वर्णी वार्या है क्यांचार पर्दा, और ब्यांची कारणांच्या पूरी करते किए है और भी एन हुए करनेते तैनार है दिस जी

हमें दिशानत ही नवें हैं कि इस आपने आधना वहें कि भाष इस कहाओं के इहरन ही बाबी क्वार्यक्रम कनुमांत्रक है हैं किससे कि वे बन्दलाहमें आध्य अपने बाजी और अफना साम कनार सकें।

मि भाषको द्वारी प्राप्ता स्थानक प्रदेशो स्थापन दी हो हुने स्वस्थी स्थापनि स्थापन बातान्य बर्तमान्या दोशी। यह यायना भाषका प्रीप्ता और स्वस्थान है, स्थापन अपना कार असनी स्थितानुत्तार रोजनान केयर होते अनुसूरीय स्थीतन।

> भारते जाजाराधि तेनक, (इस्ताक्षर) मुत्रस्थिः साँटन ऐँड दूर्यः

हेशने ग्रह

महाराज — बालाइ बामकी वारीत्वस एक प्रित्य । में स्वास्थ्य-विकारियों हैसिलाने सब रिक्कीय प्रस्ति काम रक्ष्ये हुए बास्ता कराव्य राज्य करोगा अस्य पर प्रा है।

प्राचित्रास्त्रः भी चम्बरहेत्स्त्रो (परिक्षिप्तः ४) सम्बद्धः

न रह पार्ट्स कि सेंबार हु कि जिनने भी नारधी बचार बाने हैं वन समझ ब्यामीर प्रवक्त, क्या [निरादावादी देवरे] के स्वान्तवर्ष राजेकी उमानन व है। या पार्ट्स के बालेवा यह भी हिरादावाद समझ करेने वार ब्यापित वार्षी नारदेश महाव्यापत दिया का स्थेगा।

> भाषका भावतागारी (इत्ताहार) ही बटबल स्थामाध्या स्था<u>लक म</u>िकारी

(वरिशिष्ट ह)

TH.

.j.,

हरीय विकास १५, १८९६

सेवान

मी की शरदेन दल शी

रवाराच्य रदारम्बर्भारकः(।

K,M-C

माराय कमा कर मिना। पानु प्रमाय करा दोनी पाने दम आका जान तम तारपी और बॉबना बातों है कि आपने हरते बाके करें पूछे की सक्त्या कोंने कर नहीं दिया है। बच्या उदा जिन अपनेत इस अपने ६८ ता के पत्रया उन्तर है करेंगे।

न्यारोपी यह शिन रेस्टोस्ट अनुस्त हुए हरिया मुख्यान होता है और राज्ये कविरोधा क्षेत्रत नहीं हो कवार स्वास्त्रत हो सेस्टाहुन्स हो ही संतर है।



स्त्री करती हम जारका भाग कि हा तमको मोर माझ्य करनेवी महार्थी बाहरे हैं कि मानने वन भी हमारे स्वत्री करने तमें किने हुए महत्त्वा जरूर नहीं रिचा। हम होनोर्से किही महत्त्वा समा न हो, स्वत्रीय हम बाहक भाग कर करनेत्वी मोर सम्बन्ध साम है कि मिर समारा नाम होंगी हिम समारा नाम होंगी है कर समाराज्य स

मोर माझ्य करना चारणे हैं, वित्तेक म्युप्तर मात्र देवीने कि मतुमित्तक देनेने इनसर कुछ दिख्यि स्थापनेते ही किया चा छन्ता है। और रम मानते वस मानमेते के स्थाप सम्मानेते किया कर हो हैं। एक्स है कि मात्र वस मानम्ब करर केना मती चारणे किये दूकनेका बमारे सुमक्षियों भूग मन्त्रिय है। मानसे वस अनिकास पर हमें मानस्य है।

> नायके नाजान्यरी सेनक (हस्तासर) बसरिक कॉटन पेंड कुक

हम वन हर्तीको पूरी दाहर और डीकडीक बानका बाहरे हैं थो कि बाप बादी व्हारनेका मनुपतित्त हैंनेबे किर कपाना बाहरे हैं, स्वेकि कार बाहरे हों है हर्त बार्स है सो दे पर तरिसे बार्स में है देशा मार्स करता।

(परिकाप्ट भ)

नकत

क्रीन

तिसमर १६, १८५६

गुजरिक, कॉरज नेंद्र कुक महासन

बाल्य २५ रिजनर १८५६वा रत मुझे किया । में बीला परित्रकती नारेताईके दिना इन नवामेंकी बामी कतारनेस मनुस्तितक देसर क्यनिनेसकी इन्होंने महीं बाक लकता ।

भी शासिकों सारुके त्यानों नहीं स्वात बात वो बहारे में सूरी स्वात में भी सोनों स्वानों स्वानों से इसने स्वानों तिरुकों सो सारिवास स्वरंकी दिशाओं री है— नर्वात करों मोने भी भी भीतिकों हात वापनों तिर स्वात पूर्व के पूर्व में के मारि क्या सम्बन्धी— क्यार स्वत्य हो चुक्कें कर बादा दित रूदे हो में तो स्वानों के सार्वात महत्वस्वत्य क्यों दिया ना राज्या । सहि स्वानों स्वानिक स्वान्य स्वयं स्वत्यों दिया हो तो नार्वी स्वारंकी हाते स्वाना स्वत्य हो हो सूर्वी स्वयं सारिकों स्वतिक्यों हुती स्वरंका सोहित स्वतिक्यों

क्यारनेके शर व्याचीको वहीसे व्यनेको छाक्रिका वह ही व्यक्री । सन्द्र इनस्मि धननिरसेंके किना किनारेंके शाब उनका कीई शम्बई तहाँ होना बाहिए। भीर थार पारते हैं कि बहान कहाँसे दिशा हो कार्ने हो सनका तससे मालव छाँना पटी है कि उसके शाकिक व्यवस्थित कृती क्याने शारिके बार वाक्लिको गांच दिन तक, वा वरि शाक्यकता हो हो बस्से वाधिक समय तक भी देगरीम धक्तभी रहतेचा दव व्या है। सम असमेर्स संग्रह कोई कातूनी तुल्ते हो तो भाप हुन्दा " संग्रक शांक द वीसं । को विश्वास । मेरा बन्तो कीई बारवा नहीं है । भारत महासरी (इस्तालर) की बर्टरेस (परिक्रिप्ट व) pia. शिमन्द १६, १८९६ सेचमॅ श्री की बद्दोंचे वस की विष स्थोतन. जारका जाजका दर हमें किया। हमने तीन गर आदते <u>र</u>ाज कि जार "दार्वेड " और "सारते । व्हाजेंद्री दात्री कारनेद्रा अनुसरितर किन कारणेते नहीं है रहे हैं और शीनों बार आपने वह प्रकारों दान दिया । सानिय अब हम कर शतकर कर यो है कि बाद वे काल स्टालनेसे अपना कर कर है। हमें सभय कलाविरले शांत दशा है दि भारने महरूपयी भवनी सम्हातीया नगर

समार्थ गोबी शहरब

* 6

बर बराया है है बन्दर्ने निर्दालय केन क्षेत्र हुए है और बीर तन आरोपी बानी स्वारंकी महादेश है की जो दो बती भी पूर्व के स्वदेश कर है। वें बारी स्वारंगी औरते स्मोद निर्माण की बात न करवारों को तो हम बन्दर्ने कि अगरी सम्प्रालय प्राप्त की है। बायुक्ती होती की कम निर्माण की कि बहु प्राप्त है की मिंद करना होता है तथा माना तुम्बर्गन्त है। इस प्राप्त के किनोमानुनिरालय सम्ब्री गुरावाद हमार्थे कालिय संस्थानी का प्राप्त के किनोमानुनिरालय सम्ब्री गुरावाद हमार्थे कालिय संस्थान नद मताह कहा। मन्त कहा है। इसने सहाहर मान बहरे सुमिलारे में प्रावतालंक नाव डा फिला और सा ईरिकारे से सम्मुख्य हमा है कि बार कर भी करा पूछ देया है बद्धार नाय है। और हमें प्रमुख्य हमा है कि बार कर नम्म नाम दिनार कराते हैं। यन दोना क्यायोगे कमाहि कर के बार कमाग्र रह और १८ दिन हो पूछे हैं। जह और करने वन होनी कमाने-मानी यहा मारन की तक्से मारण इसने सम्मुख्य एकेंगा वह स्मित्र क्या कि पुत्र है कि बार रूप और तक्षेत्र वाहसूत्र भागे कम्म्य दिनार वह दोनेश दिना है कि बार रूप और तक्षेत्र वाहसूत्र भी कम्म्य दिनार वह दोनेश दिना है कि बार नाद दिन नहीं क्षेत्र वाहसूत्र भी कीर्यार देने तक्ष्य हमार करा देश एक्सी एक्सी नाद दिन नहीं क्षेत्र वाहसूत्र भी क्षार हमार के हैं हुए (बारक ही एक्सी) वाहस्त दिन्द प्रतिकार वहें और बारण कुम्म क्षार है कि बार म स्वावतिक दिन्द प्रतिकार वहें और बारण कुम्म इस्ता है दि बारक वहनीयन देने तक्ष्य प्रदेव काल करने वाहस्त तक्सी में दाने हाने हिस्सा स्व

मारे कि दिल्लाए आएके द्वारा मालेगा।

ाडी बक्त हमें मालक प्रकार पर गाय है की मालिकी भी दिल्ला की लं
दिल्ला तमा कि मालिकी पर पर गाय कि में के ता का कह दूर मात दिल्ले कम भी कुंदे हैं भी क्या माने दुल्लाके मानका पर नहि के महि माले मुख्य ही भी कि द्वारा का दिन दुल्लाके माने क्या मालिकी आप दौल कानेती स्वाप्ता करि ही ही भी मारे मानके कम्मे क्या है कि माने भगक बने के का गायां वहीं है। मानिकार कि भी मालते ही

नार्या जानियाँ तथार वासियो तरह दगार्थ त्याने कारान्य हार वासिय कारान्य कारान्

t ₹%~ 17 44 -48 1

सन्दर्भ गाँची नाष्ट्रमं हम हम बातका भी यहाँ अल्केन कर देना शाहते हैं कि अलावड़ि वहाँ प्रतिके

वो में अनुमिवन रे पैगा । परन्तु शसदा की मुजनिक कर दिया क्या और क्सके स्थानकर जाद नियुक्त कर दिने समें <u>।</u> नद भी पक्ष साम है कि बहुके सी इस मुक्ताल भी बलकानने का नैकींची भौर वा - अनुमारी नावचीय की भौर फिर अमोने मानको छताना (जैसा कि करोने

क्र स्वास्थ्य-विश्वासीने अपना वह यह एका किया था कि क्ष्टार्थको वाची कारिनेचे मगुमवि क्या किया करारेक ही का सकती है, और मुद्दे वैद्या करने दिस को

रावं क्स प्रकृते मैजकमो नतामाता है) कि मात्र करावी उम्लावर नावी न्यार^{ने हो} क्लमति देनेते इत्रकार करनेते विश्वमीं इन्तको सम्मति है हैं।

(हस्ताक्षर) नदरिक साँदन ऐंद इक

(परिश्लिष्ट प)

जाने जातावारी सेन्द्र.

केराचे

स्यतनीय स्वतिनेश-सनिय मेरिसर्ग

256

भीसन हम सम्यानमेक निर्माणिकत वर्षाच्या मानके व्यातमे राजा चावते हैं

इस कुरसेंड अवानके गारिक और *भावरी च*वानके गारिक्रेकि गरिनिषि हैं। ने दोनों बहुन यह ३ - सम्बन्धको गम्बद्धी क्लो और वह ग्रास्थ्यी १८ सारीच्यो क्रमचा ५-१ नवे सार्थ और २ नवे दोल्बर क्यों क्यूंचे है। इन दोनोंग समाप्रति क्षाप्रः १५५ मीर १५१ मासीन प्रमानन है ।

क्रमके दिन प्रात काम सरकारने एक क्रमानारण प्रमुद्ध प्रकारित किया क्रिमी प्रसारको वक कोचया निकासकर गण्यको क्यूप्र-रेश-अन्त बन्यरमध्य कोरिय क्रिय

भवा वा । र वेजिल पात्ररिपाणी कुछ १८६ ।

255

दन होतां बहाबीत बाग एवं माजभार बीजू में कि साँ गुड़ को पूरी सारी सामने दनते एक पर सारोक्त का कि सार पर प्राव्य के प्राव्य कर राजभार का सिदारीत वह रोजों के सारोक्त का कुलतेया के के बीत में मा करते प्राप्य करनावित्र के स्वार्थ के सामने के

दान्येदी कार पर रहें । सन्द्र भीतिकों द्वारा क्यारा क्योज करने ही कोई हारेसारे नहीं की गई । और दमारा नवान है कि वद तारिनको वासरोंकी शक्तिनेती रिपोर्टक अञ्चानत सोधनात कार्य कर दिया पता ।

होरतो स्व विष्यके बारव न्यास्टि स्वतिहेश एक मुन्यस्य पीर स्विदिनके विकास १९५ वीरण सुवस्यत हो यह ।

तुस्य क्यांपिके ६४ तारिके तार्थे हिते हुए हा आराप्यान अहोया कार्ये ६ वर्ष अपार्थे ने वार्योग्ने अस्तिकी हितेयां हुए हुए अहोत करा स्वा भीतारिके वार्यों के हित्य करा तो अर्थे दक्षी कार्यों अनुसीर करते जब भीतारिके मौता दे ही अस्ती अपात आरो वार्यों की हित हो। उससे (१) दक्षियों को दा अरी वार्यि की हिस्सों का विद्यों कि स्वी अर्थ अर्थकार का अर्थ को नो, और कार्यों के स्वाचित हो हो को कार्या कर होता है।

नमा कर कार ना, अर दूरन से बराकी की द्वार राजांत क्षेत्र कर है। () इस मेरिकेटी का क्यों कार्य हो कि इसके क्षित्र मेरिकेटी होत की गावेरे काण की बीमीट हो। मेरिका मरावाक लाव व्यासा क्षा और (1) कीमोर किर के राजांत्रिक दूर को क्षा की हार्य सो दि तेन से साम गावेर किर दि भी किर्मा करने और कारणी करना कार्य कार्य थ्य इन्हें दिवोंने स्थलमें क्लेमिया क्षेत्रीय नावरिक्रोकी की संवर्ष इते हैं।

क्यों मेटाल एडवर्टीहवारके को लंबीमें वह विद्वालन विकल्पाकर किया कर य "भागमण्या है, व्यक्ति एक-एक संदर्भ, यक सम्प्रते हाकिर होनेके किर--सोमकार, ४ वनवरीको, सार्वकाण ८ वस, विकासिका कार्यके वस कार्योगे । समस्य

भनोका एक अक्तूचा संग्रान करना को क्यूनस्त्राटक काने और रिकारकी ज्यारै वानेके विद्या भागान कुम्मा करें। हैरी स्वाक्तें सम्बद्ध प्रारम्भिक समिति।" रत पोली समामार्गे क्यरिवादि बार वी । और बैसा कि बन्दके विज्ञापनी एक

नवकाका नवा है, इस संसाद्धा करून बानुसके किनाज बोनेकर मी इनल्हा शास्त शारू पेती समाजीत किए बोच दिवा यहाँ । हम मानते हैं कि बारे संमान्त्र अहेल कानुब-सम्मत हो तो समाज्ञीकी अवस्थीरो

पूरा नविकार है कि वे देशी समाजलि हारा भएती हिलानतीको नाहिए करें। बरमा रतने से पहली समाने सम्मन्तमें दम मानदा न्यान ५ तारीबारे सन्देरी और मैटाक रहरमाँकारमें मधादित विभरमकी मोर क्षांचना चाहते है । उससे नावरी शांत होगा कि कुछ रक्ताओं से निपरित बोक्क करनेकर भी, जर्मी कर विकार मच्या विकास पर्या था कि वृद्धि सरकार बायरी मार्चता व साथे और व्यक्तिको ज्यार है रिया नाने तो बाजिनेके निरम्भ मा अभने से सुम्बन्ध निरम्भ विस्तानमा मनोन किया व्यते : सन्तु या नेवें जीते एक नायनके संशोधी सोह क्षम शास्त्रा स्थान शिक्षेत करते स्रीयना बाहते हैं। त्यांकि के सरका शाकरांकी इस समितिके सी सराव के निरामी रिपोरके नजुसार अहाबोंको बहाकों रखा गया; और इसके विकास वह नरमा ही

या सक्ती है कि हन्होंने इस समितिके सरस्यको हैसिक्ससे अपनी सम्मति न्यार्थ मीर भिष्पक्रवाबे हो दोगी। इन्होंने बन्त न्यूनन देशों हो वद सम्बर्धे भिम्म मस्यान मेश करते हर दिवा का णसमाने क्वरिक्ट बलोड क्वन्ति वस मत्ताको सहस्रत है, और हो क्रिसम्पित

बरनेमें संस्थारको नदाच्या देतेके किए मध्ये-आहको बारन्य करता है कि ज्यार रेस अन्ते को नाहेचा की वह करेना । और इस दृक्ति अदि आवस्त्रकता कीनी तो स्थे का बनी बड़ा करेना वह वनरायद्वार आनेको शेवार धरेया ।

इमारे धारा नितुतन क्या नारबीने वा अर्थे और आरमधी सी रिरोट ही मी कारे इस कार्य जिल्लेक्सिस है।

न भी धोबीने हमारे मामको भारतको मालियोमें बनीया और वहाँ हमारी देते गारी और नैरी तगरीर गाँची कि बेंगी ब्लाडी अपनी साम है (वैंटी और

वानिर्मा ।

त्व भी पंत्रीको स्तर्क देने कि देशक कालिएमें नाया नहीं को जी दुक सब्दा तरे देश हैं कहा दारहा द्वारा और दिर काँके कहा किसे मारिक्य उपयोग दर कर रहा ना कर्माका पारिस्ता क्या के सारोग है। रह भी परिका कर्मा रने कि करों कार्यासकी हमें ज्या का राता है। कि कुलियोको बो-इंक दिस क्या वा करते है समुद्ध हमीं है, और बर क्योंके किए इंक्स मेर केना नाहवा है। और सक्यों वह करत इंक मीर सकेब (देशों और ताकिन)।"

ं समेरिकारे कुछ नीनिकोको पास्ता चीन मेन दिया था और कराउनो सनके कुछ कोठको साप्ता मेद दिया था प्रवेषित कोची (बागरिकी) कोम उन्हों नवका नहीं सरकारे हैं। इस भी क्यूचने होगी कोजाको कोठोको वहीं मेद वेंगे काले से में

माने

या मेहें बीने को सत्ताव के हिना वा कार द्वारण कोली हर अवाने कहा। तरी कारका नदा का क्या कि हमें कररायाहर करो बाता है (वाकियों)। हमें नावा है कि कर नारकस्त्रा रहेगी वह भाग कर नदी चूँच वाहरे । हमें पेनी कार्म का व्या मिल्ल कि नार्ले हे फिरोफी क्रिकेट होने वह के हिन हिनों दूरा मी नदातारों हो को कार्य के क्या में बारे करते हैं। इस कर गुक्रकेटो दीवर परना चाहिए।

" चरना होने को हाजबा किस्मीनानी रिकामों के हो है कसने और वह बाहब बाना हो कि जातीन कीम चूरीतीकों बदार्गास तम होनेसाड़े हैं, हो बेखा कैसन पर तरीने हो कहता है— देखा केसन डीनीसीची तोवते कपता किसा बा सहता है!" (वालिसी)।

"इर, वा बार एक क्यों इसके हुए हैं कहने मानको खाके किए, और जानियोंने अपने करनकि निया है स्थान हातिना करनेके किए को आज की एव लोगोनिकनेके रूपयों और शांतिनोंडा गींर युक्ते हैं, कियों भी दर एक आगे पहलेखें हेन्द्र हैं "(शांकिये)।

भ स्म समार्थ बहुत क्लोर्स वा नवा है। क्ला नेप लग्न है कि देने तुम्बनुस्य याते वारके मामने देश वर दो है। और कला अन्तर वह है कि इस सम्पाननेने लग्नान्थ एवं देने, इसके मोना है कि सम्बाद स्वादी महाच्या कीये, और कर्मा बारनेने हैं। इस भी व्यक्तियों करने दन्तास्वादें नहीं उसके दिस समेता है (कोच्या तार्थियों):

कुमी तथ ७ गरिमधी हो थी। प्रमधी कार्रशकि निम्न अंग्रह्म आली: नन्दरीने प्रदान कर हो है: १.९ सम्पूज मोत्री वाकसन - भीजो एस. वाइकी "जमी किसीने कहा है कि अवहाज हता की सीटें

मैंने एक सरकारको वह करते हुआ वा कि वो कोई क्यानपर सेला कोनया को मैं एक समिन्दी ततकारक हे बूंध्य (शाकियों और बूँधी)। मानो वे क्य दर कोई बा कामके किए कमती एक मानिक्षी ततकारक तिमावत करने हैं क्ये हों। "(वो वो और एक एम को मानामें)। मो सामक "मानकी माना समय कीर कमाई होनोडी इनोनी करने कि

नक्ता कर रहाई कर केना चाहिए। भारती जाना काम छोड़न कारकों करनेके किए सेवार रहता बाहिए। सर कुछ संस्थित छंत्री होना चाहिए— भारती करने नेतालांकी मान्ना माननी चाहिए। सरका कोई सारता नहीं होन

कि इरएक नाइजी एक-वृत्तरेको हुर केला खे (हेंती)। नाइको नाहाक पालन कडोरपासे करना पादिय । माला सन्ते हो इंक्टि बीप क्रीकेप मेर स्वी क्षींका को नामसे कहा बाने (ताकिया, वेंती और फिर कवो की नागानें)। क्रमहोंने प्रस्तान नेस किया । इस मास्त्रीनोकै क्रम्सनाइस्ट आहे ही अरहान करते हर क्यान-पाटकर गण्डचे वरन्तु हरएक बाहती नेताओंकी लाहा गाननेका श^{क्रा}र धोना " (समित्री) । ड़ा नैक्टेंची "क्य हम फिड़की नार कहीं कमा हुए के तर रिपरि कित्र^{की} निकार वी क्टानी जब नहीं हो। इस क्टी रास्त्रे जाने का रहे हैं जो इनने हत कर किया था । इस सरकारकी स्थिति जन्मी क्रफा भारते हैं । असकी निवसी ^{क्री} ताकत है कांग्रे कर हमारी तहाकता करनेको तैथार है । व्यक्तिक सरकारका संस्थान है, बच्चे सुप्ते पूरा सन्तोत है । इस आगतेने बनेनो क्य नावरिकोचे सरकारी पूर्व स्वयंति है। स्वकित सापको वेसा कोई क्याक स्वर्ग करना चालिए कि किन सरकारेको विश्वांचकोरे इस समय आसकती स्थितिमें छह दिया है अनके साथ आस्ता विरोध ना बल्बर की नहीं हो बाबेगी । वे बनिवेजने साथ है । और वह पार्व नवार्षि स्वयं है। सन्तु हुमील से सरकारकी दिवति येती शर्वी है कि सर नाराधिकों बीट देवर वह कह सके कि द्वारको कही तहीं अदलने दिवा का^{र्यम}ें और प्राप्त किन कहानोंसे जाने हो करते ही दुन्हें शाका काना काना । देशा करना 🔎

गावा स्थानमा है। और स्वर्धीम्य इस्परी समितियों भी राष्ट्रामधे छह दिया है कि मूद्र अस्पाद को सर्वीता है। यह सम्बद्धान्य राष्ट्र ब्राविशेष्ट्रमें अस्ति प्रविदेशी वार्व और अपनी वस्त्राद राष्ट्रमा हो। तहीं पर तहता हो। वस्त्रीमध्यां, शितियांनी अस्त्री कोई कभी दोनी वाहिए (शाबिटी)। इसने काई एवा दिया है कि कविनेधी सामद रुपेंदी कि यह राष्ट्रमा स्थानी असे सामदास्थी स्थितियों मा राष्ट्र वस्त्री तने कि वह केल्डी रच्यामी मॉर मामन्त्रकामोकी पूरा कर सके। भी रस्यन्य

मेर होनकः) ।

क्से सहस्र है और जारही यादम से है कि हानातका दाना सामा कानेके किए

ला दिला वा रहा है। इरधारते को दुरू हो सकता है वह कर रहा है और रमें बाधा है कि बाक़े दी-यह दिनमें क्यतिकेश समें को भी समा होगी कराने रकानमें संनक्ष्य विशेष्ट्रन कुरन्त ही कुमानेश्री हच्या मध्य की कारेगी । अनके मर बस विनवने सकता वक्तमरा है। मने करा है वर्चनके मर्र -- क्यांकि वस

काम के आहरास कुछ करी औरतें भी चल्कर कार रही हैं (दुनी दुना की नावात और रेंसी)। और नकसरोंकी नाध्यें करूप बाम कर बैठे हुए होग करें है पर तो हम अक्ताएंक कुछ अधिकांकी कास्ति ही बान के सकते हैं। वो कीन त्म फिल्की चीर्वे किया है वे मानी है कि नामरिकोंको पता ही नहीं हती पता है। सन बर है कि को सर्व है से करनेकी दिख्या है उन कोरोमें नहीं है। क्से बद्रोमें बोड़ी बंदियन को बदानी चल्ही है (चाकिनी)। वरि एस संवार्त भी कोई देशों नहीं भौरतें होतीं तो है कह तमन कहर बरकर कही हो नई होतीं क्ष हि समापतिने परवानके निरोपियोधी द्वान क्यानेकी नदा ना । हम जान हैं कि हैको बोर्स और मेरेले करों नहीं है। इस देशे बोगांसे बोर्स पाल्या गर्डी रक्षना पाल्य । " बा प्रस्तात देशक वस्तिवेदनै अच्छे सक्त्रते समाम स्वता है। ग्रह अधाना इन उद्यामी नरके एवं भारती कर बनकारी चक्रे में तब बन्हें देशा कोई समेद नहीं वा कि करका इस कालिक्षेत्रके निवासिक्षेत्री वैशिक्समें कच्छा स्थानस क्यों किया बानेका । अक्यका एक बाबीके बारेमें बाजिय अवेका की का स्वतारी हैं कि करें मेना सम्बंध करनेका कारन रहा दीना ("गांधी "की बालार्ज होंसी

- में भारतीविक नारेमें को 500 की कह रहा है वह दम अनेप्यालस कर कान. नहीं होता (" नेपामलून नहीं "ही आहान)। इसने निहम देश हिंदा है. बाँद अन नक भी बारतीनको यहाँ उत्तरने नहीं दिक कानेगा।

न होंगे मनिकार है कि इस प्रशास करा कर के मीर इस की बाल बरनेका रराश रकते हैं। यो कीन शर समय शहरूमें है करने ताथ माँ इस स्थापना बरहात्व करेंगे---हम अन दक नारजीके नाथ भी न्यानका ही बरशान करेंगे जाना शते मादा है कि इन दोनों बरवादनें नग्तर एख होना (इती)। न्यांनक संविधानिक मीर मन्तर्राष्ट्रीय मामकोध्य काल है कर्न्यु इस सरकारक किन कोड़ देनेको सेवार है। चला क समान निर्य भी है, और उन्हें छोचनेके किए में हैंचर नहीं है। नर तलाप है अपने प्रति और देश क्यूनिवेदके वृति अपने ब्यान्सवा । वरतव

१ ४ संभूषे श्रंती शहरूर इस्स्यानकाल अभिकेत्रकाल अभिकेत्रकाल स्थापन अर्थे स्वत्र स्थापनी ।

रण करको सानने जनके, तुझे भारत है, जनके नामित सांक सान नगरकों
रण नामें और बार्डा जानेस सहस्य महनेके दिए बड़ी प्रश्नर तैकार ऐसे कि
महार है रहते हार्य नामे हैं। यो कोश हम बार्डामेंद्र आने है, जब हम कि
हैने कि नेदाकर प्रतिनिधिमोग नामन क्या है। एक ब्यून हम्स्य और यो है।
वह तभी हुए होना कर नाम क्या लुई बाईसे और नेताओ की हिएकों हर्षे
वेंसे (इसी और साविन्द्रों)। आपने से हरणको रहन्यक नेताओ नाम हो क्या
वाहिए । क्योरी नाम्यों का कमेग्र कि महाने कर क्या हिएका सिक्नियों
वाहिए । क्योरी नाम्यों का कमेग्र कि सावी कर क्या हिएका सिक्नियों
वाहिए क्या स्थानका कर है कि साथ सर्थ औरता दश्य कर होने करणां

सर राष्ट्रिय वार्थ (गाविवार्थ)। यह जान व्याप्त-बारस्य वर्ष्ट्रिय वार्षिये तह इस्तरे गावन्य हो कांग्रेसे— यो कोई नहां कराते कर इस्तरेय को एता कम व्यक्तिया गाव हमायो औक नहीं कराय होता जो हमाया जैना यो तह सहित कांग्रिय कक की हो हस्तर केनेया आवत्रकता होती। हमा करातिकाली तह ना तारांच्य पत्तर्व नहीं पार्थि। हम पद्माना कन्यांच्य महिनिविद्य होता रहना चारांच्य है (गाविवार्थ)। " अमायांच्यां में हि कांग्र कमायां निवार हम रहे ही। दोरा म हो हि पत्रियों हो। हमायां है कि कांग्र कमायां क्यांच्यांच्या वर्ष्ट रहेने। दोरा म हो हि पत्र्यांच्यां है हि कांग्र कमायांच्यांच्या स्था करांच्या कर नाम्बंधि केन्या

न संनापिको बाला है कि बार नकती गायल हह रहे होते। येस व से कि संदी तो नाथ पत्रका सुं बाँद कर काम सर्देको करता तर ता हाले है केला स्पतिहारों से दिक्कार्य को। बहोक्त क्यानांचर के मारानिका प्रकार से वालियों मारान ताम्य तोगा — और सो क्या पर भारतीयों गाठ कराज देखा ने नामोल बाँद नायल होग दिखा बानेता। नेता और नाथ करने स्वत्य वालियों बींद बीच्यों ताबिनी बीट रही।। वस इस बाहते हैं कि बार बाला हो हो कार नामा स्वत्य कर सीक्तर। इस कोनीने कहा हि बहारों का हो सीच्यायां मारानी मौतारी करते हैं इस कर सम्बन्ध के मार्वेचे। अब होने देशे त्यांचेनायां कार सी बी सारे नामांच्या स्थानायांचे कर गाद सक्त सीच्या । "मी गान्त्योंचे कहा है कि केल करना नाम स्वत्यक्तर कर करने सीच्यांचे ही सी सार से से कि करने साथ बाय करने मेर करनी माता अन्त्येचे हैं सारी सी

ा में निकास कर है कि कोन मनता जान व्यानकर कर स्मितिकों नहीं में तात है हैं को कि उनके तात करने और उनकी मात्रा अन्योत्त है कर रही तो उनकर करने में राष्ट्रिकों विविध्य करीने करनी मात्रा अन्योत है कर रही सामार्थिकों की मेरी-वैदानोंक जान जन्म हो कार्यों और ने का विकास कर सार्वें है हिरान्य क्रिक्टिकों मेरी कार्य में तर है कर बात्री व्यूक्त मक्की-करनी मेरी है है। तात्रक सो मान्यों के नार्यें कर कर्मा व्यूक्त करी-करनी मेरी है है। तात्रक सो मनता है जाने करना कर है— मी रामाई करना है मार्थें बारिविक्ते वाद नहीं कर सकते स्वाक्ति स्वता पर्वविके सा प्राक्तकी बक्तत है (एक मानाव--- नव निकल नामका देंग)।

स्म जातिकार्ये शादानीतः प्रतिपक्षान्तन्त्री हैं ही परकाम । एक प्रतिदित्ते काले स्मान हरूपदा को भी । प्राचीय होता है कि स्मा हुनावान्त्रा को हाल समापी हाताबा एक स्माने लोगोंकी प्राचीन संगतित करनेते किया एक प्रोच्छापन निका । स्मा इतिहेक्ती हरात्त्रे समापी निका हाल केनु किया नवा मा

 भी पल्डामने मात्र प्राप्त काल को नेंद्र एक समितिने कराबीठ बरनेकी करा की । बातचीय अच्छी राख राखारारीके साव धर्म । अन्होंने नराभना कि सरकारका बाद-गढ बायुनी जाएते साथ है और वह रहा फासको मलोड एयावसे बनासम्म दील करना चादली है। सरना भानको व्यान रखना चाहित कि थेसा कोई काम न हो किन्हें हमारे द्वाप वन कार्चे । महिन्छ बोलकी मीटके हुँहमें सम्ब नामे तक एक क्यारी रक्षणा एक बात हैं, और बसरी बोचकी एक क्या-रूप कर यार बाक्स बहुत किन्य बात है। इसकर मसितिबाधाने कहा । बीरे सरकारने अब्दान किया को कामनाकीको त्यनं कुछ करना और नारी संक्लामें बन्दरग्राहकर मान्य पत्रमा । जीर देशन्य पोला कि स्थानग्रह किया त्या संदर्श है । वर कारकर क्रमुटिने इसके माथ इताया और बांक दिया । इस मानते हैं कि सरकारके अतिनिधि बॉर क्वनिवेशके मण्डे अधिकारीयों वैशिताओं नाग बमारा विरोध नरवेश किए संख्या थी प्रदोन करेंगे! भी रतकानने कहा । इस नेसा कुछ तहाँ करेंगे । इस आपके साव है। बीट आक्या विरोध करनेके किया हम बेसा कुछ नहीं करेंथे । बरना करि नाय कुमड़ी थेनी रिनरिमें बाक देंगे तो शावद क्ष्में क्यूनिकृत गलगरक बान माना वहें और बनारे का प्राप्ता करनी की कि काविकेशका सासन-सब बाप अपने हार्वों के सीविंग क्वेटिंड कर इस मानन क्यमेंने बास्तव हैं । सारकी कोई और मारपी समाग्र करने होने (हीहरूप)।

प्रीवारा-अगोने परि संपद्मण हैं। वे तगर बहा दिने हो वो उनकर पोहे सम्मति यहर बहार हमारी कान नहीं हैं। तम्मु हम तारा आरको ज्यान अन्त नारी लगोरी मोर सींच्या पाइटे हैं जो दि अपने दुर कोगोड़ी परण नही प्रीक्षा वनरायाद्यी तर बाते केरेंगे ब्या हो तहता है। एवं कोगोड़ा स्थाप पाइ दिन्या ही राज्य नहीं न ही परण्य समाने बन्यानीके मार्च एवा अन्त की म्हें रिज्योगी एक केरेंगे परण्य सीमीम्स दुर तम कोगोंगे मार्च्य देशा और होनी बारानी सींवारी दुखाने नामन्ते विशेषों भी गारी दिन्या हुए दिन्य मार्ग रह सामी।

बम नाज्ये सादर निवेदन करना चावने हैं कि बमने इस क्यनिवैदाके कार्युनोंके समर् सिर क्षुकानेताके भागरिक होनेके गाउँ मारी नुकसान क्ष्मकर भी सरकारण सन शर्दोंको ह्यान्तिशो पूरा कर देनेका जन किया है। और देशा कर कुकनेके क्लार्ट इकाव्या निकनेस इस कारने व्याजीके वादियोको नन्तरमाहकै शास्त्र जासनेके इकसी को गने के। स्टब्स की नहीं नेसा करते हुए, इस अपने कावियों और सम्बंधि किंद, कोलोकी बेर-कानुनी कार्रवासपेति सरकारी संस्कृत वावेके की इकार र्व 🗝 🤻 कोन कोई यो करों व हो । परन्तु सरमन है कि इस सम्बन्धनें तरकारकी कर्रवार्षे फारक, बहतेसे विवसान क्षेत्रमा और मी मह जाने काकिए अच्छा वह होगा कि कारियोको ऐसे जुरुवान कराह रिया जाने कि कनरान्हों सत्का बरा ही व पढ़े और करना सरकारको कोई कार्रवाई न करनी वहे । इसके क्रिय इस सरकारके साथ स्थ भारतन्त्र सहयोग करनेको सैनार है । वहि हमारा यह सुप्रान मानको करन्द हो ही इवें भारता क्या राजर और यह चालकर प्रसन्तता होगी कि को विवासित करनेके किय हमें क्या करता वाहिए। मारके माताकारी धेरक, (इस्ताहार) बाबा बन्द्रस्ता ऐंड कम्पनी (गरिशिष्ट ग्र) e ir सम्बद्धी ६ १८९७

सम्पूष यांची वाक्सव

. .

देशमें जनतीय वस्तिरशःसामिष

वैरित्तकों सीम्ब्र् दन दमने बादमा को दम निष्य या और जिल्ले दमने आदम्रो हेराने निर्देश दिखा या दि समानदी चालून-सम्बन्धा भी कुमींब तथा बाहरी क्यांक्रेस सीमा ने बादनेत उननी ग्रामुक्ति सम्बन्धी दम तथा सबिम सम्बन्धी दिन स्थानों हो हो है समी निर्दारीओं हम समानदी सेहाई साम सामने साम्

परदा जिल्ल अनुस्तेर जन्म वर रहे हैं। अजिल बाराजरसार हरूके जनिर्देश

एको वर्ग रोक्यों राजाइर किने हैं करका छोरड़ का है का छाराके अमोकी आगार या कराकास्तर यार्थ को करारावारण करने और बारावारका हो हो राजियानोको करारीले कराराती रोजने और करने नेवारोको किन्यों भी बाहालोको मानलेने किए टेकर हैं।"

दम मानदा जान सार्जुर्ध पत्रके क्यों मंद्रदों भीर विकार मानदों वह सारकान मानदें हैं कि "मू सीहर्स" [तेमानदा होग्युक्त मीचे भागकों वह समाप्ता सिन्ध्य कि का प्रदावनों मान केनेके किए देवों कर्मपारी वी प्राथकों के देवावित्रक और भी दासकों तमा को देवारांकों कर्यानीमें एकम हो गये हैं, मेरे मा मेरेका मानदिक्त सारकानों कर्या मेरे देवेंगी विचार करनेगा स्वे होने हो क्यों मेरे रहिं। वे वा मेरेकी में मेरेकी क्या सीरिक्त में सरकान से मिन्धी सम्बद्धि सम्बद्धि होने

नारके नामकारी देवक (हस्ताक्षर) दोवा नामका ऐंड कम्पनी

(গণিমিদ্য শ)

শ কৰ

ती मो <u>२०७</u>

कपनिषेश्व-संभित्रका कार्यासम भेदाक पीत्रप्रीरिस्तरम सम्बद्धी ११, १८९७

भारताच्या ् बुद्दे मार्गकंस्ती महीनेकी ८ और ६ वार्राब्लोकं स्वीत्वा उत्तर देनेकी हिराबत

नारक का ग्रहान कि करियोंकी पुरदार, करायों का कार्य रिवे किया, कार रिवा को जनमें कार्य महत्त्वक हैं। शरदारों का पका है कि मार्य करार रिवा को जनमें कि कार्योंकों दशा दिश्लाकि तिया परत्यारों न कमा को। नार्यों सा क्यारी की कार्यों कर दार्थ का रीजों करेंगे, किया करा रिवा का सो। जारते सा क्यारी की कार्यों का सामानि करायोंकों करायोंके तिया

. . सम्पर्व संबी बाहमब उपनिकेश-मरने विकासन तीन भावनामोसे परिकित है और उनकी इन सावनामोसे विवसानका और वीजवाकी सुबना देनी की बाहिए ।

भारता सामानारी सेन्द्र-(हस्ताकार) सी वर्ड सक्य क्वसिद्ध-समित

शी राता मध्यसम्बद्धा देव क स्वय ।

(परिक्रियः म)

कलारी १ १८६४

सेवामें

सम्बन्धि हैरी एस्कृत

सरकारकी है।

विकासकी प्रक इमारी मानके साथ कर को शुलाकाए हुई वी अलके वरिकारकी दुस्का इसने मक्ते सुनक्तिक रास अन्युक्त देंद वं को वे दी है। इस सुनकारने अतने भी बारकीरे का सार्वजनिक बनानका मितवार कर दिया वा को कि करोने प्रदेशन-समिविके साथ दूरी मारकी सम्मन्धारके सम्मन्तमें दिना भा । मौर मी नमस्मि को यान्त्र भारते सुबसे निषके हुए गालमने वे बन्दे भारते समय नयननार करा ना कि जानके समानक भाग नह ना कि नहीं मनती कोन कर्वजर्मे पंतिको प्यानेमें जनमर्ग को हो ने नवने पराप्त रहनेक सनोत्न सिद्ध हो बार्नेप और त्यानवन ने वैने ।

जी नॉरनके साम बार्टानारमें आपने का भी बातवाचा वा कि तिस्य परिटेटी सकत क्षती है

र संग्रहकी माराज्यकारों परी हो सकतेगर कराँड और भारती स्वापीको गाडी क्लारनेकी स्ताबल जनका है देती पाडिए ।

र यह बयानत मिन बारेन्स ब्यानोंकी अधिकार को बानेना कि वे अपने बाजी और अन्य बाहे तो एक कारण जावर जात हैं, बाहें प्रीरी

कीयाओं सारा । इंग्यारवॉकी नोर-नगरदल्लीसे व्यक्ति और याक्की रक्षा करनेकी निम्नेगारी दूसरी मोद्र भी बॉलाने बालको बातकाया या कि स्म कारिनेकारी पारांजिकों सूरिनेमीके राम-बात प्रता पत्ता है, इसक्ति कारे हमांतिकोंकी प्रसाद है के सिक्ते का प्रताद है के सिक्ते का प्रताद है के सिक्ते का प्रताद है के स्माने की सामित्रक सुरितेमीकों उपने दी मान्यों की स्वाद है के स्मान्यों की भी मान्य कार्यों की सामित्रक कार्यों की भी मान्य कार्यों की सामित्रक कार्यों कार्या कार्यों की स्वाद कार्यों कार्

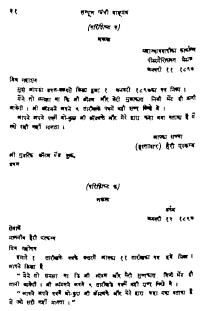
हमें आपको का शक्क नेनेची विद्यालय की वर्ष है कि मुद्दार की विचार मान सम्बन्ध की बादी है और संभारण कारणामांकी दानों हाजनिकत मान ही क्यांतेका साम होत्र कर कि लाहा की वह साम स्वादित समीके कार्य होनेकार हुक्याल — मी कि १५ भी प्रतिकृति हैं — समोके किया सम्बन्ध किया हो हो ने स्वादार हैं सामित्यके किया की बीचा सम्बन्ध कर स्वादित सह नेनेमें मानता हैं।

हमें भारत है कि भाग रम सहायके अधियतको समझीने और सरकार वर्षे अब केरी।

हम साम्बा बाज पर वच्ची और भी सीन्ते हैं कि किन मंत्रिक्त रामी महाना "राज्या वा सा है क्यों संस्थान समाधी राज्योगर-केवार विविद्ध को दूर बहुत-के मका भी गा के स्त्रे हैं और के स्थानाच्या जा महान-परीते हात जाना दिलान का मंत्रीया देशके विकास-केवारीच्यी वर्ण होते हैं रहे हैं। समी सीरीला बचान रूपमारे गर्दी सामाणि हात्र माने-मान्त्री हम समाधित सीरी समा केवारित विवास विद्या हिन्दा है।

इस सारा, सहा बाँव मिन्यासूर्यक सम्त्री वह संस्थित प्रदेश हो । बाहरे हैं कि वही इस संस्थान मिन्य सामान्त्री सहारों ताने हैंदेर राजार, महामंत्रे ही सही का ने वह सारा मान्यास्त्र सहारों हो है स्त्रमूर्ती मोन्या न कार्यों के हिस्स्त्रमूर्ती मोन्या सारामित कारा देनेने मोन्रे सिमार्ग म कीर्यों । स्त्री करोरित मान्या सारामित कार्यों कर हो हो ही है हि हम संस्थान मान्यास्त्र करा वह सारा कार्य है हमिल्या सारामित करा वह सारा कार्य है हमिल्या हमान्यास्त्र हम्मार्थित हमान्यास्त्र हमान्यास्त्र स्त्रमा सारामी कारामित हमान्यास्त्र हमान्यास्त्र स्त्रमा सारामित कारामित कारामित हमान्यास्त्र हमान्यास्त्र हमान्यास्त्र स्त्रमा सारामित कारामित हमान्यास्त्र हमान्य हमान्यास्त्र हमान्यास्त्र हमान्यास्त्र हमान्य हमान्यास्त्र हमान्य हमान्यास्त्र हमान्य हमान्यास्त्र हमान्यास्त्र हमान्यास्त्र हमान्यास्त्र हमान्य हमान्

नारके नाजकारी वेशक (हन्तावर) नहरिषा गॉरन वेंट नक



परमा इस मारहा भाग वस तक्की मोर सींक्या पारते हैं कि संतरीत कर इस कियर ही बसी नी उस समय मारने जी ऑटनको का चार रकनेके किए कहा कि को बार कार कोरो ब्लाझ एक-एक राज्य में बाग्रे दिल बढ़ने मिलारफकने साथियोंकी बनका हुँगा। और भारने इसारे शीच जो नार्टें हुई कों उसमें से मापेक बात श्यारे सुभक्तिकोंके सामने शुरुए देनेकी श्वानत भी करों है ही भी ।

भी ऑटलेंडे लिएक दिवानेपर इस बार देवर करना चलते हैं कि सकत्वातरें मो पाराचीर हो भी भरता नाव हमने भरने १ सारीबाडे पाने मानतो और-और ही किया है। चरलु बाजनों कोई एक्टरक्रायों न छहे, इसके किए बाप इन्नाएँ बो-बो नक्तियाँ समझते हों वे बत्तम होती हमें असन्तरा होती।

> मारके माजाकारी रेसक. (इस्तादार) पडरिक खॉटन ऐंड क्क

(रिविश्वास्त्र का

रेशमें समीद विकास म्बोरर.

रम तक्त क्साविक हारा इस्ताकरित कन्द्री तारीक्षके एक कन्द्री शाच्या स्वीकत करों है। बार्ने बन्दीने सुनात ही है कि बन्हें बदनिवेश-सनिवर्क गाम किये लो ८ मीर ९ ठारीमानि इसारे तो राजेश्वर करूर निम्म प्रचार देशेची विश्वस्त को बी

" बाल्का वह तुलाब कि वानिव'को चरचार बनाताको क्या बनावे दिवे किया बतार दिवा कावे जानमें काना असम्मन है। सम्बारको क्या चना है कि आपने वन्दरमाहके क्रमानते मनुरोध किना है कि ब्लाबोकी बास दिशाकांकि दिना सम्पन्धक्तें स भाग नहें। भारती हम कार्रवार्र और आपके हम दोनों स्वाप्ति फिल्हा उत्तर तिथा

₹ १२ सम्पूर्व बीची शहपद या रहा है, मगम होता है कि भाग भारतीन गाविकोंके उत्तरनेके विश्व करियों है विजयांन रीज मास्तामकी सरिवित हैं और उसकी इस मास्तामोंकी विकास है वीमवाकी स्पन्त केती हो चाहिए।"

नारवित बाजिबोंके क्युरेक्टी किस्त वर्तनके एक विकेत कोई को अन्य हो हैं। मैसे हुई है जाने इस सम्बार नहीं बर एकते। मान्य, ताबरी, इसे बाँठ बार्गा मारची का काम हेना चाहिए कि का नामाडी जिससाहित कार्ने हैं

सरकार का नवाकी प्रोत्तवाहित किया है किया वस्त हम अपने ८ वीर र गारीकोचे प्रशेषी कर प्रके हैं।

हमें भारपर्क है कि भारने इसारे बनर निर्द्ध वर्षों ग्राम भारके बसकी हरे are flow market flow we will flour: १ इस कोमोने अन्तर्मे गैरूकानुषी वरेकोसे समार्थ की और वे वह की ^{हर}

रहे हैं। बरमू सरकारने कर्त रोक्सन कोई जन नहीं दिया। र में। केईने बाबरोंके बोडके शास्त्र कोने हुए बी, वन समामीडे बहेमांकी न्यांना देवेशानी वर्ष कुला बंदावा परे हर है। इ अने से वर्ग समावेत्र आलावा एवा है दि क्रमें संस्थानीके बहेरलीके नाम करपारकी न्यासुन्ति है। ४ प्रतिरहा-सन्धाने सर क्ताराठी राजिको बाद्य कर रिया है कि संचार पंचायोडि बादक दिवड करेरांपेडी क्रिकेट प्रकार की क्यांकर देशी नहीं करेगी । य को भी कीई इसारे वार्तिकी कोर सामके दिन्द कोई मानून-दिन्द मार्रवाई करे काले रहा वालें की सरवागरी स्वाच्याचा सक्त है। ६ रंगान्तीते एक "धीनवा" तिकारी है। इसने बान ् तारियार परमें बनाया दवाना के दिया था। क करवानके नेमाने कर्मानी मी रामस्वीक साथ अररीनों मान के रहे हैं। ८ रामस्वीक मेला स्थानन रहाता वये हर है और मजदीदे अनेतं बनिए-तामा सहना करते वीच प्रभारत विकास

रिया ना कि व्यक्तियो उतारहेका बाल बरिता नमर सब स्वरंत कर दिया करें कार्ने कि साथे कारण हमारा मा सहागान हो तो सबीद १५ और प्रीमितिक word may an a बर इस निरेतन करते हैं हि इसे हतों ने अप्तेर शिवासत और सकता क्यां शिस अने । इस बह जी संचल करते हैं कि इसे बालास करें कि स्वकतन

बात कर हो है। ९ इसके सन्द्रार्ति हेना मारतनात हे दी मार्थना ही की हि भरकारी बनगरियोगी रम बराउनी कम तेजो रोड रिच करे । १ । सार्थ हरू र

कारियों नगरित ताने मिन बात को दरव दिने हैं तो वे का है।

कराजी करणाहों से क्रंप सके हुए जान ४५ दिन है। स्वक्ष कर सार १५ मीं प्रतिसित पर त्या है। स्वक्षित्र हो कियान है कि जान हों, जा दुखर यह पूर्ण पर देने की बीचाओं स्वक्ष है। इस नाम्कों का सूचना है प्राची परिचा पाना है कि बी रही देता और क्यार है जिस किसी किसी है कर स्वक्षा हो पाना है। कि बी पान प्रीक्ष हो क्यार १५ मीं प्रतिसित्त होने सुन्या देशा कहेंगा की हम स्वक्षियों प्राची आपनी जाए कर है स्वक्षिय सार पंचारोपी नयानी कामना कर रहे हैं तो हम स्वक्षियों प्रस्ता है की स्वक्ष होने हमार प्रतिस्था सारे व्यक्षियों नयानी कामने किसी है स्वक्षिय प्रयक्त हुए कर है है। हमार स्वस्ता क्यार स्वीवस्ता है कि सारका हो जा स्विक्ष है के कि स्ववा है।

रंगस्वोंके बोरामांके सम्मानों सम्बार कियो स्वारके प्रमाने व पह रास स्वोक्ति हम क्या मुक्ताची एक जरून रास काले साथ नाथों कर यो हैं विस्तर बच्चात राजकों स्थापन हैं और वो क्यात बारडी और कर्मत जन साधारणी कर क्यूबिंड और शास के व्याचीके स्थापनोत्तर सामीक की थी। (व्याच का स्थापन विकारण होंदें)

करवान स्तानके द्वारा राजावित इस सुवकाचा अस्त कर हुना है कि कई बाहिनोको कर कामे क्या दे कि बीर इस इस बन्धरनहरूर कारे तो बीरीत स्त्री नवीने।

ाडी लग्नर इस बहा रास्त्यकारी में एक लग्नर राजें पान करती कर पहें हैं, वो कपान शहरीका किया हुआ हैं और वो दोनों व्यानकेंक्ष कपालीकर करने रास्त्रण करनोर्केट किस शास्त्रक किया गया वा बौद क्रियोक शांधे अनामेंन सकावा मा कि पत्नी किया हो दार्चीनर से बहानोकों वहा बाधी और मारू बतादेंने दिशा सकेशा (पीड़ीका कर)

मन्दर्गे इस मानका मारापूर्वक पृष्ठना पासूच है कि क्या अपदार एन करत भारतपारिको में ही पत्रनी केमी लाखा महीना समाप्रीके प्रथानतीयी बृत्यु नर्पा तो भी करके मारत हो मानेके सकता और क्या क्या हो सहता।

> नारके नक्षाकरी सेनड (इस्ताचर) शहा नमुख्या ऐंड कम्पनी

र वेदिया परिक्रिक स्था

मा रेटन [बसरी १६ १८९७] माइपी बदाबके क्यान और क्यापा प्रश्तेन-ध्रमितिके बीच तब ध्रौ वर्ष र *नापुरी मन्दरसा*को पादर अंग्रह काकनेडी काळ छोत्रकर काच बन्दरहार्थे कर्री अभिना । १ - नेप्रज्ञानामी भारतीबीची परिज्ञों और स्वयोदने कराने निवा पानेचा । मो मारतीय बेटाक्ने प्रचारे निमाती हैं बन्ने विपर्ने सीमितिको का मिल्का हो मानेल कि है मैदार और रहे हैं, कोई कारने दिया बाकेग्र । ४ केन सकते करसेंड ज्यासने समार अंग्र दिखा व्यक्तित और को कुरक्रेंडमें वहाँ समा स्क्रिये करको *बावरी* व्यान पास है समेख । ४६ किन मारतीमोंको करवाँक स्थान नहीं है सनेता करती नरता राज्य के व्यक्ति फिराने मानकी पूरी एकम स्तिति ब्याहको है हैगी। ५ वस वन्तलावस्त भारतीयोंके को करक और मान्य शासाय कर कर दिया गया है आको केवल और कीमरा --अधिक करीं — समिति नारतीयोंको है हेनी। ६ *वाहरी*को बन्दरमानसे नारर अंगर बारनेके त्यानक कोल्या और कारा-पानी जाति केनेमें वश्राखावके मीतर केनेकी जरेगा वो नविक स्वत पत्रमा और उसे समिति हारा वह स्वान न होको देतेके कारन वो और

सम्दर्भ गांची बाश्यन (परिक्रियः प=) **HER**

(परिशिष्ट प)

State of

報告 収

क्लरी १३ १४९४ 2 -Y4 55E

संस्थ होत्य

त्री प्रता भव्यक्त रेंड कन्त्री

न्यर स्थाना रहेपा रह समिति काक्रीको है हैती ।

* 1 4

नदास्य

सके मारके करूदी शारीकके कादी शांकि स्वीकार करनेका गान अस्त इस्ते हैं। रान्स्रकारके करवानने क्यानोदी विद्यालय कर दी है कि वे आज १९ वर्ने सीम

अंशब्द मीतर मानेके किए तैयार खें।

न्यतंत्राची रहाके राज्यत्वी सरकारको क्लाडी जिम्मेतारीकी बाद दिखाँ वादेकी क्कारत कर्ती है।

मारक सकाक्ष्मी सेग्द्र (**इ.**) हैरी एल्डाव (वरिक्षिप्ट म)

नदस

٠.

धने हेवा है कि मर्ज़्तीके बाद जाता-कार्जन अंबर्धे बादमें बदनी का सम्मति हरू हो है कि का दुवसरको कालों कारने कौर कारमें हे गुजरकर मानेको भी श्रीबीको वो सम्बद्ध दी वर्ष भी नद्द क्षीक नद्दीं ची। वनके कटफ मानेमें क्लोंकि नेरा मी बान का क्लकिंग नदि बाप अपनी बनत सम्मतिका उत्तर देनेका नवसर तसे प्रश्नम अपनेकी क्षर्य करेंके हो स मारका मनुष्ट्रक्रिय हैंग्य । मनवक कुछ भी बहरनेका कोई सर्व गर्दी का क्वांकि हरूना वह भी कि वहि नाप सरहान-कर्यासीके कर्मकर और पनके और स्व हिंद करनेके इंनको नहीं गानते के दो बालकी हारने क्कड़ो कोर्र तैनार नहीं ना । चरना नन ननोकि प्रकान-समिति इस पुन्ती है कीर कोलोबी मानवार्य मानवार्य नवीं का रहीं इसकिए सक्के आजा है कि मेरे प्रताप शामिको और विचारपर्वेद व्याम रिया वा सकेछ । मैं मारम्पर्वे ही क्लब्द हैं दि कर अध्योकन कर पर। वा सनी मैंने भी गाँवीको न्यस्तमें मधादित उस प्रतिपद्मकी शक्ष अति शास्त कर की भी जिसके सम्बन्धनों दुने कुछ सास पूर्व राजस्ताका एक तार दिक्य था। इस बहरू में बायने पहलोको निकास विका सकता है कि राक्टरने म नेतन ज्या पुरितकामा वर्ष धनंत निया ना वस्ति वतना गनंत किया था कि दोनोंदो पर पदनेके प्रस्तात में यह परिवास निवाके किए नहीं या सबता कि कार विकारतालें पर पुरितास भी ही नहीं थी। में बह भी कर स्तरता हैं कि कत इतिकामें नेता कोई कत नहीं है जिसका कोई वस मानसका आर्थात कर क्षेत्र कि वह अक्षरन है। यो कोई पाने, वह प्रस्तक केन्द्र को सबदे सक्नद्र देशा सकता है। भारत पारचीको पाहिए कि ने `सा करें और मक्ती समादि ईयान्यारीके रें कि स्था कोर्ने नात अपूर्वे असरव है। स्था कोर्ने नात अपूर्ने ऐसी है सिसे किसी धम्मोतिक निरोधीके निम्य अपने पत्राते प्रमर्थकों क्षत्रता कवित न को है हार्योच्यक्त. राष्ट्रको अस्त्य वा वर्गन दिवा उससे करताब्य अन मन्द्र बचा और दावने अपनीते भव भी भारती देगा कहाँ रहा जो सन्तराखी सत्त्व और अस्त्वका अन्तर मतका वैदा । क्षेत्रमाचे समय किस-विसीने को शुक्त बाको सक्की निकाले करों शेक्षसकर में कराय की तुकाना कहीं बाहता । समें विश्वत है कि ग्रान्तिके समय की भी क्रमके कारण बहुदा प्रकारण क्षेत्रण । वरणा बत्तारिवाणिको राष्ट्र वर देतेके अनोत्कानी मेरा बंदाना है कि में बावके पारकीको सतका है कि ब्यानको कराने और अवसे ११६ सम्पूर्भ गाँवी बास्यम् स्थानेने सन्ते को जन्म राज्या स्थान को स्थान स्थान

मानेसे करके भी मांबीको हिनति क्या भी । इसकिए में किसीका भी ग्राम किने क्या, नेत्रक कर शब्दरिया गांच नहीं देशा हैं को कि सार्वजनिक कपने करते. निचकी गरे पने में १ उसने हमारे मामको हिन्दुरतालको नामिनोर्ने बसीटा और हमसी रेसी कारी और मेरी संस्थित बॉक्टी कि बैसा ब्लाइड मस्ता मेहरा है। र जो फितारेस कार बाने हो कियरे कि इमें छस्म शुक्रनेश मौता कि सके। है 🗺 मिक्ने ही कर्मक साम अब्ब शास गरताल किया जाने और वसे क्यांनि नेशाओं अपने न दिना नाने । ४ नह एउपमें परे स्थानन, सन्धरके निस्त्र शुक्रस्य सम्बन्धे क्रिर वाक्निति प्रीप्त वसून करनेने क्या तुना है। ५ कर त्रप्राव-समितिक गरिमिति दीन सक्तम कूरहेंड क्यानक रूपे तर वह वेसे "सम्बद्धे"में या कि की करकर करानके सबसे गोक्षेत्र गोदाममें के शकर रक्षमा कर । यह बुक्तरे येकिन क्यों कूरबॉड की क्रवापर मतस्या किया सक्त्यामें हैंडे वाना तना । क्रमी निरव क्यी वर्ष बारानित ने केल्ल कुछ कपूने हैं जल्हा मेरे अनोमानो किय शाने ही प्लीच है। महि वे मानीय स्टब हो हुएरे शुन्दोंमें बहि तो शंबी समझा मानट पर जिल्हा, पूर प्रत्यन प्रथम प्ररीधे कायरतापूर्व बार बरनेवाडे हो वरि अवस्थि देशा कोई काम किया हो कि ने कुछरति हारा कुछ जाने लाका हां करि के देशे करतेल को कि सामने कार्यर अपने किनेका वरिकास सन्तानेकी सैनार न की यो ने कानुबन्ध सम्पानित हैता करनेके किए अभोग्य हैं। अथना किस स्वान रा^{क्स}निक प्रकृति अनेक देशवासियोकी इसारे किछनी हो रूपि है और रिश्लेक सम्बन्धी वर्षे एक्सीरिक विचारीका अचार करनेका कर्ने इसारे किलना हो। अविकार है कार्न मान्त्रोकनके नेता राजनेके बोल्य ने नहीं हैं। उसके बहुत कींग्रमेंसे पहले में कार्य अर्थकों कर्र कर करते जिल पुत्रा का और सुकरनेशनीसे करने एका शक्तिको आवपूर्वक स्थान देनेने किय ने बैसी विश्ता अच्छ करते ने जन्म सुक्षम वर्ग नमान प्रथा वा । व्यासिक कि अनी विश्वती हैरी सम्मति वर्ध बेंबी का गरें थी । में का सब पाव-पूर्वपर किया रहा है, और मुझे शामिक भी समोद नहीं कि मेरे पेक्क और जो को कोन भी गांचीको चलते हैं ने मेरे हम सुन्होच्छ समर्थन परिते । एक बार गढ रह स्वामाबीकने क्या का कि नदानकों सक्तका अपने मिरोबीनो मीचा दिखानेके अनवसे वहीं नरिय अपने भारती ऐसा बीम्न समाजे होती है कि इस विरोधीके परापर हो कार्ये वा कारते केंचे दक कार्ये । मेरा महिलाय वह है कि ग्रम्भोदिनै इमें मनने निरोचीट साथ न्याय करनेका कराबी बुविदार्गका करा दुविदानीस केवा करन करका चाहिए, असके शिलार हैंट वा कुकर मलकर सहीं । मैंने केवा है कि कानूनी गामनों और परिवार्त पत्रन रोजोंके विवारकों की गांधी हमेरा

सुम्मानारकः विधीवीका स्ववस्त करते हैं। करके तर्क वर्षे कियने ही महित क्यों न क्ष्में के ब्रीवितनकी सीमानक क्षत्रकत करके बार कभी नहीं करते । इस कारण हमने निवस्त दिया या कि वे स्वरि शावते तो ब्यानन स्थास गर 📸 रह सकते के फिर सी अपने सनुवक्ती देशा करनेका अवस्थान हैं कि वे सरका "सूर्वेड" क्यांकी तर है। वह वे बोरडी क्या एतडी किएकर करती न इसें वस्ति सन्ते मद और राजनीटिक नेवाके सुनान रिवरिका सामना करें । बीर में क्या सकता हैं कि उन्होंने पूरी उराउदाके शाब डीड वही किया मी। में उनके शाब केलक एक बानुस-पेता व्यक्तिको वैहिनतसे हो तथा था, जिससे कि मैं यह अफर कर सके कि भी गाँधी रह सम्माबित पैक्टे सम्मातित व्यक्ति है और विससे इनके सान की स्कारम किया नवा उसके विकट बज़नी प्रतिवाहकी मानान उद्धा सकें । प्रश्ने भारत भी कि में बीमूर प्राच्या की शास्त्र अल्ब्स अपन्यत नहीं होता । जब सारा सामन बारके चारकोंके सामने मा बना है— और वे कारन मी किसी पेरित होका त्री गाँचीने इस मदास क्यारेंच्या निवासन किया । वे सांवर्त को काली विराह कीक्यो स्क्राम होते देखार नामेले प्रहादेने बहामन ही स्के छते । मॉर वे बहते हो पुत्रिक्स बावेरी बावर सरप के केत्र । सन्तु उन्होंने हैसा हुक वहीं किया । सन्होंने क्या कि में बर्गनके कोगोंके शामने बाने और अधियोंकी देशकारों उनकर मरोसा करनेत्रो तैक्त 🕻 । हुबारके तमाम श्रुक्तिक रहतेमें क्योंने को करता और सावस विकास असे न्यरा और कोई नहीं दिएत्य हकता वा । मैं हारे बेटानको विकास रिका सम्बद्धा है कि वे बीर पुरत हैं और उसके साम बीर पुरतका-सा की स्वस्तार करत पाहिए । वर्षे काफर रहा हैनेस हो अन ही नहीं ठाला नहींने में केवा अरहे साथे निरम्भ का मना है कि वहि अनी भर माध्या को कि सारा राज्यात सहार इसका इरवेदावा है तो भी ने पीड़े हुएक बामेशके व्यक्ति वहीं 🕻 । नवं जुत्ते नाशा है कि भारते सामने सारी करानी निज्यातसे रखी वा पुत्री है। सा पुरुषा अनने बोर बस्यान दिना है। मैं का दूसमा वर्तन वहीं करता। करा कर क्रिकेट कर विकास करता है। या पर इसके विकास करता है अप है के स्थास करता है करता है करता है करता है करता ह इसे दें का स्थास कर हो जहाँ । वेशे करता हुन्दर पर करता करता है करता करता करता है करता करता करता है करता करता क सीची कर्मके बक्ते की में है कंकियों हो करता करता करता है है। वोक्सी करता और मीचिक्सी परन्तर्परं पूर्वे कि को रीवती है। इसे क्यता व्यवहार सम्बद्धान्ता रहना कारिय, और वैसा करता हमारे लगलके फिटना ही विकरित क्यों व हो। हमें विकास और क्सारतालुक्य क्षेत्र ब्रह्म कारिए । -- जाक्य क्ष्यः व स्थित । नेवाक मन्त्री १६ व्यक्ती १८५७ ।

११८ तल्यूर्यश्रीना≉सन

क्याच्या चेता रक-को दिनोंमें बहुत हुआ। कहा का चुका है। दि≉सन्देश वारमें दिने इस सार्यक्रमें मनजर को प्रमान पहला है नह अपने फिला है जो कि पुरितकाको ऋ केनेनामंत्रि समार पता है। राज्यी नात का है कि हतें मानना वन्ता है कि भी यांचीकी तुरितकार्ये रहिन्द साविकार्ये मारतीनोधी रिपरि^दा वर्गम अस्तीय इक्टेरे अन्य वहाँ किया गया । वरोतीय कोन अस्तीयोको वर्गने समान माननेने इनकार करते हैं। बाँद करतीनोध्य करान है कि निक्रिय जना होते नाते इस का सब क्षतिकालों और अधिकारीके इकतार हैं जो कि क्यनिवेदार्थे न्रोरीनोंकी सन्तान मिन्नित्र प्रमानकोन्द्री बाग्त है। सम्प्रानिती १८५८वी बोपलान्द्रे सम्पर सर्वे थेसा दाना करनेका महिन्तर भी है। सा गतसे शलकर नहीं किना का सकरा है पश्चिम आक्रियोर्वे भारतीकोषे विस्ता सल्यार्थं विषयत 🕽 जन्त गांव ही हमारा क्यां है कि शासर भी गोनी इस पास्तविकताका कुछ मनिक विचार करेंचे कि पश्चिम माजियां उस्के शरू वसी देखानी का साँचे हैं जिसे प्रवर्तने भी क्रियमिति बरके रवेंने बाध रहाँ घरने ही बाबेगी वा बेंचे होस्करी रहाँ हारने दिय नानेगा। सम्ब्रहम पुरितका और शत दारा मैंद्रे द्वर करने, सार्यकार पिर लीट को वे सर्वात और अपने ही सबी कियों को है किएने कि बार्गिनिकरों के साथ क्रुप्तिक वरकारणा करान करनेताली किसी प्रतिकारके को सकते में — और सन्दर्भ राष्ट्रत्ये तारहो सदस्य कारो कारो मानर कर देशा हो साम पत्ना है। सर्च का भी गोपीओं किया हुई सभी पुरितका उसने हैं तर जात होता है कि अपी हुत क्याहरण यो संबद्धण शास्त्रमिश्व करिनादशके दिने यने हैं पर ब्लाहा विकित्तर मारा बेलो राजनीतिक विकारतारी मता पर्य है बेलो कि बबत बार शासलाकने सबेरी (पर्राजनकर) दिना करते हैं । संक्रिनों सत पुरितकारों ऐसी कोई नाश नहीं है वो भी शांची नेदाक्रमें पहले अध्यक्तिय न कर अने हों और को अक्टक शहरासमाण बजात हो । इसरी बोर, जी गाँचों या नन्य फिताँके किए ऐसा तकत करण नन्त है कि रक्षिण आधिकार्ग कारतीयोक्त करी दरेगा स्टीकार किया करते. वो है लाई करना मानते हैं । एस माजनेमें मरदारी करनेसे दोई जन नहीं होन्त । मरसीनेनि क्यों यही संस्थाने बाबे, उनके रीति-रिवार्ग और उनके सान-स्थानके सरीकोंके दिन्ह इस देशमें त्रक और कहरी भारता विकास है। दानुस्की दुखिते हे जिरिज सं^ख हो करते हैं चरत बातीय सरकाओं और अवस्थानेंक बतुमार, विलग्न का बाह्यी क्यों जरिक है, ने निकेश हैं । नैशास मन्त्री १८ करारी १८९७ ।

भी गोबीडी मररतील पुरितन्त्राचे विकास रे एक्टरने को सुकिया तह केना ^{का}

₹ १ ९

क्ष का सूना बाने क्या है कि ही गांचीने विस्त्र किन्स हो-इस्त्य महावा शबा का कह शब्दोंके राष्ट्रांकी कहीं मिक्स करू, तीन और का वा । करके कर्काने क्छ आवश्चित होते हय भी कार्ने त्यतिहेशुवासीके परिचकी न्यान-गुलकर वा हक्टायुक्क वेसा कियाक्कर विक्रिय करनेका कल नहीं किया तथा ना कि वसके कारण करते बरान्त्र केलेके किया कोगोंको सम्बासा विकता माना जा सकता । निवधन ही वस सम्बन्धमें ggs गरन-विदास कीनोडी अन हो यथा था । सी यांची नपने देखानिवांकी टीफ बड़ी केना करनेका बाब कर पढ़े हैं जिसे करनेके किए भीवन सन्ता तैनार रहण नामें हैं । और भर नगर भानेस धानिवर्शक विचल किया गरेगा वर मानना होगा क्षि करने ब्राह्म दिवसे ही प्रास्त और करने सिकारत निवने ही मसर्गनीन वसे स हों बनके साथ कावि-म्युव और बाह्य भारमीबा-सा व्यवहार बारीबी शीत शवनी नरी है कि जनने अधिक दूरी दामरी कोई नीति नहीं हो सकती । मैं जिल परद्वको अपने मानी देशनामिनोका मनिकार प्रमानते हैं उनीको जाना बरनेका कर कर रहे हैं। बर्धित स्टाले वह मनिमान बरते जाने हैं कि इस विजेते प्रस्पाधी बनवर भी अपने विरोधियकि साथ स्थानका साल नहीं बरल । बस्तिकेशी मालो है कि की गांचीकी मीन पूरी कर देखा इस क्पनिवेशके दिवाकि किन बलाव होना । वै कालने हैं कि परिवारमां और नरीरीमार्ने न्यारीनदाना अन्तर मीरिक मीर स्थानी हानेके कारय दवरें सामानिक समानदा कमी हो ही महीं एकतो। बोर्ड मी मुन्ति-कम इस कर्तको कभी मार्ग बाद सदसा । वे वाली है कि ब्याबोर क्रियम करते क्रिया कोने कर भी नात्म-स्थानी रहायानिक नास्या व्यक्ते नेतास्त्री के रही है कि सरकाचा स्थ्या वही है को तबने अक्ट राम है। संकेलें ने बालों है कि बाँड परिवार के आजातार क्षेत्रे प्रतिकल न स्थाना क्या ता बद्द प्रचित्रीत् पोरीका कार्निकेट सहीं रहता । परन्तु वर सर सत्तानिके किया, जो कोग स्थापना इससे मिन्य विभार स्वाने है रतके साथ मत्तिकत और भनातसम्ब क्षत्र व्यवहार बाके, इमें अक्षा वह विवाह नहीं कैना पाक्षिप । इस निजी पातीशर अधिक बोर देवर पहले ही अवली बहुन दानि बर पुढे हैं। इनिया जाता है कि अविकार अपना आस्ट्रीयन करने दुव काविरेत्तके नेता का बारकारिक और जारतांक्टका विदेश काम रहेंने जिसके किया वन वर माधा नहीं कर सकते कि नियुद्ध कि/क्षेत्र इसारै बद्धारा सकतेन करेंगे। -- नैयस मर्क्ती १९ नन्तरी १८९७ । भी खंदीने एडक्सहमुरके प्रतिनिधित्ते भीती जो बुध बदा वर्ते स्वत्त रहिते क्या क्ता है और अन्ते मानून पाना है, उनके पान अपने पहने नहमेवी परन बुध है। बॉह

करने की बीह दे हा अने और दम क्विनेनको अप्रतिकेशी बार देनेकी बालो को अनक

**

निवर्गे कही वर्षे शतोमें गरी मलुक्तिसे बाम किया वदा है। बनताने उनके निरद रहनी क्वेंक्ना बहुत-द्वार एसी बारण करी हैं। आधा है कि वस सामेदी रूप करने कारे सन न्यान किया कारेगा । वह बोर देवर बड़ा तथा है कि सरकारके वास ऐसे अधान है जिन्में सिक पोता है कि ऐसी एक बोक्या नी : करि पेसा को तो उस बनानोंकी शब्द कर ^{क्रे}न चाहिए, वजोंकि तो दर्शकी विश्व ाो बारोप किने तने हैं उनमें वही सुकर्न है। मी गोबीने माना है कि " क्षेत्र जानिक्षाकी कारपीनोंके बाज बेनेके लिए कोर्स संगतिय स्थान किया जा रहा को वो अरयन-समितिके मैठाओं और नेटकके अन्त किसी भी व्यक्तिके रशके विकार वेपालिक आन्द्रीकन कहा करमेका पूरा अधिकार होगा । " रश तरह करें हुए कोचेंके बक्तालुमार, इस बोक्नाडी विश्वमानदा गित्र की व्य सके ती भी बोबीका हुन वर्ग दो मानका । इसके अविरिक्त, उन्दोंने इस आहेरसे भी साफ समझर किया है कि वे बहाजांकी रोक रक्तके कारण सोगोंकी गरकारके विकत सुकारत चलानेके किए क्याना स्टे में । वरि कोई मधान कर आक्रिके बड़ने दा तो क्से भी वेड कर देशा चाहिए । उन्होंने भग गाउसे भी स्पारत किया है कि ने अपने लाग एक प्राप्तासामा और क्रांग कलोकितर राजे में और भैटान आनेगरे व्यक्तिकों संस्था रहती वर्ता भी जिल्ली कि रहनाई वर्ते हैं। जिल्ला को के मानके रेसे हैं कि करी एकरम सकता का साथा दिस किया का साथा है। दे तब हो रने ती वस अच्छा हाया, क्वेंदि भी मोबी जी बड रहे हैं वह "दिरि सब जिड्ड क्या को उससे बता बत बाकेग हि हाजडा जारतेला अवतीन पाली और साल कार्यां के लागांक कारण किया वर्ग था। सामार्थ-मरकारकी शहानता हैजी को को हुए तप्योंके सकारे ही आये बहुता अवित है। दहा रोप मनानेते बनारे नक्का सर्वन नहीं बोध कि यक वा हो नवाओं है करी माराणिय बसे मा रहे हैं और ने बमारे देशको बाटे के रहे है, और बारको वर सारी राज्यकीन की बादे ती पता करें कि के केंग्न और है है। अलक्ति करमें को, बाम नहीं दोना । इस समर्थदी भोरते और नहीं मीवी का समर्थि कि पर पार्टिक कार्यमं मार्टिक रिल, मार्टिक राव अनके कार्या दारा उपन्य की डी क्लामाके जाएने और सम्बारने बतिनिधियों क्र मारासमधी स्तेश बरके की गर् नो कि कारी पूर्वनाया सुरक्षित है। हमनी रुख है कि नहि वहीं नहीं नहीं न स्त्री न राक पहुंचा दिया काला और कि पहले सोची महैं भी को वहें पेस्रोनेतर क्यां-स्त्री का रूपा । - वेराम स्वपरीकार अनुस्ति हर, १८०० ।

(क्षेत्र)ये ।

नकात्रीके मुख्य प्रतिवध-संस्ती नगननी नाम नगननी सबनंदने १ अर्थन १८ ७ के सारीडा नश्कर ६ का महातः) वक्तीनियात आरिक रवर्षेत विदीरांत एवं दिनारंवव (मार्वनावव भीर गरीते) १८ अ।

Bo पत्र की अलक्जबर'को

क्षेत्रद्वी जीकरे किस एएक गोबीगोडी एवा की गर्न की और उनके निकास गन्द भा कारा कान क्यांने स्वर्ध कारमक्या (गुअरादी १९५२ एव १८५-५३) में किया है। बुकिस सुपरिवेश्वर सवा कराकी बाली क्षास मोबीमीके माम किसे तुम ११ कतारी १८९७ के पत्री (यह यन १९१८ मीर यह यम १९१९) संस्थास दोता है कि मांबोदीने उनकी व्यक्तिएत करते कुछ मेरे मैत्री वी और करहे पत्कार दिखा था । धर्माणस्य बनाठे एत होने नहीं मिले । निम्नकिमिन तथा बस्तुके बादका वत्र बागक-एकोने ज्यावाद है। स्पादना इत पत्रोक्त मामविदा भारतीय समाजकी सीमने र्माचीओं हे ही सेवार फिला का न

BV7

वार्ष १४ १८९७

शकार्धे श्रीयान भार सी असेरडेटर शुपरिटेंबेंट, नगर-पुनिस इसेन

भीमन हम भीचे हस्ताक्षर करनेवाले इस उपनिवेशके भारतीय समाजके प्रतिनिधि इस पत्रक माथ मापको उपमुक्त कुदाबकी हुई एक सोलकी बड़ी बेंट करना पाहत है। आपने और जापको पुरिसने १३ जनवरी १८९७ को जिस सत्तम इंगरे अमन-अमानकी रक्षा की और जिस तरह बाप एक ऐसे व्यक्तिकी बाय स्थाक निमित्त बनै जिस प्रेम करनेमें इस जानक जनुमन करने इ जमकी कुठबठामय स्वीकृतिके स्पमध्यमें ही बमारी यह मेंट अपित है।

हम जानने हैं कि आएने औ-राम किया जारे जाए सपने वर्तम्यते अधिक नहीं मानने । परम्नु हमारा विश्वास है कि सम बनायारण समयपर आपने की बहुमुस्य नाम निया उसके बारेंमें सगर इस बरनी निनम नराइना निसी-न-रिमी घरमें अंदिन न करें को बमारी चारी पनप्तता बोबी।

र देशिंग मन्त्राक्त पुत्र १७८ ।

... सम्पर्ग गांबी बाहनव इसके सिवा उसी उपक्रक्यमें हम इसके साव १ पौडकी एकम भी जेव रहे है। यह मापके दलके उन कोगोंने बॉटनेके किए है बिन्होंने एव वयसरपर सदायता की बी। मार्ग्ड, मारि इस्तकिबित नंग्रेपी प्रतिकी फोटो-नक्छ (एस एन २१४९) से। चपम्म प्रतिमें इस्ताखर नहीं है।

३१ पत्र भीमती अलेक्ग्रैंडरको

मार्च १४ १८९७ भीमती जलेनबैदर

सर्वत

महोत्रमा इस नौचे इस्ताबार करनेवाचे इस स्पनिवेशके मास्तीय समावके प्रतिनिधि इसके साम आपको अपनी तुष्क भेंटके रूपमें एक सोनेकी पड़ी संजीर और चपवन्त सराव किया हुना बोक्क भेव खे हैं। बापने १३ जनवरी १८९७ को मारतीय-निरोगी प्रदर्धनके संकटके समय एक ऐसे व्यक्तिकी रका की बी जिससे

प्रेम करनेमें इस जानक अनुभव करते हैं। इस कार्यमें जापने क्षत्र व्यक्तिपत कोकिम मुझै उठाई। इमारी यह तुष्क मेंट बापके उसी कार्यकी सराहनाका क्रतीक है। इमें निश्चय है कि इस भापको दूछ भी वें यह आपके कार्यका वर्यान्त

बदका नहीं हो सकता। आपका कार्य सदैव सक्ने स्वीत्वका नमना बना धरेवा ।

मारके, आवि

इस्तिमित्तित वंदेनी प्रतिकी कोटो-नकत (एस एव २१५) से। चपक्रम प्रतिमें इस्ताक्षर नहीं है।

३२ प्रायमापत्र मेटास विधामसभाको

सार्च १० १८ ७ के प्रार्वणावको दांचीमीने संकारण रोग-सामाणी पायक (लारिय), विकेशा सरकार विकेश (बीमाँ सारकेरिक विण्) और प्रवादी प्रीर्थन विकास (विकेश (विकास विक्रियन) विष्णु के विसास के सामा करेका जिला था। के विकास से तरका विपासनावको विकास के मार्ग सम्मे प्रीर्थन मार्गियमाणी प्रार्विभित सिक्त प्रार्विभ का प्रतिकास करेका था। का प्रार्वणावको विकास का वितास का विकास का विकास

मार्च १६ १८९**०**

तेवार्मे

नातनीय भव्यक्ष व मावनीय सदस्ययच

विभावसमा वेटास स्टामिसको

> चरनिवेतवामी भारतीयँकि शौष इस्तासर करनेवाचे प्रतिनिधियाँका प्रापंतापत

नम निवेदन 🕻 डि

बापके प्रार्थी रह पार्थनायत्रके हारा संशासक रोग सूनक (श्वार्टीन) स्थापार-गरवान (नेव कार्यमेव) प्रवासी (हमिक्रेयन) और स्वतंत्र भारतीय संरक्षम (अनश्वेमेटेट इंडियन्स प्रीनेक्यन) विवेदारी क सम्बन्धमें भारतीय

इ इस अर्थन्यावारी बेटास अवनुष्टीने नाने बाब १९ १८५७ के अपने बार्याएन दिया जा। धरीने राज्ये कुछ अराहादिक शक्तिया जीव ही वी और योग्न-मा साचारण राज्यिक ग्रीराचन वर दिया था।

१ तन विसेयधेरी व्यवस्था देख २७८०८८ में दी गई है।

१९४ सन्पूर्नवंशी**श**ङ्गय

रियति एक समित्र होनेके बदान उपनिषेशके किए सामदाएक है। वध्ये मारातिकी मताकद नैमानेपर सरकार जो नहीं हो पड़ी है। यह एक मारातिकी मताकद नैमानेपर सरकार जो नहीं हो पड़ी है। यह एक मारातिकी पालिक दिना का उक्का है।

मानी हुई बात है कि विवेचकीला संख्या किन जाव्योत्योंको उपनिष्याधे हुए प्रकारक है ने "द्यावस्थे पाढ़ेन कार्यवाधे और उपनी है। इस उपक्रका सामाया देवके कैसे के स्वीकारियोंने मीर मारातीयिक बोरताम दिवा है। हो प्रकार किरोपियोंने भी ध्वस्त किया है। होर सामग्र आवियोंका बाता है कि ऐसे

परन्तु प्राची बादरपूर्वक निवेदन करते हैं कि उपनिवेधमें मारतीयोंकी उप-

र नवपि स्व चारी विशेषक्रिय मीदारी गता मार्ग्यानीम् महार क्रार्टक्य वा स्त्री से तीमते मार्ग्यानीम्य स्वयं क्रांक्रेस मही क्रिया तथा वा । सेतक स्वतंत्र बार्ग्यान प्रस्कृत विशेषक्री अन्यय नाम क्रिया स्वयं वा । स्व स्वरंति और ग्रांबैक्येरे प्रम तीसी च्यान साँचा वा ।

कोगोंकी जमात वहाँ भी जाने वहाँका व्यक्तिक काम किसे विना कहीं पह सकती। डाक्सें डी वसे नेटाल वैसे नवे देखोंमें हो यह बात कास तौर

ਚੇ ਚਈ।

स्मातापन प्रवाधी घरतान्त्रे को बि्बाद प्रकाशित किया है' उससे मान्य होता है कि एत अपस्त और कारपीके बीच १,९६४ आयोज इस उपनिवस्त्रों आदे और १,९५८ यहींसे एवं। हमें विस्तात है कि बापका एम्पानतीय चरत इस बस्तीकों ऐसी नहीं मानेता कि इसके कारण विचायमीय विचे मानेत्रे ऐस करता चीवत उर्दासा था सके। प्राविधीको गरीना है कि समातानीय स्वत्र इस बस्तुविधीकयों भी उस्त्रा नहीं करेगा कि इस ६६६ पारधीनीयों से सम नहीं को अधिकदार द्वास्थात को एवं होंगे।

फिर भी प्राणी यह कहता तही बाहते कि उपयुक्त वनतव्योंको विका बांचे ही मंजूर कर किया जाते। परस्तु प्रावियोंका निवेदन यह है कि इन नन्द्रव्योंके मामकेकी बांचकी बहरदा सिद्ध होती है।

प्राचिमीको प्रय है कि में विकास कोलोके देवभावको तुष्ट करतेने किए पेछ किने या 'खे हैं। इसकिए हुमारा आवस्यूने निवेदन है कि विवसको पर विचार करनेक एक्ते महत्त्वाना अह समानात्री प्रदान क्रमेदिक क्षममें पना अवा के कि यह मिल्ट प्रमीप है मी या नहीं।

प्राविशोधा नाम भूताव है कि स्वतन्त्र भारतीयोधी गमना की जाय। और बारीकोधी यह जीव भी की वार्य कि भारतीयोधी उद्योगित बनिष्ट है या नहीं। विशेषकोधि बार्रेसें इस स्वतके हही। निष्यंपर दहें कोते किए ये सेनों बार्डे विकन्तुक करती हैं। इस कार्यसें इतना स्वयं नहीं कनवा कि इसके बाद वानून बनाना बनार है। बाये।

विभेगकों के छिरे हुए उद्देश और उनके संग्रामिक स्वस्तको प्रोड़प्ट भी परीजक करनेपर सामन हो बागा है कि वे जमावदुर्ग और मन्द्रान है। बहुष्टिक संस्ताक रोज-सामनाओं मुक्त-किस्केश (स्वरादेश किया) भी बाठ है मार्ची इस सम्माननीय स्टराजो धारवाहन रेते हैं कि वे निर्धी मी ऐसी बाठका विरोज नहीं करना चाही को स्वाप्त क्यानि स्वराद्ध-रासांके स्वर कारपक हो—दिर यह हिन्दी ही कोते क्यों हमा प्रोडेंस करना संद्राम रोपीन मुद्रीक्त स्कर्मक किए जो जी बाजून बनाये पार्ची स्वराद मार्ची स्थापन करी बोर करना जसक स्वाप्ति स्वराद कराये में मार्ची

र देशक पर ५९ ।

विरोधी नीविका एक संग-साब है। ऐसी सरक्यामें अपने पित्साक बाइएके साथ भागा किराब वर्ज करा बना मधी साना कर्तव्य समक्त है। मधी सानते हैं कि एक ब्रिक्त जातिकसमें इस तरहारा करन्य करनते विरय मता वे साधारक प्रति दिव्य राजनायी दूसरी धताओंडो करते यह बनावें नातवाले कट्टास कहायक रोजनियमोडो बनिय इस्टाक्डा मोना सिम्बा।

स्थापार-गरमाना विश्ववनना प्राप्ती नहीतक स्वाप्तत करते हैं बहांतक वसका मंत्रा उपनिषेक्तके जिनिया समाजीकी क्षणने परन्तार साळनुपारे एगले बीट स्थानी मुहिरसी उपा भोकरीति सिय स्वच्छे मदानीकी स्ववस्था करतेनी विश्वा रता है। परस्य परवामा केवियाले स्वकारकी प्राचाना बनन "स्वेच्कानुसार" इसकार

करनेता जो विवकाधिकार दिया जा रहा है प्रमुख इस सादरपूर्वक फिर भी नत्यन्त कार्रोके साथ निरोप फरते हैं। भौगनिवेगित संविध नगर परिपर्शे (टाउन वॉशिस्स) या नगर-निरामों (टाउन बोक्स) की जल्तिम विभिन्नार देनेवाली उपवाराके को हम और भी बास धौरने विरोधी है। इन बाराबोधे बिकरूक शाफ ठीरपर यासम हो जाता है कि विश्वयक शिर्फ भारतीय समाजद विदेश काममें सामा आयेगा। को स्तरित मा संस्कार अकार नोनोंके राग-इंपके अनुसार काम करती हों उनके निर्वेमोंके विनाफ जरूबतम न्यामालवींसे फरियाद करतेला अधिकार प्रजाको न वेता सम्य अगतके किमी भी हिस्सेमें एक निरंकुश कार्य माना नायेगा। अयर थिटिए एम्पर्ने ऐसा हो ना नड बिटिश नाम और बिटिश संविधानके लिए सपमाननक होता। ब्रिटिय संविधातको तो बुनियामें सक्ते सूद्ध माना बाता है और यह ठीक ही है। इमारा निवेदन है कि बिटिस आसनके स्वाभित्वके किए और समाजीकी तुन्तरतितुन्त प्रचा मी बिल सुरक्षाकी भावनाका सुक मोगती है ससके मिए ऐसे कान्तरे ज्यादा संकट्यनक और कोई भीय नहीं हो सकती यो बिटिस राज्यके उच्चलम स्थामानमके सामने अपनी सच्ची या भानी हुई सिकावर्ते पेध करतेके प्रवादे विधकारको सीनता हो । बिटिश न्यायावर्मीने तो कठिनसे कठिन कसीटीके समयमें भी अपनी पूर्व निष्परादाकी कीर्वि सुरक्षित रखी है। इसकिए आजिबोंका नजा निवेदन है कि इस विवेधकके बारेमें यह सम्मानतीय सदन कोई भी निर्मय क्यों म करे. प्रस्तात "पवाराको वह एकमतुसे नार्मबर कर है।

र वेशिए का वर्ग-रूप वर्ग्य-राग व्यव और ग्रहा-ब्रह्म

बहानर गैर-निगमिन्या आरहीयों संग्यम विश्वक विशेवक वा सम्माच है आर्थी सरवारण बनके समे उपरिक्ति निग् हुएयत्री करवार वह है— याम ठीर से उनकिन दि विश्वकर्ती रचना उन विश्वक आरहीय समावके कुछ ग्राम्या और निश्वकर्ति के विश्वकर्ता हुई है। यरन्तु कर बाल जो ज्यवर दिवा है वह गोबसे समायां के विश्वक व्यर्थ हो जायेगा। इन कम्पापके बनुमार, बन कार्पोयर बैन्नीनुनी निगमित करवार का हो। राज नहीं दिवा जा स्वता के कार्याम के ग्रीन्तिन वरवारा न स्राप्त वाले नहीं दिवा जा स्वता के कार्याम के ग्रीन्तिन वरवारा न स्राप्त वाले स्वाप्त सामावी किंग्सार वहाँ। सहार हो तभी देश होगा है जब कि

र वेडि तार १ (६), पुर १८ - वीर वर्णास्तर किया मन्द्री से पुर १८१३

मा ६९ वर हिने मा तार हता की अधिक वेशमाने काहे काहे कहा नार सामा बेट कर के होते हैं एक्ट नार्थन में मा के लिए पूर्व हैं है जिला हुए १९००-११ और मुद्द १०६०-०३ और दिसाया का बाह

#श्र रिया ग्या का ताने तिया दिना पूत्र तटा-८०। ४ वे स्वरामी मारिनाकी प्रस्तात ४ में हैं जिस पूत्र #टड-८०। कि ने १८९१ के कातून २५को उपबास देश का बसल करायें। इतके विपरीत

314

निवेषक तो पुक्तिको परवाना न रखनेवाले भारतीयोंको बध्य-भयके निना पिरफ्तार करनेकी सुबी कट दे बेता है। प्रार्थी निवेदन कर दें कि सिर्फ परवाता से सेवेरी ही परवानेवालेको परेवानीसे मुक्ति नही मिल बादी। परवाना साथ रवाना हमसा सम्मन नहीं है। ऐसे प्रवाहरम मीजूद है जिनमें परवाना पाने हुए सारतीन परवाना साथ किये विना बोडी बेरके किए वरसे बाहर बानेपर अफसरोके वित उत्साहके कारव पिरफ्तार कर किये यथे है। इसकिए, प्राविगोंका निवेषन है कि अपर्युक्त विवेदकरों मास्तीय समावको रहा हो न होगी बहिक उसकी जपनारा पाँचनीके कारण जनके अपमानके पहलेखे जी ज्यादा मीकॉकी सम्भावना हो जावेगी। इसकिए प्राची इस सम्माननीय सदनसे प्रार्पना करते हैं कि विशेषकर्में ऐसा संस्रोधन का परिवर्तन कर विदा बादे जिससे वह मारतीय समाजके सन्त्रे सामका बरिया वन बाये जैसा कि निस्सन्त्रेष्ठ, उसका मेखा है। बन्तर्में इसे यह दुष्ट्रस्त देनेकी इचाचत दी बाबे कि पहुछे तीन विधेयकॉनर इमारी मुक्त बापति मह है कि चनका मंत्रा विस अनिप्टको रोक्नेका है बसका बस्तित्व है ही नहीं। इसकिए हमारी प्रार्थना है कि उन विधेयकॉनर विचार करनेके पहले गई सम्माननीय सबन आवेश वे कि वननिवेसकी स्वर्धन भारतीय सावाबीकी पनना की बाये कुछ वर्षोंकी वार्षिक संस्था-पश्चिका हिसाब करामा जाने और भारतीयोंकी क्यस्मिति स्पनिनेसके सर्वोत्तम डिटोंकी सामान्यतः हानि पहुँचानेवाको है या नहीं इसकी कौन की कामे। स्वतंत्र चारकीयोंकि संरक्षणकी जनवारा ५ विजेमकरी निकास वी वाने या ऐसी बूसरी राहरों की बामें बिन्हें सदन उपनुष्ठ समझे। स्थाम और वयाने इस कार्यके किए प्राची जपना कर्तव्य समझकर सबैव बजा करेंचे जादि ।

(ह) सब्दल करीन हाजी सारम और कम्पनी

पीटरमेरिसवर्ष बार्काइका देखिए एक-गा-नी बिस्व ६५६, प्रार्वनापक ६।

र भर क्लेश का महिकार मामेन्य राष्ट्रम होता है, किते गैरराकृती शिलवारीके किर हरवाना रिकामा नवा था । मामकेमा विवरम इत ११ वर देशिय ।

३३ पत्र औपनिवेशिक सचिवको

गांबीमोर्ने सरकार और करने शोषका वो रत-मनकार समाजारकोर्ने मकाशभावे मेना मा का रत सरका रक बस्त है

> क्षेत साथै २६, १८९७

सेवामें भारतीय बौधनिवेशिक संविव मैरिसस्वर्ष

महोद्य

मैं बायका प्यान परम माननीय क्यनिवेश मन्त्रीके नाम भीमान गर्कार महोवयके एक खरीदों को बोर बार्कायक करता हूँ को नावके मन्त्रुंगीमें प्रकाशित इसा है। जन्में गर्कार महोदयने कहा है

"मूने मानूम हमा है कि, यो शांची ऐसे वेगोंके कहालये उटरकर स्वयर काने कब कि बहुके हुए लोग प्रत्येकं व्यक्तितृष्ट कि निक्क बानेकं कारम तृष्य में बीर कमात्रे हुए नावामांकों हो हा नहमेचा समय गृही मिल मान या। पूत्रे गृह भी मानूम हुना है कि यो गांची वस मानते हैं, ऐसे देशीके उटरकर कानेंगें कहाँने दिल सकाइका अनुकरण किया वह वरी थी।"

र अरोजेंने रह कलारी १८६० की बरमका विकास विकास इस १८० और १९६-१० पर करून है जा करनेन किया पता वा "मी सोची, एक वाली (भोका को चन्द्र) मधीन में हातने मार्गिकार-अनुसने कियार मार्गिकाने भारतेकाने पत्तुव को है और रिक्ति मार्गिकाने मार्गिकाने विकास मार्गिकाने भारतेकाने कर है जिसने इस कमार्गिक वहीं बहुत मार्गिका मार्गिकाने पत्तुव की देश प्रीक्त करनेके कराइत कर्मी विकास कर मार्गिका मार्ग्य कर्मा की है पत्त्र के मोर्गिक वर्ण सच्चान किया मीर्गिका कर कराइ विचास के कर्मी कर करा किया प्रतिकास किया प्रतिकास किया मार्ग्य कराइ की कार्य कराइ किया है। मार्ग्य का प्रतिकास कराइ किया है। मार्ग्य का प्रतिकास कराइ की क्यां की कराइ कराइ किया है। मार्ग्य का प्रतिकास कराइ की क्यां की कराइ कराइ की क्यां की कराइ की क्यां की कराइ की क्यां की कराइ की क्यां क्यां की क्यां क्यां की क्यां की क्यां की क्यां क्यां की क्यां की क्यां क्यां की क्यां क्यां

१ ऐकिर इर ११६—२७। गांगीको शहरें जरने शांव तरफ है वानेवाले और क्यांत-कम्पनिक कम्बी एक्काकार जी कॅसनने जी स्कृत ही वी वह जीक-रीज क्रा

सम्पर्ग धौरी बावमव ** मैंने हमेशा माना है और अब भी मानता है कि जिस सक्ताहका भीने अनुसरण किया बह उत्तम थी। इम्हिस संगर गुवर्नेर महोदय मुझे बता संस् कि उन्होंने किम बाबारवर उर्ख्यन बात कहाँ है तो मुझे प्रसन्तता होगी। MAZI BAC [बमेरीसे] मो-स गांधी मैदाक मर्क्री ८-४-१८९७ ३४ प्रार्यमापत्र मेटास विवानपरिषयको । मार्थ १६. १८९७ सेशार्मे माननीय अध्यक्ष और माननीय सदस्यपत्र माननीय विज्ञानपरिषद नेटाव die råferen i भीचे इस्ताक्षर करनेवाचे इस उपनिवेसके मास्तीय समावके

नीचे हरताशर करनेशाओं हुए उपनिवेशके मास्त्रीय समायके मितिनिधियों मार्चनापम नम निवेशन है कि

सापके प्राची कैटनीयर्थियिया मास्त्रीचिक संस्ताप सम्बन्धी विशेषक के विषयमें जो इस समय जानके विकारणीत है, नमशापूर्वक सापकी देशमें निवेदन हैं सुद्दे करता है कि नात्त्व प्रकाशी होता नहीं हिनेया। यह तो सम्बन्धी हैं, मेरी स्पर्के कर विकार के हैं। प्रकाशी राज है, यह क्षा स्वाची मास्त्री

तक-किन्तर को नवर्षे मस्य करना हो नहीं चाविष् (*भारतकाना ग्रा*क्शनी, १९५९ इस् १८९)। - १ देविष इस १४ −४१।

र वेकिय पुर वक्ष --४१ । २ इस मार्थवात्त्रका पार कनामा वही है, जो विपानसंख्या दिने समे मार्थ २६ राज्याकाची संस्था है । वेकिय पुर ४२० और पारप्रियमिंग :

के वसामानी मंत्रुच है। देखिर हुई १२० मीर गारदिवनियों । १ मार्गमानको सत्तवनिक वारीक सार्ग २६ वि है (यह यह २१९४)

क्रमुख केत मार्च ६ को किस क्या गाः ४ देविर इस ३०६—०० और सम्लक्ष्ट समक्ष्ट किर इस ३८६—८७३ करना चाहते है। विवेयक पेश करनमें शरकारके मन्ने इरावेंकि किए प्रापी हरवसे बम्पबार देते हैं---सास तौरस इसकिए कि विश्वयक सरकार तथा मास्तीय समाबके कविषम सदस्मोंके बीच हुए कुछ पत्र-मबद्दारका सवीवा नवर बावा है। परम्यु प्राविमोंको मम है कि विवेयकता अच्छा असर प्रसकी उस प्रप-भारतने क्यम हो जाता है, जिसके अनुसार किसी भी अधिकारीको जो परवाना न रखनेवाचे किमी मारतीयको विरक्तार करे गैर-कानुनी गिरकारीके लिए इरजाना देनेके बामित्वमें मुक्त कर दिया गया है। असुनिया तो तसी होती है अब कि काई बिपदारी १८९१ के दानुन २५के लंड ३१ का समस्र करानेमें बरूरतरी स्थादा जन्माह दिनाता है। इसकिए, प्रावियोकि नम्र मतसे बयर पुष्टिस सविकारियोंको इतना निर्वेश ६ दिया जाठा कि वे उक्त कानुकका अमल करानेमें सोच-विचारते साम से तो बस्विया कमसे कम होती। सर्तमान विषयक्के भगीत गय है कि समुविधा बढ़ बायेगी क्योंकि बग्रंड भगुसार परवाना है केने मात्रहे परवामा स्थनवाका विरफ्तारीकी धवक्तासे मुक्त नहीं हा चाता। परवाना तो साब रचना पकरी है और वैशा करना सर्देव बामान नहीं है। ऐसे उदाइरवांका कला मौजूद है, जब कि भारतीयोंको उनके परोके पास ही परवान न न्यनेके कारण विरफ्तार करके बहुत ज्यादा राखाए में बामा गया है। यदि निवयक्की पाँचवीं उपधारा कार्यम रही क्षी सम्मानना यह है कि ऐसे मामने पहत्त्व क्यादा होंगे । और चूँकि निभेगक मारतीय समाजके हिलके सिए परा किया बया है इससिए, आपने प्राविधीका निवदन है कि एम समाजकी भावनाओंका बोड़ा समाम ती किया ही बाना भादिए। मतपन भापने प्राची नभनापूर्वक विननी करते हैं कि विवयनकी पौचनी जामारा उससे निकास की जाये अवका परिपद ऐसी कोई इसरी गहत दे जिने वह जायका और जवित समार । और ग्यास तथा दयाचे हम नार्वके जिए जारके प्राप्ती कर्नेच्य समझ कर, सहैद दुला करेंसे जादि लादि ! (को देरे ।

नेदात रिकानारियरको १ मार्च १८९७ वी कार्यवाहीला लेखा। कर्नोतियल लाग्छिर रेक्क्ड में १८१ जिस्स ४२ और, नार्वाहका पीटर वैरित्तवर्ष गमनीनी जिल्ह ६५६ प्रार्थनाचन ६।

। बनेनिका अर्थन देशीयों रायम हाते में सीतें हत्याप नहीं है।

३५ नेटालमें भारतीयोंकी स्थिति

पर्विपिते भी बोबेल क्षेत्रसरीको ध्या अपने मार्च १५ १८ ७ के जारकपूर्व मार्कराक्यो परिवर्ध (क्षेत्रके अनेक क्षेत्रकेक्द्रका निग्न पक्षेत्र साम निर्ध भी । व्यक्त पराद प्रभावताकी व्यक्तिकों विकासकी पहिला शाक्तियो मारतीकोंक प्रवर्ध मामित करनेया तो वा गी ताब ११ करने मार्नी बीनिवर्षक पा । वा नी मार्च करूप पत्री हाल करनी दिनिवर्षक पा ।

> केंद्र स्ट्रीड क्लैम (नैटाक) मार्च १७ १८९७

बीमन्,

हुम नेटाक-निवादी माध्यीय हमाक्के प्रतिनिधि निम्न हरताहर हवते निवेध करते हैं कि बाग वहते एवं विकाद एक गाउनीय के लेके के नेवाद के

इस प्राप्त का क्या?
इस क्षानिकाली माराजी समस्या इस समय नहीं विकट स्थितिमें पहुँच नहीं
है। स्वरूप प्रमाद समावीकी इस स्वरंतियेक्षणारी पाराजीय प्रचापर ही नहीं
परस्य प्राप्तकों सारी मानावीकर वह पहा है। माराजवें सकता कर सामावी स्थापी है। बैता कि टाइन्सेन किया है, प्रचन यह है कि ने एक सिटिय सामित देखते हुस्टेमें स्वतन्तरामुके का सकते हैं या नहीं कीर कर देखींमें बाकर विटिय प्रचाननीकों प्राप्त मिकार्येका सामा कर सकते हैं या नहीं नीर कर स्थापी नेटाकके सुरोतीय नहीं है कि कम-से-क्या हमारे देखतें तो ने रेता नहीं कर स्थापी एक्स प्रार्थनाएकमें नेटाकक हम स्वार्त कारक आरोपीनंतर होनेवाके करवाचारीकों हुकारी कहानी सुनाई गई स्वर्त कारक आरोपीनंतर होनेवाके

े पर रातीन रुकता का निजयों है, वन कि वह निरासर सर्वनानके तान नेमनेटे किन नेनार रक्का नया था। सर्वनानन पेरकके नवर्तको सर्वेक ह १८९७ को रिका गया था। वेकिट पाररितको इत १९७।

संदर्भों सीध ही बिटिस सप्तिबेशोंके प्रचानमंत्रियोंका एक सम्मेकन होते शासा है। उसमें एकतित प्रधान-मन्त्रियोंके साथ थी चेन्चरमेन इस प्रशापर विचार-विनिधय करेंगे कि उपनिवेदाँको मास्तीयकि विकार ऐसे कामन बनाने तिये आवें वा नहीं जो केवल इनपर लागू हों मूरोपीय लोगॉपर नहीं भीर जनर बनाने दिये वार्ये तो किस इद तक । इस कारन हमारे किए बान स्यक हो गया है कि नेटाकर्ने हमारी जो स्मिति है उसे संसपने जापक सामने येश कर हैं।

इस प्रातिबेसमें मारतीयोंको जिन बामनी निर्मीप्पताबोंका सामना करना पब छत है जनमें से इस में है

१ भारतीय क्षोप रातको ९ वजेके बाद सुरोपीय कोगोंकि समान परवाना विकलाये विना बाहर नहीं निकल सक्ते।

२ कोई भारतीय यदि इस माश्रमका परवाना न विकला सके कि बह स्वतंत्र मारतीय है, तो उसे दिवके किसी भी समय मिरभंतार किया का सकता है। (यह धिकायत विशेष क्यते इस नियमपर समस्र करनके बंगक विस्त है)।

। भारतीयोंको नाने पयु होककर से बावे ४ए की समक प्रकारके परवाने रखने पहले हैं मुरौरीमोंको ऐना कोई परवाना नहीं दिसन्त्रामा पहला।

४ वर्षमके एक चपनियमके मनुसार बतनी नौकरों और मास्त्रीय नौकरोंता पंजीकरण (धीजस्ट्रेशन) हिमा जाता है। इस क्यतियसमें भारतीयोंका किन्न "एरियाकी असम्य जातियोंके अन्य सोय" कहकर

क्षिया यया है।

५ थिरमिटिया भारतीर्थोना स्वतंत्र हो जानेपर या दो भारत मदि में बोड़े स्वतंत्र होरूए उपनिवेधमें बनना बाई ही, उन्हें उसरा मुख्य १ पाँड नारिक व्यक्तिकरके अपने मुकाना पटेगा। (सदन

कराने गम्पनी दाननां मंत्र उन्हें बार्यानित बगुनेहे तुमहै निए हेरिल

पा ∼(४३ और सम्दर्गे स्व १–६ । र सीतर सराह हुए। १५ जीहान बाबुतसी तिल्लूत व्यक्ति तिए साह

1 17 114-14 1

११४ छन्**र्वं गंधी शाह्मव**

ध्यम्माने इस स्थितिको "संउरताक रूपमें राधवाके निकर" की स्थिति बवाया है।) ६ मारवीय मंत्रि मवाविकार प्रान्त करना चाहें वो जनका वा दो

यह विश्व करता करती है कि वे ऐसे किसी वध्ये बाये हैं विवसें
"वंजरीय प्राप्तिकारण आवारित कुनावनुक्त आवितिकिक वंक्सारें
गौनूर है, जा यह करती है कि वे उपनिष्य वक्तरेंग्रे वस विक्रमये मूल होतका जालाज आज करें। पूरोगीयोंके किए ऐसा कोई नियम नहीं है। (माफीयोंके किए यह बातूत तब वर्ष है बनाया गया का। तबकक वहाँ जी जरितवेचके सामाय्य माजीविकार कानूनके बनुतार शाविकार बाता जावा था। वस कानूनके जनुता को व्यक्ति वसक बीर पुरव हो जीर ५ पीडकी स्थावर कम्मीतका स्वामी हा बयवा १ पीड वारिक क्रियाय देवा है। वह सहिंद स्वामिकारका वनती त हो तो वनपिकारों वस महना था।)

मनापकारा वन नक्या था।)

७ मारतीय विद्याविमोंकी मोयना वरित्र मीर हैरिकन बुछ भी
क्यों न हो उनके निय सरकारी हार्ड हक्सोके बरवाज कर है।

स्वातीय रामद्रके वर्गमान अधिवेदानमें वो कानून पास रिचे वार्पेये उनका विकास निम्नितित है

परनेरको संधितार हो आपना कि नह कियी गंगायक रोजवात सम्बद्धान्त्री भागेताले कियों भी स्वतिकारी उपनिष्याने उपनेत्री हताला देनेने क्षारा कर दे कर स्वतिक स्वत्र किया स्वत्यानारी में जहातर स्वत्र करों में हुआ हो। (बधानवंतीने नगरमें का विभेचको निर्धास सावत्या अमान देख करत हुए बहुत सा कि उपने हागा नगक सरकार हुए उत्तिनोयों काल मार्गीस्त्री सावव्यत हो कालों।)

र नगानीय नाजाती नाजाती कार्या कार्या कार्या । र नगानीयर्थी (राजन चीनिन्न) और नगानीनकार्थी (राजन बोर्डन) को यह मध्कार प्राप्त हो जायेगा कि वे प्रिया निर्मारी चाई स्वारार करनेरा पायाना के हैं और चाई यो इतरार कर हैं। उनके

र दिल्बार १०३ – ४। सीराया र १०३३६।

इ.स.च मारू धील का १९९०६७, १९ ०९४ और १७८०७९ । ८.सील का ३८ निर्मेदपर देशका रुक्दाम न्यायाच्या मी पुनर्विकार नहीं कर सकेगा। (अमानमंत्रीने स्व विदेशकरें विदाय कावनका प्रस्ताव करता हुए हीसस्में कहा ना कि स्व प्रकारका विकास स्वक्तिस् दिया वायेगा कि मास्त्रीय क्षेत्रीके स्वासार करनेके परान्ती रोके जा सकें।

के उपनिवेसमें सानेवासीको कुछ सहें पाड़म करने किए निवध किया वा हरेवा। हवाइरवार्ष में कम-से-कम २५ पाँव की सम्मित स्वामी होनेवा प्रमाप में वे एक नियद धर्म किसी यूरीमेंग मामामें पर एकें इस्पादि। प्रवानसंत्रीके क्ष्यवानुसार वस कानुमाने एक किया क्षित्रीमा माम्यता यह है कि हसे पुरोपीय कोबोबर कायू गई किया क्षात्रीमा (इस्काप्त्रे बद्धमान है कि ये तीनों कानून बस्पान होंगे। उसे बाधा है कि उपनिवेसीके प्रधानसम्बादीक पूर्वोवत सम्मिन के परवाद बहु ऐसे विवेदक पेड़ कर कोनी को केवल भारतीयाँ बीर पुरिधासमीपर कायू हों। उस उन कानुनीमें बाविक करोर पावनियों कवाई वा सक्तें की सनमें कुछ संकीय स्थाद कायून बनाने बचवा बस्ता सबूत पालन करनेकी परम्पराको कोहा वा स्वेत्रमां अवना बसका सबूत पालन करनेकी परम्पराको कोहा वा स्वेत्रमां

भ सभी स्वर्धन भारतीयोंको गिरस्तारीके विद्य समित्र समुमक्का सामना करना पड़ता है उठसे कनकी स्त्रांके किए एक नहें परवाता प्रमाखी क्वाई वायेसी और को बविकारी विभानस्वानेकाले आखीयोंको सिरस्तार करेंगे ठलूँ मक्त सिरस्तारी करने बादिने कारण कोई क्यावरोंकी स्त्री करने पड़ेंगी।

नेटाच धरकारके धामने निम्न भारतीय-विरोधी कानून बनानेके सुझाब रखें धर्म है

- १ भारतीबॉको भनिकास्वामी न बनने दिया वाये।
- २ नगर-मरिवरींको अधिकार दिया जाये कि वे मारतीयोंको उनके किए निश्चित की हुई पुषक् वस्तियोंने रहनेके किए विवस कर सकें।

[्] देखिन क्षण १ (म) दा १८ । योगला सम्पन्ती न्यस्ताके स्थानस् पार्ट्यं वह वेटी वस्त्रास्त्र बोल दी नई थी किसके बनुस्तर बंधान स्रतानिकासी वंत्रित है।

र देखिए पर १८६-८७ ।

वर्तमान प्रवानमंत्रीका मत है कि भारतीयोंकी सवा "सक्तकृहारे और पनि हारे" बनकर रहना चाहिए, और "जिस नमें दक्षिण आफ्रिकी राष्ट्रका जब गिर्मांच किया का एहा है बसका अंग उन्हें कमी नहीं बनने देना चाहिए।" हम यहाँ इतना जिन्न और कर में कि सब मानते है कि नेटालकी समग्रि मुक्स तमा भारतसे जाने हुए पिर्धानिया गजदरींपर निर्मर करती है और गेणक डी भारतीय निवासियोंको स्वतंत्रताक अधिकार देनेसे बनकार कर रहा है।

परस्तु भारतीयोंकी स्थिति धारे ही बक्षिण आफ्रिकार्में कमोबेस इसी प्रकारकी है। यदि भारतीबॉको ब्रिटिस उपनिवेसों बीर उनसे सम्बद्ध बेसीमें माने-जाने और बनके साम कारीबार करनेकी स्वतन्त्रता नहीं दी जायेनी तो स्वर्धन मारतीय उद्यमीका तो अन्त ही हो बामेगा। व्यक्तके कवनानुसाद, भागी को भारतीय अपने बहुत पूराने और परम्परान्त अन्वविश्वास कोड़ कर ध्यापाराधिके किए बाहर जानेकी प्रकृति दिख्याने कने हैं, बीर बसी द्वपनिवेश सनके क्रिए वरवाजे वन्द किये जान खे है। यदि हिटिद सरकारने

मौर इसकिए शामाण्यकी संसदने यह सब चलने दिया तो हमारी नाम

सम्मतिमें यह १८५८ की क्यालतापूर्व कोपनाका सम्मीए उस्संतर होता। और यदि भारतको बिटिस साम्राज्यसे पुत्रकृत समझा जाये तो इस व्यवहारसे सामारपके संबक्ती कह ही कट कार्येयी ! इमारा खमास्र यहाँतक है कि उसर क्रिये हुए तथ्य-मात्र इतने काफी हैं

कि भाग सन्हें वेखकर हमारे पदाका पूरे दिससे समर्थन करनेको सैगार हो कार्वेगे।

भागके जाहाचारी सेवक

अन्युलकरीम हाजी आदम (वादा अभ्यूलका ऐंड कं) तवा चाचीस जन्म

ज्यों हवें अंग्रेबी प्रतिकी फोटो-नक्ष्म (एस एक २१५९) से ।

३६ पत्र फर्बुनजी सोरावजी तसेयारकाँको

सेंद्रल केटड स्ट्रीट बयम (नेटार्क) साथ १७ १८९७

प्रिय भी ससेमारका

मारके से वर्गारे जिए कम्पनार। दूमरा तो इसी क्याह मिका है। येद हैं कि समयों कमीके कारण में कम्बा पत्र नहीं क्षित्र सकता। मेरा करीब-करीब पूरा क्यान मारतीय प्रस्ते क्या है। हाक्की करनावीके बारों की चेकाफोन्टे नाम प्राक्तिपत्र क्याने सर्वाह तैयार हो नाबेगा। तैयार होनेवर में कुछ क्यां

बाबरक नेराक्स्यंतरकी बैठक हो। रही है बीर ठीन भारतीय-विरोधी विधेनक उनके विचारावीन है। नदीना माध्यम होते ही सदनमें प्रचारके किए आपके कुमापूर्व गुप्ताबके माम्बन्धे जाती किया नात तेता का साम किर होता या माझारी देशी है उनमें माध्यम केम्पेनवके नात नेता का बाता केल होता या नहीं यह प्रका है। नेटाक्से ऐने व्यक्तिका जीवन इस प्रमय बतरोसें है। मुझे जकर दूसी है कि बाद मेरे नाव गहीं बादे। प्रशासक रोग माम्बन्धी पुत्रार्थित के नियम मी बात ठीरमें ऐने बना दिये गये हैं कि बौर मास्त्रीर्थों का बाना रोका बा गके।

इरक्टेशका मांक गोधी

मुख भंग्रेजी प्रतिमें सीजस्य स्त्तमजी कर्नुमजी मोरावजी सनमारको।

१ स्निद दर्शास्त्रकी वृत्र १९७ ।

३७ पत्र जुलुलैड-सचिवको

गीयप्रोप ज्यंत मत्रेष १. १८९७

थी सचिव परमधेष्ठ गवर्गर महोदय जुल्लीक पीट स्मेरिक्स कर्त

महोदय

नया मैं पूछ सकता हूँ कि परम माननीय उपनिषेध-मन्त्रीने नोंबनेनी और पराने नस्तिमंति नियमों-सम्बन्धी प्रार्थनापत्रका कोई उत्तर भेजा है या नहीं ?!

> शास्त्र सामि मो० क गांधी

[नोगोसे]

इंडिया भाषिस सावडेरी । देखिए अडीसियक ऐंड प्रक्रिक फाइरल १८९७ बिस्द ४६७ में २५३६/१९१७७

३८ मारतके सोकसेवकॉर नाम

मांचीजीने भी चेन्यरकेलके बाम बार्च १५ १८५७ के मार्चनारक्यी एकर्ने मीचे रिचे हुए राज्ये छाथ मारहाके नरेफ कोक्ट्रेक्टॉको भी नेबी मी ।

> कार (मिस्स) mPm + 2८९±

यीयन बालके भारतीय-विधोवी प्रवर्धनके विषयमें को धार्वनापन भी चेम्बरलेनको प्रेडा गक्षा वा उसकी एक प्रति मैं जापको भेज रखा है। लंदनमें बीझ ही

 इस विकासि सनसार भारतीन कॅलकेडी क्रॉड क्लोबे वस्तिकोमें क्सीन क्लॉन वा क्राप्त नहीं बद संबंधे थे । बनत प्रार्थनाश्य माथ ११ १८५६ को कारिनेदा-मन्त्रीके तस मेबानबामा। वेकिस समार स्वारू ५६ ००० । र व द~क वीर वर ∽१४ । र देवील का रसका

उपिनिवेशों प्रमानमंत्रियों हम्मेलन्से बन्ध प्रस्तों हे बतिरिक्त स्वप्र भी क्विया नायेगा। इस कारण यह वर्तना बायस्व है कि इस प्रत्तक प्राप्तीय स्वप्तीय संपाधील प्रकृति देशा हिंग बायों में बतावा है कि आराक साम्योद स्वप्तीय संपाधील प्रकृति देशा है कि आराक साम्योद स्वप्तीय होने का है, इस कारण सुत्ता है। परणु बन्ध देश प्रकृता विकास निवेश होने का है, इस कारण सह सुत्रा है। परणु बन्ध देशा होने का है, इस कारण सह सुत्रा है। परणु हुए हैं कि इस्प्रत को देशा स्वप्तीय स्वप्तीय होने होने हैं। वीर बन्ध का वाहिए। प्रतिकार एक इताज विदेशों में बावस समा भी है। बीर बन्ध निवेश वह स्वाधी रोजने प्रवास कर रही है। ऐसी हम्प्यमें मरा निवेश है कि इस समामस्वर मायाक की को स्वर्ण हर रही है। ऐसी हम्प्यमें मरा निवेश है कि इस समामस्वर मायाक की को स्वर्ण हर रही है। ऐसी हम्प्यमें मरा निवेश है कि इस समामस्वर मायाक की को स्वर्ण हर रही है। ऐसी हम्प्यमें स्वर्ण हों सी स्वर्ण की स्वर्ण हों सी स्वर्ण हों सी स्वर्ण हों सी स्वर्ण हों सी साम स्वार्ण हों।

बापरी यह बानकर प्रमामना होगी कि यहाँके भारतीयाने भारतीय इभिन्न-कोपर्मे ११६ पाँडचे सविक बच्चा दिया है।

नाल्य नाजाशी मो≉ के गांधी

मृत्र अंग्रेजी साहरूमेंस्टान्स्ट प्रतिकी ध्रोटा-तकक (यत्तक एव - ५२१) सं ।

३९ पत्र फबुनजी सोराबजी तलेयारलांको

_-

[सप्रेच ६, १८९७]।

प्रियुक्षी वजेबारली

में बान भाषारे प्रार्थनायन और दूसरे बागवात भेज रहा हूँ। अधिक शिनते हैं जिए तमय हैं नहीं हैं। कारवात ऐसा सभीर वन बारण कर रिपा है कि बागतीयर यो बाय-निजेब साहे वा रहें हैं उत्तर बारता कार आहे हैं उठ नार होना चाहिए। कारव बारी है या हिस करीं में होगा। बीर तमान तमापी मनवा निर्मय तथान दानिवेदोरिंग नामू दिया या मनता।

् या का मनेतः १८९० हे प्रीत्मः (१९४४) का ११८-१९) की पीम्स तातातः अमेत च. १८९७ को निज्ञा क्या था का वि गरीनीन क्या अवना-का ने नावे गान्तका विश्व था। रेजिन क्योंक्यों कुर १९७ । ð v सन्दर्भ गांची बाहरश सार्वजनिक सस्वाएँ वृत्स्वेवहार-विरोधी प्रार्वनापत्रीम मारतीय मात्रास्यकी पूर

कारवाई ही अरूपी है।

प्रवासियोंका भेजा बाता हो बन्द कर ही दिया जाये। मो का गी गापीजीके इस्तासरमञ्जन मन अंग्रेजी पत्रमें सीजन्य राजमंत्री फर्रगर्जी भोराक्ष्मी तस्त्रारको ।

क्या गड़ी द सकतीं ? सबका मठ एक डी है। स्वाय प्राप्त करनके लिए

सगर मौर कुछ नहीं किया वा सकता तो दिनी मी हाक्क्वमें रामके हारा

४० पत्र मौपनिवेशिक सचिवको

ris #94 E. 2/54

बदको जापका मो० क० गीधी

मेकार्ये ग्रामनीय क्रीयविकेतिक विका

र्वे रिक्स कर्य

महोदम आरसा गुन ३१ नाधैकका एक प्राप्त हुआ। उनके हारा आएने मुझे अबता ही है कि गुवर्वर्रक लगीके जिन बंधका मैंने उम्सेन निया का वसके बाबारको जानरारी मुत्ते नहीं या नागी परन्तु मेरे पत्र और आपरे उत्तरको नवन परनेर महोदय परम मानगीय उपनिवेश-सन्नीका प्राप्तचारीक निए भन्न हेंग।

उनरमें बेश नवान है कि नगर वह बातवारी मर विमी बकायम प्राप्त की गई है तो प्रतरी मुचता मूने दी जानी चाहिए। मैं मायन्त मादरक ताब ब्रामी विन्ता ब्यस्त स्थि दिना नहीं यह मस्त्रा हि नरमध्य बर्बर यहारमेरै

। त्रीरोरंड क्रिय रच्छा वर क्ल्य का क्लो (ल्य देविए १५ १९५)

पत्र दुर्क्टर-एपिपदो TYE

मुझसे सत्पानत्यकी जाँच किमे विका ही इस तरहकी भानकारी परम भाजनीय अपनिवध-मन्त्रीको बेना स्वित समस्य।

मै इस पत्र-स्वाद्धारकी शक्त अनवारोंको भेत्र रहा हैं।

मी० क० गार्घा

(जीमें है) नेदास *मर्मा*री ८-४-१८९७ ।

४१ पत्र जुलुनैंड-सचिवकी

सेवार्गे थी कल्यू 🕻 पीपी

जनसंद-मनिव **बीटरमेरिल(बर्व**

मद्रीहरा मैं सम्मानके साथ भाषके ६ ताधीयके बत्रकी प्राप्ति स्वीवार करता हूँ। वसके हारा भारत कुछे सूचना सा है कि बसर्नरको अपनिवध-सन्त्रीक पासस निरंग भिना है कि बुचनैटमें महानौंकी जमीनको विशोध नम्बन्धमें बुछ संशोधित नियम असी दिने कारी।

बाररा करि

(ह) मो । व । गार्था

(ब्रह्माने) इंदिया आफिन काबबेरी । नेनिए - जुडीरियक ऐंड बस्निक शहस्म १८ ३ जिला ४६७ मं २५३९/१९१७७।

४२ भारतार्योका संघाल

संस महेक १६, १८९४

सेवार्धे सम्पादक

नेवास *मर्च्डी*

महोदय

भारतमें कौटनेके बाब भारतीयोंके प्रस्तपर किलनेका भेरा यह पहला ही जीका है। दत भीप मेरे बारेमें बहुत-पूछ बहा गया है। मैं पाइता दा बहुत है कि उस समग्री उपेका कर है फिर भी नासून होता है कि कुछ कहे निना काम न वर्षेता। मुक्तपर ये भारीच ध्याये गर्वे 🕻 (१) मास्कर्मे सैने उपनिवे धिकांके भारित्यको बदनाम किया और कई सकत-बदानियाँ की (१) बपनिनेसको मारतीनोंबे पूर बेतेक किए मेरे मधीन एक संस्वा है। (३) मैते क्लॉड और पाक्री बहालेंकि माधिमोंका मक्तामा कि वे गैर-कातृती तीरचे रोके वामेंके कारण सरकारपर इरबानेका मुकरमा चलायें (Y) मुझे राज नीतिक महत्त्वाकांक्षा है और मैं को काम कर च्छा हूँ उसका जेंद्रेस्ट अपनी वैसी भरता है।

नडांतक पड़से मारोधकी बात है, मापने मुझे उससे मुक्त कर विमा है। इसमिय उद्यक्त बारेमें कुछ कहता वायस्यक नहीं मानूम होता। फिर भी रस्त्री तीरपर को मैं यह कह हो है कि मैन कमी देशा कोई काम नहीं किना किएसे मुमपर वह अपरान क्यांना का सके। दूसरे बारोपके बारेमें मैने जो-कुछ संयम नहा है प्रणीको यहाँ बुक्ताता हूँ। मेरा ऐसे फिली संपठनसे कोई सम्बन्ध नहीं है। बहुरिक मुखे मानूम है स्पतिनेसको भारतीयोसे दूर देनेके किए कोई संघठन है भी नहीं। तीवरे बाटोपको में मामेन्द्र कर है।

र मध्यारीने स्थितेका ।

र नह अलेक हरो प्रतिकारी कार्य औ राज्य-नवाधिक है।

[≱] देशकर इन्हरू ४ भ मीर ४ का

४ विकास काठ रेक्स २२४ –२ व और २३१ ।

भ विकास क्षेप्र ११८ ।

पका है। जब मैं फिर बहुत जोरोंसे कहता है कि मैंने सरकारपर मुक्जमा वकानेके किए किसी एक गांत्रीको भी नहीं भड़काया। जाँवे आरोपके बारेमें मैं कहता है कि मुझे कोई भी रावनीतिक सहत्वाकांका नहीं है। जो कोग मुझसे व्यक्तिमत क्ममें परिचित है ने जानते हैं कि मेरी महत्वाकांका किस विकास है। मैं किसी प्रकारके संसदीम सम्मानकी जाकांका नहीं करता। और यद्यपि तीन मौके जाये मैंने चान-भूसकर सद-शता सूचीमें जपना नाम साप्तिक हाते नहीं दिया। मैं को सार्वजनिक काम करता है उसका कीई मिहनताना नहीं पाठा। अपर सरीपीय चपनिनेधी भेरा विल्लास कर सकें दो मैं नक्स्ता पूर्वक बन्हें विश्वास विकास बाइटा हूँ कि मैं योगो समाजेंकि बीच पुटके बीज बानेके किए बहुरै नहीं एहता. बस्कि उनके बीच सम्मानपूर्ण मेस-बोस करानेके किए पहला है। मेरी नम्न धायमें दोनो समाजलि बीच को मनोमाहिन्य है चरामें से क्याबातरता कारण एक-प्रसरकी भावनाओं और कार्योठ वारेमें गलतप्रद्वमी है। इसकिए मेरा कार्य जन दोनोंके बीच एक नम इमापियका है। मुझे यह विस्थास करना सिकाया नया है कि ब्रिटेन और भारत कितने भी सुमय तक एक साथ रह सकते हैं। सर्वे इतनी ही है कि दोनोंकि बीच माईबारेको भावना हा। बिटेन और भारतके बढेंग्रे वहे मनस्वी इस आदर्शकी पुरुषे प्रयत्नी में क्या हुए हैं। मैं दो नक्षताने साथ सनका बनुसरण मान कर रहा हैं। और महसून करता हैं कि नेटालके युरोपीबॉकी वर्तमान कार्रवाहमी वस भारपंत्री सामनाको निष्फल करनेवासी यसे ही न हों फिर भी उसमें बाबा बाबनेवाको तो हैं हो। में यह भी महसूत करता हूँ कि दन कार्रवादमाँका थाबार पुस्ता गही है। ये जनताने हेप-मान नीर पूर्वप्रहेंकि नाबारपर की बा रही हैं। ऐसी स्पितिमें मैं विश्वास करता है कि बुरोपीय अपनिवेधियाँका मत वर्पानत मतने वितना भी भिन्न नमीं स हो ने उसके बारेमें सहिष्नुतारी करम क्रेंगे।

मेटाकमी तैनवर्के सामने अनेक विश्वेयक पेत हैं। मारणीयिक हिर्होपर करका प्रक्रिक्त सभाव पड़नेवाम है। मारणीयिक बारेमें वर्के ही कांत्रम कानून नहीं माना बाता। किंदु मानामा प्रकार के स्वाप्त में कांत्र में की स्वाप्त मिनामें के स्वाप्त मिनामें स्वाप्त मिनामें स्वाप्त मिनामें स्वाप्त मिनामें स्वाप्त स्वा

र मुख्ड (शार्याम), मिन्ना-चनानाः मनासी प्रतिबन्धक और गैर-सिप्रविदिश नारपीय संख्या विकेशकः।

IYY

मह एक मनहस भवारा है। इसे टाक्रनेके किए वगर वे अपनी तथान सावन गम्बद्धा उपयोग करें तो भरे श्ववाकते उन्हें बीधी नही उद्यादा बाना वाहिए। पीच पहता है कि हर चीज कस्थी-मस्बी की भा रही है मानी हर तरहके बौर हर दाक्तके दवारी भारतीयोंकी नेटासमें बाद वा वानेना बतरा मा नमा हो। मेरा निवेदन है कि ऐसा कोई सतरा नहीं है। बीर बनर हो भी तो हाकमें निस्त संश्रमक रोग सुतक कानून का अवसम्बन किया गया वा अमसे कारगर रोक समाई वा सकता है। मारतीय सोन व्यक्तियक किए अनिष्टकारी है पा हिताकारी इसकी बाँचके सुझावकी बिल्ली उड़ाई नई है। और फैससा सह दिया नया है कि जिसके जीचें है वह देख सकता है कि किन तरह मारतीय भारों बोरने मुरोपीमोंको सबेब रहे है। मैं बाबरक साथ मतमब स्पन्त करता हैं। विर्णागिटमा भारतीयोकि बनाबा हजारों स्वर्ण भारतीयोंने नेटाकमें बड़ी बड़ी चायदावीको विकतित किया है उन्हें मूल्यवान बनामा है और अंपकॉसे उपमाळ भूमिमें बदक दिया है। उन्हें मंद्रा बिश्वास है माप अभिष्ट म कहेंगे। **पन्**ति किन्ही भूरोपीयोंको नहीं उकाहा। उच्छे उन्हें समुद्धिशामी बनाया है भीर उपनिवेद्यकी सामान्य सम्मतिको बहुत बढ़ा दिया है। उन्होंने यो काम किया 🕻 त्या तसे यूरोपीय क्षोत करेंगे — कर सकेंगे ? त्या भारतीयोंने इस उपनिवेसको दक्षिण बादिकाका क्यान-प्रपतिवेध बनानेमें भन्छी-बासी मदद नहीं की है ? जब यहाँ स्वर्णन सारतीय नहीं ने उस समय एक गोभीकी कीमत भागा चाउन [काई सिकिंग या सम्बद्ध एक स्पना न्यास्त भागे] होती थी। नव परीवरे नरीव बादमी नी गोभी लरीद छकता है। बया यह अभिधाप क्वा इनसे समिकाँको हुछ हानि पहुँचो है? कहा बाता है कि "बारसीव स्थापारियाँने प्रपतिनेशका कर्णना हो जा किया है। क्या बात ऐसी ही है? क्रोतीय वेदियोत जिस तरह अपने व्यापारको बहाया है वह भारतीय व्यापा रियंकि हो नारच सम्मन हुना है। और इस मुक्कि नारच ये नैतियाँ र्वकर्ग बुरोतीय मुद्दारों और दिमान नरीमोंको नौकरी दे नवती है। मारतीय व्यापारी तो विभौतियोंका बाम करन है। व अपना कान वहाँ सारस्य करते हैं वहां बुरोतीय पने धाइने हैं। इनसे इनकार नहीं कि वे यूरीपीयोंकी अपेशा

१ आव क्यो संनर्षे बारत दाने रू देशको प्रश्नमध्याने देशको स्वतंत्र सम्पत्त महास्तिक्षी पूर देजडी राज अवस्थित कोजनायी चर्चा की मी (यस वन ११७१)। ६ वह उन्हें। क्रमींट बीर माहरीज मानि गरे गुरुष (स्वारिम)मा है।

' बर्चेंदर रह सक्ष्मं 🧗 मधर यह तो इदितनग्रके क्रिए नामजनक है। वे तीय बस्त-बंदारोंने बोध सरीती रुग्त हैं और बोर पार्वोतर बाना-मा रहा ककर विश्री कर सकते हैं। इस तरह व गरीब मुरोर्सिनीना त्यान बाउ है। इसके प्रवाहमें कहा वा सबता है कि बाद में काम मार्ग्याप ानदार करते हैं बहा शाम यूरोपीय कर सकते थ। यह एक सम दे। हर भारतीय न हाने तो नहीं यूरोतीय वो सात चोक स्वांगारी है, पुरुकर त्रदा होते। बनवक्ता कुळ नाय-नाम स्थापारियोंकी बात बनय होती। क्तिए भारतीय दुवानदारीने मुदोरीय दुवानदारीको एक माँदी स्पर उटा ता है। यह भी बद्धा गया है कि मांबच्यमें मारतीय ब्यायारी मुरारीओंक जना बोक स्थापार भी हृहप सकत है। यह समाज बास्तरिक हान्त्रींग गारित ीं होता नरीकि योक भार मुरोरीय और भारतीय मंडारीमें विकरूण इ-में नहीं हो नवसम एक-ने उकर हैं। इस प्रकार बोक स्थानारमें प्रति दिता करना किमी मी कुछ, अनुचित्र नहीं माना वा सकता। मार्र्सियाका म्हा रहन-परन बोक भार निरियत करतपर नार्ट महत्त्वपुथ नगर नहीं ाचना क्योंकि एकको तस्त्रे स्ट्नमङ्गते भा फायश है। बहु दुमरको असकी विक राजीर्पात स्वारशायिक बारती और स्वारार-प्रश्रामी "स्वर्ध म्बर्गें न मिन जाना है। एक कौर तो यह बार्शन की याती है कि गरतीय नैदारमें जनीत-जामदाद सरीदत हैं और दूसरी बाद बढ़ा बाता 'कि बतना बन बर्गनिनेग्रमें नाम नहीं बाठा वन्ति मारतको चना नाठा '---बरोफि 'स बूट नहीं पहनते मुरोतीय बन्द नहीं पहनत मीर मानी ानाई भारतका भेद देत 👫 और इस प्रकार चरनिकाल करका मनाग्य त्माव हो एका है। ये बोनों बापतियों स्वयं ही एक-दुकरीना पूरा बनाव ल्बाटी है। अगर मान निया जाये कि मार्ग्याय बट और यूरीसीओंसे त्या बार्य नहीं कानते तो भी में इस प्रशा क्या हुआ कर भारत ही भनत नीना दमें नहीं तातते तो भी में इस प्रशा क्या हुआ कर भारत ही भनत नीना दमें नहींत प्रशास सरीहतेमें स्था हत हैं। हार्यका र उपनिषेठमें एक हाबस आनुष्ठ बमाने हैं हुसर हायसे सर्वे कर वने है। तो फिर व बाजुछ बारतको नेतर है वह इस तरहरी बर्गात बायदान्य रिना है राजें कार हर स्वानका एक बीत्रांत्र ही स्वत्ता है। मार्ग्यानीत जर्मन-अपरार मधीरता दुर नामका है। जन्म बर्गनको बीतन बहुई-है और मुरोरीय राज मिन्सारे, बाइजो और बरा बारीनरोंको साम मिनना है। पूरोपित राग्रैपर्योगी अंगगैत नवाबने करनका कार्र कारण है। यह एक

144 कारपनिक भूत-मात्र है। मूरोपीय और भारतीय कारीगरोंमें कोई प्रतिस्पर्वा

नहीं है। भोरतीय कारीगर तो है ही बहुत बोड़े और वे बोड़े भी खबारज कोटिके हैं। वर्षनमें भारतीयोंकी एक इमारत बनानेके लिए मारतीय कारीपरोंकी कारोकी एक सोजना बनाई मई भी परन्तु बहु विकल हो नई। कोई जन्के मारतीम कारीयर मद्दी कानेको तैयार नहीं है। मेरे वेसनेमें ऐसी बहुत-सी भारतीय इमारतें नहीं आई. जिन्हें नारतीय कारीगरोंने बनाया हो। उपनि

नेश्वमें तो कामका एक स्वामानिक बेंटवारा हो गया है। कोई समाज किसी हुसरे समाजके कामको हृषियाता नही।

बगर उपर स्पन्त किये इंग्र विचार जरा भी यक्तिसंगत है तो मैं निवेदन करना चाहता है कि कानूनी हस्तकोप नमुचित है। मौप और पूर्तिका नियम वापोंबाप स्वतंत्र मारतीयोंके वाक्मनको नियन्त्रित कर बेगा। बाधिर, मह तो भात ही किया नवा है कि मास्तीय क्षेत्र यूरोपीबॉके बक्तपर ही फक्क-फुल सकते हैं। फिर अयर वें सममुच मृत-कप ही है तो ज्यादा धानदार सरका यह होना कि उनमें मुरोपीमॉका वैद्या वस बीच सिमा आने। तब हो सकता है भारतीय कुछ समय बीलकाहर विवास भगर ने स्वासकी वृष्टिसे सिकायत न कर सकेंगे। यह तो किसीको भी बन्यावपूर्व सावन होगा कि कानुत पोपकोंसी मिकावर्तोपर पोपितोके जीवनमें बस्तंबाजी करे। तबापि ऊपरकी सारी बकीको असपर में जो दावा करना चाइता है वह दतना ही है कि पहले जिस जॉब-पहताबका मुसाब दिमा था चुका है उसके उक्ति सिंख करलेके किए इसमें बहुत-कुछ तस्य है। इसमें घर नहीं कि प्रस्तका बुतरा पहलु भी होगा। जनर जांच हो तो दोनों पहल्लोंकी पूरी कान-बात हो आयेनी जीर निर्मक्ष निर्णत प्राप्त किया जा छनेना। तब इसारे कातून बनानेवालाँको अपने कामके भिए और भी चेम्बरकेनको बपने मार्गवर्धनके किए खासी-अच्छी सामग्री मिन जायेगी। दम वर्ष पूर्व सर बास्टर रैंग और अन्य स्मन्तियोके एक आयोग (विभिन्नत) में जो मत दिया का भी यह है कि स्वतन्त्र भारतीय इस उपनिवेशको माम पहुँचानेवाले हैं। अगर पिछले बस वर्षीमें परिस्वितियाँ इतनी बदल नहीं यह कि इस भवको स्वीकार ही न किया जा तके वो कानून बनानेवासीके नामने इस समय विश्वसनीय सामग्री केवल यह इतनी ही है।' तबापि से

१ मार्गमके विद्यमे हुए निकारीके निय बद्दीन बन्छ १ एक ११५–१६, १८ -८५ मीर रन सम्बद्धे हुए १६ -६१ ।

सब विचार स्वातिक है। उपनिवेधके कोवोंको साम्राज्य-स्पापी वृष्टिसे मी वर्षो नहीं देखना वाहिए? और अयर देखना वाहिए तो कानूनकी सबरमें भार तीयोंको वही अविकार मिलने चाहिए, को दूसरी सब बिटिस प्रवानोंकी क्पलक्य हैं। भारत बाबों यूरोपीयोंको साम पहुँचाता है। भारतसे ही बिटिप शामाज्य बता है। भारतने इंग्लैंडको लावबाव प्रतिष्ठा प्रदान की है। भारत इंत्पीडके फिए मनसर सड़ा है। तो फिर, न्या यह अधित है कि उसी सामान्यके मरोपीव प्रमानन को इस चपनिवेदार्ने रक्ते हैं और को स्वयं भारतके समप्रतेंचे भारी फायबा बठाते हैं, स्वतंत्र बारतीयोंके इस उपनिवेसमें रहकर ईमानदारीके साथ जीविका उपार्वत करने पर वागित करें? आपन कहा है कि माध्यीय बूरोपीयंकि साथ सामाजिक समानता बाहते हैं। मैं मंजूर करता है कि मैं इस बार्चासको मसी-मौति समझा नहीं। परन्तु ततना हो मैं भागता है कि शारतीयाने भी चेन्यरमनमे बानों समाजेंकि बीच सामाजिक सम्बन्धीको भ्यमस्थित करनेकी माँग कभी नहीं की। और अवतुक दोनों समाजेंटि बीच साचार-स्पनहार, प्रधार्वी सावर्ती और अमेका सन्तर कामम है छहछक उनमें शामाजिक भेरका खना स्वामाजिक ही है। माध्यीय जो-डुछ समस नहीं वार्ष यह है कि बुनियाके किसी भी जावमें बीनों समाजेकि सहबयता और मैसजीनमें रहतेंमें यह मेद आहे क्यी आये और कातूनकी निगाहमें भारतीयोंको नीचा दर्जा मंत्रूर क्यों करना पड़े? अवर भारतीयोंकी सफार-सम्बरकी बारतें पैसी पाहिए वैसी नहीं है तो संध्य⁵-विमाप कड़ी चौकसी एककर भावस्थक सुवार करा सकता है। भगर माध्यीय वस्तु-मंद्रारींका दिवावा सुन्दर गही होता तो परवाना प्रविकारी उन्हें बोइसे समयमें सुन्दर बतवा गरते हैं। में सब बार्ते सभी हो सदली है अब कि मूरोपीय उपनिवेधी ईसा इपोंकी हैतियतमे भारतीयोंको अपने मार्ड, वा ब्रिटिस प्रजाबनकी हैसियतमे बन्यु-मजावन समर्जे । तब आवके तमान वे उन्हें कोलेंगे नहीं उन्हें पमकियाँ नहीं बेंने बल्कि उतमें जो दोप हीं उन्हें निकासनेमें मदद वर्रेने और इस तरह उन्हें भीर नपत-बापको दनियाकी कबरमें केंबा छगायेंते।

मैं प्रधान-प्रमिति में अपील करता हूँ जिस खास तीरसे मजदूरींगा प्रति निर्व माना जाता है। अब उसे जासूम हो गया है कि क्लींड और *पाररी*

१ देनिर बारियनी २ कुछ १६७ और कुछ ११७-१८ तथा २१५-१६ :

सम्बून गाँची बादमब व्यक्तर्नेसे ८ सात्री नेटाक नहीं भाने। और जो आजे हैं उनमें एक मी भारतीय कारीयर नहीं है। भारतीयोंने यूरानीयोंको रक्षाइये बना देन

5×/

भीर सूद माधिक वन जाते^ण का कोई प्रयस्त नहीं किया। यूरोपीय मजदूरीका भाष्ट्रीय मनपूर्वेदे विभाग्न कोई विकासन नहीं हो सकती। ऐसी झालतमें मंरी नाम राय 🕻 उनके किए यह बोमनीय होता कि वे फिरमे अपनी रिवर्ति पर निचार करें और अपनी चनितको ऐसी दिखामें सनामें कि सजाबीकी प्रपतिनेधवासी प्रकाके सब वर्ग स्टीजना और संबर्धकी स्थितिमें रहनेके नवास नापसमें मेक्जोर और सांतिसे रहें। नववारोंमें यह समाचार क्या है कि भारतीयाँकी बारसे सीधा ही एक सन्वत इंग्लैंक जानेवाले हैं कीर उप निवेषके शिकाफ प्रमाण इकट्ठे किये जा रहे है। इस विषयमें कोई बकट फहमी भ हो इसकिए मैं कह वे कि निकट बानेवाले सम्मेलनके सवास्रसे वशिष वाधिकाके मारतीयोंकी बोरस एक सब्बन इंब्बेंड कानेवासे हैं। वे भारतीयाँचे तक्कानुमृति रक्कानकाँ तथा सावारण वनताके सामने और वकरत हो तो भी केम्बरकेनके सामने थी भारतीयोंका दक्तिकोन पेच करेंगे। चन्हें मार्ग-स्थय और पुसरे कर्नके सकाना चनकी मेवाओंके मिए कोई पुरस्कार नहीं दिया जायना। यह कवन कि उपनिवेशके बिकाफ प्रमान इक्ट्ठें किये भा पढ़े हैं नहां बढ़ेना है। यह संघ नहीं है इसीकिए इसे नक्की नामसे निया गया है। बेचक जानेवाले सरजनको मास्तीय प्रश्तको सारी जानकारी वे दी भावेगी। मगर वह बात तो अखनारोंमें निकल ही चुकी है। नास्पीयोंकी करी नह दल्का नहीं रही और न वन है कि ने अपने साम मुरोगीनोंके निष्टुर व्यवद्वार और सामान्य बारीरिक दुर्व्यवद्वारक निकाफ यानका वैवार करें। वे यह भी सामित करना नहीं चाहने कि नेटाकर्ने गिरमिदिया मास्तीमेंकि साव इसरे स्वानॉसे बक्तर बरताब किया जाता है। इसकिए बयर उपनिवेधके १ देशिए १६६ १७४ –७५ । र विकास क्षेप्र रहेर । वर्त्रेज क्रक्ट्रापन श्रीतकार नामरका है, कियाँ शेर्मीय मेश, नवा वा और

क्षित्रोंने वहाँ बाबर रक्षिण आजिनाकै नम्स्तीरांकी समन्यानाके सन्मारमी कोरोंकी भभगी कलकरो हो और इस कहा महत्त्वान काम किया । देखिए छन्द १ इफ

224 At 148

¥٧٩

श्विकाल प्रमान एकतित करनकी बात ऐसा कोई खबाब पैदा करनेके मेठासे कही गई हो तो यह निराधार है!

> मारू सांक गोधी

(कोरमीसे]

नेयस मन्पूरी १६-८-१८९७

... _ ____

४३ पत्र फ्रास्सिस इबस्यू० मक्लीसको

नेस्ट स्ट्रीय क्यन माँच १८९७

सेवार्में माननीय सर फ्रान्सिम बनस्यू मैक्टीन भाइन कम्बल केन्द्रीय बकाल-गोडिय नदायक मुमिति

क्षकत्ता धौमन

भीमन्, अकास-निकितें चलेके मिए वर्षनके मेमरके नाम भाषका तार जैसे ही पत्रोमें

प्रकासित हुना कैसे ही दर्वतक माध्योसीने क्षेत्रकों एक मुत्री आग्री कर देना क्षमा फ्रीमा समसा। दुग्ग्य कीमी मुक्ताशी हिन्दी और तिस्कर्में परिएन निकासे गये। तन सबसी मक्टमें हम होता सोव यह है। परन्त कब बनेनक मसर महस्त्रसम्ब क्ष्मेंकी एक साम मुत्री कारी की तब

हमते बंदना एकवित किया हुआ धारा चत्या उतमें भेज बंदेश निरुचय दिया। सङ्ग्राचन नटाल उपनिषेक्षके सब हिम्मोरी विशेष कार्यकर्गाजीने इक्ट्या

यह चच्चा नटाल उपनिषद्धके सर्व हिन्सासे विद्याप कार्यकेनीबान इक्ट्र किया है। इपनें स कुछ नेटालके बाहरने भी बासा है।

मेमरक पास माज गरु जो रकम इकट्टी हुई है वह कुल १५६५ पाँड १पि ९ पेंस है। इसमेंसे ११८ पाँड जारतीमोंने प्राप्त हुने हैं।

र वेसीक्ट इन्द्रः स्त्रश्⊸त्रः ।

इसके साथ हम १ सिकिन और इसके ज्यादा चन्या देनेवाओंकी सची मेज पदे हैं। इमारा सुझान है कि यह सूची भारतके मुख्य-मुख्य दैतिक पत्रोंने

प्रकाधित करा श्री भागे। हमें उनेनके मेमरकी मार्फत को धम्पवादका तार मिला है, उसके क्रिए हम

इन्द्रज्ञ है। इमारी भावना यह है कि हमने अपने कर्तव्यक्ते ज्यादा कुछ नही किया। अफसोस यही है कि हम अधिक नहीं कर सके। भवदीन निजीस

> वावा अब्बुल्ला ऐंड क० बल्ते — गातीब माध्य

नांबीजीके हस्ताहारोंनें किसी अंग्रेकी प्रतिकी फोटो-नकर (एस एनक २३१७) से।

४४ पत्र ए० एम० कमेरॉनको

५३-ए प्रीक्य स्ट्रीड क्तन नेदाक **昭 1 124**0

for at starts

84

आपके दो इस्रापन मिले थें ! मेरी पत्नी सीरीमें भी और दश्तरके कामका मार भी ना। इसकिए, मुझे कहते खेत है मैं जापक पक्के पत्रका जनाव

इससे पहले देनेमें असमर्ग एहा। हों भी राम चन्ने यमें हैं। जब हमने सुना कि प्रमानमन्त्रिमोंका सम्मेलन संदलमें इस निपयार विचार निमर्ध करनेवाला है एवं धूमने किसीको भेजनेका निरुवन किया। भी रायने स्वेण्यासे अपनी सेवा समर्पित की। उन्हें शौई

शास्त्र नहीं मिलेगा। उनका किरावा और वर्ष कावस देगी। भारतमें अभी-हाकमें जो काम किया पता है जितके बाद क्षेत्रोंको सह विश्वास विकास कठिन है कि वहाँ इस समय और बहुत ज्वाका कुछ किया वासभवादै।

१ समिनि राज्याः नहताने सन्ते ही १४५६के सामग्र अर्थना किया है। राष्ट्री भारतमें फिरमे लाइमछणा संबद्धव बरनेके किए मैजा नवा वा ।

प्रस्तावित भाष्टीय समाचारपत्र के बारेमें बढ़वारोंने वो कुछ निक्रम है उसका बहुत संघ सही है। बीर बापका कृपायत बातिके पहले उसके सस्वस्थम तैने सारकी पास भी की बीर बकर काम पूछ हो बचा दो में बारधे सफरे बारेमें बीर राज्याबहार कुकैसा। बार को भी मुझान दे सहेंने उनकी कह की वासेसी।

मो इट०गोधी

[पुत्रस्य] धनिकारको प्रदर्शन-सुन्यत्यौ प्रार्थभाषत्रकी एक नक्छ सापको भेजी गर्भ थै।

भीए एम कैमेरॉन की मैं क्वें

मूल बंदेनी पत्रकी फोटो-तक्कल (सी इक्क्यू १८) से सीत्राच महाराजा प्रवेरिकमोहन टायोर।

४५ पत्र ब्रिटिश एर्गेटको

प्रिरोरिच

at to togo

माननीय विटिश एवँट प्रिगेरिया

धीमन्

सवार्वे

बाको इन पनराज्यत विदिश्य भारतीयोहि सम्बन्धमें को मुहाबाठ देवेडी इना हो थी असमें देने बहुत था कि बगर १८८५ ने बातून र के बचेते मानक्ष्मों आखीद क्यांत्र यहाँ एक परीसायक मुक्तमा दायर करे थी उस्ता एवं नमामी-मरमारको रना चाहिए। इनस्य में पिछ्यमावकी कीरसे निवेदन करता हूँ कि बाद परम जानतीय व्यक्तिस्थ-मन्तीको सार

र विकास्तिवारी रुद्रकार रा

व देविद दल १ इड १००-८।

सम्पूर्ज गांधी बाहमब

143

पूर्धे कि नया समाज्ञी-सरनार सुकदमेना सर्वदनी? इस विवेदनके सावार निम्ननिसित् 🕏

१ यह परीसारमक मुकदमा की स्टेटके मुक्त न्दायाचीग्रक वंच-कैसमेके कारण सावस्पक हवा है। पंच-फैसला कराना सम्राजी-सरकारने सबूर किया ना । और, मद्यपि राष्यवालके मारतीयकि द्वित वौन पर नहे थे इस निपयरी

उनकी भावनावाकी बाँच-पहलास गडी की नई। सकाने बमक व्यक्तिको ही पंत्र नियुक्त करनेका भी आवरपूर्वक विरोध किया था। परस्तु वह भी निप्कत

च्हा (बन बुक सी ७९११ १८९५ पुष्ट ३५, अनुच्छेर ३)। २ उपर्यस्त सरकारी रिपोट (स्कूबक) में प्रकाश्चित तारों (सं ९,

पुष्ठ ३४ और नं १२ का सहपत्र पुष्ठ ४६) से मालम होता है कि समानी-गरकारत परीकारमक मुक्यमा चलातेका विचार किया है। चेकि सकतमा मारतीय समाजके किसी व्यक्तिके नामसे बागर किया बामेगा इसकिए मेरा निवेदन हैं, वह अनुमान उपित ही होगा कि चर्च समाजी-सरकार वेगी।

३ मधिप १८८४ के समझौते (कानवेंबन) की बाद्य १४ से ट्रासनासक ब्रिटिच भारतीयोंको सरक्षण प्राप्त है, फिर भी चनका क्रूबा गिराने और उत्पर बाधा-निर्मय कादनकी कार्रवाइमाँ की नई है। इन कार्रवाइमेंकि सिकाफ संबर्ग करलेमें में पहले ही मारी बर्च चटा चुके हैं। उनकी आधिक स्मिति नपेशाकृत ऐसी नहीं है कि वे इस उपड़का कोई भार सड़न नर सकें। सज़ी बाधा है कि वाप अपने तारमें कर्य-सम्बन्धी निवेदनके इन बाबारॉका आधन दे वेंने।

भै अपनी औरसे और जिस सिम्ब-मंडलको जाज आपने कृपापूर्ण मुलानात दी उसकी औरने आपको एक बार फिर कम्पवाद देता हूँ कि आप इसके

इतने सौजन्तके साथ मिले और आपन इसारी वार्ते इतने चैमें और सङ्गरमताके साम सुनी।

प्रिक्रमञ्जूष्ट कोरसे भापका भादि

मो क गांधी

मक्य उपनिवेश-मंत्रीके नाम केपठावन स्वित विटिश उच्चायक्त (हाई कमिरगर) के वा २५ मई १८९७ के बरीवेका सहयक।

क्लोभियन बाफिस रेक्ब्स साउन बाफिका चनरक १८९७।

र समाजी सरकारने रूप गॉलको लगिकर महर्गिकिया का ।

४६ पत्र आइमजी मियासानको

मध्यान्त्रकापव टाम्परापरे बारतीयाने सी महास्त्रीको मेना था ।

महाराज्य दिरहोरीशाची हरेड बनाना २२ जुल १८९७ घो नदाई बारेसाजी थी। मान नेमान मीर द्रामालाको नार्योजाने मानी एमनविश मीर निष्या स्मेलन वरते हुए कहा वह मिन्सलाका पेतरेशा निष्या किया था। नेमाल्या मीनिकानकार यह बीरीजी दालार निर्माणिक तथा करता ११ की कि हराया है।

अभिनाम रहताप्रस् गांचीवीया चा विनामे अधिनाम-रहता मनविदा कनावा था। बह सम्मानित समित करनेने तिन नेवान्ति एकताची दिवा क्या था। आस्त्रमधी विनात्मको काम भीने दिने दूर दारी अधिनाम-रूपके जुदासची वायत पाँचीवी निरोत है। अधिनाम-रूपका यह यो नेवान नेवाल मन्त्रपुरीची कर बतासी उपरास्त्र हमा है, पुर १५५४ कर महानित हिना यहा है। इसी तराबरी ग्रामानीया

सी ११ १८९७ रा रा आस्त्रती नितासात संती-तरसार्फ सिर मानसम्बर्ग त्रतीन मर ती होती। क्यार मानस्य सुर् या संत क्या हा मो इन्ही नित्ताहों सीम सिर अनुसार निरस बीजिएता।

गुम्सराज श्रोटन विशेतिका

यर नुरान नरना है। "मनामें महासहितामनी विकोशिया कियानी कृतान इस्तैक नथा सायर्गीकरी रहीती

पर्मेश नर्गाःका भारतकी क्षाणी परम कृपान नार्वमीय सम्राप्ती एक न

रतकेनीचे 'दर्बत नर्ष १८ ⊅ भी सिमादेता।

र अवरोत्रे समय पूरा वर भरावान्य राज्यो ^ल है। हिर्माने समयी बातीह वर्षान राजा समासा अध्यान अपी है।

र १८९६में राजानेत अपन आहेता हारोंने मेरान आरान वाहिएके कहेताहित राजों से बाद सेनामा वा अंत्र प्रमाणक बहुत के मूस १८९७ स्टार्ट है।

४९ प्तार श्री चेम्बरलेमको

वर्षन सूत्र १८९७

परम मानगीम जासक बेम्बरकेन सर बिकियम हॅटर, मारफेत *व्यवस्थ* इनकास मानकारी

पिछमे प्रार्थनापनमें उस्लिक्ति भारतीय निवेसक कानुनके कपर्ये गजटमें प्रकाशित । हमारा नाम निवेदन है विचार स्विपित रखा बावे । प्रार्थनापन तैवार कर रखे हैं ।

भारतीय

सावरमठी संबक्षाक्यमें पुरक्षित अंडेबी दक्तरी प्रतिकी फोटो-सकस (एस एन २१८१) छे।

५० भारतीय और हीरक-अयन्ती

हर्रन

भूग १४ ८९७ सुगामें सम्मादक

क्यस मन्त्री सरोदम

ये स्ट्रीटर्ने हीन्क-समली (बायमंत्र वृत्तिती) पुस्तकासमक क्ष्माननके सम्बन्धमें बायके बावके बंकमें वो विवरल प्रकाधित हुआ है चयमें हुछ गळतियाँ और क्ष्टें रह नहीं है।

श्रीर-मन्त्री पुरायक्त्रा उर्गाण गैनियँ तमिन्ते सी नामरी दिना साजीर एस नहासर मोक समय दिने को में। सीरीयोने वा चा मैद्यक प्रमुद्धिन कार्याद्वा एस नहासर मोक समय दिने को मा साथ क्या दिनोडक समय बंध वृत्त ने प्रमुद्धिन प्रमुद्ध में। HE EASTERN A SOUTH AFPICAN TELEGRAPH CON PANY, LTD.
FORM for Meszages to all parts of the World.



होरफ-जमली पुराजानमक पाएम्स होनेकी कार्यवाही मैंने नहीं वर्वतिक पुराजाब्दामध्या भी बागन गैवियनने पत्ती थी। यस स्वाधित करलका मुक्त प्रयाज्ञ व्याप्त करलेवान वहीं पहें हैं। रेनवे भारतीय स्कूमके भी के एम बोन पुराजास्वयातिक भारता है। मापन विकरणी एमा मानम होना है कि धीमान मेवर महोदयन नुकूमने नारानीयों की कुन्वर अनुमित्रीतका बाप भारतीय कमानगर महा है। मैं नहीं भागता कि उन्होंने एसी कोई बात कही हानी वा एमा पनका मतकब ही होगा। इसका बारी कोई भी हो मैं जातता है भारतीय मानम नहीं है।

T.

मा० क० गांधी

[संप्रेक्ति] मेदास सम्पूर्ण १५-६-१८९७

हीरक-जयन्ती पुस्तकास्त्रय

अवैतिक मन्त्री भी में क पार्णत मनाको नान्वीधन करत हुए बढ़ा कि यो बालरको इसिए मामनिक विचा गया है कि विधि सम्पन्न करवेड़े लिए गान्यमितिविधिक प्राप्ता करना एक पुत्ती भारतीय प्रवाधे जनूरण है। व्यवस्थानको सिन्देश विचार क्या नहीं हुए सभी सम्पन्न पार्थी कर पार्थी मान्यस्था प्राप्ता प्राप्ता मान्यस्था प्रवाध जन्म प्राप्ता के स्वीद्वा हो गया और एक प्रयास मान्यस्था मान्यस्था प्राप्ता प्राप्ता प्रवाध प्रवाध कि विधा प्रवाध प्रवाध कि विधा प्राप्ता प्रवाध प्रवाध कि विधा प्राप्ता प्रवाध प्रवाध प्रवाध कि विधा प्रवाध कि विधा प्रवाध प्य प्रवाध प

*40 सम्पर्व पांची बाहमब तका दक्षिण वामिकाके सब मुख्य-भूरत समाचारपत्र मेंगाये वार्येते। बल्बारूय रविकारको छाइकर प्रतिदित सुबह सात बजेसे सेकर रातके तो बजे तक भी यांचीन भी वाकर और पेनको उनकी उपस्थितिके नका छोगा। किए भारतीय समाजकी जोरसे बन्यबाब देकर सपना मायन समाप्त किया।

मी पेनने इस मान्दोक्तमकी जानकारी और समार्मे उपस्थित होनेका निम वर्ण पानपर सन्तोप प्रकट किया। (बन्होंने कहा कि) बाति-बातिमें मेदके बारेमें बहुत-कुछ भूना जाता है परन्तु बर्बनके मेदरकी हैसियतसे वे स्वर्म ऐसा कोई भेद नहीं मानता। उनके मनमें भारतीयोक किए दूसरोंके बराबर

ही माबर है। पुस्तकारमका विभार सभ है और असका सुतपात तथा संरक्षण करनेवाओंके किए सेयास्पद है। [अन्होंने कहा कि] चर्ने प्रसन्नता हुई है कि इस नगोली और बेओड़ मौकेपर भारतीय नपती समाजीका सम्मान करनेमें अपना हिस्सा बदा कर खे हैं। भारतीमोने विनके मुनुतमें

क्या हिस्सा क्रिया इस कियमनं उन्होंने को वृत्त तथा अन्य व्यक्तियोधे बावचीव की भी परस्तु ने निरास हुए बिना ने रह सके कि भारवीयोने पसर्ने कोई हिस्सा नहीं किया। कौसिकके सदस्योंने को पूरी-पूरी रजासनी और माझा स्पेक्त की की कि वे सामित होंगे। मेयर महोक्यने निमन्त्रपते लिए जाई बन्धवाद वेकर बचना भाषण समाप्त किया।

भी मी क मांबीने भी वाकट भी पेन तका अन्य मुरोपीसोंडे समामें बानेको स्वीकृति प्राप्त करनेपर फिरसे क्ये प्ररूट किया। (भेगे गरे)

*नैटास मन्त्*री ९४-६-१८९०

५१ भारतीय जुविकी पुस्तकालय

ज्ञा १५ १८९७

मेगार्मे सम्पा**रक** *मिटास मक्नुं*डी

मदान परंपुण सहोत्य समाजके जनक हमर्दावर्ष और मिनीने समाजके अनक हमर्दावर्ष माराजिप समाजके जनक हमर्दावर्ष और मिनीने समाजके प्रमुख्यकों प्रभावता निया है कि उन्हें कायनंक पृथ्वियों [हीएक-प्राप्तनी] पुन्ताम्यके वर्षाम्य समापेश्वर्षे मामिक होनेवा नियम्बान से हिंगानिक विकास करना चाहुता हूँ कि इस मुक्ते निया नियमेशार में हूँ हामाँकि जिन परिक्तियोंने नियमक्त्यन्य में यह चे जनमें मून हो जानेकी बाफी प्रमाद की — यह पूम्प परीवा है मान किया पायना। यह माम्यक्ति प्रदेश को उत्तर पायन स्वाप्त की नियम परिकास मून्य किया का प्रधा नियम प्रमाद मुख्य जनके है कि वे अपनी जारीने वनाई माने प्रमाद मामिक स्वाप्त की प्रमाद मामिक स्वाप्त की प्रमाद की स्वाप्त की स्वप्त की स्वाप्त की स

शक्य अधि मां व गोंधी

(ओरकैन]

नेवस मन्त्रीं ८-६-१८९७

५२ पत्र प्रार्थनापत्र भेजते हुए भी जेम्मरकेनते गरम साथ १५ १८९७ का और वेराकडी विवासकामानीके मान

मार्च रह के नार्वनारण क्या गरस्तीय-विरोधी कान्जेंकि बकाने कानेसे कोई सहस्त न दिका सके यह सक्क बपतिनेश-सन्त्रीके नाम एक मानशास्त्र मेनकर का बतारीन किया यहा कि बन्त कर काननीको समारा-सरकारको स्थीवति प्रदान स को अने । प्रार्थनात्रम निम्नकिक्षित पत्नी साथ नैटाओं स्वन्तरमे पास नेवा नवा था ।

मेडार्गे

परमधेष्ठ मानगीय सर बास्टर क्रांतिस हेली इकिंग्सन नाइट क्रमांडर बाँक व विस्टिम्बिट्ड मॉर्डेर बॉक्स सेंट माइनेच ऐंड सेंट जॉर्ड सबर्मेर, प्रवान सेनापति

और नाइस एडमिएक नेटाल और वेसी बावाबीके सर्वोज्य धासक जावि-आवि पीटरमैरिक्सबर्य नेटाल

नम निवेदन है कि

मैं इसके साथ सम्राज्ञीके मुक्त उपनिवेश-मन्त्रीके नाम भारतीय समाजके प्रार्वनापवकी तील सकतें त्रेण एका है। यह प्रार्वनापत्र इस वेक्सें निवास करनेपर प्रतिकत्व विकेताकाँके परवानों संख्याक रोच विपयक सतक बौर भारतीय-संरक्षण सम्बन्नी कानुनौंके बारेमें है। सब्र निनेबन है कि महानुभाव

वैसा तकित समझें वैसे अभिप्रायके साथ इसे मध्य स्पतिवेश-मध्वीके पास an Fi

(go) अब्बुल करीम हाजी जादम

≱स्तक्षितित अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-नक्क (पस एन २४२९) से।

५३ प्रार्थनापत्र श्री चेम्बरलेनको

अन्ति १८९७

सवार्ते

क्षात्र सारतीय आहर चम्हानन

नक्रातीके मुख्य उपनिवेश-मन्दी

सदस

नरामकं भारतीय समाजकं प्रतिनिधि निम्न हम्लासरवर्जी

डिटिंग बास्तीर्वाहा प्रावनापन

नक निवन्त है रि

नेशान वर्गानसाची जानतीय दिवानमा और मानतीय विवानसीयाचे ता चार जारतीय विवेषण वान वर निर्वे हैं और जिस्हें गर्वनेच्ये स्वीहर्ति हाल हैं जानन वारण गरवारी पदरने बीधनित्वकं कार्य कहारा कर विहे हाल हैं रहीट विवायों प्रार्थ जात कर पहुँचनण नारर नाहण कर है है। ता विवेचनोत्री जिस कमन पान किया गया जाते बनुनार हन चारीर नाज व है मुक्त-विवेषण (कारतीन दिन) प्रार्थी प्रतिकासन विवेषण (रिमिन्न विश्वचन दिन) स्वारा-गरवानी विवयण (हेंद्र कारतीन वर्षण क्षेत्र केरियान प्रार्थ नार्गालिय विवेषण (दिन क्षेत्र) कार्य केरिय क्षेत्र विवाय जातीन कर्माल

्राण्ये में कॉलन हो दिवसक जाते ही मानाची नहाने कीवीराचीव कपने कर्माच्या हा । तथ ही प्रावित 4 नावर्गन चर्चनीय-नीवसमें हिम्बकर कर्मन **१९९ सन्तृतं नांदी वाद्**सन

की की कि इन विवेधकोंका समाजीकी सरकारक पास गोकना इस प्रार्थनापकरें गुड़ेकों एक स्थापित रखा बाये। उसका माननीय उपनिवेद-स्विकते बहु बबाव विद्या कि विवेषक पहले ही मेर्च का चुके हैं। इसपर मीचे विद्या हुआ मान रार्ट बापकी सेवामें नेवा नया था

पिछले प्रार्थनापकमें अस्तिविक सारतीय विवेदक कानूनके रूपमें वधटमें प्रकाशिक। हुमारा नम निवेदन है विचार स्वितिक रहा बाये। प्रार्थनापक वैदार कर रहे हैं।

मही छल्किनित बारों निजेमकॉकी प्रतिमाँ इसके साथ नत्वी है और सनपर

कमधः क स ग मीर र विक्कं मेरित है : प्राप्तिमेंने देन विवेषक्ति संस्वत्वमें स्वानीय संसदकी दोगों समामी तक

पुकार करनेका साहण किया वा' पर उसका कुछ क्का नहीं निक्का।
यानतीय विवास्त्रमाकी सेवार्स को प्रार्थनाएक प्रसुत किया गया वा वह
इसके साथ संख्या के बीर उस्तर के बिह्न मेकिस है। एसमें विकासनेका मल्ल
क्या पया है कि परिदेशिकतियों आरतीयोंकि विकास को प्रतिकास क्यानेका
स्रोतीयक सिंदा नहीं होता। इसमिए ऐसा कोई मी कानून बागरेसे पहले वस
स्पतिकेंद्रकी सारी भारतीय मानासीको गयाना कर केनेनेक्स माना सी

उपस्थिति । अपनिषेपको काम है मा हानि।

गुउक विषेपको में पनर्मरको मिलकार दिया नया है कि नह न केवक संशासक
रोप-सार कमरावाहित मानेवाके कहानीको निमा कोई से नहीं नीर माने कराये
कोटा सकता है, वरिक संसाम ने पेपार कमरावाहित करे हुए कियो मानिको भी
नेटाक्षर कराये हैं परिक संसाम ने प्राप्त कमरावाहित करे हुए कियो मानिको भी
नेटाक्षर कराये से एक सकता है। माने ही कहा नामी नेटाक माने हुए मानिक

१ देशिय पुष्ट १५५ ।

र विकार कुछ १५६ ।

र व्यक्त कुछ रूपर ।

३ विक्रिय क्रम सरम≔सर८ और १३ ∽सर ।

प्रमादमापन मालाविक मालुक्तिक निर्मा सम्बद्धान परिविद्ध क के क्रमें दिया नवा बार परिवृत्त नवः शिकिक्सके मालुमार क्षेत्रत स्वात्तर दिया पद्मा है, इसकिर वर्षों छोत्र दिया नवा है। देखिर वृत्त १२१-१८।

५ रेबिट इस्ट रक्ट-कर ।

दिसी बन्य जहानमें गयार कों न हो गया हो। मुठकर कानूनका प्रयोग्य ग्री सक्ष्म संक्रमक रोजेंका प्रयेश रिक्ता हो हो यो प्रार्थिनी उसके सिव्ह कोई स्थापन नहीं को स्थापन के स्थापन कर किया है। यो प्रार्थिनीकों स्थापन सिव्ह के स्थापन कर किया है। विद्यापन सिव्हेंका नेटाक सरकारणी मार्खीनिकी मेरिका एक अंग आप है। बैसा कि भारतीय-विरोधी मार्खीन सब्बनी प्रार्थनात्ममें बताया या है, नेटाक-सरकारणे प्रवर्धन-प्रिमिणी बावस्थापन विद्याप पा कि सरकारक सुरुक बागोंके विद्यापन स्थापन किया है। स्थापन स्यापन स्थापन स

इस सप्ताह सरकारी पत्रहमें प्रकासित किये पर्य प्रवत तीन विवेयकोंते तरकारके इत बचनकी पूर्ति हो बस्ती है कि वह संसदके मापामी मधिबेदावर्गे भारतीय प्रवासियंकि मापननके विवयमें विवेगक प्रस्तत करेगी। वरन्तु इतर्पे के किसी भी विधेयकका सम्बन्ध विदीव क्यारी प्रतिबाहमें के तान नहीं है और, इत माबार मानपर, उनपर इस करहके काननेकि ताब बड़ी रहनेवाधी वे वार्ते कायू नहीं होती जिनके कारच कलबढ़ा प्रयोग कुछ सोगॉयर या कुछ समयके सिए नहीं होता। इनकी रकता इस प्रकार की गई है कि इनका प्रयोग सबदर और जिल-किसीपर नी किया जा सकता है। इस्तिय इनके विद्यु यह द्विकायत नहीं की का तकती कि ये स्थापक नहीं है। यह ताज-साथ स्वीकार कर सेमेने कोई हानि नहीं कि ये विभेषक बोड़े-बहुत मापत्तिजनक है। परस्तु तीव रीगॉर्ने तीव श्रीविक्ता ही प्रयोग करना पहता है। यह खेरका विषय है कि ऐते कानून बनाने वड़ रहे हैं परन्तु इन्हें बनानकी सावस्थकता निविवाद है। और ऐसे कानुनोंका निर्मान किसना ही अप्रिय क्यों न है। यह एक नावस्थव रसंब्य है और इतका पालन करना ही चाहिए। कुरु हे सम्बद्ध कानुनीमें संघोषन करनेवाला विवेदक सदम्ब अज्ञानारय है, परम्य जिन देशोंने कीन बैसा इसा है उनके कारच असाबारण क्याय

^{*} tfer gu ean :

111 रुत्रुयं गोबी बाहमक

करनेकी आवश्यकता भी पढ़ गई थी। हमें मर्चकर रोधोंसे अपना बचाव करना हो तो ताबारच प्रपत्नीते बढ़कर कुछ करना आवश्यक है।

को नोन इस विवेधक (वर्षात् प्रवासी-प्रतिवालक विवेधक) को

इसी पत्रने प्रवासी-प्रतिवत्त्वक विध्यकपर कठाई यह आपश्चियोंना उत्तर रेते हुए, अपने ६० माथ १८९७ के अधनेक्स कहा है

इस कारण भावतिमनक बतलाते हैं कि यह शीवा और सक्वा नहीं है वे कहते हैं कि एक विवेषक विशेष कमसे एतियाइग्रेटि विश्वह कात करना चाहिए, हमें "बीर्यकानिक बैचानिक अल्बोक्त" आरम्भ कर देशा बाहिए. और तबतच इने अपनी रका कुठक-मिनियम द्वारा करनी चाडिए। नरन्त इस मार्गकी वर्तपति १५६६ है। इतका विभिन्नाय यह विकस्तता है कि हम प्रवासी-प्रतिबन्तक विवेदकके सम्बन्धनें तो बहापारक हैमानवारी करतना चाहते हैं, बरस्तु हमें सुतक अधिनियमसे अनुधित साम पठानेसें सनिक की संकोच नहीं है। भारतीय प्रवेशार्वियोंकी नेडाकर्में उत्तरनेते यह कहरूर रोकमा कि वे अनमे देशके जिल निकेश था रहे है उत्तरे हुमार-हुआर नील परे तक नर्नकर संकारत रोग कैंका हुआ है, बतना ही कुटिनना-पूर्व है जिल्ला कि प्रवाली-असिवन्यक विवेयकके अनुसार कार्रवाई करना।

क्पसे पोक्ना है, बीर इसीमिए प्रार्थी शम्मामपूर्वक सरका प्रतिकार कर पहे हैं। यदि कोई मारतीय नेटाल बाते हुए किसी अमेंग बढ़ाजमें अंजीबारसे स्वार होकर यहाँ पहुँचे को उस यहाँ उठरुलेग रोज दिया जामेगा और अस्य सन बाबी बिमा कियी कठिमाकि उतर कारेंबे । यह मेंद-मान क्यों होते दिया कारे ? वह उस मास्तीव हारा उपनिवेशमें सकामक रोप का सकता है हो उन बन्ध थावियाँचे भी तो वैसा हो सकता है जिनका कि चम्मई उसके ताब हो कुका है। प्रवासी-प्रतिबन्धक विवेषक"में अन्य बाठोंके मित्रिस्त एक विवास यह मी

इस प्रकार मुक्क विशेयकका प्रवीवन नटानमें भारतीयोंके प्रवेसको प्रापस

 कि को स्पक्ति निपद कंपाल हो तथा जिसके सरकारपर या जनतापर बोल बन बानेकी संमापना हो और की विषयक्की अनुसूची में दिये हुए क्यामें

- ≀ वेजिए का १७५-८४ ।
- क वेलिंग प्रस्टक्र-८४ ।

* 4 4

उपनिवेश-सचिवके नाम प्रार्थनायन न किल सक उसे निमिक प्रवेशाची माना काये। इस प्रकार, को मारतीय किमी कारतीय भाषाका तो विद्वान होया परन्त यरोपीय भाषा कोई भी नहीं जानता होया जह अस्त्रायी कपसे भी नेटारुमें नहीं बत्तर सकेगा। वह ट्रान्सवासके वित्रेशी प्रदेशमें तो वा सकेशा परन्तु नेटासकी भूमिपर पान तर नहीं रच सकेगा। भारेंब की स्टेंट तकमें कोई भारतीय दो महीने तक जास्तकी कोई कार्रवाई किये विना रह सकता है परन्तु नटालके बिटिस उपनिवेशमें नहीं। इस प्रकार वह विशेषक इस मामनमें इन योगी स्वतंत्र वैमॉमे भी कामे वह गमा है। धरि कोई मारतीय राजा संसारका भ्रमन करता इका कही नेटाल पहुँच बया तो वह भी विशेष अनुमति प्राप्त किये दिना यहाँ नहीं बतर मनेना। प्रवासी कानून कामू होनेके बाद मारियस जानवासे बहुत-ने जहाज मारतीय बानियोंको सेकर यहाँसे स्वरते 🖁 परन्तु क्य व बहुनि वन्दरमाहर्ने कड होने 🖁 तब उनने माध्यीय मात्रियोंको नुसनै-फिरने या हवा नानके किए भी मही नहीं उत्तरन दिया जाता। प्रवासी विमानको बाहासे उत्पर सकत गियरानी रखी जाती है और छनका जमदाव वहानके नोदासमें क्ष्य कर दिया जाता है, जिससे कि में कही नजर क्ष्याकर तरपर न जनर जावें। दूसरे सन्दोंने इसका नर्व यह हाता है कि बिटिश श्रमाके नाम विटिश-गासित मुमिर्ने ही कैयल भारतीय हीनेके नारच प्राय-नैवियोगाना व्यवहार किया जाता है।

अधिपुत रूपम कहा गया है वि कोई मरकार स्वयमों भी हुए बानुसको गारवियोंने उच्छ ही पुरसिनोंटर मानु मुझै करेगी। उच्चारा ३ क दिस थि मानस अब समावन कर दिया तथा है उसकी चर्चा करते हुए विशेषकों दूसरे बाचमर्ग प्रवासनीत्रीत कहा था

बही तक प्रवानियों के बात २५ याँडवी रूप्य होने की बात है, बाव वे ताब यांकित फिरी यां में तम नुसे नभी नुसा हो गहीं था कि यह व्यवस्था मूरोपोयीयर तालू की कार्यों। धार तरकार मुक्तितों काम के तो जगर कबर तालू की का सकती है। यरकू हरका व्हीस एशियादयींने नियम्नेका है। कुछ सोयोंका कहना है कि उन्हें बेसानरायोंका सीवा-सकबा रास्ता कतन है। कुछ सोयोंका कहना है कि उन्हें बेसानरायोंका दोना जाते बोही से देंगि सिरा सिरा मनते में सामि हो की किए सीर्ट-बीट कह तरकार पहुँच बाता है। जब जावभीक सामने कड़िनाइयां जाती है तो वह उन्हों कड़ता है। समर वह बीत नहीं काता तो उन्हें कतरा कर निकत बाता है। प्रेंडकी दीवारसे टक्कर लेलेलर सिर फोड़ता नहीं रहता।

निषेपक्ये ग्रीवे-मञ्चेतनहा नामव उपनिवेधमें प्राय सभी मोर्घोड़ा वक्तर है। उपनिवसकी राजवानी मेरिसावर्गेड निधाम-सम्मेबन बरीडे ग्रहस्वीको विवेदकरर जनन विचार स्वरूठ करनेहा मोडा वर्गेड सिद्ध की वहीं वर्षम्य टाउम-हाक्त्री एमा बीर जयम नामाने हम मृत्यूर उपका विरोह किया है कि विवेदक विटिश ग्रीत-मीरिके प्रीतिक्त है। एंडब्के समेक ग्रहस्तीन मी उसके विकास वारवार विचार स्वरूठ किया है। विचानस्थामें वर्षक्रीय ग्रियोगी पाकी नामा भी विकास कार्यक्र किया है। विचानस्थामें वर्षक्रीय विरोधी पाकी नामा भी विकास कार्यक्र स्वरूप करा है

हमें इतने यंत्रीर विश्वस्पर पुढ क्यानिक वृध्यिते विवार नहीं होने देना बाहिए। विशेषक शीध-ताववा नहीं है। वह लीवा निवयर नहीं मुद्देता। यह प्राप्ति को प्राप्तिक प्रतिकास पढ़ा गया था जनमें कहा पड़ा का कि वह क्रिकेश रीति-मौतिक प्रतिकान है। इतसे ज्यादा वन्युक्त मालेप और कोई नहीं हो लागा। विवेषकारी क्रितीने काव्य नहीं दिया। मार्र नेंदातमें यते पताब करनेवाला एक प्यक्ति भी नहीं है। बीर दाव प्रयापनार्थितों तो वह हरशिव पताब नहीं है। हो सहता है उन्होंने लोवा हो कि बसकी जकरत है, और उन्हें यही क्या दिया वाना वाहिए। परस्तृ सार उनके माराजनें कोई एक वात त्याद थी तो यही की कि वे विवेषकारी जनस्त कार्य है।

विवानतमाके एक बन्य नक्त्य की नेडमने

दूनरे सरस्य भी सिमन्तने ना

हम नारतीसीनो अपने नीचते हुए नहीं सस्ते। न हो हुम उनदे वे विश्वानियमर तीन तस्ते हैं सौ उन्हें विदेश प्रशास निवनते आज है। क्या कोई राजनीतिन क्ष्मानेसाल अंदेश देना विदेशक स्वानीसा और किर उनदे नवीमार होनेकी अपेसा करेता? यह निवेशक एक राससी विवेदक है। ऐसा विवेदक एक विटिय क्यनिवेदके किए कर्तकर्ध चौज है। हम क्षेत्र एपियाहर्योको रोकनेका विवेदक क्यों न कहें? प्रायते बातनेवाले कहार्वोक्त स्व वार्योने हम कब बरककर रास्ता तय करनेकी कर्त्र गार्स विध्या करते। पीचे सार्य करते रहते हैं।

इसन बहुत हैरा है। ठतके मात्रारण ही यह कहनेमें तानीच है कि इस मात्रारियों की उस्तियति हारि उसनिवास कि कम्यानकारी हुई इसने इसने इसने प्रतिकार कोई कानून बनामा क्यार मन्यावसूच नहीं तो अपदिवासका काम बहुद होगा।

मही एकमान निवंदन गराव्य है जिससे स्वातिक विचानसंबक मार्गवर्षण के सकता था। इन स्वाचीक होते हुए प्रात्ति वह भी साधा करते हैं कि स्वाधीक राज्या है। तक स्वाचीक साधीक स्वाचीक स्वाचीक स्वाचीक साधीक स्वाचीक साधीक साधीक स्वाचीक साधीक स

t the TE the I

114

बपर वह इस निष्कर्यपर पहुँचे कि स्का बोयवासे भारतीयाँको इस अर्थीनें कते हुए अभिकार नहीं मिलते अगर नह मानती है कि नेटालमें भारतीयोंकी र्धक्या जमानक नतिसे वह रही है और उपनिवेशके किए भारतीय अभिसाप-स्वरूप हैं तो यह बहुत ज्यादा छन्तोयजनक हीया कि मारशीबॉपर विश्वप रूपसे कानु होनेवासा कोई कानुन पेश कर दिया आये।

नव द्रास्त्रवास-सरकारको अपना परदेखियाँ (एकिएन्स)-सम्बन्धी कानून⁴ नापस के सेरोक किए बाच्य होना पड़ा है तब नैटाल सरकारने एक प्रवासी-कानून मंजूर कर निया है। वह इस अस्विनिक आदरके साथ निवेदन करते विविध मासूम परवा है। मेटासफा प्रवासी-कानून वो ट्रान्सवासके कानुनते बहुत अभिक करोर है।

बब प्राची समाचारपर्वेक कुछ बंध उड्ड करमेकी इवाज्य नाहते हैं। इतसे माकुम होना कि प्रवासी प्रतिबन्तक कातूनके विषयमें प्रवाहा मठ क्या है बच्ड ४ में स्थास्था की गई है कि को कॉजत प्रशती इस कागूनकी मण्डीकर्मा करके उपनिवैद्यानें प्रवेद्य करें जेते क्या वर्ड दिवा का सकता है। यह रूप है नियत्तिन वा ६ महीलेकी चैद, या दोनों। अब अनारा समास है, ज्यादासर कीय इससे सहसत होंने कि जपनिवेदके सिए अपने जबके क्यपायको विवते प्रवासियोके जानगनपर प्रतिक्षन्य कपानाः कितमा नी क्षकरी क्यों न हो उपनिवेद्यमें बालेका प्रयत्न करवा किलीके किए बण्डनीय अपराच नहीं है। नैतिक दृष्टिते यह निश्चित भी है कि जिल वर्षके लोगोंचर बढ़ विवेयक लागू है, वे आम तौरसे जानते न होंने कि उपनिनेशमें प्रथम करके थे उसके किसी कानुसका संग कर रहे हैं। ऐसे कानुसकी हिचति उपनिवेशके धाषारच कानुवाति निम है, क्योंकि मह उन कोर्योपर लाप होता है जो उपनिवेशके अविकार-सेत्रमें नहीं है और तिन्हें उत्तक कानगोंसे परिचित्त होनेका कोई मौका नहीं निकता। इसकिए यह काम कर्मचारियोंका है कि ने बीमत प्रवातियोंको प्रतरने न थें। इस सबस्वानें हमारा क्याल है, निर्वालन काफी होगा और दश्त-सम्बन्धी काननको रह कर देना चाहिए। अव्ह ५ के बारेमें भी गरी जापति है।

र देशिय प्रदेश रा

वसमें जनातरोक वसमें प्रवासीसे हैं भीड़ बमा करानेकी व्यवस्था औ वह है। प्रार्ट मुद्द है कि समर प्रविद्यानें वह "बिहित प्रवासियों" को सेवीका तिकसे तो यह रवम करन कर सी जायेगी। हमें हम जमानताको बच्च करानें कोई त्याम दिखानाई कहीं पहता। समार उसे बरित्त प्रवासी सारकार उपनिवेशते तिकत बानेको बाम्स किया जाता है तो उसकी रक्का वस्तर कर दी बानी वाहिए। बहाबके संग्वासीरों सारी एक देनेकी वपवाराची निश्चय ही बानोचना की बानेंगी। वसते तो बहाबके कप्तासपर यह कर्तका तब बाता है कि यह एपानतीका स्वप्तास्त कोहनेके पहले साने तब सामार्थीकी हमा तथा परि विक्रित्तवी वार्यक्रीके वाल बाँच करे। कानूनके तकल प्रवोतको वृत्तिको यह सामारक हो सकता है, परन्तु इससे बहानके अधिकारों गरी बहिताहरों सेव बारेंगे।

यह देशा कायगा कि विधेयक कर तथा स्वक्त मार्थते व्यक्तिकेसमें
सामेशामोपर लागू होता है। हमारा क्याल है कि स्वार को तिर्धे
तानुर्धा रास्तेते वानेशाकीयर लागू किया लागे ती कृ बहुत कम स्नीय
सेर सर्विक साम्तानों कानमें लागे योग्य वन वागेगा। स्वक्त नार्यते
किसी भी वही मानामें एकियाइगोंके मानेशा नय बहुत कम है। वाली
लोग ती विलेश मार्थिकाने एक राज्यते हुनरे राज्यमें ही बालेशाके होंचे।
वन्त्रें प्रतिकारी सिलाग नृक्त रक्ता का कर्क रक्ता बाहिए। कनके
समावा वेशी लोग होंगे। वनने से क्यालहार लोग स्वारति क्रालेशास्त्र हुरे न उदारोके कारण निकल्क कारोंगे। साम्य इत्तरे हुनागी स्वद्रार प्रात्तिको सम्बन्ध पहुँचेगा। — क्षेटाक एककर्डाइन्तर, १४०-२-५॥

नया यह कहतेना इस शिकापार करना विधित न होगा कि "नगर नगर्यो एक वर्ग नहीं वाहिए तो हुत्तरा वर्ग नहीं मिलेगा? यह इस निकागर करना धातल नहीं है — यह नारातिन वर्गों मिलेग देशके हैं। पूछ दिन गहले हमने टाइम्स नगर इस्टियाका एक सेस प्रतासित किया था। बस्से मेदासको करीक-सरीव सस्वारा गया था कि बहु यो वाहीं से हैं। एक्सो वृत ने — भारतीय सन्दुर्गेंग प्रवास वा तो प्रतिवन्त-रिहित या विगकुत नहीं। समस है यह विश्वे एक स्वारिक स्वास्त हो। वरना हुस समाते हैं यह कहनेम हम बहुत पक्ती नहीं करते कि प्रवि नामका जकर दिया बार्स तो हम भी डीक पार्टी बनाव हो। यह तर्फ कर्मान क होमा कि पार्ट वर्गानदेशकों मण्डे कम्पानके निस् माएतीयों के कियी एक वर्षकों आमेरी रोक बेना आवश्यक मामून होता है तो अपर भारत सरकार को नानी अनेके किए जो हमरे वर्षके बारतीय प्रवास्त्रिकों के बानेते रोक हे तो यह फिलामत नहीं कर तकता। — नैटार्छ पहारादेशना, ५-४-५७।

हम पूछते हैं क्या किसी भी विद्यास प्रत्मिक्षेत्रने इतना कठोर और व्यानक कानून बाध दिया है? किर हमारे की प्रत्मिक्षेत्रके न्यित्र, से प्रयत्नि और स्वतान्वताका इतना बाध करता है, क्यानी कानूनी दुलाकर्में पैसा कानून को करनेवालीयें पहला होगा कोई सम्बालकी कात नहीं है।

--मेटास एडक्टॉइक्ट २६-२-१७ । यह बसीस सरता बनित ही होया कि विसेदक के हेतुका कमार्ग

किया जाये तो बहु सिर्वाणकी सुधिरते बेईमानी और कमरते दुधे है। वर्षोक्षित्र सरका राज्या य्येन सह नहीं है जो विकारि देता है। बसका जाहिएर राजा तो जाय प्रशासियोंके सामयनको दोक्योक्ष है वरणु हर व्यक्ति जानका है कि सब्बुण कराका य्येन एपिनास्मिक्ष जासमनको रोजना है। — नेटाक्ष एकसटाईड्साट १९-२-९७।

इन बो-तुष बाहते हैं उसे एक हैनात्वारीके स्वायपूर्ण और लिएक-भर कार्य हारा प्रत्य करें, निश्चम संधा तब्बे प्रत्यकों सरपाद, बन्धायपूर-रिक और बैर-विधिय प्रतिवक्तीकी बाधनोंगे हैंच देगा न हो। बनतक इत यू मूर्त कर पाते तातक करकार और प्यूपितिकीकियिके सिक्त सरपी यांचा लगलेको बहुत-ता क्षेत्र है। वे स्वार्णक निथम बनारेमें सपनी यांचा लगलेको बहुत-ता क्षेत्र है। वे स्वार्णक निथम बनारेमें सपनी यांचा लगा सब्बो हैं। इसने निल पुरायर्गको विकास्त्र की बातो है उन्हें स्विक्त क्षिक करा होनेकी रिक्षामें यूहत नदद मिनेकी। —निटाक प्रकर्णकरण, रे-२-१-४।

कीई तरकार मा विचानपथल निन निताल वृचित चालवानियों में मामित हो करता है कनमें में ही एकका वरिचायक है नेदाल प्रवासी-कालन। —स्टार. २०-४-९७! अवसे १८९७ के अधिवेशनको उस निताल आयोग्यनक कानुका बम्पालाहे क्यार्थ सहबागा बावेगा, जो बुध वार्तीमें ट्रम्टवालको क्षेत्रसार (संतड) के पत वर्षक कानुकरी जो वस्तर है। ट्राव्यक्तका वह बानुत भी इसी बहुंपनी बनाया गया था। तभी बानते हैं कि भी क्षेत्रस्तनने उस बानुका विशेष किया था और प्रोत्तरासने वसे गुरूत रह कर स्थि। या। परच्च यह नित्तवस है कि सबि वह बानुत बेटालके किए सच्छा है तो ट्रालवालके किए सामद ही बुग्त हो सकता है। — ट्रान्यवास्त्र एडक्टर्डिइन २२-५-५७।

नेटालका नया कानून इस सामान्य सिद्धान्तका मंग करनेवाला ही नहीं उत्तरी क्याबा है। इसरी समिक जगर दसे अंजुर करनेके पक्षमें पेस नित्ये गर्वे बाबेको मान्य करना है तो, बहु समानानिक कानून भी है। उसकी ध्यवस्त्रार्थं तो सवपर काल होतेबाबी है परन्तु सरकारने विमानतमार्गे क्तेमाम स्वीकार किया है कि उनका प्रयोग केवल अमृद्य वर्णीपर ही क्रिया जायेमा । वर्षमत कानुन बनानेका यह तरीका तुव वर्जेका नाराकारी है। वर्षयत कानुन हो बाम तौरपर गलत मा अनिष्ट हैं। परन्तु थव कोई वर्षमत कलून ऐसे क्वमें स्वीकार किया कला है जिहसे मालम नहीं बढ़ता कि वह किसी एक वर्गके लिए हैं, तब तो उसके अम्बरनी बीच बहुत ही प्रवत हो जाने हैं। इसके महाबा, फिर किसी भी संतरके किए यह कापरताकी बात है कि बहु यह बताकर कि कानुनका सकत वर्षेत्रत क्षावरमा नहीं है बास्तवमें वर्षेपत कामूनको पात करे मीर इस क्षत्र उसे मूले क्षम स्वीकार करलेके परिनामींसे भागे। नेहाल प्रवादी प्रतिबन्धक कलनका स्थय्य उद्देश्य स्वतन्त्र जारतीयाँकी भरमारको पौक्ता है। पात पहें तब भारतीयोंकी रोकता नहीं है। विरक्षिया मजहरों तो इस कानुनकै अमनसे मुक्त कोगोंकी उसी श्रेषीमें द्वासित किया कारोंगा जिलमें, में कहिये कि, बिटेनके स्वराज (प्रिम आब बेस्त) की। तित्तपट, तथ यह है कि, जैटातमें लाये कालवाओं कविकतर जवपर

र नर प्रकोन शंकारण सरप्रीन्धान्तु (चनिक्या हेका) सा है। देतिए वह ३९४ सारविक्यों।

मारतीयोंकी निम्बतम श्रेनीके स्रोग है को कलकते और बम्बईकी पंरणीते प्रशास्त्र सामे बाते हैं। स्परितगत तुसना की बाये तो सपने सर्वते नेदाल बानेवाले भारतीय इतरेकै कर्वपर कारकर कामे बालेवाले रस्ति मनवूरोंकी अपेका ज्याया औची कोटिके होंगे। परम्यु उनके नीची में नीची सातिके इन गिरमिविया वेशवातियोंको काने विका बादेवा क्योंकि वे तो बुकास है। फिर भी इस तरह आले दिये क्ये ये आवे बकान यदि वर्धे तो पांच वर्षके समयमें सपनी स्वतन्त्रताको मांग कर सकते 🗗 और स्वतन्त्र भारतीयोंके क्यमें नेवानमें वस सकते हैं। - स्टार, १०-५-९७।

भी भेम्बरक्रेनने इस राज्यमें बनाये वये अपेकाकृत बहुत कम सम्मापनम्ब कानुमके बारेमें को क्या अस्तियार किया है उसके बाद वे नेटालके कानुनकी न्याब और श्रीवित्यके किसी ख्रायालने वर्याल नहीं कर सकते। हमारा राज्य तो जनके 'प्रमानक्षेत्र'में नेशासकी अपेका बहुत रम है। ---स्टार, ७-५-९७।

विकेटा परनाना विकेसक सम्भवतः सबसे बाराव है। बसक द्वारा सिर्फ सही बरूरी नहीं है कि स्वापाएँ सोन बपना हिसाब-फिलाब अंग्रेजीमें एमें बस्कि वह परवामा-अधिकारीको परवाने देने या उन्हें नया करनेसे इनकार कर देनेका निर्माण अधिकार मी प्रवान करता है। उसके निर्ममके विकाफ उच्चतम स्यागास्त्रवेरे पास सपीक्ष करनेका भी अधिकार वार्यको नहीं है। इस उप्त बड़ बिटिस संविधानके एक बालना महत्त्वपूर्ण सिकान्तको तुम्ट घट्ट करसंगासा है। प्रार्थी विजेसकके प्रति अपनी आपत्तिमाँ विकानसमाके एक सरस्य मी टैबम क शब्दोंमें ही शबस मन्छी तरह म्यन्त कर सकते हैं

उन्हें यह कालेमें कोई क्षित्रकियाहर नहीं थी कि वह विशेवक वर्तमान व्यापारियोंका एकापिकार स्थापित कर देवा। जिन सदस्योंने विवेदकपर बहुत की है उन्होंने केवल स्थापारिमोंकी विदिश्ते बहुत की इयमोक्ताओं हो दिवसे नहीं। कल्न को एक अस्पन्त विनाधकारी रात्ना अस्तियार कर सकता है वह ग्यापारकी रोकवान करनेका रास्ता है। और यह तिज्ञान पहलेक मान्य किया वा क्का है कि अगर सावित

। बार्डी किए वेटिक कर कट

किया का सके कि को व्यक्तियोंके बोकका कोई निजी इकरारनामा व्यापार पर प्रक्रिक्ट भगारूर समाजके हितोंकी हानि पहुँचाता है तो इप्लेडके सामान्य कानुनके अनुसार यसे अवैध ठड्डराया था शक्ता है। सारी बुनियामें इत बातको व्यापारका तिकान्त नान तिमा गमा है कि प्रतिप्रेंप्रिता संती कोई बीज नहीं है। यह बात सिर्फ प्रतिइंडियोंके किए नहीं उपमोक्ताओंके किए जी है। जिनेवक उपमोक्ताबाँको शांन पहुँबाकर सिर्फ व्यापारियाँका काम बढानेका कान करैवा। बन्होंने कडा-में इस विनेयकपर एकि-पाइपोंका बमन करलेवाके विभेगककी बृध्विते विचार नहीं करता, बस्कि जिल वृद्धिसे यह समाके बानने पेत्र किया यमा है, उती वृद्धिसे निवार फरता हैं। वियेयक्रमें समावके सब अंग शामिल है, बाहे वे युरीपीय हों, बाहे एक्रियाई। और उसमें मवानक स्वक्पकी स्वक्त्याएँ हैं। उसमें क्हा यहा है कि परवाने वैनेवाला एक ही व्यक्ति होया और वो परवाले साम बारी है उन्हें वह स्पव्ति बाक्त के सकेगा। यह बेहालॉक क्तिय है। बहरों और स्मृतिविपक इकाकोंने इतका प्रयोग की होगा? उद्यक्षरमके नियु वर्षेत्रकों से सीजिए। नगर-नरियवुमें जनिकतर सबस्य देसे हो सकते हैं को समाबके हिताँकर विचार करनेके पहले अपने हिताँकर विकार करें और बड़ी कापार फरनेके परवाने देनेते इवकार कर हैं। प्रवानमंत्री कड सकते है कि इन श्रीवॉपर अनताके मताँका निवन्त्रक पहला है। परन्तु क्षम सारे समुदायके विकास एक व्यक्ति-विक्रेमका नामला हो, तम मनताके अवींका प्रमान किस तरह कामा आयेगा? स्वयं माननीय प्रवानमञ्जीको मी विशेषक्रकी न्याय्यता सिक्र करना बहुत कठिन

पुन्छ। वे नहुत उत्पुक्त नहुँ। च कि विवेधक पास हो है। चाये। उन्होंने कहा मस्तावकोंकी मांच है कि व्यक्तिवितिहायोंकी उनके वर्तमान कविन्यतिक निर्देशक निर्देशक निर्देशक निर्देशक विवाद के प्रतिविद्यालयों के विवाद के व्यक्ति के विवाद के व्यक्ति के विवाद के वित्य के विवाद के विवाद के विवाद के विवाद के विवाद के विवाद के विवा

स्वीकार करनेमें प्रवाकी स्वतन्त्रताके एक संसका हरण दिलाई दिये

l ev

विनान रहेपा क्योंकि बभी प्रजाको परवाना पानेता अधिकार मामूली तरीकेले प्राप्त है और अगर यह विभेगक स्वीकार होकर कानुनर्ने परिवर्त हो पया हो उस प्रमाको यह मधिकार न रह कायेया। फिर उन्हें वह मिकार तमी मिल तकेमा अब कि वरवाना-अधिकारी देना उचित समझे। यह निवेदक कानुनी कार्रवाइयोंने भी हस्तक्षेप करनेवासा है। स्वॉकि अपर इसपर भरानतींका मधिकार एहा तो इसका बहेस्य विकल हो नायेगा। नगर-नरियर अपने बहरूकि प्रति पत्तरवायी होंगी। परवाने देनेके बारेसें उनके निर्वर्षेके जिलाफ अवास्तरोंने सपील नहीं की का सकेगी। इस विवेयकपर यह सापत्ति की गई है कि यह कानुनकी जपना स्वामाविक नार्प प्रहुन करने न बेगा। उत्तर यह है कि अगर इस जापितको माना कार्य ती हम इत वियेवतको संबुर ही नयों करें ? परस्तु इत वियेवकके अभीत अकेते परवाता-अधिकारीको ही यह विवेदाविकार प्रान्त होया (कृती | तृती !)। श्रन्तीने इस बातपर और बेना उचित समझा कि इस विवेपकके अन्तर्गत क्यापारके परवानीपर अदाक्तीका अविकार नहीं होगा। इस अधिकारका प्रवीग परवाला-अधिकारी करेगा। अगर यह नजा मानती है कि इस विवेधकका दूसरा पायन होवा चाहिए तो तक्तीलॉपर विकार कनेटीमें होगा। उन्होंने नियेक्टको समाके सामने भेग किया और बहु बदाना बाहा कि घसका मुक्य उद्देश्य उन कोर्गोरर क्सर डाक्ना है, जिनका निवदारा प्रवासी-विवेधकके अनुसार किया बाता है। बहाजेंके अधिकारियोंको जगर मासून हो कि उन लोगोंको कतारना सम्भव न होया तो वे बनको नहीं लायेंथे। और वे लोन भी बड़ी व्यात्मार करने नहीं आयेंचे, क्यार उनको मालम हो कि उन्हें परवाने नहीं मिलेंगे। भी सिमन्तने विशेषकता निरीय किया। उन्होंने उसे मरपन्त गैर

भी विसम्बने विशेषका विरोध किया। ज्यूपेने उसे अरवन्त येर विटिश्च बौर सरवाचारी बनाया। यह विश्वकाद पड़ेगा कि केवल कुछ पाँक माल लेकर जमह-जबह मुसने

(बाट्य कार अरुपाया काम्मा। यह दिखबाद पड़ेगा कि केवल डूछ पींड माल केकर जमह-जवह मूमर्ग बाचे केरीबानोंकों मी भरूना हिमाब-किशाव अंधेजीमें रखना होगा। सब बात तो गड़ है कि वे कीर्य क्रियाव रखते ही नहीं। पीवित पताड़े जन्मतम प्रतियस्त्र ही केस्स्टेन्फो १०५ याबालयमें करियाद करनेपर यो जापत्ति की गई है उसका कारण सह

तील पहला है कि परवाना-विधिकारी सपने विवकाविकार प्रयोगको न्यायां हमके सामने जीवन सिद्ध न कर सक्या। यह प्रमन भी उठता है कि परवानोंको नवे करनेक बारेंगें क्या किया जायेगा। क्या परवाना-विधिकारी बारेस दे तो बैकड़ों और हवारा भीवका

साम रखनेबान स्वापाध्यों हो अपना कारबार कर कर बेनको कहा जानेवा? विचानसमाक एक मदस्य भी स्थिपको एक उगाय मुझा। उन्होंने प्रस्ताव किया नि जिन लेगों के पान परसान है उन्हें कपना सारबार बन्द करणके निग् एक वर्षका समय दिया जाने। उन्होंने सम्मा स्थान सिमाय कि की स्टट तकन स्थापाध्योंको सामा काम बन्द करणेड सिए बाध्य करनक पहले उक्ति मध्य दिया था। परस्तु दुर्गास्थस सह प्रस्ताव पिर गया। भेटास रक्तरशैनसर (५-४-५७) ने विश्यवको बारम सपने विचार हस

प्रकार प्रकट किमे हैं अकतोसकी बात है कि जिन तमाभ सरस्योंने प्रवासी-विवेदक द्वारा

सदसलका बात है कि तिन तथान सरवान प्रवासनिक्यक हार।
हिस्स वरण्यामीके नंग कि जानेका राह्यापुर्के विशेष दिया वा,
वानूनि वरवानानिक्येकर्स निह्न प्रमासे स्वतन्त्राको स्थाते सी बहुत
गम्मीर कचहैन्याको विना सांक-मींह वहासे पी किया। विवेदक्षके बहैपने
ह्म पूर्णतया सद्यत है। हम कारपोरेसकको मारी स्विवकार देनेके
वार्ते हुए सरवांकि प्रमासे भी बहुत स्वतुष्ट वहाँ देते। व्यासामक्यों
कार्तेत करनेवा वांचिक्य प्रमास की बहुत स्वतुष्ट वहाँ प्रमास और सारवारक
है। सवसूष्ट स्वर्ण एक बात है जिसके विवेदक्षके हारा विने तर्व
वार्यकार सारवारक हो सरवे हैं। एक देता कानून बना लेना विकाह
गास था, वो हती विचेदकरे करावर जावकार हितींका संस्तान कर सकता
और सोपीरिक माधान्यामें करीन वरनेवा वांचिक्य कर सकता
भीर सोपीरिक माधान्यामें करीन वरनेवा वांचिक्य कर सकता
भारतानिकार-स्वित वानूनका जाया लेना वाच्या होता।
सम्मानिक ककरता। कोई वसाव इस विध्यक्त प्रोपासोंको सीमा
वरणा। व्यानकारीका सह तर्क दनता और दनके योगाओंको सीमा

सम्पूर्ण गाँवी बाहमब

7 . 5

वेतैयाका महीं है कि "सपर विवेकाविकार सर्वोच्य त्यायाक्तम मा किसी कर्य स्थासलस्यको हो तो वह विवेकाविकार रहेगा ही नहीं। इन वह नहीं कर सकते कि विवेकाविकार वें तो परवाना-अविकारीको और बसका प्रयोग करने वें किसी बीरको।" वर्तमान काननके बनार्वत भी वरवाना-समिकारीको विवेकाविकार है परना उससे सर्वोच्च आधासयके अस्तिन विकारका अपहरल नहीं होता। इतके बसावा यह तर्क तो विवेयककी एक व्यवस्थाते हो क्रिया-भिम्न हो बाता है। वह व्यवस्था औपनिवेत्तिक मन्त्रीके सामने बपील करमेका हक बेनेवाली है। इस तरह यह निवेमक परवाना-अभिकारीको विवेकाविकार देकर इसरेको बसका प्रमीन करने तो देता ही है।

प्रावियांने उपर्युक्त विवेयकाँकी राष्ट्रसीकवार मीमासा करनेका प्रयत्न नहीं किया है। कारण प्राणियोंके लाग मत्तवं निषेपकाँके विद्याला ब्रिटिस संविधानकी भावनाबीके -- बीर १८५८ की बोपवाकी भावनाबोंके भी -- इतने निहायत विरोबी है कि उपनीकोंकी मीमासा करना व्यर्व माक्स होता है।

फिर भी यह दो स्पष्ट है कि जयर इन विशेषकॉमा नियम नहीं किया पया तो नेटाल मास्तीयोको स्तीवित करनेमें ट्रान्स्वारखे कही नामें यह वायेषा । प्रवासी कानुनवे धनुसार, बंदेवी किन्तरा-पहना वानरवाके नोडे-से भारतीयोंको कोडकर धंप नेटाकमें प्रवेध नहीं कर सकते हालांकि ने निना क्कानटके टाम्मवासमें या सकते हैं। फेरीवासोंको नेटाकमें केरी समाकर माल वेचनेका परवाना नदी जिल एकता हालाँकि ट्रान्सवालमें ने अधिकारपूर्वक वा सकते हैं। ऐती हानवीमें प्राविमोंको विस्तास है, बगर भौर कुछ नहीं किया बाता तो नेटालको भारतीय मबबुर भेजना तो बन्द कर ही दिना कारोगा। बाँर इस प्रकार एक महाविसगति — कि नेटाक भारतीर्वोकी उपस्वितिये काम तो सब बठा सेवा है किन्तु बन्हें बेनेको कुछ भी वैशार

नहीं है --- दूर कर दी वायेंगी। विरक्तारीकी धनपतासे पैर-धिरिविटिया भारतीमाँका संस्थान करनेवाने विवेदकोका मंत्रा क्यतिवेशको भारतीय-विद्येषी चौद्य-पुकारका जनाव वेना महीं है। उसका बाविमाँग सरकार और कुछ मारतीयोंके बीच हए जमक नम

र पार्टिक किए प्रीकृत वह कटड-८० ।

भारतीयोंको गिर्रामिटिया भयोहे मानकर निरण्यार कर किया जाता है। इस असुविवासे बचनके सिम् कुछ भारतीयोंने सरकारसे निवदन किया कि कुछ ऐना किया जाने जिसमें यह जनुविधा कमस कम हो। सरकारने इसा करन एक भाषमा कर बी। तसके हारा प्रवासी संरलकको लिपकार दिया समा वि वह स्वतन्त्र भारतीर्थोको इस भारायके प्रमानपत्र दे दे कि प्रमाणपत्र रत्नतवाका स्पवित विचित्रिया नहीं है। यह एक सस्त्रायी कार्रवाई थी। वर्षमान विजेयकना मंधा उसकी एवज भरना है। प्राची इस विशेषकको पेश करनेमें गरकारक जच्छे इराबोंको मंबूर करते हैं। परन्तु उपवास ३ के बास पुष्टिमको ऐसे किसी भी माध्यीयको गिरफ्तार शरनेका अधिकार वे विया गया है, जिसके पास परवाना न हो। अगर पुलिस पैरकानुनी निरम्तारी भी कर से दो उसे दग्ड न दिया जायेश । विश्वेयकका संधा तिस्तान्दद्व भनाई करलेका है। परन्तु, प्रावियांकी मध है कि यह उपवादा चनकी मारी मलाईका हर सदी है और उसे अन्याचारक एक मंत्रका का वे बेटी है। परवान निकासना जनिवाम नहीं है और यह माना गमा है कि केवल भरीच वर्वके भारतीय परवानेकी बाराका नाम उठावेंगे। पहले भी बहुच-या संबद केमन हमीनिए नहा हुवा या कि जफनर पिरक्नारियों करनेमें जन्मन्त्रों ज्ञाहा उत्पाहने नाम भेते से । बद ती तीसरी बागस मनवाडे तरीके पर किमी भी मारतीयको विना वर्ण्ड भयके गिरफ्तार कर मेनेकी उन्हें सुद ही धिल नई है। इसके बलाबा प्रार्थी आपका म्यान विशेयक-विरोधी एस क्लीमकी और भी बाकपित करते हैं जा विद्यान समारी दिने गर्ने पूर्वीस्त प्राथनारभर्ने पेछ की गई है (परिछाट छ)। प्राप्तियांकी भाषा है कि इन सब बालोगर निचार करके विषयक्षण निर्पेक कर दिया जायया । वृक्तिमहो पिरमिदिया कानुकरै बन्तर्वत विरक्तारी वरनमें मानपानी बरतनेक निर्देश दे दनेये कटिनाई इन ही जाती है। अन्तर्ने प्रापी विनती करत है कि दिसी भी कानुनका उन्हरे कार्यान्त्रन

र्गानमें या वर्षक अन्तर नियेव कर दनका को अधिकार पंविधान-वानुनक अन् भाग भमामी-नरवारके पास सुरक्षित है जगाउँ बनावर जार्युका विवयकावा

१ - निर्धानिकारे वस प्रकाशका चीनी प्राथास कराया करा था। विकेश कर प्राथ चीदिपको बरी छोत्र दिया देवा है काकि अलगात हा 183- ८ क बस्त निकामें देश से बुध है।

सम्पूर्ण गांची बाह्मय

निषेष कर दिया चाये। जपना उपर्युक्त विभेगकोंका या उनके किसी लेगका निषेण करनेत्रे कनकार करनेके पहले प्रसावी-सरकार उत्तर बताये हुए वंगरी आंच करनेका सकेत्रे हैं। सारको बाहुर पहनेवाले मारकीयोंके नागरिक वर्षकी बारेमें एक निश्चित योगमा की जाये। बीर अचर उपर्युक्त कानुनीका निषेष करना सम्माव न सम्मावाये तो निर्मानिया भारकीयोंकी नेपाल मेकना बन्द कर दिया चासे या ऐसी दूसरी राहुत ही चासे विसे सम्मान

सरकार प्रकित समझे। और त्याय तथा समझे इस कार्यके क्षिए प्रार्थी कर्तव्य समझकर, स्वा दुवा करेंचे साहि-कारि।

(ह०) अध्युष्ट करीम हाजी आदम तथा सम्म

परिक्रिक्ट क

न र, १८९७ जीवा

100

अधिनियम

"संस्थापक रोग सुराक (क्यारंडीत)—सम्बन्धी कानुनोंसे सझोकनार्व " नेटक्कडी विवानकरिक और विवानसम्बन्ध कामर्थ तथा सम्बन्धिन स्वाः स्वीकारणी

नंदालका त्रवात्पारक बार त्रवात्पामक क्रामण चर्चा सम्बातन महा माहसायन। सन्नाती है

- र बच बची १८८१ के चौंने बारमुक्ते बारुसार विश्वी स्थानको छोडाम्ब रेगारे साध्यान सोरिय विश्वा गया हो। स्थारियर प्यावर यस और नीच्या स्थाने सारिया वे साध्या है कि बैठ स्थानके सामेसको विश्वी स्थानके किसी व्यक्तिको जानके म विश्वा सामें।
- कराने म रिवा वाने । ९ देशा कोर्रे जो आदेश कर व्याप्तीयर वी कार्यु दोगा जिल्लों रोनाझारा कोरिश स्वाप्तीसे बान इस वाची स्थार हों — एने ही में किसी दूसरे स्थानसे
 - नोरीत रवालोंसे मान हर बाबी स्वाह हो को ही में किसी मूसरे रवालों को न पो हो और स्थान नोरीत स्वालों न नवा हो ।
 - ६ कमर स्वामे दूध रचकरण्य कोर्ने की मार्रेश सम्बद्ध मानती रहेगा करत्यः कि यह इसरे मार्रेश द्वरण बारून में के किया करते ।
 - प्रश्निक क्षेत्र का कार्यके किया नेपालमें उन्तरीय करों नगर गरका हो तो, तन्त्र क्षी नेपाली वाक्स भेत्र दिया मानेपा क्रिक्ने वह बान्य हो।

और बहाजार अभिन्नारी परि अवस्थित। कालमें कैने और अहाव-मानिवासि बावपर अभिनेताने नावर के काले किय वाल्य होगा ।

भिक्षा-किसी बहाकी एवं कातुमके विराद कोई नामित नेताकों उठारेश काहते मिक्सरी मीट काहते मानिकाँको देशे मानेक व्यक्तियों देशे कमाने-कमा पूर्व परित्र कुमेर्सा किसा काल्या । देशे किसी मी सुम्मिको सर्वोच्च त्यामको मानेक प्राप्त करके कामके वगुरू किसा वा स्टेशा । क्लाव्य कुमीना बारा मा कर दिया काहे कीट क्लाव्य काल्या किसी परित करारे हुए प्राप्त व्यक्तिया आदिनेहमें वाहर के प्रोप्ती व्यक्तिया व कर दे एक्टक व्यावको स्ताय होनेकी महामंदि क्षेत्रों स्वाद्य किसा वा स्टेशा ।

र सम् कानुको और १८५८के तीसरे तथा १८८२ के वीजे कानुनको मिकाइर एक कानुक समझा कालेगा।

परिशिष्ट 🔻

नलार हेवी इचिनान स्थला

E \$690

मर्चितियम

"प्रवासियोंपर अनुक प्रतिवत्त्व कवानेके किए"

पुरि संचामिक्स का अधिकत स्थाना साक्रमीय है

ूर्व नराम्बर्क्स कुछ गावकन कार्या नामाना ह सामित्र नेदल्यों विकासप्रीक्स बॉर विवासम्बर्धे बरान्या सवा सम्मतिसे सहा मंत्रियसम्बर्धे सामान्यों निकामित्रीका बाजन बनाती हैं

्राम कविनिकालो । १८९७ का प्रवादी प्रविक्षणक कानून (इसिस्ट्राम रिविद्रकान रेपर, १८९७) कमा कारणा । "

१ वर कानून तिन्तिविद्यास सागू सहीं होना

(६) जिस स्वतितके तथा तत स्वाप्ति तीय ती वर्षे इस्ती इस्ती वर्षे वर्षाते वर्षे प्रमाने स्वतितिकत्त्वीय नेत्रास्त्री वर्षेत्र-कारण वा तैदास-कारण हारा तम व्यन्ताती पृचिक किंग तैदासने बन्धत या बाहर शितुस्ता विभी बाल मध्यादीया रण्यांच्यी प्रमानात्व हो ।

सम्पर्व व्यंत्री नावसन (स) पेसक-छरकारने कानून धारा अच्छा किसी स्वीकत बोकना हाय किस वनके क्रोपोंके नेटाकर्म मान्य सानेकी धनवरना की को उसका कोई

(ग) रुपनिषेश-सम्बन्धे इस्ताश्चरित मातास्त्र हार। जिस व्यक्तिको इस बानुनरे जनकरी सकत कर विकासना को । (ब) साराज**िया पर और एक ले**न्हरूँ ।

(क) किसी भी सरकारके क्यांकि क्यांको अवसार कार शासक ।

नीम्बन्दि।

10

(थ) शांत्राज्य-सरकार वा किसी मन्य सरकार हारा वा बसकी सत्ताके मारकार

वेदावर्गे अन्तरित सीरपे निवन्त किया नवा कोई भी व्यक्ति ।

 विकासीक्रीकर अपन्यामी किए सामित्र कावना की लो है असके विकास भी व्यक्तिका एक वा समाही मानसे केताकों भागार बास्ता वर्तित है । वेजे बीक्तेकी व्यापे वर्जित मदासी "व्यशा स्वा है। ये हैं

(६) ऐसा कीई न्वनिय जो इस कानुमने जनसार निस्तान जनिकारीके सज्ञ करनेकर क्या कानानकी सूची सामै दिने इस काराने क्यानिकेश-शाविकांक नाम किसी बरोबीन भाषा श्रमा निर्फिन नर्मा व किन्न सके और बस्टाकर न कर सके। (म) ऐसः कोई भ्वतिय को कंपान को और जिसके पालनका भार जनसा

क्षमण सरकारक पानेकी धीमापना की ।

(ध) कोई भी अदस्य वा सम्बद्ध ध्वनित ।

(a) कोई भी व्यक्ति को फिसी पुणित का सन्तर्गत संस्थानक रोगले अस्त हा। (c) कोई जी व्यक्ति किसे विक्रिके को नर्वोंके जन्दर करवा का मैतिक

अनामाने निमी मन्त्र नाराव था बुराक्शनते बारप सना 🚅 हो। और किसे भाषी देशर अपराय-मनता म कर दिया गनता को *और जिलास* जनराथ केरल राजनीतिक मंत्री ।

(प) कार्र भी नेक्स और नेमा कार्र भी व्यक्ति को किसीकी नेस्वविधित बोधक-निर्मात करणा हो ।

🗴 यो बर्जिन प्रपानी इस कानुमधी गाएमधी मन्द्रेयना गरफे नेशामी आयेगा का मेरालको बीमार्ने पाता बारेचा वसे रस पानगढ मंच परनेवाला माना काना और वह भी-कुछ भी दुम्पा रण्ड दिया मन्दे असके भणावा उपनिवेदास विश्वसासका क्षत्र होना । उस स्वारी नेराकी माना की जा मारेजी जा इ जामने अविकास होती ।

रान आह है कि सम्प्रातीको देखते विकास कोनेते किया या आपना सम्प्राती था नाम पींडियों तो समानतें देखर पढ़ मासके अन्यर कारिनेश क्षेत्रकर करने वारीया जासनाराज स तो आह देखती साम प्रीताल कर तो नामगी।

 देते फिमी भी व्यक्तिको को उस कानुस्ती शात इ के अमेंके मन्तर्गर्गत गर्मिक प्रमासी मानूम कोता हो और इस पीमरी नाराके जम्मक (ग). (ग). (व).
 (व) के सन्दर म माना हा नीचे निजी नर्गीयर तैराक्रमें मीच करने दिशा वालेगा

 (६) ब्याब्से अपनेक पढ़ वह व्य कान्य क्रम्य प्रमुख अनुसार स्थिका अविकासीके गाम १ पीडची एकम अन्य करे।

(क) समर पंचा स्थिति देवाची प्रदेश कराने। यह इस्तेने अनार ज्यानियान्तिक वा किंगा स्थिते देवाची प्रदेश कराने प्रतासक मालला माला कर के कि वह सम स्थान कराने कराने वालिक बाते हैं तो करानी ही प्रकार पर्चान कराने कराने

(4) नाम पना भर अ जाता। (4) नाम पना भनित यह मरताको सन्दर स्त तदाबा प्रशासक पारत न सन्दर्भ तो नाम सिंह स्तिको बना बना की बा सकती है कीर नवे (विकास पनानी सकता का सकता है।

उर्ज कह है कि का पारणे अनुपान नेपानों अनेश करनेवाले व्यक्तिके सम्बन्धि उन व्यक्तिके निकासियों वा नाविकांत्र कोई वैनासी व होगी जिससे वह व्यक्ति वार्तिकों विभी बन्दरासर्वे अन्य हा।

् ग्रेड फिमी स्वरिक्त के "काँक्य प्रश्नमा" न जान्य व्यक्तिय मी एस इस्तुक्ते सनुस्रत स्वरूपन सरिक्तरोके सम्बाग रिष्य दे हि वह व्यक्ते देशको दिला वा मित्र क्टाय स्वरूपनी पान इने कन्सका (त), (१) (१) और (१) में से हिसीके सनके सन्याय समितिया नहीं है।

 जी स्थितः विकास प्रदानी जाति है अनुसी जाती औह नावाधिन वच्या स्थ कामानी रोक्नो अन्त नहीं।

८ किस-दिनी भी कराको कोई "बॉक्ट करावी करान वालेप कराव मिक्सरी भूत उसके सामित करण-प्रकाश और निकार कम-केवार १ पीड़ा सुर्वामा ग्रीमनेके क्रियान होता । वह सुमाना उसके रेक्ट "बॉक्ट प्राधिनों "के यह ग्रेंच प्राधिनों के स्मार्ट समुद्देव रेकि १ पीड़के हिस्सको ॥ प्रेर ठाइ प्रमुख मा नरेग्न । और एन एत्या सुर्वाम एतींचन न्याय-क्रम भागित प्राप्त प्राप्त मा नरेग्न । अर्थ हा समुद्र सुर्वाम प्रमुख न प्राप्त मा क्रम मा विभाग प्राप्त मा १८९ छन्तूच नॉभी काङ्मव

अधिकारी इस ताराधे ज्यारे हुए प्रत्येक "वर्षिता अवसी"को जानियेकी बारा के बानेकी देवी ज्यारता न कर है, मिससे पर कामूनते मासदात विद्याप अधिकारीको रुपोर्च हो तत्त्वकों किर व्यासको बाहर मानेकी हमानत देनेसे हमझर किना व्य सन्दर्भ

- ९ फिसी बर्किस महासीकी कोई स्थानत बनना करनेते वरहानेस इस म होन्य । बते परंटे का या सिक्क मुख्यक वा और सिसी महारकी वर्षान मान्य करने या नवारिकारता सनोब करने, या किसी बारी के बर्नित असारी वरता वरता की साहित्या के तीरूर सामा इस करानेस अनिकास हो होना । यह सानुस्ति विश्व कराने कीई परावा या मनाविकार प्राप्त कर किया हो तो वह निरायन हो बालिय ।
- र स्टाउटले अपिकार प्रथम कोई जी अपिकारी किसी भी अपालके कारत समिक वा क्येंग्रेस तान ने पहले पहले की सी अपालक के अपाल का वा अपने कारते किसी नम्मापारी कोन आहात करर कर सहस्ता है। प्रतिक परी किसी भी महासीडा करने तानामके तान अस्तामस्य देश एउटती है। केरी दालवारी अपर यह प्रयादी क्ष्मिक की यो की एक्सा पन व रिप्ता जानेना निकारी अपालकी अपरोक्त नार यह करनी रिपारीन महातार यह याना तह जाना निर्माद कर प्रथम ११ जो अपालक प्रथम प्रत्याची कार्यकारी की सीची विधार प्रवासीकी राजाना
 - (६ वो व्यक्तित सर कान्वकी वास इ.के. (व) बनके वर्कित नवासीको केलने अनेत करनेमें स्वारत्य नगर करेगा को सर कान्वका वाग करनेनाम्य माना वानेता ।

भरत करेवा को इस बजनका येन बरनेवारा करत करेगा ।

- प्रमेत करनेने स्टारतन नरह करेगा को इस कानूनका बंग करनेनाका माना कानेता । को कमी बेहकी सम्बादी का समेता को १२ मामसे जिसकी न होती । १३ वो व्यक्ति कानिकेट समितके हस्ताप्रसन्त किस्तित का महिता जिसकी
- किया दिशी सहारह का पारणको नेदान कामी स्वारतन वहात्क होना असे सह प्रभागका गण कामेताका व्यापा मानेगा। को भी भी दूसरा तथा दिशा माने करने बकता देशे सहसद या राजको वैदावनी वहते हुए कहते पानम-पोलका भाग कामा होगा। १४ तह कामूनके पारणका पर कामके किया शिक्षका कोई भी पुलिस कामान
- १४ सा भागुमके याणहण परा कामके किया नियुक्त कोई भी प्रक्रिया कामक किसी भी वर्षिया प्रकारीको समुद्री या एक्स मानको मेराकर्वे प्रकेश करनेथे कारा ५ को व्यक्तामानेके वर्षांक रोक श्रीवरा ।
- न्यस्थानकि वर्गन रोड सम्बा । १५ नाजको सम अनुस्थी न्यस्थानको पूर बरनेडे किंग सम्बन्धान सर नामसभी विस्तित करने गीर, ना जनेत सबस हो क्या निकान देनेस महिलार

रे । वह वेसे बच्छारेके कराव्योधी व्यास्था करेगा । येसे बच्छार वर्गने विश्वास्थे ध्याम अधिक बारा समय-समय वर दिने गरे अधियाँका शरून करिये । १६ सपरिकर क्यारको इस कालकरी बारामोका क्यारा मच्छी राग्र अवस

क्षात्रेके किए समय-समय कर निराम-विकित्स बलावे करने संशोधन करने और उन्हें तः स्त्रीका अविकार बीना ।

१७. इस क्षानुनको वा इसके माराहत कराने वने किसी निका-विकित्सको भेन हरनेक, बढ़ी बाद तौरसे क्याचा रण्ड निरियंत न विद्या गन्य हो ५ औड इत्तोंने या अतंते पद्म होने तक्के किए सादी के क्यी केरकी सवा दी नारेगी। बर देशको सद्य जुनोनेके नवाबा थी ही व्य सफती है, परन्त वर किसी सामनेने

तीन वहीं जेले क्यांच्यी य होगी । १८ हम करून या हरने गाउदत रुपने को निका-विनियमोग्री एवं अवहेंचना और क्यारा-से-स्थारा सी पींड तक सुर्याने वा अन्य प्रवारित इक्योर गामके ग्रीकरियोंके क्लिके के विकासित

सुची क

नेदान वर्षानेवा

अव्यक्ति क्षिय बाता है कि क्षिप्रका निसामस्यान वर्गाया न्याचार

नेदालमें प्रशासिक गीरफर ल्योक्टर किया बानेक किए सदी और बोल्य क्यांसा है। तारीय PETE

(इलाभ्र)

मुची स

सेवार्जे कालिगाना कि

मोरिक -- में १८९७% सन्त से के सरको भी किने मनेष्य १६ केट काला है।

नेत प्रयागव

है। यह २६ मान्ने मेरा विस्तरपटन रहा है। मेरा अध्याह या प्रका

केंग्र प्रक वे नद में दुशाया।

मास्य भारि

१८४ छन्पूर्वनांशी काङ्यद

MPR 12 1250

मान ५ मर्स, १८९७को एउच-नरन (ग्लबमेंट द्वास्त), नेदावमें दिया। एरसम्ब्र यन्त्रर म्योरको बाहेससे — टामस के मर्ग स्वित्रेतनसमित

परिशिष्ट ग

यहनर **अवि**निधास

शक्य हेनी-इचित्रस

⁴ बोक और कुरकर विकेताओंको परवाने देने सम्बन्धी कानूनका संग्रीवन करनेके जिल

पुँचि पोक जीर पुरस्कर विकेताओंक सरामोक्य का १८५६के अधिकिया १८के अस्त्रपार न दिने गर्ने हो निकास और निकास करना आवस्त्रक है अस्त्रिक नेपालकी विचारतरिक्य और विकासनातिक सरामा तथा साम्प्रीती स्वा

महिमानको सम्रामी निम्मनिर्दितः बाजून बन्दती है । सन् १८७२ के बाजून वं १९६ी परा ७१के बच्चन (६) में जन्मिका

वारित एक्जोर्ड वोक किराजिक क्वांने ग्रामित होते । इन अधिनस्तरे निम्न अनुस्तर किराज और अनुस्कर क्वांने — वे

एका इर क्यांचे नुक्ता विकासी और नुक्ता परानीक राणू एकी कारणे।
हात्री केशाके और केशानाके करावारे कारणा हाथे। कारणा १८६६ है व वै
अधिनियार बनावार दिवे पने करावे प्राणित वहाँ होने।
हारणा कारणा दा नाम तिकास हात्रा पराना कारणा कारणा कारणा कारणा है।
बाह्या कारणा वा नाम तिकास होता हात्रा कारणा कारणा कारणा कारणा है।
बाह्या कि कि कारणा कारणा कारणा कारणा कारणा कारणा कारणा है।
बाह्या कि कि कारणा कारणा कारणा कारणा है।
बाह्या कि कि कारणा कारणा कारणा कारणा है।

कोरताराह । बहुक्त करवार आध्याद हमा। यह आदयार थए व्य कराम स्था या हुट्टा ट्विटामीट किंद बात्रकार वर्षीक कराने देशा। वे ज्याने १८६६ के अर्थित्यक इट के अल्लांत यह ला। यो भी वर्षा १८८४ वे बातूल में इट या ज्या तहारे किया राल सर्वत्यक्त वा मोनिवर्षक सल्यात कार्यों देशे कि विद्वात दिश्या स्थाप

क्षेत्र प्रश्वितिकार नानौनै काहान अधिकारी शाना आहेता ।

५ न्याला अधिवारीकी १८६६के मिलिक्य १८के मानदार दिने नातेगाले अस्त्रात्मेश छात्रस सन्त्र चीद वा इस्त्रण ज्यासके समाने देने वा त देनेका विकेश चित्रस होता । सहस्त्र-महिक्सी क्षण सराला दिने वा त देनेके देनतेश्वर कोरे मान्या पुर्वत्मान कर स्त्रेणी । त जिली नात्रणको को ज्याने वा नाले देर कार कार्याश अधिकत होता । दिन्तु वाले जनती चारणको को ज्यान वा नाले देर कार कार्याश अधिकत होता । दिन्तु वाले जनती चारणे दिखा हुआ मान्यार छोता ।

ह आहा त्याचा पा पा करहीर कि प्राप्त क्या हो तो करिया चा स्वा ह आहा त्याचा पा पा करहीर कि प्राप्त क्या हो तो करिया चा स्वा सामध्ये दिश राज्येगते दिशों तो व्यक्तियों कर्य-दिश्य मा कर्य निष्य है सामग्रे, और जार बहु हम या क्यांनि हुम्ब तियों राज्येश कि क्या क्या हो तो स्व दिक्ती १८६६ रहा हा स्वित्याचे जान्य तिकृत क्यांनि स्वाप (सामग्रेनिया साह है मानने स्वीत चहना सरिया होगा। क्यांनिया स्वाप क्यांनिय स्वाप क्यांनिय स्व

अ नमें निर्मी वर्गनियों कराना नहीं दिया स्वेता की नाम परिपर नाम निवास या सराना निवास या सराना निवास का निवास या सराना निवास के निवास निवास के निवास निवास विवास विवा

4 मिन्ने बांचले करण बातेश कराता वरों एक लोक को बांकित बांकरों निर करण हो वा किसी बांचीने प्रित्न करणा कहा, का बाँ क्यार एसी की बांच एसी— प्राणिक यह बांच हा, कानु बाँ। मान्य सार्विक तको वा साम्याव करणा, (रित्राक्ष) नारी। बींच बंबिंगे सार्विक पर क्यार सारक प्रयान हो।

् मो अभित सिंग प्रमाने गर स पुराम स्वाप्त कोना या शास्त्रमा द्वारा बट्टारी स्वत्य स्वरूप में से स्व बहुदार की करियाना का बच्चा को हा बहुदार कि पान स्वरूप की स्वरूप की स्वरूप कार्य की व्यक्ति कार्य की कार्य स्वरूप की सामग्री कार स्वरूप

सन विद्यों को का कार्जि हुआ हो तो जुनीनेही क्यूनी कहा की हा कर किया क्या निष्का औरकारी की शा । " किया की का वा कार्यी कारत किया की क्यान का समझे पूर्वीका कर्यों कारता करता किया कर क्या जानेता हुए का वा कार्यी ह क्याने क्या

पर्योप जनुसार बहुत हिला हरण जाता जुल्लेज का को का सम्मीत कोचले करण हिला कोच्या । है। जानिया सामना कामने कहा कार्येक सामित और सामानामानिकारी

रे। मारिया नारणः वास्त्रे बाह्य वाहेश नाहि और वास्त्रान्धीयहाहि जिल्हे जिल्हा जिल्हा व्याप्त कार्यस्थान वाहित्या वाहेश जिल्हा वाहेश भारता होन १८६ सम्पूर्णयोजी शाहमण भागता २९ स्ट. १८९७को सन्त सन्तर्मे दिस स्था।

सरमेश प्यर्थर महोत्तको माध्यक्षे —

टामत के मरे व्यक्तिकेश-समिक

परिशिष्ट घ

वास्पर हेडी-हविन्छर, नार्नर

में २८ १८९७

समितियम

"लगोड़े पिरनिक्रिया भारतीयोंके बोक्डे पैर-विरमिक्रिया भारतीयोंको पिरक्तारीले संरक्षण वेलेके किए।"

ामरकारात तरसम् वयक सम्प्र।" वैद्यक विभावतरिष्ट और विभानतम्भके प्राप्तश्च तथा सम्मतिसे यहा स्वीमामसी सम्बन्धी विभावनिकृतिक व्यमुण कराती हैं

समाही दिन्यविक्षित कर्म्य करावी हैं

ह को यो बारारित १८९६के कर्म्य समाद १५ वा कराव संघोषन करनेता है
दिन्दी कर्म्यक करामा दिन्दी से स्थापन स्थापन कर्मिक कराया वर्षित कराया वर्षित है
दिन्दी कर्म्यक करामा दिन्दीयी स्थापन से स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्था

प्रसाद (२००) त्रात के प्रकार कामूनि एक स्टान्टिंग को कार्यन होना । बा महारा स्थापन कार्यन किया महान्यन एक स्थापन होने को कार्यन होना । बा महारा स्थापनी किया महान्यन स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्था

१ रह कालुक्त मानवाय वह पराना काला और रिका केम पराना राजनाकेची दिलाया अरुक मानव दोना। क्ये १८५१के कालुव में १५ की पास ११ के अलुवार मिरवार मा किस करेवेंच इ. रोस पराना जिस पहने दिख एक हो गर्छ गए बैंग मार्ग स्ट्रेस । मेर

अन्तर मारानि नवाची संस्कृत या कोर्ने समित्रेट, या विरुक्त काळ व वीन्त्र, या द्वारिस शिवादी रस कानुनके सावादय अंब्रुट करणत्य क स्प्रोत्ताके विश्वी कारानिकां रोके चा रिराम्सार बरे, तो नद भारतीन सिक्षे वस निजास गैरकारूनी जिस्तारिके सोने बर्दे साथ करनेका इच्छार न होया कि नह सिस्सिटिया भारतीन नहीं है। च तो असीना नामा हाता परिचन चेपर राशामा मात्र बरेगा वा नामो स्थानिया कर्माक करनेस होने नेया नद "१८५५ के यहि गरामा नामितना "के नामोग

नूची

१८९७ के कानून में १८ के अनुतार परवाना

नकाक परमाना मनिन्देशका विवाद गांव वह व्यवस्था राजनेताके नारातीनका माम

ती शा दुरा सी शा दुरा मून निवास मूक्त निवास (देश कीर नाव)

বিশ্বাক্ত কাম বিশ্বাক্ত কাম বংশাক্ত কাম বাহাক্ত কাম

বারি করি বার বার

क्यांची सन्द्र कारेगा ।

र्नेचार्य सेंचार्य राग रेग

रण रेव इभिनाके निराम इभिनाके विद्यान

सन्द निराहित है तो फिनके स्था पाद निराहित है तो फिनके तान हैनिस्ता पा

देशा विशिष्ट मानम चारीम सारीम मात्र सर्व १८६

माध्यीय प्रवासी संरक्षक

भाव ता १९ वर्त्, १८९७ की सम्बद्धमर्थे न्यि । अपनेष्ठ वामर क्षीराधे आहेरपे —

टामस के वरे

परिभिष्ट 🗷

नेरालको निश्वनसम्बद्धी दिशा क्या २९-१-१८९७ का मार्थनस्य । शहके क्रिय केकिए पत्र ३२३-१८ ।

क्यों द्वर्ष अधियों मतिकी कोशो-लक्ष्म (पस पत १४३ –३५) से ।

५४ भारत व इन्सेंबके लोकसेवकींको

५१-य, चीस्व स्त्रीय वदम (केटाल) जन्मी १ १८५०

महोदय

नेटाक संसाक पता नाविवेकारों जो भारतीय-विरोधी विवेदक स्वीकार किये पता उनके बारों मारतीयोंने की विकादकोंने नाम एक मार्गनावर्ष येजा । त्याची एक नक्क जायके पास सेवी पर्दे हैं। मैं उनकी जोर जायका प्याप्त जावित्व करता है। विवेदकोंनर ववर्षकी अनुमति निक पर्दे हैं और सब ने कानून जनकर जमकर्मे था नने हैं। एकाडी-सरकारको जीपनिवेधिक विधान मंत्रती द्वारा स्वीकृत कियी भी कानूनका यो वर्षके जन्मर निवेद कर विवेद मार्ग निवेद कर विवेद मार्ग हो हाई स्वाप्त हो हाई स्वाप्त करता हो हो स्वाप्त सेवित हो हाई स्वाप्त करता हो हो स्वाप्त हो हाई स्वाप्त हो स्वाप्त सेवित हो हो स्वाप्त हो हो हो स्वाप्त हो हो हो स्वाप्त हो हो स्वाप्त हो हो हो हो स्वाप्त हो हो हो स्वाप्त हो हो हो स्वाप्त हो हो हो स्वाप्त हो है। स्वाप्त हो हो स्वाप्त हो हो हो स्वाप्त हो है हो स्वाप्त हो हो हो स्वाप्त हो हो हो हो स्वाप्त हो हो है से स्वाप्त हो हो हो स्वाप्त हो है है से स्वाप्त हो है है से स्वाप्त हो हो स्वाप्त हो है से स्वाप्

सरे नम तालों विश्वन्त्रीको पढ़ लेगा ही जनके विश्वा तिर्वेच करावेड विश्व मार्ची है। उत्पर टीका-टिप्पणी करान मनावस्यक मानून होता है। नेटाक्यें माराधीमापर निर्मोण्यानीका को हेर कारा का रहा है, करके विश्वास्त अपर कररहरून मोकस्यत न ही को हमारे दिन को-पित्री ही समित्री। माराधीमीको सोक-समाक्षर उत्पीतिक करानी नेटाक बोगी मचराकांकी मारावे रहा है। बोन् होता ही गाराधीमीके दिना काणी नुबर स्वयं नम कर सम्प्रा है। बोन स्तास ही गाराधीमीके दिना काणी नुबर स्वयं नम कर सम्प्रा है। बोन स्तास ही गाराधीमीके दिना काणी नुबर स्वयं नम कर सम्प्रा है। बोन

र विकास के बार र

ह्यान्यक्ता और मारेन की स्टब्के बोनर सम्बद्धन । इस सम्बद्धनके विद्यानके बामलोके किए वेटिए वह ३१-३७ और क ⊷०३ ।

I hay to obser your attention to a copy send to wow of the Insteam whitens to his chamblertion referring the link I would not of the event several of the batter 'en lus unt the bill name received the governors useent + and the town often tions the row in its power to desalion

ency bett fetalete on life was force constitue too I at after ther passes + et wor the The yel of t' I have that the helderners My for the constitution or when wenter The Bell is my hundle for re have

my to be reason order the co of much is in und theren see is sufufluous links there is if - 1 & f where oftener equinet the disabilities that we beeng

freeled uponote indeminant our they are secondered At he heads both the behalila + it tradied fermen of fuller war and in takal estat com serat la contdonat "Inchoras the news have them under

बारत व इंग्डिके सीरतेयकोंको पत्र

If it house of motor bound a little periods in it to you say the representation of the fram commence of Palel with reform to Dr Champersons abolises to Helolouse frommer The newspaper outing enclosed was seen after the little was in frank Ille in to like to Chambalan never la naturally created surprise surongs took I wantere to land that som parape aglance will be exceed in order to lung about the change in the forming aim has sphere to me the little of mothers in we done the found of friction reported to me the little when the second and the little when the second are to the little when the second me to the little when the second me to the little when the second me to t About while abortists, necessary for he open , conduct of frame house about a stratelat , cannot in any way interfore and Enforme Copy of thempater feether is sent amount Horsto Darabla Froze your ris he

रहेगा ही महीं। क्या ब्रिटेन और मारतकी सरकारें इस अन्यायपूर्व स्पवस्थाका रोकेंगी नहीं ? क्या वे नेटासको जिस्मिटिया संबद्धर संबना वन्त नहीं करेंगी ? इमारी आपसे केवल इतनी ही विनती है कि माप इमारे पतामें अपने प्रयत्न फिरसे वृत्तार्वे। इससे इमें बद भी न्याय पानेकी जासा हो सकती है।

अंदर्भा बक्तरी प्रतिकी जिल्लमें यांत्रीजीकी सही है, फोटो-नकल (एस

मापका माजानवर्ती सेवक मो 🖛 गोधी

एन २४४८) हो।

५५ पत्र टाउम वसाकको

५३ व इतिहास्टीय मित्रका । १८९७

भी विकियम क्ली

(टाउन क्लार्क) र बंग

महोदय

भी की स्नोरिन्त मेरे दफ्तरमें मुझरिर हैं। एन्हें बन्तर धामको समानोंने धामिल होते या तमिल पदानके लिए बाहर बाना पहता है। ये बाम ९ वजे रातके पहले सत्म नहीं होते। उनको बी-बीन बार पुलिसने रोका-टीका का भीर जनमें परवाना विकानेको कहा वा। मैं यह बात पुलिस मुपरि^{प्र}हेंटकी भवरमें कावा हो। उन्होंने समाह दी कि मैं भी कॉरेन्सके किए बयरक परवानकी अर्थी दे हैं। भेरा अमान यह था कि खब्द ठ (पी) का उपनिमम नम्बर १ ६ भी करिम्पर कानुनही होता। इतकिए मैं नह नारवाई करनना सनिष्युक्र था। परन्तु तीन दिन पूर्व भी लॉरिसने फिर परवाना दिनानेको कहा पना द्वालीक जब कर्न्डोंने बताया कि वे कहा गये व तब सहें जाने दिया

१ नरकारी बागक-कोमें प्राप्त कुछ प्रतिके हामीजामें किया है: विद्यारिश की-श्रमाप्टर, मार स्त्रे अकेन्द्रेय, वस्त्रि श्रमीरिकः ।

३९ सन्पूर्णगाथी बाङ्सव

यया। मेरा तो जब भी यही समाल कायम है कि उक्त कानून भी करिया पर लागू नहीं होता फिर भी देश तरक्ती अक्षनतर्थे वरी होनेडे किए, मेरा समाल है भी करियाके किए सूटका परवाना सावस्यक है।

धनान हु या भारत्यक तस्य धूटका प्रवाना बावस्यक हु। इसकिए मैं बनके लिए ऐसे परवानेका आवेदन करता हूँ। बादस मामानवर्षे छेनक.

मो क• पांधी (कोश्मेते) वर्षन टाउन कॉविक रेकईस जिल्हा १३४ नं २३४४६।

५६ सरकार बनाम पीताम्बर तथा अन्य

मिताबर ११ १८९७

ता ११ से माने कार्रवाई मुक्त हुई। लर्कसी ट्रॅडर्सन रिमय और गांधी तत्काई-सहको औरसे हाजिर। मृत्तानीतने जदान्त्रको सामने दमीलें देश की। यो गांधीने जवाद दिया और नीचे लिखी मानतियाँ बठाई।

पाणी नानधी मुक्तमा निना रजानंदीके। दूसरी मुक्तमीके तिए मुख्योतका अधिकार-यत्र वैध नहीं निका नया। सीनसी सब अधिकुर्तीका मुक्तमा एक साथ।

चौची कोई नवून नहीं चि अभियुक्त विजन प्रवासी है।

अब विक्रिय काँहि नीति किए दिनों इस संस्तादी सर्वाति स्टिनित पर

दिवा बचा का देशित हुत १७९-८ ।

यांचरी ऐसा कोई आरोप शही है कि वे कंगात है या मंद्रेजी नहीं व्यक्ते । बीई सबत नहीं कि वे नेटालमें कर रावित हुए।

को करमों दिवन बहाते हैं कि ये ध्यक्ति कलन बंबर होनेके वहने नेटासमें थे।

-- ने पहली जापति संबुद करता हैं। जीनमुक्त वरी किसे पये। (इ) एमेश्स डी मिलान

(भीमारिके 1

(धिवरेंट मित्रस्ट) मुख्य प्रचानिवेश-सन्ती संबन्धे माम नटारुके पवनंदक २८ फरवरी १८९८ के बरीना में २७ का महत्त्व।

भरोनियस बास्टि रैकर्डन गाउन बादिया ननरस १८९७।

५७ भी चेम्बरलेनका नावण प्रधानमन्त्रियोंको सभामें

वीत्रविदेशिक प्रधानकारी-सम्मेन्त्रमें की बेम्बर्डेनचा बावन माजावन-राखार क्षारा फैक्स अवसी अनिवायक अविनियम्त्री वन्त्यविक स्वीतृतिका क्षेत्रक का । अस्त्री वह भी क्या पन नवा कि दाने ब्रह्मियाँ जिलेकी विभेदकोके सम्बन्धने सम्बन्धकारकारकी ब्रह्मि क्य स्ट्री। इत मेर् भावकृष्य कन्नोके किलाइ बान्ति वर्णनके क्यों स्ट्रीनी ईक्वेंड तथा नारान्दे प्रभारतानी स्पत्तियों और संस्थाओं है आप श्रीकेश पर निया था ।

[जिल्ह्स १८ १८९०]

शीयन

इस बातन है कि जिन नोहनवरोंनी भारतीय सामनोर्ने रथि है जनका प्यान इन तथा नरपारण देना और जारहरे अप्य आगीरी मुनारकें नी

⁽ १४३० मा ३०००० ।

१ एको नक्ष्ये द्वीय नहीं है। यन शहरते मेरेले से स्व हो क्लरे वर नहीं (रिजर पुर १९८० व) विलावत १४ १८९७४) स्त्रीय की है।

रे दुर्गराचे गराम पूर्वित की बाँद की गावनी राजकारने का ।

कोर लगा हवा है। विव नेटाकके भारतीयोंकी स्विति यम्भीर न होती तो इस समय इस नापके मस्त्रधान समय और प्यानमें दखक न देते।

नेटांछ गर्जनेंगेंट गजटमें इस सप्ताइ भी चेम्बरकेनका वह मापच प्रकाधित इसा है को उन्होंने समाजीके सासनकी हीरक-अवन्तीके जनसरपर संवनमें

एकत इए अपनिवेधोके प्रधानमन्त्रियोकि सामने दिया ना । यक्त भावसमें उन्होंने इस चपरिनेच तथा विदिस वाजाज्यके जन्य शानोंमें भारतीयोंके प्रवास सम्बन्धी कानुनोके विषयमें को कहा वा वह यों प्रकाशित हवा है

भी नेम्बरक्षेत्रने बिटिया ताजके प्रति भारतीयोंकी राजमन्तिकी और प्रमुक्त तम्भवाकी इस भावनमें को बाराप्रवाह प्रसंखा की ससके बावजूब हम मह परिचाम निकाके बिना नहीं रह सकते कि जर परम मानतीय सरवनने भारतीय कराकी राजका त्यान विका है और के विभिन्न जपनिवेद्योंकी भारतीय-विरोती विस्त-पुकारके वस हा गये हैं। सन्होंने यह को अवश्य माना है कि ब्रिटिय सामान्यकी परम्पराएँ किसी भी जाति या रंगके पस-विपक्तमें भेदभाव नहीं करती" वरन्तु उसी मौसर्मे भारतीयाके सम्बन्धमें स्वतिवेसी हारा अपनाई गई नीविको जी मंत्रर करके नेटाल-प्रवासी-प्रतिकत्वक अविनियमको विता किसी मर्तके स्वीनार कर निवाई। इस अविनियमकी एक प्रति और धनकं गम्बन्बमें अपना प्रार्थनापत्र हम कुछ माम पूर्व आपकी शेवामें भेज यके हैं।

भी भेम्बरसन इत तप्पन अपरिचित नहीं हो छक्ते कि मेटास-कानून जान-बुझ कर इसी इरावेने स्वीइत विया जया वा कि इसे मान रफनाम भारतीयोके विश्व प्रयूरत किया जाये। हमारे प्रार्थातापत्रमें दिये हुए वदरनीने यह भनी नांनि मिछ हा बागा है। नटान कानिवेसके प्रभागमनी परम मानतीय भी एरकम्बने इंग प्रवासी विभेगक्रका प्रस्तुत करते हुए गर भी बड़ा था कि समीप्र नायकी अर्वात जासीबोंका प्रदेश रोत देनेकी निदि नवींकि प्रत्यक्ष बयायांगे नहीं हो भरती इनकिए मुझे अप्रत्यक्ष बनावाँका अवनम्बन काना पढ रहा है।

र जरान्य प्रतिने उत्त उदाय नहीं है। बार- बलोजिया मारिय रेडर्बनी क्लान ही पेनरनेनके मारगंध नानद क्या चीतिर हे बच्चे है दिया वस है। क्षेत्र इत ६ ६-९८ ।

र देखिल का उद्दर ।

हम वियोवको याय चर्चसम्मतिसँ स्विटिश सीर वैदेगानीमध्य वज्जाया स्वा सा। सर्मुग पह सैनेने किया गया दुरिक सार सा। हमें यह वेकल्ट बहुठ निरामा हुई कि इस वियेवल्यर भी वो बाबरकेने बरजी परवासीकी एक क्या सी। हम नहीं जानते कि अब हुमारे स्थिति क्या है सीर हमें क्या बरामा बादिया। इस सिवियनका प्रमास हमप्य पत्ने भी क्या है। हुए ही रिलाईंग बात है कि इस्हुद्धार नेनास्त्राची भारतीय करना मान क्यान्यात्राच्या सरना मान क्यान्यात्राची रामावाल गये थे। वाहे हिया स्टिनेके कुछ सम्मत्र पत्नाची करना मान क्यान्यात्राच कर या बीर उन्तर मुक्तमेंची गूनवादिन सम्बन्ध कर्ने बीवज प्रवासी वदमा कर छ दिलाक सेनों एक्या या। ने बुक बानूनी सरवारीके कारण कोई विय यो परस्तु वीर पेमा न होना यो मक्यमा कई वित्र सम्बन्ध एका और वित्राम स्वीमस्य एक्सा सीवतार प्राप्त करनेन यहने उन्हें सायक करने यो यो स्वय करने यह बाये। सब सी सात दिनहीं मुनवारीं उन्हें कुछ कम स्थम नहीं करता पड़ा। गेथी करनार्य समस्य स्वर्थन हों यही से पेहींग सीर किर सा नाम सहानमें गरूपते सावार हो सूर्वे इक्तन बड़ी यही सा होने हो

र देविंग पुर १५ ०५१ : स्थापीत स्वानिवाँचे कांग्रे ी चेन्यरक्षेत्राची द्वावे निया वेतिर पुत्र १५ : इन सम्बोंकी उपेशा की कर दी। इन दो वब भी मही कहते हैं—वैद्या कि इम स्वक्रक निरुद्ध कार्य है—कि मार्योगिक विद्य बाब्सेस्नका कारणें में को स्थापका कारणें में कोर क्यारणें के स्थापका कारणें कार्य कार्य के स्थापका कार्य कार्य

सत्य तो सह है कि भी चेश्वरक्षेत्रने व्यवहारतः यह मान किया है कि

कोई मी भारतीय जारत कोइने ही बिटिय प्रवा नहीं रहता और इंस्का मर्थकर परिचाम यह ही रहा है कि इसे प्राय प्रतिक्रित विटिय प्रायतीय प्रवासीके नेटाककी विटिय पूर्मिन्ने निकाल दिने जाने क्षत्रवा कर्म प्रिकट न होने दिने जानेका और क्कटा चनके ट्रान्डास्थ या वेकानोबा-नेकी किरीयो पूमिमॉर्ने जानेके किए निकस होनेका दुख्यानी पूम्प वेकान यह रहा है। इसकी पुल्लामों तो ट्रान्डास परिक्षी-कान्न (ट्रान्डासक्ट्रियन ऐस्ट) एक नरपान था। यह यह कानून जानू वा तह कोई यो प्रायतीय नेटाल या वेकानोबानों या प्रारत्ने परापत (पायतीट) केकर, या ट्रान्डाक्से रोक्यार

भावता स्वाहित सहित प्रकृष्ण नारास्त्र ने प्रकृष्ण हो। इत्तर भन्न स्वाहित स्वा

होगा कि मुस्किम कोग किसी मौसनीको या हिन्तू सीम किसी पश्चितको केवल उनके अंग्रेनी म बानगेके कारण नटासमें मही बृक्षा सकेंगे वे दोनों अपने-अपने वर्मके फिलने ही विद्वान क्यों न हों। नेटाक्सें वसा हुना कोई मारतीय स्थापारी जपतिबेखसे बाहर जाकर यहाँ फिर बापस सा सकता है, परन्तु बहु अपने साथ कोई तथा मौकर नहीं का सकता। नये भारतीय

नीकरों और मुनीमॉको न का सकतेकी इस असमर्वताके कारन महिक भारतीय कार्नोको बहुत भारी असुविका होती है।

वरि इस प्रवासी अधिनियमको नेटाइकी कानुनकी पुस्तकर्मे सवाके किए रहता ही हो और भी चेन्वरकेन मी इसे बस्बीइन्ट करनेके सिए टैमार न हों तो मी इसकी युरोपीय जापाबाकी नाराको तो मुधार ही देना नाहिए, निससे कि को कोन जपनी भाषा पढ़ और किस सकते ही और जस्म प्रकार इस व्यविनियमके जनसार प्रवेस पानेके विविकारी हों वे सव भी मही का सकें। इमें बाधा है कि कम-से-कम इतनी रियायत हो हमारे साथ को ही था सकती है। इमारी मापछे प्रार्वना है कि नाप और कुछ न भी करें हो इसना परि वर्तन करवानेके किए तो वपने प्रभावका उपयोग बवदम करें। भी चेम्बरहेनके मापभर्मे सायर यह शासा विकार गई है कि हमारे प्रार्थनापत्रमें विस अन्य प्रस्थितई-विरोधी समितियमोंका जिक है सन्हें ने अस्तीइत मही करेंचे। यदि यह ठीक हो हो सह एक प्रकारचे स्वतन्त्र भारतीयोंको नेटाक सीवकर चन्ने चानेकी सुचना है, क्योंकि वृद्धि विकेता-गरवाना अधिनियमको क्टोरवासे काच किया गया तो चलका परिचान नहीं होगा और चूँकि प्रानिवेधियाँको अब पढा चक गवा है कि वे को कुछ करना बाहते हैं उसे अप्रत्यक-और हम दो कर्नेंगे अनुचित-अपामीने करें दो कर्ने कहने मात्रस थी चेम्बरतेनसे कुछ भी मिल सकता है इसकिए उस कानूनके कठी छाने लामू किसे बालेकी वंजाबता भी है। यह वोषकर हमें बहुत रियवां होगी है कि कामांकि प्रधान उपलियंच्याची कर्माचन उपायोकी पत्रक कर खें हैं— यह सूरोगियों और सायदीयोका कर्मचमत गत नहीं है। जो पूरोगीय नहीं भारदीयोका निर्वास क्षेत्र होने देनेके दीवदान विरोगी हैं वे भी ऐसा ही बनतते और मानते हैं कि मास्तीयोंका निर्वाद प्रवर्ध रोक्नेके

शक्त प्रयास अनुचित है। परन्तु वे इनकी परवाह नहीं करते। इम बेवत है। इस मानलेको अब इम आएके ही हावमें शॉपते हैं। हमारी एकमान नामा अब मही है कि नाप हनारे किए ब्रिक्षित सक्तिने फिर प्रयस्त १९६ सम्पूर्वयोगी वात्रमन करेंचे। इसारा पक्ष सर्वेदा त्यायसंत्रत है इसकिए इसें निरूपय है कि बाप

हतना कष्ट अवस्य करेंसे।
(हु) कासिस मोहस्मद जीवा
और जन्म
हस्तमित्रिक वंदेशी सहविदेशी फोटो-स्कल (युग्र एक २५ ९) छै।

परिविध्य

मसविवेमें यांगीओके अपने हावसे किये हुए संशोधन हैं।

परदेशियोंका प्रयास

(भी नेन्द्रसम्बद्ध भारतक क्रांस)

हुछे पर बात और फरनी है, जीर सिर्फ एक ही चुटा खुनी, में जाएका प्यान एक चुटानकी जार क्षींचना जीवता है, यो वा तो कुछ क्षांत्रियोंने विचारार्कन

है ना राग्नेसर किया ना कुछ है। उसका सम्बन्ध करियों (परिचमा) और काम तीसी परिचारतके प्रपातनी है। यने ने विनेत्रक केल में और ने कुछ-कुछ वागोंने वक-दूसनी विन्स है। सन्तुत

नेदान्त्री माचे दूर विनेत्यको छोत्रस्य, तम्मै हे एक भी देख नहीं है, जिसे हम मानोपत्री इधिको रेख नहीं। में बहुमा चारणा है कि सामानेत्र्यकर का निम्मस्य मिराहार करोड़े का स्विद्याधि सेनी और उन्हों आसमस्याध्यमके संस्थानी पूरी गई साम इस्त्री हैं। वे स्वतिकेद्र गांधों और करोना संद्रामारकोड़े स्वेत्रास्त्र सरिव निरस्तानी

हैं, और स्तरें भीरे निरामित्तकि का संस्थाने साथ बच्चरी पूरी त्यानुपूरी है कि को कोन सम्मास करते हैं कमरे करते हैं, टॉर्म-ऑर्टिड करते हैं और क्लंड क्याना किस्तर्थ करते नहार बाधरीके बचानन सम्प्रितमें बद्धान मामेद बचा करते उत्तरी उत्तर करमह स्तरित्तीओं कर्री होने भी कोशी। स्त उत्तरके बचाता है क्लंड क्यान है उत्तरितालें हिन्दे क्लंड साथ कोशने बचारर में राष्ट्रण है हमा। सी स्व

हूं उत्तरनात्र (इस्के राण्य सर्व व्यास्त्र ध्यार धारणा व हरा। त्र त्र स्त हरेस्के के प्रति के के सामात्री पर कोर्ट रिप्त वर्ष के विके प्रणा हुन्दी आजे बात है कि बार गात्रनात्री करवात्रीया पात्र सी को बांत क्षणा (स्ते व्या रिप्त के के कियार वर्ष प्रणा के किया है कार्य सामात्री (स्ते के बात क्रिया) व सह परिपर्णकों से आहे स्ते क्षणा व स्तामी वस्ति (सि) के बात विस्त बता कर कोगोंको इतन्त्र संगारकारी इत्या कि मुझे किन्कुक निरंपन है। समाझीको क्ये स्थीकर करना रह तो नह उसके किद अल्बन्त रीवाक्तक रात होगी। क्य सोविय, बक्ती रूप बेहाडी बाबांडे दौरावर्ते बावडी स्वा स्वानेडी मिला है। ब्रिटिस शंक्त राज्य अपने सबसे वह जीर पतारे बारक्त मधीन देशने कर्मी कर विशास मस्त-सामान्यका माकिक है, जिसमें ३ प्रवासन निवास करते हैं। वे ताबडे इति उत्तरे ही बद्धारम है, कितने कि मार खर्न है और अन्ये क्यों क्रम रार्च-रोर्देसे करने ही सम्ब है किएन कि सबसे हम है। वे कमर क्ष्म शासका कोई स्वरण हो हो हम जबमें इससे ज्वारा मधियात है कि क्वजी परम्पएमें और कन्छे धरिवार क्याचा पराने हैं। वे बनतान हैं, संस्थारी हैं, विशिष्ट बीर हैं। वे ऐसे कोग है, जिल्हाने पूरीकी पूरी सेनार काफर राजीकी सेपाने समर्पना कर पी है और मारोपि विद्रोक्षेत्र वैसे आपना वरित्र और शंबरमा अवस्थाप अवसी राशसमित्रके धारा साम्यानको एवा की है। म बदता हूं कि बाप लोग जिन्हाने कह सर स्वत है, इन कोगोच्य नगार महाँ कर सकता भेरे क्यांक्ट बनाय नगार करना किस्से विकास जनस्तोत सन्तान पेदा होता और वो न केल्ड महासमिताली सनामात्रि वस्थि बनको तमाम बनाको मानवाओं के विवरीत केल्या आरक्ते सनतको क्रिए विवर्क सन्तरसङ् भी है।

 116 सम्दर्भ धीनी नाइमन

वो सुहे नितंपन है, जाप मेरे साव है। इसकिए सुद्धे जाता है, जाउनी इस बाराफे चौरानमें इस शान्तीका एक येखा महाविद्या तब कर केने जिससे समाजीकी किती जवादी गानवाजीको देस न नहींचे और साथ ही उस वर्गने कोलीके माजसानी निनार जारदेकियावनोद्यो स्थानपूर्ण जायशि हो। जनके व्यक्तिस्रोद्यो रहा भी हो। जाने ।

(परिचेत्री है।

ककोनियक बाफित रेकर्बस पार्कमेंटरी पेपर्स १८९७ जिल्ब २, नं १५।

५८ पत्र बाबाभाई मौरोखीको

५३-८, प्रीस्य स्थीर कर, देशक सिवामा १८ १८९७

माननीय दादानाई नौरीबी संदर्भ

भीवन्, मने भी चेन्वरजेनके मायचक सम्बन्धमें को बन्होंने स्पनिवेहोंके प्रवाध मन्दिर्वेषे सम्मेकनमें दिया वा एक प्रव दसके साथ भेदनेका सम्मान प्राप्त इका है। यह पत्र नेटामबासी मारतीय समाजके प्रतिनिविधीने बापकी सेवार्मे किसा है। बबबारकी को करारम इसके ताब है वह पत्रके रूप भागेके बाद देगी नई थी। उससे पनमें दी हुई बजीनको जारी वस मिलता है। भी चेन्वरसेनते आपन्ते स्वभावतः ही नारतीय और मरौरीय दोनी समाजींको आस्वयं हवा है। मैं मानता है कि जबर कुछ और ने किया वा तका को मी पत्रमें जिस प्रवासी-व्यविभियमेगा उल्लेख किया गया है घसमें परिवर्डन करानेक लिए तो जाप अपन प्रवच प्रभावका सपनीग करेंने ही। जिस प्रकारके भारतीयोंका

पत्रमें जिक है और जिन्हें अधिनियम अभी नेटाममें प्रवेश करनेसे रोवता है

१ देखिर पृष्ठ ३५१ – ८ ।

वे यहाँ जमी-अनाई मास्तीय पहिचेकि नियमित संवालनके किए विकर्तन र वह उपन्य वहीं है। नम्बरन: सम्बेच्यडी बर्पस्टी आस्त्री विधेर वी।

सक्ती दो हैं ही साथ ही यदि उन्हें उपित्रवेशमें जाने दिमा गया दो वे पूरोनीमोकि कारकारमें किसी उपस्का हस्त्रवेश भी नहीं कर एकदे। प्रकास-सम्बन्धी प्रार्थनापन की तकस सकस किस्प्रदेनें नेत्री है।

नापच नक्तानुबर्दी देवक. मो० क० गांधी

पोत्रीजीकं इस्ताबार-युक्त भूकं विप्रेजी प्रतिकी फोटो-लकस (की एन+ २२५५) से।

५९ पत्र विशियम वैश्वरतार्मको

भश्-य, धीस्य स्त्रीय शर्वेन नेदाण

वन्त्र नाराण सिराम्स १८ १८९७

सर विक्रियम वैकासनी संदर्भ

मीमन्,

नेटाक्के बारतीय धमानके प्रतिनिधियोंने वापको जो पत्र किया है। यह जीर उपके ही धमानपर्ध धमानारपत्रकी एक कप्रत्य हुए उपके छाप आपको धनेनोड़ समान मुझे प्राया हुना है। मैं विस्तान करणा हूँ कि प्रति निश्च कुछ न भी क्या का एका दी भी इच पत्रमें जिल्ल नेटाक नीडिनेन्सका जिल्ल क्यि। यहा है उपसे परिवर्शन कप्रतिके किए दी बाद अपने प्रवक्त प्रधानका उपनीए करें हैं।

प्रकास-सम्बन्धी प्रार्वनापनकी प्रति सक्षय किफाड्रेमें मेजी है।

नारका माहाशुरती सेरक. मी० का गांधी

एक मंत्रेमी क्यती प्रतिकी फोटो-नकस (की एन २२८१) से।

- १ केलिय प्राप्त वृद्धा
- र धिनदक्ता १५१ ।

६० ''भारतीयोंका आक्रमण" (१)

माराजिति बनाको सम्बद्ध लितिके नारेने देवलके स्वयास्तरको नहुत करके हुद विचार करता हुना करते वे और मर्पका मनर्ग भी किया नाता का का नाता या कि प्रस्तान पर संगठ अन्य स्वयंत्र कानुकतो करता हुई है। वर्षाक्रिये विचित्रको लग्न कर मान्यकल सम्बता। निम्मितिका और करने नारके करते में स्वयंत्र नेपका मान्यत्र तमा नौर्मितिका स्वयंत्रको किये, ना स्वेदर सिद्ध सन्।

दर्बन

बरम्स १३ १८९७

सेवामें सम्पादक नेटाक मन्तुरी

महोदय

मानूम होता है कि कुछ कोन नेटानके भारतीय समानके निक्क हेच-आनता जायम स्वतेष्ठ सुने हुए हैं। बौर, वृष्टीमान्यस्य नवकारनतीती नपने न्यापको स्वेची यह नाने हिए हैं। बौर, वृष्टीमान्यस्य नवकारनतीती नपने न्यापको स्वेचीय का नाने सिंद हैं। हुए हुए पे पहले मान्य हुए से सामान्य स्वीच पिता है कुछ हुए पे पहले मान्य कि बौर्म कि मान्य स्वीच सिंद हैता है कुछ हुए मान्य कि बौर्म कि मान्य स्वाधी कानून (इतिवेचन ऐस्ट) के बनुसार मुख्यमा बनाया याम वा वे भारती सामे हुए नाने बादमी में और नुका-सिंदी सामे पूर्व मान्य से वास्ति हैं सामान्य स्वाधी कानून प्रमान प्रमान स्वाधीय हुए। तो स्वच्य करायों मन्य स्वच्य प्रमान्य स्वाधीय हुए। उन्हें स्वच्या प्रमान्य स्वच्या सामान्य सामान्य

र देशिय प्रकारता

१ सर सक्तेज कर्ण ७ नरहानिनेत्र बालका है, किस् जरह कहा नवा मा और किस्तर कराती प्रतिकृत्यक मिनियसके मनुदार क्रीवी प्रकृत्य प्रकृत्य क्या करा मा । विस्तरकृतिक मेरी कर मामकी योगीकी देशों की और कर्षे सुन्न किया मा । देखिल हा ४ रेन्द ।

इत सोगोंने स्थानी निवासके प्रमाचयत्र इवेतमें प्राप्त कर सिम वे। क्ष जामोआ - वेस प्रकृतार मेजा गमा। उसमें बताया गया था कि एक हवार स्वतन्त्र भारतीय वहाँ उत्तरे हैं और वे नेगाम का रहे हैं। बाजक मन्बुरीमें इस भारतका एक शार क्या है कि सरकारने पुलिसको बेकानीजा-नेकी ओरमें मानेवाध एशिमाइमाँकी क्रोज करनका जादेश दिमा है। यह सब एक नाटकीय चीज है। और अगर इसका मंद्रा अरोपीय समाजके राग-बेपको जमादमा न होता हो यह अध्यन्त मनारमक भी होती। "मैन इन र मून [बनवामी बादमी] ने जपने माणाहिक स्नाममें एक जार निवकर इसपर भानिरी मुक्तम्या चढाया है। उसका प्रहार सबसे निष्ट्रर है क्योंकि ससके भन्नोंको न वेबस जनता जल्लुकताके साथ पक्षती है बस्कि उनमें बजन मी होता है। बहा क्षक में बानवा हूँ मह बूधरा मौका है जब कि उसने भारतीय प्रस्तके बारेमें सरम-असरमधी पहचानतेकी धक्ति लार्न है। अवर काफी परेजना निसनपर भारतीयोंको क्यो श्रापा काममें भानेको स्वतन्त्रता होती हो। एसी भाषाका भ्रमोत्र जनित सिद्ध करनेक किए विकासभीन नियमपर उस 'आन्मी' के बायक लेलाघोंने काफीस क्यादा उत्तेत्रना मौजूद है। सवद बैसा हो नहीं सबना। मुझे तो जा इकीकर्ते मैंन जूद देगी-मुनी हैं उन्हें उसी क्षमें जनवानः सामन रुकार संबोध मान सेना होगा।

नुस वो वर्षीय मार्स्मिक लाव हंदीक मार्रायों की पैर्सी करणका बवसर फिला था। में पूर्व जारके लाव कहना है कि मिस्तुस्त मार्गीवों में एक मी लागने नवा मार्गा देवा नहीं था। "नक शब्द कह कह मी है कि प्रमान सिकारी (विकास काविकार) न पान मोजूद है। इसे निर्माणाम करने मार्गित कर देवा शास्त्र के दिन से मार्गीय विवास काविकारों या यो क्रियों कि नहानमें प्रवासित निर्माण में में के पहले आप वा उनक पत्राने दूसर वागन को में स्वासी करायों कर प्रमान निर्माण नहीं बना मार्गी शास्त्र को मार्गीय क्रियों स्वासीय करायों कर प्रमान निर्माण नहीं का मार्गी शास्त्र की पत्र मार्गीय करायों कर मार्गीय कर से में स्वासीय करायों मार्गीय करायों कर से में स्वासीय करायों मार्गीय करायों मार्गीय करायों मार्गीय करायों कर से में से महर्स कर पाने ही ने मार्गीय से प्रमान करायों में सिर्माण कराये। ने से महर्स कर के पाने ही नेपाल करायों मार्गीय करायों में सिर्माण करायों में सिर्माण करायों है। उसे उसे करायों भी सरकार काहे सिर्माण वान्य करायों है। उस उस करायों भी सरकार काहे सिर्माण वान्य करायों भी सरकार काहे सिर्माण कराये हैं।

सम्पूर्ण गांधी बाहमव

Y R यह कहना सच नही है कि इन कोमोंने अपने प्रमाचपत्र दर्बनमें प्राप्त किये।

इनमें से कुछने प्राविधिक (टेकनिकक) भाषारगर बरी हो बानेके बाद, बंदीके मजिस्टेटको स्वामी शिवासके प्रमाणपर्वकि फिए कर्जी दी थी। वह कर्जी नामंबूर कर की मई। कागबात मेरे पास मेबे गमे और मैने सरकारसे प्रमान पत्र पानेका प्रमत्त किया। परन्तु मैं बसफस रहा। अब कन्में में अविकतर कीय विना प्रमानपत्रोंके ट्रान्सवास वसे क्ये है। यह सब है कि सीन सीवोंने वर्वेतमें प्रमामपत्र प्राप्त किये। जिल सक्तोंके काबारपर से प्रमानपत्र दिसे वसे वे इक्कनामें वे। वे इफ्तरके कायबातमें नत्वी हैं। परना दंशीवाधे मोनेंकि बर्बनमें प्रमानपत्र प्राप्त करने और नानुसके विकाफ प्रमानपत्र प्राप्त करने नाकोके बीच तो बाकास-पातासका मन्तर है। समक्रिमक्कुके एक सावगीने और वर्षतके बाहर दूसरे विकॉक कोमोंने वर्षनमें ऐसे प्रमानपत्र प्राप्त किसे में। ऐसे प्रमानपत्र देनेका जादेश निकक्तनेके पहुछे भी शास्टरके सामने इस प्रस्तपर पूरी तरहसे बहुस की का चुकी की। यह मम विश्वक निरावार है कि वो मारतीय डेकामोबा-वर्ने स्तरते हैं

ने कानून दोड़कर उपनिनेक्सें का बादे हैं। मैं यह कहनेकी जिस्सेदारी दो नहीं केंगा कि चार्स्स्टाउनके पास सीमाको पार करनेका प्रमल एक मी त्रजे स्परितने नहीं किया परन्तु बहुरिक मुखे माजूम है, जनवक एक मी स्परित चार्स्टरावनके वार्षेत्र ऐसनकी मुझ-वृद्धिये जवकर निककोर्मे सफल नहीं हुआ। जानूनके जसकर्मे जानेके पहले और प्रदर्धन-वार्मितिकी स्वापनाके धर्मय मारतीय समावको जोरसे जुलेबान कहा क्या वा कि हर माह की भारतीय वर्षनमें चतरते हैं चनमें से ज्यादातर ट्रान्सवान जानेशाने मुताफिर शोरों हैं। यह तो चास तीरमें कहा पना ना नीर मामतक पस कमनका कंडन नहीं किया गया — कि क्लीड और *नावरी* बहावोंसे को ६ नात्री आये वे सनमें १ से कम नेटाक जानेवाले नये कोग वे। जब भी परिस्तित बतको तहीं है। और मैं तो सह भी कहनेका साहय करका हूँ कि को १ साबी डेलामोका-नेमें स्तरे बतावे जाते हैं फनमें से भी क्याताहर ट्राम्सवास कानेवाले होंगे। विभिन्न राष्ट्रीके नमें कोमोंको भारी संस्थामें वसा केनेवा सामध्ये प्रसी उपनिवेशमें है। बौर अवदर ट्रान्धवाल नारदीमोंको सेदा जाता है और सरकार सन्हें जाने देती है तनतक जाप मारतीयोको डेकागीजा-वेमें आहे देखते रहेंगे। मेरा कथन यह मही है कि उनमें से शोई नेटान जाना ही नहीं भारता। अकन तो पूछा मा कि वे किन सर्नोपर का सकते हैं।

¥

भव जनको बताया पथा कि ये दन घठोंको पूरा नहीं कर सकते तब वे इंग्सबसकों रह बये। वे कोई व्हिस्ति को नहीं हैं। हगर रख-रेज म हा को कुछ कोप कानुसको बरकाकर क्यानिवेशमें मा भी नवते हैं। मेरा कबन यह है कि कानुसको ठोड़नेकी सारी पैमानेगर कोई कोयिया

संध क्या नहीं है। कि निर्मुक्त ताइनका मारा प्रभावर कर का कावार महं की बाती है। वे मान मून में बाती वरणां करनामाधित है से मान के साम के बान मान कर का कोई मंगठन है न कानून ताइने और सम्प्रिकार करियों मुख आने की हताइ ही वी जाती है। अधित आवरके वाच हमें बहुत होगा कि प्रस्कृत-धानित के उद्या करने म मिक्सियों हा वाच मान मान के साम के बात कर के सिक्सियों हो वाच मान के साम के बात के साम के बात के साम के बात के साम के बात के साम के साम

कानुनदा समझ होनेपर दर्वनके बहाज-मासिकांकी एक पत्र मिका था। उगमें बन्त मनुरोध दिया गया वा कि वे उतका बमत करानमें सरकारका महयोग हैं। मुझे प्रारुम है कि उन्होंने बनावमें यह किया वा कि हम उस राजुनको पत्रक नहीं करती फिर मी जनतक वह कानूनकी विजानमें ध्रेश वर्षण हम ध्रक्तिमर तथा बद्धादारीके मात्र उस मार्गेन और उसक बमरमें सरकारको पदद करेंगे। और, अहातक मुझे मातम है बहाज कानिकेकि करनाव हुए इस स्थाने विकत कोई जिम्मदार भारतीय नहीं दया। नव ता यह है कि जब-बब भीता भागा बाहे वह नार्रेग-अवनव अस्टर रहा ही या बाहद भारतीय सनाबके नेताजीने मारतीयोंको सता यही समझानका प्रयक्त दिया है कि कानुन्हीं सबझा न करना आवस्यक है। दूगरी बात हों ही वैसे सबती थीं ? अधर वालुक्को बभी भी रह कराता है तो बहु ता निर्दे समाप्तन-पृताने सीर भारतीयोदे साना साचाम विरुद्धन निर्मान रपने ने ही हो महता है। जीत बचानेती तीति तो आत्मपातक है। और में बह गरना हैं कि भारतीय समाजके अनीत-बीबनका बिरडा इस बिस्तामकी नदी नाबित करनवाना नी है कि बह की आसमानक कार्य कर सकता है। इस गरत बार नया "मैन इन व मृत "वो यह विज्ञान दिनाना जन्मी है वि भारतीयोडी क्रानिवेदक नाव निरुषांक वस्तवी बोर्ड इच्छा नहीं है। भीर सम्पूर्ण गांची नाव्यन

यह इसकिए ही स्वीं न हो कि विक्यांड़ करना उनको पूरानेवाली बीज नहीं है ?

फिर भी पूरी-पूरी सार्वजनिक वाँच होते बीजिए। अयर यह शाबित हो जामे कि कानूनकी जबजा करनेवाले किसी संबठनका अस्तित्व है तो बेसक उसे कुचन दिया आये। परन्तु, दूसरी कोट, कसर ऐसा कीई संस्टन **ग** 'स्पापक जाकमव' पाया न जाये तो इस जातको जुले आम स्वीकार किया जाये जिससे संबर्धके कारण मित्र वार्षे । सरकार को मह कर ही सक्दी है। परन्तु माप भी कर सकते हैं। इसके पहले समाचारपत्रोंने अपने निधेप संवादवाताओंकी मेजकर सार्वजनिक कार्योंकी जांच कराई है। समर साप सचमूच विस्तास करते है कि भारतीय संगाबदत रूपमें कानुनको बरकानेका प्रयत्न कर खे है तो क्षाप एक बार्चिमक और करके भारतीय समाजको बत्यात बामाचै बना केंगे। और वह कापकी एक लोकसवा होगी। इस जीवका गंधा सरकारके सिए सार्वजनिक बांच करनेका मार्ग प्रसस्त करना और, वह बांच करनेके किए डी तैयार न हो दो उसे बाब्द करना होना। कुछ हो भारतीय मपनी बोर्स ऐसी जीवका स्वानत करते है।

नियम बहुत महत्वका है इसकिए मैं जापने सहयोगियोंसे इस पत्रकी उद्भव करनेका अनुरोध करता है।

[नवेभीये]

मो दः गांधी

मेदास मन्त्री १५-११-१८९७

६१ पत्र औपनिवेशिक सचिवको

मन्दर १३ १८६७

भागनीय सीपनिवेधिक पश्चिम **वै** रिस्टन वर्ग

मही-म

¥ ¥

में इसके शाब नक्ष्मुंग्रिमी एक नतरण भेज एहा हैं। इपर, मुख दिनॉने कय बारोमें से नमाबार निवक खे हैं कि भारतीय सीय बसाबोबा-में या बास्में शासनीक रास्ते इन जरिनेवामें प्रवेश करके था प्रवस करनेक प्रमुख करके प्रवासी समिनियमको बरकानेकी कोस्तिसें कर रहे हैं। बाजतक ऐसे समा भारींपर ध्यान देश ककरी नहीं समझा गया था। परम्पु सावकी कतरमने बातको ब्लादा बन्धीर क्यमें पेश किया है और सम्मन है कि असी पुरोतीय समाजका कोच अक्क छठे। इसलिए नेटालके अनुक मास्त्रीपॉकी भीरते में यह मुलाव देता हूं कि तरनार हुया करके इस समावारका लंडन कर दे। मैं कह दूं कि प्रकृत कानुक्ता जल्लंबन करनेके लिए मेटाफर्ने मा भग्यन काई संघटन नहीं है। नेटाइके उत्तरकायी भारतीयोंने कानुसक पास दोनेने जमयने ही बदाबारीके माच उसका पासन किया है और बूसरीको भी ऐसा करनेकी आवश्यक्या समझाई है। फिर भी अगर सरकारका समाछ इसक विपरीत हो दो मुझे इस विपर्भ सावजनिक जोबको माँग करनी होगी।

मो० क गोधी

(भीतमे)

मैदास मक्षुरी २ -११~१८९७

६२ "भारतीयोंका आक्रमण" (२)

HIPE IN. Echa

मबार्थे समादव मैदास मध्येत

महोद्द

अवारी-नानुव (श्रीप्रदेशम तेवर) का अरकानेके किए तबाववित संगठनव बारमें मेरे पर पर मापन मात्रके अंतर्में कुछ मारीप विमे हैं। बारा। है स्तावकी विन्ते नार वन भाषेपीएर मने कुछ गार करनेचा मनुमार हेंसे। मुझे गता है कि मर परका समें यकत ज्वाया गया है। सैने प्रमर्थे नंत्रकवानी जारनेवाचे पनि क्ये जानेवार्ने व्यवहारकी विवेचना नहीं की। भीने प्रवर्गी प्रकारित इन आग्रयक बरानको और ऐन कुमरे बदानींका कि का आस्त्रीय शानमें

१ देखेर साथ ।

¥ 4

वेनानोबा-वेर्ने उत्तरे हैं वे नेटाल का ग्ये 🕻 नकार भर दिशा है। ऐसा करलेमें मेरा संसा बतायस्यक आयंकको टाकना था। "सत अविवेचनके कानूनको बरकामा न आवे इसकिए सबय" रहनेके मुरोपीयोके अविकारपर मै विवाद नहीं करता।

उस्टे मेरा कहना यह है कि भवतक कानूनकी किवाबसे वहाँकानून है वनवक उत्तरवासी भारतीयोका हरोदा उसे सामने और सरकारकी

उपका असल करानेमें सक्तिमर मदद करनेका है।

मैं जिस वातपर आवरपूर्वक आपत्ति करता है वह है झूटी बक्जाहों और धनके बाबारपर बनी चारमाओंका फैबाया बाता । उनसे बेबैनी पैदा हो सकती है और गरोपीयोके सनका समनोध जिनह बानेका बलोसा है। मैंने बिस र्जाचका सुकाब दिया है वह बापके मतके छिए उचित सादर रखते हुए भी स्पप्टत अकरी है। अनुदाने सामने वो विरोधी बातें है। एक तो यह है कि प्रवासी-कानुनको समझत वरकानेका प्रयत्न किया जा रहा है। 'मैन इन द मुन' के मतानुसार ससे एक संबठनका बन प्राप्त है। इससी बोर, इस बक्तन्यको पूरी तरह नामें बुर भी किया क्या है। चनता किस बातपर विक्थास करे ? न्या सबके किए यह बेहरार न होना कि कोई अविद्रात प्रस्तस्य देकर वता दिया जाने कि कौत-सी बात विस्तासक कामक है?

मैंने कारतमें को कुछ कहा वा उसके बारेमें आपने मेरा पक्ष प्रविष्ठ वताबाहै। जब नह बात जनताके सामने वी तब आपने मह रुक्तेका सीमन्य दिकाना था कि मारकीय पश्चिकीयसे मैंने येसा कुछ नहीं कहा निसंपर मापत्ति की का सके। और मैं कब भी काशी भारतमें कही हुई चारी बाठींकी सावित करनेको तैमार हूँ। सबर मुझे ब्रिटिस सरकारोजी पुढ त्याम-वृद्धि पर मास्ना न होती तो मैं यहाँ होता ही नहीं। पहले मैं इसरी बनहींपर को पुछ कह चुना हूँ नहीं मैं नहीं दुहराता हूँ कि विटियोंकी न्यास व मीनित्तप्रिक्ता ही भारतीकोंकी माचाका नानार है।

मो क गांधी

[अग्रेचीमे]

मेदास *मर्का*री १७~११~१८९७

अञ्चल क्रिकेट और नेप्राणको सरकारसी है।

६३ औपनियेशिक सचित्रको उत्तर

लामा १८ १८**५**०

माननीय औपवित्रधिक सचित्र मेरिकार है

महोदय

में सापक १६ तारीलक पत्र का प्राप्ति-स्वीकार निवेदन करता हूँ। उसके हारा मापने मने मूचना दी है कि सम्कारने ऐसा कभी नहीं कहा न उसके पाछ विष्याय करनका कारण ही है कि नेटाकमें प्रवासी प्रतिबन्धक मधिनियमका बरकानेके सिद्ध किमी संगठनका अस्तित्व है। इस पत्रके सिद्ध मैं सरकारकी करववार देता हूँ और निवरन करता हूँ कि जगर अधिनिवनको जरकानेके प्रमन्तिमी सूचना भारतीय समाजको ही जायेगी तो जन प्रमरनींकी पुनरावृत्तिको रोक्नेक सिए वेटाक्वाणी भारतीयोक प्रतिनिधि सब सुरुभव प्रथम करेंगे। मैं इस पत्र-स्पत्रहारकी नक्षमें पत्रोंमें प्रकासनार्य सेजनेकी स्वतन्त्रता सेता हैं।

(कोराधि) मैयक मर्स्युत २ -११-१८९७ मो० क० गांधी

रं पद शिक्ता शिक्ता वाः

र्वे विकास है

नहोरन

MITHE EE ECSO

न्यात्रिक्तिः विभागोजा-वेडे रात्ते व्यक्तिराज्ञें भागेके कांक्ता प्रध्यनांकी सकत अध्यनहोसे घडारित समाचारीके निराये मापरा १३ तारीमारा पत्र मित्र । कार्यके उत्त्वरी म्दन्तर्व निरेश्न है कि सम्बारने वह कभी नहीं वहां न उसने वान देगा मान्नेता क्षा काम हो है, दि नैपार्क जराती अधिकथक अभिनिवाको सरवानेके तिय किसी संग्रमसा अभित्र है।

(भोगा ।

६४ भारतीय और प्रवासी-अधिनियम

मीपनिषेतिक समित्रके साथ पाँचायीका पत्र-स्पनदार निम्न पत्रके साथ नेयास महर्चेर्ड मस्यक्ति इसा था।

rie.

समाना १९ १८६

सेकार्से सम्पादक

नेयम मञ्जूत

महोदय

मैं इसके साथ अपने और सरकारके बीच हुए पत्र-प्यवहारची नवः प्रकाशनार्व भेज रहा है। यह पत्र-व्यवहार सक्रवारोंमें प्रकाशित उन समाचारों

सम्बन्ध रखता है, जिनमें बेलायोजा-नेके 'पस्ते भारतीयोके क्यमिनेसमें जाते।

कवित प्रमुलीका जिक किया गया है।

भारता

मा॰ व । गांधी

, अमेरीय]

मेयार मानग्री १ -११-१८९»

६५ पत्र फदुमची सोरावजी तलेगारर्खाको

भ्रु-स, प्रीत्व स्ट्रीर वर्षन (मेरान) रिसम्बर १७ १८९७

थी फर्युनवी सारावजी तनेपारकां वैरिस्टर, ये पी बादि कर्मार

प्रिय भी सबेद्यारली

देश प्रश्ने आएको भी ऐक्सम कैमेर्डन'का परिचय मिलेगा। में एक समय नैदालमें शक्त मंत्रि हिस्सक संस्थायता ने। जिस समय में मही में रक्तिने दिस्स सांकितवारी आरोमिंके हिस्से को तुक्त में कर हाउन ने मब किया या। वह में मारत का रहे हैं। इनका हराजा है कि हाक्सी पनाजाता बारत आरोमिंके बार्से को सन्तरुद्धियों चेता हो महें हैं वही हुए नजनक आरोमिंके प्रयानों हिस्सा सें। इस बार्सि छहें जो भी सहायता निक बह मूलवान मार्गी आरोसी।

मान का गांधी

मुण मंग्रेजी अनिने । मोजन्य रक्ष्यमजी फर्रसजी मोराबजी तक्यारणी ।

1 You 17 195 1

सामधीके साधन-सूत्र *वैविक्रमीय* करूकोचा वैतिक समाचारपत्र १८० में स्वापित। उस समय

यह मुरोपीय छोडमत्रका प्रमुख गुक्यक था।

शिका माराणीय राष्ट्रीम कांद्रियकी विदिश्य समिति क्षेत्रका मुक्यक। विकियम विक्षिक स्थापाक्कलमें १८५ में कारप्त हुआ। १८५२ तक गियमित
करते गिरुका। बाहमें मारिक बन प्रमा और १८५८ से १९२१ सेक साराणिहरू क्यमें प्रकाबित होता रहा।

क्ष्मोगित्रक वास्त्रिय रेक्स्स औरानिवेधिक कार्यक्तम स्थापके पुरतकाकममें स्थित। इसमें बहिया साराणि सामध्यक्तमाली स्थित कार्यक्रम देशकर

कौभी स्वारक पंत्रकृत्वय नई विस्ती गावीबी-सम्बन्धी साहित्य कौर कायक यकौंका नेजीव मंब्रह्मस्य तथा पुरत्वतालया । वैधिए खब्द १ पूछ १५९। व्यक्ता साल मंदिरमा एक प्रमक्ष भारतीय समाशास्त्रका । १८६१ में बार समाशास्त्रीयो सिक्क जानेपर इस नामसे स्वारित हुआ। उन भारमें व नान्ने धान्ता नामक यह १८४८ में बारम हुआ था।

विभन-आफिकी सरकारके कायअन्यन प्रिटीरिका और पीटरमैरिस्सर्वर्के आर्काक्ष्यमें: पिक्रम स्वर्ग्यक्रमर वर्षतसं प्रभावित वैभिक समावारसमः!

पेसक सम्बुर्ण वर्षनिक प्रकासित हैनिक समाभारपत्र। संसामी एक बमानेमें कक्कप्रोत्ता प्रमुत समाबारपत्र। १८६८ में साना हिन्दके रुपमें स्वापित। १८७९ में बुरेजनाय बनवीने से लिया और १९

ाहुकक रपम स्थापदा १८७९ म गुप्तमाय वनमान छ।स्या मार १९ में उस दैनिक पत्र बना बिमा समा पीवन-मर असका सम्यादन दिया। बम्बई-सरकारने कायजनार्वीमें मान्त पुलिसके गोगवारे।

स्मार्क्तरावारत कायजनात्राम प्राप्त पुण्नमक गामकार। *सम्मे गजड* १७९१ में स्वर्गत नमाचाम्पत्रते नगर्ने स्वापित। सीझ ही अर्थ-नरकारी मृत्यपत्र वन गया था।

मालगीके माधन-पश भारत-सरकारक कागज-गत्र नेसन्त वाकदिका नई दिल्कीमें। सावरमती संब्रहाक्रय अहमदावाद इसके पुस्तकाक्रयमें मांपीजीके दक्षिण नामिकी काल (१८९३ १९१४) और चन्नचे पूर्वने बहुत-से कामज-पन

*11

मुर्राजित हैं। देशिए सण्ड १ पाठ १६ । रेटेहरमेंग क्रमकतका विधान अंग्रजी दैनिक पत्र। १८७५ में आएम्म। १८७७ में १८१८ में स्वापित मेंद्र साफ इंडियामे प्राथम वनतीन व उससे कम्प्रिक्ति क्यमें निक्कने क्या।

विन् महासस प्रशासित प्रमुख भारतीय समाचारपत्र । १८०९ में साप्ताहिक के न्यमें बारम्म हवा १८८६ स मध्याहमें तीन बार निकलन क्या और toce if the and

तारीक्षवार जीवन वृत्तान्त (१८९६-१८९७)

((014 1-10)

१८१६ कुछार्व ४ - याभीजी ५ चूनको वर्षमधे रचाना होकर करूकले पहुँचे। इस्पेहा

बादके मार्थते बाबकि किए रवामा। इसाहाबादमें गाडी कुछ बानिके कारण एक दिन ठहरे रहे और अपोजियके सम्मादक भी पढ़नीसे मेंट की। बादमें भी बेबतीने मेंटका को विवरण किला स्वता उत्तर उत्तरामांकी भीव रही विश्वका समिता रहिलामा नेटाकों मेरी हरवाका प्रयत्त हुआ।

नागपुराजसकासान्तम् पारमागन्दाकम् सराद् नुस्तर्गः राजकोट पर्देचे।

बम्बईमें क्लेम फैक्नेपर राजकोटमें सफाई-बमितिमें शामिक हुए।

भगत्य १४ - राजकोरमें इसे कुतितक प्रकासित की। भगत्य १० - राजकोटसे बावकि सिस् रवाता।

नगरण १९ - बम्बईर्मे चनक बदरहीन तैयवंत्री और भीरोजधाह मेहतासे मिछे। सिक्ष्यर ११ - बीमार बहनोईको लेकर बम्बईने चमकोण्य निय स्वास

मृत्युकं समय तक उनकी सूच्या की। विकास १४ - बंदनसे अनेन सेने हुए समदरके तार (केनन)में हुए तुरितका

तिकत्तर १४ कंशनो अर्थन जेजे हुए शायटरके तार (क्षेत्रक)में इंग्रे तुरिक्क की धामग्रीके वार्रेमें आमक तमाचार प्रचारित।

शिक्तन्तर /६ मेटासके पर्नोमें रायटर इत्य वारते मेन यमे वारायके मना विद्य होनेचे प्रवेतके पुरोरीक तड़क मने और उन्होंने पूरोरीय वंदसन वप (पूरोवियम बोटेकान अमीनिएयन) ना सबक्त निया।

(यूरावयम बाटकान समामध्यम्) रा सब्दन रचना शिक्त्यर १६ बार्वाईमें फ्रीरोजनाइ मेह्दाकी अस्पक्षक्रमें मार्वजनिक सभामें

मायन दिया। निजन्म १९ वम्बईरी मनाने रणित्र वाकिकावामी मार्गायंकि प्रति वृद्धीवद्वारना विरोध और भारतमध्यीको सिकावर्गे कुर कालेके तिय

प्रार्थनायत्र चेजनेका निरुवय किया। सन्ध्यार १ - नावीजी वस्त्रीय पुनाम सरके मदासक निर्म स्वासा। मन्दर /? दिन मन पूनामें ठहुरे। गोलक कोकमान्य तिषक और डा माध्यारकरम मिने।

मन्दूषर /४ भग्राम पहुँचे ।

णक्टूपर १६ पर्वेषच्या कालेज सदासके समा-सवसमें सार्वेजनिक सभास भाषक दिवा।

भारत्यः ११ नागपुर होका अभक्त पहुँचे। मुख्यनाय बनवी तथा गीपननके सन्य नेतावीति मिल।

भगन्तर ११ - प्रवेतन्त्र वात्रा अन्युस्तावा नार अन्वहं पर्वेत्ता जिनमें गोपीजीको नैदान वापन बनाया गया था वधाकि फोरमगट (संसद) ने सिद्धारिए की की कि मारतीयोंको पृथक बलियोंने प्रवेतेके किए बाव्य किया जाय।

मान्यर /३ दक्षिण वाकिकावानी भारतीयोकी नमस्यापर *देखिनामेनको* पत्र विकास

माम्पर १४ (१५/) वानई वहेंच।

नागर /६ पुता गय का मार्वजनिक नभान वरबाववानमें श्राम रामामें यापच निर्मात

नगन्तर ह बाबई बागर।

राज्य १६ दरेनक पूरोरीयोधी आस मना — कम्पता नगरन वयर। उनके परिवासकी जावनत और बातनी निजा। माधीओरा नाम निज्ञन र रेग्रेगोरी "तीनी" दी परिशान-कुक्क आवार्व। औरतिर्वासक रामभार वस (क्योंकिक वीरकीरन पुनिका) की स्थाला।

कामा । पार्थार्थात बाह्नगायी नाम कनकन नार भेजकर उनका स्थान नामपार-पार्वापक इन निष्यपत्री और जार्वनित दिया हि सार्थार्थीके पुकर बीर-पोर्थ रनकर निय जाय दिया जीने पर्योग्यी कीर संपूर्ण जास कुमीं हुसार बाजदिव स्थान आदिकार निय स्वानः।

ि प्राप्त नाव कुमार द्वारा बाबरन सामय आधारत तमा स्वाना । विप्ता १४ कुमोंड और बाहरी बराज आस्त्रीय यावियांकी सबसे दस्त कोहे।

्टन एर्ड । (रिन्तर १६ - बरबई प्रदेशन कुछ लिकाम बना बैंग गया है इस बाग्एसर - विराज्यस्य एक मुक्ता प्रवासित कार्य सम्बंधियसम्बर्ध संबीत्र स्थान नोधित कर दिया। जहाजोंको योच दिनके किए संक्रमक्ष रोग सम्बन्धी सूरकम रक्षा नया जीर सह जनवि बोड़ी-बोड़ी करके ११ जनवरी तर्ण नहार्ष गर्दे।

विकलर २५ नामीजीन सङ्ग्यावियोंकी विकास-विवस समाने पारकार्य सम्मागार व्याकार विजा । बार्स नेतृतको समाचारावीने उत्तर सिटाकके मोरोकी बोरदार निष्या करने सीर "नेतृतको मार्खावीन पूर देनेकी रुक्का का बारोप नगाया।

विधन्तर २१ वर्षनके मुदोरीचाँने निवारन प्रकाशित किया कि भारतीयकि बहानय उत्पर उठरलेके विरोधमें प्रदर्शन कन्नेके विश्व बनवरी ४ की समा हांगी। ममाचारपत्र एवियादमोके आक्रमच की कहानीसे सर नय।

विराण्य ११ कथकतेर्मे मारतीय राष्ट्रीय कावगका विशेषण नेटाभ भारतीय वापेगरे मितिगिषि वी यो पिल्लेने विग्लें नाशीबीने तैयारी भागक मेवा वा विशा वाधिकाके मारतीयोवर रात्रे वाधा-नियेवीके विरोव वीर सरकारण विकासते दूर करानेकी असीमका एक मस्ताब येग किया वो मंद्रु कर किया गया।

1 10

शनक्ष्णे २ केंग्रख इंडस्टीश्नुरमें एक पत्र प्रकाशित तिसमें माणीजी तथा उनके निर्मोका प्रकृतमें अतरमेपर उपयुक्त स्वातन करनशी कार्रवाहयोका समर्थन।

वानकारी ११ पाणीन कुस्मेंड बहाजार मेटक राज्यमंत्राक प्रतिनिक्षिणे भेंट। प्राप्तका ५ वर्षे बहाजी उत्तरे वर्षकारी भीता इतार उत्तर हमणा परापु दुक्ति मुराव्टिटिका पाणी भीतारी बाकडेडेक्टरे बीचर्च पानेते कारण बातक प्रहारीन क्यापी। बावसे पारती रस्तप्रवीके मधानमें बेर निये पापे परास्तु दुक्तिम मुराव्टिटेंट अनेकडेबट तम्हें मारतीन दुक्तिम-प्रिपाहीरा हेम पारंच कर्मा कर निरास्त कार्ये।

वानारी ? वानान्य प्रकारणे वटनाकी रिपोर्ट व्यक्तिका-माणीको भेत्री बीर गालीबीयर दोपारीयम किमा कि व मेमीक बीर वर्षी नजाह मानार बहारमा उत्तर।

Y14

जनवर्ध २२ मोइ हारा बाक्रमण्यं समय भी बौर मीमठी बकवर्वेडरने वा भवर की थी अमझ लिए उन दोनोंको सम्मवादके एवं किने भीर मेंटे मेनी । जनवर्ध २८ दावामाई नौराबी हुंग्ट बौर भाषनपरीको खार मजरूर

मामलेकी लगेला कर की बागे।

वन्त्र १९ - बाबामाई मौराजी हंटर और भावनपरीको वाट मजरूर - वहाजस स्वरते समयकी बटनाओंडी सूचना थी। सन्वर्ष १९ - सारकी पटि करते हुए उन्हें एक किसी और सर्विकर

णानकी ११ तारकी पूरित्र करने हुए उन्हें पत्र किसे और समित्रतर नयात्रार स्ति। उत्तरी ११४ सम्बदारोंमें पत्र विस्तरूप आस्त्रीय अकान-मीड़िय "महान्या कोपके किए क्यूनेको अपील की और उसी मोर्सनसे हिसी

भीवी तथा कुछ जाम आरतीम माधाजोंने भागोको परिपत्र मेव। इन्हरी ६ वर्गनके पर्मोदरेशकोंते जडाम-पीड़िगोंको सहामतांके किए नोमोंका मोत प्राप्त करनेको जगीत को। मार्थ १ नेटाकक मन्त्रिकोंने सवर्गनको सुचित किया कि बांधीजीको चोटें

गम्बीर मही वी और "उनकी रुख्यके अनुसार, सांति-भेग की जापेक गम्बत्यमें कोई कार्यवाई मही की नई। मार्च १५ मारगीम-विशेषी प्रदर्शन तथा समक बावकी पटनायोक बारमें

भी केन्यरमेनके मास प्रार्थनायक पूर्व किया।

सार्व ३६ नेटालकी विवास-निर्माणी संभाविक विवासामील भारतीय

विरोग विभवको । वकान-नन्मता समावाक विचारमा । विरोग विभवको सम्बन्धमें उन समावोंको प्रावेगापत । अनेस ६ प्रभावसानी विदेश तथा जारतीय सिवोके नाम एक परिपत्त

निमा और उनके नाथ धानरनेनको प्रीयत प्रार्थनायक्वी नक्ते सेनी।
पून प्रार्थनाम भी धेन्नरक्तको सेनेनेके विद्यु नेनानके ग्रवनेरके सुपूर्व।
राजने प्रकारने प्रार्थनाम स्थापन

अस्तिक अन्यादिक भागा का अन्याद्वा कर्मा अस्ति । अस्ति अस्ति अस्ति । अस्ति अस्ति अस्ति । अस्ति अस्ति । अस्ति अस्ति । अस्ति अस्ति । अस्ति ।

पन-स्थवतर मसाचाराजांको प्रशासनाथ प्रेरितः। भैनतः ११ मसाचारपर्वीते चिन्न वर नारतीयीरी सामनत सवा बामके भावत्यत्री जाने विकार किया गाँव जारतीरात प्रशिवार किया। मर्पे ७ केमीय अकास-पीवित सहायता काप कसकत्ताकै अध्यतका सचना को कि नेटाछ≭ मारतीयोने पौक्तिकोरे सहामतार्व १,५३९ पाँड १ वि ९ पेला चन्दा इकटठा किया है। प्रिटोरियामें बिटिस एवेंटस मेट की बीर किसित क्सीस पैस की

कि १८८५ के कान्त ३ के वर्ष-सम्बन्धी परीसारसक मकवसेका सर्व

नम । सत्क विकता-परवामा प्रवासी प्रतिबन्धक और गैर-गिरमिटिया मारदीय संध्यन विधेवकोंके कातन बन जानेक सम्बन्धमें इंटरको तार। कर २२ महारानी विक्लोरियाकी रजत-जयलीके दिन भारतीय पुस्तका

विदिस सरकार बरवाक्त करे।

क्तयक उदबाटनके अवसरपर भाषम विद्या।

सम्पूर्व गांची बाह्मक

गुर्सा ? विटेन तथा भारतके कोकरोबकोंको भारतीय-विरोधी नामुनाक सरकारकों परिपन्न क्षेत्राः। *चितन्तर ११ - वॉबत प्रवासी होनेके बारोपमें जिन मास्तीयॉपर मक्दमा* बसावा गया वा अनकी पैरनी की बीए उन्हें बूहा किया। वितानकर १४ पारमी नस्तमनीके दानसे और बा वृत्तकी वैकरेकमें बर्वनमें

नकार्व २ चार्थी भारतीय-विरोधी काननंकि बारेमें थी चेम्बरसेनको प्रार्वनायन ।

एक मारठीन सस्पताककी स्थापना जिसमें बादमें गांधीजी दो बच्ने रीज बना-बाक वेनेनाले सहायकका काम करते खें। तितन्तर ? संदनके जीपनिवेशिक प्रवासमंत्री-सम्मोदनमें भी चेन्वरलेशने को भाषक दिया का समझे प्रक्रिताकोंके सम्बन्धमें बादानाई गौरोजी किकियम केवरकर्त और काम स्वक्तियोको पत्र।

क्वान्तर १३ - नेटास सर्वारी और औरतिवेधिक स्विवसी पत्र क्रिसकर इस आरोपका प्रतिवाद किया कि प्रवासी प्रतिवासक कानुसदा उस्प्रवस करनेके संगठित प्रयत्न किने का रहे हैं।

बयन्तर १५ नेदास सर्वारीको पत्र-उसी क्रियद पर।

मकन्कर १८ औरतिवैशिक संविवको पत्र-स्ता विवय पर।

तिसन्तर । एक ईसाई मिसनको समामें सम्मिनित और एक पारसी बाता (रस्तमणी?) की भोरधे एक नंकीका बात।

ढिप्पणियाँ

बार्कीनम् दक्षिण रैस्बेका एक अंक्सन स्टेशन। नासन्त्रोतः पूर्वी मारतीय रेडवेका एक अन्यन स्टेशन-क्रकत्तेसे समसय ७ मीछ। क्षेट संबनः रूप कास्रोतीना एवं कस्वा। देखिए खण्ड १ पृथ्य ३९२। एकाविकार, एकिकावेब-कालीतः इन एका विकारींका प्रवसन मोटे तौरपर इस समारूस हुआ वा कि देसकी छप्रतिक किए उद्योगोंकी वृद्धि सीर विकासकी माक्त्यकता है। इसके मनुसार उद्योगपतियाको भपने-मपने उद्योग बढ़ानक लिए संक्लारस बिना स्थात ऋग और अपन कामकी सारी उरम या कब्बा मास खरीब सनका एकाविकार प्राप्त होता या। यदनेमें घरराएको भी हुए होता वा कि यह उनका तैयार किया हुआ सारा सास करीर है। ये एकाविकार दर्भवर्में रानी एकिवाबेवके काममें प्रवस्ति है। एस्करक, तर हैरी (१८३८-९९) - नेटाकक प्रमुख एक्कोनेट और प्रधान-मात्री। विकास समझ १ पुरू ३९ । पुस्तकोर्ट (बाइँस्डकोर्ट) नेटालका एक गस्त्रा। देखिए कन्द्र १, पृष्ट १९ । कार्टियानाङ् सीराप्ट् सव वस्त्रद्दै राज्यका मागः। भैरवस्तुवः वर्धनमे २३ मीकपर एक रेलवे स्टेमन। पोबले, योपाल इत्य (१८६६-१९१५): भारतके एक प्रतिध्वित नता और चंदनीतिज्ञ। इनकृत प्रजुकेशन सोसान्टीके करम्युतन कासेजर्मे गनित क्षेत्री और राजनीतिक प्राप्यापक। सक्तिय राजनीतिमें प्रविष्ट १८९ । भारतीय विशः-स्थमन्त्रापर वेल्बी आयोगके सामने यवाही की १८९६। वस्वई विवास्तरियदके सदस्य चुन समै १८९ । सारण सुवक समाज (सर्वेट्स नोंड इंडिया सोमाइटी) ही स्थापना और कार्डेसक बनारन अधिनेयनके कप्पत १ ५। पानी क्यान परिषद्ध सदस्य १० २ स १ १५ तक ^{त्तु द्}तियत्ते शिक्षा-सम्बन्धी नामकोर्ने बहुत दिनवस्ती की भीर प्रायमिक

पिता विषेक (एन्सिनेटी एक्टेसन किन) पेस विमा कोक-सेवाओं

Yte सम्पूर्व गर्वेची शास्त्रवर

सम्बागी पाडी मायीयके सबस्य बने । बक्षिण माख्यिकोके मिपीमेटिया भार तीयोंके पक्षमें बाखोक्त किया और गांधीओंके बामन्त्रपर १९१२ में दक्षिण जाफिकाकी यात्रा की।

चार्स्तराज्ञनः नेदासका एक कस्या। देनिए क्षत्र १ पट ३९२।

बेम्बरलेन बोबेस (१८३६-१९१४) ब्रिटेम्फ्रे चपनिवेध-मन्त्री १८९५-१९ २ । विक्रिय सम्बर्ग १ पुष्ठ ३९२ । भौनिसाका हमका (भैनिसन रेड): १८९५ में बिटिस साउप माफिका कम्पनीके प्रशासक दा जैमिसनका कैप कालोनीसे ट्राम्मवालपर हमला करक जमे हस्तगत कर सैनेका प्रयान जो विकास कर दिया गया । परवेशियाँ

(एटकॉंग्डर्न) ने घरा नमय ट्रान्सवाकर्ने बतवा करनेकी भौजना बना रती थी। बा जेमिननने यही मौता नाषकर इसका किया था। परन्तु अक्रमा हुआ ही नहीं। जैमितनको सिरफ्तार कर किया क्या और बतपर मुक्दमा भनाकर चने नवा री गई। यह इसमा और बिटिश शरनार हाए इसना राप्ट प्रतिवाद व निया जाना जाने चनवर बोजर-वज्रवा नारन बना।

बंदी: नेटाएका नस्ता। देशिए एक्ट १ पुटा १९२। बर्षो, अर्ल आब (१८२६-१८९६) : विटिश पिश्वर, जिल्हीने भारतमन्त्रीकी हैसियतने १८५८में भारतका धालन समाजीहे अधीन करनेका निधेयक बजूर करावा था। १८८२ वे १८८५ तक ज्ञानिवय-मन्त्री।

निमर बान पंपाबर (१८५६-१९३): भारतर महान राजीय नेना बिरात और बबकरा। माबारयन "सोकमान्य करे जान ग। दराज एकवेत्रत नागर-धि पुतार गर गरवारर । प्रधावधानी पत्र। वैतारी और

माराके बर्गका वेमगेन तेम तिमार गानाची बाधाना गरना कारम ६ क्टीका काराबाम-दरह भोगा। कादेममें गरम दल^म के नता। "बाब बार" के बाप मुराने शरहर बार १ १६ में किर बारगीर राज्यात कायनमें गाहित । होनकन मीहकी स्थापना की और मगनकश मिन् शांत्रक संबक्ती हो बारेने में महर्गा रहे। १०१ के "बारत मानन रियार" ब प्रति भारती राश प्रतिविधा व विषयि विश्वा आश्वापना विविध बारते लिए बाबेगरे इस प्रतिनिधरी रेथिरात इसीह तरे। सीमानस्त्र ति सर्विभीत ति सार्निन्द्र होत हम इ देशाल सना अन्य यंत्रीके प्रतान

बारामाई नोरोजी (१८२५-१९१७): पथरर्शक भारतीय राजनीतिम बहुपा "भारत राष्ट्र-पिदायह" (दि प्रैड बोस्डमैन मॉफ इंडिया) करे जाते है। १८८६ १८६६ और १९ ६ में तीन बार श्रोसके थम्पता चूर्न गय। १८९३ में ब्रिटिय संसदके सदस्य वन और कारतीय राष्ट्रीय कीवसकी विदिश्त समिति अंदनके प्रमृत्त सक्तम रहा।

मरसक्त साई: ब्रिटेनके सप्तिकरा-मन्त्री १८८७-६२।

नारपुर: यहभेड मन्यप्रदेशको जिसका एक माम श्रव बन्धई राज्यमें मिका दिया पना है साजपानी।

कोसारस्टः नेटासका एक करवा। वैकाए सम्बद्ध १ पूछ ३ १।

कार्देशकाः एक जिला जा मुक्तः उत्तर-मश्चिमी बृश्तैका हिस्सा वा ^{पान्}द्र बारमें ट्राल्मबासमें मिला दिवा गया। बंडीये आभवासी रखबे साउनका एक क्रम्बा।

बनर्जी, सर बुरैन्द्रमाच (१८४८-१९२५): भारतके एक प्रमुख राजनीतिज्ञ देनिए समा १ पुछ १०१-८।

बाम्बे प्रनिदेशी महोतिएगन १८८५ में बम्बईमें स्थापित संस्था जिनका वरेंग्य यह जीवन और बैच अगापीन सोन्धिनकी हिनावत और वृद्धि" गाम प्रमा

विष्ण तर हेनसे (१८६७-१८९९)। नेराएक प्रमुण स्वयातिम भौर प्रवासमन्त्री हरिया गावह १ पुष्ठ १९४।

विदिन्न समिति भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसली संदत्र । भर विकियन नेवरवर्तती कराधनामें १८८ में पंगठित। वाहामा^त नीरोडी बक्त्यू एस केन िन्यम हिभी नवा थे हैं एलिस इसके मूल सरम्यों में वंश इसका ^{एट} बुस्र नश्य था. "विद्या संबद्धर नगकी जिसने नाथाने राजनीतिक ^{मुना} होती सुनिक सामास करेन क्^री उठ का क्योंने प्रति पावट करना श्चितरा इ रेम्ड भारतक प्रति न्यूमी है।"

भाग्तारकर का राजपूर्ण भागाम (१८३३-१९२५) प्राप्तः विद्याने कार्रादीय करानियाल आबारे। कार्क विवर्षयाध्यक परवृत्तानि

वारतराज्यो विकासरियस्य साहबा सराज १ ३ बार्बा विकास

सन्पूर्व गांदी वार्मद

परिवरके सरस्य १९ ४-८ हिन्दुअँकि सामाधिक तथा वार्मिक मुवार सम्बन्धी सान्धोक्तर्नेकि मेता। भावनगरी, सर मंबरबी मेरवानबी (१८५१-१९३३): भारतीय पारती

पिक्षित करनेमें बहुत सहाबता पहेंचाई।

44

सकास टाइम्स भदासका एक संभाषात्मक जो बन्द हो थया। बह १८५८ में भी विश्वका या। मद्रास पहाजन सभा मद्रास्तर नागरिकोकी एक प्राविनिविक समा १८८१ में स्पाधित। महास स्टेंडर्ड: एप्टाइमें तीन बार प्रशासित होनेवाले पवने क्यमे १८७७ में स्पापित । १८९२ में दैनिक बना । १ १४ में सीमती एनी बसेंटने ही किया और उमका नाम बदक कर न्यू वंदिया एका।

बैरिस्टर, जो इंग्लैंग्डके भिवासी बन पर्ये थे। यनियनिस्ट इसकी और से बस वर्ष तक बिटिस संसदने सदस्य रहे। इस हैसियतसे और मारतीय राष्ट्रीय कार्यसकी कन्दन-स्थित बिटिस समितिके सदस्यकी हैसिक्टसे इन्होंने विश्वम बाफिकावाची मारतीयोध कप्टोंके सम्बन्धमें बिटिश सोकमतको

मालाबील-पुढ - उत्तरी दान्सवाधर्मे टान्सवाकरी ग्रैतिक कार्रवाई (१८९४) विसंका तहेक्य बहाँकी सामाबोक जातिको अधीन करना ना। नातिका यह नाम उसके मुख्यियाके नामपर पड़ा है।

माजीनातेड: पश्चिमी रोडेपियाका नह प्रदेख विश्वमें सोना पाया वाता है। मेरावेले लंड: दक्षिणी रोडेसियाचा एक जन्म प्रदेश जिनमें सीना पाना वाता है। यह 'मेटाबेले' जातिका निवास-स्वान वा।

मेलमोबः प्रतिदशी एक वल्ली और एक विमाण मी।

मेहता तर फीरोजधाह (१८४५-१९१५): मारतीय कापसक एक प्रमुख नैभा देखिए अन्द्र १ पछ ३ ५।

राजकोड - मीरायुका एक मृतकातीत देशी राज्य। वांबी-बुट्म्बका एक-

राजीत निशास-स्थातः।

रामडे, महारोग मोनिम्ब (१८४२-१९ १) एक वराम्बी भारतीय नेता समात-मुवारक और धंबकार। स्थाय-नम्बन्धी अनेक पदोपर रहनेके बाद वाबिरमें बस्बई उच्च व्यावास्त्रके न्यायाचीस बनाये सर्ग। बस्बई विभान-परिषदके सदस्य १८८५-९३। अपन समयके समात्र-मुदार जान्दोलनीके नेता । नहा-समाजके समान प्रार्थना-समाज नामक वार्तिक संस्थाकी स्थापना की। सर्वेवनिक समा पुनाकी स्थापनामें सहायक हुए और १८९५ तक उत्तका काम करते रहे। मारतीय राज्यीय कार्यसके मंस्वापकार्में स एक।

राजिन्सन सर इक्पुमिस (१८२४-१८९७) विश्वण जाणिका स्थित उच्चा वृत्त (हाई कमिरमर) १८८०-१८८९ । १८८४ के कंदन-समझीतकी घर्ते नैवार फरनमें बीन दिवा। १८८५ में बेकवानामैक्से बोसराका विद्रोह वनानमें मदद की। १८८ में अवसर सहज किया। १८९६ में फिरस बीसन वाकिताने निमुक्त किमे गयः परन्तु अन्वत्मकाकं कारण थाहे दिना बाद भागपत्र हे हिमा।

दस्तनमेः पारतीः नटासके एक प्रमुख भारतीय क्यापारी। देखिए सण्ड १ पुष्ट १९५।

र्नेडन-सम्मौता (संडन कार्येशन) - ट्रान्सवासनाधी प्रजाक नागरिक समि नारोंके तम्बन्समें बीबरों और अंग्रेजीके नोच हुना १८८४ का समझीता। विभासका । पछ ३९५-९६।

सेडी रिमकः इर्देन ने २ ६ मीक्यर नेटाकका ग्रीमरे नम्बरका सबस बड़ा सहर। वदरावः वाश्यितवाङ्का एक एकवे-अंवसन राजकोटसे वस्वईके मार्गर्ने।

वाका कर दिनता प्रदुक्तवी (१८४४-१९३६): भारतके प्रकृत पारती राज नीचित्र जो कावनवी स्वापनाके नमबसे ही उससे सम्बद्ध में और १९ १

में बनके नसकता अधिनेधनके अध्यक्ष बनाये यमे। नित्तीय विषयोंके व्यपिकारी पश्चितः। बाहमरायकी विचानकरियक्के नामवक स्वस्य ।

वैश्राक्ष्में सर विक्रियं । भाग्नीय सिविक सर्विसके एक मरान्त्री सदस्य । बादमें नाणीय राजीव कार्येममं धन्वन्य कोई हिमा। बन्तिण नण्ड १ पृष्ठ १९६।

सार्वजनिक समा, बुवा सानडे तथा यथारा बामुदेव जोती झारा १८० में स्यातिन । उन नमय बहु भारतको एक महत्त्वपूर्य राजनीतिक समा भी । हेड६ मर विसिध्य बिस्सम (१८४०-१९) बारगीय निवित्र सर्विनचे देक विशिष्ट सहस्य। लेखक और जारतीय सामग्रीक अधिकारी विज्ञात।

देशिए सम्दर्भ पुष्ट १९।

सकितिका स्ट व डिज्लाजी लोइस्ट २६, स्ट

हारा क्लंबनीयें परिकांत ६५. र

देखिया भारतिस काको हो रेक्ट्रेंस आद

🛍 किसावेंट २९ ६९ १२३

क्षित्रक १६ १८ ८५ १६३ १३६ १

SPERME IN YER

र्शन्य (निश्व) १६९

समापी व च≥

text t

नाकोत्तर, १५४

(Y 13

भंद्रेत कारारी ५५

चा दि

नारम वण्डका धनी ५ नारम वण्डकरीय द्वानी ५४ १९७,२७५,

मानद, क्यान, १९३

137 136 14 10A

भागोन, सिंह मीर-भेडन, २१ का 🌮 🛊 ६ ६

रध्य १५ – धरा चर्मनाने कर्मन्ता

भवाक-मञ्जूष (चेथिन वमिश्तर्) १४५	लारेंच की क्षेत्र २, ११ ५९, इट ४
प्रमुख्य १	०० ८९: १ ३ १५९ १६५ वह
भन्तका राता १ ४ ४१३	रक्प १८९ मा हि ,⊸की देवानि
मन्द्रका, शेष्ट्र शास १९२	एकपूमि <i>चर-</i> भः, –म् महतीवृद्धिः ।
मन्द्रका, दात्री, १९६	THERE IN ELYO OF EL 297-
मनद केवनी ५४	रेक्ष्या —का सक्त व्याकारीय पंच
मोरिका है है	रिक्किक हो, कर ३५२
भारत प्रयुक्ति भार बच्च देश - १४५	नामेंस्ट्रान डी॰ २२३
यह यहा सहय	मामिटम से सी १२३
पर्क शस्य १२३	मार्थिनियम ११८
नकेन्द्रेंबर भार सी २२४ इ२१ ४१४६	बाक्सो≢ १६
राज्य गांचीओं वृश्चिम क्रैक्स ग्रहणाने	માસ્}લિમાં પદ १६ ६.૨ ૧.૬ ફ
पर्वे १२६	568 140
नक्षेत्रीयरः ग्रीमही नारः सी १७८, ६२३	नास्तिन २२३
४१४ ४१५) –दारा वर्षिण रहित १२६	<i>वेश्विदामेन</i> ११९ १४६ १४७ १४ ^०
मस्स चं≼	54 Xt Xts
वसापारंग सरकारी गळाइ २ ६	स्बंह छ इरे छ े र सुट
भर्गस, करमान, १९२	रेस्ट रहफ रस्क रचट रहक रह
कविथी, मोबप्पर कार्टिम ५४	the ter for top tax for
मामानीर्थं ५४	\$22 \$20 AXX \$5\$
*******	इंडियम भागिमियम १५६ मा दि



5	सन्त्ने गर्व	वारुमव
न १६ दर्श देश है कर के देश है कर के देश है कर देश है के देश है कर देश है के	२२६, २३४ १३५, ३३६ १३६ १३६ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५	मुझी निवृद्धी व व ४ देवं विदेशी होंदि देवं व ४ देवं व विदेशी मिलान होंचाल कर विदेशी होंदिन ह
नाबस्तर, ४९ केप शास्त्र, १८ १ केर निवासमध्य १	–વે રેવ≁–વેર હ વેખવે <i>જા</i> ક્રિટે	ना कि उपर इंपर इंपर इंपर इंपल इंपर इंपर इंपर ३ ९
केर-मरकार १९ कुशारी देगिए १३९ कॉस्टॅम्स २ कर		वा वि ३९ १९६, १९८ ४० वा वि ४४ ४००६,४००६,४०८ ४९ ४११, ४१३; व्यक्तिसको सहस्रोनीत सर् केलेबा कटर सौर
संस्तर देश स्रोतः, स्वत् १२३ सम्बद्धेन, बॉक १९१ स्वतन्त्रः, स् ४१ स्वेतन्त्रः, सी १९१ स्वेतन्त्रः, सी १९१	τ .	तार्यक्रमेक जोक्की वर्गेन, (१४४ इश्या) क्राप्तिक क्षिणी प्रशासके कारोक्का करण १०१-च, १४५ क्यानिक क्षिणीक प्रमूचित्र , ५६-व्या , जोस्क्रितिक मान्त्रिक सामये केव्यक्रमेक मान्य १६८ १; मीचनिक्रीयक सुस्कृत्य केव्य
स्तातका २५३ स्ता, महरूको स्मि	1, 44	धार्मसङ्ख्या कर ५ ४। वर्षेट कनाइकी नवास १६-९, ९२-४ ११४-४।

बन्द्रसावे स्टेन्समेन को इमसिक्समेनके कामविभिक्षिति सम्बद्धाः, ११५-८ (४९-०) बाल्सी हंग हाया-की बकास्तका विरोध ४ वा टि; निर्दिशीया बन्ध्राचीर सङ्ख्य बार्स्टासक बीच करेंबर, १३; शामाना वंच केंग्रेच्य शास को, बरा राम्यानक मत्त्रील और कुछ र्वातारी १८ १४९-५ ; स्कानीना-के क मारतीयों कर, ४४: दक्षिण माजिकाको बाक्त १६६: दक्षिण जाविकार्थे नम्त्रांनीक विश्वा कर कर, ३३४; रहिन मारिकांच मार्शामीको हाला पर करून १०५-३२। रहिम महिमाने बहरीय बढानोंदे किए क्षेत्रें राज्यां १४६-७- रक्षिण गामिकामें भारतीय-तिरोधी - बामूनों के क्रारंप का ९, १६, १९ ८६, १३०। बेरानमे बार्सानीक वासामिक्स कर १६८। तेराच्ये महत्ती वींक प्रति व्यवस्ति कोथी, ४ ११-व 11 -c 121 x 100-0 10c १३१-६) नेताओं नारतीय और व्रोतिय 43.8 41.30 to 60 oc 5 0 रे) है। बेटाक मत्रतील कोटन पर, दटा बेरान महत्रको जीवनिविक हेस सकते बला दिव । गते मानवानत कर — के विकास के प्रभाग मात्रामा कर to at an es title the alfaiten Eeter tija. bef-: बार्च कर-१ बोंके सिमान का बारेसे स्म्बन १०६ - इता प्रश्चीन संवितिक क न्द्र । बाराज्या वह । न्दा बताज्य कर भट र तथा हि । बर्गानकेश PRINTE PERSON WE AND MAPE Ber sein ti man ateiet toet A - 123) Hames (544- 0)

रदान्य १९१-२ १६६-४ १९५ वेभ । मारागिर्वेश प्रवास्तर, २. **११** افد د صد ودوسود १८८ २५९ १३५, १७६; मसर्तान भगारा मतिकामक विशेषक कर, १०३-४ इरेड्-६, इरेठ ३६४-६; मारतीय रूप्याच्छ रूप्याच्यास्य रूप्याच्यास्य स्थाप्याच्यास्य रूप्याच्यास्य स्थाप्याच्यास्य स्थाप्याच स्थाप्याच्यास्य स्थाप्याच्यास्य स्थाप्याच्यास्य स्थाप्याच्यास्य स्थाप्याच्यास्य स्थाप्याच्यास्य स्थाप्याच्यास्य स्थाप्याच्यास्य स्याच्यास्य स्याच्यास्य स्याच्यास्य स्याच्यास्य स्याच्यास्य स्याच्यास्य स्थाप्याच स्याच्यास्य स्थाप्याच स्याच्यास्य स् भारतीय महास्तिहर स्ट. १५ १९ el ci-a tan-o 116, 110 १४४ १६९, २६४) सस्तीन और बुरोरीय कारीनरोंका होत पर, १०६३ ममतीवीं धारा सीमोक्संबन कर १८२ नत्तान-विरोधी प्रदर्शनके कारकीयर रेक्ट १९९-२ १ २२०-२३३; मार्स्टक्-विरोमी क्**र्यक्रे** वरिमामी वट २५४-भा भारतीय-विरोधी प्रस्तीम वर १६७ रेटरे-८ १९९० का मार्तालोक अति नविस्तातका भवन ४४: महतीबीकी गर्ना महर्तो वट ४५ ६ वस्त मार्तावीक प्रवस्त रूपित विवे कार्य क्ट ११२) मलतीको बला मनाम प्रति-बरबार बाजूनका विरोध किये जान करा A S-OA AOP & STREET RUG fejethe etc.) at he tiet successive served that some मनाविद्या विमाद का १०-८ ४८ दर इ. १. ५. १२८३ व्योतिकां च enal for fee don that Per mirente alle unifalle unt सर १४४। सन्दार पराम वीनासर भीर बार्नीक शुक्रामधी राजा ३९ %। bu-tiem entielle un tien बरता क्षेत्रस ३१-४ ४४ ९१ tty ttt-at the tre सत्तरके तथ कार्तित क्यांक्री

म्पर्यं गारी शास्त्रव

पश्चित्र १८ १८५

वार्रेड देखियाँक, ३ ५९ ६., 🍽

०८ १२, १३:−मॅनहरीयेंदि

ध्यातम-बरदाने प्राप्त करने पर राह्य

क्ष रसः स्थित भरतनाविसक (बीम्पे साम्प्रात (स) वर ३३३ 104 1 / 1941 bu ein at पुरित रीक्षणको १२०० सम्बद्ध और भरगम्बद्धारियोके ग्यदन्त्रमा वर १४ 4 474. 47 443: ms fettel भर ३१५, ३६२ ३*६ स*डम्ब (शैर निर्विदिश) भारतीय सरपात्र विश्वदृष्ट . १९७८; इंग्री पुरितामारः १७ ३ CHE WART WE STE-OF THE नमती पुरुकाम वर्ष ३५०-८ ३५% नीमती महेर्दिस हमा-बी रबा २२३ योथी बाइनएस कामकर होतिए योबीची नार्षेट की एक देवेट The Park 189 मान्द भी दर निष्यास्य 💉 २९३ 押収 秋日 निकार, देवित हो। १९१ मिन्निस्भविष ३८६८ ९५**१३** 4 315 35 7 T निवसिदिया गारतीय के लिए जारतीय गिर किरीका SPORT HE HE E E E E E ESE gritta का रक्त संख्या करते करू 302 35 352 35 355 1 5 12 322 danes tea देशिया असम १५० माञ्चे की र र गो को योशक इन्स् ९७ ९ *सा दि* ty thy # fl vto

नीत्रसम्ही १२३

भीक (क्सान), १११

DT 31

the 43, 11

Y E

1 :- में महर्तारोंक श्रीत व्यवहर 1 पार्लशान्द्र ३, ४ ३४ ४ ०६ ११८ te tt va vv vte चीन ३ १ केमरूच (शेडक) ०८ ११ १६ १८ 36 34 12 4 61 61 66 though a territor રં કરમાં સ્ત્રર રસક દવન ta: 132 110 11t. 1Y tri tre, tre toe te मा हि १८८ १९७ १९८ ९४ र४१ २७१ श वि १३४ १११ IYC I'M. He INC IYe 346 348 ist 102 111 248 E\$4, 255 प्ररुप, प्ररेष: प्ररेटा - का भीवनिवेदिक sem afteilei nuft anet 35%-CITED THESE STREET क्रीकृति १२-३ ७३: इतालक्षेत्र विश्वमञ्चलाः, ५ ८९ ११८। नार्वास प्रवाही वरिवेचक **विवेचकर, ३९६**~८) मार्त्यान व्यावहरियों वर्ष, १९ ९४। DER STEFFEN FRANK DER danc, ser martina Par 4 12 क्ष्मीर १८ शा हि १५९ १६४ May. 2 3 44. 331 थंकर, २१३

थारि-बुद्धः १९

व्यक्तिक स्था

बीचा कासिम मोझबार, ३९५

THE REP

¥19 संवितिका टारम्म बाक इंडिया रायरेक्टरी. १६५ E 73 शास्त आहरियसः २६७ १५६ २७४ na come e e e e e e e e रहोत. मरारामा प्रवीतम् मेक्ट-३५१ ६ दो रेन्ड Rafts, 333 2. 24 42 42 44 54 ee to t e trutty sta वियोग, शसास्त्र ५८ -वें नवनावें के स्थान स्थापन सर शंक रियोक्त ही पत ५० हिल्हां र रम ८ **१९, १३ । १३**। ≔द मार्ललीका म्रोहण्यः १ - में बहुतीबींब मीला Dec. 812, 222, 229, 228 Ten en 544. मर्भाव पर रंग ६८ टेंगर एक्ट बर्म्स १९९ 0 P & W हालाल के देर देर देर देर कर कर कर -) क्या १४**३** a states of as at SELL a a a a 12 13 ידןל 613 १ / १०% शर १२६ १२३ ידף או זו זו זי*י זור* א מנ \$80. \$8E 145 144 141 * III III III TIT TIT TIT ere ere en ₹. मोरानिवर्षा राजन अगोप-शिवेशton ten and all the tell the tot loc कर्र का १६ ६६ व्यक्तिक \$ * * * * * * * * * * * * * * * FORTE FOR TO SYLW ४१६ - में ब्रिशियों और जमक्तियी क्ष अले बेप्रन्यानन्त्र १८ १११ कार्त्सवा इरे चका-की वैवानिक trt वरवृति ५६ ००-१ १ १ T 1 1 111 टान्नाम रखरीतार, १०१ PIPEL S AF AS AS AS रामात्त्व अत्य हितिन सार्ग ४, राज्याच्ये () 31 77 20 20 10 21 to states expects crace of the na-

सम्पूर्व दांची वाहमव *** हमंत्र औ, ४३ महतीलेकि प्रति लाखह २२० दर्भ २३ - २३६ २३३ - २३४ शक्ष सार चार तेर तेर 155 37 THE WE SEE WE THE

हमिक ३,१ २९,२३ ४४ ०४ ११३ 142 142 144 148 20Y 20E. \$17 121 240 151 155

to tel ter to tel किन्द्र, राष्ट्रपेयसा १४०,१६३,१६१ 382 383 384 38E 386 B

Yts Ytc 111111111616

तेक्कमी कार**री**न ४१६ Der ett att Ste see

187 186 181 186 187 181 **श्रंहर**र (लंदन टारम्स), ४८

tto tr tre tre tre

इक्षिम मधीका १ मध-तम 3 143 146 146 140

शासी संदेगाय १९२

दलकी, सप्रमान, ५९

कासकोर्य सार्व ७६. ४१८

सम्बद्ध १५६ ४१३ ४१*८*

निहोस्तादक हमा १९३

क्टिक बोकर्मी २६९ २००

Perc (redi), YE

न्त्रभेदम्बर् स्थारीम ५९

वेश वय-गर

बाल मन्त्राश्याम १४८ पा टि

मार्गी १६६ १७४ १८ १८६ १८४

24c 204 2 c 222 222 225

248 24 24V 229 286 286

210 271 279 241 4ct 2ct

201 200 201 212, 256 256 I C I C III III IN IN

TI R , two w t vit

dem Framm ? to be 14.

SUDSECT TO BE THE

tto tte - Till I'm ye

गारि ५३ (६) जनानम इ

६ ८१ १ : अस्त्रीयास्य क्षीस्य

क्षेत्रिया ३ अन्त्री समुद्र सामन

fire transfer to

ttt tie t y armi aftere

कर्दिनाक अंद्रिका अंद्रिक शिर्

हता.हार्या बोरम्पर-राभी ६ २२ ३४ ५८

188 186 109 100 116

Y CY UN YIU KI YIY

दिगर्स न्युज अस्तीय विरोधी शरईनस १३%

र्शान्तिकर्मा २५ २५८३ महरीय

हरणीयाचे (बांग्यको महीर्थन), ३ ३३

HER TAXABL

27 45. 04 OC CP 1 3.10%

रती कार्च कर कर

शाहम, हेंद्र सी १६६

र बार्यमा शीर द्यु १६८

बान शिक्कोर १४ मा हि

रमस्य १३

बालारे ३१४

वालन, २२३

fru, 121

SE 4 112

दिना भी १५

ti hom ac

(RiN) and on the

रेनी देवीशक र ४४

1 F THE \$ 1

err pr 11 150

more are

(11.27)

*दी र*फ *म्पज* १४६

YE YE YY YAL

विका विकास रेका प्रकार प्रकार प्रकार निवास के देवा - जातिकार विकास के देवा - जातिकार विकास के देवा - जातिकार विकास के देवा - जिल्हा का देवा के द

मेपान नाममें राम्ड १९१ देग्ल नामेंदे मेर्ने १९ ना दि सेमा तामेंदे मेर्ने १९ ना दि सेमा तामी बागून ध्वीचन नीपित्रम ने साम नामीद, भेषान प्रामीन मेदानी मेर्गा मार्ग्य स्वीवा ८८ना दि ९१ ना दि ६५ १९६ ना दि

^{मिराम} माम्बुटी १००२ - १९.६९ ८४ १ ६ १२६ - १८० - १९० - १

१९४ २३१ २५६, १५८ 248 9ct 1 2 1 C. 325 310 244 348 344 33 344 344 AV 147 1 4 346 344 ¥ ₹ YY You. Y 1, YOU Y 4 358 YIL इस्मालक **तुक्तालक सक्तरमग**र २**९ ६९**३ तुसी विद्षटीपर, १५ ४ तांचीओं के विकास विसाधकी गार. **११८-९: प्रवासी प्रतिवासक विशेषकार** १६3-४: मारतीय मतीक प्रतिन प्रतीको निगद अलेकी कुमार्गनगर, १६: पारतीय-विरोधी मक्तंत्रसः 181-1 180- HITTER POPE रेडा रेक्ट्रेंग सुती - महिलाहि साम वर्णेक्कर रा. ४२ ९३ १३ ३ क्षमाननीय अवतीयीकी विश्वपातीयर. क्टम्ब-विश्वपदः ३६ न्देः इरी मुल्लिमापर २ १ ६१८ ५

भेरान, मर्राज्यास्त्राणी (गरमी अन्तर) ९, १ ११ १७८ देखिण सदर-म्यापनारी भी

मेद्रास निर्देशतः २ १ १९२। प्रशानी रिलेक १८, २०४३ भारतीय विरीती प्रशासक १९१८-२३ प्रतिम शहक १२ १८, ३ ३

मॅसिनी १८ ४२ ६०,८५,१२३ १४५,४३८ अभिन्नी पापामार्गः भाषा टि १८६ मा टि २४९ ४१ ४१६ ४१८ स्पर्वेतिन ४ ४१ ११८ १९१

अपूर्वतिक ४ ४१ ११८ १९। अपूर्वतिक ४ ४१ ११८ १९।

मा हि देश ८९ व म ३५३ वर्ष

६म्प्य ५४ वर्षेत्रमा–स्थल, १.११ ४१३

कर माध्यवर अस् ही को प्रवृत्

X1

શ્રીસર્ભ વ્યવ

पीरन, १९३

पुना ९७ १

पीवर्धव एक २२३

tra tre

रेत. मी. ३५४

¥¥

क्तिक स्वक्तिको १९९-३ **१**४ INT. YOU WAY BOOK COL मितार पंचा को १९६ ३५०-१। मोक्के गी इन बी ९७ क्कडिक शक्तिको, ३३८ ३४१। हास्य कार्नेको,

३८९: **सम्बद्धां**को ६१ ९८-१ 13x- \$50 \$34-x Xf ! बाधमान नौरोनीको, ३६८-५; महराजे

बोअनेनडीको १३८-९ १८८। विदेश प्रमेको १६२, इ५१-ना विश्वासन भारमनीको ३५३; मैंक्लीन स्वासिस

बन्स् को, १४९; राजिन्छर, ने वी को १९३। देवरको, विक्रियमको, ३९९: हेर मिलिया विस्तानो १८१-८८ शरोडी फालून (श्रीन्तन्त देला) ३६८ ३०१

भरवाना (वारा कारतेन्स) ६, ११ १८ 11 1 11 11 1Y 12.44 40 25 to 01 to at 111 11Y

11 315 115 EF 140, 140 110 11 11Y 114 100 191

परमहा - निवास (सार्वेतिन रोबें), ३८५ प्रमित्रज स्रोध मेरियोगन बन्द्रजी १८३ THE RESTAURANCE

emis ee 47467, 333 राषीनियर १५९ ४११ पर प्रक्रिया १२४

चार्ला ८१ १३ emf à 111 THE OF THE तिने र कोनेसोनु १ व

हिने वीरोशील वेंड कलवी र प्र सी ५८ fzs B) di Ir

रीकी, स्थार्ट अंश रंगरवरिनानं रह ११९, १०९, १८३ 19697 B 299 8

रोस्टर १

र्लाक्षी १

बारा दे दर १५। समझी दारा लीकवि ४९ १ १००-४ ९ ४: स्टार द्वारा विभन्ती

इत्तल मान निमन (शीमोएन र्यं की) **35.4 (43 (55 2 2 2)0 35)** अपन विश्वक १८ ९४। विवासका वट ११

क्रमानियम, १८५ बदार्छ। प्रतिकृत्य ६ व्यक्तिसम् (दक्षिणे सम रिस्तिएम देवट, १८९०) ३६१ ३६८

206, 268, 2, 3, 366, 266 Y YE YMLYEY

¥ 12 4 4 1 1

इसक परिवर्गे शुक्तानको भारतीय और a at all on the-citizen १५ : नग्र - परिस्तिको - में कोवनेका विराह्य १९५। हैराक नहतीन और -२०% मत्तरीय जातारी और - १३९

३ ७३१ ३२३३३ ३३१%

B इक्ट क्रूट क्ष्य देवे पर

पीटरमैरिसको मार्काच्या १९८*गा दि*

बीस बाब्दर की ३० ३४ ९५ ११५ ११६

the fax fee fax

कोर्तकीक ४४ ५९ व्याच्य वर्ष १ २१ ३

महर्गन, होतिर म्हलीन – निरोधी प्रहर्गन अवाही करनून संबोधन नविभिन्न (श्रीमोद्यम का अमेरमेंट देश), नकी सम्बद्धि

बराही कानून एंडोपन निश्चक (रनिप्रेक्षन रा अमेरमेंट क्रिक); क्र**र**स १९८।

ter tar tary tar tay

ورو ومد ود ومد ومد प्रदेश रेट शह रह

शहर रेमर रेक्ट बंदा रेदा

शकेविक

रिस्तिकान निक्र) २०३ ३२३ ३५५ भारि इद्रद्द्द्द्द्र्या विकास मार्गार्थे ३२५-८। महार्थ, १६८-७९ प्रवादी-संस्कृद् १६ वर्ग दि १५ २४ स् रत यस यह यह दल रहत tio ta प्रार्देशका केन्द्रकेमको १९० १२ - १९१-१८०: नेतक विधान-परिकाली ११००

४१६८ वस्यः १६८-७२_। परिचाम

लानी प्रतिसमात्र विभाव (दक्षिप्रेयन

बर बोबीमी ३९२-३

मिरोरेच बाड्यस्य, १८२ मा डि *पिटोरिया प्रेस* १५१ निर्देशिया स्वयंतिहाः 🕶 फ़िलाका ५१ मिम्न व देखा ३९० कोलेस, शब्द बीक १२१

नारम मान् बोहम्मर ५८ কিলি ৬ १ ২

र्भक्त स्⊈्र tc9 17 18 244 202 मानिस को १९ ६९ व्यवनी बाह्यकी हम्बद्धार, 🕬

कीमारक, पुर कर वर वर दे हैं Enfin ang *****C. 323

रहेक, १५४ २६६ मा हि

पंतरवे १४८ ४११

ધ્યાનીક ૧૧૧૧

गरियम होश्रम ९०

रे: वेशन विवास-समामी, ३२३-३२८ विविद्या ६० १३ १४ ७० ७४ ७८ क्ष राष्ट्र रहत यथर मन THE PERSON

2 ce 99 492 990 802 8 4 AL ALF ALS कुम्बर्ड गमार कर १ १६४ ४१ क्यार प्रेतिहेसी मसीसिप्यान - ७० ८९ **₹7** €

क्ष्योंकी समा १ ८ वस्ति, वेक्सिक २९२ २९३ २९४ बर्दे सी ३८४८ बामनिक १३९ क्रमीरन छ९ राज्यागरम्, वांचीनी धारा-सुवस्तेकी वेरबी, 11-45

वासा जी द० ५४ शहा मोहयन समोद ५ शिल्ल भी द*र पा दि* दभ हेर ४१९। विश्वमितको भवनि वट ११

RETAIL ACCURAGE THEFE WE SEE

क्रिकेट सरदेश्यीकी वर TK. WY gg 10 331 बंब का इंचट प्रदेश देशकीय १९१ क्ष क्षेत्र क नमर्थी सुम्बद्धान्त प्रदे प्रदेश प्रदेश रेत र भर बर र र बेराह ११५

मंदन कट ८२ सा वि ६३ बोमर १८ मा दि ५४ व ११६३४ akta, to-ब्राज्य २३३

सन्पर्व गांबी बादमब ***

जिरिस -वंदिया महोसिएक्स १७३ का *वि*ः ⊸क्षित्र। सीम क्षेत्रियस समग्री ३५९: -मन्द्रिमणक ६ : -कोब्रह्ममा १६७--गामिन ५५: -चेला. १२**४**. १४१: -CANTE MY SAY

निविद्या पर्नेत शास्त्रमाच्या परितर्गे पर ३१ जीवका (जॉक्केर), सर शक्त, २९१ कमप्रारीन, च

मांबारकर, वर रामक्रम गीतक, ४१३ ४१९: भेमी शम्मी समझी समझत १३०: गांगीजीका पूर्वे समर्थन १ नाराके क्लानी ५५

महार्तीय भवाक स्थानका बीहा, १८५ मार्राच कारीनर -क किस्तुक कान्रीकर. at the term the ब्रोपीय कार्रामार्गे शिक्तांतिता १७६. icc come यारतीन विस्तितियां १८ ३६, ४% ६ at till top two a r a a.

ये इ. २५२, देवब २७४ इ४८ 101 107, 100 102 100 इ.९३: भारमकारो^ह २५-व. ११३: रकरात्मार्थीकी वर्णीमें शरिक्तन ६५. १८: मिरमिलको वर्ले. ९१ t y tao sya-y; Aunis for RIW 3 <2 304-6, 31Y १३६, १४४; ब्लंड मंत्रि लाल १५८

१३७८ स्थानी विनासके प्रधान-पत्र ४०१: रूप्पेंची मिलनही ११३; भागमेक किर सता २४: मानियाँकि राख्ये तन्दीनी ११६ भारतीय क्रमानाके, रं**य-वे**तना मीर - १९, ।। पेट च्छा टक्, **-अनीम केनेकी**

समाधी और और परवाल अप की ८०-८ १९६। उनल प्रोत्तम ११ 1×-4, 01-4 eq-4 (48, 684-दः और पूरुष गतिन्तुं, ३१ १२,

च्य १४५८ १४८ १४५. १५ ३ ^{बॉस} रेक्सामा ३३-४ **४५-७९-४** १४ ५, १४६: बन्दी शिल्ड श्रेमा ३५ व्याप्त तर १३३ १४व होना एक यर प्रतिकाय, ३५, ७४ ४६-७ सप्ततिव विकार नामिक्षी, -वन्तरेका, १९८)

जीर इक्ट वरिज्या रे४ रज्योंका सक्रमात्र छ। प्रतिनी हारा महाविकारका निरीद, १५; होज्जीने नेत्रात ७९३ ६व६ वृति व्यक्ता IS-A YOU'V OOL & Y-U क्ला किहि इ

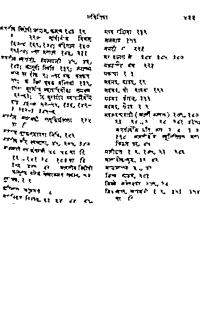
महरहीय, मेराक्षेत्र, क्यां महरमहरवार्षे, देखिए गिर्दमितिया मारतीयः **ज्लोब विका**र कारत १, १४ ९१-४ १०% वेश्व क्रमंद्र किकाब रेकोरी मेममान ४०-५ ९३ ४ ११७०२ ; गायरिक मन्त्रिक्त १९-२ १३५३ व्हाफिक्स १९-१४ 29. EE-E4. CO-\$ C4. 2046 १४४; और ब्रोहीसंकि बीच नेदनान १९. ८९-३। और राज्यांतिक विकास १४४४ और पानी १९-१३ ११३ ४ सरतीय प्रदातः -रीयनेका सन्तरको मनिकारः 38VI सामान्यत्री और शाबिक परस ४८-५३: नेशान्त्र क्रिय महत्त्र १ 4-1 311-4 यासीय प्रवासी बालब (ग्रॅडियब इनिम्पेसन

m) (to मारतीन प्रनासी नागा निवान (वेदियन इसिमेक्ट रक्त की³) ९ मारतीय और मताभिक्षार १५,१४,१७ १८

41-4 <1-4 tou-0 the thou महत्तीन रापीन कांग्रेस ४८ का दि NY NY YIL YIL YI

मीच नहीं शहर

नहर्तीय निरोध, ३९० मतानि निवासी विका परा दाई सूर्णी



सर्द्भ गांभी वात्मव

मेह १ मध्यों सं २८ ६० ८५, १५ मसन बी २१ ६५ मेरता सर कीरी-घडा क केरीक सर प्रश्नीसात १ पर दि 1 Y 4 tt str 375 Ele ? १६ १२२, ६२३ ६३४ 226 to are are, and are ३ र ३ २ ३०० ११२ मन इन इ मृत (चन्द्रसरी वारमी) * * * * * * * Andr 1 335

YĮY

नैतिस्ताको पोस्पीरिकार्य सी मुसिर ४१ ४२ ११९ १८४ १९१ १९९ ४७ २०७ २८८ २९१, ९६५ १९५ १९८ ४७ १९८ ३४ १९६ ४४४ ४०० नेवान बाउस क्रम १९४ सीजानिका १

मोधाना, वाज्या भर मोधाना, पीरा, भर मोधाना, पी वालमी, भर भेव जो वालम् १९५ बुत्ताव (पित पाक भेवर) १०९ वृत्ताव (पित पाक भेवर) १०९ वृत्ताव (पाक भेवर) १०९

योक्स्सरियाः व्यस्तर भी. ५

शुरुदाव (जिंद चेल्ड केल्ड) इंटर ब्होतीय एकंक एक (प्रोधीशन मॉलकन असोबियरान) १ १८४ मा डि १ २ ४१२ ब्होतील व्यासीट १४१

बूरमान न्यायरः १४४ राजनायात भीर भागारिक स्मिर्ग १९४ रासको नी भी १५९ रोक २३३

रहरको^{र्} जी भी १५९ रहेक २२ई एक्सर, विका ५९ एकडोड, ५७, ५९, १५१ १^{५३} १४६ ४१३, ४२ हानिक्ता के भी १९६ हिन्दित हर चल ह ११६ हिन्दित हरस्मित हर ४१६ हिन्दित हरस्मित हर हिन्दित हरस्म हिन्दित हरस्म

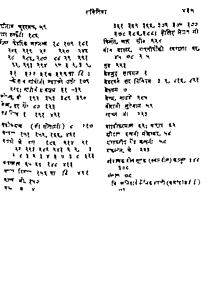
्रिक्त १६० १८ १६० १६० रिक्त १६० (सीमा) १८ रिक्त का १५ ८३ १३० १५५ रिक्त में १३५ १६५ १६५ १७ वि १६६ १६६ १६६ १७ वि १६६ १६६ १६६ १६६ १३६ रूक्तामाँ नगरतीर्थिक प्रवेद १६५ १६६

दिने दुर्गनामाँ जाततीर्वेष प्रेय केर ११-१ वर्ष कर्म ८ ११८-वेशस्त्री पातीर्वेष सम्बद्ध ११८-वेशस्त्री पातीर्वेष स्व चर्च करा ४-४८ वर्ष कर्म रिकार विश्व ११ रिकार विकार वर्ष १४ १८ रिकार विकार वर्ष १४ १८ रिकार विकार १९८

भारत, वर वर वे भ ४८ ४८ मा वि भार भार वह वर वर वह वा एक, एक एक, दी, दी, दी, दी रिट देरी देवे देवे प्रवाहत देवें देवे देद देद देवे मा देवे, मेरी देवे देद देद प्रवाहत मेरी देवे प्रवाहत मेरी मेरी देवे प्रवाहत मेरी

र करतीया (बंदश-कल्पेंग्नस, रेटटा ११ ७१, ७२ ८६ वा टि १। वा टि ४६१३ १४ वीं वास ।

Art



धीवार्व २२३ **छमार, शहम १९२** क्तकेगान्द्र, स्टब्स्क, सुद्धस्या २९, ६५ सम्मान मध्यद ५९ प्रभान मामा, ५९ काम (सामंदीन), १८ १८५, १८६ २०६ १३६ २०६ २००, २०८ रण, १८ २० २०, २० 301 300 300 Jes t to the ter the Ma क्षांत्र वाक्त १६ । ११३, ३०८ ९, पहारी, 388 सगद्भविषद्र १९१ १४१ मा डि 844 W 12 858 8581 गारतीय-विरोधी करम इत्यु इदथ-" THE SEE BEY कृष्य समापना विश्वित् २ ४ ক্ত ২ सोदीनी नी ९७ १५४ रदार १४१ १४५ १६५; हुनी विद्वा रहे ३९ ११० महार ब्रीव-न्यक विश्वकृतर ३०० ३०२: अस्तीय जनान संशोधन विशेषक कर, १११३ नहरोगि क्रिकेटी जर्राजन कर, १११-० Y-4 धेय जी, का रदेशतमेन १३५, १३८ ४११ शेरम शरकोट १ २, १३२ mm th ten Le All All 1/ 110 11 17E, 10% C. 100 1 7 1 0 1 6 1 5 \$23. \$23 दिन सर बादन १४१ Fire 35, 357 355 शिक्ष में ६३ હોદી તો સ્થા

411

स्वतन्त्र (केट किरमिरिया) समतीय क्रेस्टन विभेदक (अञ्चलनीटिंड इंडियन ब्रॉडियम (40), 42 × 97 (2 2×2 25%) इंदर ३०० बोबीमी दारा टिप्पणी १२०-८। मूख कारण ११०-१ १४% זינו שונו זמים צונ इंदर, सर विकिया किस्ता १८ १८३ 14. YR FZE. 333 **इ.ए.**नितास्य (ग्रीन पंस्कतेय) ३ ४ देदना टिंदरना कि ४४ मा दि परमा दि ६४ ८६ माटि ८४ ८६ १ ७ १११ ११४ १२२ १२४ १६४मा हि two tee tto T B tts मा डि ४१६ हाफिन्सी स्टेस्पन कारिय ५४ तलं २२३ हाईट, दी वी १२३ दिन्दी ३ ७८ १५७ १७ वि. १६६ विन्त्राची ११३ *वि*चुर १ १३३ ४११ दिन्, इ. र.इ. र.इ. र.इ. मिन, निरोधीनक हारतन १ र Rains NY र्राष्ट्र व्यक्ती, ३५३, ३५० IE 800 313 SE EPRIL LY इतेन, बनोर ५८ इसन माध्य शुक्रम १९ देशे - हरिनाम नह यानह रहा ११ 14, 11, 14, 14, शिक्ति व वन २१ २५१ २५ Miles. C.

